॥ श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् ॥

श्रीचैतन्यभागवत

श्रील वृन्दावनदासठाकुर विरचित



श्रीहरिदास शास्त्री

संस्थापक एवं अध्यक्ष :

श्रीहरिदास शास्त्री गोसेवा संस्थान

श्रीहरिदास निवास, पुरानी कालीदह, वृन्दावन (मथुरा) उ. प्र.

फोन : ०५६५-३२०२३२२, ३२०२३२५

श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्

श्रीचैतन्यभागवत

श्रील वृन्दावनदासठाकुर विरचित

श्रीवृन्दावनधामवास्तव्य न्यायवैशेषिकशास्त्रि, नव्यन्यायाचार्य,
काव्यव्याकरणसांख्यमीमांसा वेदान्ततर्कतर्कतर्कवैष्णवदर्शनतीर्थ
श्रीहरिदासशास्त्री
कर्त्तृक सम्पादित ।

सद्ग्रन्थ प्रकाशक :—
श्रीहरिदासशास्त्री
श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस,
श्रीहरिदास निवास, कालीदह, पो० वृन्दावन ।
जिला–मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशक :—

श्रीहरिदासशास्त्री

श्रीहरिदास निवास ।
पुराणा कालीदह ।
पो०—वृन्दावन ।
जिला—मथुरा । (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशनतिथि—

ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्री-श्रील विनोदविहारी गोस्वामी प्रभु विरह तिथि
पौष कृष्णा द्वितीया २१।१२।८३
श्रीगौराङ्गाब्द ४६७

प्रथम संस्करण—१०००

प्रकाशनसहायता— १०१.००

मुद्रक:—

श्रीहरिदास शास्त्री
श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस,
श्रीहरिदास निवास, कालीदह,
पो० वृन्दावन, जिला—मथुरा,
(उत्तर प्रदेश) पिन—२८११२१

श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्।

विज्ञप्ति

'श्रीचैतन्य भागवत' नामक स्वनाम धन्य प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ–भगवान् श्रीश्रीगौर सुन्दर एवं तदीय पार्षदवृन्द की परम पुत लीलाकथा से मुखरित है। श्रीश्रीव्यासावतार श्रीमद् वृन्दावन दास ठाकुर महाशय द्वारा रचित 'श्रीचैतन्य भागवत' श्रीगौर चरित परिवेषक वङ्ग भाषा में रचित आदि महाकाव्य है। इस महाग्रन्थ के प्रतिपत्र प्रति छत्र में अलौकिक महाशक्ति की तरङ्ग सुविलसित है, श्रद्धा विनम्र अन्तकरण से जिन्होंने इस ग्रन्थ की सेवा अध्ययन एवं अनुशीलन किया है, उनके हृदय में ही उक्त संवाद का याथार्थ्य अनुभव हुआ है। महाग्रन्थ के प्रति अक्षर अक्षर में प्रेम की भाषा विन्यस्त है, ग्रन्थ प्रतिपाद्य देवता परतत्त्व सीमा श्रीचैतन्य देव हैं, तदीय परिकरवृन्द भी प्रेममय हैं, तदीय लीलामाधुरी भी प्रेमानुरञ्जित है, कवि भी महाप्रेमिक स्वयं व्यासावतार हैं, सुतरां तदीय लेखनी से अक्षय अमृतमय प्रस्रवण प्रवाहित होगा, इस में वैचित्र्य क्या है?

श्रीचैतन्य चरितामृत प्रणेता श्रीकृष्णदास कविराज महोदय भी इस ग्रन्थ के प्रति सम्मान प्रदान पूर्वक मुक्त कण्ठ से कीर्त्तन किये हैं।

"ओरे मूढ़लोक! शुन चैतन्यमङ्गल। चैतन्य महिमा याते जानिवे सकल॥
कृष्णलीला भागवते कहे वेदव्यास। चैतन्यलीलाते व्यास वृन्दावन दास॥
वृन्दावन दास कैल चैतन्यमङ्गल। याँहार श्रवणे नाशे सर्व अमङ्गल॥
चैतन्य निताइर याते जानिये महिमा। याते जानि कृष्णभक्ति सिद्धान्तेर सीमा॥
भागवते यत भक्ति सिद्धान्तेर सार। लिखियाछेन इहाँ जानि करिया उद्धार॥
चैतन्यमङ्गल शुने यदि पाषण्डी यवन। सेह महावैष्णव हय ततक्षण॥
मनुष्य रचिते नारे ऐछे ग्रन्थधन्य। वृन्दावन दास मुखे वक्ता श्रीचैतन्य॥

(चै० च० आदि ८।३३।३९)

वस्तुत: प्रेम की निगूढ़ महिमा भक्तितत्त्व के समग्र सद्सिद्धान्त प्रस्तुत महा ग्रन्थ में सरल एवं अतिसुन्दर रूप से समालोचित हुए हैं। एतद्व्यतीत श्रीचैतन्य भागवत के समान प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ भी दुर्ल्लभ है, सार्द्ध चतुःशत वर्ष के वङ्गीय सामाजिक विचित्र चित्र, प्रस्तुत ग्रन्थ में विचित्र वर्ण द्वारा चित्रित है, ग्रन्थ का प्रथम नाम 'श्रीचैतन्यमङ्गल' था। किन्तु श्रीवृन्दावन वासी वैष्णववृन्द इस ग्रन्थ का नाम करण "श्रीचैतन्य भागवत" किये हैं। स्वयं भगवत्ता प्रति पादक ग्रन्थ का नाम श्रीमद्भागवत है, श्रीवेदव्यास कृत श्रीमद्भागवत महापुराण में जिस प्रकार स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण की ही भगवत्ता स्थापित हुई है, उस प्रकार ही श्रीचैतन्यभागवत में श्रीकृष्णाविर्भाव विशेष श्रीचैतन्य देव की स्वयं भगवत्ता प्रतिपादित हुई है।

परम ऐश्वर्य्य माधुर्य्य शक्ति समन्विन को भगवत्तत्त्व कहते हैं, श्रीचैतन्य भागवत ग्रन्थ में स्वयं भगवान् श्रीचैतन्य देव का ऐश्वर्य्य प्रधान अवतार तत्त्व का निगूढ़ रहस्य वर्णित है, अर्थात् अनन्त शक्तिमान् इच्छामय परमेश्वर की इच्छामात्र से ही जब कोटि कोटि ब्रह्माण्ड के उत्पत्ति स्थिति प्रलय संघटित होते हैं। तब वह परात्पर प्रभु मनुष्य रूप में अवतीर्ण होकर मनुष्योचित कार्य्य में क्यों संलिप्त होते हैं? इस रहस्य का सम्यक् वर्णन इस ग्रन्थ में है। कविराज गोस्वामी कृत श्रीचैतन्य चरितामृत ग्रन्थ में श्रीगौरसुन्दर की माधुर्यमयी लीला का सम्यक् वर्णन है। अत: श्रीमद्भागवत एवं श्रीचैतन्य चरितामृत के समान ही, श्रीचैतन्यभागवत ग्रन्थ का यथारीति पठन पाठन श्रीवृन्दावन में होता था। श्रीगोविन्द देव के सेवाधिकारी श्रीहरिदास पण्डित गोस्वामी वैष्णववृन्द के सहित श्रीचैतन्यभागवत ग्रन्थ का नित्य पाठ श्रवण करते थे। श्रीचैतन्यचरितामृत के आदि ८।६३ में इस का उल्लेख है।

श्रीचैतन्यभागवत ग्रन्थ पाठ करने से भगवत् लीला की जनहितकर अलौकिक शक्ति का परिचय लाभ होता है। उस से मानव हृदय में परम हितैषी करुणामय श्रीप्रभु के प्रति ममत्व का सञ्चार होता है। भक्ति सलिल से हृदय आप्लुत होने से प्रेमाश्रु सिञ्चन से नयन अभिषिक्त होता है। भक्तकुल चूड़ामणि श्रीवृन्दावन दास के रचनाकौशल एवं लिपि चातुर्य का गभीर भाव का अनुध्यान करने से अश्रु, कम्प, स्वेद, पुलक, सम्मोह प्रभृति सात्त्विक भाव से हृदय तन्मय होता है, एवं भगवत् प्रेमविभोर होकर जगत् (संसार) प्रेममय कृपामय रूप में अनुमित होता है।

वस्तुतः प्रकृत भगवत् प्रेमलाभेच्छु होने पर प्रेममय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का सुशीतल सुस्निग्ध अङ्गलाभ की वासना होने पर, एवं विशुद्ध प्रेम के ज्योतिर्म्मय पथ में विचरण करने की आकाङ्क्षा होने पर भक्ति तद्गत चित्त से परम पवित्र इस ग्रन्थ का अध्ययन करना मानवमात्र का ही अवश्य कर्त्तव्य है।

श्रीचैतन्यभागवत रचना के समय श्रीवृन्दावन दास ठाकुर का आदेशातिरेक श्रीनित्यानन्द चरित्र में होने के कारण श्रीमन्महाप्रभु की अन्त्यलीला की पूर्त्ति इस में नहीं हुई। प्रस्तुत ग्रन्थ सर्व प्रथम श्रीचैतन्यचरितामृत ग्रन्थ निर्माता श्रीमुरारि गुप्त कृत श्रीचैतन्यचरितामृत नामक संस्कृत ग्रन्थ के अनुसरण से निर्मित हुआ है, किन्तु श्रीचैतन्यभागवत रचना का समाप्तिकाल के सम्बन्ध में निश्चय कर कहना कठिन है। श्रीकृष्णदास कविराज कृत श्रीचैतन्यचरितामृत ग्रन्थ रचना के अन्ततः १०।१२ वर्ष पूर्व में ग्रन्थ समाप्त हुआ था, यह अनुमित होता है, कारण ग्रन्थ पठन पाठन एवं अनुशीलनादि का इङ्गित उक्त चरितामृत ग्रन्थ में समुपलब्ध है। प्राचीन हस्त लिखित पुस्तक में लिखित विवरण के अनुसार समाप्ति काल १४८७ शकाब्द है।

"चौद्दशत सातानव्वई शकेर गणन। नित्यानन्द ध्याने ग्रन्थ हैल समापन॥"

किन्तु प्रेम विलास ग्रन्थ में १४९५ शकाब्द का उल्लेख है।

"चौद्दशत पँचानव्वइ शकाब्द यखन। श्रीचैतन्यभागवत रचे दास वृन्दावन॥"

प्रस्तुत ग्रन्थ रचयिता के पिता माता के नाम-श्रीवैकुण्ठनाथ विप्र एवं श्रीनारायणी देवी हैं। श्रीवास पण्डित के ज्येष्ठ भ्राता श्रीनलिन पण्डित की कन्या थीं, वर्द्धमान के 'देनुड़' ग्राम में आपका निवास था। श्रीवृन्दावन दास ५ वत्सर वयःक्रम के समय निज जननी के सहित मामागाछि ग्राम में निवास करते थे, किन्तु इनकी जन्मभूमि कुमारहट्ट अथवा हालिसहर है। १४२९ शकाब्दा की कृष्णा द्वादशी तिथि में इनका जन्म हुआ था। इसका विवरण यह है—

"हालिसहर नति ग्रामे नारायणी सुत।
ठाकुर वृन्दावन नाम भुवन विख्यात॥
नति ग्रामे जन्मस्थान स्थिति देनुड़ाते।
श्रीचैतन्य भागवत कैल प्रचारिते॥"

श्रीचैतन्यचरितामृत ग्रन्थ के आदि ११।५४ में लिखित है,—

"वृन्दावन दास नारायणी नन्दन।
चैतन्यमङ्गल येँहो करिला रचन॥"

श्रीचैतन्यचन्द्रोदय, श्रीनित्यानन्द प्रभु का वंशविस्तार, श्रीगौराङ्ग विलास, श्रीचैतन्यलीलामृत, भजन निर्णय, भक्ति चिन्तामणि, श्री १२८ श्लोकात्मक "श्रीनित्यानन्द प्रभोरैश्वर्य्यामृतस्तोत्रम्" प्रभृति ग्रन्थ रचयिता श्रीवृन्दावन दास ठाकुर हैं।

श्रीहरिदास शास्त्री।

श्रीश्रीगौरगदाधरौजयतः

सूचीपत्र

आदिखण्ड १२-अध्याय

से प्रेमोच्छ्वास, प्रभु के सहित ईश्वरपुरी का मिलन, एवं प्रभु कर्त्तृक भिक्षा निमन्त्रण एवं निज गृह में भिक्षा अर्पण, गोपीनाथ आचार्य्य के गृह में ईश्वरपुरी का अवस्थान, गदाधर पण्डित के प्रति पुरी की प्रीति, एवं उनको स्वरचित कृष्णलीलामृत ग्रन्थ अध्यापन, कृष्णलीलामृत ग्रन्थ के दोष गुण विचारार्थ पुरी कर्त्तृक प्रभु को अनुरोध, आलोचना प्रसङ्ग में प्रभु का रङ्ग कौतुक, पुरी का नवद्वीप से प्रस्थान।

विषय पृष्ठा

मध्यखण्ड २६-अध्याय

अन्त्यखण्ड ११-अध्याय

सूचीपत्र सम्पूर्ण



श्रीश्रीनित्यानन्द प्रभु

श्रीश्रीगौरगदाधरौजयतः

श्रीचैतन्यभागवतोल्लिखित श्लोकसूची ।

श्लोकसूची



নিতাই গৌর

श्रीश्रीगदाधरगौरांगौ जयतः

श्रीचैतन्यभागवत

श्रीलवृन्दावनदासठाकुरविरचित

आदिखण्ड

प्रथम अध्याय

मङ्गलाचरण ।

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ
सङ्कीर्त्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्म्मपालौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ ॥१॥

नमस्त्रिकालसत्याय जगन्नाथसुताय च
सभृत्याय सपुत्राय सकलत्राय ते नमः ॥२॥

श्रीमुरारिगुप्तस्य श्लोकौ ।

"अवतीर्णौ स्वकारुण्यौ परिच्छिन्नौ सदीश्वरौ ।
श्रीकृष्णचैतन्यनित्यानन्दौ द्वौ भ्रातरौ भजे ।३।
जयति जयति देवः कृष्णचैतन्यचन्द्रो
जयति जयति कीर्त्तिस्तस्य नित्या पवित्रा
जयति जयति भृत्यस्तस्य विश्वेशमूर्त्ते-
र्जयति जयति नृत्यं तस्य सर्वप्रियाणाम् ॥"४॥

आजानुलम्बितबाहु कनकवत् कमनीय कान्ति विशिष्ट, कमलायताक्ष, संकीर्त्तनका आविर्भावक, विश्वम्भर, द्विजश्रेष्ट, युगधर्म पालक एवं जगत्-प्रियकारी, करुणावताररूप श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु एवं श्रीनित्यानन्द प्रभु की वन्दना करता हूँ ।१

स पुत्रायेत्यत्र पुत्रः—पुत्रवत् वात्सल्यस्नेहपात्रमित्यर्थः, शिष्य परिकराय वा, केचित् तत् पुत्र स्थानीयम् संकीर्त्तनम् मन्यन्ते । ततपुत्रजननस्य अश्रुतत्वात् । सकलत्राय-सपरिवाराय, केषाञ्चिन्मते प्रेमभक्तिरपि तस्य कलत्रस्थानीया तदपि युक्तम् ।२

प्रभो! आप भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान रूपकालत्रय में ही सत्य हैं, श्रीजगन्नाथमिश्र का नन्दन आप हैं, भृत्य वात्सल्यस्नेहपात्र रूप, एवं कलत्र के सहित आप को नमस्कार करता हूं ।।२।।

स्वकारुण्यावितिनिजं स्वरूपभूतं कारुण्यं ययोस्तौ करुणामयौ । परिच्छिन्नौ नरलीलावशात् विभुरपि परिच्छिन्नवत् प्रतीयमानौ । तौ परिच्छिन्नावपि सदीश्वरौ । स्वीयाचिन्त्यशक्त्या एकस्मिन्नेव विभुत्वमध्यमवत्वादि विरुद्वधर्माणां सम्भवात् ।३

जो दयालु एवं परिच्छिन्नवत् प्रतीयमान होकर भी सत् (सत्य) एवं ईश्वर सर्वनियन्ता हैं । मैं जगत् में अवतीर्ण उन श्रीकृष्ण चैतन्य एवं श्रीनित्यानन्द भ्रातृद्वय का भजन करता हूँ ।३।

जयतीति । देवः—लीलामयः ज्योतिर्म्मयो वा "दिवु" क्रीड़ायाम् । जयति जयति—महोत्कर्षेण वर्त्ततामिति अत्यौत्सुक्येन वीप्सा ।।४।।

देव, लीलामय श्रीकृष्णचैतन्य जययुक्त हों, जययुक्त हों, तदीय नित्य पवित्र कीर्ति जययुक्त हो, उन विश्वेश मूर्त्ति के भृत्यवर्ग जययुक्त हों, सकल जनप्रिय उन प्रभु के नृत्य की जय हो, जयहो ।४।

आद्ये श्रीकृष्णचैतन्य-प्रिय-गोष्ठीर चरणे ।
अशेष-प्रकारे मोर दण्ड-परणामे ॥५
तबे वन्दों श्रीकृष्णचैतन्य महेश्वर ।
नवद्वीपे अवतार नाम विश्वम्भर ॥६
आमार भक्तेर पूजा आमा हैते बड़ ।
सेइ प्रभु वेदे भागवते कैला दढ़॥७

तथाहि (भा० ११।१९।२१)
"मद्भक्तपूजाभ्यधिका ॥"।इति
'मद्भक्तपूजाभ्यधिका ।'

मद्भक्तेति,—मत्पूजातोऽपि मत्भक्तपूजा अभ्यधिका भवति, तत्र मम सन्तोषविशेषात् तेषां हृदि मदधिष्ठानात् ।

हे उद्धव ! मेरी पूजा की अपेक्षा मेरे भक्त की पूजा अति श्रेष्ठ है। कारण— मैं उन भक्तगणों के हृदय में अवस्थित हूँ। उद्धव ! भक्त पूजा ही प्रेमभक्तिलाभ करने का प्रकृष्ट उपाय है।

एतेके करिल आगे भक्तेर वन्दन ।
अतएव आछे कार्य्य-सिद्धिर लक्षण ॥८
इष्टदेव वन्दों मोर नित्यानन्दराय ।
चैतन्य-कीर्त्तन स्फुरे याँहार कृपाय ॥९
सहस्र-वदन वन्दों प्रभु बलराम ।
याँहार सहस्र-मुख कृष्ण-यशोधाम ॥१०
महारत्न थुइ येन महा-प्रिय-स्थाने ।
यशोरत्न-भाण्डार श्रीअनन्त-बदने ॥११
अतएव आगेबलरामेर स्तवन ।
करिले, सें मुखे स्फुरे चैतन्य कीर्त्तन ॥१२
सहस्रेक फणाधर प्रभु बलराम ।
यतेक करये प्रभु सकल उद्दाम ॥१३
हलधर महाप्रभु प्रकाण्ड शरीर ।
चैतन्य-चन्द्रेर रसे मत्त महाधीर ॥१४
ततोधिक चैतन्येर प्रिय नाहि आर ।
निरवधि सेइ देहे करेन विहार ॥१५
ताहान चरित्र येइ जने शुने गाय ।
श्रीकृष्णचैतन्य ताँरे परम सहाय ॥१६
महाप्रीत हय तारे महेश पार्व्वती ।
जिह्वाय स्फुरये ताँर शुद्धा सरस्वती ॥१७
पार्वती-प्रभृति नवार्व्बुद नारी लैया ।
सङ्कर्षण पूजे शिव उपासक हैया ॥१८
पञ्चम स्कन्धे एइ भागवत-कथा ।
सर्व्व-वैष्णवेर वन्द्य बलराम-गाथा ॥१९
तान रासक्रीड़ा कथा परम उदार ।
वृन्दावने गोपीसने करिला विहार ॥२०
दुइमास वसन्त माधव-मधु-नामे ।
हलायुध-रासक्रीड़ा कहये पुराणे ॥२१
से सकल कथा एइ शुन भागवते ।
श्रीशुक कहेन,शुने राजा परीक्षिते ॥२२

तथाहि (भ० १०।३५।१७;१८;२१;२२)
"द्वौ मासौ तत्र चावात्सीन्मधुं माधवमेव च ।
रामः क्षपासु भगवान् गोपीनां रतिमावहन्॥२३
पूर्णचन्द्रकलामृष्टे कौमुदीगन्धवायुना ।
यमुनोपवने रेमे सेविते स्त्रीगणैर्वृतः ॥२४
उपगीयमानो गन्धर्वैर्वनिताशोभिमण्डले ।
रेमे करेणुयूथेशो माहेन्द्र इव वारणः ॥२५
नेदुर्दुन्दुभयो व्योम्नि ववृषुः कुसमैर्मुदा ।
गन्धर्वा मुनयो रामं तद्वीर्य्यैरीड़िरे तदा ॥२६

द्वाविति—मधुं चैत्रम् माधवं—वैशाखम्। गोपीनामिति श्रीकृष्णक्रीड़ा समये अनुत्पन्नानां अतिबालानामन्यासामित्यभियुक्त प्रसिद्धिः।२३

पूर्णेति–पूर्णचन्द्रस्य कलाभिः मरीचिभिः आमृष्टे उज्ज्वले, कौमुदीगन्धवायुना–कुमुद्वतीनां गन्धवातेन सेविते । यद्वा – कौमुदीशब्देन तद्विकासितानि कुमुदानि लक्ष्यन्ते, कुमुदगन्धवायुनेत्यर्थः ।२४,२५,२६

भगवान् बलराम, निशीथ में गोपीगणों के प्रीतिसम्पादन करते करते उन श्रीवृन्दावन में चैत्र एवं वैशाख – मासद्वय अवस्थान किये थे। पुर्णचन्द्र के किरण जाल से परिमार्जित जिस

की स्वतःसिद्ध शोभा अतिशय उज्ज्वल हो उठी है, एवं जहां समीरण—कुमुद कुसुम से गन्ध ग्रहण करके धीरे धीरे सञ्चरण करते रहते हैं, श्रीबलराम, उस श्रीयमुनाके उपवन में रमणीवृन्द परिवृत होकर लीलाविलास में प्रवृत्त होगये। ।२४

गन्धर्वगण द्वारासंस्तुत बलराम हस्तिनी-यूथपति इन्द्रहस्ती ऐरावत के समान अनुरागवती वनिता परिशोभित मण्डलमें लीलाविलास हेतु प्रवृत्त हुये थे। २५

आकाश में दुन्दुभि निनाद होनेलगा, गन्धर्व वृन्द आनन्द से पुष्पवर्षण करने लगे, और मुनिगण उस समय बलराम के विक्रम वृत्तान्त कोउल्लेख कर स्तव करने लगे। २६।

ये स्त्रीसंग मुनिगणे करेन निन्दन।
तानाओं रामेर रासे करेन स्तवन ॥२७
याँर रासे देवे आसि पुष्प—वृष्टि करे।
देवेजाने, एक तत्त्व कृष्ण—हलधरे ॥२८
चारि वेदे गुप्त बलरामेर चरित।
आमि कि बलिब, सब पुराणे विदित ॥२९
मूर्ख दोषे केहो केहो ना देखि पुराण।
बलराम रासक्रीड़ा करे अप्रमाण ॥३०
एक ठाँइ दुइ भाइ गोपिका—समाजे।
करिलेन रासक्रीड़ा वृन्दावन माझे ॥३१

तथाहि (भा० १०।३४।२०—२३)—

"कदाचिदथ गोविन्दो रामश्चाद्भुतविक्रमः।
विजह्रतुर्वने रात्र्यां मध्यगो व्रजयोषिताम्।३२
उपगीयमानौ ललितं स्त्रीरत्नैर्बद्धसौहृदैः।
स्वलङ्कृतानुलिप्ताङ्गौ स्रग्विणौ विरजोऽम्बरौ ॥३३॥
निशामुखं मानयन्तावुदितोड़ुपतारकम्।
मल्लिकागन्धमत्तालि जुष्टं कुमुदवायुना ॥३४
जगतुः सर्वभूतानां मनःश्रवणमङ्गलम्।
तौ कल्पयन्तौ युगपत् स्वरमण्डलमूर्च्छितम् ॥"
३५ ।इति।

"अहिदेहं निहत्यैवं प्रागुन्मत्तं सुदर्शनम्।
तद्वदुन्मादिनं कृष्णः शङ्खचूड़मताड़यत् ॥
तत् प्रसङ्गमाह कदाचिदिति ।३२

शङ्खचूड़बधवर्णन प्रसङ्ग में वर्णित है, किसी समय रजनी में अलौकिक प्रभाव सम्पन्न श्रीकृष्ण एवं बलराम व्रजनारीगणों के मध्यवर्त्ती होकर व्रजसन्निहित कानन के अभ्यन्तर में विहार किए थे ।३२

विरजोऽम्बराविति विरजसी अम्बरे ययोस्तौ ॥३३ निशा प्रवेशं सत्कुर्वन्तौ। उदित उडुपः तारकाश्च यस्मिन् तत्। मल्लिकागन्धेन मत्ता अलयोयस्मिन् तत् ॥३४

अनिबद्धत्वात् अन्यैर्युगपत् कल्पयितुमशक्यमपि तौ स्वरमण्डलस्य मुर्च्छित युगपत् कल्पयन्तौ मनः श्रवणयोः, मङ्गलं सुखावहं यथा भवति तथा, जगतुः – अगायतामिति। इति श्रीधरः ॥३५

उन दोनों के ही देह चन्दन चर्चित एवं विविध भूषणों से विभूषित थे, गलदेश में माल्य, परिधान में सुनिर्मल वस्त्र था, उन्होंने देखा, आज की सन्ध्या अतिमनोहर है, सान्ध्य गगन में तारापति एवं तारकामाला उदित है, अलिकुल मल्लिका कुसुम की मधुगन्ध से मत्त होकर इतस्ततःपरि–भ्रमण कर रहे थे, गन्धवह, कुमुदगन्धको लेकर मन्द मन्द सञ्चरण कर रहा है। उससे आप दोनों के लिये प्रदोष काल की सम्बर्द्धना न करके अवस्थान करना असम्भव हो उठा, उनकी प्रेयसीवृन्द उन दोनों की अवस्था को देखकर तान लय युक्त विशुद्ध मनोहर सङ्गीतालाप में प्रवृत्त हो गयीं। आप दोनों भी मिलित होकर सब के मनोमद एवं श्रुतिसुखावह स्वरग्राम की मूर्च्छना के सहित सङ्गीतालाप करने लगे। ३३—३५

भागवत शुनि यार रामे नहे प्रीत।
विष्णु-वैष्णवेर पथे से जन वर्जित ॥३६
भागवत ये ना माने, से यवन सम।
तार शास्ता आछे जन्मेजन्मे प्रभु यम ॥३७
एबे केहो केहो नपुंसक-वेशे नाचे।
बोले "बलराम-रास कोन शास्त्रे आछे?"॥३८
कोनो पापी शास्त्र देखिलेओ नाहि माने।
एक अर्थ, अन्य अर्थ करिया बाखाने ॥३९
चैतन्यचन्द्रेर प्रिय विग्रह बलाइ।
तान-स्थाने अपराधे मरे सर्व-ठांइ ॥४०
मूर्त्तिभेदे आपने हयेन प्रभु दास।
सें सब लक्षण अवतारे परकाश ॥४१
सखा, भाइ व्यजन, शयन, आवाहन।
गृह, छत्र, वस्त्र, यत भूषण आसन ॥४२
आपने सकल रूपे सेवेन आपने।
यारे अनुग्रह करे, पाय सेइ जने ॥४३
तथाहि श्रीयामुनमुनि-विरचिते
स्तोत्ररत्ने—

"निवास-शय्यासन-पादुकांशुको-
पधान-वर्षातपवारणादिभिः।
शरीरभेदैस्तव शेषतां गतै-
र्यथोचितं शेष इतीर्यते जनैः॥"४४इति

निवासेति श्लोकस्यास्य—'तदा सहासीन—मनन्तभोगिनि, प्रकृष्टविज्ञानबलैकधामनि।" फणामणिव्रातमयूखमण्डले प्रकाशमानोदरादिव्य धामनि।" इति पूर्व श्लोकनान्वयः। तया लक्ष्म्या सह, अनन्त भोगिनि आसीनं भगवन्तं श्रीविष्णु मित्यर्थः अनन्तभोगिनि—अनन्तसर्पे। कथम्भूते? हे भगवन्! शेषतां—यथेष्टविनियोगार्हतां गतैः --प्राप्तैः शरीरभेदैः, तव निवासशय्यादिभिः हेतुभिः, जनैः कर्त्तृभिः, यथोचितं 'शेषः' इति-ईर्य्यते कथ्यते ।४४।

हे भगवन्! विष्णु! आप लक्ष्मी देवी के सहित जिस अनन्त नाग के उपर विराजित हैं, वह अनन्त किस प्रकार हैं, जनगण उन्हें शेष कहते हैं, कथन सत्य ही है, कारण, आप निवास, आधार वासस्थान, शय्या, आसन, पादुका, अशुक, वसन उपाधान(तकिया), वर्षातप(छत्र), प्रभृति सेवोपकरण समूह का सम्पादन शरीर भेद से ही करते हैं शेषता प्राप्त होकर भी आप सेवा करते हैं, प्रत्युपकार प्राप्त करने की प्रत्याशा आपकी नहीं है, आपका सुख सम्पादन ही अभिलाष है। ४४

अनन्तेर अंश श्रीगरुड़ महाबली।
लीलाय वहेन कृष्ण हइ कुतूहली ॥४५
कि ब्रह्मा, कि शिव, कि सनकादि कुमार।
व्यास, शुक, नारदादि 'भक्त'नाम याँर ॥४६
सभार पूजित श्रीअनन्त महाशय।
सहस्र-वदन प्रभु भक्ति रसमय ॥४७
आदिदेव महायोगी ईश्वर वैष्णव।
महिमार अन्त इहार ना जानये सब ॥४८
सेवन शुनिला, एबे शुन ठाकुराल।
आत्मतन्त्रे येनमते बैसेन पाताल ॥४९
श्रीनारदगोसाञि तुम्बुरु करि सङ्गे।
ये यश गायेन ब्रह्मा स्थाने श्लोकबन्धे ॥५०
तथाहि (भा० ५।२५।९—१६)—
"उत्पत्ति-स्थिति-लय-हेतवोऽस्य कल्पाः
सत्त्वाद्याः प्रकृतिगुणा यदीक्षयासन्।
यद्रूपं ध्रुवमकृतं यदेकमात्मन्
नानाधात् कथमुह वेद तस्य वर्त्म ॥५१
मूर्त्तिं नः पुरुकृपया बभार सत्त्वं
संशुद्धं सदसदिदं विभाति यत्र।

यल्लीलां मृगपतिराददेऽनवद्याम्
आदातुं स्वजनमनांस्युदारवीर्य्यः ॥५२
यन्नाम श्रुतमनुकीर्त्तयेदकस्मात्
आर्त्तो वा यदि पतितः प्रलम्भनाद् वा ।
हन्त्यंहः सपदि नृणामशेषमन्यं
कं शेषाद्भगवत आश्रयेन्मुमुक्षुः ॥५३
मूर्द्धन्यर्पितमणुवत् सहस्रमूर्ध्नो
भूगोलं सगिरि-सरित्-समुद्र-सत्त्वम् ।
आनन्त्यादमितविक्रमस्य भूम्नः
को वीर्य्याण्यपि गणयेत् सहस्रजिह्वः ॥५४
एवं प्रभावो भगवाननन्तो
दुरन्तवीर्य्योरुगुणानुभावः ।
मूले रसायाः स्थित आत्मतन्त्रो
यो लीलया क्ष्मां स्थितये बिभर्त्ति ॥''५५ इति

अस्य—जगतः, उत्पत्त्यादिहेतवो गुणाः यस्येक्षया, कल्पाः-स्व स्व कार्य्यसमर्थाः,आसन् यस्य स्वरूपम्, ध्रुवम्-अनन्तम्, अकृतंच-अनादि। तत्र हेतुः,यत् एकमेव सत् आत्मनि,नाना-कार्य्य-प्रपञ्चम्। अधात्, तस्य-ब्रह्मस्वरूपस्य, वर्त्म तत्त्वं, जनः कथम् उह वेद ? न वेदेत्यर्थः ।५१

परिदृश्यमान जगत् के उत्पत्ति, स्थिति,लय के कारण—सत्त्व,रजः तमः, प्रकृतिके गुणत्रय हैं। स्वयं जड़ होकर भी जिनके ईक्षण प्रभावसे निज कार्य सम्पन्न करने में प्रकृति सक्षम है,एक होकरभी बहुविध सूक्ष्म पदार्थ रूप में प्रतिभात हैं, सुतरां जिनके स्वरूप अनन्त, अनादि हैं। साधारण जनगण उन भगवान् अनन्तदेव के तत्त्व को कैसे जान सकेंगे ?

तर्हि कथमसौ मुमुक्षुभिः सेव्यते ? तत्राह, मूर्त्तिमिति। यत्र इदं सदसत् विभाति, सः, नः—अस्माकं भक्तानां, बहुकृपया संशुद्धं सत्त्वं मूर्त्तिं बभार। स्वजनानां मनांसि, आदातुं —वशीकर्त्तुं कृतां यस्य लीलां, मृगपतिः, सिंहः' आददे—अशिक्षत। यतः उदाराणि वीर्य्याणि यस्य। तस्मात्-अन्यं मुमुक्षुः कम्आश्रयेत्?' इत्युत्तरेणान्वयः। यद्वा कृपयेत्यत्र हेतुः—यद् यस्मात् स्वजनानां मनांसि आदातुं लीलामाददे, मृगपतिरिवोदारवीर्य्यः। यद्वा मृग्यन्त इति मृगाः कामप्रदाः, तेषां पतिर्मुख्यः ।५२

सेवापरायण हम सब के निमित्त आप निरतिशय अनुग्रह पूर्वक कार्यकारणात्मक सदसत् निखिल वस्तु प्रकाशक विशुद्धसत्त्वस्वरूप मुर्ति में आविर्भूत होते हैं। आप प्रभूत प्रभावसम्पन्न हैं। भक्तजन मनो विनोदार्थ आपने जो परम पवित्र लीला का अनुष्ठान किया है, मृगपति सिंह भी स्वजनगण मनो रञ्जनार्थ लीला समूह का शिक्षालाभ उक्त लीलासे हो किए हैं ।५२

किञ्च आस्तां तस्य कृपया वपुर्धारणं तद्भजनं वा, तन्नामौदार्य्यमेवातिविचित्रमित्याह। यस्य नाम यदि, पतितः-महापातकी, अपि अनुकीर्त्तयेत्' तर्हि संशुध्येत्, इति किं वक्तव्यं, यतः असावेव नृणाम् अशेषम् अंहः, सपदि—सद्यः, हन्ति। कथमनुकीर्त्तयेत् ? अन्यतः श्रुतं वा, अकस्मात् वा, आर्त्तो वा सन्' प्रलम्भनात् वा परिहासात्। तस्मात्-शेषात् अन्यम् ।५३

दूसरे से सुनकर भी, यदृच्छाक्रम से हठात् हो अथवा परिहासछल से हो, गिरते समय भी हो, यदि कोई भगवान्नामोच्चारण करते हैं, उससे वे मुक्त हो जाते हैं, कारण अनन्त देवही सत्त्वर नाम ग्रहण से मानव के पापसमूह को विदूरित कर देते हैं। मुमुक्षुगण, भगवान् शेष को छोड़कर किस का भजन करेंगे ?।५३

गिर्य्यादिसहितं भूगोलम्। सत्त्वानि-प्राणिनिः। सहस्रजिह्वोपि को गणयेत् ।५४

उन सहस्रशीर्ष पुरुष के एकमात्र मस्तक के उपरि भाग में गिरि, नदी,समुद्र, समस्त प्राणीवृन्द के सहित समग्र पृथिवी अणु कीभांति विन्यस्त हैं, सहस्र जिह्वाप्राप्त करकेभी कौन व्यक्ति अपरिमित प्रभाव सम्पन्न विभुकी विक्रमवर्णना करने मे समर्थ है? उनके गुणों की सीमा नहीं है ।५४

दुरन्तं वीर्य्यं बलम् ऊरवो गुणाः अनुभावाश्च यस्य स च स च, रसायाः –भूमेः, मूले स्थितः सन् विभर्त्ति । आत्मतन्त्रः– आत्माधारः । ५५। उन भगवान् अनन्त देवका प्रभाव ही इस प्रकार है। उन के बलों का अन्त नहीं है, गुण एवं प्रभाव-अपरिमेय है, आप रसातल के मूल देश में अवस्थित होकर पृथिवी को धारण करते हैं, उनका आधार कोई नहीं है, आप स्वयं ही स्वयं का आधार हैं।५५

श्लोकार्थ—

सृष्टि, स्थिति, प्रलय, सत्त्वादि यत गुण ।
यांर दृष्टिपाते हय, याय पुनःपुनः ॥५६
अद्वितीय रूप, सत्य, अनादि, महत्त्व ।
तथापि अनन्त हये, के बुझे से तत्त्व ॥५७
शुद्ध सत्त्व मूर्त्ति प्रभु धरे करुणाय ।
ये विग्रहे सभार प्रकाश सुलीलाय ॥५८
यांहार तरङ्ग शिखि, सिंह महाबली ।
निज-जन मनोरञ्जे हइ कुतूहली ॥५९
ये अनन्तनामेर श्रवण-सङ्कीर्त्तने ।
ये-ते-मते केने नाहि बोले ये-ते-जने ॥६०
अशेष जन्मेर बन्ध छिण्डे सेइ क्षणे ।
अतएव वैष्णव ना छाड़े कभु ताने ॥६१
'शेष' बइ संसारेर गति नाहि आर ।
अनन्तेर नामे सर्वजीवेर उद्धार ॥६२
अनन्ता पृथिवी, गिरि-समुद्र सहिते ।
ये प्रभु धरये शिरे, पालन करिते ॥६३
सहस्र-फणार एक फणे बिन्दु येन ।
अनन्तविक्रम ना जानये 'आछे' हेन ॥६४
सहस्र-वदने कृष्ण-यश निरन्तर ।
गाइते आछेन आदि देव महीधर ॥६५

श्रीरागः ।

कि आरे राम-गोपाले बाद लागियाछे ।
ब्रह्मा रुद्र सुर, सिद्ध मुनीश्वर,
आनन्दे देखिछे ॥ध्रु
गायेन अनन्त श्रीयशेर नाहि अन्त ।
जयभङ्ग कारो नाहि—दोंहे बलवन्त ॥६६
अद्यापिह शेष-देव सहस्र श्रीमुखे ।
गायेन चैतन्य-यश—अन्त नाहि देखे ॥६७
नाग बली, वेगे चलि याय सिन्धु तरिबार तरे
यशेर सिन्धु ना देय कूल, अधिक अधिक बाढ़े ॥६८
तथाहि (भा०२।७।४१)नारदं प्रति ब्रह्मवाक्यम्-
"नान्तं विदाम्यहममी मुनयोऽग्रजास्ते
मायाबलस्य पुरुषस्य कुतोऽवरा ये ।
गायन् गुणान् दशशतानन आदि देवः ॥
शेषोऽधुनापि समवस्यति नास्य पारम् ।६९॥

एतत् प्रपञ्चयत्ति नान्तमिति। पुरुषस्य मत् मायाबलं तस्य अन्तं, न विदामि-न वेद्मि; दशशतानि आननानि यस्य सोऽपि अस्य गुणान् गायन् अधुनापि पारं न समवस्यति–न प्राप्नोति ॥ इति श्रीधरः।६९

हे नारद! उनपुरुष की मायाका प्रभाव कितना है, मैं आजभी उसको जान न सका। त्वदीय पूर्वज सनकादि मुनिगण भी उसको नहीं जानते हैं, दूसरी बात तो क्या है, सहस्रानन-आदिदेब शेष भी उनके अशेष गुण गान ही करते रहते हैं, उसकी सीमा प्राप्त करने में आप भी असमर्थ हैं।६९

पालन-निमित्त हेन प्रभु रसातले ।
आछे महाशक्तिधर निज कुतूहले ॥७०
ब्रह्मार सभाय गिया नारद आपने ।
एइ गुण गायेन तुम्बुरु-वीणा सने ॥७१

ब्रह्मादि विह्वल एइ यशेर श्रवणे ।
इहा गाइ नारद पूजित सर्वस्थाने ॥७२
कहिलाङ एइ किछु अनन्त-प्रभाव ।
इहाजानि श्रीअनन्ते कर अनुराग ॥७३
संसारेर पार हञा भक्तिर सागरे ।
ये डुबिबे से भजुक् निताइचांदेरे ॥७४
वैष्णवचरणे मोर एइ मनस्काम ।
"जन्मजन्म प्रभु मोर हँउ बलराम ॥"७५
'द्विज' 'विप्र' 'ब्राह्मण' येहेन नाम-भेद ।
एइमत 'नित्यानन्द' 'अनन्त' 'बलदेव' ॥७६
अन्तर्य्यामी नित्यानन्द बलिया कौतुके ।
चैतन्यचरित्र किछु लिखिते पुस्तके ॥७७
चैतन्यकीर्त्तन स्फुरे शेषेर कृपाय ।
यशेर भाण्डार वैसे शेषेर जिह्वाय ॥७८
अतएव यशोमयविग्रह अनन्त ।
गाइल ताहान किछु पादपद्मद्वन्द्व ॥७९
चैतन्यचन्द्रेर पुण्य-श्रवण चरित ।
भक्त-प्रसादे स्फुरे जानिह निश्चित ॥८०
वेदगुह्य चैतन्यचरित्र केबा जाने ।
ताहि लिखि, याहा शुनि भक्तगण स्थाने ॥८१
चैतन्य-कथार आदि-अन्त नाहि देखि ।
ताहान कृपाये ये लेखाए ताहा लेखि ॥८२
काष्ठेर पुतली येन कुहके नाचाय ।
एइमत गौरचन्द्र मोरे ये बोलाय ८३॥
सर्व-वैष्णवेर पा'ये मोर नमस्कार ।
इथे अपराध किछु ना हउक आमार ॥८४
मन दिया शुन भाइ! श्रीचैतन्य-कथा ।
भक्त-संगे ये ये लीला कैला यथायथा ॥८५

त्रिविध चैतन्यलीला आनन्देर धाम ।
आदिखण्ड,मध्यखण्ड, शेषखण्ड नाम ॥८६
आदिखण्डे प्रधानत्वे विद्यार विलास ।
मध्यखण्डे चैतन्येर कीर्त्तन-प्रकाश ॥८७
शेषखण्डे न्यासिरूपे नीलाचले स्थिति ।
नित्यानन्दस्थाने समर्पिया गौड़क्षिति ॥८८
नवद्वीपे आछे जगन्नाथ मिश्रवरँ ।
वसुदेव-प्राय तेंहो स्वधर्म्म तत्पर ॥८९
तान पत्नी शची-नाम महापतिव्रता ।
द्वितीय-देवकी येन सेइ जगन्माता ॥९०
तान गर्भे अवतीर्ण हैला नारायण ।
श्रीकृष्णचैतन्य-नाम संसार-भूषण ॥९१
आदिखण्डे फाल्गुनी पूर्णिमा शुभ दिने ।
अवतीर्ण हैला प्रभु निशाये ग्रहणे ॥९२
हरिनाम मङ्गल उठिल चतुर्द्दिगे ।
जन्मिला ठाकुर सङ्कीर्त्तन करि आगे ॥९३
आदिखण्डे शिशुरूपे अनेक प्रकाश ।
पिता माता प्रति देखाइला गुप्तवास ॥९४
आदिखण्डे ध्वज,वज्र, अंकुश, पताका ।
गृहमाझे अपूर्व देखिला पिता माता ॥९५
आदिखण्डे प्रभुरे हरियाछिल चोरे ।
चोर भुलाइया प्रभु आइलेन घरे ॥९६
आदिखण्डे जगदीश-हिरण्येर घरे ।
नैवेद्य खाइला प्रभु श्रीहरिवासरे ॥९७
आदिखण्डे शिशु-छले करिया क्रन्दन ।
बोलाइला सर्वमुखे श्रीहरिकीर्त्तन ॥९८
आदिखण्डे लोकवर्ज्य हाण्डीर आसने ।
बसिया मायेरे तत्त्व कहिला आख्याने ॥९९

आदिखण्डे गौराङ्गेर चाञ्चल्य अपार ।
शिशुगण-सङ्गे येन गोकुल-विहार ॥१००
आदिखण्डे करिलेन आरम्भ पढ़िते ।
अल्पे अध्यापक हैला सकल-शास्त्रे ते ॥१०१
आदिखण्डे जगन्नाथमिश्र-परलोक ।
विश्वरूप-सन्न्यास शचीर दुइ शोक ॥१०२
आदिखण्डे विद्याविलासेर महारम्भ ।
पाषण्डी देखये येन मूर्त्तिमन्त दम्भ ॥१०३
आदिखण्डे सकल पढ़ुयागण मेलि ।
जाह्नवीर तरङ्गे निर्भर-जलकेलि ॥१०४
आदिखण्डे गौराङ्गेर सर्वशास्त्रे जय ।
त्रिभुवने हेन नाहि, ये सम्मुख हय ॥१०५
आदिखण्डे वल्लभाचार्य्य-कन्या परिणय ।
देखिया शचीर मने महासुख हय ॥१०६
आदिखण्डे वङ्गदेशे प्रभुर गमन ।
प्राच्यभूमि तीर्थ हइल, पाइ श्रीचरण ॥१०७
आदिखण्डे पूर्व-परिग्रहेर विजय ।
शेषे राजपण्डितेर कन्या-परिणय ॥१०८
आदिखण्डे वायु-देह-मान्द्य करि छल ।
प्रकाशिला प्रेमभक्ति-विकार-सकल ॥१०९
आदिखण्डे सकल-भक्तेरे शान्ताइया ।
आपने भ्रमेण महा-पण्डित हइया ॥११०
आदिखण्डे दिव्य-परिधान दिव्य-सुख ।
आनन्दे भासेन शची देखि चांद-मुख ॥१११
आदिखण्डे गौराङ्गेर दिग्विजयि-जय ।
शेषे करिलेन तार सर्व-बन्ध क्षय ॥११२
आदिखण्डे सकल-भक्तेरे मोह दिया ।
सेइखाने भ्रमे' प्रभु सभारे भाण्डिया ॥११३

आदिखण्डे गया गेला विश्वम्भर राय ।
ईश्वरपुरीरे कृपा करिला तथाय ॥११४
आदिखण्डे आछे कत अनन्त विलास ।
किछु शेषे वर्णिबेन महामुनि व्यास ॥११५
वाल्यलीला आदि करि यतेक प्रकाश ।
गयार अवधि आदिखण्डेर विलास ॥११६
मध्यखण्डे विदित हइला गौर-सिंह ।
चिनिलेन यत सब चरणेर भृङ्ग ॥११७
मध्यखण्डे अद्वैतादि-श्रीवासेर घरे ।
व्यक्त हइला बसि विष्णु-खट्टार उपरे ॥११८
मध्यखण्डे नित्यानन्द-संगे दरशन ।
एकठाञि दुइ प्रभु करिला कीर्त्तन ॥११९
मध्यखण्डे षड़्भुज देखिला नित्यानन्द ।
मध्यखण्डे अद्वैत देखिला विश्व अंग ॥१२०
नित्यानन्द-व्यास-पूजा कहि मध्यखण्डे ।
ये प्रभुरे निन्दा करे पापिष्ठ पाषण्डे ॥१२१
मध्यखण्डे हलधर हैला गौरचन्द्र ।
हस्ते हलधर मुषल दिलेन नित्यानन्द ॥१२२
मध्यखण्डे दुइ अति-पातकि–मोचन ।
'जगाइ' 'माधाइ' विख्यात-भुवन ॥१२३
मध्यखण्डे कृष्ण राम—चैतन्य निताइ ।
श्याम-शुक्लरूप देखिलेन शची आइ ॥१२४
मध्यखण्डे चैतन्येर महा-परकाश ।
सातप्रहरिया भाव ऐश्वर्य्य-विलास ॥१२५
सेइ दिन अमायाय कहिलेन कथा ।
ये ये सेवकेर जन्म हैल यथायथा ॥१२६
मध्यखण्डे वैकुण्ठनायक नारायण ।
नगरे नगरे कैला आपने कीर्त्तन ॥१२७

मध्यखण्डे काजिर भाङ्गिया घरद्वार ।
निजशक्ति प्रकाशिया कीर्त्तन अपार ॥१२८

पलाइल काजि प्रभु-गौराङ्गेर डरे ।
स्वच्छन्दे कीर्त्तन करे नगरे नगरे ॥१२९

मध्यखण्डे महाप्रभु वराह हइया ।
निजतत्त्व मुरारिरे कहिला गर्ज्जिया ॥१३०

मध्यखण्डे मुरारिर स्कन्धे आरोहण ।
चतुर्भुज हैया कैला अङ्गने भ्रमण ॥१३१

मध्यखण्डे शुक्लाम्बरेर तण्डुल-भोजन ।
मध्यखण्डे नाना काच हैला नारायण ॥१३२

मध्यखण्डे रुक्मिणीर वेशे नारायण ।
नाचिलेन, स्तन पिल सब भक्तगण ॥१३३

मध्यखण्डे मुकुन्देर दण्ड संगदोषे ।
शेषे अनुग्रह कैला परम सन्तोषे ॥१३४

मध्यखण्डे महाप्रभु निशाये कीर्त्तन ।
वत्सरेक नवद्वीपे कैल अनुक्षण ॥१३५

मध्यखण्डे नित्यानन्द-अद्वैते कौतुक ।
अज्ञजने बुझे येन कलह-स्वरूप ॥१३६

मध्यखण्डे जननीर लक्ष्ये भगवान् ।
वैष्णवापराध कराइला सावधान ॥१३७

मध्यखण्डे सकल वैष्णव जने जने ।
सबे बर पाइलेन करिया स्तवने ॥१३८

मध्यखण्डे प्रसाद पाइल हरिदास ।
श्रीधरेर जल-पान कारुण्य-प्रकाश ॥१३९

मध्यखण्डे सकल-वैष्णव करि संगे ।
प्रतिनिशा जाह्नवीते जलकेलि रंगे ॥१४०

मध्यखण्डे गौरचन्द्र नित्यानन्द-संगे ।
अद्वैतेर गृहे गियाछिला कोन रंगे ॥१४१

मध्यखण्डे अद्वैतेरे करि बड़ दण्ड ।
शेषे अनुग्रह कैला परम-प्रचण्ड ॥१४२

मध्यखण्डे चैतन्य निताइ—कृष्ण राम ।
जानिला मुरारि गुप्त महाभाग्यवान् ॥१४३

मध्यखण्डे दुइ भाइ चैतन्य निताइ ।
नाचिलेन श्रीवास-अङ्गने एक ठाञि ॥१४४

मध्यखण्डे श्रीवासेर मृत-पुत्र मुखे ।
जीव-तत्त्व कहाइया घुचाइल दुःखे ॥१४५

चैतन्येर अनुग्रहे श्रीवास-पण्डित ।
पासरिला पुत्र-शोक जगते विदित ॥१४६

मध्यखण्डे गङ्गाये पड़िला क्रुद्ध हैया ।
नित्यानन्द हरिदास आनिला तुलिया ॥१४७

मध्यखण्डे चैतन्येर अवशेष-पात्र ।
ब्रह्मार दुर्लभ नारायणी पाइला मात्र ॥१४८

मध्यखण्डे सब-जीव-उद्धार कारणे ।
सन्न्यास करिते प्रभु करिला गमने ॥१४९

कीर्त्तन करिया आदि, अवधि सन्न्यास ।
एइ हैते कहि मध्यखण्डेर विलास ॥१५०

मध्यखण्डे आछे आर कत कोटि लीला ।
वेदव्यास वर्णिवेन एइ सब खेला ॥१५१

शेषखण्डे विश्वम्भर करिला सन्न्यास ।
'श्रीकृष्णचैतन्य' नाम तबे परकाश ॥१५२

शेषखण्डे शुनि प्रभुर शिखार मुण्डन ।
विस्तर करिला प्रभु अद्वैत क्रन्दन ॥१५३

शेषखण्डे शची-दुःख अकथ्य-कथन ।
चैतन्य-प्रभावे सभार रहिल जीवन ॥१५४

शेषखण्डे नित्यानन्द चैतन्येर दण्ड ।
भाङ्गिलेन, मत्तसिंह परम प्रचण्ड ॥१५५

शेषखण्डे गौरचन्द्र गिया नीलाचले ।
आपने लुकाइ रहिलेन कुतूहले ॥१५६

सार्वभौम-प्रति आगे करि उपहास ।
शेषे सार्वभौमेरे षड़् भुज-प्रकाश ॥१५७
शेषखण्डे प्रतापरुद्रेरे परित्राण ।
काशीमिश्र-गृहेते करिला अधिष्ठान ॥१५८
दामोदरस्वरूप, परमानन्दपुरी ।
शेषखण्डे एइ दुइ संगे अधिकारी ॥१५९
शेषखण्डे प्रभु पुनः आइला गौड़ देशे ।
मथुरा देखिब करि आनन्दविशेषे ॥१६०
आसिया रहिला विद्यावाचस्पति-घरे ।
तबे आइलेन प्रभु कुलिया नगरे ॥१६१
अनन्त अर्वुद लोक गेला देखिवारे ।
शेषखण्डे सर्वजीव पाइला उद्धारे ॥१६२
शेषखण्डे मधुपुरी देखिते चलिला ।
कथोदूर गिया प्रभु निवृत्त हइला ॥१६३
शेषखण्डे पुनः आइलेन नीलाचले ।
निरन्तर भक्तसङ्गे कृष्णकोलाहले ॥१६४
गौड़देशे नित्यानन्द स्वरूपे पाठाञा ।
रहिलेन नीलाचले कथोजन लैञा ॥१६५
शेषखण्डे रथेर सम्मुखे भक्त-संगे ।
आपने करिला नृत्य आपनार रंगे ॥१६६
शेषखण्डे सेतुबन्धे गेला गौरराय ।
झारिखण्ड दिया पुनः गेला मथुराय ॥१६७
शेषखण्डे रामानन्दरायेर उद्धार ।
शेषखण्डे मथुराय अनेक विहार ॥१६८
शेषखण्डे श्रीगौरसुन्दर महाशय ।
दवीरखासेरे प्रभु दिला परिचय ॥१६९
प्रभु चिनि दुइ-भाइर बन्ध विमोचन ।
शेषे नाम थुइलेन 'रूप' 'सनातत' ॥१७०
शेषखण्डे गौरचन्द्र गेला वाराणसी ।
ना पाइल देखा यत निन्दुक सन्न्यासी ॥१७१
शेषखण्डे पुन नीलाचले आगमन ।
अहर्निश करिलेन हरिसङ्कीर्त्तन ॥१७२
शेषखण्डे नित्यानन्द कथोक दिवसे ।
करिलेन पृथिवीर पर्यटन-रसे ॥१७३
अनन्त-चरित्र केहो बुझिते ना पारे ।
चरणे नूपुर सर्व मथुरा विहरे ॥१७४
शेषखण्डे नित्यानन्द पानीहाटी-ग्रामे ।
चैतन्य-आज्ञाय भक्ति करिलेन दाने ॥१७५
शेषखण्डे नित्यानन्द महा-मल्ल-राय ।
वणिकादि उद्धारिला परम कृपाय ॥१७६
शेषखण्डे गौरचन्द्र महा-महेश्वर ।
नीलाचले वास अष्टादश-संवत्सर ॥१७७
शेषखण्डे चैतन्येर अनन्त-विलास ।
वर्णिवेन, वर्णिते आछेन वेदव्यास ॥१७८
ये-ते-मते चैतन्येर गाइते महिमा ।
नित्यानन्द-प्रीत बड़, तार नाहि सीमा ॥१७९
धरणीधरेन्द्र नित्यानन्देर चरण ।
देह प्रभु गौरचन्द्र ! आमारे शरण ॥१८०
एइ ये कहिल सूत्र संक्षेप करिया ।
तिन खण्ड आरम्भिब इहाइ गाइया ॥१८१
आदिखण्ड-कथा भाइ ! शुन एकचिते ।
श्रीचैतन्य अवतीर्ण हैल येन-मते ॥१८२
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द चाँद जान ।
वृन्दावन दास तछु पदयुगे गान ॥१८३

इति श्रीचैतन्यभागवते आदिखण्डे लीला-सूत्रवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥



द्वितीय अध्याय

जयजय महाप्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
जय जगन्नाथपुत्र महा-महेश्वर ॥१
जय नित्यानन्द-गदाधरेर जीवन ।
जयजय अद्वैतादि-भक्तेर शरण ॥२
भक्तगोष्ठी-सहित गौराङ्ग जयजय ।
शुनिले चैतन्यकथा भक्ति लभ्य हय ॥३
पुन भक्त-संगे प्रभु-पदे नमस्कार ।
स्फुरुक् जिह्वाय गौरचन्द्र-अवतार ॥४
जयजय श्रीकरुणासिन्धु गौरचन्द्र ।
जयजय श्रीसेवाविग्रह नित्यानन्द ॥५
अविज्ञात-तत्त्व दुइ प्रभु आर भक्त ।
तथापि कृपाये तत्त्व करेन सुव्यक्त ॥६
'ब्रह्मादिर स्फूर्त्ति हय कृष्णेर कृपाय' ।
सर्वशास्त्रे वेदे भागवते एइ गाय ॥७

तथाहि (भा० २।४।२२)—

"प्रचोदिता येन पुरा सरस्वती
वितन्वताऽजस्य सतीं स्मृतिं हृदि ।
स्वलक्षणा प्रादुरभूत् किलास्यतः
स मे ऋषिणामृषभः प्रसीदताम् ॥" ८॥इति

पुरा—कल्पादौ, अजस्य हृदि, सतीं—सृष्टिविषयां स्मृतिं वितन्वता येन, प्रचोदिता—प्रेरिता सती, सरस्वती—वेदरूपा, तस्य मुखतः किल प्रादुर्भूता । स्वानि लक्षणानि—शिक्षादियुक्तानि, यस्याः सा । ऋषीणां ज्ञानप्रदानाम्. ऋषभः श्रेष्ठः ॥८॥

जिन्होंने कल्पारम्भ समय में ब्रह्मा के हृदय में सृष्टि सम्बन्धिनी स्मृति शक्ति का विस्तार किया है, एवं जिनकी प्रेरणा से उन ब्रह्मा के मुख से स्वलक्षणा—भगवद्धर्म प्रकाशिका, वेदात्मिका वाणी आविर्भूता हुई, उन ऋषिवृन्दाग्रगण्य श्रीभगवान् मेरे प्रति प्रसन्न होवे ।८।

पूर्वे ब्रह्मा जन्मिलेन नाभिपद्म हैते ।
तथापिह शक्ति नाहि किछुइ देखिते ॥९
तबे यबे सर्व-भावे लइला शरण ।
तबे प्रभु कृपाये दिलेन दरशन ॥१०
तबे कृष्ण-कृपाये स्फुरिला सरस्वती ।
तबे जानिलेन सर्व-अवतार-स्थिति ॥११
हेन कृष्णचन्द्रेर दुर्ज्ञेय-अवतार ।
तान कृपा-विने कार शक्ति जानिबार ?॥१२
अचिन्त्य अगम्य कृष्ण-अवतार-लीला ।
सेइ ब्रह्मा भागवते आपने कहिला ॥१३

तथाहि (भा० १०।१४।२१)—

"को वेत्ति भूमन् ! भगवन् ! परात्मन् !
योगेश्वरोतीर्भवतस्त्रिलोक्याम् ।
क्वाहं कथं वा कति वा कदेति
विस्तारयन् क्रीड़सि योगमायाम्" ॥१४॥इति।

को वेत्तीति । भूमन्—हे अपरिच्छिन्न ! भगवन्—हे सर्वैश्वर्य्ययुक्त ! परात्मन्-हे सर्वान्तर्यामिन् ! सर्व-कारणस्वरूपेति वा ; योगेश्वर—हे स्वाभाविकयोग-शक्त्या सर्वकालव्यापक ! भवतः, ऊतीः,—लीलाः, अहो-विस्मये, क्व, कथं वा, कदा वा स्युः, इति को वेत्ति ? किन्तु अपरिच्छिन्नत्वात्, अपरिच्छिन्नानां तासाम् आधारं, सर्वैश्वर्य्ययुक्तत्वात्, तासां प्रकारं, परमात्मत्वात्, तासाम् इयत्तां, सर्वकालव्यापकत्वात् तदवसरम्, अपि त्वमेव वेत्सीत्यर्थः। तत्र सर्वत्र हेतुः, योगमायां—महास्वरूपशक्तिम्, इति ॥१४॥

हे भूमन् ! अपरिच्छिन्न, हे भगवन् ! सर्वैश्वर्य सम्पन्न ! हे परात्मन् ! सर्वात्मान्तर्य्यामिन् !

हे योगेश्वर ! आप अपनी स्वरूपशक्तिरूप योगमाया को विविध प्रकार से विस्तारित करके लीला करते रहते हैं। अहो ! त्वदीय तत्तत् लीला कहाँ पर अनुष्ठित होती है ? क्यों होती है ? कब होती है, वह कितनी प्रकार की है, त्रिभुवनस्थ कौन व्यक्ति उसे जानने में समर्थ हैं ? १४।

कोन् हेतु कृष्णचन्द्र करे अवतार ।
कार शक्ति आछे तत्त्व जानिते ताँहार ? ॥१५
तथापि श्रीभागवते गीताय ये कहे ।
ताहा लिखि, ये निमित्ते अवतार हये ॥१६

तथाहि (गी० ४।७ ; ८) अर्जुनं प्रति भगवद्वाक्यम्—

"यदा यदा हि धर्म्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ! ।
अभ्युत्थानमधर्म्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥१७
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥"१८
इति

अथ सम्भवकालमाह, यदेति। यदा, धर्म्मस्य—वेदोक्तस्य, ग्लानिः—विनाशः, अधर्म्मस्य—तद्विरुद्धस्य, अभ्युत्थानम्—अभ्युदयः, तदा अहम् आत्मानं, सृजामि—प्रकटयामि; नित्यसिद्धमेव तत्सृष्टमिव दर्शयामि ।।१७।।

हे भारत ! जब जब धर्म की ग्लानि एवं अधर्म का अभ्युत्थान होता है, मैं उस उस समय में ही आत्मप्रकाश करता हूँ ।१७

ननु त्वद्भक्ता राजर्षयोऽपि धर्मग्लानिम् अधर्माभ्युत्थानञ्च अपनेतुं प्रभवन्ति, तावेतेऽर्थाय किं सम्भवसीति चेत् ? अस्ति मदन्यदुष्करं कार्य्यं, तदर्थं सम्भवामीति आह, परीति। साधूनां—मद्रूपगुणनिरतानां। मत्साक्षात्कारमाकांक्षतां तेन विनातिव्यग्राणां, तद्वैयग्र्यरूपात् दुःखात् परित्राणायातिमनोज्ञस्वरूपसाक्षात्कारेण; तथा, दुष्कृतां—दुष्टकर्मकारिणां मदन्यैरवध्यानां रावणकंसकेश्यादीनां तादृग् भक्तद्रोहिणां, विनाशाय; धर्मस्य—मदेकार्च्चन-ध्यानादिलक्षणस्य शुद्धभक्तियोगस्य वैदिकस्यापि मदितरैः प्रचारयितुमशक्यस्य, संस्थापनाय-संप्रचाराय ; इत्येतत् त्रयं मत्सम्भवस्य कारणमिति। युगे युगे तत्तत् समयेन च दुष्टवधेन हरौ न वैषम्यं, यथाहुः—लालने ताड़ने मातुर्नाऽकारुण्यं यथाऽर्भके। तद्वदेव महेशस्य नियन्तुर्गुणदोषयोः॥१८

साधुवृन्दों का परित्राण, असाधुओं का नाश, एवं धर्म संस्थापन हेतु मैं समय समय पर जगत् में आविर्भूत होता हूँ ।१८

श्लोकार्थ—

धर्म-पराभव हये यखने यखने ।
अधर्मेर प्रबलता बाढ़े दिनेदिने ॥१९
साधुजन-रक्षा दुष्ट-विनाश कारणे ।
ब्रह्मा-आदि प्रभुर पा'य करे विज्ञापने ॥२०
तबे प्रभु युगधर्म स्थापन करिते ।
साङ्गोपाङ्गे अवतीर्ण हन पृथिवीते ॥२१
कलियुगे धर्म हये 'हरिसंकीर्त्तन' ।
एतदर्थे अवतीर्ण श्रीशचीनन्दन ॥२२
एइ कहे भागवते 'सर्व-तत्त्व-सार ।
कीर्त्तन-निमित्त गौरचन्द्र-अवतार' ॥२३

तथाहि (भा० ११।५।३१ ; ३२)—

"इति द्वापर उर्वीश ! स्तुवन्ति जगदीश्वरम् ।
नानातन्त्रविधानेन कलावपि तथाशृणु ॥२४॥
कृष्णवर्णं त्विषाऽकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्रपार्षदम् ।
यज्ञैः सङ्कीर्त्तनप्रायैर्यजन्ति हि सुमेधसः ॥"२५॥
इति

इतीति । श्लोकोऽयमगूढ़ार्थः ॥२४।

निमिनृपेण पृष्टः करभाजनयोगी सत्यादियुगाव-

तारानुक्त्वा, "कलावपि तथा शृणु" (भा० ११।५। ३१) इति तमवधारयन्नाह, कृष्णेति। सुमेधसः पुरुषाः कलावपि हरिं यजन्ति। कैः? इत्याह, सङ्कीर्त्तनप्रायैः यज्ञैः—अर्च्चाविधिभिरिति। तं कीदृशम्? इत्याह, कृष्णो वर्णो रूपं यस्यान्तरिति शेषः, "वर्णो द्विजादिशुक्लादियशोगुणकथासु च।" इति मेदिनी। त्विषात्वकृष्णं—'शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः।' (भा० १०।८।१३) इति गर्गोक्तिपारिशेष्यात् विद्युद्गौरकान्तिकमित्यर्थः। अङ्गेति—नित्यानन्दाद्वैतौ, उपाङ्गेति—श्रीवास पण्डितादयः, अस्त्राणि—अविद्यावनच्छेत्तृत्वात् तत्समानि भगवन्नामानि, पार्षदाः-श्रीगदाधर-गोविन्दादयः, तैः सहितम्, इति महाबलित्वमस्य व्यज्यते। गर्गवाक्ये च पीत-इति प्राचीनतदवतारा-पेक्षया। अयमवतारः श्वेतवाराह-कल्पगताष्टाविंशति तमवैवस्वतमन्वन्तरीयकलौ बोध्यः, तत्रत्ये श्रीचैतन्य एव पद्योक्तधर्माणां दर्शनात्; अन्येषु कलिषु तु क्वचि-च्छ्यामत्वेन क्वापि शुकपत्राभत्वेन वावतारस्योक्तेः स च स च तदाविष्टो जीवविशेष इति प्रत्यक्ष-रूपधृक् देवो दृश्यते न कलौ हरिः।" (विष्णुधर्मे) इत्यादिवाक्यं तद्विषयम्। तद्याजिनः सुमेधसस्तु "छन्नः कलौ यदभवः" (भा० ७।९।३८) "शुक्लो रक्तस्तथा पीतः", "कलावपि तथा शृणु" इत्यादि वाक्यभावविदो बोध्याः। छन्नत्वं प्रेयसीत्विषा-वृतत्वम्। बृहन्नारदीये चैवमुक्तम्—"अहमेव कलौ विप्र! नित्यं प्रच्छन्नविग्रहः। भगवद्भक्तरूपेण लोकान् रक्षामि सर्वथा॥"इति। श्रुतिश्चैतमभिप्रैति —"यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं कर्त्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम्।" इत्यादिना मुण्डके (३।१।३), "महान् प्रभुर्वै पुरुषः सत्त्वस्यैष प्रवर्त्तकः।" इति श्वेताश्वतराणामुपनिषदि च (३।१२)। यत्तु द्वापरेऽपि क्वचित् स्कान्दे हरिवंशे च पीतत्वमुक्तं तदपि कादाचित्कमस्तु, हरेर्नानावतारत्वात्॥२४।

हे पृथिवीपते! द्वापर युगमें सब व्यक्ति उक्त रूप से जगदीश्वर की स्तुति करते हैं। कलिकाल में सब व्यक्ति नाना रूप तन्त्रविधि के अनुसार जिस प्रकार स्तव करते हैं, उसका वर्णन करता हूँ, श्रवण करें।२४

जो अभ्यन्तर में कृष्ण, किन्तु वहिर्भाग में अकृष्ण, विद्युतवत् गौरवर्ण, सुमेधागण,-सङ्कीर्त्तनबहुल अर्चनाविधि के द्वारा उनकी अर्चना करते हैं, उसके साथ-नदीय अङ्ग सदृश-श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीअद्वैत प्रभु, उपाङ्ग,-अङ्ग के अङ्ग सदृश' श्रीवास पण्डितादि अस्त्र-अविद्या काननच्छेदक अस्त्रसदृश श्रीभगवन्नाम, एवं पार्षदवृन्द श्रीगदाधर श्रीगोविन्द प्रभृति की भी पूजा करते हैं। २५।

कलियुगे सर्व-धर्म हरिसङ्कीर्त्तन।
सब प्रकाशिलेन श्रीचैतन्य नारायण ॥२६
कलियुगे सङ्कीर्त्तन-धर्म पालिबारे।
अवतीर्ण हैला प्रभु सर्व-परिकरे ॥२७
प्रभुर आज्ञाय आगे सर्व-परिकर।
जन्म लभिलेन सभे मानुष भितर ॥२८
कि अनन्त, कि शिव, विरिञ्चि, ऋषिगण।
यत अवतारेर पार्षद आप्तगण ॥२९
भागवत रूपे जन्म हइल सभार।
कृष्ण से जानेन, यार अंशे जन्म यार ॥३०
कारो जन्म नवद्वीपे, कारो चाटिग्रामे।
केहो राढ़े, ओड्र-देशे, श्रीहट्टे, पश्चिमे ॥३१
नाना-स्थाने अवतीर्ण हैला भक्तगण।
नवद्वीपे आसि हैल सभार मिलन ॥३२
नवद्वीपे हइब प्रभुर अवतार।
अतएव नवद्वीपे मिलन सभार ॥३३
नवद्वीप-हेन ग्राम त्रिभुवने नाञि।
यहिँ अवतीर्ण हैला चैतन्यगोसाञि ॥३४
सर्ववैष्णवेर जन्म नवद्वीपग्रामे।
कोनो महाप्रियेर से जन्म अन्यस्थाने ॥३५
श्रीवास पण्डित, आर श्रीराम पण्डित।
श्रीचन्द्रशेखर देव त्रैलोक्यपूजित ॥३६

भवरोगवैद्य श्रीमुरारि नाम याँर ।
श्रीहट्टे ए सब वैष्णवेर अवतार ॥३७
पुण्डरीक विद्यानिधि वैष्णव प्रधान ।
चैतन्यबल्लभ दत्त वासुदेव नाम ॥३८
चाटिग्रामे हइल इँहासभार प्रकाश ।
बुढ़ने हइला अवतीर्ण हरिदास ॥३९
राढ़-माझे एकचाका नामे आछे ग्राम ।
तहिँ अवतीर्ण नित्यानन्द भगवान् ॥४०
हाड़ाइ पण्डित नाम शुद्ध विप्रराज ।
मूले सर्वपिता, ताने करि पिता-व्याज ॥४१
कृपासिन्धु भक्तिदाता श्रीवैष्णव-धाम ।
राढ़े अवतीर्ण हैला नित्यानन्द-राम ॥४२
महा जयजय ध्वनि पुष्पबरिषण ।
संगोपे देवतागणे कैलेन तखन ॥४३
सेइ दिन हैते राढ़मण्डलसकल ।
पुनःपुन बाढ़िते लागिल सुमङ्गल ॥४४
त्रिहुते परमानन्द-पुरीर प्रकाश ।
नीलाचले तान संगे एकत्रे विलास ॥४५
गङ्गातीर पुण्याश्रय सकल थाकिते ।
वैष्णव जन्मये केन शोच्य देशेते ? ॥४६
आपने हइला अवतीर्ण गङ्गातीरे ।
संगेर पार्षद केने जन्मायेन दूरे ? ॥४७
ये ये देश गङ्गा-हरिनाम-विवर्ज्जित ।
ये देशे पाण्डव नाहि गेला कदाचित ॥४८
से सब जीवेरे कृष्ण वत्सल हइया ।
संगेर पार्षद जन्माये ता सभा लागिया ॥४९
संसार तारिते श्रीचैतन्य अवतार ।
आपने श्रीमुखे करियाछेन अङ्गीकार ॥५०
शोच्य देशे, शोच्य कुले, आपन समान ।
जन्माइया वैष्णव सभारे करे त्राण ॥५१
ये देशे ये कुले भागवत अवतरे ।
ताहार प्रभावे लक्षयोजन निस्तारे ॥५२
ये स्थाने वैष्णवगण करेन विजय ।
सेइ स्थान हय अतिपुण्य-तीर्थमय ॥५३
अतएव सर्वदेशे निज-भक्तगण ।
अवतीर्ण कैला श्रीचैतन्य नारायण ॥५४
नाना-स्थाने अवतीर्ण हैला भक्तगण ।
नवद्वीपे आसि सभार हइल मिलन ॥५५
नवद्वीपे हइब प्रभुर अवतार ।
अतएव नवद्वीपे मिलन सभार ॥५६
नवद्वीप-हेन ग्राम त्रिभुवने नाञि ।
यहिँ अवतीर्ण हैला चैतन्य गोसाञि ॥५७
अवतरिबेन प्रभु जानिञा विधाता ।
सकल सम्पूर्ण करि थुइलेन तथा ॥५८
नवद्वीपेर सम्पत्ति के वर्णिबारे पारे ।
एक गङ्गाघाटे लक्ष लोक स्नान करे ॥५९
त्रिविध वयसे एको जाति लक्षलक्ष ।
सरस्वतीदृष्टिपाते सभे महादक्ष ॥६०
सभे 'महा-अध्यापक' करि गर्व धरे ।
बालकेहो भट्टाचार्य्य-सने कक्षा करे ॥६१
नाना देश हैते लोक नवद्वीपे याय ।
नवद्वीपे पढ़िले से विद्यारस पाय ॥६२
अतएव पढ़ुयार नाहि समुच्चय ।
लक्षकोटि अध्यापक—नाहिक निर्णय ॥६३
रमा-दृष्टिपाते सर्वलोक सुखे वसे ।
व्यर्थ काल याय मात्र व्यवहार-रसे ॥६४
कृष्णनाम-भक्तिशून्य सकल संसार ।
प्रथम-कलिते हैल भविष्य-आचार ॥६५

'धर्म-कर्म' लोक सभे एइमात्र जाने ।
मंगलचण्डीर गीते करे जागरणे ॥६६
दम्भ करि विषहरि पूजे कोन जने ।
पुत्तलि करये केहो दिया बहुधने ॥६७
धन नष्ट करे पुत्र कन्यार बिभाये ।
एइ सबे रत आर किछु ना जानये ॥६८
येबा भट्टाचार्य्य, चक्रवर्त्ती, मिश्र सब ।
ताहारा-हो ना जानये ग्रन्थ-अनुभव ॥६९
शास्त्र पढ़ाइया सभे एइ कर्म करे ।
श्रोतार सहिते यम-पाशे बन्दी मरे ॥७०
ना बाखाने युगधर्म—कृष्णेर कीर्त्तन ।
दोष बहि गुण कारो ना करे कथन ॥७१
येबा सब विरक्त-तपस्वी-अभिमानी ।
ता'सभार मुखे-ह नाहिक हरिध्वनि ॥७२
अति बड़ सुकृति से स्नानेर समये ।
'गोविन्द पुण्डरीकाक्ष' नाम उच्चारये ॥७३
गीता-भागवते ये ये जने वा पढ़ाये ।
भक्तिर व्याख्यान नाहि ताहार जिह्वाये ॥७४
एइ मत विष्णुमाया-मोहित संसार ।
देखि, भक्त सब दुःख भावेन अपार ॥७५
"केमते एसब जीव पाइब उद्धार ।
विषय-सुखेते सब मजिल संसार ॥७६
बलिलेओ केहो नाहि लय कृष्ण नाम ।
निरवधि विद्या कुल करेन व्याख्यान ॥७७
स्वकार्य्य करेन सब भागवतगण ।
कृष्ण पूजा, गङ्गास्नान, कृष्णेर कथन ॥७८
सभे मेलि जगतेरे करे आशीर्वाद ।
'शीघ्र कृष्णचन्द्र करो सभारे प्रसाद ॥'"७९

सेइ नवद्वीपे वैसे वैष्ण बाग्रगण्य ।
'अद्वैत-आचार्य्य' नाम सर्वलोके धन्य ॥८०
ज्ञान-भक्ति-वैराग्येर गुरु मुख्यतर ।
कृष्णभक्ति बाखानिते येहेन शङ्कर ॥८१
त्रिभुवने आछे यत शास्त्र-परचार ।
सर्वत्र बाखाने 'कृष्णपद-भक्तिसार' ॥८२
तुलसीमञ्जरी सहित गङ्गाजले ।
निरवधि सेवे कृष्ण महाकुतूहले ॥८३
हुङ्कार करये कृष्ण-आवेशेर तेजे ।
ये ध्वनि ब्रह्माण्ड भेदि वैकुण्ठेते बाजे ॥८४
ये प्रेमार हुङ्कार शुनिञा कृष्ण नाथ ।
भक्तिवशे आपनेइ हइला साक्षात् ॥८५
अतएव अद्वैत वैष्णब-अग्रगण्य ।
निखिल-ब्रह्माण्डे याँर भक्तियोग धन्य ॥८६
एइमत अद्वैत वैसेन नदीयाय ।
भक्तियोग-शून्य लोक देखि दुःख पाय ॥८७
सकल संसार मत्त व्यवहार रसे ।
कृष्णपूजा कृष्णभक्ति केहो नाहि बासे ॥८८
बाशुली पूजये केहो नाना उपहारे ।
मद्य मांस दिया केहो यक्ष पूजा करे ॥८९
निरवधि नृत्य-गीत-वाद्य-कोलाहल ।
ना शुने कृष्णेर नाम परम मङ्गल ॥९०
कृष्णशून्य मङ्गले देवेर नाहि सुख ।
विशेषे अद्वैत बड़ पाय मने दुःख ॥९१
स्वभावे अद्वैत बड़ कारुण्य-हृदय ।
जीवेर उद्धार चिन्ते हइया सदय ॥९२
"मोर प्रभु आसि यदि करे अवतार ।
तबे हय ए सकल जीवेर उद्धार ॥९३

तबे त 'अद्वैत सिंह' आमार बड़ाञि ।
वैकुण्ठ-वल्लभ यदि देखाङ एथाञि ॥९४
आनिञा वैकुण्ठनाथ साक्षात् करिया ।
नाचिब गाइब सर्वजीव उद्धारिया ॥"९५
निरवधि एइमत सङ्कल्प करिया ।
सेबेन श्रीकृष्णचन्द्र एकचित्त हैइया ॥९६
'अद्वैतेर कारणे चैतन्य-अवतार' ।
सेइ प्रभु कहिया आछेन बारबार ॥९७
सेइ नवद्वीपे बैसे पण्डित श्रीवास ।
याहार मन्दिरे हैल चैतन्य-विलास ॥९८
सर्वकाल चारि भाइ गाय 'कृष्ण'-नाम ।
त्रिकाल करये कृष्णपूजा गङ्गास्नान ॥९९
निगूढ़े अनेक आरो बैसे नदीयाय ।
पूर्वेइ जन्मिला सभे चैतन्य-आज्ञाय ॥१००
श्रीचन्द्रशेखर, जगदीश, गोपीनाथ ।
श्रीमुरारि गुप्त, श्रीगरुड़,गङ्गादास ॥१०१
एके एके बलिते हय पुस्तक-बिस्तार ।
कथार प्रस्तावे नाम लइब जानि यार ॥१०२
सबेइ स्वधर्म-पर सबेइ उदार ।
कृष्णभक्ति बिने केहो ना जानये आर ॥१०३
सभे करे सभारे बान्धब-व्यवहार ।
केह कारो ना जानेन निज अवतार ॥१०४
विष्णुभक्तिशून्य देखि सकल संसार ।
अन्तरे दहये बड़ चित्तसभाकार ॥१०५
कृष्णकथा शुनिबेक हेन नाहि जन ।
आपना-आपनि सभे करेन कीर्त्तन ॥१०६
दुइ चारि दण्ड थाकि अद्वैत-सभाय ।
कृष्ण-कथा प्रसङ्गे सभार दुःख याय ॥१०७
दग्ध देखे सकल संसार भक्तगण ।
आलापेर स्थान नाहि, करये क्रन्दन ॥१०८
सकल वैष्णव मेलि आपनि अद्वैते ।
प्राणिमात्र कारे केहो नारे बुझाइते ॥१०९
दुःख भावि अद्वैत करेन उपवास ।
सकल वैष्णवगणे छाड़े दीर्घश्वास ॥११०
केने बा कृष्णेर नृत्य, केने बा कीर्त्तन ?
कारे बा वैष्णव बलि, किबा संकीर्त्तन ?१११
किछु नाहि जाने लोक धन-पुत्र-रसे ।
सकल पाषण्ड मेलि वैष्णवेरे हासे' ॥११२
चारि भाइ श्रीवास मिलिया निज घरे ।
निशा हैले हरिनाम गाय उच्च-स्वरे ॥११३
शुनिञा पाषण्डी बोले–"हइल प्रमाद ।
ए ब्राह्मण करिबेक ग्रामेर उत्सादा ॥११४
महा-तीव्र नरपति यवन इहार ।
ए आख्यान शुनिले, प्रमाद नदीयार ॥"११५
केहो बोले "ए वामने एइ ग्राम हैते ।
घर भाङ्गि घुचाइ फ़ेलाइ निञा स्रोते ॥११६
ए वामने घुचाइले ग्रामेर मङ्गल ।
अन्यथा यवने ग्राम करिबे कबल ॥"११७
एइमत बोले यत पाषण्डीर गण ।
शुनि 'कृष्ण' बलि कान्दे भागवतगण ॥११८
शुनिञा अद्वैत क्रोधे अग्नि-हेन ज्वले ।
दिगम्बर हइञा सर्ववैष्णवेरे बोले ॥११९
"शुन श्रीनिवास ! गङ्गादास ! शुक्लाम्बर ।
कराइब कृष्ण सर्व-नयनगोचर ॥१२०
सभा उद्धारिब कृष्ण ,आपने आसिया ।
बुझाइब कृष्णभक्ति तोमा' सबा लइया ॥१२१

यबे नाहि पारों तबे एइ देह हैते ।
प्रकाशिया चारि भुज, चक्र लइमु हाते ॥१२२
पाषण्डी काटिया करिमु स्कन्ध नाश ।
तबे कृष्ण प्रभु मोर, मुञि तार दास ॥१२३
एइ मत अद्वैत बोलेन अनुक्षण ।
संकल्प करिया पूजे श्रीकृष्ण-चरण ॥१२४
भक्तसब निरवधि एकचित्त हइया ।
पूजे कृष्णपादपद्म क्रन्दन करिया ॥१२५
सर्व-नवद्वीपे भ्रमे' भागवतगण ।
कोथाओ ना शुने भक्तियोगेर कथन ॥१२६
केहो दुःखे चाहे निज शरीर एड़िते ।
केहो 'कृष्ण' बलि श्वास छाड़ये कान्दिते ॥१२७
अन्न भालमते कारो ना रुचये मुखे ।
जगतेर व्यवहार देखि पाय दुःखे ॥१२८
छाड़िलेन भक्तगण सर्व-उपभोग ।
अवतरिबारे प्रभु करिला उद्योग ॥१२९
ईश्वर-आज्ञाय आगे श्रीअनन्त धाम ।
राढ़े अवतीर्ण हैला नित्यानन्द-राम ॥१३०
माघमासे शुक्ला-त्रयोदशी शुभदिने ।
पद्मावतीगर्भे एकचाका-नामे ग्रामे ॥१३१
हाड़ाइ-पण्डित नामे शुद्ध विप्रराज ।
मूले सर्व-पिता, ताने करि पिता-व्याज १३२
कृपासिन्धु भक्तगण-प्राण बलराम ।
अवतीर्ण हैला, धरि नित्यानन्द नाम ॥१३३
महा जयजयध्वनि पुष्प बरिषण ।
संगोपे देवतागण करिला तखन ॥१३४
सेइ दिन हैते राढ़मण्डल सकल ।
बाढ़िते लागिल पुनःपुन सुमङ्गल ॥१३५
ये प्रभु पतित-जन-निस्तार करिते ।
अवधूत-बेश धरि भ्रमिला जगते ॥१३६

अनन्तेर प्रकाश हइला हेन-मते ।
एबे शुन, कृष्ण अवतीर्ण येन-मते ॥१३७
नवद्वीपे आछे जगन्नाथ मिश्रवर ।
वसुदेव-प्राय तेँहो स्वधर्मे तनपर ॥१३८
उदार-चरित्र तेँहो ब्रह्मण्येर सीमा ।
हेन नाहि याहा दिया करिब उपमा ॥१३९
कि कश्यप, दशरथ,वसुदेव, नन्द ।
सर्वमय- तत्त्व जगन्नाथमिश्रचन्द्र ॥१४०
तान पत्नी शची-नाम महा-पतिव्रता ।
मूर्त्तिमती विष्णुभक्ति सेइ जगन्माता ॥१४१
बहु कन्या-पुत्रेर हइल तिरोभाव ।
सबे एक पुत्र विश्वरूप महाभाग ॥१४२
विश्वरूप-मूर्त्ति येन अभिन्न-मदन ।
देखि हरषित दुइ ब्राह्मणी-ब्राह्मण ॥१४३
जन्म हैते विश्वरूपेर हइला विरक्ति ।
शैशवेइ सकल-शास्त्रेते हैल स्फूर्त्ति ॥१४४
विष्णुभक्ति-शून्य हैल सकल संसार ।
प्रथम कलिते हैल भविष्य आचार ॥१४५
धर्म तिरोभाव हैले प्रभु अवतरे ।
'भक्त सब दुःख पाय' जानिया अन्तरे ॥१४६
तबे महाप्रभु गौरचन्द्र भगवान् ।
शची-जगन्नाथ-देहे हैल अधिष्ठान ॥१४७
जयजयध्वनि हैल अनन्त-वदने ।
स्वप्नप्राय जगन्नाथमिश्र शची शुने ॥१४८
महा-तेज- मूर्त्ति हइलेन दुइ-जने ।
तथापिह लखिते ना पारे अन्य-जने ॥१४९
अवतीर्ण हइबेन ईश्वर जानिञा ।
ब्रह्म-शिव-आदि स्तुति करेन आसिया ॥१५०
अति-महा-वेद-गोप्य ए सकल कथा ।
इहाते सन्देह किछु नाहिक सर्वथा ॥१५१

भक्ति करि ब्रह्मादि-देवेर शुन स्तुति ।
ये गोप्य श्रवणे हय कृष्णे रति मति ॥१५२
"जयजय महाप्रभु जनक सभार ।
जयजय सङ्कीर्त्तन-हेतु-अवतार ॥१५३
जयजय वेद-धर्म-साधु-विप्रपाल ।
जयजय अभक्त-दमन-महाकाल ॥१५४
जयजय सर्व-सत्यमय-कलेबर ।
जयजय इच्छामय महा-महेश्वर ॥१५५
ये तुमि अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्डेर वास ।
से तुमि श्रीशची-गर्भे करिला प्रकाश ॥१५६
तोमार ये इच्छा, के बुझिते तार पात्र ?
सृष्टि, स्थिति, प्रलय तोमार लीला मात्र ॥१५७
सकल संसार याँर इच्छाय संहारे' ।
से कि कंस-रावण बधिते वाक्ये नारे ? १५८
तथापिह दशरथ-वसुदेव-घरे ।
अवतीर्ण हइया बधिला ता'सभारे ॥१५९
एतेके के बुझे प्रभु तोमार कारण ?
आपनि से जान तुमि आपनार मन ॥१६०
तोमार आज्ञाय एक सेवके तोमार ।
अनन्त ब्रह्माण्ड पारे करिते उद्धार ॥१६१
तथापिह तुमि से आपने अवतरि ।
सर्व-धर्म बुझाओ पृथिवी धन्य करि ॥१६२
सत्य-युगे तुमि प्रभु शुभ्र-वर्ण धरि ।
तपोधर्म बुझाओ आपने तप करि ॥१६३
कृष्णाजिन, दण्ड, कमण्डलु, जटा धरि ।
धर्म स्थाप' ब्रह्मचारि-रूपे अवतरि ॥१६४
त्रेता-युगे हइया सुन्दर रक्तवर्ण ।
हइ यज्ञपुरुष बुझाओ यज्ञ धर्म ॥१६५
स्रुक्-स्रुब-हस्ते यज्ञ आपने करिया ।
सभारे लओयाओ यज्ञ, याज्ञिक हइया ॥१६६
दिव्य-मेघ-श्यामवर्ण हइया द्वापरे ।
पूजा-धर्म बुझाओ आपने घरेघरे ॥१६७
पीतवास-श्रीवत्सादि निज चिह्न धरि ।
पूजा कर, महाराज-रूपे अवतरि ॥१६८
कलि-युगे विप्ररूपे धरि पीतवर्ण ।
बुझाबारे वेदगोप्य सङ्कीर्त्तनधर्म ॥१६९
कतेक बा तोमार अनन्त अवतार ।
कार शक्ति आछे इहा संख्या करिबार ? १७०
मत्स्य-रूपे तुमि जले प्रलये विहर ।
कूर्म-रूपे तुमि सब-जीवेर आधार ॥१७१
हयग्रीब-रूपे कर वेदेर उद्धार ।
आदि-दैत्य दुइ 'मधु' 'कैटभ' संहार ॥१७२
श्रीवराह-रूपे कर पृथिवी उद्धार ।
नरसिंह-रूपे कर हिरण्य-विदार ॥१७३
बलि छल' अपूर्व-वामन-रूप हइ ।
परशुराम-रूपे कर निःक्षत्रिया मही ॥१७४
रामचन्द्र-रूपे कर रावण-संहार ।
हलधर-रूपे कर अनन्त-बिहार ॥१७५
बुद्ध-रूपे दया-धर्म करह प्रकाश ।
कल्की-रूपे कर म्लेच्छगणेर विनाश ॥१७६
धन्वन्तरि-रूपे कर अमृत प्रदान ।
हंस-रूपे ब्रह्मादिरे कह तत्त्वज्ञान ॥१७७
श्रीनारद-रूपे वीणा धरि कर गान ।
व्यास-रूपे कर निज-तत्त्वेर व्याख्यान ॥१७८
सर्व-लीला-लावण्य-वैदग्धी करि संगे ।
कृष्ण-रूपे गोकुले करिला बहु-रंगे ॥१७९
एइ अवतारे भागवत-रूप धरि ।
कीर्त्तन करिबा सर्वशक्ति परचारि ॥१८०
सङ्कीर्त्तने पूर्ण हैब सकल-संसार ।
घरेघरे हैब प्रेम-भक्ति परचार ॥१८१

कि कहिव पृथिवीर आनन्द प्रकाश ।
तुमि नृत्य करिबे मिलिया सर्व-दास ॥१८२
ये तोमार पादपद्म ध्यान नित्य करे ।
ता' सभार प्रभावेइ अमङ्गल हरे ॥१८३
पदताले खण्डे पृथिवीर अमङ्गल ।
दृष्टिमात्रे दशदिग हय सुनिर्मल ॥१८४
बाहु तुलि नाचिते स्वर्गेर विघ्न नाश ।
हेन यश, हेन नृत्य, हेन तोर दास ॥१८५

तथाहि पद्म-पुराणे—

"पद्भ्यां भूमेर्दिशो दृग्भ्यां
दोर्भ्याञ्चामङ्गलं दिवः ।
वहुधोत्सार्य्यते राजन् !
कृष्णभक्तस्य नृत्यतः ॥"१८६॥ इति ।

पद्भ्यामिति । नृत्यतो कृष्णभक्तस्य पादादिभिः क्रमात् भूम्यादेरमङ्गलम्, उत्सार्य्यते-विनश्येत इत्यर्थः ॥१८६ ।

हे राजन् ! कृष्णभक्त जिस समय भक्ति प्रवणता से नृत्य करते रहते हैं, उस समय जागतिक विविध अमङ्गल विनाश होते हैं । तदीय पदद्वय, पृथिवी का, नयनयुगल, दिक् समूह का एवं बाहुद्वय अमरपुर का अमङ्गल विदूरित करते हैं ।१८६

से प्रभु आपने तुमि साक्षात् हइया ।
करिबा कीर्त्तन-प्रेम भक्तगोष्ठी लैया ॥१८७
ए महिमा प्रभु बलिबारे कार शक्ति ।
तुमि बिलाइबा वेदगोप्य विष्णुभक्ति ॥१८८
मुक्ति दिया ये भक्ति राखह गोप्य करि ।
आमिसब ये निमित्ते अभिलाष करि ॥१८९
जगतेरे प्रभु तुमि दिवा' हेन धन ।
तोमार कारुण्य सबे इहार कारण ॥१९०
ये तोमार नामे प्रभु सर्व-यज्ञ पूर्ण ।
से तुमि हइला नवद्वीपे अवतीर्ण ॥१९१
एइ कृपा कर प्रभु हइया सदय ।
येन आमा'सभार देखिते भाग्य हय ॥१९२
एतदिने गङ्गार पूरिल मनोरथ ।
तुमि क्रीड़ा करिबे देवीर अभिमत ॥१९३
ये तोमारे योगेश्वर-सभे देखे ध्याने ।
से तुमि विदित हैबा नवद्वीप-ग्रामे ॥१९४
नवद्वीप प्रतिओ थाकुक नमस्कार ।
शची-जगन्नाथ-गृहे यथा अवतार ॥"१९५
एइमत ब्रह्मादि-देवता प्रतिदिने ।
गुप्ते रहि ईश्वरेर करेन स्तवने ॥१९६
शचीगर्भे बैसे सर्व-भुवनेर बास ।
फाल्गुनी-पूर्णिमा आसि हइला प्रकाश ॥१९७
अनन्त-ब्रह्माण्डे यत आछे सुमङ्गल ।
सेइ पूर्णिमाय आसि मिलिला सकल ॥१९८
सङ्कीर्त्तन-सहित प्रभुर अवतार ।
ग्रहणेर छले ताहा करेन प्रचार ॥१९९
ईश्वरेर कर्म बुझिबार शक्ति का'य ।
चन्द्र आच्छादिल राहु ईश्वर-इच्छाय ॥२००
सर्व-नवद्वीपे देखे हइल ग्रहण ।
उठिल मङ्गल-ध्वनि श्रीहरिकीर्त्तन ॥२०१
अनन्त अर्वुद लोक गङ्गास्नाने याय ।
'हरि बोल हरि बोल' बलि सबे धाय ॥२०२
हेन हरिध्वनि हैल सर्व-नदीयाय ।
ब्रह्माण्ड पूरिया ध्वनि स्थान नाहि पाय ॥२०३
अपूर्व शुनिञा सब भागवतगण ।
सभे बोले "निरन्तर हउक ग्रहण ॥"२०४
सभे बोले "आजि बड़ वासिये उल्लास ।
हेन बुझि, किवा कृष्ण करिला प्रकाश ॥२०५
गङ्गास्नाने चलिलेन सकल भक्तगण ।
निरवधि चतुर्द्दिगे हरि सङ्कीर्त्तन ॥२०६

किबा शिशु, वृद्ध, नारी सज्जन, दुर्ज्जन ।
सभे 'हरि हरि' बोले देखिया ग्रहण ॥२०७
'हरि बोल हरि बोल' सबे एइ शुनि ।
सकल ब्रह्माण्डे व्यापिलेक हरिध्वनि ॥२०८
चतुर्द्दिके पुष्पवृष्टि करे देवगण ।
जयशब्दे दुन्दुभि बाजये अनुक्षण ॥२०९
हेनइ समये सर्व-जगत्-जीवन ।
अवतीर्ण हइलेन श्रीशचीनन्दन ॥२१०

धानशी ।

राहु-कबल-इन्दु, परकाश नाम सिन्धु,
कलि-मर्द्दन बान्धे बाणा ।
पहुँ भेल प्रकाश, भुवन चतुर्द्दश,
जयजय पड़िल घोषणा ॥२११
हे माइ ! हे माइ ! देखत गौराङ्गचन्द्र ।
नदीयाक लोक-, शोक सब नाशल,
दिनेदिने बाढ़ल आनन्द ॥२१२
दुन्दुभि बाजे, शत शङ्ख गाजे,
बाजये वेणु-बिषाणा ।
श्रीचैतन्य-चन्द्र, नित्यानन्द ठाकुर,
वृन्दावन दास गुण गाना ॥२१३

धानशी ।

जिनिञा रवि-कर, अङ्ग मनोहर,
नयने हेरइ ना पारि ।
आयत लोचन, ईषत बङ्किम,
उपमा नाहिक विचारि ॥ध्रु॥
(आजु) विजये गौराङ्ग, अवनी-मण्डले
चौदिगे शुनिञा उल्लास ।
एक हरि-ध्वनि, आब्रह्म भरि शुनि,
गौराङ्गचाँदेर परकाश ॥२१४
चन्दने उज्ज्वल, वक्ष परिसर,
दोलये ताहाँ वन-माल ।
चाँद-सुशीतल, श्रीमुख-मण्डल,
आजानु बाहु बिशाल ॥२१५
देखिया चैतन्य, भुवने धन्य धन्य,
उठये जयजय नाद ।
कोइ नाचत, आनन्दे गायत,
कलि हैला हरिषे-विषाद ॥२१६
चारि वेदाग्रण्य, मुकुट चैतन्य,
पामर मूढ़ नाहि जाने ।
श्रीचैतन्यनिताइ, ठाकुर दु'भाइ,
वृन्दावन दास (तछु पदे) गाने ॥२१७

पठमञ्जरी ।

(एकपदी)

प्रकाश हइला गौरचन्द ।
दश दिगे उठिल आनन्द ॥ ध्रु ॥
रूप कोटि मदन जिनिञा ।
हासे निज कीर्त्तन शुनिञा ॥२१८
अति सुमधुर मुख आँखि ।
महाराज-चिह्न सब देखि ॥२१९
श्रीचरणे ध्वज वज्र शोभे ।
सब-अङ्गे जग-मन लोभे ॥२२०
दूरे गेल सकल आपद ।
व्यक्त हैल सकल सम्पद ॥२२१
श्रीचैतन्य नित्यानन्द जान ।
वृन्दावनदास गुण गान ॥२२२

नटमङ्गल ।

चैतन्य अवतार, शुनिञा देवगण रे,
उठिल परम मङ्गल रे-आ—।

सकल-ताप हर, श्रीमुख-चन्द्र देखि,
आनन्दे हइला विह्वल रे आ–॥ ध्रु ॥
अनन्त ब्रह्मा शिव, आदि करि यत देव,
सभेइ नररूप धरि रे आ–।
गायेन हरि हरि, ग्रहण छल करि,
लखिते केहो नाहि पारि रे ॥२२३
दश-दिगे धाय, लोक नदीयाय,
बलिया उच्च हरि हरि रे-आ– ।
मानुष देव मिलि, एक-ठाञि केलि,
आनन्दे नवद्वीप पूरि रे ॥२२४
शचीर अङ्गने, सकल देवगणे'
प्रणाम हइया पड़िल रे-आ–।
ग्रहण-अन्धकारे, लखिते केहो नारे,
दुर्ज्ञेय चैतन्येर खेला रे ॥२२५
केहो पढ़े स्तुति, काहारो हाथे छाति,
केहो चामर ढुलाय रे-आ–।
परम-हरिषे, कुसुम बरिषे,
केहो नाचे, गाय, बा'य रे ॥२२६
सकल शकति संग, आइला गौरचन्द्र,
पाषण्ड किछुइ ना जान रे-आ–।
श्रीकृष्णचैतन्य, प्रभु नित्यानन्द,
वृन्दावनदास रस गान रे ॥२२७

मङ्गल राग।

दुन्दुभि डिण्डिम, मङ्गल जय ध्वनि,
गाय मधुर रसाल रे ।
वेदेर अगोचर, आजु भेटब,
विलम्वे नाहिक काज रे ॥ ध्रु ॥
आनन्दे इन्द्रपुर, मङ्गल-कोलाहल,
साज, साज बलि साज रे ।
बहुत पुण्य-भाग्ये, चैतन्य परकाश,
पाओल नवद्वीप माझ रे ॥२२८
अन्योऽन्ये आलिङ्गन, चुम्बन घने घन,
लाज केहो नाहि मान रे ।
नदीया-पुरन्दर, जनम-उल्लासे
आपन पर नाहि जान रे ॥२२९

[गौराङ्ग सुन्दर]

ऐछन कौतुके, आइला नवद्वीपे'
चौदिगे शुनि हरिनाम रे ।
पाइया गोरा-रस, विह्वल-परवश,
चैतन्य जयजय गान रे ॥२३०
देखिल शची-गृहे' गौराङ्ग सुन्दरे,
एकत्र यैछे कोटी चान्द रे ।
मानुष-रूप धरि, ग्रहण-छल करि,
बोलये उच्च हरिनाम रे ॥२३१
सकल-शक्तिसङ्गे, आइला गौरचन्द्र,
पाषण्डी किछुइ ना जान रे ।
श्रीचैतन्य नित्यानन्द,- चान्द प्रभु जान,
वृन्दावन-दास रस गान रे ॥२३२

(एकपदी)

(प्रेम-धन रतन पसार ।
देख गोराचाँदेर बाजार ॥२३३)
हेनमते प्रभुर हइल अवतार ।
आगे हरिसङ्कीर्त्तन करिया प्रचार ॥२३४
चतुर्द्दिके धाय लोक ग्रहण देखिया ।
गङ्गा-स्नाने 'हरि' बलि यायेन धाइया ॥२३५
यार मुखे ए जन्मेओ नाहिक हरिनाम ।
सेहो 'हरि' बलि धाय करि गङ्गा-स्नान ॥२३६

दश-दिगे पूर्ण हइ उठे हरि-ध्वनि ।
अवतीर्ण हइ शुनि हासे द्विजमणि ।।२३७
शची-जगन्नाथ देखि पुत्रेर श्रीमुख ।
दुइजन हइलेन आनन्द-स्वरूप ।।२३८
कि विधि करिब इहा, किछुइ ना स्फुरे ।
आथेव्यथे नारीगण जयकार पूरे ।।२३९
धाइया आइला सभे यत आप्तगण ।
आनन्द हइल जगन्नाथेर भवन ।।२४०
शचीर जनक—चक्रवर्त्ती नीलाम्बर ।
प्रतिलग्ने अद्भुत देखेन विप्रवर ।।२४१
महाराजलक्षण सकल लग्ने कहे ।
रूप देखि चक्रवर्त्ती हइला विस्मये ।।२४२
'विप्र राजा गौड़े हइबेक' हेन आछे ।
विप्रबोले "सेइबा जानिब ताहा पाछे" ।।२४३
महाज्योतिर्वित् विप्र सभार अग्रेते ।
लग्न-अनुरूप कथा लागिला कहिते—।।२४४
"लग्ने यत देखि एइ बालक-महिमा ।
राजा हेन, वाक्ये ताँरे दिते नारि सीमा ।।२४५
वृहस्पति जिनिञा हइब विद्यावान ।
अल्पेइ हइब सर्वगुणेर निधान ।।"२४६
सेइखाने विप्ररूपे एक महाजन ।
प्रभुर भविष्य कर्म करये कथन ।।२४७
विप्र बोले "ए शिशु साक्षात् नारायण ।
इहा हैते सर्वधर्म हइब स्थापन ।।२४८
इहा हइते हइबेक अपूर्व प्रचार ।
ए शिशु करिब सर्व-जगत-उद्धार ।।२४९
ब्रह्मा शिव शुक याहा वाञ्छे अनुक्षण ।
इहा हैते ताहा पाइबेक सर्वजन ।।२५०
सर्वभूत-दयालु निर्वेद दरशने ।
सर्वजगतेर प्रीत हइब इहाने ।।२५१
अन्येर कि दाय विष्णुद्रोही ये यवन ।
ताहाराओ ए शिशुर भजिब चरण ।।२५२
अनन्त-ब्रह्माण्डे कीर्त्ति गाइब इहान ।
आदि विप्र ए शिशुरे करिब प्रणाम ।।२५३
भागवतधर्ममय इहान शरीर ।
देव-द्विज-गुरु-पितृ-मातृ-भक्त धीर ।।२५४
विष्णु येन अवतरि लओयायेन धर्म ।
सेइमत ए शिशु करिब सर्व कर्म ।।२५५
लग्ने यत कहे शुभ लक्षण इहान ।
कार् शक्ति आछे ताहा करिते आख्यान ?२५६
धन्य तुमि मिश्र-पुरन्दर भाग्यवान ।
यार ए नन्दन तारे रहुक प्रणाम ।।२५७
हेन कोष्ठी गणिलाङ् आमि भाग्यवान ।
'श्रीबिश्वम्भर'-नाम हइब इहान ।।२५८
इहाने बलिब लोक 'नवद्वीपचन्द्र' ।
ए बालक जानिह केवल परानन्द ।।"२५९
हेन रसे पाछे हय दुःखेर प्रकाश ।
अतएव ना कहिला प्रभुर सन्न्यास ।।२६०
शुनि जगन्नाथ-मिश्र पुत्रेर आख्यान ।
आनन्दे विह्वल विप्रे दिते चाहे दान ।।२६१
किछु नाहि—सुदरिद्र, तथापि आनन्दे ।
विप्रेर चरण धरि मिश्रचन्द्र कान्दे ।।२६२
सेइ विप्र कान्दे जगन्नाथ-पा'ये धरि ।
आनन्दे सकल लोक बोले 'हरिहरि' ।।२६३
दिव्य कोष्ठी शुनि यत बान्धव सकल ।
जयजय दिया सभे करेन मङ्गल ।।२६४

ततक्षणे आइला सकल वाद्यकार ।
मृदङ्ग सानाजि वंशी बाजये अपार ॥२६५
देवस्त्रीये नरस्त्रीये ना पारि चिनिते ।
देवे नरे एकत्र हइल भालमते ॥२६६
देवमाता सव्य हाथे धान्य दूर्वा लैया ।
हासि देन प्रभु-शिरे'चिर आयु' बलिया ॥२६७
चिरकाल पृथिवीते करह प्रकाश ।
अतएव 'चिरायु' बलिया हैल हास ॥२६८
अपूर्व सुन्दरी सब शची-देवी देखे ।
वार्त्ता जिज्ञासिते कारो नाहि आइसे मुखे ॥२६९
शचीर चरणधूलि लय देवीगण ।
आनन्दे शचीर मुखे ना आइसे वचन ॥२७०
कि आनन्द हइल से जगन्नाथ-घरे ।
वेदेते अनन्ते ताहा वर्णिते ना पारे ॥२७१
न- केबल शची-गृहे, सर्व-नदीयाय ।
ये आनन्द हैल, ताहा कहन ना याय ॥२७२
कि नगरे, कि चत्वरे, किवा गङ्गातीरे ।
निरवधि लोके 'हरिहरि' ध्वनि करे ॥२७३
जन्मयात्रा-महोत्सब निशाय ग्रहणे ।
आनन्द करेन,केहो मर्म नाहि जाने ॥२७४
चैतन्येर जन्मयात्रा फाल्गुनी पूर्णिमा ।
ब्रह्मा-आदि ए तिथिर करे आराधन ॥२७५
परम पवित्र तिथि मुक्ति-स्वरूपिणी ।
यहिँ अवतीर्ण हइलेन द्विजमणि ॥२७६
नित्यानन्द जन्म माघ-शुक्ला-त्रयोदशी ।
गौरचन्द्र-प्रकाश फाल्गुनी-पौर्णमासी ॥२७७
सर्व-यात्रा-मङ्गल ए दुइ पुण्यतिथि ।
सर्व-शुभ-लग्न अधिष्ठान हय इथि ॥२७८
एतेके ए दुइ तिथि करिले सेवन ।
कृष्णे भक्ति हय, खण्डे अविद्याबन्धन ॥२७९
ईश्वरेर जन्मतिथि येहेन पवित्र ।
वैष्णवेरो सेइ जन्म तिथिर चरित्र ।२८०
गौरचन्द्र-आविर्भाव शुने येइ जने ।
कभु दुःख नाहि तार जन्मे वा मरणे ॥२८१
शुनिले चैतन्यकथा भक्ति-फल धरे ।
जन्मेजन्मे चैतन्येर सङ्गे अवतरे ॥२८२
आदिखण्ड-कथा बड़ शुनिते सुन्दर ।
यहिँ अवतीर्ण गौरचन्द्र महेश्वर ॥२८३
ए सब लीलार कभु नाहि परिच्छेद ।
'आविर्भाव' 'तिरोभाव' मात्र कहे वेद ॥२८४
चैतन्यकथार आदि अन्त नाहि देखि ।
ताहान कृपाये ये बोलान ताहा लेखि ॥२८५
भक्तसङ्गे गौरचन्द्रपदे नमस्कार ।
इथे अपराध किछु नहुक आमार ॥२८६
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द-चान्द जान ।
वृन्दावन दास तछु पदयुगे गान ॥२८७

इति श्रीचैतन्यभागवते आदिखण्डे श्रीगौरचन्द्रस्य कोष्ठीगणनादिवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥



तृतीय अध्याय

जयजय कमलनयन गौरचन्द्र ।
जयजय तोमार प्रेमेर भक्तवृन्द ॥१
हेन शुभ दृष्टि प्रभु कर अमायाय ।
अहर्निश चित येन बसये तोमाय ॥२
हेन-मते प्रकाश हइला गौरचन्द्र ।
शची-गृहे दिने दिने बाढ़ये आनन्द ॥३
पुत्रेर श्रीमुख देखि ब्राह्मणी ब्राह्मण ।
आनन्दसागरे दोँहे भासे अनुक्षण ॥४
भाइरे देखिया विश्वरूप भगवान ।
हासिया करेन कोले आनन्देर धाम ॥५
यत आप्तवर्ग आछे सर्व परिकरे ।
अहर्निश सभे थाकि बालक आबरे ॥६
केहो विष्णु-रक्षा, केहो देवी-रक्षा पढ़े
मन्त्र पढ़ि घर केहो चारि-दिग बेढ़े ॥७
तावत् कान्देन प्रभु कमल लोचन ।
हरिनाम शुनिले रहेन ततक्षण ॥८
परम सङ्केत एइ सभे बुझिलेन ।
कान्दिलेइ हरिनाम सभेइ लयेन ॥९
सर्वलोके आवरिया रहे सर्वक्षण ।
कौतुक करये ये रसिक देवगण १०
कोनो देव अलक्षिते गृहेते साम्भाय ।
छाया देखि सभे बोले "एइ चोरा याय ।।" ११
'नरसिंह नरसिंह' केहो करे ध्वनि ।
अपराजितार स्तोत्र कारो मुखे शुनि ॥१२
नाना-मन्त्रे केहो दश-दिग-बन्ध करे ।
उठिल परम-कलरव शची धरे ॥१३
प्रभु देखि गृहेर बाहिरे देव याय ।
सभे बोले "एइ जात-हारिणी पालाय ।।"१४
सभे बोले "धरधर एइ चोरा याय ।"
'नृसिंह नृसिंह' लोक डाकये सदाय ॥१५
कोनो ओझा बोले "आजि एड़ाइलि भाल ।
ना जानिस् नृसिंहेर प्रताप बिशाल ।।"१६
सेइखाने थाकि देव हासे अलक्षिते ।
परिपूर्ण हइल मासेक एइमते ॥१७
बालक-उत्थान-पर्वे यत नारीगण ।
शची संगे गङ्गास्नाने करिला गमन ॥१८
बाद्य-गीत-कोलाहल करि गङ्गा-स्नान ।
आगे गङ्गा पूजि तबे गेला षष्ठी-स्थान ॥१९
यथविधि पूजि सब देवेर चरण ।
आइलेन गृहे परिपूर्ण नारायण ॥२०
खइ, कला, तैल, सिन्दूर, गुया पान ।
सभारे दिलेन आइ करिया सम्मान ॥२१
बालकेरे आशिषिया सर्व-नारीगण ।
चलिलेन गृहे, बन्दि आइर चरण ॥२२
हेनमते वैसे प्रभु आपन लीलाय ।
के ताने जानिते पारे, यदि ना जानाय ॥२३
कराइते चाहे प्रभु आपन कीर्त्तन ।
एतदर्थे करे प्रभु सघने रोदन ॥२४
यतयत प्रबोध करये नारीगण ।
प्रभु पुनःपुन करि करये रोदन ॥२५
'हरि' बलि यदि डाके सर्वनारीजने ।
तबे प्रभु हासि चान श्रीचन्द-वदने ॥२६

जानिया प्रभुर चित्त सर्वजने मेलि ।
सदाइ बोलेन 'हरि' दिया करतालि ॥२७
आनन्दे करेन सभे हरिसङ्कीर्तन ।
हरिनामे पूर्ण हइल शचीर भवन ॥२८
एइमते वैसे प्रभु जगन्नाथ-घरे ।
गुप्तभावे गोपालेरे प्राय केलि करे ॥२९
ये समये यखन ना थाके केहो घरे ।
ये किछु थाकये घरे सकल बिथारे ॥३०
बिथारिया सकल फेलाय चारि-भिते ।
सर्वघर भरे तैल, दुग्ध, लोण घृते ॥३१
जननी आइसे हेन जानिञा आपने ।
शयने आछेन प्रभु करेन रोदने ॥३२
'हरिहरि' बलिया सान्त्वना करे मा'य ।
घरे देखे सब द्रव्य गड़ागड़ि याय ॥३३
के फेलिल सर्वगृहे धान्य, चालु, मुदग ।
भाण्डेर सहित भाङ्गा देखे दधि दुग्ध ॥३४
सभे चारि-मासेर बालक आछे घरे ।
के फेलिल हेन केहो बुझिते ना पारे ॥३५
सब परिजन आसि मिलिल तथाय ।
मनुष्येर चिह्नमात्र केहो नाहि पाय ॥३६
केहो बोले "दानव आसियाछिल घरे ।
रक्षा लागि शिशुरे नारिल लङ्घिबारे ॥३७
शिशु लङ्घिबारे ना पाइया क्रोधमने ।
अपचय करिया पलाइल निज-स्थाने ॥"३८
मिश्र-जचन्नाथ देखि चित्ते बड़ धन्द ।
दैव हेन जानि, किछु ना बलिल मन्द ॥३९
दैव-अपचय देखि दुइजने चाहे ।
बालक देखिया कोन दुःख नाहि पाये ॥४०
एइमत प्रतिदिन करेन कौतुक ।
नाम-करणेर काल हइल सम्मुख ॥४१
नीलाम्बर-चक्रवर्त्ती-आदि विद्यावान ।
सर्व-बन्धुगणेर हइल उपस्थान ॥४२
मिलिला बिस्तर आसि पतिव्रतागण ।
लक्षी-प्राय दीप्त सभे सिन्दूर भूषण ॥४३
नाम थुइबारे सभे करेन बिचार ।
स्त्रीगणे बोलये एक, अन्ये बोले आर ॥४४
"इहान अनेक ज्येष्ठ कन्या पुत्र नाञि ।
शेषे ये जन्मये तार नाम से 'निमाञि' ॥४५
बोलेन विद्वान् सब करिया विचार ।
"एक नाम योग्य हये थुइते इहार ॥४६
ए शिशु जन्मिले मात्र सर्व देशेदेशे ।
दुर्भिक्ष घुचिल, बृष्टि पाइल कृषके ॥४७
जगत हइल सुस्थ इहान जनमे ।
पूर्वे येन पृथिवी धरिला नारायणे ॥४८
अतएव इहान 'श्रीविश्वम्भर' नाम ।
कुलदीप कोष्ठीतेहो लिखिल इहान ॥४९
'निमाञि' ये बलिलेन पतिव्रतागण ।
सेहो नाम द्वितीय डाकिब सर्वजन ॥५०
सर्व-शुभक्षण नामकरण समये ।
गीता, भागवत, वेद ब्राह्मण पढ़ये ॥५१
देवगणे नरगणे एकत्रे मङ्गल ।
हरिध्वनि, शङ्ख, घण्टा बाजये सकल ॥५२
धान्य, पुँथि, खड़ि, स्वर्ण रजतादि यत ।
धरिते आनिञा करिलेन उपनीत ॥५३
जगन्नाथ बोले "शुन बाप विश्वम्भर !
याहा चित्ते लागे, ताहा धरह सत्वर ॥५४
सकल छाड़िया प्रभु श्रीशचीनन्दन ।
'भागवत' धरिञा दिलेन आलिङ्गन ॥५५
पतिव्रतागणे ,जय' देय चारि-भिते ।
सभेइ बोलेन "बड़ हइब पण्डिते ॥"५६

केहो बोले "शिशु हैब परम वैष्णव।
अल्पे सर्व-शास्त्रेर जानिब अनुभव ॥५७
ये दिगे हासिया चाहे प्रभु विश्वम्भर।
आनन्दे शीतल हय तार कलेबर ॥५८
ये करये कोले, से-इ एड़िते ना जाने।
देवेर दुर्ल्लभ कोले करे नारीगणे ॥५९
प्रभु येइ कान्दे, सेइक्षणे नारीगण।
हाथे तालि दिया करे हरिसङ्कीर्त्तन ॥६०
दिने दिने बाढ़े प्रभु शचीर नन्दन।
छले करायेन प्रभु नाम सङ्कीर्त्तन ॥६१
शुनिञा नाचेन प्रभु कोलेर उपरे।
विशेषे सकल नारी हरिध्वनि करे ॥६२
निरवधि सभार वदने हरिनाम।
छले बोलायेन प्रभु, हेन इच्छा तान ॥६३
'तान इच्छा बिना कोन कर्म सिद्ध नहे'।
वेदे शास्त्रे भागवते एइ तत्त्व कहे ॥६४
एइमते कराइया निज सङ्कीर्त्तन।
दिनेदिने बाढ़े प्रभु श्रीशचीनन्दन ॥६५
जानु-गति चले प्रभु परम सुन्दर।
कटिते किङ्किणी-ध्वनि बाजे मनोहर ॥६६
परम निर्भये सर्व-अङ्ने विहरे।
किबा अग्नि, सर्प, याहा देखे ताहि धरे ॥६७
एकदिन एक सर्प बाड़ीते बेड़ाय।
धरिलेन सर्प प्रभु बालक-लीलाय ॥६८
कुण्डली करिया सर्प रहिल बेढ़िया।
ठाकुर थाकिला सर्प-उपरे शुइया ॥६९
आथेव्यथे सभे देखि 'हायहाय' करे।
शुइया हासेन प्रभु सर्पेर उपरे ॥७०
'गरुड़ गरुड़, करि डाके सर्वजन।
पिता-माता-आदि भये करये क्रन्दन ॥७१
प्रभुरे एड़िया सर्प पलाय तखन।
पुन धरिबारे यान श्रीशचीनन्दन ॥७२
धरिया आनिञा सभे करिलेन कोले।
'चिरजीवी हओ' करि नारीगण बोले ॥७३
केहो रक्षा बान्धे, केह पढ़े स्वस्तिवाणी।
केहो अङ्गे देइ विष्णुपादोदक आनि ॥७४
केहो बोले "बालकेर पुनर्जन्म हैल।"
केहो बोले "जातिसर्प तेञिना लङ्घिल।" ॥७५
हासे प्रभु गौरचन्द्र सभारे चाहिया।
पुनःपुनः याय सभे आनेन धरिया ॥७६
भक्ति करि ये ए सब वेदगोप्य शुने।
संसार-भुजङ्गे तारे ना करे लङ्घने ॥७७
एइमत दिनेदिने श्रीशचीनन्दन।
हाँटिया करेन प्रभु अङ्गने भ्रमण ७८॥
जिनिञा कन्दर्प-कोटि सर्वाङ्गेर रूप।
चान्देर लागये साध देखिते से मुख ॥७९
सुबलित-मस्तके चाँचर भाल केश।
कमल नयान येन गोपालेर बेश ॥८०
आजानु-लम्बित भुज, अरुण अधर।
सकल-लक्षणयुत वक्ष परिसर ॥८१
सहजे अरुण गौर देह मनोहर।
विशेष अङ्गुलि, कर, चरण सुन्दर ॥८२
बालक-स्वभावे प्रभु यबे चलि याय।
रक्त पड़े हेन, देखि मा'ये त्रास पाय ॥८३
देखि शची-जगन्नाथ बड़इ विस्मित।
निर्धन तथापि दोँहे महा-आनन्दित ॥८४
काणाकाणि करे दोँहे निर्ज्जने बसिया।
"कोन महापुरुष बा जन्मिला आसिया ॥८५
हेन बुझि, संसार-दुःखेर हैल अन्त।
जन्मिल आमार घरे हेन गुणवन्त ॥८६

एमन शिशुर रीति कभु नाहि शुनि ।
निरवधि नाचे हासे शुनि हरिध्वनि ॥८७
ताबत क्रन्दन करे, प्रबोध ना माने ।
बड़ करि 'हरिध्वनि' यावत ना शुने ॥"८८
ऊषःकाल हइते यतेक नारीगण ।
बालक बेढ़िया सबे करे सङ्कीर्त्तन ॥८९
'हरि' बलि नारीगणे देइ करतालि ।
नाचे गौरसुन्दर बालक कुतूहली ॥९०
गड़ागड़ि याय प्रभु धूलाय धूसर ।
हासि उठे जननीर कोलेर उपर ॥९१
हेन अङ्गभङ्गी करि नाचे गौरचन्द्र ।
देखिया सभार हय अतुल आनन्द ॥९२
हेनमते शिशुभाबे हरिसङ्कीर्त्तन ।
करायेन प्रभु नाहि बुझे कोन जन ॥९३
निरवधि धाय प्रभु कि घर बाहिरे ।
परम-चञ्चल—केहो धरिते ना पारे ॥९४
एकेश्वर बाड़ीर बाहिरे प्रभु याय ।
खइ, कला, सन्देश, या' देखे ता'इ चाय ॥९५
देखिया प्रभुर रूप परम-मोहन ।
ये जने ना चिने, सेइ देइ ततक्षण ॥९६
सभेइ सन्देश कला देइ प्रभुकरे ।
पाइया सन्तोषे प्रभु आइसेन घरे ॥९७
ये सकल स्त्रीगणे गायेन हरिनाम ।
ता'सभारे आनि सब करेन प्रदान ॥९८
बालकेर बुद्धि देखि हासे सर्वजन ।
हाथे तालि दिया 'हरि' बोले अनुक्षण ॥९९
कि बिहाने, कि मध्याह्ने, कि रात्रि, सन्ध्याय ।
निरवधि बाड़ीर बाहिरे प्रभु धाय ॥१००
निकटे बसये यत बन्धुबर्ग घरे ।
प्रतिदिन आपने कौतुके चुरि करे ॥१०१
कारो घरे दुग्ध पिये, कारो भात खाय ।
हाण्डि भाङ्गे, यार घरे किछुइ ना पाय॥१०२
घरे घरे शिशु थाके, ताहारे कान्दाय ।
केहो देखिलेइ मात्र उठिया पलाय ॥१०३
दैवयोगे यदि केहो धरिबारे पारे ।
तबे तार पा'ये धरि करे परिहारे ॥१०४
"एबार छाड़ह मोरे, ना आसिब आर ।
आर यदि चुरि करोँ, दोहाइ तोमार ॥"१०५
देखिया शिशुर बुद्धि सभेइ विस्मित ।
रुष्ट नहे केहो, सभे करेन पिरीत ॥१०६
निजपुत्र हइतेओ सभे स्नेह करे ।
दरशन-मात्र सभार चित्त-वृत्ति हरे ॥१०७
एइमत रङ्ग करे वैकुण्ठेर राय ।
स्तिर नाहि एकठाञि, बुलये सदाय ॥१०८
एकदिन प्रभुरे देखिया दुइ चोरे ।
युक्ति करे, "कार् शिशु बेड़ाय नगरे ॥"१०९
प्रभुर श्रीअङ्गे देखि दिव्य अलङ्कार ।
हरिबारे दुइ चोरे चिन्ते परकार ॥११०
"वाप ! वाप !" बलि एक चोरे लैल कोले ।
"एतक्षण कोथाछिले?" आर चोरे बोले ॥१११
"झाट घरे आइसह" बोले दुइ चोरे ।
हासि बोले प्रभु "चल चल याइ घरे ॥"११२
आथेव्यथे कोले करि दुइ चोर धाय ।
लोके बोले"यार शिशु से-इ लइ याय ॥"११३
अर्वुद अर्वुद लोक, केबा कारे चिने ।
महातुष्ट चोर अलङ्कार-दरशने ॥११४
केहो मने भाबे "मुञि निमु ताड़ बाला ।
एइमते दुइ चोरे खाय मनकला ॥११५

दुइ चोर चलि याय निज-मर्म स्थाने ।
स्कन्धेर उपरे हासि चाय भगवाने ॥११६
एक जन प्रभुरे सन्देश देइ करे ।
आरजने बोले "एइ आइलाङ घरे ॥११७
एइमत भाण्डिया अनेक दूरे याय ।
हेथा यत आप्तगण चाहिया बेड़ाय ॥११८
केहो बोले "आइस आइस विश्वम्भर !"
केहो डाके "निमाञि!" करिया उच्चस्वर ॥११९
परम व्याकुल हइलेन सर्वजन ।
जल बिना येन हय मत्स्येर जीवन ॥१२०
सभे सर्वभावे गेला गोविन्द शरण ।
प्रभु लैया याय चोर आपन-भवन ॥१२१
वैष्णवी-मायाय चोर पथ नाहि चिने ।
जगन्नाथ-घर आइल निज-घर-ज्ञाने ॥१२२
चोर देखे आइलाङ निज-मर्म-स्थाने ।
अलङ्कार हरिते हइला सावधाने ॥१२३
चोर बले "नाम्व बाप ! आइलाञ घर !"
प्रभु बोले "हय हय नामाओ सत्त्वर ॥"१२४
येखाने सकल-गणे मिश्र-जगन्नाथ ।
विषाद भावेन सभे माथे दिया हाथ ॥१२५
मायामुग्ध चोर ठाकुरेर सेइस्थाने ।
स्कन्ध हैते नाम्वाइल निज-घर-ज्ञाने ॥१२६
नाम्विलेइ मात्र प्रभु गेला पितृकोले ।
महानन्द करि सभे 'हरिहरि' बोले ॥१२७
सभार हइल अनिर्वचनीय रङ्ग ।
प्राण आसि देहेर हइल येन सङ्ग ॥१२८
आपनार घर नहे, देखे दुइ चोरे ।
कोथा आसियाछे किछु चिनिते ना पारे ॥१२९
गण्डगोले के काहारे अवधान करे ।
चारिदिगे चाहि चोर पलाइल डरे ॥१३०
"परम अद्भुत !" दुइ चोर मने गणे ।
चोर बोले "भेल्कि बा दिल कोनो जने ॥"१३
"चण्डी राखिलेन आजि" बोले दुइ चोरे ।
सुस्थ हइ दुइ चोर कोलाकुलि करे ॥१३२
परमार्थे दुइ चोर महा-भाग्यवान ।
नारायण यार स्कन्धे करिला उत्थान ॥१३३
एथा सर्व-गणे मने करेन विचार ।
"के आनिल देख वस्त्र शिरे बान्धि तार ॥"१३
केह बोले "देखिलाङ लोक दुइजन ।
शिशु थुइ कोन् दिगे करिला गमन ॥"१३
"आमि आनिआछि" कोनो जन नाहि बोले ।
अद्भुत देखिया सभे पड़िलेन भोले ॥१३६
सभे जिज्ञासेन "बाप ! कहत निमाञि !
के तोमारे आनिल पाइया कोन् ठाञि ?"१३७
प्रभु बोले "आमि गियाछिलाङ गङ्गातीरे ।
पथ हाराइया आमि बेड़ाइ नगरे ॥१३८
तबे दुइ जन आमा' कोले त करिया ।
कोन् पथे एइ-खाने थुइल आनिञा ॥१३९
सभे कहे "मिथ्या कभु नहे शास्त्रवाणी ।
दैवे राखे शिशु, वृद्ध, अनाथ आपनि ॥"१४०
एइमत विचार करेन सर्वजने ।
विष्णुमायामोहे केहो तत्त्व नाहि जाने ॥१४१
एइमत रङ्ग करे वैकुण्ठेर राय ।
के ताने जानिते पारे, यदि ना जानाय ॥१४२
वेदगोप्य ए सब आख्यान येइ शुने ।
तार दृढ़-भक्ति हय चैतन्य-चरणे ॥१४३
हेनमते आछे प्रभु जगन्नाथ-घरे ।
अलक्षिते बहुविध स्वप्रकाश करे ॥१४४
एकदिन डाकि बोले मिश्र-पुरन्दर ।
"आमार पुस्तक आन बाप विश्वम्भर "१४५

बापेर वचन शुनि घरे धाइ याये ।
रुणुझुनु करिये नूपुर बाजे पा'ये ॥१४६
मिश्र बोले "कोथा शुनि नूपुरेर ध्वनि ।?"
चतुर्द्दिके चा'य दुइ ब्राह्मण ब्राह्मणी ॥१४७
आमार पुत्रेर पा'ये नाहिक नूपुर ।
कोथाय बाजिल वाद्य नूपुर मधुर ॥१४८
"कि अद्भुत !" दुइजने मनेमने गणे' ।
वचन ना स्फुरे दुइजनेर वदने ॥१४९
पुथि दिया प्रभु चलिलेन खेलाइते ।
आर देखे अद्भुत गृहेर माझेते ॥१५०
सब गृहे देखे अपरूप पदचिह्न ।
ध्वज, वज्र, पताका,अङ्कुश भिन्नभिन्न ॥१५१
आनन्दित दोँहे देखि अपूर्व चरण ।
दोँहे हैला पुलकित सजल-नयन ॥१५२
पादपद्म देखि दोँहे करे नमस्कार ।
दोँहे बोले"निस्तारिनु, जन्म नाहि आर॥"१५३
मिश्र बोले "शुन विश्वरूपेर जननी !
घृत परमान्न गिया रान्धह आपनि ॥१५४
घरे ये आछेन दामोदर शालग्राम ।
पञ्चगव्य सकाले कराब ताने स्नान ॥१५५
बुझिलाङ–तिँहो घरे बुलेन आपनि ।
अतएव शुनिलाङ नूपुरेर ध्वनि॥"१५६
एइमते दुइजने परम-हरिषे ।
शालग्राम पूजा करे, प्रभु मने हासे ॥१५७
आरो एक कथा शुन परम-अद्भुत ।
ये रङ्ग करिला प्रभु जगन्नाथसुत ॥१५८
परम सुकृति एक तैर्थिक ब्राह्मण ।
कृष्णेर उद्देशे करे तीर्थ-पर्य्यटन ॥१५९
षड़क्षर-गोपालमन्त्रे करे उपासन ।
गोपाल-नैवेद्य बिने ना करे भोजन ॥१६०
दैवे भाग्ययोगे तीर्थ भ्रमिते भ्रमिते ।
आसिया मिलिला विप्र प्रभुर बाड़ीते ॥१६१
कण्ठे बाल-गोपाल भूषण शालग्राम ।
परम ब्रह्मण्य-तेज अति अनुपाम ॥१६२
निरवधि मुखे विप्र 'कृष्णकृष्ण' बोले ।
अन्तरे गोविन्द-रसे दुइ चक्षु ढुले ॥१६३
देखि जगन्नाथमिश्र तेज से ताँहार ।
सम्भ्रमे उठिया करिलेन नमस्कार ॥१६४
अतिथि-व्यभार-धर्म येन-मत हय ।
सब करिलेन जगन्नाथ महाशय ॥१६५
आपने करिया तान पाद प्रक्षालन ।
बसिते दिलेन आनि उत्तम आसन ॥१६६
सुस्थ हइ बसिलेन यदि विप्रबर ।
तबे ताने मिश्र जिज्ञासिला"कोथा घर ॥?१६७
विप्र बोले "आमि उदासीन देशान्तरी ।
चित्तेर बिक्षेपे मात्र पर्य्यटन करि ॥"१६८
प्रणति करिया मिश्र बोलेन बचन ।
"जगतेर भाग्ये से तोमार पर्य्यटन ॥१६९
विशेषे त आजि आमार परम सौभाग्य ।
आज्ञा देह रन्धनेर करि गिया कार्य्य ॥"१७०
विप्र बोले "कर मिश्र ! ये इच्छा तोमार ।
हरिषे करिला मिश्र दिव्य उपहार ॥१७१
रन्धनेर स्थान उपस्करि भाल-मते ।
दिलेन सकल सज्ज रन्धन करिते ॥१७२
सन्तोषे ब्राह्मणवर करिया रन्धन ।
बसिलेन कृष्णेरे करिते निवेदन ॥१७३
सर्वभूत-अन्तर्य्यामी श्रीशचीनन्दन ।
मने आछे, विप्रेरे दिबेन दरशन ॥१७४
ध्यान-मात्र करिते लागिला विप्रवर ।
सम्मुखे आइला प्रभु श्रीगौरसुन्दर ॥१७५

धूलामय सर्व-अङ्ग मूर्त्ति दिगम्बर ।
अरुण-नयन-कर-चरण सुन्दर ॥१७६
हासिया विप्रेर अन्न लइया श्रीकरे ।
एक ग्रास खाइलेन देखे विप्रवरे ॥१७७
'हाय हाय' करि भाग्यवन्त विप्र डाके ।
अन्न छुँइलेक एइ चञ्चल बालके ॥१७८
आसिया देखेन जगन्नाथ मिश्रवर ।
भात खाय हासे प्रभु श्रीगौरसुन्दर ॥१७९
क्रोधे मिश्रवर धाइया यायेन मारिबारे ।
सम्भ्रमे उठिया विप्र धरिलेन करे ॥१८०
विप्र बोले "मिश्र ! तुमि बड़ देखि आर्य्य ।
कोन् ज्ञान बालकेर मारिया कि कार्य्य ?१८१
भाल-मन्द-ज्ञान यार थाके मारि तारे ।
आमार शपथ यदि मारह उहारे ॥"१८२
दुःखे बसिलेन मिश्र हस्त दिया शिरे ।
माथा नाहि तोले मिश्र बचन ना स्फुरे ॥१८३
विप्र बोले "मिश्र ! दुःख ना भाविह मने ।
ये दिने ये हैब, ताहा ईश्वर से जाने ॥"१८४
फल-मूल-आदि गृहे ये थाके तोमार ।
आनि देह आजि सेइ करिब आहार ॥१८५
मिश्र बोले"मोरे यदि थाके भृत्य-ज्ञान ।
आर-बार पाक कर, करि देङ स्थान ॥१८६
गृहे आछे रन्धनेर सकल सम्भार ।
पुन पाक कर तबे सन्तोष सभार ॥"१८७
बलिते लागिला तबे इष्ट-बन्धुगण ।
"आमा' सभा' चाहि तबे करह रन्धन ॥"१८८
विप्र बोले"येइ इच्छा तोमा'सभाकार ।
करिब रन्धन सर्वथाय पुनवरि ॥"१८९
हरिष हइला सभे विप्रेर बचने ।
स्थान उपस्करिलेन सभे ततक्षणे ॥१९०
रन्धनेर सज्ज आनि दिलेन तुरिते ।
चलिलेन विप्रवर रन्धन करिते ॥१९१
सभेइ बोलेन "शिशु परमचञ्चल ।
आरबार पाछे नष्ट करये सकल ॥१९२
रन्धन भोजन विप्र करेन याबत ।
आर-बाड़ी ल'ये शिशु राखह ताबत ॥"१९३
तबे शचीदेवी पुत्र कोले त करिया ।
चलिलेन आर-बाड़ी प्रभुरे लइया ॥१९४
सब नारीगण बोले"केने रे निमाञि !
एमत करिया कि विप्रेर अन्न खाइ ?१९५
हासिया बोलेन प्रभु श्रीचन्द्र-वदने ।
"आमार कि दोष, विप्र डाकिल आपने" १९६
सभेइ बोलेन "अये निमाइ ढाङ्गाति !
कि करिबा, एबे ये तोमार गेल जाति ॥१९७
कोथाय ब्राह्मण, कोन् कुल, केबा चिने ।
तार भात खाइ जाति राखिब केमने ?"१९८
हासिया कहेन प्रभु "आमि ये गोयाल ।
ब्राह्मणेर अन्न आमि खाइ सर्व-काल ॥१९९
ब्राह्मणेर अन्ने कि गोपेर जाति याये ?"
एत बलि हासिया सभारे प्रभु चाहे ॥२००
छले निज-तत्त्व प्रभु करेन व्याख्यान ।
तथापि ना बुझे केहो, हेन माया तान ॥२०१
सभेइ हासेन शुनि प्रभुर बचन ।
वक्ष हैते एड़िते काहारो नाहि मन ॥२०२
हासिया यायेन प्रभु ये-जनार कोले ।
सेइ जन आनन्द-सागर-माझे डोले ॥२०३
सेइ विप्र पुनर्वार करिया रन्धन ।
लागिलेन बसिया करिते निवेदन ॥२०४

ध्याने बालगोपाल भावेन विप्रवर।
जानिलेन गौरचन्द्र चित्तेर ईश्वर ॥२०५
मोहिया सकल लोक अति अलक्षिते।
आइलेन विप्र-स्थाने हासिते हासिते ॥२०६
अलक्षिते एक मुष्टि अन्न लइ करे।
खाइया चलिला प्रभु—देखे विप्रवरे ॥२०७
'हाय हाय' करिया उठिला विप्रवर।
ठाकुर खाइया भात दिला एक रड़ ॥२०८
सम्भ्रमे उठिया मिश्र हाथे बाड़ि लैया।
क्रोधे ठाकुरेरे लइ याय ताड़ाइया ॥२०९
महाभये प्रभु पलाइला एक घरे।
क्रोधे मिश्र पाछे थाकि तर्जगर्ज करे ॥२१०
मिश्र बोले "आजि देख करों" तोर कार्य्य।
तोर मते परम अबुध आमि आर्य्य ॥२११
हेन महाचोर शिशु कार घरे आछे?"
एत बलि क्रोधे मिश्र धाय प्रभु-पाछे ॥२१२
सभे धरिलेन यत्न करिया मिश्रेरे।
मिश्र बोले "एड़, आजि मारिब उहारे ॥"२१३
सभेइ बोलेन "मिश्र! तुमि त उदार।
उहारे मारिया कोन् साधुत्व तोमार ॥२१४
भाल-मन्द-ज्ञान नाहि उहार शरीरे।
परम अबोध, ये एमन शिशु मारे ॥२१५
मारिलेइ कोन् बा शिखिब हेन नहे।
स्वभावेइ शिशुर चञ्चल-मति हये ॥"२१६
आथेव्यथे आसि तैर्थिक ब्राह्मण।
मिश्रेर धरिया हाथे बोलेन बचन ॥२१७
"बालकेर नाहि दोष शुन मिश्र-राय।
ये दिने ये हैब ताहा हइबारे चाय ॥२१८
आजि कृष्ण अन्न नाहि लिखेन आमारे।
सभे एइ मर्मकथा कहिलुँ तोमारे ॥"२१९

दुःखे जगन्नाथ-मिश्र नाहि तोले मुख।
माथा हेट करिया भावेन महा-दुःख ॥२२०
हेनइ समये विश्वरूप भगवान।
सेइ-स्थाने आइलेन महा-ज्योतिर्धाम ॥२२१
सर्व-अङ्गे निरुपम लावण्येर सीमा।
चतुर्दश-भुवनेओ नाहिक उपमा ॥२२२
स्कन्धे यज्ञसूत्र, ब्रह्मतेज मूर्त्तिमन्त।
मूर्त्तिभेदे जन्मिला आपनि नित्यानन्द ॥२२३
सर्वशास्त्र अर्थ सह स्फुरये जिह्वाय।
कृष्णभक्ति-व्याख्या-मात्र करये सदाय ॥२२४
देखिया अपूर्व मूर्त्ति तैर्थिक ब्राह्मण।
मुग्ध हइ एकदृष्टे चाहे घनेघन ॥२२५
विप्र बोले "कार् पुत्र एइ महाशय?"
सभेइ बोलेन "एइ मिश्रेर तनय ॥"२२६
शुनिञा सन्तोषे विप्र कैला आलिङ्गन।
"धन्य पिता माता यार ए हेन नन्दन ॥"२२७
विप्रेरे करिला विश्वरूप नमस्कार।
बसिया कहेन कथा अमृतेर धार ॥२२८
"शुभ दिन तार महाभाग्येर उदय।
तुमि-हेन अतिथि याहार गृहे हय ॥२२९
जगत शोधिते से तोमार पर्य्यटन।
आत्मानन्दे पूर्ण हइ करह भ्रमण ॥२३०
भाग्य बड़, तुमि-हेन अतिथि आमार।
अभाग्य बा कि कहिब उपास तोमार ॥२३१
तुमि उपवास बा करिबा यार घरे।
सर्वथा ताहार अमङ्गल-फल धरे ॥२३२
हरिष पाइलुँ बड़ तोमार दर्शने।
बिषाद पाइलुँ बड़ ए सब श्रवणे ॥२३३
विप्र बोले "किछु दुःख ना भाविह मने।
फल मूल किछु आमि करिब भोजने ॥२३४

वनवासी आमि, अन्न कोथाय बा पाइ ।
प्राय आमि वने फल मूल मात्र खाइ ॥२३५
कदाचित कोन दिवसे बा खाइ अन्न ।
सेहो यदि अविरोधे हय उपसन्न ॥२३६
ये सन्तोष पाइलाङ तोमा' दरशने ।
ताहातेइ कोटिकोटि करिलुँ भोजने ॥२३७
फल, भूल, नैवेद्य ये किछु थाके घरे ।
ताहा आन गिया आजि करिब आहारे ॥"२३८
उत्तर ना करे किछु मिश्र-जगन्नाथ ।
दुःख भावे मिश्र शिरे दिया दुइ हाथ ॥२३९
विश्वरूप बोलेन "बलिते वासि भय ।
सहजे करुणासिन्धु तुमि महाशय !२४०
परदुःखे कातर-स्वभावे साधुजन ।
परेर आनन्द से बाढ़ाय अनुक्षण ॥२४१
एतेके आपने यदि निरालस्य हैया ।
कृष्णेर नैवेद्य कर रन्धन करिया ॥२४२
तबे आजि आमार गोष्ठीर यत दुःख ।
सकल घुचये, पाइ परानन्द सुख ॥"२४३
विप्र बोले "रन्धन करिलुँ दुइबार ।
तथापिह कृष्ण ना दिलेन खाइबार ॥२४४
तेञि बुझिलाङ आजि नाहिक लिखन ।
कृष्ण-इच्छा नाहि, केने करह यतन ॥२४५
कोटि भक्ष्य द्रव्य यदि थाके निज-घरे ।
कृष्ण-आज्ञा हइले से खाइबार पारे ॥२४६
ये दिने कृष्णेर यारे लिखन ना हय ।
कोटि यत्न करि तथापिह सिद्ध नय ॥२४७
निशाओ प्रहर देड़ दुइओ बा याय ।
इहाते कि आर पाक करिते युयाय ॥२४८
अतएव आजि यत्न ना करिह आर ।
एइमत किछु मात्र करिब आहार ॥२४९
विश्वरूप बोलेन "नाहिक किछु दोष ।
तुमि पाक करिले से सभार सन्तोष ॥"२५०
एत बलि विश्वरूप धरिला चरण ।
साधिते लागिला सभे करिते रन्धन ॥२५१
विश्वरूपे देखिया मोहित विप्रवर ।
"करिब रन्धन" विप्र बलिला उत्तर ॥२५२
सन्तोषे सभेइ 'हरि' बलिते लागिला ।
स्थान-उपस्कार सभे करिते लागिला ॥२५३
आथेव्यथे स्थान उपस्करि सर्वजने ।
रन्धनेर सामग्री आनिला सेइक्षणे ॥२५४
चलिलेन विप्रवर करिते रन्धन ।
शिशु आवरिया रहिलेन सर्वजन ॥२५५
पलाइया ठाकुर आछेन येइ घरे ।
मिश्र बसिलेन तार मेझार-दुयारे ॥२५६
सभेइ बोलेन "बान्ध बाहिर-दुयार ।
बाहिर हइते येन नाहि पाय आर ॥"२५७
मिश्र बोले "भालभाल, एइ युक्ति हये ।"
बान्धिया दुयार सभे बाहिरे आछये ॥२५८
घरे थाकि स्त्रीगण बोलेन "चिन्ता नाञि ।
निद्रा गेला, किछु आर ना जाने निमाञि ॥२५९
एइ मते शिशु राखियाछे सर्वजन ।
विप्रेरो हइल कथोक्षणेके रन्धन ॥२६०
अन्न उपस्कार करि सुकृति ब्राह्मण ।
ध्याने बसि करिते लागिला निवेदन ॥२६१
जानिलेन अन्तर्य्यामि श्रीशचीनन्दन ।
चित्ते आछे, विप्रेरे दिबेन दरशन ॥२६२
निद्रा-देवी सभारेइ ईश्वर-इच्छाय ।
मोहिलेन, सभेइ अचेष्ट निद्रा याये २६३
ये-स्थाने करेन विप्र अन्न निवेदन ।
आइलेन सेइ-स्थाने श्रीशचीनन्दन ॥२६४

बालक देखिया विप्र करे "हाय हाय।"
सभे निद्रा याये, केहो शुनिते ना पाय ॥२६५
प्रभु बोले "अये विप्र! तुमि त उदार।
तुमि आमा' डाकि आन कि दोष आमार? २६६
मोर मन्त्र जपि मोरे करह आह्वान।
रहिते ना पारि आमि, आसि तोमा'-स्थान॥२६७
आमारे देखिते निरवधि भाव' तुमि।
अतएव तोमारे दिलाङ देखा आमि॥"२६८
सेइक्षणे देखे विप्र परम अद्भुत।
शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म अष्ट-भुज-रूप ॥२६९
एक हस्ते नवनीत, आर हस्ते खाय।
आर दुइ हस्ते प्रभु मुरली बाजाय ॥२७०
श्रीवत्स कौस्तुभ वक्षे शोभे मणिहार।
सर्व-अङ्गे देखे मणिमय-अलङ्कार ॥२७१
नवगुञ्जा बेढ़ा शिखिपुच्छ शोभे शिरे।
चन्द्रमुखे अरुण-अधर शोभा करे ॥२७२
हासिया दोलाय दुइ नयन-कमल।
वैजयन्ती-माला दोले मकर-कुण्डल ॥२७३
चरणारविन्दे शोभे श्रीरत्न-नूपुर।
नखमणि-किरणे तिमिर गेल दूर ॥२७४
अपूर्व कदम्ववृक्ष देखे सेइ-खाने।
वृन्दावन देखे नाद करे पक्षिगणे ॥२७५
गोप गोपी गाभी गण चतुर्द्दिगे देखे।
यत ध्यान करे, ताहा देखे परतेके ॥२७६
अपूर्व ऐश्वर्य्य देखि सुकृति ब्राह्मण।
आनन्दे मूर्च्छित हैया पड़िला तखन ॥२७७
करुणा-समुद्र प्रभु श्रीगौरसुन्दर।
श्रीहस्त दिलेन तान अङ्गेर उपर ॥२७८
श्रीहस्त-परशे विप्र पाइला चेतन।
आनन्दे हइला जड़, ना स्फुरे बचन ॥२७९
पुनःपुन मूर्च्छा विप्र याय भूमितले।
पुन उठे पुन पड़े महा-कुतूहले ॥२८०
कम्प-स्वेद-पुलके शरीर स्थिर नहे।
नयनेर जल येन महानदी बहे ॥२८१
क्षणेके धरिया विप्र प्रभुर चरण।
करिते लागिला उच्च करिया क्रन्दन ॥२८२
देखिया विप्रेर आर्त्ति श्रीगौरसुन्दर।
हासिया विप्रेरे किछु करिला उत्तर ॥२८३
प्रभु बोले "शुनशुन अये विप्रवर!।
अनेकजन्मेर तुमि आमार किङ्कर ॥२८४
निरवधि भाव तुमि देखिते आमारे।
अतएव आमि देखा दिलाङ तोमारे ॥२८५
आर-जन्मे एइरूपे नन्द-गृहे आमि।
देखा दिला तोमारे, ना स्मर' ताहा तुमि॥२८६
यबे आमि अवतीर्ण हैलाङ गोकुले।
सेइ जन्मे तुमि तीर्थ कर कुतूहले ॥२८७
दैवे तुमि अतिथि हइला नन्द-घरे।
एइमते तुलि अन्न निवेद' आमारे ॥२८८
ताहातेओ एइमत करिया कौतुक।
खाइ तोर अन्न देखालों एइ रूप ॥२८९
एतेके आमार तुमि जन्मेजन्मे दास।
दास बिनु अन्ये मोर ना देखे प्रकाश ॥२९०
कहिलाङ तोमारे सकल गोप्य कथा।
कारो स्थाने इहा नाहि कहिब सर्वथा ॥१९१
यावत थाकये मोर एइ अवतार।
तावत कहिले का'रे करिब संहार ॥२९२
सङ्कीर्त्तन आरम्भे आमार अवतार।
कराइमु सर्वदेशे कीर्त्तन प्रचार ॥२९३
ब्रह्मादि ये प्रेमभक्तियोग वाञ्छा करे।
ताहा बिलाइब सब प्रति घरे घरे ॥२९४

कथोदिन थाकि तुमि अनेक देखिबा ।
ए सब आख्यान एवे कारो ना कहिबा॥२६५
हेनमते ब्राह्मणेरे श्रीगौरसुन्दर ।
कृपा करि आश्वासिया गेला निजघर ॥२६६
पूर्ववत् सुतिया थाकिला शिशु-भावे ।
योगनिद्रा-प्रभावे केहो नाहि जागे ॥२६७
अपूर्व प्रकाश देखि सेइ विप्रवर ।
आनन्दे पूर्णित हैल सब कलेवर ॥२६८
सर्व-अङंगे सेइ अन्न करिया लेपन ।
कान्दिते कान्दिते विप्र करेन भोजन ॥२६९
नाचे, गाय, हासे विप्र करये हुङ्कार ।
"जय बाल-गोपाल" बोलये बारबार ॥३००
विप्रेर हुङ्कारे सभे पाइला चेतन ।
आपना सम्बरि विप्र कैला आचमन ॥३०१
निर्विघ्ने भोजन करिलेन विप्रवर ।
देखि सभे सन्तोष हइला बहुतर ॥३०२
सभारे कहिते मने चिन्तये ब्राह्मण ।
"ईश्वर चिनिञा सभे पाउक मोचन ॥३०३
ब्रह्मा शिव याहार निमित्त काम्य करे ।
हेन प्रभु अवतरि आछे विप्रघरे ॥३०४
से प्रभुरे लोक सब करे शिशु-ज्ञान ।
कथा कहि सभेइ पाउक परित्राण ॥"३०५
प्रभु करियाछे निबारण एइ भये ।
आज्ञा-भङ्ग भये विप्र का'रे नाहि कहे ॥३०६
चिनिञा ईश्वर विप्र सेइ नवद्वीपे ।
रहिलेन गुप्तभावे ईश्वर-समीपे ॥३०७
भिक्षा करि विप्रवर प्रति स्थाने स्थाने ।
ईश्वरेरे आसिया देखेन प्रति दिने ॥३०८
वेद-गोप्य ए सकल महाचित्र कथा ।
इहार श्रवणे कृष्ण मिलये सर्वथा ॥३०९
आदिखण्ड-कथा येन अमृत-स्रवण ।
याहे शिशुरूपे क्रीड़ा करे नारायण ॥३१०
सर्वलोकचूड़ामणि वैकुण्ठ-ईश्वर ।
लक्ष्मीकान्त सीताकान्त श्रीगौरसुन्दर ॥३११
त्रेता-युगे हइया ये श्रीराम लक्ष्मण ।
नाना-मत लीला करि बधिला रावण ॥३१२
हइया द्वापर-युगे कृष्ण सङ्कर्षण ।
नाना-मते करिलेन भूभार-खण्डन ॥३१३
मुकुन्द अनन्त यारे सर्ववेदे कहे ।
श्रीचैतन्य नित्यानन्द से दुइ निश्चये ॥३१४
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचाँद जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥३१५

इति श्रीआदिखण्डे नामकरण-चापल्यविलासादिवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥



चतुर्थ अध्याय

हेनमते क्रीड़ा करे गौराङ्ग-गोपाल ।
हाते-खड़ि दिबार हइल आसि काल ॥१
शुभ दिने शुभ क्षणे मिश्र-पुरन्दर !
हाते-खड़ि पुत्रेर दिलेन विप्रवर ॥२
किछु शेषे मिलिया सकल बन्धुगण ।
कर्णवेध करिलेन श्रीचूड़ाकरण ॥३
दृष्टिमात्र सकल अक्षर लिखि याय ।
परम विस्मित हइ सर्वगणे चा'य ॥४
दिन दुइ-तिने लिखिलेन सर्व फला ।
निरन्तर लिखेन कृष्णेर नाममाला ॥५
राम, कृष्ण, मुरारि, मुकुन्द, वनमाली ।
अहर्निशि लिखेन पढ़ेन कुतूहली ॥६
शिशुगण-सङ्गे पढ़े वैकुण्ठेर राय ।
परम-सुकृति सब देखे नदीयाय ॥७
कि माधुरी करि प्रभु 'क, ख, ग, घ, बोले ।
ताहा शुनिते मात्र सर्व-जीब भोले ॥८
अद्भुत करेन क्रीड़ा श्रीगौरसुन्दर ।
यखने ये चाहे सेइ परम दुष्कर ॥९
आकाशे उड़िया याय पक्ष ताहा चाहे ।
ना पाइले कान्दिया धूलाय गड़ि याये ॥१०
क्षणे चाहे आकाशेर चन्द्र-तारागण ।
हाथ-पाओ आछाड़िया करये क्रन्दन ॥११
सान्त्वना करेन सभे करि निज कोले ।
स्थिर नहे विश्वम्भर 'देओ देओ' बोले ॥१२
सबे एक मात्र आछे महा-प्रतिकार ।
हरिनाम शुनिले ना कान्दे प्रभु आर ॥१३
हाथे तालि दिया सभे बोले 'हरिहरि ।
तखन सुस्थिर हय चाञ्चल्य पासरि ॥१४

बालकेर प्रीते सभे बोले हरिनाम ।
जगन्नाथ-गृह हैल श्रीवैकुण्ठ-धाम ॥१५
एकदिन सभे 'हरि' बोले अनुक्षण ।
तथापिह प्रभु पुन करेन क्रन्दन ॥१६
सभेइ बोलेन "शुन बाप रे निमाञि ।
भाल करि नाच एइ हरिनाम गाइ ॥१७
ना शुने बचन कारो, करये क्रन्दन ।
सभेइ बोलेन "बाप! कान्द कि कारण ?" ॥१८
सभे बोले "बोल बाप! कि इच्छा तोमार ।
सेइ द्रव्य आमि दिब, ना कान्दह आर ॥" १९
प्रभु बोले "यदि मोर प्राण-रक्षा चाह ।
तबे झाट दुइ ब्राह्मणेर घरे याह ॥२०
जगदीश पण्डित, हिरण्य भागवत ।
एइ दुइस्थाने आमार आछे अभिमत ॥२१
एकादशी-उपवास आजि से दोँहार ।
विष्णु लागि करियाछे यत उपहार ॥२२
से सब नैवेद्य यदि खाइबारे पाङ् ।
तबे मुञि सुस्थ हइ हाँटिया बेड़ाङ ॥" २३
असम्भाष्य शुनिञा जननी करे खेद ।
हेन कथा कहे येइ नहे लोक वेद ॥२४
सभेइ हासेन शुनि शिशुर बचन ।
सभे बोले "दिब बाप! सम्बर' क्रन्दन ॥" २५
परम-वैष्णव सेइ विप्र दुइजन ।
जगन्नाथमिश्र-सह अभेद जीवन ॥२६
शुनिञा शिशुर वाक्य दुइ विप्रवर ।
सन्तोषे पूर्णित हैल सर्व-कलेवर ॥२७
दुइ विप्र बोले "महा-अद्भुत-काहिनी ।
शिशुर एमत बुद्धि कभु नाहि शुनि ॥२८

केमते जानिल आजि श्रीहरिवासर ।
केमते बा जानिल नैवेद्य बहुतर ॥२९
बुझिलाङ ए शिशु परम-रूपवान ।
अतएब ए देहे गोपाल-अधिष्ठान ॥३०
ए शिशुर देहे क्रीड़ा करे नारायण ।
हृदये बसिया सेइ बोलाय बचन ॥"३१
मने भाबि दुइ विप्र सर्व-उपहार ।
आनिञा दिलेन करि हरिष अपार ॥३२
दुइ विप्र बोले "बाप ! खाओ उपहार ।
सकल कृष्णेर सात्त हइल आमार ॥"३३
कृष्ण-कृपा हइले एमत बुद्धि हय ।
दास बिनु अन्येर एमत बुद्धि नय ॥३४
भक्ति बिना चैतन्य गोसाञि नाहिजानि ।
अनन्त ब्रह्माण्ड याँर लोमकूपे गणि ॥३५
हेन प्रभु विप्र शिशुरूपे क्रीड़ा करे ।
चक्षु भरि देखे जन्मजन्मेर किङ्करे ॥३६
सन्तोष हइला सब पाइ उपहार ।
अल्प-अल्प किछु प्रभु खाइल सभार ॥३७
हरिषे भक्तेर प्रभु उपहार खाय ।
घुचिल सकल वायु प्रभुर इच्छाय ॥३८
'हरिहरि' हरिषे बोलये सर्वजने ।
खाय आर नाचे प्रभु आपन-कीर्त्तने ॥३९
कथो फेले भूमिते कथो बा कारो गा'य ।
एइमत लीला करे वैकुण्ठेर राय ॥४०
ये प्रभुरे सर्व वेदे पुराणे बाखाने ।
हेन प्रभु खेले शचीदेवीर अङ्गने ॥४१
डुबिला चाञ्चल्यरसे प्रभु विश्वम्भर ।
संहति चपल यत विप्र अनुचर ॥४२
सभार सहित गिया पड़े नाना-स्थाने ।
धरिया राखिते नाहि पारे कोन जने ॥४३
अन्य शिशु देखिले करये कुतूहल ।
सेहो परिहास करे, बाजये कोन्दल ॥४४
प्रभुर बालक सब जिने प्रभु-बले ।
अन्य शिशुगण यत सब हारि चले ॥४५
धूलाय धूसर प्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
लिखन-कालिर बिन्दु शोभे मनोहर ॥४६
पढ़िया शुनिञा सर्व-शिशुगण-सङ्गे ।
गङ्गास्नाने मध्याह्ने चलेन बहु-रङ्गे ॥४७
मज्जिया गङ्गाय विश्वम्भर कुतूहली ।
शिशुगण-सङ्गे करे जलफेलाफेलि ॥४८
नदीयार सम्पत्ति बा के बलिते पारे ।
असंख्यात लोक एको-घाटे स्नान करे ॥४९
कतेक बा शान्त दान्त गृहस्थ सन्न्यासी ।
ना जानि कतेक शिशु मिले तहि आसि ॥५०
सभारे लइया प्रभु गङ्गाये सन्तरे ।
क्षणे डुबे क्षणे भासे नाना क्रीड़ा करे ॥५१
जल-क्रीड़ा करे गौर सुन्दर-शरीर ।
सभार गा'येते लागे चरणेर नीर ॥५२
सभे माना करे तभो माना नाहि माने ।
धरितेओ केहो नाहि पारे एक-स्थाने ॥५३
पुनःपुन सभारे कराय प्रभु स्नान ।
कारे छुँये, कारो अङ्गे कुल्लोल प्रदान ॥५४
ना पाइया नागाली प्रभुर विप्रगणे ।
सभे चलिलेन ताँर जनकेर स्थाने ॥५५
"शुन शुन ओहे मिश्र परम बान्धब !
तोमार पुत्रेर अपन्याय कहि सब ॥५६
भालमते करिते ना पारि गङ्गा-स्नान ।"
केहो बोले "जलदिया भाङ्गे मोर ध्यान ॥"५७
आरो बोले "का'रे ध्यान कर एइ देख ।
कलियुगे नारायण मुञि परतेख ॥"५८

केहो बोले "मोर शिवलिङ्ग करे चुरि ।"
केहो बोले "मोर लइ पलाय उत्तरी ॥"५९
केहो बोले "पुष्प, दूर्वा, नैवेद्य,चन्दन ।
विष्णु पूजिबार सज्ज, विष्णुर आसन ॥६०
आमि करि स्नान, हेथा बसि से आसने ।
सब खाइ परि, तबे करे पलायने ॥"६१
आरो बोले "तुमि केने दुःख भाब मने ।
यार लागि कैले से-इ खाइल आपने ॥"६२
केहो बोले "सन्ध्या करि जलेते नाम्बिया ।
डुब देइ लैया याय चरणे धरिया ॥"६३
केहो बोले "आमार ना रहे साजिधुति ।'
केहो बोले "आमार फेलाय गीता पुँथि ॥"६४
केहो बोले "पुत्र अति बालक आमार ।
कर्णे जल दिया तारे कान्दाय अपार ॥"६५
केहो बोले "मोर पृष्ठ दिया कान्धे चढ़े ।
'मुञि रे महेश' बलि झाँप दिया पड़े ॥"६६
केहो बोले "वैसे मोर पूजार आसने ।
नैवेद्य खाइया विष्णु पूजये आपने ॥६७
स्नान करि उठिले बालुका देइ अङ्गे ।
यतेक चपल शिशु, सब तार सङ्गे ॥६८
स्त्री-वासे पुरुष-वासे करये बदल ।
परिबार बेले सभे लज्जाय बिकल ॥६९
परम-बान्धब तुमि मिश्र जगन्नाथ ।
नित्य एइमत करे, कहिल तोमात ॥७०
दुइ-प्रहरेओ नाहि उठे जल हैते ।
देह बा ताहार भाल थाकिब केमते ॥"७१
हेन-काले पार्श्ववर्त्ती यतेक बालिका ।
कोप-मने आइलेन शचीदेवी यथा ॥७२
शची सम्बोधिया सभे बोलेन बचन ।
"शुन ठाकुराणि ! निज पुत्रेर करण ॥७३
बसन करये चुरि, बोले बड़ मन्द ।
उत्तर करिले जल देय, करे द्वन्द्व ॥७४
व्रत करिबारे कत आनि फुल फल ।
छड़ाइया फेले बल करिया सकल ॥७५
स्नान करि उठिले बालुका देइ अङ्गे ।
यतेक चाल शिशु, सेइ तार सङ्गे ॥७६
अलक्षिते आसि कर्णे बोले बड़ बोल ।"
केहो बोले "मोर मुखे दिलेक कुल्लोल ॥७७
ओकड़ार फल देय केशेर भितरे ।"
केहो बोले "मोरे चाहे विभा करिबारे ॥७८
प्रतिदिन एइमत करे व्यवहार ।
तोमार निमाञि किबा राजार कुमार ॥७९
पूरबे शुनिला येन नन्देर कुमार ।
सेइमत सब करे निमाञि तोमार ॥८०
दुःखे बाप-मा'येरे बलिब येइ दिने ।
ततक्षणे कोन्दल हइब तोमा'सने ॥८१
निवारण कर झाट आपन छाओयाल ।
नदीयाय हेन कर्म कभु नाहि भाल ॥"८२
शुनिया हासेन महाप्रभुर जननी ।
सभा' कोले करिया कहेन प्रिय-बाणी ॥८३
"निमाञि आइले आजि एड़िमु बान्धिया ।
आर येन उपद्रब नाहि करे गिया ॥"८४
शचीर चरण-धूलि लइ सभे शिरे ।
तबे चलिलेन पुन स्नान करिबारे ॥८५
यतेक चापल्य प्रभु करे यार सने ।
परमार्थे सभार सन्तोष बड़ मने ॥८६
कोतुके कहिते आइसेन मिश्र-स्थाने ।
शुनि मिश्र तर्ज्जेगर्ज्जे सदम्भ बचने ॥८७
"निरवधि ए व्यभार करये सभारे ।
भालमते गङ्गा-स्नान ना देय करिबारे ॥८८

एइ भाट याङ तार शास्ति करिबारे।"
सभे राखिलेह केहो राखिते ना पारे ॥८९
क्रोध करि यखन चलिला मिश्रवर।
जानिला गौराङ्ग सर्वभूतेर ईश्वर ॥९०
गङ्गाजले केलि करे श्रीगौरसुन्दर।
सर्व-बालकेर मध्ये अतिमनोहर ॥९१
कुमारिका सभे बोले "शुन विश्वम्भर!
मिश्र आइसेन एइ, पलाह सत्वर ॥"९२
शिशुगण सङ्गे प्रभु याय धरिबारे।
पलाइल ब्राह्मणकुमारी सब डरे ॥९३
सभारे शिखाये मिश्र-स्थाने कहिबार।
"स्नाने नाहि आइसेन निभाजि तोमार ॥९४
सेइ पथे गेला घर पढ़िया शुनिञा।
आमराओ आछि एइ ताहार लागिया ॥"९५
शिखाइया प्रभु आर-पथे गेला घर।
गङ्गाघाटे आसिया मिलिला मिश्रवर ॥९६
आसिया गङ्गार घाटे चारिदिगे चाहे।
शिशुगणमध्ये पुत्र देखिते ना पाये ॥९७
मिश्र जिज्ञासये "विश्वम्भर कति गेला?"
शिशु बोले "आजि स्नाने ना आइला ॥९८
सेइ पथे गेला घर पढ़िया शुनिया।
सभे आछि एइ तार अपेक्षा करिया ॥"९९
चारिदिगे चाहे मिश्र हाथे बाड़ि लैया।
तर्ज्जगर्ज्ज करे बड़ लाग ना पाइया ॥१००
कौतुके याहारा निवेदन कैल गिया।
सेइ सब विप्र पुन बोलये आसिया ॥१०१
"भय पाइ विश्वम्भर पलाइला घरे।
घरे चल तुमि, किछु बोल पाछे तारे ॥१०२
आरबार यदि आसि चपलता करे।
आमराइ धरि दिब तोमार गोचरे ॥१०३
कौतुके से कथा कहिलाङ तोमा'स्थाने।
तोमा' बहि भाग्यवान नाहि त्रिभुवने ॥१०४
से-हेन नन्दन यार गृह माझे थाके।
कि करिबे क्षुधा तृषा भोख रोग शोके ॥१०५
तुमि से सेविला सत्य प्रभुर चरण।
तार महाभाग्य यार एहेन नन्दन ॥१०६
कोटि अपराध यदि विश्वम्भर करे।
तभु तारे थुइबाङ हृदय-उपरे ॥"१०७
जन्मेजन्मे कृष्णभक्त एइसब जन।
ए सब उत्तम-बुद्धि इहार कारण ॥१०८
अतएब प्रभु निज-सेवक सहिते।
नाना-क्रीड़ा करे केहो ना पारे बुझिते ॥१०९
मिश्र बोले "सेहो पुत्र तोमार सभार।
यदि अपराध लह—शपथ आमार ॥"११०
ता,सभार सङ्गे मिश्र करि कोलाकुलि।
गृहे चलिलेन मिश्र हइ कुतूहली ॥१११
आर-पथे घरे गेला प्रभु विश्वम्भर।
हाथेते मोहन पुँथि येन शशधर ॥११२
लिखन-कालिर बिन्दु शोभे गौर अङ्गे।
चम्पके लागिल येन चारिदिके भृङ्गे ॥११३
"जननी!" बलिया प्रभु लागिला डाकिते।
"तैल देह' मोरे याङ सिनान करिते ॥"११४
पुत्रेर बचन शुनि शची हरषित।
किछुइ ना देखे अङ्गे स्नानेर चरित ॥११५
तैल दिया शचीदेवी मनेमने गणे'।
'बालिकारा कि बलिल, किबा विप्रगणे ॥
लिखन-कालिर बिन्दु आछे सर्व-अङ्गे।
सेइ वस्त्र परिधान, सेइ पुँथि सङ्गे ॥"११७
क्षणेके आइला जगन्नाथ मिश्रवर।
मिश्र देखि कोले उठिलेन विश्वम्भर ॥११८

सेइ आलिङ्गने मिश्र बाह्य नाहि जाने ।
आनन्दे पूर्णित हैला पुत्र दरशने ॥११९
मिश्र देखे सर्व-अङ्ग धूलाय व्यापित ।
स्नानचिह्न ना देखिया हइला विस्मित ॥१२०
मिश्र बोले "विश्वम्भर! कि बुद्धि तोमार ।
लोकेरे ना देह' केने स्नान करिबार ?१२१
विष्णु-पूजा सज्ज केने कर अपहार ।
'विष्णु' करियाओ भय नाहिक तोमार॥"१२२
प्रभु बोले "आजि आमि नाहि याइ स्नाने ।
आमार सकल शिशु गेल आगुयाने ॥१२३
ए सकल लोकेरा तारा करे अव्यभार ।
ना गेलेओ सभे दोष कहेन आमार ॥१२४
ना गेलेओ यदि दोष कहेन आमार ।
सत्य तबे करिब सबार अव्यभार ॥"१२५
एत बलि हासि प्रभु यान गङ्गा स्नाने ।
पुन सेइ मिलिलेन शिशुगण-सने ॥१२६
विश्वम्भरे देखि सभे आलिङ्गन करि ।
हासये सकल शिशु शुनिआ चातुरी ॥१२७
सभेइ प्रशंसे "भाल निमाजि चतुर ।
भाल एड़ाइला आजि मारण प्रचुर ॥"१२८
जलकेलि करे प्रभु सब शिशु-सने ।
एथा शची-जगन्नाथ मनेमने गणे' ॥१२९
"ये ये कहिलेन कथा सेहो मिथ्या नहे ।
तबे केने स्नान चिह्न किछु नाहि देहे ॥१३०
सेइमत अङ्गे धूला, सेइमत बेश ।
सेइ पुँथि,सेइ वस्त्र, सेइ मत केश ॥१३१
ए बुझि मनुष्य नहे श्रीविश्वम्भर ।
माया-रूपे कृष्ण बा जन्मिला मोर घर ॥१३२
कोन महापुरुष बा किछुइ ना जानि ।"
हेनमते चिन्तिते आइला द्विजमणि ॥१३३
पुत्र दरशनानन्दे घुचिल विचार ।
स्नेहेपूर्ण हैला दोँहे, किछु नाहि आर ॥१३४
येइ दुइ-प्रहर प्रभु याय पढ़िबारे ।
सेइ दुइ युग हइ थाके से दोँहारे ॥१३५
कोटि-रूपे कोटि मुखे वेदे यदि कहे ।
तभु ए दोँहार भाग्य नाहि समुच्छये ॥१३६
शची-जगन्नाथ-पा'ये बहु नमस्कार ।
अनन्त-ब्रह्माण्डनाथ पुत्रँरूपे याँर ॥१३७
एइमत क्रीड़ा करे वैकुण्ठेर राय ।
बुझिते ना पारे केहो ताहान मायाय ॥१३८
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचाँद जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१३९

इति श्रीआदिखण्डे शैशव-क्रीड़ा-वर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥



पंचम अध्याय

जयजय महामहेश्वर गौरचन्द्र ।
जयजय विश्वम्भर—प्रिय-भक्तवृन्द ॥१
जय जगन्नाथ—शचीपुत्र सर्व-प्राण ।
कृपादृष्ट्ये प्रभु सर्व-जीवे कर त्राण ॥२
हेनमते नवद्वीपे श्रीगौरसुन्दर ।
बाल्य-लीला-छले करे प्रकाश बिस्तार ॥३
निरन्तर चपलता करे सभा सने ।
मा'ये शिखाइलेह प्रबोध नाहि माने ॥४
शिखाइले हय आरो द्विगुण चञ्चल ।
गृहे याहा पाय ताँहा भाङ्गये सकल ॥५
भये आर किछु नाबलये बाप-माये ।
स्वच्छन्द परमानन्द खेलाय लीलाये ॥६
आदिखण्ड-कथा येन अमृत-समान ।
यहिँ शिशुरूपे क्रीड़ा करे भगवान ॥७
पिता माता काहारे ना करे प्रभु भय ।
विश्वरूप अग्रज देखिले नम्र हय ॥८
प्रभुर अग्रज—विश्वरूप भगवान ।
आजन्म बिरक्त सर्वगुणेर निधान ॥९
सर्वशास्त्रे सबे बाखानेन विष्णुभक्ति ।
खण्डिते ताँहान व्याख्या नाहि कारो शक्ति ॥१०
श्रवणे, वदने मने सर्वन्दियगणे ।
कृष्णभक्ति विने आर ना बोले ना शुने ॥११
अनुजेर देखि अति-बिलक्षण-रीत ।
विश्वरूप मने गणे' हइया बिस्मित ॥१२
"ए बालक कभु नहे प्राकृत छाओयाल ।
रूपे आचरणे येन श्रीबालगोपाल ॥१३
यत अमानुषि-कर्म निरवधि करे ।
ये बुझि, खेलेन कृष्ण ए-शिशु-शरीरे ॥" १४

एइमत चिन्ते विश्वरूप-महाशय ।
काहारे ना भाङ्गे तत्त्व, स्वकर्म करय ॥१५
निरवधि थाके सर्ववैष्णवेर सङ्गे ।
कृष्णकथा कृष्णपूजा कृष्णभक्ति रंगे ॥१६
जगत प्रमत्त—धन-पुत्र-मिथ्यारसे ।
देखिले वैष्णव मात्र सभे उपहासे' ॥१७
आर्य्यातर्जा पढ़े सब वैष्णव देखिया ।
"यति, सती, तपस्वीओ याइब मरिया ॥१८
तारे बोले सुकृति, ये दोला-घोड़ा चढ़े ।
दश बिश जन यार आगेपाछे रड़े ॥१९
एते ये गोसाञि भावे करह क्रन्दन ।
तभु त 'दारिद्र्य' दुःख ना हय खण्डन ॥२०
घनघन हरिहरि बलि छाड़ डाक ।
क्रुद्ध हय गोसाञि शुनिले बड़ डाक ॥२१
एइमत बोले कृष्णभक्तिशूण्य जने ।
शुनि महादुःख पाय भागवतगणे ॥२२
कोथाओ ना शुने केहो कृष्णेर कीर्त्तन ।
दग्ध देखे सकल संसार अनुक्षण ॥२३
दुःख बड़ पाय विश्वरूप भगवान ।
ना शुने अभीष्ट कृष्णचन्द्रेर आख्यान ॥२४
गीता भागवत ये ये जने बा पढ़ाय ।
कृष्णभक्तिव्याख्या करो ना आइसे जिह्वाय ॥२५
कुतर्क घुषिया सब-अध्यापक मरे ।
'भक्ति' हेन नाम नाहि जानये संसारे ॥२६
अद्वैत-आचार्य्य आदि यत भक्तगण ।
जीवेर कुमति देखि करये क्रन्दन ॥२७
दुःखे विश्वरूप प्रभु मने मने गणे' ।
"ना देखिब लोकमुख चलिवाङ वने ॥"२८

ऊष:काले विश्वरूप करि गङ्गा स्नान ।
अद्वैत-सभाय आसि हय उपस्थान ॥२९
सर्वशास्त्रे बाखानेन कृष्णभक्ति सार ।
शुनिया अद्वैत सुखे करेन हुङ्कार ॥३०
पूजा छाड़ि विश्वरूपे धरि करे कोले ।
आनन्दे वैष्णव सब 'हरिहरि' बोले ॥३१
कृष्णानन्दे भक्तगण करे सिंहनाद ।
कारो चित्ते आर नाहि स्फुरये बिषाद ॥३२
विश्वरूप छाड़ि केहो नाहि याय घरे ।
विश्वरूपो ना आइसेन आपन-मन्दिरे ॥३३
रन्धन करिया शची बोले विश्वम्भरे ।
"तोमार अग्रजे गिया आनह सत्वरे ।।"३४
मा'येर आदेशे प्रभु अद्वैत सभाय ।
आइसेन अग्रजेरे ल'बार छलाय ॥३५
आसिया देखेन प्रभु वैष्णवमण्डल ।
अन्योऽन्ये करेन कृष्ण-कथन-मङ्गल ॥३६
आपन-प्रस्ताव शुनि श्रीगौरसुन्दर ।
सभारे करेन शुभदृष्टि मनोहर ॥३७
प्रति-अङ्गे निरुपम लावण्येर सीमा ।
कोटि चन्द्र एक नखेर उपमा ॥३८
दिगम्बर सर्व-अङ्ग धूलाय धूसर ।
हासिया अग्रज-प्रति करेन उत्तर ॥३९
"भोजने आइस भाइ! डाकये जननी ।"
अग्रज-वसन धरि चलये आपनि ॥४०
देखि से मोहन रूप सर्वभक्तगण ।
स्थगित हइया सभे करे निरीक्षण ॥४१
समाधिर प्राय हइयाछे भक्तगणे ।
कृष्णेर कथन कारु ना आइसे वदने ॥४२
प्रभु देखि भक्तमोह स्वभावेइ हय ।
बिनु अनुभबेओ दासेर चित्त लय ॥४३
प्रभुओ से आपन भक्तेर चित्त हरे ।
ए कथा बुझिते अन्य जने नाहि पारे ॥४४
ए रहस्य विदित कैलेन भागवते ।
परीक्षित शुनिलेन शुकदेव हैते ॥४५
प्रसङ्गे शुनह भागवतेर आख्यान ।
शुक-परीक्षितेर संबाद अनुपाम ॥४६
एइ गौरचन्द्र यबे जन्मिला गोकुले ।
शिशुसंगे गृहेगृहे क्रीड़ा करि बुले ॥४७
जन्म हैते प्रभुरे सकल गोपीगणे ।
निज पुत्र हइतेओ करेन स्नेह मने ॥४८
यद्यपि ईश्वरबुद्धये ना जाने कृष्णेरे ।
स्वभावेइ पुत्र हैते बड़ स्नेह करे ॥४९
शुनिञा बिस्मित बड़ राजा परीक्षित ।
शुकस्थाने जिज्ञासेन हइ पुलकित ॥५०
"परम अद्भुत कथा कहिला गोसाञि!
त्रिभुवने एमत कोथाओ शुनि नाञि ॥५१
निज-पुत्र हैते पर-तनय-कृष्णेरे ।
कह देखि स्नेह हैल केमन प्रकारे?"५२
श्रीशुक कहेन "शुन राजा परीक्षित!
परमात्मा सर्वदेहे बल्लभ बिदित ॥५३
आत्मा बिने पुत्र बा कलत्र बन्धुगण ।
गृह हैते बाहिर करये ततक्षण ॥५४
अतएब परमात्मा सभार जीवन ।
सेइ परमात्मा—एइ श्रीनन्दनन्दन ॥५५
अतएब परमात्मा-स्वभाव-कारणे ।
कृष्णेते अधिक स्नेह करे गोपीगणे"॥५६
एहो कथा भक्त प्रति, अन्य प्रति नहे ।
अन्यथा जगते केहो स्नेह ना करये ॥५७
'कंसादिरो आत्माकृष्ण,तबे हिंसे केने' ।
पूर्व-अपराध आछे ताहार कारणे ॥५८

सहजे शर्करा मिष्ट सर्वजने जाने ।
केहो तिक्त वासे, जिह्वा-दोषेर कारणे ॥५९
जिह्वार से दोष, शर्करार दोष नाञि ।
एइमत सर्वमिष्ट चैतन्यगोसाञि ॥६०
एइ नवद्वीपेते देखिल सर्वजने ।
तथापिह केहो ना जानिल भक्त बिने ॥६१
भक्तेर से चित्त प्रभु हरे सर्वथाय ।
बिहरये नवद्वीपे वैकुण्ठेर राय ॥६२
मोहिया सभार चित्त प्रभु विश्वम्भर ।
अग्रज लइया चलिलेन निज-घर ॥६३
मनेमने चिन्तये अद्वैत-महाशय ।
"प्राकृत मानुश कभु ए बालक नय ॥"६४
सर्ववैष्णवेर प्रति बलिला अद्वैत ।
"कोनबस्तु एबालक जानिह निश्चित ॥"६५
प्रशंसिते लागिलेन सर्वभक्तगण ।
अपूर्व शिशुर रूप-लावण्य-कथन ॥६६
नाम-मात्र विश्वरूप चलिलेन घरे ।
पुन सेइ आइलेन अद्वैत-मन्दिरे ॥६७
ना भाय संसारसुख विश्वरूप-मने ।
निरवधि थाके कृष्ण-आनन्द-कीर्त्तने ॥६८
गृहे आइलेओ गृहव्याभार ना करे ।
निरवधि थाके विष्णुगृहेर भितरे ॥६९
विवाहेर उद्योग करये पितामाता ।
शुनि विश्वरूप बड़ मने पाय व्यथा ॥७०
'छाड़िब संसार, विश्वरूप मने भावे ।
चलिवाङ वने —नित्य एइ मने जागे ॥७१
ईश्वरेर चित्तवृत्ति ईश्वर से जाने ।
विश्वरूप सन्न्यास करिला कथोदिने ॥७२
जगते विदित नाम 'श्रीशङ्करारण्य' ।
चलिला अनन्त-पथे वैष्णवाग्रगण्य' ॥७३
चलिलेन यदि विश्वरूप महाशय ।
शची-जगन्नाथ दग्ध हइला हृदय ॥७४
गोष्ठी-सहे क्रन्दन करये ऊर्द्ध-रा'य ।
भाइर बिरहे मूर्च्छा गेला गौरराय ॥७५
से बिरह बर्णिते वदने नाहि पारि ।
हइल क्रन्दनमय जगन्नाथपुरी ॥७६
विश्वरूप सन्न्यास देखिया भक्तगण ।
अद्वैतादि सभे बहु करिला क्रन्दन ॥७७
उत्तम मध्यम ये शुनिल नदीयाय ।
हेन नाहि ये शुनिञा दुःख नाहि पाय ॥७८
जगन्नाथ-शचीर विदीर्ण हय बुक ।
निरन्तर डाके 'विश्वरूप ! विश्वरूप !'॥७९
पुत्रशोके मिश्रचन्द्र हइला बिह्वल ।
प्रबोधये यत बन्धुबान्धब सकल ॥८०
"स्थिर हओ मिश्र ! केने दुःख भाव मने ?
सर्वगोष्ठी उद्धारिल सेइ महाजने ॥८१
गोष्ठीये पुरुष यार करये सन्न्यास ।
त्रिकोटि-कुलेर हय श्रीवैकुण्ठे वास ॥८२
हेन कर्म करिलेन नन्दन तोमार ।
सफल हइल विद्या-सम्बन्ध ताहार ॥८३
आनन्द बिशेष आरो करिते जुयाय ।
एत बलि सकले धरये हाथे-पा'य ॥८४
"एइ कुले भूषण तोमार विश्वम्भर ।
एइ पुत्र तोमार हइब वंशधर ॥८५
इहा हैते सर्व-दुःख घुचिब तोमार ।
कोटि पुत्रे कि करिब,ए पुत्र याहार ॥"८६
एइमत सभे बुझायेन बन्धुगण ।
तथापि मिश्रेर दुःख ना हय खण्डन ॥८७
ये-ते-मते धैर्य्य करे मिश्र महाशय ।
विश्वरूप-गुण स्मरि धैर्य्य पासरय ॥८८

मिश्र बोले "एइ पुत्र रहिबेक घरे ।
इहाते प्रमाण मोर ना लय अन्तरे ॥८६
दिलेन कृष्ण से पुत्र, निलेन कृष्ण से ।
ये कृष्णचन्द्रेर इच्छा,हइल से-इ से ॥६०
स्वतन्त्र जीवेर तिलार्द्धेको शक्ति नाञि ।
देहेन्द्रिय कृष्ण ! समर्पिल तोमा' ठाञि ॥"६१
एइरूपे ज्ञानयोगे मिश्र महाधीर ।
अल्पे अल्पे चित्तवृत्ति करिलेन स्थिर ॥६२
हेनमते विश्वरूप हइला बाहिर ।
नित्यानन्दस्वरूपेर अभेद-शरीर ॥६३
ये शुनये विश्वरूप प्रभुर-सन्न्यास ।
कृष्णभक्ति हय तार छिण्डे कर्मफाँस ॥६४
विश्वरूप-सन्न्यास शुनिञा भक्तगण ।
हरिष-बिषाद सभे करे अनुक्षण ॥६५
"ये बा छिल स्थान कृष्णकथा कहिबार ।
ताहा कृष्ण हरिलेन आमा सभाकार ॥६६
आमराओ ना रहिब चलिबाङ वने ।
ए पापिष्ठ-लोक-मुख ना देखि येखाने ॥६७
पाषण्डीर वाक्यज्वाला सहिब बा कत ।
निरन्तर असत्पथे सर्व-लोक रत ॥६८
'कृष्ण' हेन नाम नाहि शुनि कारो मुखे ।
सकल संसार डुबि मरे मिथ्या-सुखे ॥६६
बुझाइले केहो कृष्ण-पथ नाहि लय ।
उलटिया आरो उपहास से करय ॥१००
'कृष्ण भजि तोमार हइल कोन् सुख ?
मागिया से खाओ, आरो बाड़े यत दुःख ॥'१०१
योग्य नहे ए सब लोकेर सने वास ।
वने चलिवाङ" बलि सभे छाड़े श्वास ॥१०२
प्रबोधेन सभारे अद्वैत महाशय ।
"पाइबा परमानन्द सभेइ निश्चय ॥१०३

एवे बड़ वासोँ मुञि हृदये उल्लास ।
हेन बुझि 'कृष्णचन्द्र करिला प्रकाश ॥'१०४
सभे 'कृष्ण' गाओसिया परम-हरिषे ।
एथाइ देखिबा कृष्ण कथोक दिवसे ॥१०५
तोमा 'सभा' लइ हइब कृष्णेर विलास ।
तबे से अद्वैत हङ शुद्ध कृष्णदास ॥१०६
कदाचित याहा पाये शुक बा प्रह्लाद ।
तोमा' सभार भृत्येओ पाइब से प्रसाद ॥"१०७
शुनि अद्वैतेर अति-अमृत-वचन ।
परानन्दे 'हरि' बोले सर्वभक्तगण ॥१०८
'हरि' बलि भक्तगण करये हुङ्कार ।
सुखमय चित्तवृत्ति हइल सभार ॥१०६
शिशु-सङ्गे क्रीड़ा करे श्रीगौरसुन्दर ।
हरिध्वनि शुनि याय बाड़ीर भितर ॥११०
"कि कार्य्ये आइला वाप !"बोले भक्तगणे ।
प्रभु बोले"तोमरा डाकिले मोरे केने ?"१११
एत बलि प्रभु शिशु-संगे धाइ याय ।
तथापि ना जाने केहो प्रभुर मायाय ॥११२
ये अवधि विश्वरूप हइला बाहिर ।
तदवधि प्रभु किछु हइला सुस्थिर ॥११३
निरवधि थाके पिता-मातार समीपे ।
दुःख पासरये येन जननी-जनके ॥११४
खेला सम्वरिया प्रभु यत्न करि पढ़े ।
तिलार्द्धेको पुस्तक छाड़िया नाहि नड़े ॥११५
एकबार ये सूत्र पढ़िया प्रभु याय ।
आरबार उलटिया सभारे ठेकाय ॥११६
देखिया अपूर्व बुद्धि सभेइ प्रशंसे ।
सभे बोले"धन्य पिता-माता हेन वंशे ॥"११७
सन्तोषे कहेन सभे जगन्नाथ-स्थाने ।
"तुमि त कृतार्थ मिश्र ! एहेन नन्दने ॥११८

एमत सुबुद्धि शिशु नाहि त्रिभुवने ।
बृहस्पति जिनिञा हइब अध्ययने ॥११९
शुनिलेइ सर्व अर्थ आपने बाखाने ।
तान फाँकि बाखानिते नारे कोन जने ॥"१२०
शुनिञा पुत्रेर गुण जननी हरिष ।
मिश्र पुन चित्ते वड़ हय बिमरिष ॥१२१
शची प्रति बोले जगन्नाथ मिश्रवर ।
"एहो पुत्र ना रहिब संसार-भितर ॥१२२
एइमत विश्वरूप पढ़ि सर्वशास्त्र ।
जानिल 'संसार सत्य नहे तिलमात्र' ॥१२३
सर्व-शास्त्र-मर्म जानि विश्वरूप धीर ।
अनित्य संसार हैते हइला बाहिर ॥१२४
एहो यदि सर्वशास्त्रे हैब ज्ञानबान ।
छाड़िया संसारसुख करिब पयान ॥१२५
एइ पुत्र सबे दुइ जनेर जीवन ।
इहा ना देखिले इदु जनेर मरण ॥१२६
अतएव इहार पढ़िया कार्य्य नाञि ।
मूर्ख हइ घरे मोर रहुक निमाञि ॥"१२७
शची बोले "मूर्ख हैले जीवेक केमने ?
मूर्खेरे त कन्याओ ना दिब कोन जने ॥"१२८
मिश्र बोले "तुमि त अबुध विप्रसुता ।
हर्त्ता कर्त्ता पिता कृष्ण सभार रक्षिता ॥१२९
जगत पोषण करे जगतेर नाथ ।
'पाण्डित्ये पोषये' केबा कहिल तोमात ॥१३०
किबा मूर्ख, कि पण्डित, याहार येखाने ।
कन्या लिखियाछे कृष्ण, से हैब आपने ॥१३१
कुल-विद्या-आदि उपलक्षण सकल ।
सभारे पोषये कृष्ण, कृष्ण सर्व-बल ॥१३२
साक्षातेइ एइ केने ना देख आमार ।
पढ़ियाओ आमार घरे त नाहि भात ॥१३३
भालमते वर्ण उच्चारितेओ ये नारे ।
सहस्र पण्डित गिया देख तार द्वारे ॥१३४
अतएव विद्या आदि ना करे पोषण ।
कृष्ण से सभारे करे पोषण पालन ॥"१३५

तथाहि—

"अनायासेन मरणं विना दैन्येन जीवनम् ।
अनाराधित-गोविन्दचरणस्य कथं भवेत् ॥"१३

टीका ।

अनायासेनेति—मरणयाननागननुभूयेत्यर्थः ।
न आराधितं गोविन्दचरणं येन तस्य ॥१३६

अनुवाद ।

जिन्होंने श्रीगोविन्द की आराधना नहीं की है उनकी विना आयास से मृत्यु एवं विना दैन्यसे जीवन धारण कैसे सम्भव होगा ?

"अनायासे मरण, जीवन दैन्य बिने ।
कृष्ण सेविले से हय, नहे विद्या-धने ॥१३७
कृष्णकृपा बिने नहे दुःखेर मोचन ।
थाकिल बा विद्या, कुल,कोटिकोटि धन ॥१३
यार गृहे आछये सकल उपभोग ।
तारे कृष्ण दियाछेन कोन एक रोग ॥१३९
किछु विलसिते नारे, दुःखे पुड़ि मरे ।
यार नाहि, ताहा हैते दुःखी बलि तारे ॥१४
एतेक जानिह, थाकिलेओ किछु नहे ।
यारे येन कृष्ण-आज्ञा, से-इ सत्य हये ॥१४१
एतेके ना कर चिन्ता पुत्रप्रति तुमि ।
'कृष्ण पुषिबेन पुत्र' कहिलाङ आमि ॥१४२
याबत् शरीरे प्राण आछये आमार ।
ताबत् तिलेक दुःख नाहिक उहार ॥१४३
आमार-सभारे कृष्ण आछेत रक्षिता ।
किबा चिन्ता, तुमि यार माता पतिव्रता ॥१४

'पढ़िया नाहिक कार्य्य' बलिल तोमारे।
मूर्ख हइ पुत्र मोर रहु मात्र घरे॥"१४५
एत बलि पुत्रेरे डाकिला मिश्रवर।
मिश्र बोले "शुन बाप ! आमार उत्तर॥१४६
आजि हैते आर पाठ नाहिक तोमार।
इहाते अन्यथा कर, शपथ आमार॥१४७
ये तोमार इच्छा बाप ! ताइ दिब आमि।
गृहे बसि परममङ्गले थाक तुमि॥"१४८
एइ बलि मिश्र चलिलेन कार्य्यान्तरे।
पढ़िते ना पाय आर प्रभु विश्वम्भरे॥१४९
नित्य धर्म सनातन श्रीगौराङ्ग-राय।
ना लङ्घे जनक-वाक्य, पढ़िते ना याय॥१५०
अन्तरे दुःखित प्रभु विद्यारस-भङ्गे।
पुन प्रभु उद्धत हइला शिशु-सङ्गे॥१५१
किबा निजगृहे प्रभु, किबा पर-घरे।
याहा पाय, ताहा भाङ्गे अपचय करे॥१५२
निशा हइलेओ प्रभु ना आइसे घरे।
सर्वरात्रि शिशु-सङ्गे नाना क्रीड़ा करे॥१५३
कम्वले ढाकिया अङ्ग दुइ शिशु मेलि।
बृष-प्राय हइया चलेन कुतूहली॥१५४
यार बाड़ी कलावन देखि थाके दिने।
रात्रि हैले बृष रूपे भाङ्गये आपने॥१५५
गरु-ज्ञाने गृहस्थ करये 'हायहाय'।
जागिले गृहस्थ, शिशु-संहति पलाय॥१५६
कारो घरे द्वार दिया बान्धये बाहिरे।
लघ्वी गुर्बी गृहस्थ करिते नाहि पारे॥१५७
के बान्धिल दुयार करये 'हायहाय'।
जागिले गृहस्थ, प्रभु उठिया पलाय॥१५८
एइमत दिनरात्रि वैकुण्ठेर राय।
शिशुगण-सङ्गे क्रीड़ा करे सर्वदाय॥१५९
एतेक चापल्य करे प्रभु विश्वम्भर।
तथापिह मिश्र किछु ना करे उत्तर॥१६०
एकदिन मिश्र चलिलेन कार्य्यान्तर।
पढ़िते ना पाये प्रभु क्रोधित-अन्तर॥१६१
विष्णुनैवेद्येर यत बर्ज्य-हाण्डीगण।
बसिलेन प्रभु हाँड़ी करिया आसन॥१६२
ए बड़ निगूढ़ कथा शुन एकमने।
कृष्णभक्ति-सिद्धि हय इहार श्रवणे॥१६३
बर्ज्य-हाँड़ीगण सब करि सिंहासन।
तथि बसि हासे गौर सुन्दर-वदन॥१६४
लागिल हाँड़ीर काली सर्व-गौर-अंगे।
कनक-पुतलि येन लिखियाछे अंगे॥१६५
शिशुगण गिया जानाइल शचीस्थाने।
"निमाञि बसिया आछे हाँड़ीर आसने॥"१६६
मा'ये आसि देखिया करेन "हायहाय।
ए स्थानेते बाप ! बसिबारे ना जुयाय॥१६७
बर्ज्य-हाँड़ी सब इहा परशिले स्नान।
एतदिने तोमार ए ना जन्मिल ज्ञान ?"१६८
प्रभु बोले "तोरा मोरे ना दिस् पढ़िते।
भद्राभद्र मूर्ख विप्र जानिब केमते ?१६९
मूर्ख आमि, ना जानिये भाल-मन्द-स्थान।
सर्वत्र आमार हय अद्वितीय-ज्ञान॥"१७०
एत बलि हासे बर्ज्य-हाँड़ीर आसने।
दत्तात्रेय-भाब प्रभु हइला तखने॥१७१
मा'ये बोले "तुमि ये बसिला मन्द स्थाने।
एबे तुमि पबित्र बा हइबा केमने ?"१७२
प्रभु बोले "माता ! तुमि बड़ शिशुमति।
अपवित्र स्थाने कभु मोर नहे स्थिति॥१७३
यथा मोर स्थिति, सेइ सर्व पुण्य-स्थान।
गङ्गा-आदि सर्व तीर्थ तहिँ अधिष्ठान॥१७४

आमार से काल्पनिक शुचि बा अशुचि ।
स्रष्टार कि दोष आछे, मने भाब बुझि ॥१७५
लोक-वेद-मते यदि अशुद्ध बा हय ।
आमि परशिलेओ कि अशुद्धता रय ?१७६
ए सब हाँड़ीते मूले नाहिक दूषण ।
तुमि याते विष्णु लागि करिला रन्धन ॥१७७
विष्णुर रन्धन-स्थाली कभु दुष्ट नय ।
सेइ हाँड़ी परशे आर स्थान शुद्ध हय ॥१७८
एतेके आमार वास नहे मन्द-स्थाने ।
सभार शुद्धता मोर परश-कारणे ॥"१७९
बाल्यभावे सर्वतत्त्व कहि प्रभु हासे ।
तथापि ना बुझे केहो तान मायाबशे ॥१८०
सभेइ हासेन शुनि शिशुर बचन ।
"स्नान आसि कर" शची बोलेन तखन ॥१८१
ना आइसेन प्रभु सेइखाने बसि आछे ।
शची बोले 'झाट आय' बापे जाने पाछे ॥१८२
प्रभु बोले "यदि मोरे ना देह' पढ़िते ।
तबे मुञि नाहि याङ कहिलुँ तोमाते ॥"१८३
सभेइ भर्त्सेन ठाकुरेर जननीरे ।
सभे बोले "केने नाहि देह' पढ़िबारे ॥१८४
यत्न करि केहो निज बालक पढ़ाय ।
कत भाग्ये आपने पढ़िते शिशु चाय ॥१८५
कोन् शत्रु हेन बुद्धि दिल बा तोमारे ।
घरे मूर्ख करि पुत्र राखिबार तरे ?१८६
इहाते शिशुर दोष तिलार्द्धेको नाञि ।"
सभेइ बोलेन "बाप ! आइस निमाञि !१८७
आजि हैते तुमि यदि ना पाओ पढ़िते ।
तबे अपचय तुमि करिह भालमते ॥"१८८
ना आइसे प्रभु' सेइखाने बसि हासे ।
सुकृति-सकल सुखसिन्धु-माझे भासे ॥१८९
आपने धरिया शिशु आनिला जननी ।
हासे गौरचन्द्र येन इन्द्रनीलमणि ॥१९०
तत्त्व कहिलेन प्रभु दत्तात्रेय-भावे ।
ना बुझिल केहो विष्णुमायार प्रभावे ॥१९१
स्नान कराइला पुत्रे शची पुण्यवती ।
हेनकाले आइलेन मिश्र महामति ॥१९२
मिश्रस्थाने शची सब कहिलेन कथा ।
"पढ़िते ना पाये पुत्र, मने पाय व्यथा ॥"१९३
सभेइ बोलेन "मिश्र ! तुमि त उदार ।
का'र बोले पुत्र नाहि देह' पढ़िबार ?१९४
ये करिब कृष्णचन्द्र से-इ सत्य हय ।
चिन्ता परिहरि देह' पढ़िते निर्भय ॥१९५
भाग्य से बालक चाहे आपने पढ़िते ।
भाल दिने यज्ञसूत्र देह' भालमते ॥"१९६
मिश्र बोले "तोमरा परम-बन्धुगण ।
तोमरा ये बोल' सेइ आमार बचन ॥"१९७
अलौकिक देखिया शिशुर सर्वकर्म ।
विस्मय भाबेन केहो नाहि जाने मर्म ॥१९८
मध्येमध्ये कोन जन अति भाग्यवाने ।
पूर्वे-कहि राखियाछे जगन्नाथ स्थाने ॥१९९
प्राकृत बालक कभु ए बालक नहे ।
यत्न करि ए बालक राखिय हृदये ॥२००
निरवधि गुप्तभावे प्रभु क्रीड़ा करे ।
वैकुण्ठनायक द्विज-अङ्गने बिहरे ॥२०१
पढ़िते पाइला प्रभु बापेर आदेशे ।
हइलेन महाप्रभु आनन्दबिशेषे ॥२०२
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥२०३

इति श्रीआदिखण्डे श्रीविश्वरूपसन्न्यासादिवर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

षष्ठ अध्याय

जयजय कृपासिन्धु श्रीगौरसुन्दर ।
जय शची-जगन्नाथ-गृह-शशधर ॥१
जयजय नित्यानन्दस्वरूपेर प्राण ।
जयजय सङ्कीर्त्तनधर्म्मेर निधान ॥२
भक्त-गोष्ठी-सहिते गौराङ्ग जयजय ।
शुनिले चैतन्यकथा भक्ति लभ्य हय ॥३
हेनमते महाप्रभु जगन्नाथघरे ।
निगूढ़े आछेन केहो चिनिते ना पारे ॥४
बाल्यक्रीड़ा-नाम यत आछे पृथिवीते ।
सकल खेलाय प्रभु, के पारे कहिते ॥५
वेद-द्वारे व्यक्त हैब सकल-पुराणे ।
किछु शेषे शुनिब सकल भाग्यवाने ॥६
एइमत गौरचन्द्र बाल्यरसे भोला ।
यज्ञोपवीतेर काल आसिया मिलिला ॥७
यज्ञसूत्र पुत्रेर दिबारे मिश्रवर ।
बन्धुवर्ग डाकिया आनिला निज-घर ॥८
परम हरिषे सभे आसिया मिलिला ।
यार येन योग्य-कार्य्य करिते लागिला ॥९
स्त्रीगणेते 'जय' दिया कृष्णगुण गाय ।
नटगणे मृदङ्ग, सानाजि, वंशी बा'य ॥१०
विप्रगणे वेद पढ़े, भाटे रायबार ॥
शची-गृहे हइल आनन्द-अवतार ॥११
यज्ञसूत्र धरिबेन श्रीगौरसुन्दर ।
शुभयोग सकल आइल शची-घर ॥१२
शुभ मासे, शुभ दिन, शुभ क्षण करि ।
धरिलेन यज्ञसूत्र गौराङ्ग श्रीहरि ॥१३
शोभिल श्रीअङ्गे यज्ञसूत्र मनोहर ।
सूक्ष्मरूपे 'शेष' बा बेढ़िला कलेवर ॥१४
हइला वामनरूप प्रभु गौरचन्द्र ।
देखिते सभार बाढ़े परम आनन्द ॥१५
अपूर्व्व ब्रह्मण्य-तेज देखि सर्व्वगणे ।
नर-ज्ञान केहो केहो नाहि करे मने ॥१६
हाथे दण्ड, कान्धे झुलि, श्रीगौरसुन्दर ।
भिक्षा करे प्रभु सर्व्वसेवकेर घर ॥१७
यार यथा शक्ति भिक्षा सभेइ सन्तोषे ।
प्रभुर झुलिते दिया नारीगण हासे ॥१८
द्विजपत्नी-रूप धरि ब्रह्माणी रुद्राणी ।
यत पतिव्रता मुनिवर्गेर गृहिणी ॥१९
श्रीवामन-रूप प्रभुर देखिया सन्तोषे ।
सभेइ झुलिते भिक्षा दिया-दिया हासे ॥२०
प्रभुओ करेन श्रीवामन-रूप-लीला ।
जीवेर उद्धार लागि ए सकल खेला ॥२१
जयजय श्रीवामन रूप गौरचन्द्र ।
दान देह' हृदये तोमार पदद्वन्द्व ॥२२
ये शुने प्रभुर यज्ञसूत्रेर ग्रहण ।
से पाय चैतन्यचन्द्रचरणे शरण ॥२३
हेनमते वैकुण्ठ नायक शची-घरे ।
वेदेर निगूढ़ नानामत क्रीड़ा करे ॥२४
घरे सर्व्वशास्त्रेर बुझिया समीहित
गोष्ठी-माझे प्रभुर पढ़िते हैल चित ॥२५
नवद्वीपे आछे अध्यापक शिरोमणि ।
गङ्गादास-पण्डित ये-हेन सान्दीपनि ॥२६
व्याकरणशास्त्रेर एकान्त तत्त्ववित ।
ताँर ठाञि प्रभुर पढ़िते समीहित ॥२७
बुझिलेन पुत्रेर इङ्गित मिश्रवर ।
पुत्रसङ्गे गेला गङ्गादास-विप्र-घर ॥२८
मिश्र देखि गङ्गादास सम्भ्रमे उठिला ।
आलिङ्गन करि एक-आसने बसिला ॥२९
मिश्र बोले "पुत्र आमि दिल तोमा'स्थाने ।
पढ़ाइबा शुनाइबा सकल आपने ॥"३०

गङ्गादास बोले "बड़ भाग्य से आमार ।
पढ़ाइमु यत शक्ति आछये आमार ॥" ३१
शिष्य देखि परम आनन्दे गङ्गादास ।
पुत्र-प्राय करिया राखिला निज-पाश ॥३२
यत व्याख्या गङ्गादास पण्डित करेन ।
सकृत् शुनिले मात्र ठाकुर धरेन ॥३३
गुरुर यतेक व्याख्या करेन खण्डन ।
पुनर्वार सेइ व्याख्या करेन स्थापन ॥३४
सहस्र सहस्र शिष्य पढ़े यत जने ।
हेन कारो शक्ति नाहि दिबारे दूषणे ॥३५
देखिया अद्भुत बुद्धि गुरु हरषित ।
सर्व-गोष्ठी श्रेष्ठ करि करिला पूजित ॥३६
यत पढ़े गङ्गादास पण्डितेर स्थाने ।
सभारेइ ठाकुर चालेन अनुक्षणे ॥३७
श्रीमुरारी गुप्त, श्रीकमलाकान्त नाम ।
कृष्णानन्द-आदि यत गोष्ठीर प्रधान ॥३८
सभारे चालये प्रभु फाँकि जिज्ञासिया ।
शिशुज्ञाने केहो किछु ना बोले हासिया ॥३९
एइमत प्रतिदिन पढ़िया शुनिया ।
गङ्गास्नाने चले निज-वयस्य लइया ॥४०
पढ़ुयार अन्त नाहि नवद्वीपपुरे ।
पढ़िया मध्याह्ने सभे गङ्गास्नान करे ॥४१
एक अध्यापकेर सहस्र-शिष्यगण ।
अन्योऽन्य कलह करेन अनुक्षण ॥४२
प्रथम वयस प्रभुर स्वभाव चञ्चल ।
पढ़ुया गणेर सह करेन कन्दल ॥४३
केहो बोले "तोर गुरु कोन् बुद्धि तार ।"
केहो बोले "बोल एइ आमि शिष्य यार ॥४४
एइमत अल्पे अल्पे हय गालागालि ।
तबे जल फेलाफेलि तबे देन बालि ॥४५
तबे हय मारामारि याहार ये पारे ।
कर्दम फेलिया कारो गा'ये केहो मारे ॥४६
राजार दोहाइ दिया केहो का'रे धरे
मारिया पलाय केहो गङ्गार ओ'पारे ॥४७
एत हुड़ाहुड़ि करे पढ़ुया सकल ।
बालि-कादामय सब हय गङ्गाजल ॥४८
जल भरिबारे नाहि पारे नारीगणे ।
ना पारे करिते स्नान ब्राह्मण सज्जने ॥४९
परम चञ्चल प्रभु विश्वम्भर राय ।
एइमत प्रभु प्रति-घाटे घाटे याय ॥५०
प्रतिघाटे पढ़ुयार अन्त नाहि पाइ ।
ठाकुर कलह करे प्रति ठाञि ठाञि ॥५१
प्रति-घाटेघाटे याय गङ्गाय साँतारि ।
एक घाटे दुइ चारि दण्ड क्रीड़ा करि ॥५२
यत यत प्रामाणिक पढ़ुयारगण ।
तारा बोले "कलह करह कि कारण ? ५३
जिज्ञासा करह, बुझि कार कोन् बुद्धि ।
वृत्ति-पञ्जी-टीकार के जाने कत शुद्धि ॥" ५४
प्रभु बोले "भाल भाल एइ कथा हय ।
जिज्ञासुक आमारे याहार चित्त लय ॥" ५५
केहो बोले "एत केने कर अहङ्कार ।"
प्रभु बोले "जिज्ञासह ये चित्त तोमार ॥" ५६
"धातु सूत्र बाखानह" बोले से पढ़ुया ।
प्रभु बोले "बाखानि शुनह मन दिया ॥" ५७
सर्वशक्ति-समन्वित प्रभु भगवान ।
करिलेन सूत्र-व्याख्या ये हय प्रमाण ॥५८
व्याख्या शुनि सभे बोले प्रशंसा-बचन ।
प्रभु बोले "एबे शुन करिये खण्डन ॥" ५९
यत बाखानिल ताहा दूषिल सकल ।
प्रभु बोले "स्थाप' एबे कार् आछे बल ?" ६०

चमत्कार सभेइ भावेन मनेमने ।
प्रभु बोले "शुन एवे करिये स्थापने ॥" ६१
पुन हेन व्याख्या करिलेन गौरचन्द्र ।
सर्वमते सुन्दर, कोथाओ नाहि मन्द ॥६२
यत सब प्रामाणिक पढ़ुयार गण ।
सन्तोषे सभेइ करिलेन आलिङ्गन ॥६३
पढ़ुया सकले बोले, "आजि घरे याह ।
कालि ये जिज्ञासि ताहा बलिबारे चाह ॥" ६४
एइमत प्रतिदिन जाह्नवीर जले ।
वैकुण्ठनायक विद्यारसे खेला खेले ॥६५
एइ क्रीड़ा लागिया सर्वज्ञ वृहस्पति ।
शिष्य-सह नवद्वीपे हइला उत्पत्ति ॥६६
जलक्रीड़ा करे प्रभु शिशुगण संगे ।
क्षणेक्षणे गङ्गार ओ'पार याय रङ्गे ॥६७
बहु-मनोरथ पूर्वे आछिल गङ्गार ।
यमुनाय देखि कृष्णचन्द्रेर बिहार ॥६८
"कबे हइबेक मोर यमुनार भाग्य ।"
निरवधि गङ्गा एइ बलितेन बाक्य ॥६९
यद्यपिह गङ्गा अज-भवाद्धि-बन्दिता ।
तथापिह यमुनार पद से वाञ्छिता ॥७०
वाञ्छाकल्पतरु प्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
जाह्नवीर वाञ्छा पूर्ण करे निरन्तर ॥७१
करि बहुविध क्रीड़ा जाह्नवीर जले ।
गृहे आइलेन गौरचन्द्र कुतूहले ॥७२
यथाविधि करि प्रभु श्रीविष्णुपूजन ।
तुलसीरे जल दिया करेन भोजन ॥७३
भोजन करिया मात्र प्रभु सेइ क्षणे ।
पुस्तक लइया गिया बसेन निर्ज्जने ॥७४
आपने करेन प्रभु सूत्रेर टिप्पनी ।
भुलिला पुस्तकरसे सर्वदेवमणि ॥७५
देखिया आनन्दे भासे मिश्र महाशय ।
रात्रि-दिने हरिषे किछुइ ना जानय ॥७६
देखिते देखिते जगन्नाथ पुत्रमुख ।
तिले तिले पाय अनिर्वचनीय सुख ॥७७
येमते पुत्रेर रूप करे मिश्र पान ।
सशरीरे सायुज्य हइल किबा तान ॥७८
सायुज्य बा कोन् उपाधिक सुख ताने ।
सायुज्यादि-सुख मिश्र अल्प करि माने ॥७९
जगन्नाथ-मिश्र-पाय बहु नमस्कार ।
अनन्तब्रह्माण्डनाथ पुत्ररूपे याँर ॥८०
एइमत मिश्रचन्द्र देखिते पुत्रेरे ।
निरवधि भासे विप्र आनन्दसागरे ॥८१
कामदेव जिनिआ प्रभु से रूपवान ।
प्रति अङ्गेअङ्गे से लावण्य अनुपाम ॥८२
इहादेखि मिश्रचन्द्र चिन्तेन अन्तरे ।
"डाकिनी दानवे पाछे पुत्रे बल करे ॥" ८३
भये मिश्र पुत्र समर्पये कृष्ण-स्थाने ।
हासे प्रभु गौरचन्द्र आड़े थाकि शुने ॥८४
मिश्र बोले "कृष्ण ! तुमि रक्षिता सभार ।
पुत्र-प्रति शुभ-दृष्टि करिबा आमार ॥८५
ये तोमार चरण-कमल स्मृति करे ।
कभु विघ्न ना आइसे ताहार मन्दिरे ॥८६
तोमार स्मरण-हीन ये ये पाप-स्थान ।
तथाये डाकिनी-भूत-प्रेत-अधिष्ठान ॥८७

तथाहि (भा० ।१०।६।३)—

"न यत्र श्रवणादीनि रक्षोघ्नानि स्वकर्मसु ।
कुर्वन्ति सात्वतां भर्त्तुर्य्यातुधान्यश्च तत्र हि ॥"
८८॥ इति ।

टीका ।

कृष्णविषये शङ्कमानं राजानं प्रति अविषये

प्रवृत्ता सैब मरिष्यतीति सूचयन्नाह न यत्रेति। यत्र श्रीकृष्णस्य श्रवणादीनि न सन्ति तत्रैव तासां शक्तिः, साक्षात् तस्मिन्नेव सति का शङ्केति भावः। रक्षोघ्नानि पिशाचरक्षोयक्षादि-घातकानि। यातुधान्यः राक्षस्यः। यत्र श्रीकृष्णनाम्नः श्रवण-कीर्त्तनं भवेत् तत्र राक्षस्यः न प्रभवन्ति इत्यर्थः।८८

अनुवाद।

श्रीशुकदेव परीक्षित् को बोले थे—

जहाँ पर जनगण, निज निज कर्मानुष्ठान में सात्वतपति श्रीकृष्ण के राक्षसनाशक चरित्रका श्रवणानुष्ठान नहीं करते हैं, वहाँपर ही राक्षसी निज निज प्रभाव विस्तार करती हैं, श्रीकृष्ण नाम का प्रभाव ही जब इस प्रकार है, तब जहाँपर श्रीकृष्ण स्वयं विद्यमान हैं, वहाँ की बात ही क्या है?

"आमि तोर दास प्रभु! यतेक आमार।
राखिबा आपने तुमि, सकल तोमार ॥८९
अतएव यत आछे विघ्न बा सङ्कट।
ना आसुक कभु मोर पुत्रेर निकट ॥"९०
एइमत निरवधि मिश्र जगन्नाथ।
एकचित्ते बर मागे तुलि दुइ हाथ ॥९१
दैवे एकदिन स्वप्न देखि मिश्रवर।
हरिष-विषाद बड़ हइल अन्तर ॥९२
स्वप्न देखि स्तब पढ़ि दण्डवत् करे।
"हे गोविन्द! निमाञि रहुक मोर घरे ॥९३
सबे एइ बर कृष्ण! मागों तोर ठाञि।
'गृहस्थ हइया घरे रहुक निमाञि'॥"९४
शची जिज्ञासये बड़ हइया विस्मित।
"ए सकल बर केने माग, आचम्बित?"९५
मिश्र बोले "आजि मुञि देखिलुँ स्वपन।
निमाञि क'रेछे येन शिखार मुण्डन ॥९६
अद्भुत-सन्न्यासी-बेश कहने ना याय।
हासे नाचे कान्दे 'कृष्ण' बलि सर्वदाय ॥९७

अद्वैत-आचार्य्य आदि यत भक्तगण।
निमाञि बेढ़िया सभे करेन कीर्त्तन ॥९८
कखनो निमाञि बैसे विष्णुर खट्टाय।
चरण तुलिया देइ सभार माथाय ॥९९
चतुर्मुख पञ्चमुख सहस्रवदन।
सभेइ गायेन 'जय श्रीशचीनन्दन' ॥१००
महाभये चतुर्द्दिके सभे स्तुति करे।
देखिया आमार मुखे वाक्य नाहि स्फुरे ॥१०
कथोक्षणे देखि कोटिकोटि लोक लैया।
निमाञि बुलेन प्रतिनगरे नाचिया ॥१०२
लक्ष कोटि लोक निमाञिर पाछे धाय।
ब्रह्माण्ड स्पर्शिया सभे हरिध्वनि गाय ॥१०
चतुर्द्दिगे शुनि मात्र निमाञिर स्तुति।
नीलाचले याय सर्व-भक्तेर संहति ॥१०
एइ स्वप्न देखि चिन्ता पाङ सर्वथाय।
विरक्त हइया पाछे पुत्र बाहिराय'॥"१
शची बोले "स्वप्न तुमि देखिला गोसाञि।
चिन्ता ना करिह, घरे रहिब निमाञि ॥१०
पुँथि छाड़ि निमाञि ना जाने कोन कर्म।
विद्यारस तार हइयाछे सर्व धर्म ॥"१
एइमत परम उदार दुइजन।
नानाकथा कहे पुत्रस्नेहेर कारण ॥१०
हेनमते कथोदिन थाकि मिश्रवर।
अन्तर्धान हैला नित्य-सिद्ध कलेवर ॥१०
मिश्रेर विजये प्रभु कान्दिला बिस्तर।
दशरथ-विजये येहेन रघुवर ॥१
दुर्निबार श्रीगौरचन्द्रेर आकर्षण।
अतएब रक्षा हैल आइर जीवन ॥१
दुःख-रस ए सकल बिस्तारि कहिते।
दुःख हय, अतएब कहिल संक्षेपे ॥१

हेनमते जननीर संगे गौरहरि ।
आछेन निगूढ़रूपे आपना' सम्बरि ॥११३
पितृहीन -बालक देखिया शची आइ ।
सेइ पुत्र सेवा बइ आर कार्य्य नाञि ॥११४
दण्डेक ना देखे यदि आइ गौरचन्द्र ।
मूर्च्छा पाये आइ दुइ चक्षे हय अन्ध ॥११५
प्रभुओ मायेर प्रीति करे निरन्तर ।
प्रबोधेन ताने बलि आश्वास-उत्तर ॥११६
"शुन माता ! मने किछु ना चिन्तिह तुमि ।
सकल तोमार आछे, यदि आछि आमि ॥११७
ब्रह्मा-महेश्वरेर ये दुर्ल्लभ लोके बोले ।
ताहा आमि तोमारे आनिञा दिब हेले ॥"११८
शचीओ देखिते गौरचन्द्रेर श्रीमुख ।
देह-स्मृति-मात्र नाहि थाके किसे दुःख ॥११९
यार स्मृति-मात्रे सर्व पूर्ण हय काम ।
से प्रभु याहार पुत्ररूपे विद्यमान ॥१२०
ताहार केमते दुःख रहिब शरीरे ?
आनन्दस्वरूप करिलेन जननीरे ॥१२१
हेनमते नवद्वीपे विप्रशिशुरूपे ।
आछेन वैकुण्ठनाथ स्वानुभावसुखे ॥१२२
घरे मात्र हय दरिद्रतार प्रकाश ।
आज्ञा येन महामहेश्वरेर विलास ॥१२३
कि थाकुक, ना थाकुक, नाहिक बिचार ।
चाहिलेइ ना पाइले रक्षा नाहि आर ॥१२४
घर द्वार भाङ्गिया फेलेन सेइक्षणे ।
आपनार अपचय ताहो नाहि माने ॥१२५
तथापिह शची, ये चाहेन, सेइक्षणे ।
नाना-यत्ने देन पुत्रस्नेहेर कारणे ॥१२६
एकदिन प्रभु चलिलेन गङ्गास्नाने ।
तैल आमलकी चाहे जननीर स्थाने ॥१२७
दिव्य-माला सुगन्धि-चन्दन देह' मोरे ।
गङ्गास्नान करि चाङ गङ्गा पूजिबारे ॥'१२८
जननी कहेन 'बाप ! शुन मन दिया ।
क्षणेक अपेक्षा कर माला आनोँ गिया ॥'१२९
'आनोँ गिया' येइ-मात्र शुनिला वचन ।
क्रोधे रुद्र हइलेन शचीर नन्दन ॥१३०
'एखने याइबा तुमि माला आनिबारे ।'
एतबलि क्रुद्ध हइ प्रवेशिला घरे ॥१३१
यतेक आछिल गङ्गाजलेर कलस ।
आगे सब भाङ्गिलेन हइ क्रोधबश ॥१३२
तैल, घृत, लवण आछिल यातेयाते ।
सर्व चूर्ण करिलेन ठेङ्गा लइ हाथे ॥१३३
छोट बड़ घरे यत छिल 'घट' नाम ।
सब भाङ्गिलेन इच्छामय भगवान् ॥१३४
गड़ागड़ि याय घरे तैल, घृत, दुग्ध ।
तण्डुल,कार्पास,धान्य,लोण,बड़ी मुदग ॥१३५
यतेक आछिल सिका टानिञा टानिञा ।
क्रोधावेशे फेले प्रभु छिण्डिया छिण्डिया ॥१३६
बस्त्र आदि यत किछु पाइलेन घरे ।
खानाखानि करि चिरि फेले दुइ-करे ॥१३७
सब भाङ्गि आर यदि नाहि अवशेष ।
तबे शेषे गृह प्रति हैल क्रोधावेश ॥१३८
दोहाथिया ठेङ्गा पाड़े गृहेर उपरे ।
हेन प्राण नाहि कारो ये निरोध करे ॥१३९
घर द्वार भाङ्गि शेषे वृक्षेरे देखिया ।
ताहार उपरे ठेङ्गा पाड़े दोहाथिया ॥१४०
तथापिह क्रोधावेशे क्षमा नाहि हय ।
शेषे पृथिवीते ठेङ्गा नाहि समुच्चय ॥१४१
गृहेर उपान्ते शची सशङ्कित हैया ।
महा-भये आछेन येहेन लुकाइया ॥१४२

धर्मसंस्थापक प्रभु धर्म-सनातन ।
जननीरे हस्त नाहि तोलेन कखन ।।१४३
एतादृश क्रोध आरो आछेन व्यञ्जिया ।
तथापिह जननीरे ना मारिल गिया ।।१४४
सकल भाङ्गिया शेषे आसिया अङ्गने ।
गड़ागड़ि याइते लागिला क्रोध-मने ।।१४५
श्री कनक-अङ्ग हैल बालुका बेष्टित ।
सेइ हैल महाशोभा अकथ्य-चरित ।।१४६
कथोक्षणे महाप्रभु गड़ागड़ि दिया ।
स्थिर हइ रहिलेन शयन करिया ।।१४७
सेइमते दृष्टि कैला योगनिद्रा प्रति ।
पृथिवीते शुइ आछेन श्रीवैकुण्ठ पति ।।१४८
अनन्तेर श्रीविग्रहे याहार शयन ।
लक्ष्मी यार पादपद्म सेवे अनुक्षण ।।१४९
चारि वेदे ये प्रभुरे करे अन्वेषणे ।
से प्रभु यायेन निद्रा शचीर अङ्गने ।।१५०
अनन्त-ब्रह्माण्ड याँर लोमकूपे भासे ।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय करये याँर दासे ।।१५१
ब्रह्मा-शिव-आदि मत्त याँर गुण-ध्याने ।
हेन प्रभु निद्रा यान शचीर अङ्गने ।।१५२
एइमत महाप्रभु स्वानुभवरसे ।
निद्रा याय देखि सर्वदेवे कान्दे हासे ।।१५३
कथोक्षणे शचीदेवी माला आनाइया ।
गङ्गा पूजिबार सज्ज प्रत्यक्ष करिया ।।१५४
धीरे धीरे पुत्रेर श्रीअङ्गे हस्त दिया ।
धूला झाड़ि तुलिते लागिला देवी गिया ।।१५५
'उठउठ बाप ! मोर, हेर माला धर ।
आपन इच्छाय गिया गङ्गापूजा कर ।।१५६
भाल हैल बाप ! यत फेलिला भाङ्गिया ।
याउक् तोमार सब बालाइ लइया ।।''१५७

जननीर व्याक्य शुनि श्रीगौरसुन्दर ।
चलिला करिते स्नान लज्जित-अन्तर ।।१५
एथा शची सर्वगृह करि उपस्कार ।
रन्धनेर उद्योग लागिला करिबार ।।१५
यद्यपिह प्रभु एत करे अपचय ।
तथापि शचीर चित्ते दुःख नाहि हय ।।१६
कृष्णेर चापल्य येन अशेष-प्रकारे ।
यशोदाय सहिलेन गोकुलनगरे ।।१६
एइमत गौराङ्गेर यत चञ्चलता ।
सहिलेन अनुक्षण शची जगन्माता ।।१६
ईश्वरेर क्रीड़ा जानि कहिते कतेक ।
एइमत चञ्चलता करेन यतेक ।।१६
सकल सहेन शची काय-वाक्य-मने ।
हइलेन आइ येन पृथिवी आपने ।।१६
कथोक्षणे महाप्रभु करि गंगास्नान ।
गृहे आइलेन क्रीड़ामय भगवान् ।।१६
विष्णु-पूजा करि तुलसीरे जल दिया ।
भोजन करिते प्रभु वसिलेन गिया ।।१
भोजन करिया प्रभु हैला हर्ष-मन ।
हासिया करेन प्रभु ताम्बूलभक्षण ।।१६
धीरेधीरे आइ तबे बलिते लागिला ।
"एत अपचय बाप ! कि कार्य्ये करिला ।।१
घर द्वार द्रव्य यत सकलि तोमार ।
अपचय तोमार से, कि दाय आमार ।।१६
पढ़िबारे तुमि बोल एखने याइबा ।
घरेते सम्बल नाहि कालि कि खाइबा ?''१
हासे प्रभु जननीर शुनिआ वचन ।
प्रभु बोले "कृष्ण पोष्टा करिब पोषण ।।''१
एत बलि पुस्तक लइया प्रभु करे ।
सरस्वतीपति चलिलेन पढ़िबारे ।।१७

कथोक्षण विद्यारस करि कुतूहले ।
जाह्नवीर तीरे आइलेन सन्ध्याकाले ॥१७३
कथोक्षण थाकि प्रभु जाह्नवीर तीरे ।
तबे पुन आइलेन आपन-मन्दिरे ॥१७४
जननीरे डाक दिया आनिञा निभृते ।
दिव्य स्वर्ण तोला दुइ दिला तान हाथे ॥१७५
"देख माता! कृष्ण एइ दिलेन सम्बल ।
इहा भांगाइया व्यय करह सकल ॥"१७६
एत बलि महाप्रभु चलिला शयने ।
परम विस्मित हइ आइ मने गणे' ॥१७७
"कोथा हैते सुवर्ण आनये बारेबार ।
पाछे कोन प्रमाद जन्माये आसि आर ॥१७८
येइ-मात्र सम्बल-सङ्कोच हय घरे ।
सेइ एइमत सोना आने बारेबारे ॥१७९
किबा धार करे, किबा कोन सिद्धि जाने ।
कोन् रूपे कार सोना आने वा केमने ॥"१८०
महा-अकैतव आइ परम उदार ।
भाङ्गाइते दितेओ डराय बारेबार ॥१८१
"दशठाञि पाँचठाञि देखाइया आगे ।"
लोकेरे शिखाय आइ"भाङ्गाइवि तबे ॥"१८२
हेनमते महाप्रभु सर्वसिद्धेश्वर ।
गुप्तभावे आछे नवद्वीपेर भितर ॥१८३
ना छाड़ेन श्रीहस्ते पुस्तक एकक्षण ।
पढ़ेन गोठीते येन प्रत्यक्ष मदन ॥१८४
ललाटे शोभये ऊर्द्ध-तिलक सुन्दर ।
शिरे श्रीचाँचर-केश सर्व-मनोहर ॥१८५
स्कन्धे उपवीत, ब्रह्मतेज मूर्त्तिमन्त ।
हास्यमय श्रीमुख प्रसन्न, दिव्य दन्त ॥१८६
किबा से अद्भुत दुइ कमल-नयन ।
किबा से अद्भुत शोभे त्रिकच्छ-वसन ॥१८७
येइ देखे, सेइ एक दृष्टचे रूप चा'हे ।
हेन नाहि 'धन्यधन्य' बलि ये ना याये ॥१८८
हेन ये अद्भुत व्याख्या करेन ठाकुर ।
शुनिञा गुरुर हय सन्तोष प्रचुर ॥१८९
सकल पढ़ुयार मध्ये आपने धरिया ।
वसायेन गुरु सर्व-प्रधान करिया ॥१९०
गुरु बोले "बाप ! तुमि मन दिया पढ़ ।
भट्टाचार्य्य हैबा तुमि, बलिलाङ दढ़ ॥"१९१
प्रभु बोले "तुमि आशीर्वाद कर यारे ।
भट्टाचार्य्य-पद कोन् दुर्ल्लभ ताहारे ?"१९२
याहारे ये जिज्ञासेन श्रीगौरसुन्दर ।
हेन नाहि पढ़ुया ये दिबेक उत्तर ॥१९३
आपनि करेन तबे सूत्रेर स्थापन ।
शेषे आपनार व्याख्या करेन खण्डन ॥१९४
केहो यदि कोनमते ना पारे स्थापिते ।
तबे सेइ व्याख्या प्रभु करेन सुरीते ॥१९५
किबा स्नाने, कि भोजने, किबा पर्य्यटने ।
नाहिक प्रभुर आर चेष्टा शास्त्र-विने ॥१९६
एइमते आछेन ठाकुर विद्यारसे ।
प्रकाश ना करे जगतेर दिन-दोषे ॥१९७
हरिभक्तिशूण्य हैल सकल संसार ।
असत्संग असत्पथ बहि नाहि आर ॥१९८
नानारूपे पुत्रादिर महोत्सब करे ।
देह-गेह-व्यतिरिक्त आर नाहि स्फुरे ॥१९९
मिथ्या-सुखे देखि सब लोकेर आदर ।
वैष्णवेर गण सब दुःखित-अन्तर ॥२००
'कृष्ण' बलि सर्वगणे करेन क्रन्दन ।
"ए सब जीवेरे कृपा कर नारायण ॥२०१
हेन देह पाइया ना हैल कृष्णेर रति ।
कतकाल गिया आर भुञ्जिव दुर्गति ॥२०२

ये नर-शरीर लागि देवे काम्य करे ।
ताहा व्यर्थ याय मिथ्या सुखेर विहारे ॥२०३
कृष्ण-यात्रा- महोत्सव-पर्व नाहि करे ।
विवाहादि-कर्मे से आनन्द करि मरे ॥२०४
तोमार से जीव प्रभु ! तुमि से रक्षिता ।
कि बलिब आमरा, तुमि से सर्व-पिता ॥"२०५
एइमत भक्तगण सभार कुशल ।
चिन्तेन गायेन कृष्णचन्द्रेर मंगल ॥२०६
विद्यारस करे गौरचन्द्र भगवान ।
एखन शुनह नित्यानन्देर आख्यान ॥२०७
पूर्वे प्रभु श्रीअनन्त चैतन्य-आज्ञाय ।
राढ़े अवतीर्ण हइ आछेन लीलाय ॥२०८
हाड़ो-ओझा नामे पिता, माता पद्मावती ।
एकचाका-नामे ग्राम मौड़ेश्वर यथि ॥२०९
शिशु हैते सुस्थिर सुबुद्धि गुणवान् ।
जिनिआ कन्दर्प कोटि लावण्येर धाम ॥२१०
सेइ हैते राढ़े हैल सर्व-सुमंगल ।
दुर्भिक्ष-दारिद्रय-दोष खण्डिल सकल ॥२११
ये दिने जन्मिला नवद्वीपे गौरचन्द्र ।
राढ़े थाकि हुङ्कार करिला नित्यानन्द ॥२१२
अनन्त-ब्रह्माण्ड व्याप्त हइल हुङ्कार ।
मूर्च्छागत हैला येन सकल संसार ॥२१३
कथो लोक बलिलेक "हइल बज्रपात ।"
कथो लोक मानिलेक परम उत्पात ॥२१४
कथो लोक बलिलेक "जानिल कारण ।
मौड़ेश्वर-गोसाञिर हइल गर्ज्जन ॥"२१५
एइमत सर्वलोक नाना कथा गाय ।
नित्यानन्दे केहो नाहि चिनिल मायाय ॥२१६
हेनमते आपना' लुकाइ नित्यानन्द ।
शिशुगण-संगे खेला करेन आनन्द ॥२१७
शिशुगण-संगे प्रभु यत क्रीड़ा करे ।
श्रीकृष्णेर कार्य्य विना आर नाहि स्फुरे ॥२१८
देव-सेवा करेन मिलिया शिशुगणे ।
पृथिवीर-रूपे केहो करे निवेदने ॥२१९
तबे पृथ्वी लैया सभे नदीतीरे याय ।
शिशुगण मेलि स्तुति करे ऊर्द्ध-रा'य ॥२२०
कोन शिशु लुकाइया ऊर्द्ध करि बोले ।
"जन्मिवाङ गिया आमि मथुरा-गोकुले ॥"२२१
कोनदिन निशाभागे शिशुगण लैया ।
वसुदेव देवकीर करायेन विया ॥२२२
बन्दिघर करिया अत्यन्त निशाभागे ।
कृष्ण-जन्म करायेन,केहो नाहि जागे ॥२२३
गोकुल सृजिया तथि आनेन कृष्णेरे ।
महामाया दिल लैया भाण्डिया कंसेरे ॥२२४
कोन शिशु साजायेन पूतनार रूपे ।
केहो स्तन पान करे उठि तार बुके ॥२२५
कोनदिन शिशु-संगे नलखड़ि दिया ।
शकट गढ़िया ताहा फेलेन भाङ्गिया ॥२२६
निकटे वसये यत गोयालार घरे ।
अलक्षिते शिशु-संगे गिया चुरि करे ॥२२७
ताने छाड़ि शिशुगण नाहि याय घरे ।
रात्रि दिन नित्यानन्द-संहति विहरे ॥२२८
याहार बालक, तारा किछु नाहि बोले ।
सभे स्नेह करिया राखेन निज कोले ॥२२९
सभे बोले "नाहि देखि हेनमत खेला ।
केमने जानिल शिशु एत कृष्णलीला ?"२३०
तृणावर्त्त, वक, अघ, ह'ये शिशुगण ।
कृष्णरूपे केहो तार लये त जीवन ॥२३१
कोनदिन पत्रेर गढ़िया नागगण ।
जले याय लइया सकल शिशुगण ॥२३२

झाँप दिया पड़े केहो आविष्ट हइया ।
चैतन्य कराय पाछे आपनि आसिया ॥२३३
कोनदिन शिशु-संगे तालवने गिया ।
शिशु-संगे ताल खाय धेनुके मारिया ॥२३४
शिशु-संगे गोष्ठे गिया नाना क्रीड़ा करे ।
वृषासुर रचिया ताहारे तथा मारे ॥२३५
बिकाले आइसे घरे गोष्ठीर सहिते ।
शिशुगण-संगे शृङ्ग बाइते बाइते ॥२३६
कोनदिन करे गोवर्द्धन-धर-लीला ।
वृन्दावन रचि कोनदिन करे खेला ॥२३७
कोनदिन करे गोपीर वसन हरण ।
कोनदिन करे यज्ञपत्नी-दरशन ॥२३८
कोनो शिशु नारद काचये दाड़ि दिया ।
कंस-स्थाने मन्त्रणा कहे निभृते वसिया ॥२३९
कोनदिन कोन शिशु अक्रूरेर वेशे ।
लइ याय राम-कृष्ण कंसेर निदेशे ॥२४०
आपनेइ गोपीभावे ये करे रोदन ।
नदी वहे हेन, सब देखे शिशुगण ॥२४१
विष्णुमाया मोहे केहो लखिते ना पारे ।
नित्यानन्द-संगे सब बालक बिहरे ॥२४२
मधुपुरी रचिया भ्रमेण शिशु-संगे ।
केहो हय माली तबे माला परे रंगे ॥२४३
कुब्जा-बेश करि गन्ध परे कारो स्थाने ।
धनुक करिया भांगे करिया गर्ज्जने ॥२४४
कुवलय, चानूर' मुष्टिक, मल्ल मारि ।
कंस करि काहारो पाड़ये चुले धरि ॥२४५
कंसबध करिया नाचये शिशु-संगे ।
सर्वलोक देखि हासे बालकेर रंगे ॥२४६
एइमत यतयत अवतार-लीला ।
सब अनुकरण करिया करे खेला ॥२४७
कोनदिन नित्यानन्द हयेन वामन ।
बलि-राजा करि, छले ताहार भुवन ॥२४८
वृद्ध-काचे शुक्ररूपे केहो माना करे ।
भिक्षा लइ चड़े प्रभु शेषे तार शिरे ॥२४९
कोनदिन नित्यानन्द सेतुबन्ध करे ।
वानरेर रूप सब शिशुगण धरे ॥२५०
भेरेण्डार गाछ काटि फेलायेन जले ।
शिशुगण मेलि "जय रघुनाथ बोले ॥"२५१
श्रीलक्ष्मणरूप प्रभु धरिला आपने ।
धनु धरि कोपे चले सुग्रीवेर स्थाने ॥२५२
"आरेरे वानरा ! मोर प्रभु दुःख पाय ।
प्राण ना लइमु यदि तबे झाट आय ॥२५३
सुवेल-पर्वते मोर प्रभु पाय दुःख ।
नारीगण लइया वेटा ! तुमि कर सुख ?"२५४
कोनदिन क्रुद्ध ह'ये परशुरामेरे ।
"मोर दोष नाहि, विप्र! पलाह सत्वरे ॥"२५५
लक्ष्मणेर भावे प्रभु हय सेइरूप ।
बुझिते ना पारे शिशु मानये कौतुक ॥२५६
पञ्च-वानरेर रूपे बुले शिशुगण ।
बार्त्ता जिज्ञासये प्रभु हइया लक्ष्मण ॥२५७
"के तोरा बानर सब ! बुल वनेवने ।
आमि रघुनाथभृत्य बोल मोर स्थाने ॥"२५८
तारा बोले "आमरा बालीर भये बुलि ।
देखाओ श्रीरामचन्द्र, लइ पदधूलि ॥"२५९
ता'सभारे कोले करि आइसे लइया ।
श्रीराम-चरणे पड़े दण्डवत् हैया ॥२६०
इन्द्रजित-बध-लीला कोनदिन करे ।
कोनदिन आपने लक्ष्मण भावे हारे ॥२६१
विभीषण करिया आनेन रामस्थाने ।
लङ्केश्वर-अभिषेक करेन ताहाने ॥२६२

कोनो शिशु बोले "मुञि आइलुँ रावण ।
शक्तिशेल हानि एइ, सम्बर' लक्ष्मण !" २६३
एत बलि पद्मपुष्प मारिल फेलिया ।
लक्ष्मणेर भावे प्रभु पड़िला ढलिया ॥२६४
मूर्च्छित हइला प्रभु लक्ष्मणेर भावे ।
जागाये छाओयाल सब तभु नाहि जागे ॥२६५
परमार्थे धातु नाहि सकल शरीरे ।
कान्दये सकल शिशु हाथ दिया शिरे ॥२६६
शुनि पिता माता धाइ आइला सत्वरे ।
देखये पुत्रेर धातु नाहिक शरीरे ॥२६७
मूर्च्छित हइया दोँहे पड़िला भूमिते ।
देखि सर्वलोक आसि हइला विस्मिते ॥२६८
सकल बृत्तान्त कहिलेन शिशुगण ।
केहो बोले "बुझिलाङ–भावेर कारण ॥२६९
पूर्वे दशरथभावे एक नटवर ।
रामवनवासे एड़िलेन कलेवर ॥" २७०
केहो बोले "काचकाचि आछये छाओयाल ।
हनूमान् औषध दिले हइबेक भाल ॥" २७१
पूर्वे प्रभु शिखाइयाछिलेन सभारे ।
"पड़िले तोमा बेढ़ि कान्दिह आमारे ॥२७२
क्षणेक विलम्बे पाठाइह हनूमान् ।
नाके दिले औषध आसिब मोर प्राण ॥" २७३
निजभावे प्रभु मात्र हइला अचेतन ।
देखि वड़ बिकल हइला शिशुगण ॥२७४
छन्न हइलेन सभे, शिक्षा नाहि स्फुरे ।
"उठ भाइ !" बलि मात्र कान्दे उच्चस्वरे ॥२७५
लोकमुखे शुनि कथा हइल स्मरण ।
हनूमान्-काचे शिशु चलिला तखन ॥२७६
आर एक शिशु पथे तपस्वीर वेशे ।
फल मूल दिया हनूमानेरे आशंसे ॥२७७

"रह बाप ! धन्य कर आमार आश्रम ।
बड़ भाग्ये आसि मिले तोमा,-हेन जन ॥" २७८
हनुमान बोले "कार्य्य गौरबे चलिब ।
आसिबारे चाहि, रहिबारे ना पारिब ॥२७९
शुनिआछ रामचन्द्र-अनुज लक्ष्मण ।
शक्तिशेले ताँरे मूर्च्छा करिल रावण ॥२८०
अतएब याइ आमि श्रीगन्धमादन ।
औषध आनिले रहे ताँहार जीवन ॥" २८१
तपस्वी बोलये "यदि याइबा निश्चय ।
स्नान कर किछु खाइ करह विजय ॥" २८२
नित्यानन्द-शिक्षाये बालके कथा कहे ।
विस्मित हइया सर्वलोके चाहि रहे ॥२८३
तपस्वीर बोले सरोवरे गेला स्नाने ।
जले थाकि आर शिशु धरिला चरणे ॥२८४
कुम्भीरेर रूप धरि याय जले लैया ।
हनूमान शिशु आने कूलेते टानिञा ॥२८५
कथोक्षणे रण करि जिनिञा कुम्भीर ।
आसि देखे हनूमान् आर महावीर ॥२८६
आर एक शिशु धरि राक्षसेर काचे ।
हनूमान् खाइबारे याय तार पाछे ॥२८७
"कुम्भीर जिनिला, मोरे जिनिबा केमने ।
तोमा' खाङ, तबे केबा जीयाबे लक्ष्मणे ?" २८८
हनूमान् बोले "तोर रावण कुक्कुर ।
तारे नाहि वस्तु-बुद्धि, तुइ पाला दूर ॥" २८९
एइमत दुइजने हय गालागाली ।
शेषे हय चूलाचूली, तबे किलाकिली ॥२९०
कथोक्षणे से कौतुके जिनिञा राक्षसे ।
गन्धमादने आसि हइला प्रबेशे ॥२९१
तहिँ गन्धर्वेर बेश धरि शिशुगण ।
ता' सभार संगे युद्ध हय कथोक्षण ॥२९२

युद्धे पराजय करि गन्धर्वेर गण ।
शिरे करि आनिलेन गन्धमादन ॥२९३
आर एक शिशु तहिँ वैद्यरूप धरि ।
औषध दिलेन नाके श्रीराम स्मङरि ॥२९४
नित्यानन्द महाप्रभु उठिला तखने ।
देखि माता-पिता-आदि हासे सर्वजने ॥२९५
कोले करिलेन गिया हाड़ाइ पण्डित ।
सकल बालक हइलेन हरषित ॥२९६
सभे बोले "बाप ! इहा कोथा बा शिखिला ?"
हासि बोले प्रभु "मोर ए सकल लीला ॥"२९७
प्रथम-बयस प्रभु अति सुकुमार ।
कोले हैते कारो चित्त नाहि एड़िबार ॥२९८
सर्वलोके पुत्र हैते बड़ स्नेह वासे ।
चिनिते ना पारे केहो विष्णुमाया वशे ॥२९९
हेनमते शिशुकाल हैते नित्यानन्द ।
कृष्णलीला विना आर ना करे आनन्द ॥३००
पिता माता गृह छाड़ि सर्वशिशुगण ।
नित्यानन्द-संहति बिहरे अनुक्षण ॥३०१
से सब शिशुर पा'ये रहु नमस्कार ।
नित्यानन्द-संगे यार एमत विहार ॥३०२
रावणेर रूप धरि कोन शिशुजन ।
रामरूपे केहो तार हरये जीवन ॥३०३
रावणे बधिया विभीषणे राज्य दिया ।
देशेरे चलिला राम सीता उद्धारिया ॥३०४
बहुदिने चारि भाइये हइल मिलन ।
अभिषेक कैल रामे यत देवगण ॥३०५
एइमत क्रीड़ा करे नित्यानन्द राय ।
शिशु हैते कृष्णलीला विने नाहि भाय ॥३०६
अनन्तेर लीला केबा पारे कहिबारे ।
ताहान कृपाय येनमत स्फुरे यारे ॥३०७
हेनमते द्वादश वत्सर थाकि घरे ।
नित्यानन्द चलिलेन तीर्थ करिबारे ॥३०८
तीर्थयात्रा करिलेन विंशति वत्सर ।
तबे शेषे आइलेन चैतन्यगोचर ॥३०९
नित्यानन्द-तीर्थयात्रा शुन आदिखण्डे ।
ये प्रभुरे निन्दे' दुष्ट पापिष्ठ पाषण्डे ॥३१०
ये प्रभु करिल सर्व-जगत-उद्धार ।
करुणासमुद्र याहा बहि नाहि आर ॥३११
याहार कृपाये जानि चैतन्येर तत्त्व ।
ये प्रभुर द्वारे व्यक्त चैतन्यमहत्त्व ॥३१२
शुन चैतन्यप्रियतमेर कथन ।
येमते करिला तीर्थमण्डली-भ्रमण ॥३१३
प्रथमे चलिला प्रभु तीर्थ वक्रेश्वर ।
तबे वैद्यनाथ-वने गेला एकेश्वर ॥३१४
गया गिया काशी गेला शिव-राजधानी ।
यहिँ धारा वहे गङ्गा उत्तरवाहिनी ॥३१५
गङ्गा देखि बड़ सुखी नित्यानन्द-राय ।
स्नान करे पान करे आर्त्ति नाहि याय ॥३१६
प्रयागे करिला माघमासे प्रातःस्नान ।
तबे मथुराय गेला पूर्वजन्मस्थान ॥३१७
यमुना-विश्रामघाटे करि जलकेलि ।
गोवर्द्धनपर्वते बुलेन कुतूहली ॥३१८
श्रीवृन्दावन-आदि यत द्वादश वन ।
एके एके प्रभु सब करेन भ्रमण ॥३१९
गोकुले नन्देर घर-वसति देखिया ।
बिस्तर रोदन प्रभु करिला वसिया ॥३२०
तबे प्रभु मदनगोपाल नमस्करि ।
चलिला हस्तिनापुर--पाण्डवेर पुरी ॥३२१
भक्तस्थान देखि प्रभु करेन क्रन्दन ।
ना बुझे तैर्थिक भक्तिशून्येर कारण ॥३२२

बलराम कीर्त्ति देखि हस्तिनानगरे ।
"त्राहि हलधर !" बलि नमस्कार करे ।।३२३
तबे द्वारकाय आइलेन नित्यानन्द ।
समुद्रे करिला स्नान हइला आनन्द ।।३२४
सिद्ध पुर गेला यथा कपिलेर स्थान ।
मत्स्य-तीर्थे महोत्सवे करिला अन्नदान ।।३२५
शिव-काञ्ची विष्णु-काञ्ची गेला नित्यानन्द ।
देखि हासे दुइ गणे महा-महा-द्वन्द्व ।।३२६
कुरुक्षेत्रे पृथूदक बिन्दुसरोवर ।
प्रभासे गेलेन सुदर्शन-तीर्थवर ।।३२७
त्रितकूप महातीर्थ गेलेन बिशाला ।
तबे ब्रह्मतीर्थ चक्रतीर्थेरे चलिला ।।३२८
प्रतिस्रोता गेला यथा प्राची सरस्वती ।
नैमिष-अरण्ये तबे गेला महामति ।।३२९
तबे गेला नित्यानन्द अयोध्यानगर ।
रामजन्मभूमि देखि कान्दिला विस्तर ।।३३०
तबे गेला गुहकचण्डाल राज्य यथा ।
महा-मूर्च्छा नित्यानन्द पाइलेन तथा ।।३३१
गुह-चण्डालेर माये हइल स्मरण ।
तिनदिन आछिला आनन्दे अचेतन ।।३३२
ये ये वने आछिला ठाकुर रामचन्द्र ।
देखिया बिरहे गड़ि याय नित्यानन्द ।।३३३
तबे गेला सरयू कौशिकी करि स्नान ।
तबे गेला पुलह-आश्रम पुण्यस्थान ।।३३४
गोमती गण्डकी शोण तीर्थे स्नान करि ।
तबे गेला महेन्द्रपर्वत चूड़ोपरि ।।३३५
परशुरामेरे तहिँ करि नमस्कार ।
तबे गेला गङ्गाजन्मभूमि—हरिद्वार ।।३३६
पम्पा भीमरथी गेला सप्तगोदावरी ।
वेण्वा-तीर्थे बिपाशाय मज्जन आचरि ।।३३७

कार्त्तिक देखिया नित्यानन्द महामति ।
श्रीपर्वत गेला यथा महेश-पार्वती ।।३३८
ब्राह्मण-ब्राह्मणी-रूपे महेश पार्वती ।
सेइ श्रीपर्वते दोँहे करेन वसति ।।३३९
निज-इष्टदेव चिनिलेन दुइजने ।
अवधूतरूपे करे तीर्थ-पर्यटने ।।३४०
परमसन्तोषे दोँहे अतिथि देखिया ।
पाक करिलेक देवी हरषित हैया ।।३४१
परम-आदरे भिक्षा दिलेन प्रभुरे ।
हासि नित्यानन्द दोँहाकारे नमस्करे ।।३४२
कि अन्तर कथा हैल, कृष्ण से जानेन ।
तबे नित्यानन्द प्रभु द्रविड़े गेलेन ।।३४३
देखिया वेङ्कटनाथ कामकोष्ठीपुरी ।
काञ्ची सरिद्वरा गिया गेलेन कावेरी ।।३४४
तबे गेला श्रीरङ्गनाथेर पुण्य स्थान ।
तबे करिलेन हरिक्षेत्रेरे पयान ।।३४५
ऋषभ-पर्वत गेला दक्षिण मथुरा ।
कृतमाला ताम्रपर्णी यमुना-उत्तरा ।।३४६
मलय पर्वत गेला—अगस्त्य-आलय ।
ताहाराओ हृष्ट हैला देखि महाशय ।।३४७
ता'सभार अतिथि हइला नित्यानन्द ।
वदरिकाश्रम गेला परम-आनन्द ।।३४८
कथोदिन नरनारायणेर आश्रमे ।
आछिलेन नित्यानन्द परम आनन्दे ।।३४९
तबे नित्यानन्द गेला व्यासेर आलय ।
व्यास चिनिलेन बलराम महाशय ।।३५०
साक्षात् हइया व्यास आतिथ्य करिला ।
प्रभुओ व्यासेरे दण्ड-प्रणात हइला ।।३५१
तबे नित्यानन्द गेला बौद्धेर भवन ।
देखिलेन प्रभु वसि आछे बौद्धगण ।।३५२

जिज्ञासेन प्रभु केहो उत्तर ना करे ।
क्रुद्ध हइ प्रभु लाथि मारिलेन शिरे ॥३५३
पलाइल बौद्धगण हासिया हासिया ।
वने भ्रमे' नित्यानन्द निर्भय हइया ॥३५४
तबे प्रभु आइलेन कन्यका-नगर ।
दुर्गादेवी देखि गेला दक्षिणसागर ॥३५५
तबे नित्यानन्द गेला श्रीअनन्तपुरे ।
तबे गेला पञ्चअप्सरा-सरोवरे ॥३५६
गोकर्णाख्य गेला प्रभु शिवेर मन्दिरे ।
केरलेते त्रिगर्त्तके बुले घरे घरे ॥३५७
द्वैपायनी आर्य्या देखि नित्यानन्द-राय ।
निर्विन्ध्या पयोष्णी तापी भ्रमेण लीलाय ॥३५८
रेवा माहिष्मतीपुरी मनु तीर्थ गेला ।
सूर्पारक दिया प्रभु प्रतीची चलिला ॥३५९
एइमत अभय-परमानन्द-राय ।
भ्रमे' नित्यानन्द भय नाहिक काहाय ॥३६०
निरन्तर कृष्णावेशे शरीर अवश ।
क्षणे कान्दे, क्षणे हासे, के बुझे से रस ॥३६१
एइमत नित्यानन्द प्रभु भ्रमे वने ।
दैवे माधवेन्द्र-सने हैल दरशने ॥३६२
माधवेन्द्रपुरी प्रेममय-कलेवर ।
प्रेममय यत सब संगे अनुचर ॥३६३
कृष्णरस विनु आर नाहिक आहार ।
माधवेन्द्रपुरी देहे कृष्णेर बिहार ॥३६४
यार शिष्य महाप्रभु-अद्वैतगोसाञि ।
कि कहिब आर तार प्रेमेर बड़ाइ ॥३६५
माधव-पुरीरे देखिलेन नित्यानन्द ।
ततक्षणे प्रेमे मूर्च्छा हइला निस्पन्द ॥३६६
नित्यानन्द देखि मात्र श्रीमाधवपुरी ।
पड़िला मूर्च्छित हइ आपना' पासरि ॥३६७
'भक्तिरसे आदि माधवेन्द्र सूत्रधार' ।
गौरचन्द्र इहा कहियाछेन बारेबार ॥३६८
दोँहे मूर्च्छा हइलेन दोँहे-दरशने ।
कान्दये ईश्वरपुरी-आदि-शिष्यगणे ॥३६९
क्षणेके हइला वाह्यदृष्टि दुइजने ।
अन्योऽन्ये गलाय धरि करेन क्रन्दने ॥३७०
वने गड़ि याय दुइ प्रभु प्रेमरसे ।
हुङ्कार करये कृष्णप्रेमेर आवेशे ॥३७१
प्रेमनदी वहे दुइ प्रभुर नयाने ।
पृथिवी हइया सिक्त धन्य हेन माने ॥३७२
कम्प, अश्रु, पुलक, भावेर अन्त नाञि ।
दुइ-देहे बिहरये चैतन्यगोसाञि ॥३७३
नित्यानन्द बोले "यत तीर्थ करिलाङ ।
सम्यक् ताहार फल आजि पाइलाङ ॥३७४
नयने देखिलुँ माधवेन्द्रेर चरण ।
ए प्रेम देखिया धन्य हइल जीवन ॥"३७५
माधवेन्द्रपुरी नित्यानन्दे करि कोले ।
उत्तर ना स्फुरे—रुद्धकण्ठ प्रेमजले ॥३७६
हेन प्रीत हइलेन माधवेन्द्रपुरी ।
बक्ष हैते नित्यानन्द बाहिर ना करि ॥३७७
ईश्वरपुरी ब्रह्मानन्दपुरी आदि यत ।
सर्व-शिष्य हइलेन नित्यानन्दे रत ॥३७८
सभे यत महाजन सम्भाषा करेन ।
कृष्णप्रेम काहारो शरीरे ना देखेन ॥३७९
सभेइ पायेन दुःख जन सम्भाषिया ।
अतएब वन सभे भ्रमेण देखिया ॥३८०
अन्योऽन्ये से सब दुःखेर हैल नाश ।
अन्योऽन्ये देखि कृष्णप्रेमेर प्रकाश ॥३८१
कथोदिन नित्यानन्द माधवेन्द्र-संगे ।
भ्रमेण श्रीकृष्णकथा-परानन्द-रङ्गे ॥३८२

माधवेन्द्र-कथा अति अद्भुत-कथन ।
मेघ देखिलेइ मात्र हय अचेतन ।।३८३
अहर्निश कृष्णप्रेमे मद्यपेर प्राय ।
हासे कान्दे है है करे हाय हाय ।।३८४
नित्यानन्द महा-मत्त गोविन्देर रसे ।
ढुलिया ढुलिया पड़े अट्ट अट्ट हासे ।।३८५
दोँहार अद्भुत भाव देखि शिष्यगण ।
निरवधि 'हरि' बलि करये कीर्त्तन ।।३८६
रात्रिदिन केहो नाहि जाने प्रेमरसे ।
कतकाल याय, केहो क्षण नाहि वासे ।।३८७
माधवेन्द्र-संगे यत हइल आख्यान ।
के जानये ताहा' कृष्णचन्द्र से प्रमाण ।।३८८
माधवेन्द्र नित्यानन्दे छाड़िते ना पारे ।
निरवधि नित्यानन्द-संहति बिहरे ।।३८९
माधवेन्द्र बोले "प्रेम ना देखिलुँ कोथा ।
सेइ मोर सर्वतीर्थ हेन प्रेम यथा ।।३९०
जानिलुँ कृष्णेर कृपा आछे मोर प्रति ।
नित्यानन्द-हेन बन्धु पाइलुँ संहति ।।३९१
ये से स्थाने यदि नित्यानन्द-संग हय ।
सेइ स्थान सर्वतीर्थं-वैकुण्ठादि-मय ।।३९२
नित्यानन्द हेन भक्त शुनिले श्रवणे ।
अवश्य पाइब कृष्णचन्द्र सेइ जने ।।३९३
नित्यानन्दे याहार तिलेक द्वेष रहे ।
भक्त हइलेओ से कृष्णेर प्रिय नहे ।।"३९४
एइमत माधवेन्द्र नित्यानन्द-प्रति ।
अहर्निश बोलेन करेन रति मति ।।३९५
माधवेन्द्र-प्रति नित्यानन्द महाशय ।
गुरु-बुद्धि व्यतिरिक्त आर ना करय ।।३९६
एइमत अन्योऽन्ये दुइ महामति ।
कृष्णप्रेमे ना जानेन कोथा दिवा-राति ।।३९७

कथोदिन माधवेन्द्र-संगे नित्यानन्द ।
थाकिया चलिला शेषे यथा सेतुबन्ध ।।३९
माधवेन्द्र चलिला सरयू देखिबारे ।
कृष्णावेशे केहो निज देह नाहि स्नरे ।।३९
अतएब जीवनेर रक्षा से-बिरहे ।
बाह्य थाकिले कि से-बिरहे प्राण रहे ।।४०
नित्यानन्द-माधवेन्द्र-दुइ-दरशन ।
ये शुनये तारे मिले कृष्णप्रेमधन ।।४०
हेनमते नित्यानन्द भ्रमे' प्रेमरसे ।
सेतुबन्धे आइलेन कथोक दिवसे ।।४०
धनु-तीर्थे स्नान करि गेला रामेश्वर ।
तबे प्रभु आइलेन विजया नगर ।।४०
मायापुरी अवन्ती देखिया गोदावरी ।
आइलेन जिओड़—नृसिंहदेवपुरी ।।४०
त्रिमल्ल देखिया कूर्मनाथ पुण्यस्थान ।
शेषे नीलाचलचन्द्र देखिते पयान ।।४०
आइलेन नीलाचलचद्रेर नगरे ।
ध्वजा देखि मात्र मूर्च्छा हइल शरीरे ।।४०
देखिलेन चतुर्व्यूह-रूप जगन्नाथ ।
प्रकट परमानन्द भक्तवर्ग साथ ।।४०
देखि मात्र हइलेन आनन्दे मूर्च्छिते ।
पुन बाह्य हय पुन पड़े पृथिवीते ।।४०
कम्प, स्वेद, पुलकाश्रु, आछाड़े, हुङ्कार ।
के देहिते पारे नित्यानन्देर विकार ?४०
एइमत कथोदिन वसि नीलाचले ।
गङ्गासागर देखिते आइला कुतूहले ।।४१
तान तीर्थ-यात्रा सब के पारे कहिते ।
किछु लिखिलाङ मात्र तान कृपा हैते ।।४१
एइमत तीर्थ भ्रमि नित्यानन्द-राय ।
पुनर्बार आसिया मिलिला मथुराय ।।४१

निरवधि वृन्दावने करेन वसति ।
कृष्णेर आवेशे ना जानेन दिवाराति ॥४१३
आहार नाहिक—कदाचित दुग्ध-पान ।
सेहो यदि अयाचित केहो करे दान ॥४१४
नवद्वीपे गौरचन्द्र आछे गुप्तभावे ।
इहा नित्यानन्दस्वरूपेर मने जागे ॥४१५
"आपन ऐश्वर्य्य प्रभु प्रकाशिव यवे ।
आमि गिया करिमु आपन सेवा तबे"॥४१६
एइ मानसिक करि नित्यानन्द-राय ।
मथुरा छाड़िया नवद्वीपे नाहि याय ॥४१७
निरवधि बिहरये कालिन्दीर जले ।
शिशु-संगे वृन्दावने धूला-खेला खेले ॥४१८
यद्यपिह नित्यानन्द धरे सर्व-शक्ति ।
तथापिह कारेओ ना दिलेन विष्णुभक्ति ॥४१९
यबे गौरचन्द्र प्रभु करिब प्रकाश ।
तान से आज्ञाय भक्तिदानेर विलास ॥४२०
केहो किछु ना करे चैतन्य-आज्ञा विने ।
इहाते अल्पता नाहि पाय प्रभुगणे ॥४२१
कि अनन्त, किबा शिव, अजादि देवता ।
चैतन्य-आज्ञाय हर्त्ता कर्त्ता पालयिता ॥४२२
इहाते ये पापिगण मने दुःख पाय ।
वैष्णवेर अदृश्य सेइ पापी सर्वथाय ॥४२३
साक्षातेइ देख सभे एइ त्रिभुवने ।
नित्यानन्द-द्वारे पाइलेन प्रेमधने ॥४२४
चैतन्येर आदि भक्त नित्यानन्द राय ।
चैतन्यमहिमा स्फुरे याँहार जिह्वाय ॥४२५
अहर्निश चैतन्येर कथा प्रभु कहे ।
ताने भजिले से चैतन्यभक्ति हये ॥४२६
आदिदेव जयजय नित्यानन्द-राय ।
चैतन्यमहिमा स्फुरे याँहार कृपाय ॥४२७
चैतन्यकृपाये हय नित्यानन्दे रति ।
नित्यानन्द जानिले आपद नाहि कति ॥४२८
संसारेर पार हआ भक्तिर सागरे ।
ये डुबिबे से भजुक निताइ चान्देरे ॥४२९
केह बोले "नित्यानन्द येन बलराम ।"
केहो बोले "चैतन्येर बड़ प्रियधाम ॥"४३०
किबा यति नित्यानन्द, किबा भक्त ज्ञानी ।
यार येनमत इच्छा ना बोलये केनि ॥४३१
ये से केने चैतन्येर नित्यानन्द नहे ।
तभु सेइ पादपद्म रहुक हृदये ॥४३२
एत परिहारेओ ये पापी निन्दा करे ।
तबे लाथि मारोँ तार शिरेर उपरे ॥४३३
कोन चैतन्येर लोक नित्यानन्द प्रति ।
मन्द बोले हेन देख, से केबल स्तुति ॥४३४
नित्यसिद्ध ज्ञानवन्त वैष्णव-सकल ।
तबे ये कलह देख, सब कुतूहल ॥४३५
इथे एकजनेर हइया पक्ष ये ।
अन्य जने निन्दा करे, क्षय याय से ॥४३६
नित्यानन्दस्वरूपे से निन्दा ना लओयाय ।
ताँर पथे थाकिले से गौरचन्द्र पाय ॥४३७
हेन दिन हैब कि चैतन्य नित्यानन्द ।
देखिब बेष्टित चतुर्द्दिके भक्तवृन्द ॥४३८
सर्वभावे स्वामी येन हय नित्यानन्द ।
तान हैया भजि येन प्रभु गौरचन्द्र ॥४३९
नित्यानन्दस्वरूपेर स्थाने भागवत ।
जन्मजन्म पढ़िवाङ एइ अभिमत ॥४४०
जयजयजय महाप्रभु गौरचन्द्र ।
निलाओ दिलाओ तुमि प्रभु नित्यानन्द ॥४४१
तथापिह एइ कृपा कर महाशय !
तोमाते ताहाते येन चित्तबृत्ति रय ॥४४२

तोमार परम-भक्त नित्यानन्द-राय ।
तुमि ताने दिले बिना कोन् जने पाय ?४४३
वृन्दावन आदि करि भ्रमे' नित्यानन्द ।
यावत ना आपना' प्रकाशे' गौरचन्द्र ॥४४४
नित्यानन्दस्वरूपेर तीर्थं-पर्य्यटन ।
येइ इहा शुने तारे भिले प्रेमधन ॥४४
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचाँद जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥४४

इति श्रीआदिखण्डे महाप्रभोरुपनयन-पाठाभ्यासादि-वर्णनं तथा
श्रीनित्यानन्दतीर्थयात्रादिकथनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥



सप्तम अध्याय

जयजय गौरचन्द्र महामहेश्वर ।
जय नित्यानन्द-प्रिय नित्य-कलेवर ॥१
जय श्रीगोविन्द-द्वारपालकेर नाथ ।
जीव-प्रति कर प्रभु शुभ दृष्टिपात ॥२
जयजय जगन्नाथपुत्र विप्रराज ।
जय हउ तोर यत श्रीभक्तसमाज ॥३
जयजय कृपासिन्धु कमललोचन ।
हेन कृपा कर तोर यशे रहु मन ॥४
आदिखण्डे शुन भाइ ! चैतन्येर कथा ।
विद्यार विलास प्रभु करिलेन यथा ॥५
हेनमते नवद्वीपे श्रीगौरसुन्दर ।
रात्रिदिन विद्यारसे नाहि अवसर ॥६
ऊषःकाले सन्ध्या करि त्रिदशेर नाथ ।
पढ़िते चलेन सर्वशिष्यगण-साथ ॥७
आसिया वैसेन गङ्गादासेर सभाय ।
पक्ष-प्रतिपक्ष प्रभु करेन सदाय ॥८
प्रभुस्थाने पुँथि नाहि चिन्ते ये ये जन ।
ताहारे से प्रभु कदर्थेन अनुक्षण ॥९
पड़िया वैसेन प्रभु पुँथि चिन्ताइते ।
यार यत गण लैया वैसे नाना-भिते ॥१०
ना चिन्ते मुरारिगुप्त पुँथि प्रभुस्थाने ।
अतएब प्रभु किछु चालेन ताहाने ॥११
योगपट्ट-छान्दे वस्त्र करिया बन्धन ।
वैसेन सभार मध्ये करि बीरासन ॥१२
चन्दनेर शोभे ऊर्द्ध-तिलक सुभाति ।
मुकुता गञ्जये श्री दशनेर ज्योति ॥१३
गौराङ्गसुन्दर बेश मदन-मोहन ।
षोड़श-वत्सर प्रभु प्रथमयौवन ॥१४
वृहस्पति जिनिञा पाण्डित्य परकाशे ।
स्वतन्त्र ये पुँथि चिन्ते, तारे परिहासे ॥१५
प्रभु बोले "इथे आछे कोन् बड़ जन ।
आसिया खण्डुक् देखि आमार स्थापन ?१६
सन्धि-कार्य्य ना जानिञा कोन कोन जना ।
आपने चिन्तये पुँथि प्रबोधे आपना' ॥१७
अहङ्कार करि लोक भाले मूर्ख हय ।
येबा जाने तार ठाञि पुँथि ना चिन्तय ॥"१८

शुनये मुरारीगुप्त आटोप-टङ्कार ।
ना बोलये किछु कार्य्य करे आपनार ॥१९
तथापिह प्रभु तारे चालेन सदाय ।
सेवक देखिया बड़ सुखी द्विजराय ॥२०
प्रभु बोले "वैद्य ! तुमि इहा केने पढ़ ।
लता पाता निआ गिया रोगी कर दढ़ ॥२१
व्याकरणशास्त्र एइ बिषमेर अवधि ।
कफ-पित्त-अजीर्ण-व्यवस्था नाहि इति ॥२२
मनेमने चिन्ति तुमि कि बुझिबे इहा ।
घरे याह तुमि रोगी दढ़ कर गिया ॥"२३
रुद्र-अंश मुरारि परम-खरतर ।
तथापि नहिल क्रोध देखि विश्वम्भर ॥२४
प्रत्युत्तर दिल "केने बड़ त ठाकुर !
सभारेइ चाल' देखि, गर्व हब चूर ॥२५
सूत्र, बृत्ति, पाँजी, टीका यत हेन कर ।
आमा' जिज्ञासिया कि ना पाइला उत्तर ॥२६
विना जिज्ञासिया बोल'कि जानिस् तुइ' ।
ठाकुर ब्राह्मण तुमि कि बलिब मुञि ॥२७
प्रभु बोले व्याख्या कर आजि ये पढ़िला ।"
व्याख्या करे गुप्त, प्रभु खण्डिते लागिला ॥२८
गुप्त बले एक अर्थ, प्रभु बोले आर ।
प्रभु-भृत्ये केहो कारे नारे जिनिबार ॥२९
प्रभुर प्रभावे गुप्त परम-पण्डित ।
मुरारिर व्याख्या शुनि हन हरषित ॥३०
सन्तोषे दिलेन तार अङ्गे पद्म-हस्त ।
मुरारिर देह हैल आनन्द समस्त ॥३१
चिन्तये मुरारि गुप्त आपन हृदये ।
"प्राकृत-मनुष्य कभु ए पुरुष नहे ॥३२
एमन पाण्डित्य किबा मनुष्येर हये ।
हस्तस्पर्शे देह हैल परमानन्दमये ॥३३
चिन्तिले इहार स्थाने किछु लाज नाहि ।
एमत सुबुद्धि सर्व-नवद्वीपे नाञि ॥"३४
सन्तोषित हइया बोलेन वैद्यवर ।
"चिन्तिब तोमार स्थाने शुन विश्वम्भर ?"३५
ठाकुर सेवके हेनमते करि रङ्ग ।
गङ्गास्नाने चलिला लइया सब सङ्ग ॥३६
गङ्गास्नान करिया चलिला प्रभु घरे ।
एइमत विद्यारसे ईश्वर विहरे ॥३७
मुकुन्द-सञ्जय बड़ महाभाग्यवान् ।
याहार मन्दिरे विद्याविलासेर स्थान ॥३८
ताहार पुत्रेरे प्रभु आपने पढ़ाये ।
ताहारओ ताँर प्रति भक्ति सर्वथाये ॥३९
बड़ चण्डीमण्डप आछये तार घरे ।
चतुर्द्दिगे बिस्तर पढ़ुया तहिँ धरे ॥४०
गोष्ठी करि ताहाँइ पढ़ान द्विजराज ।
सेइस्थाने चैतन्येर विद्यार समाज ॥४१
कथोरूपे व्याख्या करे कत बा खण्डन ।
अध्यापक-प्रति से आक्षेप सर्वक्षण ॥४२
प्रभु कहे "सन्धि-कार्य्य-ज्ञान नाहि यार ।
कलियुगे भट्टाचार्य्य-पदवी ताहार ॥४३
हेन जन देखि फाँकि बुलुक आमार ।
तबे जानि, भट्ट मिश्र पदवी सभार ॥"४४
एइमत वैकुण्ठनायक विद्यारसे ।
क्रीड़ा करे, चिनिते ना पारे कोन दासे ॥४५
किछुमात्र देखि आइ पुत्रेर यौवन ।
विवाहेर कार्य्य मने चिन्ते अनुक्षण ॥४६
दैवे सेइ नवद्वीपे एक सुब्राह्मण ।
वल्लभ-आचार्य्य नाम—जनकेर सम ॥४७
तान कन्या आछे येन लक्ष्मी मूर्त्तिमती ।
निरवधि विप्र तार चिन्ते योग्य पति ॥४८

दैवे लक्ष्मी एकदिन गेला गङ्गास्नाने ।
गौरचन्द्र हेनइ समये सेइस्थाने ॥४९
निज-लक्ष्मी चिनिञा हासिला गौरचन्द्र ।
लक्ष्मीओ बन्दिला मने प्रभु पदद्वन्द्व ॥५०
हेनमते दोँहा चिनि दोँहा घरे गेला ।
के बुझिते पारे गौरसुन्दरेर खेला ॥५१
ईश्वर-इच्छाये विप्र—वनमाली नाम ।
सेइदिन गेला तिँहो शचीदेवी स्थान ॥५२
नमस्करि आइरे बसिला विप्रवर ।
आसन दिलेन आइ करिया आदर ॥५३
आइरे बोलेन तबे वनमाली-आचार्य्य ।
"पुत्र विवाहेर केने ना चिन्तह कार्य्य ॥५४
वल्लभ-आचार्य्य कुले शीले सदाचारे ।
निर्दोषे वैसेन नवद्वीपेर भितरे ॥५५
तार कन्या लक्ष्मी प्राय रूपे शीले नामे ।
से सम्बन्ध कर यदि इच्छा हय मने ॥"५६
आइ बोले "पितृहीन बालक आमार ।
जीउक पढ़ुक आगे, तबे कार्य्य आर ॥"५७
आइर कथाय विप्र रस ना पाइया ।
चलिलेन विप्र किछु दुःखित हइया ॥५८
दैवे पथे देखा हैल गौरचन्द्र-सङ्गे ।
तारे देखि आलिङ्गन कैला प्रभु रङ्गे ॥५९
प्रभु बोले "कह गियाछिले कोन् भिते ?"
विप्र बोले "तोमार जननी सम्भाषिते ॥६०
तोमार विवाह लागि बलिलाङ ताने ।
ना जानि, शुनिञा श्रद्धा ना कैलेन केने ॥"६१
शुनि तान वचन ईश्वर मौन हैला ।
हासि तारे सम्भाषिया मन्दिरे आइला ॥६२
जननीरे हासिया बोलेन सेइक्षणे ।
"आचार्य्येरे सम्भाषा ना कैले भाल केने ?"६३

पुत्रेर इङ्गित पाइ शची हरषिता ।
आरदिने विप्रे आनि कहिलेन कथा ॥६४
शची बोले "विप्र ! कालि ये कहिला तुमि ।
शीघ्र ताहा कराह, बलिल एइ आमि ॥"६
आइर चरणधूलि लइया ब्राह्मण ।
सेइक्षणे चलिलेन वल्लभ-भवन ॥६६
वल्लभ-आचार्य्य देखि सम्भ्रमे ताहाने ।
बहु मान्य करि वसाइलेन आसने ॥६७
आचार्य्य बोलेन "शुन आमार बचन ।
कन्या-विवाहेर एवे कर सु-लगन ॥६८
मिश्र-पुरन्दर-पुत्र—नाम विश्वम्भर ।
परम-पण्डित सर्वगुणेर सागर ॥६९
तोमार कन्यार योग्य सेइ महाशय ।
कहिलाङ एइ, कर यदि चित्ते लय ॥"७०
शुनिञा वल्लभाचार्य्य बोलेन हरिषे ।
"सेहेन कन्यार पति मिले भाग्यवशे ॥७१
कृष्ण यदि सुप्रसन्न हयेन आमारे ।
अथवा कमला गौरी सन्तुष्टा कन्यारे ॥७२
तबे से सेहेन आसि मिलिब जामाता ।
अविलम्बे तुमि इहा कराह सर्व्वथा ॥७३
सबे एक बचन बलिते लज्जा पाइ ।
आमि से निर्धन, किछु दिते शक्ति नाहि ॥७
कन्या-मात्र दिब पञ्च-हरितकी दिया ।
एइ आज्ञा सबे तुमि आनिबे मागिया ॥"७
वल्लभ-मिश्रेर वाक्य शुनिया आचार्य्य ।
सन्तोषे आइला सिद्धि करि सर्व कार्य्य ॥७
सिद्धि कथा आसिया कहिला आइ-स्थाने ।
"सफल हइल कार्य्य कर शुभ-क्षणे ॥"७७
आप्त लोक शुनि सभे हरषित हैला ।
सभेइ उदयोग आसि करिते लागिला ॥७८

अधिवास लग्न करिलेक शुभ-दिने ।
नृत्य गीत नाना वाद्य बा'य नटगणे ॥७९
चतुर्द्दिगे विप्रगण करे वेदध्वनि ।
मध्य चन्द्र सम वसिलेन द्विजमणि ॥८०
ईश्वरेरे गन्ध-माल्य दिया शुभक्षणे ।
अधिवास करिलेन आप्त-विप्रगणे ॥८१
दिव्य गन्ध चन्दन ताम्बूल माला दिया ।
ब्राह्मणगणेरे तुषिलेन हर्ष पाञा ॥८२
वल्लभ-आचार्य्य आसि यथा-विधि-रूपे ।
अधिवास कराइया गेलेन कौतुके ॥८३
प्रभाते उठिया प्रभु करि स्नान-दान ।
पितृगणे पूजिलेन करिया सम्मान ॥८४
नृत्य-गीत-वाद्ये महा उठिल मङ्गल ।
चतुर्द्दिगे 'लेह देह' शुनि कोलाहल ॥८५
कत बा मिलिला आसि पतिव्रतागण ।
कतेक बा इष्ट मित्र ब्राह्मण सज्जन ॥८६
खइ, कला, सिन्दूर, ताम्बूल तैल दिया ।
स्त्रीगणेरे आइ तुषिलेन हर्ष हइया ॥८७
देवगण देवबध्वगण—नररूपे ।
प्रभुर विवाहे आसि आछेन कौतुके ॥८८
वल्लभ-आचार्य्य एइमत विधिक्रमे ।
करिलेन देव-पितृ-कार्य्य हर्षमने ॥८९
तबे प्रभु शुभक्षणे गोधूली-समये ।
यात्रा करि आइलेन मिश्रेर आलये ॥९०
प्रभु आइलेन मात्र मिश्र गोष्ठी-सने ।
आनन्दसागरे मग्न हैला सभे मने ॥९१
सम्भ्रमे आसन दिया यथाविधिरूपे ।
जामातारे बरिलेन परम-कौतुके ॥९२
शेषे सर्व-अलङ्कारे करिया भूषित ।
लक्ष्मी कन्या आनिलेन प्रभुर समीप ॥९३
हरिध्वनि सर्वलोके लागिला करिते ।
तुलिलेन प्रभुरे सभेइ पृथ्वी हइते ॥९४
तबे लक्ष्मी प्रदक्षिण करि सप्तबार ।
जोड़-हस्ते रहिलेन करि नमस्कार ॥९५
तबे शेषे हैल पुष्पमाला फेलाफेलि ।
लक्ष्मी-नारायण दोँहे महाकुतूहली ॥९६
दिव्य-माला दिया लक्ष्मी प्रभुर चरणे ।
नमस्करि करिलेन आत्मसमर्पणे ॥९७
सर्वदिगे महा-जय-जय-हरि-ध्वनि ।
उठिल परमानन्द, आर नाहि शुनि ॥९८
हेनमते श्रीमुखचन्द्रिका करि रसे ।
बसिलेन प्रभु लक्ष्मी करि बाम-पाशे ॥९९
प्रथम-वयस प्रभु जिनिञा मदन ।
वाम-पाशे लक्ष्मी वसिलेन सेइक्षण ॥१००
कि शोभा कि सुख से हइल मिश्रघरे ।
कोन् जन ताहा वर्णिबारे शक्ति धरे ॥१०१
तबे शेषे वल्लभ करिते कन्या-दान ।
वसिलेन येहेन भीष्मक विद्यमान ॥१०२
ये चरणे पाद्य दिया शङ्कर-ब्रह्मार ।
जगत जिनिते शक्ति हइल सभार ॥१०३
हेन पादपद्मे पाद्य दिला विप्रवर ।
वस्त्र-माल्य-चन्दने भूषिला कलेवर ॥१०४
यथाविधि-रूपे कन्या करि समर्पण ।
आनन्द-सागरे मग्न हइला ब्राह्मण ॥१०५
तबे यत किछु कुलव्यवहार आछे ।
पतिव्रतागणे ताहा करिलेन पाछे ॥१०६
से रात्रि तथाय थाकि तबे आर-दिने ।
निजगृहे आइला महाप्रभु लक्ष्मी-सने ॥१०७
लक्ष्मीर सहित प्रभु चड़िया दोलाय ।
आइसेन, देखिते सकल लोक धाय ॥१०८

गन्ध, माल्य, अलङ्कार, मुकुट, चन्दन ।
कज्जले उज्ज्वल दुइ लक्ष्मी नारायण ॥१०९
सर्व-लोक देखि मात्र 'धन्य धन्य' बोले ।
विशेष स्त्रीगण अति पड़िलेन भोले ॥११०
"कतकाल ए वा भाग्यवती हर-गौरी ।
निष्कपटे सेविलेन कत भक्ति करि ॥१११
अल्प-भाग्ये कन्यार कि हेन स्वामी मिले ?
एइ हर-गौरी हेन बुझि" केहो बोले ॥११२
केहो बोले "इन्द्र शची, रति वा मदन ।"
कोन नारी बोले "एइ लक्ष्मी नारायण ॥" ११३
कोन नारीगण बोले "येन सीता राम ।
दोलाय शोभिया आछे अति अनुपाम ॥" ११४
एइमत नानारूपे बोले नारीगणे ।
शुभदृष्टये सभे देखे लक्ष्मी-नारायणे ॥११५
हेनमते नृत्यगीत-वाद्ये-कोलाहले ।
निजगृहे प्रभु आइलेन सन्ध्याकाले ॥११६
तबे शचीदेवी विप्रपत्नीगण लैया ।
पुत्रबधू घरे आनिलेन हर्ष हैया ॥११७
विप्र-आदि यत जाति नट वाजनिञा ।
सभारे तुषिलेन धन, वस्त्र, वाक्य दिया ॥११८
ये शुनये प्रभुर विवाह-पुण्य कथा ।
ताहार संसारबन्ध ना हय सर्वथा ॥११९
प्रभुपार्श्वे लक्ष्मी हइलेन विद्यमान ।
शचीगृह हइल परम-ज्योतिर्धाम ॥१२०
निरवधि देखे शची कि घर बाहिरे ।
परम अद्भुत ज्योति लखिते ना पारे ॥१२१
कखनो पुत्रेर पाशे देखे अग्निशिखा ।
उलटिया चाहिते ना पाय आर देखा ॥१२२
कमलपुष्पेर गन्ध क्षणे क्षणे पाय ।
परम विस्मित आइ चिन्तेन सदाय ॥१२३

आइ चिन्ते "बुझिलाङ कारण इहार ।
ए कन्याय अधिष्ठान आछे कमलार ॥१
अतएब ज्योति देखि, पद्मगन्ध पाइ ।
पूर्वप्राय दरिद्रता-दुःख एबे नाञि ॥१
एइ लक्ष्मी बधू आसि गृहे प्रवेशिले ।
कोथा हैते ना जानि आसिया सब मिले ॥"
एइमत नाना मनकथा आइ कहे ।
व्यक्त हइयाओ प्रभु व्यक्त नाहि हये ॥१
ईश्वरेर इच्छा बुझिबार शक्ति कार ।
किरूपे करेन कोन् कालेर बिहार ॥१
ईश्वरे से आपनारे ना जानाये यबे ।
लक्ष्मीओ जानिते शक्ति ना धरेन तबे ॥१
एइ सब शास्त्रे वेदे पुराणे बाखाने ।
'यारे तान कृपा हय से-इ जाने ताने' ॥१
एइमत गुप्तभावे आछे विप्रराज ।
अध्ययन विना आर नाहि कोन काज ॥१
जिनिञा कन्दर्प-कोटि रूप मनोहर ।
प्रति-अङ्गे निरुपम लावण्य सुन्दर ॥१
आजानुलम्बित भुज, कमल-नयान ।
अधरे ताम्बूल, दिव्य-वास-परिधान ॥१
सर्वदाये परिहासमूर्त्ति विद्यावले ।
सहस्र पढ़ुया सङ्गे, यबे प्रभु चले ॥१
सर्व नवद्वीपे भ्रमे त्रिभुवनपति ।
पुस्तकेर रूपे करे प्रिया सरस्वती ॥१
नवद्वीपे हेन नाहि पण्डितेर नाम ।
ये आसिया बुझिबेक प्रभुर व्याख्यान ॥१
सबे एक गङ्गादास महाभाग्यवान् ।
यार ठाञि करे प्रभु विद्यार आदान ॥१
सकल संसारिलोक बोले "धन्यधन्य ।
ए नन्दन याहार, ताहार कोन् दैन्य ?" १

यतेक प्रकृति देखे मदन-समान ।
पाषण्डिये देखे येन यम विद्यमान ॥१३९
पण्डित सकल देखे येन वृहस्पति ।
एइमत देखे सभे यार येन मति ॥१४०
देखि विश्वम्भर-रूप सकल वैष्णव ।
हरिष-बिषाद हइ मने भावे सब ॥१४१
"हेन-दिव्य-शरीरे ना हय कृष्णरस ।
कि करिब विद्याय हइल कालबश ॥"१४२
मोहित वैष्णव सब प्रभुर मायाय ।
देखियाओ तभु केहो देखिते ना पाय ॥१४३
साक्षातेओ प्रभु देखि केहो केहो बोले ।
"कि कार्य्ये गोङाओ तुमि विद्या भोले ?"१४४
शुनिया हासेन प्रभु सेवकेर वाक्य ।
प्रभु बोले "तोमरा शिखाओ मोर भाग्य ॥"१४५
हेनमते प्रभु गोङायेन विद्यारसे ।
सेवके चिनिते नारे, अन्य जन किसे ॥१४६
चतुर्द्दिग हैते लोक नवद्वीपे याय ।
नवद्वीपे पड़िले से विद्यारस पाय ॥१४७
चाटीग्राम निवासीओ अनेक तथाय ।
पढ़ेन वैष्णव सब रहेन गङ्गाय ॥१४८
सभेइ जन्मिञा आछेन प्रभुर आज्ञाय ।
सभेइ विरक्त कृष्णभक्त सर्वथाय ॥१४९
अन्योऽन्ये मिलि सभे पड़िया शुनिञा ।
करेन गोविन्दचर्च्चा निभृते वसिया ॥१५०
सर्व वैष्णवेर प्रिय मुकुन्द एकान्त ।
मुकुन्देर गाने द्रवे सकल महान्त ॥१५१
बिकाल हइले आसि भागवतगण ।
अद्वैत-सभाय सभे हयेन मिलन ॥१५२
येइमात्र मुकुन्द गायेन कृष्णगीत ।
हेन नाहि जानि के पड़ये कोन् भित ॥१५३
केहो कान्दे केहो हासे केहो नृत्य करे ।
गड़ागड़ि याय केहो वस्त्र ना सम्वरे ॥१५४
हुङ्कार करये केहो मालसाट् मारे ।
केहो गिया मुकुन्देर दुइ पा'ये धरे ॥१५५
एइमत उठये परमानन्द-सुख ।
ना जाने वैष्णव सब आर कोन दुःख ॥१५६
प्रभुओ मुकुन्द-प्रति बड़ सुखी मने ।
देखिलेइ मुकुन्देरे धरेन आपने ॥१५७
प्रभु जिज्ञासेन फाँकि, बाखाने मुकुन्द ।
प्रभु बोले "किछु नहे" आर लागे द्वन्द्व ॥१५८
मुकुन्द पण्डित बड़ प्रभुर प्रभावे ।
पक्ष-प्रतिपक्ष करि प्रभु-सने लागे ॥१५९
एइमत प्रभु निज सेवक चिनिञा ।
जिज्ञासेन फाँकि, सभे यायेन हारिया ॥१६०
श्रीवासादि देखिलेओ फाँकि जिज्ञासेन ।
मिथ्या-वाक्य-व्यय-भये सभे पलायेन ॥१६१
सहजे विरक्त सभे श्रीकृष्णेर रसे ।
कृष्णव्याख्या विनु आर किछु नाहि वासे ॥१६२
देखिलेइ प्रभु मात्र फाँकि से जिज्ञासे ।
प्रबोधिते नारे केहो शेषे उपहासे ॥१६३
यदि केहो देखे प्रभु आइसेन दूरे ।
सभे पलायेन फाँकि-जिज्ञासार डरे ॥१६४
कृष्ण-कथा शुनितेइ सहै भाल बासे ।
फाँकि विनु प्रभु कृष्ण-कथा ना जिज्ञासे ॥१६५
राजपथ दिया प्रभु आइसे एक-दिन ।
पढ़ुयार सङ्गे महा-उद्धतेर चिन ॥१६६
मुकुन्द यायेन गङ्गास्नान करिबारे ।
प्रभु देखि आड़े पलाइला कथो दूरे ॥१७७
देखि जिज्ञासये प्रभु गोविन्देर स्थाने ।
"ए बेटा आमारे देखि पलाइल केने ?१७८

गोविन्द बोलेन "आमि ना जानि पण्डित !
आर कोनो कार्य्ये बा चलिला कोनभित॥"१७९
प्रभु बोले "जानिलाङ ये लागि पलाय ।
बहिर्मुख-सम्भाषा करिते नाजुयाय ॥१८०
ए बेटा पढ़ये यत वैष्णवेर शास्त्र ।
पाँजी वृत्ति टीका आमि बाखानिरे मात्र ॥१८१
आमार सम्भाषे नाहि कृष्णेर कथन ।
अतएब आमा' देखि करे पलायन ॥"१८२
सन्तोषे पाड़ेन गालि प्रभु मुकुन्देरे ।
व्यपदेशे प्रकाश करेन आपनारे ॥१८३
प्रभु बोले "आरे बेटा ! कथोदिन थाक ।
पलाइले कोथा मोर एड़ाइबे पाक ॥"१८४
हासि बोले प्रभु "आगे पढ़ोँ कथोदिन ।
तबे से देखिबे मोर वैष्णवेर चिन ॥१८५
एमत वैष्णव मुञि हइब संसारे ।
अज भव आसिबेक आमार दुयारे ॥१८६
शुन भाइसब ! एइ आमार बचन ।
वैष्णव हइब मुञि सर्वबिलक्षण ॥१८७
आमारे देखिया एबे ये-सब पलाय ।
ताहारास्रो येन मोर गुण कीर्त्ति गाय ॥"१८८
एतेक बलिया प्रभु चलिला हासिते ।
घरे गेला निज शिष्यवर्गेर सहिते ॥१८९
एइमत रङ्ग करे विश्वम्भर-राय ।
के ताने जानिते पारे यदि ना जानाय ॥१९०
हेनमते भक्तगण नदीयाय वैसे ।
सकल नदीया मत्त धन-पुत्र-रसे ॥१९१
शुनिलेइ कीर्त्तन करये परिहास ।
केहो बोले "सब पेट पुषिबार आश ॥"१९२
केहो बोले "ज्ञान-योग एड़िया बिचार ।
ऊद्धतेर प्राय नृत्य ए कोन व्यभार ॥"१९३

केहो बोले "कह बा पढ़िलुँ भागवत ।
नाचिब कान्दिब हेन ना देखिलुँ पथ ॥१९
श्रीवासपण्डित-चारि-भाइर लागिया ।
निद्रा नाहि याइ भाइ ! भोजन करिया ॥१
धीरे धीरे'कृष्ण' बलिले कि पुण्य नहे ।
नाचिले काँदिले डाक छाड़िले किहये ॥"१
एइमत यत पाप-पाषण्डीर गण ।
देखिलेइ वैष्णव—करेन संकथन ॥१९
शुनिञा वैष्णव सब महादुःख पाय ।
'कृष्ण' बलि सभेइ काँदेन ऊर्द्ध-रा'य ॥१९
"कतदिने ए-सब दुःखेर हब नाश ।
जगतेरे कृष्णचन्द्र ! करह प्रकाश ॥"१९
सकल वैष्णव मिलि अद्वैतेर स्थाने ।
पाषण्डीर बचन करेन निवेदने ॥२०
शुनिया अद्वैत हय क्रोध अवतार ।
"संहारिमु सब" बलि करये हुङ्कार ॥२०
"आसितेछे एइ मोर प्रभु चक्रधर ।
देखिबा कि हय एइ नदीया-भितर ॥२०
कराइमु कृष्ण सर्व-नयन-गोचर ।
तबे से अद्वैत नाम कृष्णेर किङ्कर ॥२०
आर दिनकथो गिया थाक भाइ-सब !
एथाइ देखिबा सब कृष्ण-अनुभव ॥"२०
अद्वैत वाक्य शुनि भागवतगण ।
दुःख पासरिया सभे करेन कीर्त्तन ॥२०
उठिल कृष्णेर नाम परम-मङ्गल ।
अद्वैत-सहिते सभे हइला विह्वल ॥२०
पाषण्डिर वाक्य-ज्वाला सब गेल दूर ।
एइमत पुलकित नवद्वीप-पुर ॥२०
अध्ययन-सुखे प्रभु विश्वम्भर राय ।
निरवधि जननीर आनन्द बाढ़ाय ॥२०

हेनकाले नवद्वीपे श्रीईश्वर-पुरी ।
आइलेन अति-अलक्षित-वेश धरि ॥२०९
कृष्णरसे परम विह्वल महाशय ।
एकान्त कृष्णेर प्रिय अति-दयामय ॥२१०
तान वेशे ताने केहो चिनिते ना पारे ।
दैवे गिया उठिलेन अद्वैत-मन्दिरे ॥२११
येखाने अद्वैत सेवा करेन वसिया ।
सम्मुखे वसिला बड़ सङ्कोचित हैया ॥२१२
वैष्णवेर तेज वैष्णवेते ना लुकाय ।
पुनःपुन अद्वैत ताहान पाने चाय ॥२१३
अद्वैत बोलेन "बाप ! तुमि कोन् जन ?
वैष्णव सन्न्यासी तुमि हेन लय मन ॥"२१४
बोलेन ईश्वर-पुरी "आमि क्षुद्राधम ।
देखिबारे आइलाङ तोमार चरण ॥"२१५
बुझिया मुकुन्द एक कृष्णेर चरित ।
गाइते लागिला अति-प्रेमेर सहित ॥२१६
येइमात्र शुनिलेक मुकुन्देर गीते ।
पड़िला ईश्वर-पुरी ढलि पृथिवीते ॥२१७
नयनेर जले अन्त नाहिक ताहान ।
पुनःपुन बाढ़े प्रेम-धारार पयान ॥२१८
आथेव्यथे अद्वैत तुलिया निज कोले ।
सिञ्चित हइल अङ्ग नयनेर जले ॥२१९
सम्वरण नहे प्रेम पुनःपुन बाड़े ।
सन्तोषे मुकुन्द उच्च स्वरे श्लोक पढ़े ॥२२०
देखिया वैष्णव सब प्रेमेर विकार ।
अतुल आनन्द मने जन्मिल सभार ॥२२१
पाछे सभे चिनिलेन श्रीईश्वर-पुरी ।
प्रेम देखि सभेइ स्मरेण 'हरिहरि' ॥२२२
एइमत ईश्वरपुरी नवद्वीप-पुरे ।
अलक्षिते बुलेन, चिनिते केहो नारे ॥२२३

दैवे एकदिन प्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
पढ़ाइया आइसेन आपनार घर ॥२२४
पथे देखा हइल ईश्वरपुरी-सने ।
भृत्य देखि प्रभु नमस्करिला आपने ॥२२५
अति अनिर्वचनीय ठाकुर सुन्दर ।
सर्व-मते सर्व-विलक्षण-गुणधर ॥२२६
यद्यपिह तान मर्म केहो जाने ।
तथापि साध्वस करे देखि सर्व-जने ॥२२७
चाहेन ईश्वर-पुरी प्रभुर शरीर ।
सिद्धपुरुषेर प्राय परम गम्भीर ॥२२८
जिज्ञासेन "तोमार कि नाम विप्रवर !
कि पुँथि पढ़ाओ पढ़, कोन स्थाने घर ?"२२९
शेषे सभे बलिलेन "निमाञि पण्डित ।"
"तुमि से !"बलिया बड़ हैला हरषित ॥२३०
भिक्षा निमन्त्रण प्रभु करिया ताहाने ।
महादरे गृहे लइ चलिला आपने ॥२३१
कृष्णेर नैवद्य शची करिलेन गिया ।
भिक्षा करि विष्णुगृहे वसिल आसिया ॥२३२
श्रीकृष्ण प्रस्ताव तबे कहिते लागिला ।
कहिते कृष्णेर कथा बिह्वल हइला ॥२३३
देखिया प्रेमेर धारा प्रभुर सन्तोष ।
ना प्रकाशे' आपना' लोकेर दिन-दोष ॥२३४
मास-कथो गोपीनाथ-आचार्य्येर घरे ।
रहिला ईश्वर-पुरी नवद्वीप-पुरे ॥२३५
सभे बड़ उल्लसित देखिते ताहाने ।
प्रभुओ देखिते नित्य चलेन आपने ॥२३६
गदाधर पण्डितेर देखि प्रेमजल ।
बड़ प्रीति वासे ताने वैष्णव सकल ॥२३७
शिशु-हैते संसारे विरक्त बड़ मने ।
ईश्वरपुरीओ स्नेह करेन ताहाने ॥२३८

गदाधर पण्डितेरे आपनार कृत ।
पुँथि पढ़ायेन नाम 'कृष्णलीलामृत' ॥२३९
पढ़ाइया पढ़िया ठाकुर सन्ध्याकाले ।
ईश्वरपुरीरे नमस्करिबारे चले ॥२४०
प्रभु देखि ईश्वरपुरी हरषित ।
प्रभु हेन ना जानेन, तभु बड़ प्रीत ॥२४१
हासिया बलेन "तुमि परम पण्डित ।
आमि पुँथि करियाछि कृष्णेर चरित ॥२४२
सकल बलिबा कोथा थाके कोन दोष ।
इहाते आमार बड़ परम सन्तोष ॥"२४३
प्रभु बोले 'भक्तवाक्य कृष्णेर वर्णन ।
इहाते ये देखे दोष से-इ पापी जन ॥२४४
भक्तेर कवित्व ये-ते-मते केने नय ।
सर्वथा कृष्णेर प्रीत ताहाते निश्चय ॥२४५
मूर्खे बोले 'विष्णाय', 'विष्णवे' बौले धीर ।
दुइ वाक्य परिग्रह करे कृष्ण बीर ॥२४६

तथाहि—

"मूर्खो वदति विष्णाय धीरो वदति विष्णवे ।
उभयोस्तु समं पुण्यं भावग्राही जनार्द्दनः ॥"
२४७॥ इति

अनुवाद ।

श्रीविष्णु को प्रणाम करते समय 'विष्णाय नमः' कहकर मूर्खगण यदि प्रणाम करे, अथवा धीर पण्डितगण "विष्णवे नमः" कहकर प्रणाम करें तो उभयको ही प्रणाम का फल समान रुप से मिलेगा, कारण-जनार्दन भाव ग्राही हैं। २४७

"इहाते ये दोष देखे ताहाते से दोष ।
भक्तेर वर्णनमात्र कृष्णेर सन्तोष ॥२४८
अतएब तोमार ये प्रेमेर वर्णन ।
इहा दूषिबेक कोन् साहसिक जन ॥' २४९
शुनिञा ईश्वरपुरी प्रभुर उत्तर ।
अमृत सिञ्चित हैल सर्व-कलेवर ॥२५०
पुन हासि बोलेन "तोमार दोष नाञि ।
अवश्य बलिब दोष थाके येइ-ठाञि ॥"२५१
एइमत प्रतिदिन प्रभु तान सङ्गे ।
विचार करेन दुइ-चारि-दण्ड रङ्गे ॥२५२
एकदिन प्रभु तान कवित्व शुनिञा ।
हासि दूषिलेन "धातु ना लागे" बलिया ॥२५३
प्रभु बोले "ए धातु आत्मनेपदी नय ।"
बलिया चलिला प्रभु आपन आलय ॥२५४
ईश्वरपुरीओ सर्वशास्त्रेते पण्डित ।
विद्यारस-विचारेओ बड़ हरषित ॥२५५
प्रभु गेले सेइ 'धातु' करेन विचार ।
सिद्धान्त करेन तहि अशेष प्रकार ॥२५६
सेइ 'धातु' करेन 'आत्मनेपदी' नाम ।
आर-दिने प्रभु गेले करिला व्याखान ॥२५७
"ये धातु 'परस्मैपदी' बलि गेला तुमि ।
ताहा एइ साधिल 'आत्मनेपदी' आमि ॥"२५८
व्याख्यान शुनिञा प्रभु परम-सन्तोष ।
भृत्य-जय निमित्त ना देन आर दोष ॥२५९
'सर्वकाल प्रभु बाढ़ायेन भृत्य-जय ।'
एइ तान-स्वभाव-सकल वेदे कय ॥२६०
एइमत कथोदिन विद्यारस-रङ्गे ।
आछिला ईश्वरपुरी गौरचन्द्र-सङ्गे ॥२६१
भक्तिरसे चञ्चल—एकत्र नहे स्थिति ।
पर्यटने चलिला पवित्र करि क्षिति ॥२६२
ये शुनये ईश्वरपुरीर पुण्य-कथा ।
तार वास हय कृष्ण पादपद्म यथा ॥२६३
यत प्रेम माधवेन्द्रपुरीर शरीरे ।
सन्तोषे दिलेन सब ईश्वरपुरीरे ॥२६४

पाइया गुरुर प्रेम कृष्णेर प्रसादे ।
भ्रमेण ईश्वरपुरी अति-निर्बिरोधे ॥२६५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥२६६

इति श्रीचैतन्यभागवते आदिखण्डे ईश्वरपुरी-मिलनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

अष्टम अध्याय

जयजय महाप्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
जय हउ प्रभुर यतेक अनुचर ॥१
हेनमते नवद्वीपे श्रीगौरसुन्दर ।
पुस्तक लइया क्रीड़ा करे निरन्तर ॥२
यत अध्यापक—प्रभु चालेन सभारे ।
प्रबोधिते शक्ति कोन जने नाहि धरे ॥३
व्याकरणशास्त्रे सभे विद्यार आदान ।
भट्टाचार्य्य प्रतिओ नारिक तृण-ज्ञान ॥४
स्वानुभावानन्दे करे नगर-भ्रमण ।
संहति परम-भाग्यवन्त शिष्यगण ॥५
दैवे पथे मुकुन्देर सङ्गे दरशन ।
हस्ते धरि प्रभु ताने बोलेन बचन ॥६
"आमारे देखिया तुमि कि कार्य्ये पलाओ ।
आजि आमा' प्रबोधिया विना देखि याओ ?"७
मनेभाबे मुकुन्द "आज जिनिब केमने ?
इहान अभ्यास सबे मात्र व्याकरणे ॥८
ठेकाइमु आजि जिज्ञासिया अलङ्कार ।
मोर सने येन गर्व ना करेन आर ॥"९
लागिल जिज्ञासा मुकुन्देर प्रभु सने ।
प्रभु खण्डे' यत अर्थ मुकुन्द बाखाने ॥१०
मुकुन्द बोलेन "व्याकरण शिशुशास्त्र ।
वालके से इहार विचार करे मात्र ॥११
अलङ्कार विचार करिब तोमा 'सने ।"
प्रभु कहे "बुझ तोर यथा लय मने ॥",१२
विषम बिषम यत कवित्व-प्रचार ।
पढ़िया मुकुन्द जिज्ञासये अलङ्कार ॥१३
सर्वशक्तिमय गौरचन्द्र अवतार ।
खण्ड खण्ड करि दोषे' सब अलङ्कार ॥१४
मुकुन्द स्थापिते नारे प्रभुर खण्डन ।
हासिया हासिया प्रभु बोलेन बचन ॥१५
"आजि घरे गिया भालमते पुँथि चाह ।
कालि बुझिवाज झाट आसिबारे चाह ॥"१६
चलिला मुकुन्द लइ चरणेर धूली ।
मने मने चिन्तये मुकुन्द कुतूहली ॥१७
"मनुष्येर एमत पाण्डित्य आछे कोथा ।
हेन शास्त्र नाहिक, अभ्यास नाहि यथा ॥१८
एमत सुबुद्धि—कृष्णभक्त हय यबे ।
तिलेको इहान सङ्ग ना छाड़िये तबे ॥"१९
एइमत विद्यारसे वैकुण्ठ-ईश्वर ।
भ्रमिते देखेन आरदिने गदाधर ॥२०

हासि दुइ हाथे प्रभु राखिल धरिया ।
"न्याय पढ़ तुमि, आमा' याञो प्रबोधिया ॥"२१
"जिज्ञासह" गदाधर बोलये बचन ।
प्रभु बोले "कह देखि मुक्तिर लक्षण ?"२२
शास्त्र-अर्थ येन गदाधर बाखानिला ।
प्रभु बोले "व्याख्यान करिते ना जानिला ॥"२३
गदाधर बोले "आत्यन्तिक-दुःख-नाश ।
इहारेइ शास्त्रे कहे मुक्तिर प्रकाश ॥"२४
नानारूपे दोषे' प्रभु सरस्वतीपति ।
हेन नाहि तार्किक ये करिबेक स्थिति ॥२५
हेन जन नाहिक ये प्रभुसने बोले ।
गदाधर भाबे "आजिर्वात्ति पलाइले ॥"२६
प्रभु बोले "गदाधर ! आजि याह घर ।
कालि बुझिवाङ तुमि आसिह सत्वर ॥"२७
नमस्करि गदाधर चलिलेन घरे ।
ठाकुर भ्रमेण सर्व नगरे नगरे ॥२८
परम-पण्डित-ज्ञान हइल सभार ।
सभेइ करेन देखि सम्भ्रम अपार ॥२९
बिकाले ठाकुर सर्व-पढ़ुयार सङ्गे ।
गङ्गातीरे आसिया वैसेन महा-रङ्गे ॥३०
सिन्धुसुता-सेविता प्रभुर कलेवर ।
त्रिभुबने अद्वितीय भदनसुन्दर ॥३१
चतुर्द्दिके बेढ़िया वैसेन शिष्यगण ।
मध्ये शास्त्र बाखानेन श्रीशचीनन्दन ॥३२
वैष्णव सकलो तबे सन्ध्याकाल हैले ।
आसिया वैसेन गङ्गातीरे कुतूहले ॥३३
दूरे थाकि प्रभुर व्याख्यान सभे शुने ।
हरिष-बिषाद सभे भावे मने मने ॥३४
केहो बोले "हेन रूप हेन विद्या यार ।
ना भजिले कृष्ण, नहे किछु उपकार ॥"३५
सभेइ बोलेन "भाइ ! उहाने देखिया ।
फाँकि जिज्ञासार भये याइ पलाइया ॥"३
केहो बोले "देखा हैले ना देन एड़िया ।
महा-दानी-प्राय येन राखेन धरिया ॥"३७
केहो बोले "ब्राह्मणेर शक्ति अमानुषी ।
कोनो महापुरुष बा हय हेन वासि ॥३८
यद्यपिह निरन्तर बाखानेन फाँकि ।
तथापि सन्तोष बड़ पाङ उहा देखि ॥३९
मनुष्येर एमन पाण्डित्य देखि नाञि ।
कृष्ण ना भजेन एबे एइ दुःख पाइ ॥"४
अन्योऽन्ये सभेइ साधेन सभा' प्रति ।
"सभे बोले 'इहान हउक कृष्णे रति' ॥"४
दण्डवत हइ सभे पड़िला गङ्गारे ।
सर्व-भागवत मेलि आशीर्वाद करे ॥४२
"हेन कर' कृष्ण ! जगन्नाथेर नन्दन ।
तोर रसे मत्त हउ छाड़ि अन्य-मन ॥४३
निरवधि प्रेमभावे भजुक तोमारे ।
हेन सङ्ग कृष्ण ! देह' आमा' सभाकारे ॥"
अन्तर्यामी प्रभु—चित्त जानेन सभार ।
श्रीवासादि देखिलेइ करेन नमस्कार ॥४५
भक्त-आशीर्वाद प्रभु शिरे करि लय ।
भक्त-आशीर्वाद से कृष्णेते भक्ति हय ॥४६
केहो केहो साक्षातेइ प्रभु देखि बोले ।
"कि कार्य्ये गोङाओ काल तुमि विद्याभोले" ॥४
केहो बोले "हेरदेख निमाञि पण्डित !
विद्याय कि लाभ, कृष्ण भजह त्वरित ॥४८
पढ़े केने लोक ?—कृष्णभक्ति जानिबारे ।
से यदि नहिल, तबे विद्याय कि करे ?"४९
हासि बोले प्रभु "बड़ भाग्य से आमार ।
तोमरा शिखाओ मोरे कृष्णभक्ति-सार ॥५०

तुमिसब यार कर सुभानुसन्धान ।
मोर चित्ते हेन लय, से-इ भाग्यवान् ॥५१
कथोदिन पढ़ाइया, मोर चित्ते आछे ।
चलिमु बुझिया भाल-वैष्णवेर काछे ॥"५२
एत बलि हासे प्रभु सेवकेर सने ।
प्रभुर मायाय केहो प्रभुरे ना चिने ॥५३
एइमत ठाकुर सभार चित्त हरे ।
हेन नाहि, ये जने अपेक्षा नाहि करे ॥५४
एइमत क्षणे प्रभु वैसे गङ्गातीरे ।
कखन भ्रमेण प्रति नगरे नगरे ॥५५
प्रभु देखिलेइ मात्र नगरियागण ।
परम आदर करि बन्देन चरण ॥५६
नारीगण देखि बोले "एइ त मदन ।
स्त्रीलोक पाउक जन्मेजन्मे हेन धन ॥"५७
पण्डित देखये बृहस्पतिर समान ।
वृक्ष-आदि पादपद्मे करये प्रणाम ॥५८
योगीगणे देखे येन सिद्ध-कलेवर ।
दुष्टगण देखे येन महा-भयङ्कर ॥५९
दिवसेको यारे प्रभु करेन सम्भाष ।
बन्दिप्राय हय येन, परे प्रेमफाँस ॥६०
विद्यारसे यत प्रभु करे अहङ्कार ।
शुनेन तथापि प्रीत प्रभुरे सभार ॥६१
यवनेओ प्रभु देखि करे बड़ प्रीत ।
सर्वभूत-कृपालुता प्रभुर चरित ॥६२
पढ़ाय वैकुण्ठनाथ नवद्वीप-पुरे ।
मुकुन्द-सञ्जय भाग्यवन्तेर मन्दिरे ॥६३
पक्ष-प्रतिपक्ष सूत्र-खण्डन स्थापन ।
वाखाने अशेषरूपे श्रीशचीनन्दन ॥६४
गोष्ठीसह-मुकुन्द-सञ्जय भाग्यवान् ।
भासये आनन्दे, मर्म ना जानये तान ॥६५
विद्या जय करिया ठाकुर चले घरे ।
विद्यारसे वैकुण्ठेर नायक विहरे ॥६६
एकदिन वायु-देह-मान्द्य करि छल ।
प्रकाशेन प्रेमभक्ति विकार सकल ॥६७
आचम्विते प्रभु अलौकिक शब्द बोले ।
गड़ागड़ि याय, हासे, घर भाङ्गि फेले ॥६८
हुङ्कार गर्ज्जन करे, मालसाट् पूरे ।
सम्मुखे देखेये यारे ताहारेइ मारे ॥६९
क्षणेक्षणे सर्व अङ्ग स्तम्भाकृति हय ।
हेन मूर्च्छा हय, लोक देखि पाय भय ॥७०
शुनिलेन बन्धुगण वायुर विकार ।
धाइया आसिया सभे करे प्रतिकार ॥७१
बुद्धिमन्त-खान आर मुकुन्द-सञ्जय ।
गोष्ठीसह आइलेन प्रभुर आलय ॥७२
विष्णुतैल नारायणतैल देन शिरे ।
सभे करे प्रतिकार, यार येन स्फुरे ॥७३
आपन-इच्छाय प्रभु नाना कर्म करे ।
से केमने सुस्थ हइबेक प्रतिकारे ॥७४
सर्व अङ्गे कम्प, प्रभु करे आस्फालन ।
हुङ्कार शुनिये भय पाय सर्वजन ॥७५
प्रभु बोले "मुञि सर्व-लोकेर ईश्वर ।
मुञि विश्व धरोँ मोर नाम 'विश्वम्भर' ॥७६
मुञि सेइ, मोरे त ना चिने कोन जने ।"
एत बलि लड़ देइ धरे सर्वगणे ॥७७
आपना'-प्रकाश प्रभु करे वायु-छले ।
तथापि ना बुझे केहो तान मायाबले ॥७८
केहो बोले "हइल दानव-अधिष्ठान ।"
केहो बोले "हेन बुझि डाकिनीर काम ॥७९
केहो बोले "सदाइ करेन वाक्य-व्यय ।
अतएब हैल वायु, जानिह निश्चय ॥"८०

एइमत सर्वजने करेन विचार ।
विष्णु-माया-मोहे तत्त्व ना जानिआ ताँर ।।८१
बहुविध पाकतैल सभे देइ शिरे ।
तैलद्रोणे थुइ तैल देन कलेवरे ।।८२
तैलद्रोणे भासे प्रभु, हासे खलखल ।
सत्य येन महावायु करियाछे बल ।।८३
एइमत आपन-इच्छाय लीला करि ।
स्वाभाबिक हैला प्रभु वायु परिहरि ।।८४
सर्वगणे उठिल आनन्द-हरिध्वनि ।
केबा कारे वस्त्र देइ, हेन नाहि जानि ।।८५
सर्वलोक शुनिआ हइला हरषित ।
सभे बोले "जीउ जीउ एहेन पण्डित ।।"८६
एइमत रङ्ग करे त्रिदशेर राय ।
के ताने जानिते पारे यदि ना जानाय ।।८७
प्रभुरे देखिया सर्व वैष्णवेर गण ।
सभे बोले "भज बाप ! कृष्णेर चरण ।।८८
क्षणेके नाहिक बाप ! अनित्य शरीर ।
तोमारे के शिखाइब, तुमि महाधीर ।।८९
हासि प्रभु सभारे करिया नमस्कार ।
पढ़ाइते चले शिष्य-संहति अपार ।।९०
मुकुन्द-सञ्जय पुण्यवन्तेर मन्दिरे ।
पढ़ायेन प्रभु चण्डीमण्डप-भितरे ।।९१
परम-सुगन्धि पाकतैल प्रभु-शिरे ।
कोन पुण्यवन्त देइ, प्रभु व्याख्या करे ।।९२
चतुर्दिगे महा पुण्यवन्त-शिष्यगण ।
माझे प्रभु व्याख्या करे जगत जीवन ।।९३
से शोभार महिमा त कहिते ना पारि ।
उपमा कि दिब कोन ना देखि विचारि ।।९४
हेन बुझि येन सनकादि-शिष्यगणे ।
नारायण बेढ़ि वैसे वदरिकाश्रमे ।।९५

ताहा सभा' लैया येन से प्रभु पढ़ाय ।
हेन बुझि सेइ लीला करे गौरराय ।।९६
सेइ वदरिकाश्रमवासी नारायण ।
निश्चय जानिय एइ श्रीशचीनन्दन ।।९७
अतएब शिष्यसङ्गे सेइ लीला करे ।
विद्यारसे वैकुण्ठेर नायक बिहरे ।।९८
पढ़ाइया प्रभु दुइ-प्रहर हइले ।
तबे शिष्यगण लैया गङ्गास्नाने चले ।।९९
गङ्गाजले विहार करिया कथोक्षण ।
गृहे आसि करे प्रभु श्रीविष्णु पूजन ।।१०
तुलसीरे जल दिया प्रदक्षिण करि ।
भोजने वसेन गिया बलि 'हरिहरि' ।।१०
लक्ष्मी देइ अन्न, खान वैकुण्ठेर पति ।
नयन भरिया देखे आइ पुण्यवती ।।१०
भोजन-अन्तरे करि ताम्बूल-भक्षण ।
शयन करेन, लक्ष्मी सेवेन चरण ।।१
कथोक्षण योगनिद्रा प्रति दृष्टि दिया ।
पुन प्रभु चलिलेन पुस्तक लइया ।।१०
नगरे उठिया करे अशेष-विलास ।
सभार सहित करे हासिया सम्भाष ।।१०
यद्यपि प्रभुर केहो तत्त्व नाहि जाने ।
तथापि साध्वस करे देखि सर्वजने ।।१०
नगर भ्रमण करे श्रीशचीनन्दन ।
देवेर दुर्लभ वस्तु देखे सर्वजन ।।१०
उठिलेन प्रभु तन्तुवायेर दुयारे ।
देखिया सम्भ्रमे तन्तुवाय नमस्करे ।।१०
"भाल वस्त्र आन" प्रभु बोलये बचन ।
तन्तुवाय वस्त्र आनिलेन सेइक्षण ।।१०
प्रभु बोले "ए वस्त्रेर कि मूल्य लइबा ?"
तन्तुवाय बोले "तुमि आपने ये दिबा ।।"११

मूल्य करि बोले प्रभु"एबे कड़ि नाञि ।"
ताँती बोले"दशे-पक्षे दिबाहे गोसाञि ॥१११
वस्त्र लैया पर' तुमि परम-सन्तोषे ।
पाछे तुमि कड़ि मोर दिओ समावेशे ॥"११२
तन्तुवाय-प्रति प्रभु शुभ-दृष्टि करि ।
उठिलेन गिया प्रभु गोयालेर पुरी ॥११३
वसिलेन महाप्रभु गोपेर दुयारे ।
ब्राह्मण-सम्बन्धे प्रभु परिहास करे ॥११४
प्रभु बोले"आरे बेटा ! दधि दुग्ध आन ।
आजि तोर घरेर लइब महादान ॥"११५
गोपवृन्द देखे येन साक्षात् मदन ।
सम्भ्रमे दिलेन आनि सुन्दर आसन ॥११६
प्रभु-सङ्गे गोपगण करे परिहास ।
'मामा मामा' बलि सभे करेन सम्भाष ॥११७
केहो बोले"चल मामा ! भात खाइ गिया ।"
कोन गोप कान्धे करि याय घरे लैया ॥११८
केहो बोले "आमार घरेर यत भात ।
पूर्वे ये खाइला मने नाहिक तोमा'त ?"११९
सरस्वती सत्य कहे, गोप नाहि जाने ।
हासे महाप्रभु गोपगणेर बचने ॥१२०
दुग्ध, घृत, दधि, सर, सुन्दर नवनी ।
सन्तोषे प्रभुरे सर्व गोप देय आनि ॥१२१
गोयालाकुलेरे प्रभु प्रसन्न हइया ।
गन्धवणिकेर घरे उठिलेन गिया ॥१२२
सम्भ्रमे वणिक करे चरणे प्रणाम ।
प्रभु बोले"आरे भाइ!भाल गन्ध आन ॥"१२३
दिव्य-गन्ध वणिक आनिल ततक्षण ।
"कि मूल्य लइबा ?"बोले श्रीशचीनन्दन ॥१२४
वणिक बोलये "तुमि जान" महाशय !
तोमा' स्थाने मूल्य कि बलिते युक्त हय ?१२५
आजि गन्ध परि घरे याह त ठाकुर !
कालि यदि गा'ये गन्ध थाकये प्रचुर ॥१२६
धुइलेओ यदि गा'ये गन्ध नाहि छाड़े ।
तबे कड़ि दिह चित्ते ये तोमार पड़े ॥"१२७
एत बलि आपने प्रभुर सर्व-अङ्गे ।
गन्ध देइ वणिक, ना जानि कोन् रङ्गे ॥१२८
सर्व-भूत-हृदय आकर्षे सर्व-मन ।
से रूप देखिया मुग्ध नहे कोन् जन ?१२९
वणिकेरे अनुग्रह करि विश्वम्भर ।
उठिलेन गिया प्रभु मालाकारेर घर ॥१३०
परम अद्भुत रूप देखि मालाकार ।
सादरे आसन दिया करे नमस्कार ॥१३१
प्रभु बोले "भाल माला देहो मालाकार !
कड़ि-पाति लगे किछु नाहिक आमार ?"१३२
सिद्धपुरुषेर-प्राय देखे मालाकार ।
माली बोले"किछु दाय नाहिक तोमार ॥"१३३
एत बलि माला दिल प्रभुर श्रीअङ्गे ।
हासे महाप्रभु सर्व-पढ़ुयार सङ्गे ॥१३४
मालाकार-प्रति प्रभु शुभदृष्टि करि ।
उठिला ताम्बूली-घरे गौराङ्ग श्रीहरि ॥१३५
ताम्बूली देखये रूप मदन-मोहन ।
चरणेर धूलि लइ दिलेन आसन ॥१३६
ताम्बूली बोलये"बड़ भाग्य से आमार ।
कोन् भाग्ये तुमि आमा'-छारेर दुयार ॥"१३७
एत बलि आपनेइ परम-सन्तोषे ।
दिलेन ताम्बूल आनि, प्रभु देखि हासे ॥१३८
प्रभु बोले"कड़ि-विना केने गुया दिला ?"
ताम्बूली बोलये"चित्ते हेनइ लइला ॥"१३९
हासे प्रभु ताम्बूलीर शुनिआ बचन ।
परम सन्तोषे करे ताम्बूल-भक्षण ॥१४०

दिव्य पर्ण, कर्पूरादि यत अनुकूल ।
श्रद्धा करि दिला, तार नाहि निल मूल ॥१४१
ताम्बूलीरे अनुग्रह करि गौर-राय ।
हासिया हासिया सर्वनगरे बेड़ाय ॥१४२
मधुपुरी-प्राय येन नवद्वीप-पुरी ।
एको जाति लक्षलक्ष कहिते ना पारि ॥१४३
प्रभुर बिहार लागि पूर्वेइ विधाता ।
सकल सम्पूर्ण करि थुइयाछे तथा ॥१४४
पूर्वे येन मधुपुरी करिला भ्रमण ।
सेइ लीला करे एबे श्रीशचीनन्दन ॥१४५
तबे गौर गेला शङ्ख वणिकेर घरे ।
देखि शङ्खवणिक सम्भ्रमे नमस्करे ॥१४६
प्रभु बोले "दिव्य-शङ्ख आन' देखि भाइ !
केमने बा निब शङ्ख, कड़ि पाति नाञि ॥" १४७
दिव्य-शङ्ख शाँखारि आनिञा सेइक्षणे ।
प्रभुर श्रीहस्ते दिया बोले प्रीत मने ॥१४८
"शङ्ख लइ घरे तुमि चलह गोसाञि ।
पाछे कड़ि दिह, ना दिलेओ दाय नाञि ॥" १४९
तुष्ट हैला प्रभु शङ्खवणिक-बचने ।
चलिलेन हासि शुभ दृष्टि करि ताने ॥१५०
एइमत नवद्वीपे यत नगरिया ।
सभार मन्दिरे प्रभु बुलेन भ्रमिया ॥१५१
सेइ भाग्ये अद्यापिह नागरिकगण ।
पाय श्रीचैतन्य-नित्यानन्देर चरण ॥१५२
तबे इच्छामय गौरचन्द्र भगवान् ।
सर्वज्ञेर घरे प्रभु करिला पयान ॥१५३
देखिया प्रभुर तेज सेइ सर्वजन ।
विनय सम्भ्रम करि करिला प्रणाम ॥१५४
प्रभु बोले "तुमि सर्व जान भाल शुनि ।
बोल देखि 'अन्य-जन्मे कि आछिलाङ आमि? १५५

"भाल" बलि सर्वज्ञ सुकृति चिन्ते मने ।
जपिते गोपालमन्त्र देखे सेइ क्षणे ॥१५
शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, चतुर्भुज श्याम ।
श्रीवत्स कौस्तुभ बक्षे महाज्योतिर्धाम ॥१५
निशाभागे प्रभुरे देखेन बन्दिघरे ।
पिता-माता देखये सम्मुखे स्तुति करे ॥१५
सेइक्षणे देखे पिता पुत्र लइ कोले ।
सेइ रात्रे थुइलेन आनिञा गोकुले ॥१५
पुनः देखे मोहन द्विभुज दिगम्बरे ।
कटिते किंकिणी, नवनीत दुइ करे ॥१६
निज-इष्टमूर्त्ति याहा चिन्ते अनुक्षण ।
सर्वज्ञ देखये सेइ सकल लक्षण ॥१६
पुन देखे त्रिभङ्गिम मुरलीवदन ।
चतुर्द्दिगे यन्त्र गीत गाय गोपीगण ॥१६
देखिया अद्भुत, चक्षु मेलि सर्वजन ।
गौराङ्गे चाहिया पुनःपुन करे ध्यान ॥१६
सर्वज्ञ कहये "शुन श्रीबालगोपाल !
के आछिला द्विज एइ, देखाह सकाल ॥"१
तबे देखे, धनुर्द्धर दूर्वादल-श्याम ।
बीरासने प्रभुरे देखये सर्वजन ॥१६
पुनः देखे प्रभुरे प्रलयजल-माझे ।
अद्भुत वराह-मूर्त्ति दन्ते पृथ्वी साजे ॥१६
पुनः देखे प्रभुरे नृसिंह-अवतार ।
महा-उग्र-रूप भक्तवात्सल्य अपार ॥१६
पुनः देखे प्रभुरे वामन-रूप धरि ।
बलि-यज्ञ छलिते आछेन माया करि ॥१६
पुनः देखे मत्स्य-रूपे प्रलयेर जले ।
करिते आछेन जलक्रीड़ा कुतूहले ॥१६
सुकृति सर्वज्ञ पुन देखये प्रभुरे ।
मत्त हलधर-रूप श्रीमुषल करे ॥१७

पुनः देखे जगन्नाथ-मूर्त्ति सर्वजन ।
मध्ये शोभे सुभद्रा, दक्षिणे बलराम ॥१७१
एइमत ईश्वर-तत्त्व देखे सर्वजन ।
तथापि ना बुझे किछु, हेन माया तान ॥१७२
चिन्तये सर्वज्ञ मने हइया विस्मित ।
हेन बुझि "ए ब्राह्मण महामन्त्रवित ॥१७३
अथवा देवता कोन आसिया कौतुके ।
परीक्षिते' आमारे वा छले' विप्ररूपे ॥१७४
अमानुषि-तेज देखि विप्रेर शरीरे ।
'सर्वज्ञ' करिया किबा कदर्थे आमारे ?"१७५
एतेक चिन्तिते प्रभु बलिला हासिया ।
"के आमि,कि देख,केने ना कह भाङ्गिया"१७६
सर्वज्ञ बोलये "तुमि चलह एखने ।
बिकाले बलिब मन्त्र जपि भाल-मने ॥"१७७
"भाल भाल" बलि प्रभु हासिया चलिला ।
तबे प्रिय-श्रीधरेर मन्दिरे आइला ॥१७८
श्रीधरेरे बड़ प्रभु सन्तुष्ट अन्तरे ।
नाना छले आइसेन प्रभु तान घरे ॥१७९
वाकोवाक्य परिहास श्रीधरेर सङ्गे ।
दुइ चारि दण्ड करि चले प्रभु रङ्गे ॥१८०
प्रभु देखि श्रीधर करिया नमस्कार ।
श्रद्धा करि आसन दिलेन वसिबार ॥१८१
परम सुशान्त श्रीधरेर व्यवसाय ।
प्रभु विहरेन येन उद्धतेर प्राय ॥१८२
प्रभु बोले "श्रीधर ! तुमि ये अनुक्षण ।
'हरिहरि' बोल, तबे दुःख कि कारण ?१८३
लक्ष्मीकान्त सेवन करिया केने तुमि ।
अन्न-वस्त्रे दुःख पाओ कह देखि शुनि ?"१८४
श्रीधर बोलेन "उपवास त ना करि ।
छोट हउ बड़ हउ वस्त्र देख परि ॥"१८५
प्रभु बोले "देखिलाङ गाँठि दश ठाञि ।
घरे बोल, एइ देखितेछि खड़ नाञि ॥१८६
देख एइ चण्डी-विषहरिरे पूजिया ।
के ना घरे खाय परे सब नगरिया ॥"१८७
श्रीधर बोलेन "विप्र ! बलिला उत्तम ।
तथापि सभार काल याय एक-सम ॥१८८
रत्नघरे थाके राजा, दिव्य खाय परे ।
पक्षिगण थाके देख वृक्षेर उपरे ॥१८९
काल पुनः सभार समान एक याय ।
सभे निज कर्म भुञ्जे ईश्वर-इच्छाय ॥"१९०
प्रभु बोले "तोमार विस्तर आछे धन ।
ताहा तुमि लुकाइया करह भोजन ॥१९१
ताहा मुञि वि.दत करिमु कथो-दिने ।
तबे देखि, तुमि लोक भाण्डिबा केमने ॥"१९२
श्रीधर बोलेन "घरे चलह पण्डित !
तोमार आमाय द्वन्द्व ना हय उचित ॥"१९३
प्रभु बोले "आमि तोमा' ना छाड़ि एमने ।
कि आमारे दिबा'ताहा बोल एइ क्षणे ॥"१९४
श्रीधर बोलेन"आमि खोला बेचि खाइ ।
इहाते कि दिब, ताहा बोलह गोसाञि !"१९५
प्रभु बोले" ये तोमार पोँता धन आछे ।
से थाकुक् एखने, पाइब ताहा पाछे ॥१९६
एबे कला मूला थोड़ देहो कड़ि-विने ।
दिले आमि कन्दल ना करि तोमा'सने ॥"१९७
मने गणे श्रीधर "उद्धत विप्र बड़ ।
कोन दिन आमारे किलाय पाछे दढ़ ॥१९८
मारिलेओ ब्राह्मणेर कि करिते पारि ।
कड़ि-विनि प्रति-दिन दिबारेओ नारि ॥१९९
तथापिह बले छले ये लय ब्राह्मणे ।
से आमार भाग्य'से दिबाङ प्रति-दिने ॥"२००

चिन्तिया श्रीधर बोले "शुनह गोसाञि !
कड़ि-पाति तोमार किछुइ दाय नाञि ॥२०१
थोड़ कला मूला खोला दिब एइ मने ।
सबे आर कन्दल ना कर' आमा' सने ॥"२०२
प्रभु बोले "भालभाल' आर द्वन्द्व नाञि ।
सत्रे थोड़ कला मूला भाल येन पाइ ॥' २०३
याहार खोलाय नित्य करेन भोजन ।
यार थोड़ कला मूला हय श्रीव्यञ्जन ॥२०४
श्रीधरेर गाछे येइ लाउ धरे चाले ।
ताहा खाय प्रभु दुग्ध मरिचेर झाले ॥२०५
प्रभु बोले "आमारे कि वासह श्रीधर !
ताहा कहिलेइ आमि चलि याइ घर ॥"२०६
श्रीधर बोलेन "तुमि विप्र—विष्णु-अंश ।"
प्रभु बोले "ना जानिला, आमि गोप-वंश॥२०७
तुमि आमा देख येन ब्राह्मण-छाओयाल ।
आमि आपनारे वासि येहेन गोयाल ॥"२०८
हासेन श्रीधर शुनि प्रभुर बचन ।
ना चिनिल निज-प्रभु मायार कारण ॥२०९
प्रभु बोले "श्रीधर! तोमारे कहि तत्त्व ।
आमा' हैते तार सब गङ्गार महत्व ॥"२१०
श्रीधर बोलेन "ओहे पण्डित निमाञि !
गङ्गा करियाओ कि तोमार भय नाञि ॥२११
वयस बाड़िले लोक कोथा स्थिर ह'ये ।
तोमार चापल्य आरो द्विगुण बाढ़ये ॥"२१२
एइमत श्रीधरेर सङ्गे रङ्ग करि ।
आइलेन निज-गृहे गौराङ्ग-श्रीहरि ॥२१३
विष्णुद्वारे वसिलेन गौराङ्ग सुन्दर ।
चलिला पढ़ुयावर्ग यार यथा घर ॥२१४
देखि प्रभु पौर्णमासी-चन्द्रेर उदय ।
वृन्दावनचन्द्र-भाव हइल उदय ॥२१५

अपूर्व-मुरली-ध्वनि लागिला करिते ।
आइ बइ आर केहो ना पाय शुनिते ॥२१
त्रिभुवनमोहन मुरली शुनि आइ ।
प्रथमे आनन्दे मूर्च्छा गेला सेइ ठाँइ ॥२१
क्षणेके चैतन्य पाइ स्थिर करि मन ।
अपूर्व मुरली ध्वनि करेन श्रवण ॥२१
येखाने वसिया आछेन गौराङ्गसुन्दर ।
सेइ दिगे शुनेन मुरली मनोहर ॥२१
अद्भुत शुनिञा आइ आइला बाहिरे ।
देखे पुत्र वसि आछे विष्णु घर द्वारे ॥२२
आर नाहि पायेन शुनिते वंशीनाद ।
पुत्रेर हृदये देखे आकाशेर चाँद ॥२२
पुत्र-वक्षे देखे चन्द्रमण्डल साक्षाते ।
बिस्मित हइया आइ चा'हे चारिभिते ॥२२
गृहे आइ' वसि गिया लागिला चिन्तिते ।
कि हेतु निश्चय किछु ना पारे करिते ॥२२
बिस्मित हइया आइ चाहे चारिभिते ।
विष्णुर मायाय किछु ना पारे जानिते ॥२२
एइमत कत भाग्यवती शची आइ ।
यत देखे प्रकाश, ताहार अन्त नाञि ॥२२५
कोनदिन निशाभागे शची आइ शुने ।
गीत वाद्ययन्त्र वा'य कत शत जने ॥२२६
बहुविध मुखवाद्य, नृत्य, पदताल ।
येन महा-रासक्रीड़ा शुनेन बिशाल ॥२२७
कोनदिन देखे सर्ववाड़ी घर द्वार ।
ज्योतिर्मय बइ किछु ना देखेन आर ॥२२८
कोनदिन देखे अति-दिव्य-नारीगण ।
लक्ष्मी-प्राय सभे, हस्ते पद्म-विभूषण ॥२२९
कोनदिन देखे ज्योतिर्मय देवगण ।
देखि पुन आर नाहि पाय दरशन ॥२३

आइर एसब दृष्टि किछु चित्र नहे ।
विष्णुभक्ति-स्वरूपिणी वेदे याँरे कहे ॥२३१
आइ यारे सकृत करेन दृष्टिपाते ।
सेइ हये अधिकारी ए सब देखिते ॥२३२
हेनमते श्रीगौरसुन्दर वनमाली ।
आछे गूढ़रूपे निजानन्दे कुतूहली ॥२३३
यद्यपि एतेक प्रभु आपना' प्रकाशे' ।
तथापिह चिनिते ना पारे कोन दासे ॥२३४
हेन से औद्धत्य प्रभु करेन कौतुके ।
तेमत उद्धत आर नाहि नवद्वीपे ॥२३५
यखन येरूप लीला करेन ईश्वर ।
सेइ सर्व-श्रेष्ठ, तार नाहिक दोसर ॥२३६
युद्ध-लीला प्रति इच्छा उपजे यखन ।
अस्त्र-शिक्षा-बीर आर ना थाके तेमन ॥२३७
काम-लीला करिते यखन इच्छा हय ।
लक्षार्वुद वनिता से करेन विजय ॥२३८
धन विलसिते बा यखन इच्छा हय ।
प्रजार घरेते हय निधि कोटिमय ॥२३९
एमत उद्धत गौरसुन्दर एखने ।
एइ प्रभु विरक्ति आश्रयिवेन यखने ॥२४०
से विरक्ति-भक्ति-कणा नाहि त्रिभुवने ।
अन्ये कि सम्भवे ताहा व्यक्त सर्वजने ॥२४१
एइ मत ईश्वरेर सर्वश्रेष्ठ कर्म ।
सबे सेवकेरे हारे, से ताहान धर्म ॥२४२
एकदिन प्रभु आइसेन राजपथे ।
सात पाँच पढ़ुया प्रभुर चारिभिते ॥२४३
व्यवहारयोग्य वस्त्र मात्र परिधान ।
अङ्गे पानीतोला पीत-पट्टेर समान ॥२४४
अधरे ताम्बूल कोटि-चन्द्र श्रीवदन ।
लोके बोले "मूर्त्तिमन्त एइ कि मदन ?"२४५
ललाटे तिलक-ऊर्द्ध्व, पुस्तक श्रीकरे ।
दृष्टिमात्रे पद्मनेत्रे सर्व-ताप हरे ॥२४६
स्वभावे चञ्चल पढ़ुयार वर्ग सङ्गे ।
बाहु दोलाइया प्रभु आइसेन रङ्गे ॥२४७
दैवे पथे आइसेन पण्डित श्रीवास ।
प्रभु देखि मात्र तान हैल महा-हास ॥२४८
ताने देखि प्रभु करिलेन नमस्कार ।
"चिरजीवी हओ" बोले श्रीवास उदार ॥२४९
हासिया श्रीवास बोले "कह देखि शुनि ।
कति चलियाछ उद्धतेर चूड़ामणि ॥२५०
कृष्ण ना भजिये काल कि कार्य्ये गोङाओ ?
रात्रिदिन निरवधि कोन बा पढ़ाओ ?२५१
पढ़े लोक केने ? कृष्णभक्ति जानिबारे ।
से यदि नहिल, तबे विद्याय कि करे ?२५२
एतेके सर्वथा व्यर्थ ना गोङाओ काल ।
पढ़िला त, एबे कृष्ण भजह सकाल ॥"२५३
हासि बोले महाप्रभु" शुनह पण्डित !
तोमार कृपाय सेहो हइब निश्चित ॥"२५४
एत बलि महाप्रभु हासिया चलिला ।
गङ्गातीरे आसि शिष्य-सहिते वसिला ॥२५५
गङ्गातीरे वसिलेन श्रीशचीनन्दन ।
चतुर्द्दिगे बेढ़िया वसिला शिष्यगण ॥२५६
कोटिमुखे सेइ शोभा ना पारि कहिते ।
उपमाओ तार नाहि देखि त्रिजगते ॥२५७
चन्द्र-तारागण बा बलिब, सेहो नहे ।
सकलङ्क; तार कला-क्षय-वृद्धि हये ॥२५८
सर्व-काल-परिपूर्ण ए प्रभुर कला ।
निष्कलङ्क, तेञि से उपमा दूरे गेला ॥२५९
वृहस्पति-उपमाओ दिते ना जुयाय ।
तेँहो एकपक्ष—देवगणेर सहाय ॥२६०

ए प्रभु सभार पक्ष, सहाय सभार ।
अतएब से दृष्टान्त ना हय इँहार ॥२६१
कामदेव-उपमा बा दिब, सेहो नहे ।
ति‍ँहो चित्ते जागिले,चित्तेर क्षोभ हये ॥२६२
ए प्रभु जागिले चित्ते,सर्वबन्ध-क्षय ।
परम-निर्मल सुप्रसन्न चित्त हय ॥२६३
एइमत सकल दृष्टान्त योग्य नहे ।
सबे एक उपमा देखिये चित्ते लये ॥२६४
कालिन्दीर तीरे येन श्रीनन्दकुमार ।
गोपवृन्द-मध्ये वसि करेन विहार ॥२६५
सेइ-गोपवृन्द लइ, सेइ कृष्णचन्द्र ।
बुझि द्विजरूपे गङ्गातीरे करे रङ्ग ॥२६६
गङ्गातीरे ये ये जने देखे प्रभुर मुख ।
सेइ पाये अति-अनिर्वचनीय सुख ॥२६७
देखिया प्रभुर तेज अति-बिलक्षण ।
गङ्गातीरे काणाकाणि करे सर्वजन ॥२६८
केहो बोले ''एत तेज मानुषेर नहे ।''
केह बोले''ए ब्राह्मण विष्णु-अंश नये ॥''२६९
केहो बोले ''विप्र राजा हइबेक गौड़े ।
सेइ एइ, हेन बुझि, कखनो ना नड़े ॥२७०
राजचक्रवर्त्ति-चिह्न देखिबे सकल ।''
एइमत बोले यार यत बुद्धि बल ॥२७१
अध्यापक-प्रति सब कटाक्ष करिया ।
व्याख्या करे प्रभु गङ्गा-समीपे वसिया ॥२७२
'हय' व्याख्या 'नय' करे, 'नय' करे 'हय' ।
सकल खण्डिया, शेषे सकल स्थापय ॥२७३
प्रभु बोले ''तारे आमि बलिये पण्डित ।
एकबार व्याख्या करे आमार सहित ॥२७४
सेइ वाक्य यदि वाखानिये आर-बार ।
आमा' प्रबोधिब, हेन देखि शक्ति कार?''२७५
एइमत ईश्वर व्यञ्जेन अहङ्कार ।
सर्व-गर्व चूर्ण हय शुनिञा सभार ॥२७६
कत बा प्रभुर शिष्य, तार अन्त नाञि ।
कत बा मण्डली हइ पड़े ठाञि ठाञि ॥२७७
प्रतिदिन दश विश ब्राह्मण कुमार ।
आसिया प्रभुर पा'य करे नमस्कार ॥२७८
''पण्डित! आमरा पढ़िवाङ तोमा'स्थाने ।
किछु जानि, हेन कृपा करिबा आपने ॥''२७९
''भाल भाल'' हासि प्रभु बोलेन बचन ।
एइमत प्रतिदिन बाढ़े शिष्यगण ॥२८०
गङ्गातीरे शिष्य-सङ्गे मण्डली करिया ।
वैकुण्ठेर चूड़ामणि आछेन वसिया ॥२८१
चतुर्द्दिगे देखे सब भाग्यवन्त लोक ।
सर्व-नवद्वीप प्रभु-प्रभावे अशोक ॥२८२
से आनन्द ये ये भाग्यवन्त देखिलेक ।
कोन् जन आछे तार भाग्य बलिबेक ?२८३
से आनन्द देखिलेक ये सुकृति जन ।
ताने देखिलेओ खण्डे' संसार बन्धन ॥२८४
हइल पापिष्ठ, जन्म नहिल तखने ।
हइलाङ बञ्चित से सुख-दरशने ॥२८५
तथापिह एइ कृपा कर' गौरचन्द्र !
से लीला मोहर स्मृति हउ जन्मजन्म ॥२८६
स-पार्षदे तुमि नित्यानन्द यथायथा ।
लीला कर, मुञि येन भृत्य हङ तथा ॥२८७
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचाँदजान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुग गान ॥२८८

इति श्रीचैतन्यभागवते आदिखण्डे श्रीगौराङ्ग-नगरभ्रमणादिवर्णनं नाम अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

नवम अध्याय

जयजय द्विजकुल-दीप गौरचन्द्र ।
जयजय भक्त-गोष्ठी-हृदय-आनन्द ॥१
जयजय द्वारपाल-गोविन्देर नाथ ।
जीव प्रति कर' प्रभु शुभ-दृष्टि-पात ॥२
जय अध्यापक शिरोरत्न विप्रराज ।
जयजय चैतन्येर श्रीभक्तसमाज ॥३
हेनमते विद्यारसे श्रीवैकुण्ठनाथ ।
वैसेन सभार करि विद्या-गर्व-पात ॥४
यद्यपिह नवद्वीप पण्डित समाज ।
कोटचर्वुद अध्यापक नाना-शास्त्र-राज ॥५
भट्टाचार्य्य, चक्रवर्त्ती, मिश्र वा आचार्य्य ।
अध्यापना विना कारो नाहि कोनो कार्य्य ॥६
यद्यपिह सभेइ स्वतन्त्र, सभे जयी ।
शास्त्रचर्चा हैले ब्रह्मारेओ नाहि सहि ॥७
प्रभु यत निरवधि आक्षेप करेन ।
परम्परा साक्षातेओ सभेइ शुनेन ॥८
तथापिह हेन जन नाहि प्रभु-प्रति ।
द्विरुक्ति करिते कारो कभु नहे मति ॥९
हेन से साध्वस जन्मे प्रभुरे देखिया ।
सभेइ यायेन एकदिगे नम्र हैया ॥१०
यदि वा काहारे प्रभु करेन सम्भाष ।
सेइ जन हय येन अति बड़ दास ॥११
प्रभुर पाण्डित्यबुद्धि शिशुकाल हैते ।
सभेइ जानेन गङ्गातीरे भाल-मते ॥१२
कोनरूपे केहो प्रबोधिते नाहि पारे ।
इहाओ सभार चित्ते जागये अन्तरे ॥१३
प्रभु देखि स्वभावेइ जन्मये साध्वस ।
अतएब प्रभु देखि सभे हय वश ॥१४
तथापिह हेन तान मायार बड़ाइ ।
बुझिबारे पारे ताने हेन जन नाइ ॥१५
तेँहो यदि ना करेन आपना' बिदित ।
तबे ताने केहो नाहि जाने कदाचित ॥१६
तेँहो पुनः नित्य सुप्रसन्न सर्वरीते ।
ताहान मायाय हय सभे विमोहिते ॥१७
हेनमते सभारे मोहिया गौरचन्द्र ।
विद्यारसे नवद्वीपे करे प्रभु रङ्ग ॥१८
हेनकाले तथा एक महा-दिग्विजयी ।
आइल परम-अहङ्कार-युक्त हइ ॥१९
सरस्वती मन्त्रेर एकान्त-उपासक ।
मन्त्र जपि सरस्वती करिलेक वश ॥२०
विष्णुभक्ति-स्वरूपिणी विष्णु-बक्ष-स्थिता ।
मूर्त्तिभेदे रमा—सरस्वती जगन्माता ॥२१
भाग्यबशे ब्राह्मणेरे प्रत्यक्ष हइला ।
'त्रिभुवन-दिग्विजयी' करि बर दिला ॥२२
याँर दृष्टिपात-मात्रे हय विष्णुभक्ति ।
'दिग्विजयी' बर बा ताहान कोन् शक्ति ॥२३
पाइ सरस्वतीर साक्षाते बर-दान ।
संसार जिनिञा विप्र बुले स्थानेस्थान ॥२४
सर्वशास्त्र जिह्वाय आइसे निरन्तर ।
हेन नाहि जगते, ये दिबेक् उत्तर ॥२५
यार कक्षा मात्र नाहि बुझे कोन-जने ।
दिग्विजयी हइ बुले सर्व स्थानेस्थाने ॥२६
शुनिलेन बड़ नवद्वीपेर महिमा ।
पण्डित-समाज, यत,तार नाहि सीमा ॥२७
परम-समृद्ध अश्व-गज-युक्त हइ ।
सभा' जिनि नवद्वीपे गेला दिग्विजयी ॥२८
प्रति घरे घरे, प्रति पण्डित सभाय ।
महा-ध्वनि उपजिल सर्व-नदीयाय ॥२९
"सर्व-राज्य देशे जिनि जय पत्र लइ ।
नवद्वीपे आसियाछे एक दिग्विजयी ॥३०

सरस्वतीर बरपुत्र" शुनि सर्वजने ।
पण्डित सभार बड़ चिन्ता हैल मने ॥३१
"जम्बुद्वीपे यत आछे पण्डितेर स्थाने ।
सभा' जिनि नवद्वीप जगते बाखाने ॥३२
हेन-स्थान दिग्विजयी याइब जिनिञा ।
संसारेइ अप्रतिष्ठा घुषिब शुनिञा ॥३३
युझिते बा कार् शक्ति आछे तार सने ?"
सरस्वती वर यारे दिलेन आपने ॥३४
सरस्वती वक्ता यार जिह्वाय आपने ।
मनुष्ये कि वादे कभु पारे तार सने ?"३५
सहस्र सहस्र महा-महा-भट्टाचार्य्य ।
सभेइ चिन्तेन मने छाड़ि सर्ब कार्य्य ॥३६
चतुर्द्दिगे सभेइ करेन कोलाहल ।
"बुझिवाङ एइ यार यत विद्याबल ॥"३७
ए वृत्तान्त यत पढ़ुयार गणे ।
कहिलेन निज गुरु गौराङ्गेर स्थाने ॥३८
"एक दिग्विजयी सरस्वती वश करि ।
सर्वत्र जिनिञा बुले जयपत्र धरि ॥३९
हस्ती घोड़ा दोला लोक अनेक संहति ।
सम्प्रति आसिया हैला नवद्वीपे स्थिति ॥४०
नवद्वीपे आपनार प्रतिद्वन्द्वी चाय ।
नहे जयपत्र मागे सकल-सभाय ॥"४१
शुनि शिष्यगणेर बचन गौरमणि ।
हासिया कहिते लागिलेन तत्त्ववाणी ॥४२
"शुन भाइसब ! एइ कहि तत्त्व कथा ।
अहङ्कार ना सहेन ईश्वर सर्वथा ॥४३
ये ये-गुणे मत्त हइ करे अहङ्कार ।
अवश्य ईश्वर ताहा करेन संहार ॥४४
फलवन्त बृक्ष आर गुणवन्त जन ।
नम्रता से ताहार स्वभाव अनुक्षण ॥४५
हैहय, नहुष, वेण, नरक, रावण ।
महा-दिग्विजयी शुनियाछ ये ये जन ॥४६
बुझ देखि, कार् गर्व चूर्ण नाहि हये ?
सर्वदा ईश्वर अहङ्कार नाहि सहे ॥४७
एतेके ताहार यत विद्या-अहङ्कार ।
देखिबा एथाइ सब हइब संहार ॥"४८
एत बलि हासि प्रभु सर्व-शिष्य-सङ्गे ।
सन्ध्याकाले गङ्गातीरे आइलेन रङ्गे ॥४९
गङ्गाजल स्पर्श करि गङ्गा नमस्करि ।
वसिलेन गङ्गातीरे गौराङ्ग श्रीहरि ॥५०
अनेक मण्डली हइ सर्व-शिष्यगण ।
वसिलेन चतुर्द्दिगे परम-शोभन ॥५१
धर्म-कथा शास्त्र-कथा अशेष कौतुके ।
गङ्गातीरे वसिया आछेन प्रभु सुखे ॥५२
काहाके ना कहि मने भावेन ईश्वरे ।
"दिग्विजयी जिनिवाङ केमन प्रकारे ?५३
ए विप्रेर हइयाछे महा-अहङ्कार ।
'जगते मोहर प्रतिद्वन्द्वी नाहि आर' ॥५४
सभा-मध्ये जय यदि करिये इहारे ।
मृत-तुल्य हइबेक संसार-भितरे ॥५५
लाघबो विप्रेरे करिबेक सर्व-लोक ।
लुटिबेक सर्वस्व, मरिबे विप्र शोके ॥५६
दुःख ना पाइब विप्र, गर्व हैब क्षय ।
विरले से करिवाङ दिग्विजयी-जय ॥"५७
एइमत ईश्वर चिन्तिते सेइक्षणे ।
दिग्विजयी निशाये आइला सेइ-स्थाने ॥५८
परम-निर्मल निशा पूर्ण-चन्द्रवती ।
किबा शोभा हइया आछेन भागीरथी ॥५९

धानशी राग ॥

हरि बलि गोरा पंहु नाचे बाहु तुलि ।
जग-मन बान्धल करुण बोल बलि ॥ ध्रु

शिष्य-सङ्गे गङ्गातीरे आछेन ईश्वर ।
अनन्त-ब्रह्माण्डे रूप सर्व मनोहर ॥६१
हास्ययुक्त श्रीचन्द्र-वदन अनुक्षण ।
निरन्तर दिव्य-दृष्टि दुइ श्रीनयन ॥६२
मुक्ता जिनि श्रीदशन, अरुण अधर ।
दयामय सुकोमल सर्व-कलेवर ॥६३
सुबलित श्रीमस्तके श्रीचाँचर केश ।
सिंह-ग्रीब, गज-स्कन्ध, बिलक्षण बेश ॥६४
सुप्रकाण्ड श्रीविग्रह, सुन्दर हृदय ।
यज्ञसूत्ररूपे तहि अनन्त-विजय ॥६५
श्रीललाटे ऊर्द्ध्व-सुतिलक मनोहर ।
आजानुलम्बित दुइ श्रीभुज सुन्दर ॥६६
योगपट्ट-छान्दे वस्त्र करिया बन्धन ।
बाम-ऊरु-माझे थुइ दक्षिण चरण ॥६७
करिते आछेन प्रभु शास्त्रेर व्याख्यान ।
'हय' 'नय' करे, 'नय' करेन प्रमाण ॥६८
अनेक मण्डली हइ सर्व-शिष्यगण ।
चतुर्द्दिगे वसिया आछेन सुशोभन ॥६९
अपूर्व देखिया दिग्विजयी सुविस्मित ।
मने भावे "एइ बुझि निमाञि-पण्डित ?" ७०
अलखिते सेइ स्थाने थाकि दिग्विजयी ।
प्रभुर सौन्दर्य्य चा'हे एकदृष्टि हइ ॥७१
शिष्यस्थाने जिज्ञासिला "कि नाम इहान ?"
शिष्य बोले "निमाञि पण्डित ख्याति या'न।।" ७२
तबे गङ्गा नमस्करि सेइ विप्रवर ।
आइलेन ईश्वरेर सभार भितर ॥७३
ताने देखि प्रभु किछु ईषत हासिया ।
वसिते बलिला अति आदर करिया ॥७४
परम-निःशङ्क सेइ, दिग्विजयी आर ।
तभु प्रभु देखिया साध्वस हैल तार ॥७५
ईश्वर-स्वभाव शक्ति एइ मत हय ।
दण्ड देखिते कि बाहु कखन उठय ?७६
सात पाँच कथा प्रभु कहि विप्र-सङ्गे ।
जिज्ञासिते ताँरे किछु आरम्भिला रङ्गे ॥७७
प्रभु कहे "तोमार कवित्वेर नाहि सीमा ।
हेन नाहि, याहा तुमि ना कर' वर्णना ॥७८
गङ्गार महिमा किछु करह पठन ।
शुनिया सभार हउ पाप-विमोचन ॥" ७९
शुनि सेह दिग्विजयी प्रभुर वचन ।
सेइक्षणे करिबारे लागिला वर्णन ॥८०
द्रुत ये लागिला विप्र करिते वर्णना ।
कत-रूपे बोले तार के करिबे सीमा ?८१
कत मेघे शुनि येन करये गर्ज्जन ।
एइ मत कवित्वेर गाम्भीर्य्य पठन ॥८२
जिह्वाय आपनि सरस्वती अधिष्ठान ।
ये बोलये से-इ हये अत्यन्त-प्रमाण ॥८३
मनुष्येर शक्ति ताहा दूषिवेक के ।
हेन विद्यावन्त नाहि बुझिबेक ये ॥८४
सहस्र सहस्र यत प्रभुर शिष्यगण ।
अवाक्य हइला सभे शुनिञा वर्णन ॥८५
'राम राम अद्भुत !' स्मरेण शिष्यगण ।
मनुष्येर एमत कि स्फुरये कथन ?८६
जगते अद्भुत यत शब्द अलङ्कार ।
सेइ बइ कवित्वेर वर्णन नाहि आर ॥८७
सर्व-शास्त्रे महा-बिशारद ये ये जन ।
हेन शब्द ताना बुझिबारेओ बिषम ॥८८
एइमत प्रहर-खानेक दिग्विजयी ।
पढ़े द्रूत वर्णना तथापि अन्त नाहि ॥८९
पढ़ि यदि दिग्विजयी हैला अवसर ।
तबे हासि बलिलेन श्रीगौरसुन्दर ॥९०

"तोमार ये शब्देर ग्रन्थन-अभिप्राय ।
तुमि विने बुझाइले, बुझन ना याय ।।९१
एतेके आपने किछु करह व्याख्यान ।
ये शब्दे ये बोल तुमि से-इ सुप्रमाण ।।"९२
शुनिया प्रभुर वाक्य सर्वमनोहर ।
व्याख्या करिबारे लागिलेन विप्रवर ।।९३
व्याख्या करिलेइ मात्र प्रभु सेइक्षणे ।
दूषिलेन आदि-मध्य-अन्ते तिन स्थाने ।।९४
प्रभु बोले "ए सकल शब्द अलङ्कार ।
शास्त्रमते शुद्ध हैते बिषम अपार ।।९५
तुमि वा दियाछ कोन् अभिप्राय करि ।
बोल देखि ?" कहिलेन गौराङ्ग श्रीहरि ।।९६
एत-बड़ सरस्वतीपुत्र दिग्विजयी ।
सिद्धान्त ना स्फुरे किछु, बुद्धि गेल कहिँ ।।९७
सात पाँच बोले विप्र, प्रबोधिते नारे ।
ये बोलेन, ताहि दोषे' गौराङ्गसुन्दरे ।।९८
सकल प्रतिभा पलाइल कोन् स्थाने ।
आपने ना बुझे विप्र, कि बोले आपने ।।९९
प्रभु बोले "ए थाकुक् पढ़ किछु आर ।"
पढ़ितेओ पूर्ववत् शक्ति नाहि आर ।।१००
कोन् चित्र ताहार सम्मोह प्रभु-स्थाने ?
वेदेओ पायेन मोह याँर विद्यमाने ।।१०१
आपने अनन्त, चतुर्म्मुख, पञ्चानन ।
या'सभार दृष्टचे हये अनन्त भुवन ।।१०२
तानाओ मानेन मोह याँर विद्यमाने ।
कोन् चित्र से विप्रेर मोह प्रभु स्थाने ।।१०३
लक्ष्मी-सरस्वती-आदि यत योगमाया ।
अनन्त-ब्रह्माण्ड मोहे' या'सभार छाया ।।१०४
ताहारा पायेन मोह याँर विद्यमाने ।
अतएव पाछे से थाकेन सर्वक्षणे ।।१०५

वेदकर्त्ता सब मोह पाय याँर स्थाने ।
कोन् चित्र दिग्विजयी-मोह वा ताहाने ?१०
मनुष्ये ए सब कार्य्य असम्भव दढ़ ।
तेजि बलि, तान ए सकल कर्म बड़ ।।१०
मूले यत किछु कर्म करेन ईश्वरे ।
सकल निस्तार-हेतु दुःखित-जीवेरे ।।१०
दिग्विजयी यदि पराभवे प्रवेशिला ।
शिष्यगण हासिबारे उद्यत हइला ।।१०
सभारेइ प्रभु करिलेन निवारण ।
विप्र-प्रति बलिलेन मधुर-वचन ।।११
"आजि चल तुमि शुभ कर' वासा-प्रति ।
कालि विचारिब सब तोमार संहति ।।११
तुमिओ हइला श्रान्त अनेक पढ़िया ।
निशाओ अनेक याय, शुइ थाक गिया ।।"
एइ मत प्रभुर कोमल व्यवसाय ।
याहारे जिनेन सेहो दुःख नाहि पाय ।।११
सेइ नवद्वीपे यत अध्यापक आछे ।
जिनिञाओ सभारे तोषेन प्रभु पाछे ।।११
"चल आजि घरे गिया वसि पुँथि चाह ।
कालि ये जिज्ञासि, ताहा बलिबारे चाह ।।"
जिनिञाओ कारो ना करेन तेज-भङ्ग ।
सभेइ पायेन प्रीत, हेन तान रङ्ग ।।११
अतएव नवद्वीपे यतेक पण्डित ।
सभार प्रभुर प्रति मने बड़ प्रीत ।।११
शिष्यगण-सहित चलिला प्रभु घर ।
दिग्विजयी बड़ हैला लज्जित अन्तर ।।११
दुःखित हइञा विप्र चिन्ते मनेमने ।
"सरस्वती मोरे वर दिलेन आपने ।।११
न्याय, सांख्य, पातञ्जल, मीमांसा-दर्शन ।
वैशेषिक, वेदान्ते निपुण यत जन ।।१

हेन जन ना देखिल संसार भितरे ।
जिनिते कि दाय, मोर सने कक्षा करे ॥१२१
शिशु-शास्त्र व्याकरण पढ़ाये ब्राह्मण ।
से मोरे जिनिल हेन विधिर घटन ॥१२२
सरस्वतीर वरो त अन्यथा देखि हय ।
एहो मोर चित्ते बड़ लागिल संशय ॥१२३
देवीस्थाने मोर बा जन्मिल कोन दोष ।
अतएब हैल मोर प्रतिभा-सङ्कोच ॥१२४
अवश्य इहार आजि बुझिब कारण ।''
एत बलि मन्त्र-जपे वसिला ब्राह्मण ॥१२५
मन्त्र जपि, दुःखे विप्र शयन करिला ।
स्वप्ने सरस्वती विप्र-सम्मुखे आइला ॥१२६
कृपा-दृष्टये भाग्यवन्त-ब्राह्मणेर प्रति ।
कहिते लागिला अति गोप्य सरस्वती ॥१२७
सरस्वती बोलेन ''शुनह विप्रवर !
वेदगोप्य कहि एइ तोमार गोचर ॥१२८
कारो स्थाने भाङ्ग यदि ए सकल कथा ।
तबे तुमि शीघ्र हबे अल्पायु सर्वथा ॥१२९
यार ठाञि तोमार हइल पराजय ।
अनन्त-ब्रह्माण्ड-नाथ तिँहो सुनिश्चय ॥१३०
आमि याँर पादपद्मे निरन्तर दासी ।
सम्मुख हइते आपनाके लज्जा वासि ॥१३१

तथाहि (भा० २।५।१३) नारदं प्रति
ब्रह्मवाक्यम्—
''विलज्जमानया यस्य स्थातुमीक्षापथेऽमुया ।
विमोहिता विकत्थन्ते महाहमिति दुर्द्धियः ॥,,
१३२॥

टीका ।

''मन्मायथेति मायासम्बन्धोक्तेस्तस्या दुर्ज्जयत्वोक्तेश्च तस्यापि किमस्ति संसारः ? नैवेत्याह । मत्कपटमसौ जानातीति यस्य दृष्टिपथे स्थातुं विलज्जमानयेव तस्मिन् स्वकार्य्यमकुर्वत्या अमुया माया विमोहिताः अस्मदादयो दुर्द्धियः अविद्या-धृतज्ञानाः एव केवलं विकत्थन्ते श्लाघन्ते । अनेन ''यद्रूपम्'' इत्यस्य प्रश्नस्योत्तरमुक्तम् ।

अनुवाद ।

श्रीब्रह्मा, नारद के प्रति ब्रह्मतत्त्व कहते हैं - जिनकी दुर्जय माया से मुग्ध होकर मुझको जगद् गुरु करते हैं। वह माया जिनके दृष्टि पथ में अवस्थित होने में लज्जिता होती है, उक्त माया के प्रभाव से विमोहित होकर अविद्यारत दुर्बुद्धि सम्पन्न व्यक्तिगण में एवं मेरा शब्द से आत्मश्लाघा प्रकाश करते हैं, मैं उन भगवान् वासुदेव को प्रणाम करता हुँ।

''आमि से बलिये विप्र! तोमार जिह्वाय ।
ताहान सम्मुखे शक्ति ना वसे आमाय ॥१३३
आमार कि दाय, शेष-देव भगवान् ।
सहस्र-जिह्वाय वेद ये करे व्याख्यान ॥१३४
अज-भव-आदि याँर उपासना करे ।
हेन 'शेष' मोह माने याँहार गोचरे ॥२३५
परब्रह्म नित्य शुद्ध अखण्ड अव्यय ।
परिपूर्ण हइ वैसे सभार हृदय ॥१३६
भक्ति, ज्ञान, विद्या, शुभ अशुभादि यत ।
दृशादृश्य तोमारे बा कहिवाङ कत ॥१३७
सकल वृत्त हय शुन याँहा हैते ।
सेइ प्रभु विप्ररूपे देखिला साक्षाते ॥१३८
आब्रह्मादि यत देख सुख दुःख पाय ।
सकल जानिह विप्र ! उहान आज्ञाय ॥१३९
मत्स्य-कूर्म आदि यत शुन अवतार ।
एइ प्रभु सर्व विप्र ! दुइ नाहि आर ॥१४०
उनि से वराहरूपे क्षिति-स्थापयिता ।
उनि से नृसिंह-रूपे प्रह्लाद-रक्षिता ॥१४१

उनि से वामन-रूपे बलिर-जीवन ।
याँर पाद-नख हैते गङ्गार जनम ।।१४२
उनि से हइया अवतीर्ण अयोध्याय ।
बधिला रावण दुष्ट अशेष-लीलाय ।।१४३
उहाने से वसुदेव-नन्द-पुत्र बलि ।
एबे विप्रपुत्र विद्यारसे कुतूहली ।।१४४
वेदेओ कि जानेन उहान अवतार !
जानाइले जानेन, अन्यथा शक्ति कार् ?१४५
यत किछु मन्त्र तुमि जपिले आमार ।
दिग्विजयी-पद फल ना हय ताहार ।।१४६
मन्त्रेर ये फल ताहा एबे से पाइला ।
अनन्त-ब्रह्माण्ड-नाथ साक्षाते देखिला ।।१४७
याह शीघ्र विप्र ! तुमि उहान चरणे ।
देह गिया समर्पण करह उहाने ।।१४८
स्वप्न-हेन ना मानिह ए सब वचन ।
मन्त्र-बशे कहिलाङ वेद सङ्गोपन ।।''१४९
एत बलि सरस्वती हैला अन्तर्द्धान ।
जागिलेन विप्रवर महा-भाग्यवान् ।।१५०
जागियाइ मात्र विप्रवर सेइक्षणे ।
चलिलेन अति ऊषःकाले प्रभु-स्थाने ।।१५१
प्रभुरे आसिया विप्र दण्डवत् हैला ।
प्रभुओ विप्रेरे कोले करिया तुलिला ।।१५२
प्रभु बोले''केने भाइ ! एकि व्यवहार ?''
विप्र बोले''कृपादृष्टि येहेन तोमार ।।' १५३
प्रभु बोले''दिग्विजयी हइया आपने ।
तबे तुमि आमारे एमत कर' केने ?''१५४
दिग्विजयी बोलेन ''शुनह विप्रराज !
तोमा' भजिलेइ सिद्ध हय सर्व-काज ।।१५५
कलियुगे विप्ररूपे तुमि नारायण ।
तोमारे चिनिते शक्ति धरे कोन् जन ?१५६
तखनेइ मोर चित्ते हइल संशय ।
तुमि जिज्ञासिले मोर वाक्य ना स्फुरय ।।१५७
तुमि ये अगर्व सर्व-ईश वेदे कहे ।
ताहा सत्य देखिल, अन्यथा कभु नहे ।।१५८
तिनबार आमारे करिला पराभव ।
तथापि आमार तुमि राखिला गौरव ।।१५९
एहो कि ईश्वरशक्ति विने अन्य हय ?
अतएब तुमि नारायण सुनिश्चय ।।१६०
गौड़, त्रिहुत, दिल्ली, काशी आदि करि ।
गुजरात, विजयनगर, काञ्ची-पुरी ।।१६१
हेलङ्ग, तेलङ्ग, ओड्र, देश आर कत ।
पण्डितेर समाज संसारे आछे यत ।।१६२
दूषिब आमार वाक्य से थाकुक् दूरे ।
बुझिबेइ कोन जन शक्ति नाहि धरे ।।१६३
हेन आमि तोमा'स्थाने सिद्धान्त करिते ।
ना पारिल, सर्वबुद्धि गेल कोन भिते ।।१६४
एहो कर्म तोमार आश्चर्य्य किछु नहे ।
'सरस्वतीपति तुमि' सेइ देवी कहे ।।१६५
बड़ शुभ-लग्ने आइलाम नवद्वीपे ।
तोमा, देखिलाङ डुबिया भव-कूपे ।।१६६
अविद्या-वासना-बन्धे मोहित हइया ।
बेड़ाङ पासरि तत्त्व आपना बञ्चिया ।।१६७
दैव-भाग्ये पाइलुँ तोमार दरशन ।
एवे शुभदृष्ट्ये मोरे करह मोचन १६८
पर-उपकार-धर्म स्वभाव तोमार ।
तोमा बइ शरण्य दयालु नाहि आर ।।१६९
हेन उपदेश मोरे कर' महाशय !
आर येन दुर्वासना मोर चित्ते नय ।।''१७०
एइमत काकुवाद अनेक करिया ।
स्तुति करे दिग्विजयी अति नम्र हैया ।।१७१

शुनिया विप्रेर काकु श्रीगौरसुन्दर ।
हासिया ताहाने किछु कहिला उत्तर ॥१७२
"शुन विप्रवर तुमि महा-भाग्यवान् ।
सरस्वती याहार जिह्वाय अधिष्ठान ॥१७३
'दिग्विजय करिब' विद्यार कार्य्य नहे ।
ईश्वरे भजिते, से विद्यार सत्य कहे ॥१७४
मनदिया बुझ, देह छाड़िया चलिले ।
धन बा पौरुष सङ्गे केहो नाहि चले ॥१७५
एतेके महान्त गण सर्व परिहरि ।
करेन ईश्वरसेवा दृढ़-चित्त करि ॥१७६
एतेके छाड़िया विप्र ! सकल जञ्जाल ।
श्रीकृष्णचरण गिया भजह सकाल ॥१७७
यावत मरण नाहि उपसन्न हय ।
तावत सेवह कृष्ण करिया निश्चय ॥१७८
से-इ विद्यार फल जानिह निश्चय ।
'कृष्णपादपद्मे यदि चित्तवृत्ति हय' ॥१७९
महा-उपदेश एइ कहिल तोमारे ।
'सबे विष्णु-भक्ति सत्य अनन्त संसारे ॥'' १८०
एतबलि महाप्रभु सन्तोषित हैया ।
आलिङ्गन करिलेन विप्रेरे चापिया ॥१८१
पाइया वैकुण्ठनायकेर आलिङ्गन ।
विप्रेर हइल सर्व-बन्ध-विमोचन ॥१८२
प्रभु बोले "विप्र ! सब दम्भ परिहरि ।
भज गिया कृष्ण, सर्वभूते दयाकरि ॥१८३
ये किछु तोमारे कहिलेन सरस्वती ।
ताहा पाछे विप्र ! आर कह काहा'प्रति ॥१८४
वेदगुह्य कहिले हय परमायु-क्षय ।
परलोके तार मन्द जानिह निश्चय ॥'' १८५
पाइया प्रभुर आज्ञा सेइ विप्रवर ।
प्रभुरे करिया दण्ड-प्रणाम विस्तर ॥१८६
पुनःपुन पादपद्म करिया बन्दन ।
महा-कृतकृत्य हइ चलिला ब्राह्मण ॥१८७
प्रभुर आज्ञाय भक्ति, विरक्ति विज्ञान ।
सेइक्षणे विप्रदेहे हैला अधिष्ठान ॥१८८
कोथा गेल ब्राह्मणेर दिग्विजयी-दम्भ ।
तृण हैते अधिक हइला विप्र नम्र ॥१८९
हस्ती, घोड़ा, दोला धन यतेक सम्भार ।
पात्रसात् करिया सर्वस्व आपनार ॥१९०
चलिलेन दिग्विजयी हइया असङ्ग ।
हेन मते श्रीगौराङ्गसुन्दरेर रङ्ग ॥१९१
ताहान कृपार एइ स्वाभाविक धर्म ।
राज्यपद छाड़ि करे भिक्षुकेर कर्म ॥१९२
कलियुगे तार साक्षी श्रीदवीरखास ।
राज्यसुख छाड़ि यार अरण्ये विलास ॥१९३
ये विभव निमित्त जगते काम्य करे ।
पाइयाओ कृष्णदासे ताहा परिहरे ॥१९४
तावत राज्यादि-पद 'सुख' करि माने ।
भक्तिसुख-महिमा यावत नाहि जाने ॥१९५
राज्यादिसुखेर कथा से थाकुक् दूरे ।
मोक्षसुख अल्प माने कृष्ण-अनुचरे ॥१९६
ईश्वरेर शुभदृष्टि विना किछु नहे ।
अतएब ईश्वरेर भजन वेदे कहे ॥१९७
हेनमते दिग्विजयी पाइला मोचन ।
हेन गौरसुन्दरेर अद्भुत कथन ॥१९८
दिग्विजयी जिनिलेन श्रीगौरसुन्दरे ।
शुनिलेन इहा सब नदीया-नगरे ॥१९९
सकल-लोकेर हैल महाश्चर्य्य-ज्ञान ।
"निमाञि-पण्डित हय बड़ विद्यावान ॥२००
दिग्विजयी हारिया चलिला यार ठाञि ।
एतबड़ पण्डित आर कोथा शुनि नाञि ॥२०१

सार्थक करेन गर्व निमाञि-पण्डित ।
एबे से ताहान विद्या हइल विदित ॥''२०२
केहो बोले "ए ब्राह्मण यदि न्याय पढ़े ।
भट्टाचार्य्य हय तबे, कथन ना नड़े ॥''२०३
केहोकेहो बोले "भाइ ! मिलि सर्वजने ।
'बादिसिंह' बलिया पदवी दिब ताने ॥''२०४
हेन से ताँहार अति मायार बड़ाञि ।
एत देखियाओ जानिबारे शक्ति नाञि ॥२०५
एइमत सर्व नवद्वीपे सर्वजने ।
प्रभुर सत्कीर्त्ति सभे घोषे सर्वक्षणे ॥२०
नवद्वीपवासीर चरणे नमस्कार ।
ए सकल लीला देखिबारे शक्ति यार ॥२०
ये शुनये गौराङ्गेर दिग्विजयी जय ।
कोथाओ ताहान पराभब नाहि हय ॥२०
विद्यारस गौराङ्गेर अति-मनोहर ।
इहा येइ शुने, हय ताँर अनुचर ॥२०
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥२१

इति श्रीचैतन्यभागवते आदिखण्डे दिग्विजयी-विमोचनं नाम नवमोऽध्यायः ॥



दशम अध्याय

जयजय महाप्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
जय नित्यानन्द-प्रिय नित्य-कलेवर ॥१
जयजय श्रीप्रदुयम्नमिश्रेर जीवन ।
जयजय श्रीपरमानन्दपुरीर प्राण धन ॥२
जयजय सर्ववैष्णवेर धन प्राण ।
कृपादृष्ट्ये कर' प्रभु सर्वजीवे त्राण ॥३
आदिखण्ड-कथा भाइ ! शुन एकमने ।
विप्ररूपे कृष्ण विहरिलेन येमने ॥४
हेनमते वैकुण्ठनायक सर्वक्षण ।
विद्यारसे विहरेन लइ शिष्यगण ॥५
सर्वनवद्वीपे प्रति नगरे नगरे ।
शिष्यगण-सङ्गे विद्यारसे क्रीड़ा करे ॥६
सर्वनवद्वीपे सर्वलोके हैल ध्वनि ।
'निमाञि-पण्डित अध्यापक शिरोमणि' ॥७
बड़बड़ विषयी सकल दोला हैते ।
नामिया करेन नमस्कार बहुमते ॥८
प्रभु देखि-मात्र जन्मे सभार साध्वस ।
नवद्वीपे हेन नाहि, ये ना हये वश ॥९
नवद्वीपे यारा यत धर्म कर्म करे ।
भोज्य वस्त्र अवश्य पाठान प्रभु-घरे ॥१०
प्रभुओ परम व्ययी ईश्वर-व्यभार ।
दुःखितेरे निरवधि देन पुरस्कार ॥११
दुःखिते देखिले प्रभु बड़ दया करि ।
अन्न वस्त्र कपर्द्द देन गौर-हरि ॥१२
निदवधि अतिथि आइसे प्रभु-घरे ।
यार येन योग्य प्रभु देन सवाकारे ॥१३
कोन दिन सन्न्यासी आइसे दश विश ।
सभा' निमन्त्रेन प्रभु हइया हरिष ॥१४

सेइक्षणे कहि पाठायेन जननीरे।
कुड़ि सन्न्यासीर भिक्षा भाट करिबारे ॥१५
घरे किछु नाञि, आइ चिन्ते मनेमने ।
"कुड़ि सन्न्यासीर भिक्षा हइब केमने ?"१६
चिन्तितेइ हेन नाहि जानि कोन् जने ।
सकल सम्भार आनि देइ सेइ-क्षणे ॥१७
तबे लक्ष्मी-देवी गिया परम-सन्तोषे ।
रान्धेन विशेष तवे प्रभु आसि बसे ॥१८
सन्न्यासिगणेरे प्रभु आपने बसिया ।
तुष्ट करि पाठायेन भिक्षा कराइया ॥१९
एइमत यतेक अतिथि आसि हये ।
सभारेइ जिज्ञासा करेन कृपामये ॥२०
गृहस्थेरे महाप्रभु शिखायेन धर्म ।
"अतिथिर सेवा गृहस्थेर मूल कर्म ॥२१
गृहस्थ हइया यदि आतिथ्य ना करे ।
पशु पक्षी हइते अधम बलि तारे ॥२२
तथाहि महाभारते मोक्षपर्वाध्याये शान्तिपर्वणि (१९१।२१)

अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात् प्रतिनिवर्त्तते ।
स तस्मै दुष्कृतिं दत्त्वा पुण्यमादाय गच्छति ॥२३

टीका ।

अतिथिः यस्य गृहात् भग्नाशः निराशः सन् प्रतिनिवर्त्तते प्रत्यावर्त्तते परांमुखः प्रतिष्ठते' स अतिथिः तस्मै गृहस्थाय निजदुष्कृतिम् आचरितं पापकर्मफलं दत्त्वा तस्य गृहस्थस्य सकलां सुकृतिं गृहीत्वा गच्छति ।

अनुवाद ।

अतिथि अन्नादि प्राप्त न करके जिस के घर से निराश होकर चला जाता हैं, वह अतिथि उक्त गृहस्थ को निज समस्त दुष्कृति प्रदान कर चला जाता है, एवं उसका समस्त पुण्य ले जाता है।

यार वा ना थाके किछु पूर्वादृष्ट-दोषे ।
सेहो तृण जल भूमि दिबेक सन्तोषे ॥२४

तथाहि (मनुसंहितायां ३।१०१)—

"तृणादि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता ।
एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥"२५

टीका ।

"तृणानीति । अन्नासम्भवे पुनस्तृण-विश्रामभूमि-पाद-प्रक्षालनाद्यर्थजल-प्रियवचनान्यपि धार्मिक-गृहेष्वातिथ्यर्थं न कदाचित् उच्छिद्यन्ते,-अवश्य-देयानीति विधीयते। तृणग्रहणं शयनीयोप लक्षणार्थम् ।

दरिद्रता निबन्धन अन्नप्रदान करने में असमर्थ होने परभी अतिथि के उपवेशन निमित्त तृणासन, विश्राम हेतु भूमि, पाद प्रक्षालन जन्य जल एवं प्रियवचन का अभाव धार्मिक के घर में कभी भी नहीं होता है।

',सत्यवाक्य कहिबेक करि परिहार ।
तथापि अतिथि शून्य ना हय ताहार ॥२६
अकैतबे चित्त-सुखे यार येन शक्ति ।
ताहा करिलेइ बलि 'अतिथिर भक्ति' ॥"२७
अतएब अतिथिरे आपने-ईश्वरे ।
जिज्ञासा करेन अति परम-आदरे ॥२८
सेइ सब भिक्षुक परम-भाग्यवान् ।
लक्ष्मी-नारायण यारे करे अन्न-दान ॥२९
यार अन्ने ब्रह्मादिर आशा अनुक्षण ।
हेन से अद्भुत, ताहा खाय ये-ते-जन ॥३०
केहो केहो इतिमध्ये कहे अन्य-कथा ।
"से अन्नेर अन्य योग्य ना हय सर्वथा ॥३१
ब्रह्मा-शिव-शुक-व्यास-नारदादि कार ।
सुर-सिद्ध-आदि यत स्वच्छन्द-विहारी ॥३२
लक्ष्मी-नारायण अवतीर्ण नवद्वीपे ।
जानि सभे आइसेन भिक्षुकेर रूपे ॥३३
अन्यथा से-स्थाने याइबार शक्ति कार ।
ब्रह्मा-आदि विने कि से अन्य पाये आर ?"३४

केहो बोले "दुःखित तारिते अवतार ।
सर्वमते दुःखितेर करेन निस्तार ॥३५
ब्रह्मादि देवता ताँर अङ्ग प्रति-अङ्ग ।
सर्वथा ताँहारा ईश्वरेर नित्य सङ्ग ॥३६
तथापि प्रतिज्ञा तान एइ अवतारे ।
'ब्रह्मादि-दुर्ल्लभ भो दिब सकल जीवेरे' ॥३७
अतएब दुःखितेरे ईश्वर आपने ।
निजगृहे अन्न देन निस्तार-कारणे ॥"३८
एकेश्वर लक्ष्मीदेवी करेन रन्धन ।
तथापिह परम सन्तोषयुक्त मन ॥३९
लक्ष्मीर चरित्र देखि शची भाग्यवती ।
दण्डे दण्डे आनन्द विशेष बाढ़े अति ॥४०
ऊषःकाल हैते लक्ष्मी यत गृहकर्म ।
आपने करेन सब, से-इ ताने धर्म ॥४१
देवगृहे करेन से स्वस्तिकमण्डली ।
शङ्ख-चक्र लिखेन हइया कुतूहली ॥४२
गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, सुवासित जल ।
ईश्वर पूजार सज्ज करेन सकल ॥४३
निरवधि तुलसीर करेन सेवन ।
ततोधिक शचीर सेवाय तान मन ॥४४
लक्ष्मीर चरित्र देखि श्रीगौरसुन्दर ।
मुखे किछु ना बोलेन, सन्तोष अन्तर ॥४५
कोनदिन लइ लक्ष्मी प्रभुर चरण ।
वसिया थाकेन पादमूले अनुक्षण ॥४६
अद्भुत देखेन शची पुत्रपदतले ।
महा-ज्योतिर्मय अग्निपुञ्ज शिखा ज्वले ॥४७
कोनदिन महा पद्मगन्ध शची आइ ।
घरे द्वारे सर्वत्र पायेन, अन्त नाइ ॥४८
हेनमते लक्ष्मी-नारायण नवद्वीपे ।
केहो नाहि चिनेन आछेन गूढ़रूपे ॥४९

तबे कथोदिने इच्छामय भगवान् ।
बङ्गदेश देखिते हइल इच्छा तान ॥५०
तबे प्रभु जननीरे बलिलेन आनि ।
"कथोदिन प्रवास करिब माता! आमि ॥"
लक्ष्मी-प्रति बलिलेन श्रीगौरसुन्दर ।
आइर सेवन करिबारे निरन्तर ॥५२
तबे प्रभु कथो आप्त शिष्यवर्ग लैया ।
चलिलेन बङ्गदेशे हरषित हैया ॥५३
ये ये जन देखे प्रभु चलिया याइते ।
से-इ आर दृष्टि नाहि पारे सम्बरिते ॥५४
स्त्रीलोके देखिया बोले "हेन पुत्र यार ।
धन्य तार जन्म, तार पा'ये नमस्कार ॥५५
येबा भाग्यवती हेन पाइलेन पति ।
स्त्रीजन्म सार्थक करिलेन सेइ सती ॥"५६
एइमत पथे यत देखे स्त्री-पुरुषे ।
पुनःपुन सभे व्याख्या करेन सन्तोषे ॥५७
वेदेओ करेन काम्य ये प्रभु देखिते ।
ये-ते-जने प्रभु देखे तान कृपा हैते ॥५८
हेनमते श्रीगौरसुन्दर धीरेधीरे ।
कथोदिने आइलेन पद्मावती-तीरे ॥५९
पद्मावतीनदीर तरङ्गशोभा अति ।
उत्तम पुलिन-वन, जल बहु तथि ॥६०
देखि पद्मावती प्रभु महा-कुतूहले ।
गणसह स्नान करिलेन तान जले ॥६१
भाग्यवती पद्मावती सेइ दिन हैते ।
योग्य हैला सर्व-लोक पवित्र करिते ॥६२
पद्मावती-नदी अति देखिते सुन्दर ।
तरङ्ग पुलिन स्रोत अति मनोहर ॥६३
पद्मावती देखि प्रभु परम हरिषे ।
सेइस्थाने रहिलेन तान भाग्यबशे ॥६४

येन क्रीड़ा करिलेन जाह्नवीर जले ।
शिष्यगण-सहिते परम कुतूहले ॥६५
सेइ भाग्य इबे पाइलेन पद्मावती ।
प्रतिदिन प्रभु जलक्रीड़ा करे तथि ॥६६
बङ्गदेशे महाप्रभु हइला प्रवेश ।
अद्यापिह सेइ भाग्ये धन्य बङ्गदेश ॥६७
पद्मावतीतीरे रहिलेन गौरचन्द्र ।
शुनि सर्वलोक बड़ हइल आनन्दित ॥६८
"निमाञि-पण्डित अध्यापक-शिरोमणि ।
आसिया आछेन" सर्वदिगे हैल ध्वनि ॥६९
भाग्यवन्त यत आछे सकल ब्रह्मण ।
उपायन-हस्ते आइलेन सेइ-क्षण ॥७०
सभे आसि प्रभुरे करिया नमस्कार ।
बलिते लागिला अति करि परिहार ॥७१
"आमा' सभाकार महा-भाग्योदय हैते ।
तोमार विजय आसि हैल ए-देशेते ॥७२
अर्थ-वित्त लइ सर्व-गोष्ठीर सहिते ।
यार स्थाने नवद्वीपे याइब पड़िते ॥७३
हेन निधि अनायासे आपने ईश्वरे ।
आनिया दिलेन आमा' सभार दुयारे ॥७४
मूर्त्तिमन्त तुमि वृहस्पति-अवतार ।
तोमार सदृश अध्यापक नाहि आर ॥७५
वृहस्पति तोमार दृष्टान्त योग्य नहे ।
ईश्वरेर अंश तुमि, हेन मने लये ॥७६
अन्यथा ईश्वर विने एमन पाण्डित्य ।
अन्येर ना हय कभु, लये चित्त-वृत्त ॥७७
सभे एक निवेदन करिये तोमारे ।
विद्या दान कर' किछु आमा' सभाकारे ॥७८
उद्देशे आमरा सभे तोमार टिप्पनी ।
लइ पढ़ि पढ़ाइ शुनह द्विजमणि ।॥७९

साक्षतेओ शिष्य कर' सभाकारे ।
थाकुक तोमार कीर्त्ति सकल संसारे ॥"८०
हासि प्रभु सभा-प्रति करिया आश्वास ।
कथो-दिन बङ्गदेशे करिला विलास ॥८१
सेइ भाग्ये अद्यापिह सर्वबङ्गदेशे ।
श्रीचैतन्य-सङ्कीर्त्तन करे स्त्री-पुरुषे ॥८२
मध्येमध्ये मात्र कथो पापिगण गिया ।
लोक-नष्ट करे आपनारे लओयाइया ॥८३
उदर-भरण लागि पापिष्ठ सकले ।
'रघुनाथ' करि आपनारे केहो बोले ॥८४
कोन पापिसब छाड़ि कृष्णसङ्कीर्त्तन ।
आपनारे गाओयाय कत बा भूतगण ॥८५
देखितेछि दिने तिन अवस्था याहार ।
कोन् लाजे आपनारे गाओयाय से छार ॥८६
राढ़े आर एक महा ब्रह्मदैत्य आछे ।
अन्तरे राक्षस, विप्र-काच मात्र काचे ॥८७
से पापिष्ठ आपनारे बोलये 'गोपाल' ।
अतएव तारे सभे बोलेन 'शियाल' ॥८८
श्रीचैतन्यचन्द्र विने अन्येरे ईश्वर ।
ये अधमे बोले सेइ छार शोच्यतर ॥८९
दुइ बाहु तुलि एइ बलि सत्य करि ।
"अनन्तब्रह्माण्डनाथ—श्रीचैतन्यहरि ॥९०
याँर नाम-स्मरणे समस्त-बन्ध-क्षय ।
याँर दास-स्मरणेओ सर्वत्रे विजय ॥९१
सकल-भुवने देख याँर यश गाय ।
बिपथ छाड़िया भज हेन प्रभु-पा'य ॥"९२
हेनमते श्रीवैकुण्ठनाथ गौरचन्द्र ।
विद्यारसे करे प्रभु बङ्गदेशे रङ्ग ॥९३
महा-विद्या-गोष्ठी प्रभु करिलेन बङ्ग ।
पद्मावती देखि प्रभु भुलिलेन रङ्ग ॥९४

सहस्र सहस्र शिष्य हइल तथाइ ।
हेन नाहि जाने, ये पढ़ये कोन् ठाँइ ॥९५
शुनि सब बङ्गदेशी आइसे धाइया ।
निमाञि-पण्डित-स्थाने पढ़िवाङ गिया ॥९६
हेन कृपादृष्टचे प्रभु करेन व्याख्यान ।
दुइमासे सभेइ हइला विद्यावान् ॥९७
कत शतशत जन पदवी लभिया ।
घरे याय, आर कत आइसे शुनिया ॥९८
एइमते विद्यारसे वैकुण्ठेर पति ।
विद्यारसे बङ्गदेशे करिलेन स्थिति ॥९९
एथा नवद्वीपे लक्ष्मी प्रभुर विरहे ।
अन्तरे दुःखिता देवी कारे नाहि कहे ॥१००
निरवधि करे देवी आइर सेवन ।
प्रभु गियाछेन हैते नाहिक भोजन ॥१०१
नामेरे से अन्न-मात्र परिग्रह करे ।
ईश्वरबिच्छेदे बड़ दुःखिता अन्तरे ॥१०२
एकेश्वर सर्वरात्रि करेन क्रन्दन ।
चित्ते स्वास्थ्य लक्ष्मी ना पायेन कोन-क्षण १०३
ईश्वर विच्छेद लक्ष्मी ना पारि सहिते ।
इच्छा करिलेन प्रभु समीपे याइते ॥१०४
निज प्रतिकृति देह थुइ पृथिवीते ।
चलिलेन प्रभुपाशे अति-अलक्षिते ॥१०५
प्रभुपादपद्म लक्ष्मी करिया हृदय ।
ध्याने गङ्गातीरे देवी करिला विजय ॥१०६
एखाने शचीर दुःख ना पारि कहिते ।
काष्ठ द्रवे आइर से क्रन्दन शुनिते ॥१०७
से सकल दुःख रस ना पारि वर्णिते ।
अतएव किछु कहिलाङ सूत्रमते ॥१०८
साधुगण शुनि बड़ हइला दुःखित ।
सभे आसि कार्य्य करिलेन यथोचित ॥१०९
ईश्वर थाकिया कथोदिन बङ्गदेशे ।
आसिते हइल इच्छा निज-गृहवासे ॥११०
तबे प्रभु गृहे आसिबेन हेन शुनि ।
यार येन शक्ति सभे दिला धन आनि ॥१११
सुवर्ण, रजत, जलपात्र, दिव्यासन ।
सुरङ्ग-कम्बल, बहु-प्रकार वसन ॥११२
उत्तम-पदार्थ यत छिल यार घरे ।
सभेइ सन्तोषे आनि दिलेन प्रभुरे ॥११३
प्रभुओ सभार प्रति कृपादृष्टि करि ।
परिग्रह करिलेन गौराङ्ग-श्रीहरि ॥११४
सन्तोषे सभार स्थाने हइया विदाय ।
निज-गृहे चलिलेन श्रीगौराङ्ग-राय ॥११५
अनेक पढ़ुया सब प्रभुर सहिते ।
चलिलेन प्रभु-स्थाने तथाइ पढ़िते ॥११६

"हेनइ समये एक सुकृति ब्राह्मण ।
अति सारग्राही, नाम—मिश्र तपन ॥
साध्य-साधन-तत्त्व निरूपिते नारे ।
हेन जन नाहि तथा जिज्ञासिबे तारे ॥
निज-इष्ट-मन्त्र सदा जपे रात्र-दिने ।
सोयास्ति नाहिक चित्ते साधनाङ्ग विने ॥
भाबिते चिन्तिते एक-दिन रात्रिशेषे ।
सुस्वप्न देखिल द्विज निज भाग्यवशे ॥
सम्मुखे आसिया एक देव मूर्त्तिमान् ।
ब्राह्मणेरे कहे गुप्त चरित्र-आख्यान ॥
"शुन शुन ओहे द्विज परम सुधीर !
चिन्ता ना करिह आर, मन कर स्थिर ॥
निमाञि-पण्डित-पाश करह गमन ।
तिहोँ कहिबेन तोमा' साध्य-साधन ॥
मनुष्य नहेन तिहोँ—नर नारायण ।
नर-रूपे लीला ताँर जगत-कारण ॥

हेनमते प्रभु बङ्गदेश धन्य करि।
निज-गृहे आइलेन गौराङ्ग-श्रीहरि ॥११७

व्यवहारे अर्थ-वित्त अनेक लइया।
सन्ध्याकाले गृहे प्रभु उत्तरिलासिया ॥११८

वेदगोप्य ए सकल ना कहिबे का'रे।
कहिले पाइबे दुःख जन्म-जन्मान्तरे ॥"
अन्तर्द्धान हैला देव, ब्राह्मण जागिला।
सुस्वप्न देखिया विप्र कान्दिते लागिला ॥
अहो भाग्य मानि पुन चेतन पाइया।
सेइक्षणे चलिलेन प्रभु धेयाइया ॥
वसिया आछेन यथा श्रीगौरसुन्दर।
शिष्यगण सहित परम मनोहर ॥
आसिया पड़िला विप्र प्रभुर चरणे।
योड़हस्ते दाण्डाइल सभार सदने ॥
विप्र बोले "आमि अति दीन हीन जन।
कृपादृष्टेचे कर मोर संसार मोचन ॥
साध्य-साधन-तत्त्व किछुइ ना जानि।
कृपा करि आमा' प्रति कहिबा आपनि ॥
विषयादि-सुख मोर चित्ते नाहि लय।
किसे जुड़ाइबे प्राण, कह दयामय ॥"
प्रभु बोले "विप्र! तोमार भाग्येर कि कथा।
कृष्ण भजिबारे चाइ सेइ से सर्वथा ॥
ईश्वर भजन अति दुर्गम अपार।
युगधर्म स्थापियाछे करि परचार ॥
चारि युगे चारि धर्म राखि क्षितितले।
स्वधर्म स्थापिया प्रभु निज-स्थाने चले ॥

तथाहि श्रीगीतायां—(४।७)

"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥"

अनुवाद।

साधुओं के परित्राण के निमित्त एवं दुष्कृतकारि का बिनाश करने के निमित्त, तथा धर्मसंस्थापन हेतु मैं युग युग, में अवतीर्ण होता हूँ।

तथाहि श्रीभागवते (१०।८।१३)—

"आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः॥"

अनुवाद।

श्रीगर्ग मुनिने कहा—हे नन्द! सत्यादि प्रतियुग में ही यह बालक प्रकट होता है। इनके शुक्ल, रक्त, पीत वर्णत्रय विगत हुये हैं, सम्प्रति द्वापर में कृष्ण वर्ण में अवतीर्ण है।

"कलि-युग-धर्म हय नाम सङ्कीर्त्तन।
चारि युगे चारि धर्म जीवेर कारण ॥

तथाहि श्रीभागवते (१२।३।५२)

"कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः।
द्वापरे परिचर्य्यायां कलौ तद्धरिकीर्त्तनात्॥"

अनुवाद।

सत्ययुग में ध्यान, त्रेता में यज्ञ द्वापर में अर्चना से जिस वस्तु की प्राप्ति होती है, कलि में श्रीकेशव कीर्त्तन से ही उक्त फल लाभ होता है।

"अतएब कहिलेन नामयज्ञ सार।
आर कोन धर्म कैले, नाहि हय पार ॥
रात्रि दिन नाम लय खाइते-शुइते।
ताहार महिमा वेदे नाहि पारे दिते ॥
शुन मिश्र! कलियुगे नाहि तप यज्ञ।
येइ जन भजे कृष्ण, तार महाभाग्य ॥
अतएब गृहे तुमि कृष्ण भज गिया।
कुटिनाटि परिहरि एकान्त हइया ॥
साध्य-माधन-तत्त्व ये किछु सकल।
हरिनामसङ्कीर्त्तने मिलिबे सकल ॥

दण्डवत् करि प्रभु जननी चरणे ।
अर्थ-वित्त सकल दिलेन तान स्थाने ॥११९
सेइक्षणे प्रभु शिष्यगणेर सहिते ।
चलिलेन शीघ्र गङ्गा-मज्जन करिते ॥१२०
सेइक्षणे गेला आइ करिते रन्धन ।
अन्तरे दुःखिता लइ सर्व-परिजन ॥१२१
शिक्षा-गुरु प्रभु सर्व-गणेर सहिते ।
गङ्गारे हइला दण्डवत बहुमते ॥१२२
कथोक्षण जाह्नवीते करि जलखेला ।
स्नान करि गङ्गा देखि गृहेते आइला ॥१२३
तबे प्रभु यथोचित नित्यकर्म करि ।
भोजने बसिला गिया गौराङ्ग-श्रीहरि ॥१२४

तथाहि श्रीनारदीये—

"हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥"

कलि में हरिनाम, हरिनाम, हरिनाम ही है, एतद्व्यतीत अपर आश्रय नहीं हैं।

अथ महामन्त्र ।—

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥"
"एइ श्लोक नाम बलि लओ महामन्त्र ।
षोल नाम बत्रिश अक्षर एइ तन्त्र ॥
साधिते साधिते यबे प्रेमाङ्कुर हबे ।
साध्य-साधन तत्त्व जानिबा से तबे ॥"
प्रभुर श्रीमुखे शिक्षा शुनि विप्रवर ।
पुनःपुन प्रणाम करये बहुतर ॥
मिश्र कहे "आज्ञा हय आमि सङ्गे आसि ।"
प्रभु कहे "तुमि शीघ्र याओ वाराणसी ॥
तथाइ आमार सङ्गे हइबे मिलन ।
कहिब सकल तत्त्व साध्य साधन ॥"

सन्तोषे वैकुण्ठनाथ भोजन करिया ।
विष्णुगृह द्वारे प्रभु बसिला आसिया ॥१२
तबे आप्तवर्ग आइलेन सम्भाषिते ।
सभेइ बेढ़िया बसिलेन चारिभिते ॥१२
सभार सहित प्रभु हास्य-कथा-रङ्गे ।
कहिलेन येनमत आछिलेन बङ्गे ॥१२
बङ्गदेशि-वाक्य अनुकरण करिया ।
बाङ्गालेरे कदर्थेन हासिया-हासिया ॥१२
दुःखरस हइबेक लागि आप्तगण ।
लक्ष्मीर विजय केहो ना करेन कथन ॥१२
कथोक्षण थाकिया सकल आप्तगण ।
विदाय हइया गेला यार ये भवन ॥१३
बसिया करेन प्रभु ताम्बूल-भोजन ।
नाना-हास्य-परिहास करेन कथन ॥१३
शची-देवी अन्तरे दुःखिता हइ घरे ।
काछे नाहि आइसेन पुत्रेर गोचरे ॥१३
आपनि चलिला प्रभु जननी सम्मुखे ।
दुःखित-वदन प्रभु जननीरे देखे ॥१३
जननीरे बोले प्रभु मधुर बचन ।
"दुःखिता तोमारे माता! देखि कि कारण ॥१

एत बलि प्रभु तारे दिला आलिङ्गन ।
प्रेमे पुलकित अङ्ग हइल ब्राह्मण ॥
पाइया वैकुण्ठनायकेर आलिङ्गन !
परानन्द-सुख पाइल ब्राह्मण तखन ॥
बिदाय-समये प्रभुर चरणे धरिया ।
सुस्वप्नवृत्तान्त कहे गोपने बसिया ॥
शुनि प्रभु कहे "सत्य ये हय उचित ।
आर कारो ना कहिबा ए सब चरित ॥
पुन निषेधिल प्रभु सयत्न करिया ।
हासिया उठिल शुभ क्षण लग्न पाञा ॥"

कुशले आइलुँ आमि दूर देश हैते ।
कोथा तुमि मङ्गल करिबा भाल मते ॥१३५
आरे तोमा' देखि अति-दुःखित-वदन ।
सत्य कह देखि माता! इहार कारण ॥"१३६
शुनिया पुत्रेर वाक्य आइ अधोमुखे ।
कान्दे मात्र, उत्तर ना करे किछु दुःखे ॥१३७
प्रभु बोले"माता! आमि जानिल सकल ।
तोमार बधूर किछु शुनि अमङ्गल ॥"१३८
तबे सभे कहिलेन "शुनह पण्डित !
तोमार ब्राह्मणी गङ्गा पाइला निश्चित ॥"१३९
पत्नीर विजय शुनि गौराङ्ग-श्रीहरि ।
क्षणेक रहिला किछु हेट माथा करि ॥१४०
प्रियार विरह-दुःख करिया स्वीकार ।
तूष्णी हइ रहिलेन सर्व-वेद-सार ॥१४१

तथाहि (भा० ८।१६।१९)—
"कस्य के पति-पुत्राद्या
मोह एव हि कारणम् ॥"१४२

अनुवाद ।

पति पुत्रादि कौन किस को होते हैं, अर्थात् कोई किसीका नहीं है, उक्त प्रतीति के प्रति मोह ही एकमात्र कारण है ।

लोकानुकरण-दुःख क्षणेक करिया ।
कहिते लागिला निज धैर्य्य-चित्त हैया ॥१४३
प्रभु बोले"माता! दुःख भाब कि कारणे ।
भवितव्य ये आछे, से घुचिब केमने ॥१४४
एइमत काल-गति—केहो कारो नहे ;
अतएव संसार 'अनित्य' वेदे कहे ॥१४५
ईश्वरेर अधीन से सकल संसार ।
संयोग वियोग के करिते पारे आर ॥१४६
अतएव ये हइल ईश्वर-इच्छाय ।
हइल से कार्य्य, आर दुःख केने ताय ॥१४७
स्वामी अग्रेते गङ्गा पाय ये सुकृति ।
तार बड़ आर केवा आछे भाग्यवती ?"१४८
एइमत प्रभु जननीरे प्रबोधिया ।
रहिलेन निज-कृत्ये आप्तगण लैया ॥१४९
शुनिया प्रभुर अति अमृत बचन ।
सभार हइल सर्व-दुःख बिमोचत ॥१५०
हेनमते वैकुण्ठ-नायक गौरहरि ।
कौतुके आछेन विद्यारसे क्रीड़ा करि ॥१५१
सन्ध्याबन्दनादि प्रभु करि ऊषःकाले ।
नमस्करि जननीरे पढ़ाइते चले ॥१५२
अनेक जन्मेर भृत्य मुकुन्द सञ्जय ।
पुरुषोत्तमदास हेन याहार तनय ॥१५३
प्रतिदिन सेइ भाग्यवन्तेर आलय ।
पढ़ाइते गौरचन्द्र करेन विजय ॥१५४
चण्डीगृहे गिया प्रभु बसेन प्रथमे ।
तबे शेषे शिष्यगण आइसेन क्रमे ॥१५५
इतिमध्ये कदाचित केहो कोन दिने ।
कपाले तिलक ना करिया थाके भ्रमे ॥१५६
धर्म सनातन प्रभु स्थापे सर्व-धर्म ।
लोक-रक्षा लागि कभु ना लङ्घेन कर्म ॥१५७
हेन लज्जा ताहारे देहेन सेइक्षणे ।
से आर ना आइसे कभु,सन्ध्या करि विने ॥१५८
प्रभु बोले"केने भाइ ! कपाले तोमार ।
तिलक ना देखि केने, कि युक्ति इहार ॥१५९
तिलक ना थाके यदि विप्रेर कपाले ।
तबे तारे श्मशान-सदृश' वेदे बोले ॥१६०
बुझिलाङ आजि तुमि नाहि कर सन्ध्या ।
आजि भाइ!तोमार हइल सन्ध्या बन्ध्या ॥१६१

चल सन्ध्याकर' गिया गृहे पुनर्व्वार ।
सन्ध्या करि तबे से आसिह पढ़िबार ॥''१६२
एइमत प्रभुर यतेक शिष्यगण ।
सभेइ अत्यन्त निज-धर्म-परायण ॥१६३
एतेक औद्धत्य प्रभु करेन कौतुके ।
हेन नाहि याके ना चालेन नानारूपे ॥१६४
सभे परस्त्रीर प्रति नाहि परिहास ।
स्त्री देखिले दूरे प्रभु हय एकपाश ॥१६५
विशेषे चालेन प्रभु देखि श्रीहट्टिया ।
कदर्थेन सेइमत बचन बलिया ॥१६६
क्रोधे श्रीहट्टियागण बोले "हय हय ।
तुमि कोन-देशी ताहा कह त निश्चय ॥१६७
पिता माता-आदि करि यतेक तोमार ।
बोल देखि श्रीहट्टे ना हय जन्म कार ?१६८
आपने हइया श्रीहट्टियार तनय ।
तबे ढोल कर, काल हेनइ से हय ॥''१६९
यत यत बोले, प्रभु प्रबोध ना माने ।
नानामत कदर्थेन से-देशी-बचने ॥१७०
ताबत चालेन श्रीहट्टियारे ठाकुर ।
याबत ताहार क्रोध ना हय प्रचुर ॥१७१
महा-क्रोधे केहो लइ याय खेदाड़िया ।
लागालि ना पाय, यारे तर्जिया गर्जिया ॥१७२
केहो बा धरिया कौँचा शिकदार-स्थाने ।
लैया याय महा-क्रोधे धरिया देयाने ॥१७३
तबे शेषे आसिया प्रभुर सखागणे ।
समञ्जस कराइ चलेन लेइक्षणे ॥१७४
कोनदिन थाकि कोन बाङ्गालेर आड़े ।
बाओयास भाङ्गिया तान पालायेन रड़े ॥१७५
एइमत चापल्य करेन सभा'सने ।
सबेमात्र स्त्रीलोक ना देखेन दृष्टिकोणे ॥१७६

'स्त्री' हेन नाम प्रभु एइ अवतारे ।
श्रवणे ना करिलेन—बिदित संसारे ॥१७७
अतएब यत महामहिम सकले ।
'गौराङ्ग नागर' हेन स्तव नाहि बोले ॥१७८
यद्यपि सकल स्तव सम्भबे ताहाने ।
तथापिह स्वभावे से गाय बुधगणे ॥१७९
हेनमते श्रीमुकुन्दसञ्जय-मन्दिरे ।
विद्या-रसे श्रीवैकुण्ठनायक बिहरे ॥१८०
चतुर्द्दिगे शोभे शिष्यगणेर मण्डली ।
मध्ये पढ़ायेन प्रभु महाकुतूहली ॥१८१
विष्णुतैल शिरे दिते आछे कोन दासे ।
अशेष-प्रकारे व्याख्या करे निज-रसे ॥१८२
ऊषःकाल हैते दुइ-प्रहर-अवधि ।
पढ़ाइया गङ्गास्नाने चले गुणनिधि ॥१८३
निशार अर्द्धेक एइमत प्रतिदिने ।
सेइ पढ़ा चिन्तायेन सभारे आपने ॥१८४
अतएब प्रभुस्थाने बर्षेक पढ़िया ।
पण्डित हयेन सभे सिद्धान्त जानिया ॥१८५
हेनमते विद्यारसे आछेन ईश्वर ।
विवाहेर कार्य्य शची चिन्ते निरन्तर ॥१८६
सर्व-नवद्वीपे शची निरवधि मने ।
पुत्रेर सदृश कन्या चाहे अनुक्षणे ॥१८७
सेइ नवद्वीपे वैसे महा-भाग्यवान् ।
दयाशील-स्वभाब—श्रीसनातन-नाम ॥१८८
अकैतब, परम-उदार, विष्णुभक्त ।
अतिथि सेवन पर-उपकारे रत ॥१८९
सत्यवादी, जितेन्द्रिय, महा-वंश-जात ।
पदवी 'राजपण्डित' सर्वत्र विख्यात ॥१९०
व्यबहारेओ परम सम्पन्न एक जन ।
अनायासे अनेकेर करेन पोषण ॥१९१

ताँर कन्या आछेन परम सुचरिता ।
मूर्त्तिमती लक्ष्मी-प्राय सेइ जगन्माता ॥१९२
शची-देवी ताने देखिलेन येइ क्षणे ।
सेइ कन्या-पुत्र-योग्या बुझिलेन मने ॥१९३
शिशु हैते दुइ-तिन-बार गङ्गास्नान ।
पितृ-मातृ-विष्णु-भक्ति बइ नाहि आन ॥१९४
आइरे देखिया घाटे प्रति दिने दिने ।
नम्र हइ नमस्कार करेन चरणे ॥१९५
आइओ करेन महाप्रीते आशीर्वाद ।
"योग्य-पति कृष्ण तोमार करुन प्रसाद॥"१९६
गङ्गाजले आइ मने करेन कामना ।
"ए कन्या आमार पुत्रे हउक घटना ॥"१९७
राजपण्डितेर इच्छा सर्व-गोष्ठी-सने ।
प्रभुरे करिते कन्यादान निज-मने ॥१९८
दैवे शची काशीनाथ पण्डितेरे आनि ।
बलिलेन ताँरे"बाप ! शुन एक वाणी ॥१९९
राजपण्डितेरे कह, इच्छा थाके तान ।
आमार पुत्रेरे तबे करु कन्यादान ॥"२००
काशीनाथ पण्डित चलिला सेइक्षणे ।
'दुर्गा''कृष्ण' बलि राजपण्डित-भवने ॥२०१
काशीनाथे देखि राजपण्डित आपने ।
बसिते आसन आनि दिलेन सम्भ्रमे ॥२०२
परम-गौरबे विधि करे यथोचित ।
'कि कार्य्ये आइला?,जिज्ञासिलेन पण्डित॥२०३
काशीनाथ बोलेन "आछये एक कथा ।
चित्ते लय यदि, तबे करह सर्वथा ॥२०४
विश्वम्भर-पण्डितेरे तोमार दुहिता ।
दान कर'—ए सम्बन्ध उचित सर्वथा ॥२०५
तोमार कन्यार योग्य सेइ दिव्यपति ।
ताहान उचित पत्नी एइ महा-सती ॥२०६
येन कृष्ण रुक्मिणीते अन्योन्य-उचित ।
सेइमत विष्णुप्रिया-निमाञि पण्डित ॥"२०७
शुनि विप्र पत्नी-आदि-आप्तवर्ग-सहे ।
लागिला करिते युक्ति, बुझि के कि कहे ॥२०८
सभे बलिलेन"आर कि कार्य्य विचारे ।
सर्वथा ए कर्म गिया करह सत्वरे ॥"२०९
तबे राजपण्डित हइया हर्षमति ।
बलिलेन काशीनाथ पण्डितेर-प्रति ॥२१०
"विश्वम्भर पण्डितेर करे कन्यादान ।
करिब सर्वथा विप्र ! इथे नाहि आन ॥२११
भाग्य थाके यदि सर्ववंशेर आमार ।
तबे हेन सम्बन्ध हइब ए कन्यार ॥२१२
चल तुमि, तथा गिया कह सर्व-कथा ।
आमि पुनः दढ़ाइलुँ—करिब सर्वथा॥"२१३
शुनिया सन्तोषे काशीनाथ मिश्रवर ।
सकल कहिल आसि शचीर गोचर ॥२१४
कार्य्य सिद्धि शुनि आइ सन्तोष हइला ।
सकल उदयोग तबे करिते लागिला ॥२१५
प्रभुर विवाह शुनि सर्व-शिष्यगण ।
सभेइ हइला अति-परानन्द-मन ॥२१६
प्रथमे बलिला बुद्धिमन्त महाशय ।
"मोर भार ए विवाहे यत लागे व्यय ॥"२१७
मुकुन्द सञ्जय बोले "शुन सखा भाइ !
तोमार सकल भार, मोर किछु नाइ ?"२१८
बुद्धिमन्त-खान बोले "शुन सर्व भाइ !
बामनिया मत ए विवाहे किछु नाइ ॥२१९
ए विवाह पण्डितेर कराइब हेन ।
राजकुमारेर मत लोके देखे येन ॥"२२०
तबे सभे मिलि शुभ-दिनशुभ-क्षणे ।
अधिवास-लग्न करिलेन हर्ष मने ॥२२१

बड़ बड़ चन्द्रातप सब टानाइया ।
चतुर्दिके रुइलेन कदली आनिया ॥२२२
पूर्ण घट, दीप, धान्य, दधि आम्रसार ।
यतेक मङ्गल-द्रव्य आछये प्रचार ॥२२३
सकल एकत्रे आनि करि समुच्चय ।
सर्व-भूमि करिलेन आलिपनामय ॥२२४
यतेक वैष्णव आर यतेक ब्राह्मण ।
नवद्वीपे आछये यतेक सुसज्जन ॥२२५
सभारेइ निमन्त्रण करिला सकाले ।
"अधिवास गुया आसि खाइव बिकाले॥"२२६
अपराह्लकाल मात्र हइल आसिया ।
बाद्य आसि करिते लागिल वाजनिया ॥२२७
मृदङ्ग, सानाञि, जयढाल, करताल ।
नानाबिध बाद्य ध्वनि उठिल बिशाल ॥२२८
भाटगणे पढ़िते लागिला रायवार ।
पतिव्रतागण करे जयजयकार ॥२२९
विप्रगणे करिते लागिला वेदध्वनि ।
मध्ये आसि बसिला द्विजेन्द्रकुलमणि ॥२३०
चतुर्दिगे बसिलेन ब्राह्मणमण्डली ।
सभेइ हइला चित्ते महा-कुतूहली ॥२३१
तबे गन्ध, चन्दन, ताम्बूल, दिव्य माला ।
ब्राह्मणगणेरे सभे दिबारे लागिला ॥२३२
शिरे माला, सर्व-अङ्गे लेपिया चन्दने ।
एक बाटा ताम्बूल से देन एको जने ॥२३३
विप्रकुल नदीया–विप्रेर अन्त नाइ ।
कत याय, कत आइसे, अवधि ना पाइ ॥२३४
तथि-मध्ये लोभिष्ठ अनेक जन आछे ।
एकबार लैया पुनः आर काच काचे ॥२३५
आरबार आसि महा-लोकेर गहले ।
चन्दन, गुवाक, माला, निञा निञा चले॥२३६

सभेइ आनन्दे मत्त, के काहारे चिने ।
प्रभुओ हासिया आज्ञा करिला आपने ॥२३
"सभारे ताम्बूल माला देह' तिन-बार ।
चिन्ता नाहि,व्यय कर',ये इच्छा याहार॥"२
एकबार निया, ये ये लेइ' आरबार ।
ए आज्ञाय ताहार कैलेन प्रतिकार ॥२३
"पाछे केहो चिनिया विप्रेरे मन्द बोले ।
परमार्थे दोष हय शाठ्य करि निले ॥"२
विप्र-प्रिय प्रभुर चित्तेर एइ कथा ।
"तिन-बार दिले पूर्ण हइब सर्वथा ॥"२
तिनबार पाइया सभेइ हर्ष-मन ।
शाठ्य करि आर नाहि लय कोन जन ॥२
एइमत मालाय, चन्दने, गुया-पाने ।
हइल अनन्त, मर्म केहो नाहि जाने ॥२४
मनुष्ये पाइल यत से थाकुक् दूरे ।
पृथिवीते पड़िल यत दिते मनुष्येरे ॥२४
सेइ यदि प्राकृत-लोकेर घरे हये ।
ताहातेइ तार पाँच विभा निर्वाहये ॥२४
सकल-लोकेर चित्ते हइल उल्लास ।
सभे बोले "धन्य धन्य अधिवास ॥२४
लक्षेश्वरो देखियाछि एइ नवद्वीपे ।
हेन अधिवास नाहि करे कारो बापे ॥२४
एइमत चन्दन, माल्य, दिव्य गुया पान ।
अकातरे केहो कभु नाहि करे दान ॥"२
तबे राजपण्डित आनन्दचित्त हैया ।
आइलेन अधिवास-सामग्री लइया ॥२४
विप्रवर्ग आप्तवर्ग करि निज-सङ्गे ।
बहुविध बाद्य-नृत्य-गीत महारङ्गे ॥२५
वेदविधि पूर्वके परम-हर्ष-मने ।
ईश्वरेरे गन्धस्पर्श कैला शुभ-क्षणे ॥२५

ततक्षणे महा जय-जय-हरि-ध्वनि ।
करिते लागिला सभे महा-स्वस्ति वाणी ॥२५२
पतिव्रतागण देइ जयजयकार ।
बाद्य-गीते हैल महानन्द-अवतार ॥२५३
हेनमते करि अधिवास शुभ-काज ।
गृहे चलिलेन सनातन विप्रराज ॥२५४
एइमते गिया ईश्वरेर आप्तगणे ।
विष्णुप्रियार अधिवास कैल शुभ-क्षणे ॥२५५
आर यत किछु लोके 'लोकाचार'बोले ।
दोँहाराइ सब करिलेन कुतूहले ॥२५६
तबे सुप्रभाते प्रभु करि गङ्गास्नान ।
आगे विष्णु पूजि गौरचन्द्र भगवान् ॥२५७
तबे शेषे सर्व-आप्तगणेर सहिते ।
बसिलेन नान्दीमुखकर्मादि करिते ॥२५८
बाद्य-नृत्य-गीते हैल महा-कोलाहल ।
चतुर्द्दिगे जयजय उठिल मङ्गल ॥२५९
पूर्ण-घट, धान्य,दधि, दीप, आम्रसार ।
स्थापिलेन घरे द्वारे अङ्गने अपार ॥२६०
चतुर्द्दिगे नाना-वर्णे उड़ये पताका ।
कदलक रोपि बान्धिलेन आम्रशाखा ॥२६१
तबे आइ पतिव्रतागण लइ सङ्गे ।
लोकाचार करिते लागिला महा-रङ्गे ॥२६२
आगे गङ्गा पूजिया परम-हर्ष-मने ।
तबे बाद्य-बाजने गेलेन षष्ठी-स्थाने ॥२६३
षष्ठी पूजि तबे बन्धु-मन्दिरे-मन्दिरे ।
लोकाचार करिया आइला निज-घरे ॥२६४
तबे,खइ,कला, तैल,ताम्बूल, सिन्दूरे ।
दिया दिया पूर्ण करिलेन स्त्रीगणेरे ॥२६५
ईश्वर-प्रभावे द्रव्य हैल असंख्यात ।
शचीओ सभारे देन बार पाँच सात ॥२६६
तैले स्नान करिलेन सर्व-नारीगणे ।
हेन नाहि परिपूर्ण नहिल ये मने ॥२६७
एइमत महानन्द लक्ष्मीर भवने ।
लक्ष्मीर जननी करिलेन हर्ष-मने ॥२६८
श्रीराजपण्डित अति चित्तेर उल्लासे ।
सर्वस्व निक्षेप करि महानन्दे भासे ॥२६९
सर्व-विधि-कर्म करि श्रीगौरसुन्दर ।
बसिलेन खानिक करिया अवसर ॥२७०
तबे सब ब्राह्मणेरे भोज्य वस्त्र दिया ।
करिलेन सन्तोष परम नम्र हैया ॥२७१
ये येमन पात्र, यार योग्य येन दान ।
सेइमते करिलेन सभार सम्मान ॥२७२
महा-प्रीते आशीर्वाद करि विप्रगण ।
गृहे चलिलेन सभे करिते भोजन ॥२७३
अपराह्ण-बेला आसि लागिल हइते ।
प्रभुर सभेइ बेश लागिला करिते ॥२७४
चन्दने लेपित करि सकल श्रीअङ्ग ।
मध्ये मध्ये सर्वत्र दिलेन तथि गन्ध ॥२७५
अर्द्धचन्द्राकृति करि ललाटे चन्दन ।
तथि-मध्ये गन्धेर तिलक सुशोभन ॥२७६
अद्भुत मुकुट शोभे शिरेर-उपर ।
सुगन्धि-मालाय पूर्ण हैल कलेवर ॥२७७
दिव्य सूक्ष्म पीत-वस्त्र त्रिकच्छ-विधाने ।
पराइया कज्जल दिलेन श्रीनयाने ॥२७८
धान्य, दूर्वा, सूत्र करे करिया बन्धन ।
धरिते दिलेन रम्भामञ्जरी दर्पण ॥२७९
सुवर्णकुण्डल दुइ श्रुतिमूले साजे ।
नव-रत्न-हार बान्धिलेन बाहु-माझे ॥२८०
एइमत ये ये शोभा करे ये ये अङ्गे ।
सकल घटना सभे करिलेन रङ्गे ॥२८१

ईश्वरेर मूर्त्ति देखि यत नर नारी ।
मुग्ध हइलेन सभे आपना पासरि ॥२८२
प्रहरेत वेला आछे हेनइ समय ।
सभेइ बोलेन "शुभ कराह विजय ॥२८३
प्रहरेक सर्व-नवद्वीपे बेड़ाइया ।
कन्याघरे याइबेन गोधूलि करिया ॥"२८४
तबे दिव्य दोला साजि' बुद्धिमन्त-खान ।
हरिबे आनिया करिलेन उपस्थान ॥२८५
बाद्य-गीते उठिल परम कोलाहल ।
विप्रगणे करे वेद ध्वनि सुमङ्गल ॥२८६
भाटगणे पढ़िते लागिला रायवार ।
सर्वदिके हइल आनन्द-अवतार ॥२८७
तबे प्रभु जननीरे प्रदक्षिण करि ।
विप्रगणे नमस्करि बहुमान्य करि ॥२८८
दोलाय बसिला श्रीगौराङ्ग महाशय ।
सर्वदिगे उठिल मङ्गल जयजय ॥२८९
नारीगणे दिते लागिलेन जयकार ।
शुभ-ध्वनि बइ कोनो दिगे नाहि आर ॥२९०
प्रथमे विजय करिलेन गङ्गातीरे ।
पूर्णचन्द्र धरिलेन शिवेर उपरे ॥२९१
सहस्र सहस्र दीप लागिल ज्वलिते ।
नानाविध बाजि सब लागिल करिते ॥२९२
आगे यत पदातिक बुद्धिमन्तखाँर ।
चलिल हइया दुइ सारि पाटोयार ॥२९३
नाना-वर्णे पताका चलिल तार पाछे ।
विदूषक-सकल चलिला नाना-काचे ॥२९४
नर्त्तक वा ना जानि कतेक सम्प्रदाय ।
परम-उल्लासे दिव्य नृत्य करि याय ॥२९५
जयढाक, वीरढाक, मृदङ्ग, काहाल ।
पटह, दगड़, शङ्ख, वंशी, करताल ॥२९६

वरगों शिङ्गा, पञ्चशब्दी बाद्य बाजे यत ।
के लिखिबे बाद्यभाण्ड वाजि याय कत ॥२९
लक्ष लक्ष शिशु बाद्यभाण्डेर भितरे ।
रङ्गे नाचि याय, देखि हासेन ईश्वरे ॥२९
से महा-कौतुक देखि शिशुर कि दाय ।
ज्ञानवान् सभे लज्जा छाड़ि नाचि याय ॥२९
प्रथमे आसिया गङ्गातीरे कथोक्षण ।
करिलेन नृत्य, गीत, आनन्द-बाजन ॥३०
तबे पुष्पवृष्टि करि गङ्गा नमस्करि ।
भ्रमेण कौतुके सर्व-नवद्वीपपुरी ॥३०
देखि अति-अमानुषी विवाह-सम्भार ।
सर्व-लोक चित्ते महा पाय चमत्कार ॥३०
"बड़ बड़ विभा देखियाछि" लोके बोले ।
"एमत समृद्ध नाहि देखि कोन काले ॥"३
एइमत स्त्री-पुरुषे प्रभुरे देखिया ।
आनन्दे भासये सब सुकृति नदीया ॥३०
सभे यार रूपवती कन्या आछे घरे ।
सेइ सब विप्र सभे बिमरिष करे ॥३०
"हेन वरे कन्या नाहि पारिलाङ दिते ।
आपनार भाग्य नाहि, हइब केमते ?"३०
नवद्वीप वासोर चरणे नमस्कार ।
ए सब आनन्द देखिबारे शक्ति यार ॥३०
एइमत रङ्गे प्रभु नगरे नगरे ।
भ्रमेण कौतुके सर्व-नवद्वीपपुरे ॥३०
गोधूलि-समय आसि प्रवेश हइते ।
आइलेन राजपण्डितेर मन्दिरेते ॥३०
महा-जयजयकार लागिल हइते ।
दुइ बाद्यभाण्ड बादे लागिल बाजिते ॥३१
परम-सम्भ्रमे राजपण्डित आसिया ।
दोला हैते कोले करि बसाइला निया ॥३१

पुष्पवृष्टि करिलेन सन्तोषे आपने ।
जामाता देखिया हर्षे देह नाहि जाने ॥३१२
तबे बरणेर सज्ज सामग्री लइया ।
जामाता बरिते विप्र बसिला आसिया ॥३१३
पाद्य,अर्घ्य, आचमनी,वस्त्र, अलङ्कार ।
यथाविधि दिया कैल बरण-व्यभार ॥३१४
तबे तान पत्नी नारीगणेर सहिते ।
मङ्गल-विधान आसि लागिला करिते ॥३१५
धान्य-दूर्वा दिलेन प्रभुर श्रीमस्तके ।
आरति करिया सप्त-घृतेर प्रदीपे ॥३१६
खइ कड़ि फेलि करिलेन उलुकार ।
एइमत यत किछु करि लोकाचार ॥३१७
तबे सर्व अलङ्कारे भूषित करिया ।
लक्ष्मी देवी आनिलेन आसने धरिया ॥३१८
तबे हर्षे प्रभुर सकल-आप्तगणे ।
प्रभुरेओ तुलिलेन धरिया आसने ॥३१९
तबे मध्ये अन्तःपट धरि लोकाचारे ।
सप्त-प्रदक्षिण कराइलेन कन्यारे ॥३२०
तबे लक्ष्मी प्रदक्षिण करि सप्त-बार ।
रहिलेन सम्मुखे करिया नमस्कार ॥३२१
तबे पुष्प-फेलाफेलि लागिल हइते ।
दुइ बाद्यभाण्ड महा लागिल बाजिते ॥३२२
चतुर्द्दिगे स्त्री-पुरुषे करे जयध्वनि ।
आनन्द आसिया अवतरिला आपनि ॥३२३
आगे लक्ष्मी जगन्माता प्रभुर चरणे ।
माला दिया करिलेन आत्म-समर्पणे ॥३२४
तबे गौरचन्द्र प्रभु ईषत हासिया ।
लक्ष्मीर गलाय माला दिलेन तुलिया ॥३२५
तबे लक्ष्मी-नारायणे पुष्प-फेलाफेलि ।
करिते लागिला हइ महा-कुतूहली ॥३२६
ब्रह्मादि-देवता सब अलक्षित-रूपे ।
पुष्पवृष्टि लागिलेन करिते कौतुके ॥३२७
आनन्द बिवादे' लक्ष्मी-गणे प्रभु-गणे ।
उच्च करि बर-कन्या तोले हर्ष-मने ॥३२८
क्षणे जिने प्रभु-गणे, क्षणे लक्ष्मी-गणे ।
हास हास प्रभुरे बोलये सर्वजने ॥३२९
ईषत हासिला प्रभु सुन्दर श्रीमुखे ।
देखि सर्व-लोक हासे परानन्द-सुखे ॥३३०
सहस्र सहस्र महाताप-दीप ज्वले ।
कर्णे किछु नाहि शुनि बाद्यकोलाहले ॥३३१
मुखचन्द्रिकार महा-बाद्य-जय-ध्वनि ।
सकल ब्रह्माण्ड स्पर्शिलेक हेन शुनि ॥३३२
हेनमते श्रीमुखचन्द्रिका करि रङ्गे ।
बसिलेन श्रीगौरसुन्दर लक्ष्मी-सङ्गे ॥३३३
तबे राजपण्डित परम-हर्ष-मने ।
बसिलेन करिबारे कन्या सम्प्रदाने ॥३३४
पाद्य, अर्घ्य, आचमनी यथा विधिमते ।
क्रिया करि लागिलेन सङ्कल्प करिते ॥३३५
विष्णुप्रीति काम्य करि श्रीलक्ष्मीर पिता ।
प्रभुर श्रीकरे समर्पिलेन दुहिता ॥३३६
तबे दिव्य शय्या,धेनु,भूमि,दासी,दास ।
अनेक यौतुक दिया करिलेन उल्लास ॥३३७
लक्ष्मी बसाइलेन प्रभुर बाम-पाशे ।
होम-कर्म करिते लागिला तबे शेषे ॥३३८
वेदाचार लोकाचार यत किछु आछे ।
सब करि बर-कन्या घरे निला पाछे ॥३३९
वैकुण्ठ हइल राजपण्डित-आवासे ।
भोजन करिते याइ बसिलेन शेषे ॥३४०
भोजन करिया सुख रात्रि सुमङ्गले ।
लक्ष्मी-कृष्ण एकत्र रहिला कुतूहले ॥३४१

सनातन पण्डितेर गोष्ठीर सहिते ।
ये सुख हइल, ताहा के पारे कहिते ॥३४२
नग्नजित, जनक, भीष्मक, जाम्बुवन्त ।
पूर्व ताना येहेन हइला भाग्यवन्त ॥३४३
सेइ भाग्य एबे गोष्ठ-सह सनातन ।
पाइलेन पूर्व-विष्णुसेवार कारण ॥३४४
तबे रात्रि प्रभाते ये छिल लोकाचार ।
सकल करिला सर्वभुवनेर सार ॥३४५
अपराह्ले गृहे आसिबार हैल काल ।
बाद्य, नृत्य, गीत हैते लागिल बिशाल ॥३४६
चतुर्दिगे जयध्वनि लागिल हइते ।
नारीगणे जयकार लागिलेन दिते ॥३४७
विप्रगणे आशीर्वाद लागिला करिते ।
यात्रा-योग्य श्लोक सभे लागिला पढ़िते ॥३४८
ढाक, पड़ा, सानाञि, वर्‌गों,करताल ।
अन्योऽन्ये बाद करि बाजाय बिशाल ॥३४९
तबे प्रभु नमस्करि सर्व-मान्यगण ।
लक्ष्मी-सङ्गे दोलाय करिला आरोहण ॥३५०
'हरिहरि' बलि तबे करि जयध्वनि ।
चलिलेन लइया द्विजेन्द्र कुलमणि ॥३५१
पथे यत लोक देखे चलिया आसिते ।
धन्य धन्य सभेइ प्रशंसे बहु-मते ॥३५२
स्त्रीगण देखिया बोले "एइ भाग्यवती ।
कत जन्म सेविलेन कमला पार्वती ॥" ३५३
केहो बोले "एइ हेन बुझि हर-गौरी ।"
केहो बोले "हेन बुझि कमला-श्रीहरि ॥" ३५४
केहो बोले "एइ दुइ—कामदेवेर रति ।"
केहो बोले "इन्द्र-शची लय मोर मति ॥" ३५५
केहो बोले "हेन बुझि रामचन्द्र-सीता ।"
एइमत बोले सर्व सुकृति-वनिता॥३५६

हेन भाग्यवन्त स्त्री-पुरुष नदीयार ।
ए सब सम्पत्ति देखिबारे शक्ति यार ॥३५
लक्ष्मी-नारायणेर मङ्गल-दृष्टिपाते ।
सुखमय सर्वलोक हैल नदीयाते ॥३५
नृत्य,गीत,बाद्य, पुष्प वर्षिते वर्षिते ।
परम-आनन्दे आइसेन सर्व-पथे ॥३५
तबे शुभ-क्षणे प्रभु सकल-मङ्गले ।
आइलेन गृहे लक्ष्मी-कृष्ण कुतूहले ॥३६
तबे आइ पतिव्रतागण सङ्गे लैया ।
पुत्रबधू गृहे आनिलेन हर्ष हैया ॥३६
गृहे आसि बसिलेन लक्ष्मी-नारायण ।
जय ध्वनिमय हैल सकल भुवन ॥३६
कि आनन्द हइल से अकथ्य-कथन ।
से महिमा कोन् जने करिब वर्णन ॥३६
याँहार मूर्त्तिर विभा देखिले नयने ।
सर्व-पापमुक्तो याय वैकुण्ठ भुवने ॥३६
से प्रभुर विभा लोक देखये साक्षाते ।
तेञि तान नाम दयामय दीननाथे ॥३६
तबे यत नट, भाट, भिक्षुक-गणेरे ।
तुषिलेन वस्त्र-धन-बचने सभेरे ॥३६
विप्रगण आप्तगण सभारे प्रत्येके ।
आपने ईश्वर वस्त्र दिलेन कौतुके ॥३६
बुद्धिमन्त-खाने प्रभु दिला आलिङ्गन ।
ताहान आनन्द अति अकथ्य-कथन ॥३६
ए सब लीलार कभु नाहि परिच्छेद ।
'आविर्भाब' 'तिरोभाब' सभे कहे वेद ॥३६
दण्डके ए सब लीला यत हइयाछे ।
शत-बर्षे ताहा के वर्णिब हेन आछे ?३७
नित्यानन्दस्वरूपेर आज्ञा करि शिरे ।
सूत्र-मात्र लिखि आमि कृपा-अनुसारे ॥३७

ए सब ईश्वर लीला ये पढ़े ये शुने ।
से अवश्य बिहरये गोरचन्द्र-सने ॥३७२
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचाँद जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥३७३

इति श्रीचैतन्यभागवते आदिखण्डे श्रीविष्णुप्रिया-परिणय-वर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥



एकादश अध्याय

जयजय दीनबन्धु श्रीगौरसुन्दर ।
जयजय लक्ष्मीकान्त सभार ईश्वर ॥१
जयजय भक्त-रक्षा-हेतु अवतार ।
जय सर्व-काल-सत्य कीर्त्तन-बिरार ॥२
भक्त-गोष्ठी-सहित गौराङ्ग जयजय ।
शुनिले चैतन्य कथा भक्ति लभ्य हय ॥३
आदिखण्ड-कथा अति अमृतेर धार ।
यँहि गौराङ्गेर सर्वमोहन बिहार ॥४
हेनमते वैकुण्ठनायक नवद्वीपे ।
गृहस्थ हइया पढ़ायेन विप्ररूपे ॥५
प्रेम-भक्ति-प्रकाश निमित्त अवतार ।
ताहा किछु ना करेन,इच्छा से ताँहार ॥६
अति-परमार्थ-शून्य सकल-संसार ।
तुच्छ-रस विषये से आदर सभार ॥७
गीता भागवत बा पढ़ाय ये ये जन ।
तारात्रो ना बोले ना बोलाये सङ्कीर्त्तन ॥८
हाथे तालि दिया बा सकल भक्तगण ।
आपना आपनि मेलि करेन कीर्त्तन ॥९
ताहातेत्रो उपहास करये अन्तरे ।
"इहारा कि कार्य्ये डाक् छाड़े उच्चस्वरे ॥१०
आमि ब्रह्म, आमातेइ वैसे निरञ्जन ।
दास-प्रभु-भेद बा करेन कि कारण ?"११
संसारि-सकल बोले "मागिया खाइते ।
डाकिया बोलये हरि,लोक जानाइते ॥"१२
"ए-गुलार घर-द्वार फेलाइ भाङ्गिया ।"
एइ युक्ति करे सब-नदीया मिलिया ॥१३
शुनिया पायेन दुःख सर्व-भक्तगणे ।
सम्भाषा करेन हेन ना पायेन जने ॥१४
शून्य देखे भक्तगण सकल संसार ।
'हा कृष्ण !'बलिया दुःख भाबेन अपार ॥१५
हेनकाले तथाइ आइला हरिदास ।
शुद्ध-विष्णुभक्ति यार विग्रहे प्रकाश ॥१६
एबे शुन हरिदास ठाकुरेर कथा ।
याहार श्रबणे कृष्ण पाइये सर्वथा ॥१७
बुढ़न-ग्रामेते अवतीर्ण हरिदास ।
से भाग्ये से-सब-देशे कीर्त्तन-प्रकाश ॥१८
कथोदिन थाकिया आइला गङ्गातीरे ।
आसिया रहिला फुलियाय–शान्तिपुरे ॥१९
पाइया ताहान सङ्ग आचार्य्य-गोसाञि ।
हुङ्कार करेन, आनन्देर अन्त नाञि ॥२०

हरिदासठाकुर अद्वैतदेव-सङ्गे ।
भासेन गोविन्द-रस-समुद्र तरङ्गे ॥२१
निरवधि हरिदास गङ्गा-तीरे-तीरे ।
भ्रमेण कौतुके 'कृष्ण' बलि उच्चस्वरे ॥२२
विषय सुखेते बिरक्तेर अग्रगण्य ।
कृष्णनामे परिपूर्ण श्रीवदन धन्य ॥२३
क्षणेको गोविन्दनामे नाहिक बिरक्ति ।
भक्तिरसे अनुक्षण हय नाना मति ॥२४
कखनो करेन नृत्य आपना आपनि ।
कखनो करेन मत्त-सिंह-प्राय ध्वनि ॥२५
कखनो बा उच्चस्वरे करेन रोदन ।
अट्टअट्ट महा-हास्य हासेन कखन ॥२६
कखनो गर्ज्जेन अति हुङ्कार करिया ।
कखनो मूर्च्छित हइ थाकेन पड़िया ॥२७
क्षणे अलौकिक शब्द बोलेन डाकिया ।
क्षणे ताहा बाखानेन उत्तम करिया ॥२८
अश्रुपात, रोमहर्ष, हास्य, मूर्च्छा,घर्म ।
कृष्णभक्ति बिकारेर यत आछे मर्म ॥२९
प्रभु हरिदास मात्र नृत्ये प्रवेशिले ।
सकल आसिया तान श्रीविग्रहे मिले ॥३०
हेन से आनन्दधारा–तिते सर्व-अङ्ग ।
अति-पाषण्डीओ देखि पाय महा-रङ्ग ॥३१
किबा से अद्भुत अङ्गे श्रीपुलकावलि ।
ब्रह्मा-शिवो देखिया हयेन कुतूहली ॥३२
फुलिया-ग्रामेर यत ब्राह्मण-सकल ।
सभेइ ताहाने देखि हइला बिह्वल ॥३३
सभार ताहाने बड़ जन्मिल बिश्वास ।
फुलियाये रहिलेन प्रभु हरिदास ॥३४
गङ्गास्नान करि निरवधि हरिनाम ।
उच्च करि बलिया बुलेन सर्व-स्थान ॥३५

काजि गिया मुलुकेर अधिपति-स्थाने ।
कहिलेन ताहान सकल विवरणे ॥३६
"यवन हइया करे हिन्दुर आचार ।
भाल-मते तारे आनि करह विचार ॥"३७
पापीर बचन शुनि सेइ पापमति ।
धरि आनाइल ताने अति शीघ्रगति ॥३८
कृष्णेर प्रसादे हरिदास महाशय ।
यवनेर कि दाय, कालेरो नाहि भय ॥३९
'कृष्णकृष्ण' बलिते चलिला सेइक्षणे ।
मुलुकपतिर द्वारे दिला दरशने ॥४०
हरिदासठाकुरेर शुनिया गमन ।
हरिष-बिषाद हैल यत सुसज्जन ॥४१
बड़ बड़ लोक यत आछे बन्दि-घरे ।
तारा सब हृष्ट हैला शुनिया अन्तरे ॥४२
"परम-वैष्णव हरिदास-महाशय ।
ताने देखि बन्दि-दुःख हइबेक क्षय ॥"४३
रक्षक-लोकेरे सभे साधन करिया ।
रहिलेन बन्दिगण एकदृष्टि हैया ॥४४
हरिदासठाकुर आइला सेइस्थाने ।
बन्दि-सब देखि कृपादृष्टि हैल मने ॥४५
हरिदासठाकुरेर चरण देखिया ।
रहिलेन बन्दिगण प्रणति करिया ॥४६
आजानुलम्बित भुज, कमल नयान ।
सर्व-मनोहर मुख-चन्द्र अनुपाम ॥४७
भक्ति करि सभे करिलेन नमस्कार ।
सभार हइल कृष्णभक्तिर बिकार ॥४८
तादेर-सभार भक्ति देखि हरिदास ।
बन्दी सब देखिया हैला कृपाहास ॥४९
"थाक थाक एखन आछह येन-रूपे ।"
गुप्त-आशीर्वाद करि हासेन कौतुके ॥५०

ना बुझिया तान अति दुर्ज्ञेय बचन ।
बन्दि-सब हैला किछु विषादित-मन ॥५१
तबे पाछे कृपायुक्त हइ हरिदास ।
गुप्त-आशीर्वाद कहे करिया प्रकाश ॥५२
"आमि तोमा'सभारे ये कैल आशीर्वाद ।
तार अर्थ ना बुझिया भावह विषाद ॥५३
मन्द-आशीर्वाद आमि कखनो ना करि ।
मन दिया सभे इहा बुझह बिचारि ॥५४
एबे कृष्ण प्रति तोमा'सभाकार मन ।
येन आछे' एइमत रहु सर्वक्षण ॥५५
एबे नित्य कृष्णनाम कृष्णेर चिन्तन ।
सभे मेलि करिते आछह अनुक्षण ॥५६
एबे हिंसा नाहि, नाहि प्रजार पीड़न ।
'कृष्ण' बलि काकुवादे करह चिन्तन ॥५७
आरबार गिया विषयेते प्रवर्त्तिले ।
सभे इहा पासरिबे, गेले दुष्ट-मेले ॥५८
सेइ सब अपराध हैब पुनर्बार ।
विषयेर धर्म एइ शुन कथा सार ॥५९
'बन्दि थाक'हेन आशीर्वाद नाहि करि ।
'विषय पासर अहर्निश बोल हरि' ॥६०

"पाषण्डीर गण देखि मरये ज्वलिया ।
दशे पाँचे युक्ति करे एकत्रे मिलिया ॥
यबन हइया करे हिन्दुर आचार ।
कोनो खाने ना देखि एमत अबिचार ॥
कालि गिया मुलुकेर अधिपति स्थाने ।
कहिब ये इहार एसब बिवरणे ॥
यबन हइया येन हिन्दुयानि करे ।
भालमते आनि शास्ति करुक उहारे ॥
एमत युक्ति करि पाषण्डीर गण ।
यबन-राजार स्थाने कैल निबेदन ॥"

छले करिलाङ आमि एइ आशीर्वाद ।
तिलार्द्धेक ना भाबिह तोमार बिषाद ॥६१
सर्वजीव-दया-प्रति दर्शन आमार ।
कृष्णे दृढ़भक्ति हउ तोमार-सभार ॥६२
चिन्ता नाइ—दिन-दुइ-तिनेर भितरे ।
बन्धन घुचिब' एइ कहिलुँ तोमारे ॥६३
बिषयेते थाक, किबा थाक यथा तथा ।
एइ बुद्धि कभु ना पासरिबा सर्वथा ॥"६४
बन्दि सकलेर करि शुभानुसन्धान ।
आइलेन मुलुकेर अधिपति-स्थान ॥६५
अति-मनोहर तेज देखिया ताहान ।
परम-गौरवे बसिबारे दिल स्थान ॥६६
आपने जिज्ञासे ताने मुलुकेर पति ।
"केने भाइ! किरूप तोमार देखि मति ॥६७
कत भाग्ये देख तुमि हैयाछ यबन ।
तबे केने हिन्दुर आचारे देह' मन ॥६८
आमरा हिन्दुरे देखि नाहि खाइ भात ।
ताहा तुमि छाड़ हइ महावंशजात ॥६९
जाति-धर्म लङ्घि कर अन्य-व्यबहार ।
पर-लोके केमते बा पाइबा निस्तार ॥७०
ना जानिया ये किछु करिला अनाचार ।
से पाप घुचाह करि कलिमा-उच्चार ॥"७१
शुनि मायामोहितेर व्याक्य हरिदास ।
"अहो विष्णु-माया!"बलि हैल महा-हास॥७२

"बिषय थाकिते कृष्णप्रेम नाहि हय ।
बिषयीर दूर कृष्ण जानिह निश्चय ॥
बिषयी-आविष्ट मन बड़इ जञ्जाल ।
स्त्री पुत्र मायाजाल एइ सब काल ॥
दैवे कोन भाग्यवान् साधुसङ्ग पाय ।
बिषय-आबेश छाड़ि कृष्णेरे भजय ॥"

बलिते लागिला ताँरे मधुर उत्तर ।
"शुन बाप ! सभारइ एकइ ईश्वर ॥७३
नाम मात्र भेद करे हिन्दुये यबने ।
परमार्थे एक कहे कोराणे पुराणे ॥७४
एक शुद्ध नित्य बस्तु अखण्ड अव्यय ।
परिपूर्ण हइ वैसे सभार हृदय ॥७५
सेइ प्रभु यारे येन लओयायेन मन ।
सेइ मत कर्म करे सकल-भुवन ॥७६
से प्रभुर नाम-गुण सकल जगते ।
बोलेन सकल मात्र निज-शास्त्र-मते ॥७७
ये ईश्वर से पुनः सभार भार लय ।
हिंसा करिलेओ से ताहान हिंसा हय ॥७८
एतेके आमारे से ईश्वर येहेन ।
लओयाइयाछेन चित्ते, करि आमि तेन ॥७९
हिन्दुकुले केहो येन हइया ब्राह्मण ।
आपनेइ गिया हय इच्छाय यबन ॥८०
हिन्दुरा कि करे तारे, यार येइ कर्म ।
आपने ये मैल ताँरे मारिया कि धर्म ॥८१
महाशय ! तुमि एबे करह बिचार ।
यदि दोष थाके, शास्ति करह आमार ॥"८२
हरिदासठाकुरेर सुसत्य-बचन ।
शुनिया सन्तोष हैल सकल यबन ॥८३
सबे एक पापी काजी मुलुकपतिरे ।
बलिते लागिला "शास्ति करह इहारे ॥८४
एइ दुष्ट, आरो दुष्ट करिब अनेक ।
यबन कुलेर अमहिमा आनिबेक ॥८५
एतेके उहार शास्ति कर' भाल-मते ।
नहे बा आपन शास्त्र बलुक मुखेते ॥"८६
पुन बोले मुलुकेर पति "आरे भाइ !
आपतार शास्त्र बोल, तबे चिन्ता नाइ ॥८७
अन्यथा करिब शास्ति सब-काजीगणे ।
बलिबाओ पाछे, आर लघु हैबा केने ॥"८
हरिदास बोलेन "ये करान ईश्वरे ।
ताहा बइ आर केहो करिते ना पारे ॥८९
अपराध-अनुरूप यार येन फल ।
ईश्वरे से करे, इहा जानिह सकल ॥९०
खण्ड खण्ड हइ देह यदि याय प्राण ।
तभु आमि वदने ना छाड़ि हरिनाम ॥"९
शुनिआ ताहान बाक्य मुलुकेर पति ।
जिज्ञासिल "एबे कि करिबा इहा प्रति ?"९
काजी बोले "बाइश-बाजारे निया मारि ।
प्राण लह, आर किछु बिचारे ना मारि ॥९
बाइश-बाजारे मारिलेह यदि जीये ।
तबे सब जानि, ज्ञानी साँचा कथा कहे ॥"९
पाइक-सकले डाकि तर्ज्ज करि कहे ।
"एमत मारिबि, येन प्राण नाहि रहे ॥९५
यबन हइया येन हिन्दुयानि करे ।
प्राणान्त हइले शेषे ए पापेते तरे ॥"९६
पापीर बचने सेह पापी आज्ञा दिल ।
दुष्टगणे आसि हरिदासेरे धरिल ॥९७
बाजारे बाजारे सब बेढ़ि दुष्टगणे ।
मारये निर्ज्जीव करि महा-क्रोध-मने ॥९८
'कृष्णकृष्ण' स्मरण करेन हरिदास ।
नामानन्दे देह दुःख ना हय प्रकाश ॥९९
देखि हरिदास देहे अत्यन्त प्रहार ।
सुजन सकल दुःख भावेन अपार ॥१०
केहो बोले "विनष्ट हइबे सर्व-राज्य ।
से निमित्ते हेन सुजनेर हेन कार्य्य ॥"१
राजा उजिरेरे केहो शापे' क्रोध-मने ।
मारामारि करितेओ उठे कोन जने ॥१०

केहो गिया यबनगणेर पा'ये धरे ।
"किछु दिब,अल्प करि मारह उहारे ॥"१०३
तथापिह दया नाहि जन्मे पापीगणे ।
बाजारे बाजारे मारे महा-क्रोध-मने ॥१०४
कृष्णेर प्रसादे हरिदासेर शरीरे ।
अल्प दुःखो नाहि जन्मे एतेक प्रहारे ॥१०५
असुर-प्रहारे येन प्रह्लाद विग्रहे ।
कोनो दुःख ना जन्मिल सर्व-शास्त्रे कहे ॥१०६
एइमत यबनेर अशेष-प्रहारे ।
दुःख ना जन्मये हरिदासठाकुरेरे ॥१०७
हरिदास-स्मरणेओ ए दुःख सर्वथा ।
छिण्डे सेइक्षणे, हरिदासेर कि कथा ॥१०८
सबे ये सकल पापीगण ताँरे मारे ।
तार लागि दुःख मात्र भावेन अन्तरे ॥१०९
"ए-सब जीवेर कृष्ण! करह प्रसाद ।
मोर द्रोहे नहु ए-सभार अपराध ॥"११०
एइ मत पापीगण नगरे नगरे ।
प्रहार करये हरिदासठाकुरेरे ॥१११
दृढ़ करि मारे तारा प्राण लइबारे ।
मनस्पर्श नाहि हरिदासेर प्रहारे ॥११२
बिस्मित हइया भावे सकल यबने ।
"मानुषेर प्राण कि रहये ए मारणे ॥११३
दुइ तिन बाजारे मारिते लोक मरे ।
बाइश-बाजारे मारिलाङ त इहारे ॥११४
मरेओ तो नाहि आरो हासे क्षणेक्षणे ।
ए पुरुष पीर बा ?"सभेइ भावे मने ॥११५
यबन सकल बोले "अये हरिदास !
तोमा' हैते आमा'सभार हइबेक नाश ॥११६
एत प्रहारेओ प्राण ना याय तोमार ।
काजी प्राण लइबेक आमा'सभाकार ॥"११७
हासिया बोलेन हरिदास महाशय ।
आमि जीले तोमा सभाकार मन्द हय ॥११८
"तबे आमि मरि एइ देख विद्यमान ।"
एत बलि आविष्ट हइला करि ध्यान ॥११९
सर्व-शक्ति-समन्वित प्रभु हरिदास ।
हइलेन अचेष्ट, कोथाओ नाहि श्वास ॥१२०
देखिया यबनगण बिस्मित हइय ।
मुलुकपतिर द्वारे निञा फेलाइल ॥१२१
"माटि देह'निया"बोले मुलुकेर पति ।
काजी कहे "तबे त पाइब भाल गति ॥१२२
बड़ हइ करिलेक येन नीच-कर्म ।
अत एब इहारे जुयाय एइ धर्म ॥१२३
माटि दिले परलोके हइबेक भाल ।
गाङ्गे फेल, येन दुःख पाय चिरकाल ॥"१२४
काजीर बचने सब धरिया यबने ।
गाङ्गे फेलाइते सभे तोले गिया ताने ॥१२५
गाङ्गे निते तोले यदि यबन-सकल ।
बसिलेन हरिदास हइया निश्चल ॥१२६
ध्यानानन्दे बसिला ठाकुर-हरिदास ।
विश्वम्भर-देहे आसि करिला प्रकाश ॥१२७
विश्वम्भर-अधिष्ठान हइल शरीरे ।
कार् शक्ति आछे हरिदासे नाड़िबारे ॥१२८
महा-बलवन्त सब चतुर्दिगे ठेले ।
महा-स्तम्भ प्राय प्रभु आछेन निश्चले ॥१२९
कृष्णानन्द-सुधासिन्धु-मध्ये हरिदास ।
मग्न हइ आछेन,बाह्य नाहि परकाश ॥१३०
किबा अन्तरीक्षे,किबा पृथ्वीते,गङ्गाय ।
ना जानेन हरिदास, आछेन कोथाय ॥१३१
प्रह्लादेर येहेन स्मरण कृष्णभक्ति ।
सेइमत हरिदासठाकुरेर शक्ति ॥१३२

हरिदासे ए सकल किछु चित्र नहे ।
निरवधि गौरचन्द्र याहार हृदये ॥१३३
राक्षसेर बन्धन येहेन हनूमान ।
आपने लइला करि ब्रह्मार सम्मान ॥१३४
एइमत हरिदासो यबन प्रहार ।
जगतेर शिक्षा लागि करिला स्वीकार ॥१३५
"अशेष-दुर्गति हइ यदि याय प्राण ।
तथापि वदने ना छाड़िब हरिनाम ॥"१३६
अन्यथा गोविन्द-हेन रक्षक थाकिते ।
कार शक्ति आछे हरिदासेरे लङ्घिते ॥१३७
हरिदास-स्मरणेओ ए दुःख सर्वथा ।
खण्डे सेइक्षणे, हरिदासेर कि कथा ॥१३८
सत्य सत्य हरिदास जगत-ईश्वर ।
चैतन्यचन्द्रेर महा-मुख्य अनुचर ॥१३९
हेनमते हरिदास भासेन गङ्गाय ।
क्षणेके हइल बाह्य ईश्वर-इच्छाय ॥१४०
चैतन्य पाइया हरिदास महाशय ।
तीरे आसि उठिलेन परानन्दमय ॥१४१
सेइमते आइलेन फुलियानगरे ।
कृष्णनाम बलिते बलिते उच्चस्वरे ॥१४२
देखिया अद्भुत-शक्ति सकल यबन ।
सभार खण्डिल हिंसा भाल हैल मन ॥१४३
पीर-ज्ञान करि सभे कैल नमस्कार ।
सकल यबनगण पाइल निस्तार ॥१४४
कथोक्षणे बाह्य पाइलेन हरिदास ।
मुलुकपतिरे चा'हि हैल कृपा-हास ॥१४५
सम्भ्रमे मुलुकपति जुड़ि दुइ कर ।
बलिते लागिला किछु बिनय-उत्तर ॥१४६
"सत्यसत्य जानिलाङ तुमि महा-पीर ।
एकज्ञान तोमार से हइयाछे स्थिर ॥१४७

योगी ज्ञानी सब यत मुखे मात्र बोले ।
तुमि से पाइला सिद्धि महा-कुतूहले ॥१४
तोमारे देखिते मुञि आइलुँ एथारे ।
सब दोष महाशय! क्षमिबे आमारे ॥१४
सकल तोमार सम,—शत्रु मित्र नाञि ।
तोमा'चिने हेनजन त्रिभुवने नाञि ॥१५
चल तुमि, शुभ कर' आपन इच्छाय ।
गङ्गातीरे थाक गिया निर्जन-गोफाय ॥१५
आपन इच्छाय तुमि थाक यथा-तथा ।
ये तोमार इच्छा, ताहि करह सर्वथा ॥"१
हरिदासठाकुरेर चरण देखिले ।
उत्तमेर कि दाय, अधम देखि भुले ॥१५
एत क्रोधे आनिलेक मारिबार तरे ।
पीर-ज्ञान करि, आर पाये पाछे धरे ॥१५
यबनेरे कृपादृष्टि करिया प्रकाश ।
फुलियाय आइलेन ठाकुर हरिदास ॥१५
उच्च करि हरिनाम लइते लइते ।
आइलेन हरिदास ब्राह्मण सभाते ॥१५
हरिदासे देखि फुलियार विप्रगण ।
सभेइ हइला अति परानन्द मन ॥१५
हरिध्वनि विप्रगण लागिला करिते ।
हरिदास लागिलेन आनन्दे नाचिते ॥१५
अद्भुत अनन्त हरिदासेर बिकार ।
अश्रु, कम्प, हास्य, मूर्च्छा, पुलक, हुङ्कार ॥१५
आछाड़ खायेन हरिदास प्रेमरसे ।
देखिया ब्राह्मणगण महानन्दे भासे ॥१६
स्थिर हइ क्षणेके बसिला हरिदास ।
विप्रगण बसिलेन बेढ़ि चारिपाश ॥१६
हरिदास बोलेन "शुनह विप्रगण ।
दुःख ना भाबिह किछु आमार कारण ॥१६

प्रभु-निन्दा आमि शुनिलाङ ये अपार ।
तार शास्ति करिलेन ईश्वर आमार ॥१६३
भाल हैल, इथे बड़ पाइलुँ सन्तोष ।
अल्प शास्ति करि क्षमिलेन बड़-दोष ॥१६४
कुम्भीपाक हय विष्णु-निन्दन-श्रवणे ।
ताहा आमि विस्तर शुनिल पाप-काणे ॥१६५
योग्य शास्ति करिलेन ईश्वरे ताहार ।
हेन पाप आर येन नहे पुनर्वार ॥"१६६
हेनमते हरिदास विप्रगण-सङ्गे ।
निर्भये करेन सङ्कीर्त्तन महारङ्गे ॥१६७
ताहानेओ दुःख दिल ये-सब यबने ।
सवंशे उभिष्ट तारा हैल कथोदिने ॥१६८
तबे हरिदास गङ्गातीरे गोफा करि ।
थाकेन बिरले अहर्निश 'कृष्ण' स्मरि ॥१६९
तिन-लक्ष नाम दिने करेन ग्रहण ।
गोफाइ हइल तान वैकुण्ठ भवन ॥१७०
महा-नाग वैसे सेइ गोफार भितरे ।
तार ज्वाला प्राणि-मात्र सहिते ना पारे ॥१७१
हरिदासठाकुरेरे सम्भाषा करिते ।
यतेक आइसे,केहो ना पारे रहिते ॥१७२
परम बिषेर ज्वाला सभेइ पायेन ।
हरिदास पुनः इहा किछु ना जानेन ॥१७३
बसिया करेन युक्ति सर्व-विप्रगणे ।
"हरिदास-आश्रमे एतेक ज्वाला केने ?"१७४
सेइ फुलियाय वैसे महावैद्यगण ।
तारा आसि जानिलेक सर्पेर कारण ॥१७५
वैद्य बलिलेक "एइ गोफार तलाय ।
महा एक नाग आछे,ताहार ज्वालाय ॥१७६
रहिते ना पारे केहो, कहिल निश्चय ।
हरिदास सत्वरे चलुन अन्याश्रय ॥१७७
सर्पेर सहित बास कभु युक्त नहे ।
चल सभे कहि गिया ताहान आलये ॥"१७८
तबे सभे आसि हरिदासठाकुरेरे ।
कहिला वृत्तान्त सेइ गोफा छाड़िबारे ॥१७९
"महा-नाग वैसे एइ गोफार भितरे ।
ताहार ज्वालाय केहो रहिते ना पारे ॥१८०
अतएब एखाने रहिते योग्य नहे ।
अन्य स्थाने आसि तुमि करह आश्रये ॥"१८१
हरिदास बोलेन अनेक दिन आछि ।
कोनो ज्वालारिष्ट ए गोफाय नाहिवासि ॥१८२
तबे दुःख, तोमारा ये ना पार' सहिते ।
एतेके चलिब कालि आमि ये-से-भिते ॥१८३
सत्य यदि इहाते थाकेन महाशय ।
तिँहो यदि कालि ना छाड़ेन ए आलय ॥१८४
तबे आमि कालि छाड़ि याइब सर्वथा ।
चिन्ता नाहि तोमरा बोलह कृष्णगाथा ॥१८५
एइमत कृष्ण-कथा मङ्गल कीर्त्तने ।
थाकिते, अद्भुत अति हैल सेइक्षणे ॥१८६
"हरिदास छाड़िबेन" शुनिया बचन ।
महानाग स्थान छाड़िलेन सेइक्षण ॥१८७
गर्त्त हैते उठि सर्प सन्ध्यार प्रवेशे ।
सभेइ देखेन चलिलेन अन्य-देशे ॥१८८
परम-अद्भुत सर्प—महा-भयङ्कर ।
पीत-नील-शुक्लवर्ण—परम-सुन्दर ॥१८९
महामणि ज्वलितेछे मस्तक-उपरे ।
देखि भये विप्रगण 'कृष्णकृष्ण' स्मरे ॥१९०
सर्प से चलिया गेल, ज्वाला नाहि आर ।
विप्रगण हइलेन सन्तोष अपार ॥१९१
देखि हरिदासठाकुरेर महा-शक्ति ।
विप्रगणेर जन्मिल विशेष ताँरे भक्ति ॥१९२

हरिदासठाकुरेर ए कोन् प्रभाव ।
याँर वाक्य-मात्र स्थान छाड़िलेन नाग ॥१९३
याँर दृष्टिमात्र छाड़े अविद्या-बन्धन ।
कृष्ण ना लङ्घेन हरिदासेर बचन ॥१९४
आर एक शुन तान अद्भुत आख्यान ।
नागराजे ये महिमा कहिला ताहान ॥१९५
एकदिन एक बड़ लोकेर मन्दिरे ।
सर्पक्षत डङ्क-नाचे बिविध प्रकारे ॥१९६
मृदङ्ग-मन्दिरा-गीत—तारमन्त्र-घोरे ।
डङ्क बेढ़ि सभेइ गायेन उच्चस्वरे ॥१९७
दैवगति तथाय आइला हरिदास ।
डङ्क-नृत्य देखेन हइया एक-पाश ॥१९८
मनुष्य-शरीरे नाग-राज मन्त्र-बले ।
अधिष्ठान हइया नाचये कुतूहले ॥१९९
कालिदहे करिलेन ये नाट्य ईश्वरे ।
सेइ गीत गायेन कारुण्य उच्चस्वरे ॥२००
शुनि निज प्रभुर महिमा हरिदास ।
मूर्च्छित हइया पड़िलेन, नाहि श्वास ॥२०१
क्षणेके चैतन्य पाइ, करिया हुङ्कार ।
आनन्दे लागिला नृत्य करिते अपार ॥२०२
हरिदासठाकुरेर आवेश देखिया ।
एकभित हइ डङ्क रहिलेन गिया ॥२०३
गड़ागड़ि यायेन ठाकुर हरिदास ।
अद्भुत पुलक-अश्रु-कम्पेर प्रकाश ॥२०४
रोदन करेन हरिदास-महाशय ।
शुनिया प्रभुर गुण हइला तन्मय ॥२०५
हरिदासे वेढ़ि सभे गायेन हरिषे ।
जोड़हस्ते रहि डङ्क देखे एकपाशे ॥२०६
क्षणेके रहिल हरिदासेर आवेश ।
पुन आसि डङ्क-नृत्ये करिला प्रवेश ॥२०७

हरिदासठाकुरेर देखिया आवेश ।
सभेइ हइला अति आनन्द-विशेष ॥२०
येखाने पड़ये तान चरणेर धूलि ।
सभेइ लेपेन अङ्गे हइ कुतूहली ॥२०
आर एक ढङ्क विप्र थाकि सेइखाने ।
"मुञिओ नाचिमु आजि" गणे मने मने ॥२
बुझिलाङ "नाचिलेइ अबोध दर्बरे ।
अल्प-मनुष्येरेओ परम भक्ति करे ॥"२
एत भाबि सेइखाने आछाड़ खाइया ।
पड़िल येहेन महा अचेष्ट हइया ॥२१
येइ-मात्र पड़िल डङ्केर नृत्य-स्थाने ।
मारिते लागिला डङ्क महा-क्रोध मने ॥२१
आशेपाशे घाड़ेमुड़े बेत्रेर प्रहार ।
निर्घात मारये डङ्क, रक्षा नाहि आर ॥२१
बेत्रेर प्रहारे विप्र जर्जर हइया ।
'बाप बाप' बलि त्रासे गेल पलाइया ॥२१
तबे डङ्क निज-सुखे नाचिला बिस्तर ।
सभार जन्मिल बड़ बिस्मय अन्तर ॥२१
जोड़हस्ते सभे जिज्ञासेन डङ्क-स्थाने ।
"कह देखि ए विप्रेरे मारिला बा केने ॥२
हरिदास नाचिते बा जोड़ हस्त केने ।
रहिला ; ए सब कथा कह त आपने ?"२
तबे सेइ डङ्क-मुखे विष्णुभक्त नाग ।
कहिते लागिला हरिदासेर प्रभाव ॥२१
"तोमरा ये जिज्ञासिला ए बड़ रहस्य ।
यद्यपि अकथ्य, तभु कहिब अवश्य ॥२२
हरिदासठाकुरेर देखिया आवेश ।
तोमरा ये भक्ति बड़ करिला विशेष ॥२२
ताहा देखि, ओ ब्राह्मण आहार्य्य करिया ।
पड़िला मात्सर्य्य-बुद्धये आछाड़ खाइया ॥२२

आमारो कि नृत्य-सुख भङ्ग करिबारे ।
आहार्य्ये मात्सर्य्ये कोनो जन शक्ति धरे ?२२३
हरिदास-सङ्गे स्पर्द्धा मिथ्या करि करे ।
अतएब शास्ति बहु करिल उहारे ॥२२४
'बड़-लोक करि लोके जानुक् आमारे ।'
आपनारे प्रकटाइ धर्म-कर्म नरे ॥२२५
ए सकल दाम्भिकेर कृष्णे प्रीति नाइ ।
अकैतब हइले से कृष्ण भक्ति पाइ ॥२२६
एइ ये देखिलेन नाचिलेन हरिदास ।
ओ नृत्य देखिले सर्व-बन्ध हय नाश ॥२२७
हरिदास-नृत्ये कृष्ण नाचेन आपने ।
ब्रह्माण्ड पवित्र हये ओ-नृत्य-देखने ॥२२८
उहान से योग्य पद 'हरिदास' नाम ।
निरवधि कृष्ण बद्ध हृदये उहान ॥२२९
सर्वभूतवत्सल सभार उपकारी ।
ईश्वरेर सङ्गे प्रतिजन्मे अवतारी ॥२३०
उभि से निरपराध विष्णु-वैष्णवेते ।
स्वप्नेओ उहान दृष्टि ना याय बिपथे ॥२३१
तिलार्द्ध उहान सङ्ग ये जीवेर हय ।
से अवश्य पाय कृष्णपादपद्माश्रय ॥२३२
ब्रह्मा-शिवो हरिदास-हेन-भक्त-सङ्ग ।
निरवधि करिते चित्ते बड़ रङ्ग ॥२३३
'जाति कुल सर्व निरर्थक' बुझाइते ।
जन्मिलेन नीचकुले प्रभुर आज्ञाते ॥२३४
"अधम-कुलेते यदि विष्णुभक्त हय ।
तथापि सेइ से पूज्य' सर्व शास्त्रे कय ॥२३५
उत्तमकुलेते जन्मि श्रीकृष्ण ना भजे ।
कुले तार कि करिबे,नरकेते मजे' ॥२३६
ए सकल वेद-वाक्येर साक्षी देखाइते ।
जन्मिलेन हरिदास अधम-कुलेते ॥२३७
प्रह्लाद येहेन दैत्य, कपि हनूमान ।
सेइमत हरिदास नीच-जाति नाम ॥२३८
हरिदास-स्पर्शे बाञ्छा करे देवगण ।
गङ्गाओ बाञ्छेन हरिदासेर मज्जन ॥२३९
स्पर्शेर कि दाय, देखिलेओ हरिदास ।
छिण्डे सर्वजीवेर अनादि-कर्मपाश ॥२४०
हरिदास-आश्रय करिब येइ जन ।
ताने देखिलेओ खण्डे संसारबन्धन ॥२४१
शत-बर्षे शत-मुखे उहान महिमा ।
कहिलेओ नाहि पारि करिबारे सीमा ॥२४२
भाग्यवन्त तोमरा से, तोमा' सभा' हैते ।
उहान महिमा किछु आइल मुखेते ॥२४३
सकृत ये बलिबेक हरिदास-नाम ।
सत्यसत्य सेह याइबेक कृष्णधाम ॥"२४४
एत बलि मौन हइलेन नागराज ।
तुष्ट हइलेन शुनि सज्जन-समाज ॥२४५
हेन हरिदासठाकुरेर अनुभाब ।
कहिया आछेन पूर्वे श्रीवैष्णव-नाग ॥२४६
सभार परम प्रीति हरिदास-प्रति ।
नाग-मुखे शुनिया विशेष हैल अति ॥२४७
हेनमते वैसेन ठाकुर हरिदास ।
गौरचन्द्र ना करेन भक्तिर प्रकाश ॥२४८
सर्वदिगे विष्णुभक्ति-शून्य सर्वजन ।
उद्देश ना जाने केहो केमन कीर्त्तन ॥२४९
कोथाओ नाहिक विष्णुभक्तिर प्रकाश ।
वैष्णवेरे सभेइ करये परिहास ॥२५०
आपना आपनि सब साधुगण मेलि ।
गायेन श्रीकृष्णनाम दिया करतालि ॥२५१
ताहातेओ दुष्टगण महाक्रोध करे ।
पाषण्डे पाषण्डे मेलि बल्गियाइ मरे ॥२५२

"ए वामनगुला राज्य करिबेक नाश ।
इहासभा' हैते हैब दुर्भिक्ष-प्रकाश ॥२५३
ए वामनगुला सब मागिया खाइते ।
भावुक-कीर्त्तन करि नाना छला पाते ॥२५४
गोसाञिर शयन हय बर्षा चारिमास ।
इहाते कि युयाय डाकिते बड़ डाक ॥२५५
निद्राभङ्ग हैले क्रुद्ध हइब गोसाञि ।
दुर्भिक्ष करिब देशे, इथे द्विधा नाञि ॥"२५६
केहो बोले"यदि धान्ये किछु मूल्य चढ़े ।
तबे ए-गुलारे धरि किलाइमु घाड़े ॥"२५७
केहो बोले"एकादशी-निशि-जागरण ।
करिब गोविन्द-नाम करि उच्चारण ॥२५८
प्रतिदिन उच्चारण करिया कि काज ?"
एइमत बोले कत मध्यस्थ-समाज ॥२५९
दुःख पाय शुनिया सकल-भक्तगण ।
तथापि ना छाड़े केहो उच्च-संकीर्त्तन ॥२६०
भक्तियोगे लोकेर देखिया अनादर ।
हरिदासो दुःख बड़ पायेन अन्तर ॥२६१
तथापिह हरिदास उच्च-स्वर करि ।
बोलेन प्रभुर संकीर्त्तन मुख भरि ॥२६२
इहातेओ अत्यन्त दुष्कृति पापीगण ।
ना पारे शुनिते उच्च-हरिसंकीर्त्तन ॥२६३
हरिनदी-ग्रामे एक ब्राह्मण दुर्ज्जन ।
हरिदास देखि क्रोधे बोलये बचन ॥२६४
"अये हरिदास! एकि ब्याभार तोमार ।
डाकिया ये नाम लह, कि हेतु इहार ॥२६५
मनेमने जपिबा, एइ से धर्म हय ।
डाकिया लइते नाम कोन शास्त्रे कय ॥२६६
कार् शिक्षा हरिनाम डाकिमा लइते ।
एइ त पण्डित-सभा बोलह इहाते ?"२६७

हरिदास बोलेन "इहार यत तत्त्व ।
तोमरा से जान' हरिनामेर महत्त्व ॥२
तोमरा-सभार मुखे शुनिया से आमि ।
बलितेछि,बलिवाङ येबा किछु जानि ॥२
उच्च करि लइले शतगुण पुण्य हय ।
दोष त ना कहे शास्त्रे,गुण से वर्णाय ॥"

तथाहि—

उच्चैः शतगुणम्भवेत्" इति ॥२७१

अनुवाद ।

उच्चैःस्वर से श्रीहरिनाम ग्रहण करने शतगुण पुण्य होता है ।

विप्र बोले "उच्च-नाम करिले उच्चार ।
शत-गुण पुण्य हय, कि हेतु इहार ?"
हरिदास बोलेन "शुनह महाशय !
ये तत्त्व इहार वेदे भागवते कय ॥"२
सर्व-शास्त्र स्फुरे हरिदासेर श्रीमुखे ।
लागिला करिते व्याख्या कृष्णानन्द सुखे ॥
"शुन,विप्र! सकृत शुनिले कृष्णनाम ।
पशु,पक्षी, कीट याय श्रीवैकुण्ठ धाम ॥२

तथाहि श्रीभागवते दशमस्कन्धे सुदर्शनवा
'यन्नाम गृह्णन्नखिलान् श्रोतॄनात्मानमेव च
सद्यः पुनाति किं भूयस्तस्य स्पृष्टः पदा हि
॥"२

टीका ।

किञ्च त्वत्पादाब्जेन साक्षात् स्पृष्टोऽहं स्वलो वर्त्तिनः अन्यान् गत्वा स्वस्पर्शेन कृतार्थयिष्या किमुत आत्मानम् ? इत्याह, यन्नामेति । नामैकम गृह्णन्-उच्चारयन्, अपीति श्रद्धाद्यपेक्षा निरस्त गृह्णन् इति वर्त्तमानत्वेन सम्पूर्णत्वापेक्षा, अखि इति अधिकाराद्यपेक्षा, सद्य इति कालपेक्षा श्रोतॄन् इति केवलश्रवणप्राप्तिरेव अभिप्रे इत्यर्थ एव ; आत्मानमिवेति दृष्टान्तत्वेन श्र

कीर्त्तनयोः अविशेषोक्त्या माहात्म्यविशेषः सूचितः। चकारेण तत्तत्सम्बन्धिनोऽपि। तस्य पदा स्पृष्टः सन्, भूयः-अधिकं यथा स्यात् तथा, सर्वानेव तान् हि-निश्चितं, पुनामीति किं वक्तव्यमित्यर्थः।

अनुवाद।

जिनके नाम उच्चारण करने से उच्चारणकारी एवं नाम श्रवणकारी व्यक्ति सद्य मुक्त हो जाते हैं, मैं उनके चरण स्पर्श प्राप्तकर अधिकतर रूपसे अपने को एवं अपर समस्त व्यक्ति को अवश्य ही पवित्र करूँगा।

"पशु-पक्षी-कीट-आदि बलिते ना पारे।
शुनिले से हरिनाम तारा सब तरे॥२७७
जपिले से कृष्ण-नाम आपने से तरे।
उच्च-सङ्कीर्त्तने पर-उपकार करे॥२७८
अतएव उच्च करि कीर्त्तन करिले।
शत-गुण फल हय सर्व शास्त्रे बोले॥२७९

तथाहि श्रीनारदीये प्रह्लादवाक्यं—
"जपतो हरिनामानि स्थाने शतगुणाधिकः।
आत्मानञ्च पुनात्युच्चैर्जपन् श्रोतॄन् पुनाति च॥"२८०

टीका।

जपत इति। हरिनामानि जपतः-सुलघु उच्चारयतो जनात्, उच्चैर्जपन् जनः शतगुणाधिको भवतीति, स्थाने-युक्तम्। तत् कुतः? यतः केवलं हरिनाम जपन् आत्मानमेव पुनाति, उच्चैर्जपस्तु आत्मानं तथा श्रोतॄन् अपि पुनाति। अतस्तस्य शतगुणाधिकत्वं साम्प्रतमेव। शतगुणाधिकमिति पाठे शतगुणाधिकं फलं भवतीत्यध्याहार्य्यम्। उच्चैर्जपस्तु कीर्त्तनमेव; यथोक्तं श्रीभक्तिरसामृत-सिन्धौ पूर्वविभागे द्वितीयलहर्य्यां त्रिषष्टितमाङ्किते श्लोके—"नामरूपगुणादीनाम् उच्चैर्भाषा तु कीर्त्तनम्।" इति, तत्रैव पञ्चषष्टितमाङ्किते श्लोके—"मन्त्रस्य सुलघूच्चारो जप इत्यभिधीयते।"इति च।

अनुवाद।

श्रीहरिनाम जपपरायण व्यक्ति की अपेक्षा उच्चैः स्वर से हरिनाम ग्रहणकारी व्यक्ति श्रेष्ठ है। कारण, जपकारी व्यक्ति केवल स्वयं को पवित्र करता है। किन्तु उच्चैःस्वर से नाम ग्रहणकारी व्यक्ति, निज को एवं श्रोतृवृन्द को पवित्र करता है।

"जपकर्त्ता हैते उच्चसङ्कीर्त्तनकारी।
शतगुण अधिक पुराणे केने धरि॥२८१
शुन विप्र! मन दिया इहार कारण।
जपि आपनारे सबे करये पोषण॥२८२
उच्च करि करिले गोविन्दसङ्कीर्त्तन।
जन्तु-मात्र शुनियाइ पाय बिमोचन॥२८३
जिह्वा पाइयाओ नर विने सर्व-प्राणी।
ना पारे बलिते कृष्णनाम हेन ध्वनि॥२८४
व्यर्थजन्मा इहारा निस्तरे याहा हैते।
बोल देखि कोन् दोष से कर्म करिते॥२८५
केहो आपनारे मात्र करये पोषण।
केहो बा पोषण करे सहस्रेक जन॥२८६
दुइते के बड़, भाबि बुझह आपने।
एइ अभिप्राय शुन' उच्चसङ्कीर्त्तने॥"२८७
सेइ विप्र शुनि हरिदासेर कथन।
बलिते लागिला क्रोधे महा-दुर्वचन॥२८८
षड़दर्शन कर्त्ता एबे हैल हरिदास।
कालेकाले वेदपथ हय देखि नाश॥२८९
'युगशेषे शूद्रे वेद करिब बाखाने'।
एखनइ ताहा देखि, शेषे आर केने॥२९०
एइरूपे आपनारे प्रकट करिया।
घरेघरे भाल भोग खाइस् बुलिया॥२९१
ये व्याख्या करिलि तुइ,ए यदि ना लागे।
तबे तोर नाक काटि तुड़ि पूर' आगे॥"२९२

शुनि विप्राधमेर बचन हरिदास।
'हरि' बलि ईषत हइल किछु हास ॥२९३
प्रत्युत्तर आर किछु तारे ना करिया।
चलिलेन उच्च करि कीर्त्तन गाइया ॥२९४
ये बा पापी-सभासद सेहो पापमति।
उचित उत्तर किछु ना करिल इथि ॥२९५
ए सकल राक्षस, ब्राह्मण नाम मात्र।
एइ सब जन यम-यातनार पात्र ॥२९६
कलियुगे राक्षस सकल विप्रघरे।
जन्मिबेक सुजनेर हिंसा करिबारे ॥२९७

तथाहि बराह पुराणे महेशवाक्यं—

"राक्षसाः कलिमाश्रित्य जायन्ते ब्रह्मयोनिषु।
उत्पन्ना ब्राह्मणकुले बाधन्ते श्रोत्रियान् कृशान्॥"२९८

टीका।

राक्षसा इति। अत्र श्रोत्रियाणां कृशत्वं तावत् वेदाध्ययनादि-स्वधर्मपरिहीनत्वमेव;-जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते। विद्याभ्यासी भवेद्विप्रः श्रोत्रियस्त्रिभिरेव हि॥' (पाद्मोत्तरखण्डे ११६ अध्याये) इत्यत्र,-"एकां शाखां सकल्पां वा षड्भिरङ्गैरधीता च। षट्कर्मनिरतो विप्रः श्रोत्रियो नाम धर्मवित्॥" (दानकमलाकरे) इत्यत्तच वेदाध्ययनादि स्वधर्मपरिपालनत्वमेव श्रोत्रियस्य श्रोत्रियत्वं निरूपितं शास्त्रकृद्भिः; कलिप्रभावेण तद्धर्मापरिपालनात् तेषां कार्श्यं सञ्जातमित्य-वगन्तव्यम्। यद्वा स्वल्पसंख्यकत्वमेवात्र तेषां कृशत्वम्। कलौ खलु ब्राह्मणा वेदविद्याविहीना भविष्यन्तीति पुराणेतिहासादिषु बहुशः प्रदर्शितमस्ति।

अनुवाद।

राक्षसगण कलियुग समागत होने से ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होते हैं, वेदाध्यनादि हीन होने से धर्म क्षीण होता है, जन्म से ब्राह्मण होता है, संस्कार प्राप्त होने से उनका द्विज नाम होता विद्याभ्यासी को विप्र करते हैं, जन्म संस्कार विद्याभ्यासी का नाम श्रोत्रिय है। कलिप्रभा अध्ययनादि धर्मपालन नहीं होता है, अतः ब्रा की संख्या स्वल्प हो जाती है। कलियुग में ब्राह्म गण वेदविद्या विहीन होंगे।

ए सब विप्रेर स्पर्श, कथा, नमस्कार।
धर्मशास्त्रे सर्वथा निषेध करिबार ॥२

तथाहि पद्मपुराणे महेशवाक्यं—

"किमत्र बहुनोक्तेन ब्राह्मणा ये ह्यवैष्णवा
तेषां सम्भाषणं स्पर्शं प्रमादेनापि वर्ज्जं
॥"३

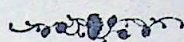
अनुवाद।

अधिक कहनेका प्रयोजन क्या है, ब्रा होकर भी जो व्यक्ति अवैष्णव है, प्रमाद से उनसब के सहित सम्भाषणादि न करे।

ब्राह्मण हइया यदि अवैष्णव हय।
तबे तार आलापेओ याय पुण्य क्षय ॥३
से विप्राधमेर कथोदिवस थाकिया।
बसन्ते नासिका तार पड़िल खसिया ॥३
हरिदासठाकुरेरे बलिलेक येन।
कृष्णओ ताहार शास्ति करिलेन तेन ॥३
भक्तिशून्य जगत् देखिया हरिदास।
दुःखे 'कृष्णकृष्ण' बलि छाड़ेन निश्वास ॥३
कथोदिन वैष्णव देखिते इच्छा करि।
आइलेन हरिदास नवद्वीपपुरी ॥३
हरिदासे देखिया सकल भक्तगण।
हइलेन अतिशय परानन्दमन ॥३
आचार्य्यगोसाञि हरिदासेरे पाइया।
राखिलेन प्राण हैते अधिक करिया ॥३
सर्व-वैष्णवेर प्रीति हरिदास-प्रति।
हरिदासो सभारे करेन भक्ति अति ॥३

पाषण्डी सकले यत देइ व्याक्यज्वाला ।
अन्योऽन्ये सब ताहा कहिते लागिला ॥३०९
गीता भागवत लइ सर्वभक्तगण ।
अन्योऽन्ये विचारे थाकेन सर्वक्षण ॥३१०
ये जने शुनये पढ़े ए सब आख्यान ।
ताहारे मिलिब गौरचन्द्र भगवान् ॥३११
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥३१२

इति श्रीचैतन्यभागवते आदिखण्डे श्रीहरिदासमहिमवर्णनं नाम एकादशोऽध्यायः ॥



द्वादश अध्याय

जयजय श्रीगौरसुन्दर महेश्वर ।
जय नित्यानन्दप्रिय नित्य-कलेवर ॥१
जय सर्व-वैष्णवेर धन मन प्राण ।
कृपादृष्टेचे कर' प्रभु सर्वजीवे त्राण ॥२
आदिखण्ड-कथा भाइ! शुन सावधाने ।
श्रीगौरसुन्दर गया चलिला येमने ॥३
हेनमते नवद्वीपे श्रीवैकुण्ठनाथ ।
अध्यापक-शिरोमणि-रूपे करे बास ॥४
चतुर्द्दिगे पाषण्ड बाढ़ये गुरुतर ।
भक्तियोग नाम हैल शुनिते दुष्कर ॥५
मिथ्या रसे देखि अति लोकेर आदर ।
भक्त-सब दुःख बड़ भावेन अन्तर ६
प्रभु से आविष्ट हइ आछेन अध्ययने ।
भक्तसभे दुःख पाय देखेन आपने ॥७
निरवधि वैष्णव सभेरे दुष्टगणे ।
निन्दा करि बुले, ताहा शुनेन आपने ॥८
चित्ते इच्छा हैल आत्मप्रकाश करिते ।
भाबिलेन "आगे आसि गिया गया हैते ॥" ९
इच्छामय श्रीगौराङ्गसुन्दर भगवान् ।
गयाभूमि देखिते हइल इच्छा तान ॥१०
शास्त्र विधिमत श्राद्धकर्म्मादि करिया ।
यात्रा करि चलिला अनेक शिष्य लैया ॥११
जननीर आज्ञा लइ महा-हर्ष-मने ।
चलिलेन महाप्रभु गया-दरशने ॥१२
सर्व देश ग्राम करि पुण्य तीर्थमय ।
श्रीचरण हैल गया देखिते विजय १३
धर्मकथा वाकोवाक्य परिहास रसे ।
मन्दारे आइला प्रभु कथोक दिवसे ॥१४
देखिया मन्दारे-मधुसूदन तथाय ।
भ्रमिलेन सकल-पर्वत स्वलीलाय ॥१५
एइमत कथो पथ आसिते आसिते ।
आरदिन ज्वर प्रकाशिलेन देहेते ॥१६
प्राकृत-लोकेर प्राय वैकुण्ठ-ईश्वर ।
लोक-शिक्षा देखाइते धरिलेन ज्वर ॥१७
मध्यपथे ज्वर प्रकाशिलेन ईश्वरे ।
शिष्यगण हइलेन चिन्तित अन्तरे ॥१८
पथे रहि करिलेन बहु प्रतिकार ।
तथापि ना छाड़े ज्वर, हेन इच्छा ताँर ॥१९
तबे प्रभु व्यवस्थिला औषध आपने ।
'सर्व-दुःख खण्डे विप्रपादोदक-पाने ॥'२०

विप्रपादोदकेर महिमा बुझाइते।
पान करिलेन प्रभु आपने साक्षाते ॥२१
विप्रपादोदक पान करिया ईश्वर।
सेइक्षणे सुस्थ हैला, आर नाहि ज्वर ॥२२
ईश्वर से करे विप्रपादोदक-पान।
ए तान स्वभाव वेद-पुराण-प्रमाण ॥२३

तथाहि श्रीगीतायां (४।११)—

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थ! सर्वशः॥" २४

टीका।

ननु नित्यजन्मादिमनांज्ञः सर्वेश्वरस्त्वं मयावगतः क्वचित् अङ्गुष्ठमात्रादिरपि ईश्वरो जन्मादिशून्यः श्रूयते तत् किं तव त्वदुपासनस्य च वैविध्यं भवेदिति चेत्? ये यथेति। यथा येन प्रकारेण मां प्रपद्यन्ते भजन्ते। अहमपि तान् तेनैव प्रकारेण भजनफलं ददामि अयमर्थः। ये "मत्प्रभोर्ज्जन्मकर्मणी नित्ये एवेति मनसि कुर्वाणास्तत्तल्लीलायामेव कृतमनोरथविशेषाः मां भजन्तः सुखयन्ति अहमपि ईश्वरत्वात् कर्त्तुमपि समर्थस्तेषामपि जन्मकर्मणोर्नित्यत्वं कर्त्तुं तान् स्वपार्षदीकृत्य तैः सार्द्धम् एव यथासमयमवतरन्नन्तर्द्धनश्च तान् प्रतिक्षणमनुगृह्णन्नेव तद्भजनफलं प्रेमाणमेव ददामि। ये ज्ञानिप्रभृतयो मज्जन्मकर्मणोर्नश्वरत्वं मद्विग्रहस्य मायामयत्वञ्च मन्यमानाः मां प्रपद्यन्ते अहमपि तान् पुनः पुनर्नश्वरजन्मकर्मवतो मायापाशपतितानेव कुर्वाणः तत्प्रतिफलं जन्ममृत्युदुःखमेव ददामि। ये तु मज्जन्मकर्मणोर्नित्यत्वं मद्विग्रहस्य च सच्चिदानन्दत्वं मन्यमाना ज्ञानिनः स्वज्ञानसिद्ध्यर्थं मां प्रपद्यन्ते। तेषां स्वदेहद्वयभङ्गमेवेच्छतां मुमुक्षूणामनश्वरं ब्रह्मानन्दमेव सम्पादयन् भजनफलमाविद्यिकजन्ममृत्युध्वंसम् एव ददामि तस्मान्न केवलं मद्भक्ताः एव मां प्रपद्यन्ते अपितु सर्वशः सर्वेऽपि मनुष्याः ज्ञानिनः कर्म्मिणः योगिनश्च देवतान्तरोपासकाश्च मम वर्त्म अनुवर्त्तन्ते। मम सर्वस्वरूपत्वात् ज्ञानकर्मादिकं सर्वं मामकमेव वर्त्मेति भावः।

अनुवाद।

जो व्यक्ति जिस प्रकार रीति से मेरा भ[...] करता है, मैं उसका भजन उस रीति से ही क[...] हूँ। हे पार्थ! मनुष्यगण सब प्रकार से [...] अनुसरण करते हैं।

ये ताहान दास्य-पद भावे निरन्तर।
ताहारो अवश्य दास्य करेन ईश्वर ॥२५
अतएब नाम तान 'सेवकवत्सल'।
आपने हारिया बाढ़ायेन भृत्य-बल ॥२६
सर्वत्र रक्षक हेन प्रभुर चरण।
बोल देखि केमते छाड़िब भक्तगण ?२७
हेनमते करि प्रभु ज्वरेर बिनाश।
'पुन पुना'-तीर्थे आसि हइला प्रकाश ॥२८
स्नान करि पितृ-देव करिया अर्च्चन।
गयाते प्रविष्ट हैला श्रीशचीनन्दन ॥२९
गया-तीर्थराजे प्रभु प्रविष्ट हइया।
नमस्करिलेन प्रभु श्रीकर जुड़िया ॥३०
ब्रह्मकुण्डे आसि प्रभु करिलेन स्नान।
यथोचित कैला पितृदेवेर सम्मान ॥३१
तबे आइलेन चक्रबेढ़ेर भितरे।
पादपद्म देखिबारे चलिला सत्वरे ॥३२
विप्रगणे बेढ़ि आछे श्रीचरणस्थान।
श्रीचरणे माला येन देउल-प्रमाण ॥३३
गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, वस्त्र, अलङ्कार।
कत पड़ियाछे, लेखा-जोखा नाहि तार ॥३४
चतुर्द्दिके विप्ररूप धरि देवगण।
करितेछे पादपद्म-प्रभाब-वर्णन ३५
"काशीनाथ हृदये धरिला ये चरण।
ये चरण निरवधि लक्ष्मीर जीवन ॥३६
बलि-शिरे आविर्भाब हैल ये चरण।
सेइ एइ देखे यत भाग्यवन्त-जन ॥३७

तिलार्द्धेको ये चरण ध्यान कैले मात्र।
यम तार ना हयेन अधिकार पात्र ॥३८
योगेश्वर-सभेरो दुर्ल्लभ ये चरण।
सेइ एइ देखे यत भाग्यवन्त-जन ॥३९
"ये चरणे भागीरथी हइला प्रकाश।
निरवधि हृदये ना छाड़े यारे दास ॥४०
अनन्त-शय्याय अति-प्रिय ये चरण।
सेइ एइ देखे यत भाग्यवन्त-जन!"४१
चरणप्रभाव शुनि विप्रगण-मुखे।
आविष्ट हइला प्रभु प्रेमानन्दसुखे ॥४२
अश्रुधारा बहे दुइ श्रीपद्मनयने।
लोमहर्ष कम्प हैल चरण दर्शने ॥४३
सर्वजगतेर भाग्ये प्रभु गौरचन्द्र।
प्रेमभक्ति-प्रकाशेर करिला आरम्भ ॥४४
अविच्छिन्न-गङ्गा वहे प्रभुर नयने।
परम अद्भुत सब देखे विप्रगणे ॥४५
दैवयोगे ईश्वरपुरीओ सेइक्षणे।
आइलेन ईश्वर-इच्छाय सेइस्थाने ॥४६
ईश्वरपुरीरे देखि श्रीगौरसुन्दर।
नमस्करिलेन बड़ करिया आदर ॥४७
ईश्वरपुरीओ गौरचन्द्रेरे देखिया।
आलिङ्गन करिलेन महा-हर्ष हैया ॥४८
दोँहार विग्रह दोँहाकार प्रेमजले।
सिञ्चित हइला प्रेमानन्द-कुतुहले ॥४९
प्रभु बोले "गयायात्रा सफल आमार।
यतक्षणे देखिलाङ चरण तोमार ॥५०
तीर्थे पिण्ड दिले से निस्तरे पितृगण।
सेहो यारे पिण्ड दिये, तरे' सेइ जन ॥५१
तोमा' देखिलेइ मात्र कोटि-पितृगण।
सेइक्षणे सर्व-बन्ध पाय विमोचन ॥५२
अतएव तीर्थ नहे तोमार समान।
तीर्थेरो परम तुमि मङ्गल-प्रदान ॥५३
संसारसमुद्र हैते उद्धारो आमारे।
एइ आमि देह समर्पिलाङ तोमारे ॥५४
'कृष्णपादपद्मेर अमृत-रस-पान।
आमारे कराओ तुमि' एइ चाहि दान ॥"५५
बोलेन ईश्वरपुरी "शुनह पण्डित।
तुमि ये ईश्वर-अंश अति सुनिश्चित ॥५६
ये तोमार पाण्डित्य, ये चरित्र तोमार।
सेहो 'कि ईश्वर-अंश-बइ हय आर?५७
येन आजि आमि शुभस्वप्न देखिलाङ।
साक्षाते ताहार फल एइ पाइलाङ ॥५८
सत्य कहि पण्डित! तोमार दरशने।
परानन्द-सुख येन पाइ अनुक्षणे ॥५९
यदवधि तोमा' देखियाछि नदीयाय।
तदवधि चित्ते आर किछु नाहि भाय ॥६०
सत्य एइ कहि, इथे किछु अन्य नाइ।
कृष्ण-दरशन-सुख तोमा' देखि पाइ ॥"६१
शुनि प्रिय ईश्वरपुरीर सत्य वाक्य।
हासिया बोलेन प्रभु "मोर बड़ भाग्य ॥"६२
एइमत कत आर कौतुक-सम्भाष।
यत हैल, ताहा वर्णिबेन वेदव्यास ॥६३
तबे प्रभु तान स्थाने अनुमति लैया।
तीर्थश्राद्ध करिबारे बसिला आसिया ॥६४
फल्गुतीर्थे करि बालुकार पिण्ड दान।
तबे गेला गिरिशृङ्गे प्रेतगया-स्थान ॥६५
प्रेतगया-श्राद्ध करि श्रीशचीनन्दन।
दक्षिणाये वाक्ये तुषिलेन विप्रगण ॥६६
तबे उद्धारिया पितृगण सन्तर्पिया।
दक्षिणमानसे चलिलेन हर्ष हैया ॥६७

तबे चलिलेन प्रभु श्रीरामगयाय ।
राम-अवतारे श्राद्ध करिला यथाय ॥६८
एहो अवतारे सेइ स्थाने श्राद्ध करि ।
तबे युधिष्टिर-गया गेला गौरहरि ॥६९
पूर्वे युधिष्ठिर पिण्ड दिलेन तथाय ।
सेइ प्रीते तथा श्राद्ध कैला गोरराय॥७०
चतुर्द्दिगे प्रभुरे बेढ़िया विप्रगण ।
श्राद्ध करायेन सभे पढ़ान बचन ॥७१
श्राद्ध करि प्रभु, पिण्ड फेले येइ जले ।
गयालि ब्राह्मण सब धरि धरि गिले ॥७२
देखिया हासेन प्रभु श्रीशचीनन्दन ।
से सब विप्रेरो यत खण्डिल बन्धन॥७३
उत्तरमानसे प्रभु पिण्ड दान करि ।
भीमगया करिलेन गौराङ्ग श्रीहरि ॥७४
शिवगया ब्रह्मगया आदि यत आछे ।
सब करि षोड़शगयाय गेला पाछे ॥७५
षोड़शगयाय प्रभु षोड़शी करिया ।
सभारे दिलेन पिण्ड श्रद्धायुक्त हैया ॥७६
तबे महाप्रभु ब्रह्मकुण्डे करि स्नान ।
गयाशिरे आसि करिलेन पिण्ड-दान ॥७७
दिव्य माला चन्दन श्रीहस्ते प्रभु लैया ।
विष्णुपदचिह्न पूजिलेन हर्ष हैया ॥७८
एइमत सर्वस्थाने श्राद्धादि करिया ।
वासाय चलिला विप्रगणे सन्तोषिया ॥७९
तबे महाप्रभु कथोक्षणे सुस्थ हैया ।
रन्धन करिते प्रभु बसिलेन गिया ॥८०
रन्धन सम्पूर्ण हैल हेनइ समय ।
आइलेन ईश्वरपुरी महाशय ॥८१
प्रेमयोगे कृष्णनाम बलिते बलिते ।
आइलेन मत्तप्राय ढुलिते ढुलिते ॥८२
रन्धन एड़िया प्रभु परम-संभ्रमे ।
नमस्करि ताने बसाइलेन आसने ॥८३
हासिया बोलेन पुरी "शुनह पण्डित !
भाल त समये हइलाङ उपनीत ॥"८
प्रभु बोले "यबे हैल भाग्येर उदय ।
एइ अन्न भिक्षा आजि कर' महाशय !"८
हासिया बोलेन पुरी "तुमि कि खाइबे ?"
प्रभु बोले "आमि अन्न रान्धिवाङ सबे ॥"८
पुरी बोले "कि कार्य्यें करिबे आर पाक ?
ये अन्न आछये ताहि कर' दुइभाग ॥"८
हासिया बोलेन प्रभु "यदि आमा' चाओ ।
ये अन्न हैयाछे ताहा तुमि सब खाओ ॥८८
तिलार्द्धेके आर अन्न रान्धिवाङ आमि ।
ना कर'सङ्कोच किछु,भिक्षा कर तुमि ॥"८
तबे प्रभु आपनार अन्न ताने दिया ।
आर अन्न रान्धिते लागिला हर्ष हैया ॥९०
हेन कृपा प्रभुर ईश्वरपुरी-प्रति ।
पुरीरो नहिक कृष्ण-छाड़ा अन्य-मति ॥९१
श्रीहस्ते करेन प्रभु ये परिवेशन ।
परानन्द-सुखे पुरी करेन भोजन ॥९२
सेइक्षणे रमा-देवी अति अलक्षिते ।
प्रभुर निमित्ते अन्न रान्धिला त्वरिते ॥९३
तबे प्रभु आगे ताने भिक्षा कराइया ।
आपनेओ भोजन करिला हर्ष हैया ॥९४
ईश्वरपुरीर सङ्गे प्रभुर भोजन ।
इहार श्रवणे मिले कृष्ण प्रेमधन ॥९५
तबे प्रभु ईश्वरपुरीर सर्व अङ्गे ।
आपने श्रीहस्ते लेपिलेन दिव्य-गन्धे ॥९६
यत प्रीति ईश्वरेर ईश्वरपुरीरे ।
ताहा वर्णिबारे कोन् जन शक्ति धरे ॥९७

आपने ईश्वर श्रीचैतन्य भगवान्।
देखिलेन ईश्वरपुरीर जन्मस्थान ॥९८
प्रभु बोले "कुमारहट्टेरे नमस्कार।
श्रीईश्वरपुरीर ये-ग्रामे अवतार॥" ९९
कान्दिलेन विस्तर चैतन्य सेइस्थाने।
आर शब्द किछु नाइ 'ईश्वरपुरी' विने॥१००
से-स्थानेर मृत्तिका आपने प्रभु तुलि।
लइलेन बहिर्वासे बान्धि एक झुलि॥१०१
प्रभु बोले "ईश्वरपुरीर जन्मस्थान।
ए मृत्तिका मोहर जीवन धन प्राण॥" १०२
हेन ईश्वरेर प्रीति ईश्वरपुरीरे।
भक्तेरे बाढ़ाते प्रभु सब शक्ति धरे॥१०३
प्रभु बोले "गया करिते ये आइलाङ।
सत्य हैल, ईश्वरपुरीरे देखिलाङ॥१०४
आरदिने निभृते ईश्वरपुरीर स्थाने।
मन्त्रदीक्षा चाहिलेन मधुर-बचने॥१०५
पुरी बोले "मन्त्र बा वलिया कोन् कथा।
प्राण आमि दिते पारि तोमारे सर्वथा॥" १०६
तबे तान स्थाने शिक्षागुरु नारायण।
करिलेन दशाक्षर मन्त्रेर ग्रहण॥१०७
तबे प्रभु प्रदक्षिण करिया पुरीरे।
प्रभु बोले "देह आमि दिलाङ तोमारे॥१०८
हेन शुभदृष्टि तुमि करह आमारे।
येन आमि भासि कृष्णप्रेमेर सागरे॥" १०९
शुनिया प्रभुर वाक्य श्रीईश्वरपुरी।
प्रभुरे दिलेन आलिङ्गन बक्षे धरि॥११०
दोँहार नयनजले दोँहार शरीर।
सिञ्चित हइल प्रेमे' केहो नहे स्थिर॥१११
हेनमते ईश्वरपुरीरे कृपा करि।
कथोदिन गयाय रहिला गौरहरि॥११२
आतमप्रकाशेर आसि हइल समय।
दिने दिने बाढ़े प्रेमभक्तिर विजय॥११३
एकदिन महाप्रभु बसिया निभृते।
निज-इष्ट-मन्त्र ध्यान लागिला करिते॥११४
ध्यानानन्दे महाप्रभु बाह्य प्रकाशिया।
करिते लागिला प्रभु रोदन डाकिया॥११५
"कृष्ण रे बाप रे! मोर जीवन श्रीहरि!
कोन् दिगे गेला मोर प्राण करि चुरि॥११६
पाइलोँ ईश्वर मोर कोन दिगे गेला?"
श्लोक पढ़ि पढ़ि प्रभु कान्दिते लागिला॥११७
प्रेमभक्तिरसे मग्न हइला ईश्वर।
सकल श्रीअङ्ग हैल धूलाय धूसर॥११८
आर्त्तनाद करि प्रभु डाके उच्चस्वरे।
"कोथा गेला बाप कृष्ण! छाड़िया मोहरे?" ११९
ये प्रभु आछिला अति-परम-गम्भीर।
से प्रभु हइला प्रेमे परम-अस्थिर॥१२०
गड़ागड़ि यायेन कान्देन उच्चस्वरे।
भासिलेन निज-भक्ति-विरह-सागरे॥१२१
तबे कथोक्षणे आसि सर्व-शिष्यगणे।
सुस्थ करिलेन आसि अशेष-यतने॥१२२
प्रभु बोले "तोमरा सकले याह घरे।
मुञि आर ना याइमु संसार भितरे॥१२३
मथुरा देखिते मुञि चलिब सर्वथा।
प्राणनाथ मोर कृष्णचन्द्र पाङ यथा॥" १२४
नाना-रूपे सर्व-शिष्यगणे प्रबोधिया।
स्थिर करि राखिलेन सभेइ मिलिया॥१२५
भक्तिरसे मग्न हइ वैकुण्ठेर पति।
चित्ते स्वास्थ्य ना पायेन, रहिबेन कति॥१२६
काहारे ना बलि प्रभु कथो-रात्रि-शेषे।
मथुराते चलिलेन प्रेमेर आवेशे॥१२७

'कृष्ण रे बाप रे मोर पाइमु कोथाय ?'
एइमत बलिया यायेन गौरराय ॥१२८
कथो दूर याइते शुनेन दिव्यवाणी ।
"एखने मथुरा ना याइबा द्विजमणि ! १२९
याइबार काल आछे, याइबा तखने ।
नवद्वीपे निज-गृहे चलह एखने ॥१३०
तुमि श्रीवैकुण्ठनाथ लोक निस्तारिते ।
अवतीर्ण हइयाछ सभार सहिते ॥१३१
अनन्त-ब्रह्माण्डमय करिया कीर्त्तन ।
जगतेरे बिलाइबा प्रेमभक्तिधन ॥१३२
ब्रह्मा-शिव-सनकादि ये रसे बिह्वल ।
महाप्रभु अनन्त गायेन ये मङ्गल ॥१३३
ताहा तुमि जगतेरे दिबार कारणे ।
अवतीर्ण हइयाछ, जानह आपने ॥१३४
सेवक आमरा तभु चाहि कहिबार ।
अएतब कहिलाङ चरणे तोमार ॥१३५
आपनार विधाता आपने तुमि प्रभु ।
तोमार ये इच्छा, से लङ्घन नहे कभु ॥१३६
अतएव महाप्रभु ! चल तुमि घर ।
विलम्बे देखिबा आसि मथुरानगर ॥"१३७
शुनिया आकाशवाणी श्रीगौरसुन्दर ।
निवर्त्त हइला प्रभु हरिष-अन्तर ॥१३८
वासाय आसिया सर्वशिष्येर सहिते ।
निज-गृहे चलिलेन भक्ति प्रकाशिते ॥१३९
नवद्वीपे गौरचन्द्र करिला विजय ।
दिनेदिने बाढ़े प्रेमभक्तिर उदय ॥१४०
आदिखण्ड-तथा परिपूर्ण एइ हैते ।
मध्यखण्ड-कथा एबे शुन भालमते ॥१४१
ये बा शुने ईश्वरेर गयार विजय ।
गौरचन्द्र-प्रभु तारे मिलिबे निश्चय ॥१४२
कृष्णयश शुनिते से कृष्ण-सङ्ग पाइ ।
ईश्वरेर सङ्ग तार कभु त्याग नाइ ॥१४
अन्तर्य्यामी नित्यानन्द बलिला कौतुके ।
चैतन्य चरित्र किछु लिखिते पुस्तके ॥१४
ताहान कृपाय लिखि श्रीचैतन्य कथा ।
स्वतन्त्र इहाते शक्ति नाहिक सर्वथा ॥१४
काष्ठेर पुतलि येन कुहके नाचाय ।
एइमत गौरचन्द्र मोरे ये बोलाय ॥१४
चैतन्य कथार आदि अन्त नाहि जानि ।
ये-ते-मते चैतन्येर यश से बाखानि ॥१४
पक्षी येन आकाशेर अन्त नाहि पाय ।
यतदूर शक्ति ततदूर उड़ि याय ॥१४
एइमत चैतन्य यशेर अन्त नाइ ।
यार यत शक्ति, कृपा सभे ताइ गाइ ॥१४

तथाहि (भा० १।१८।२३)—

"नभः पतन्त्यात्मसमं पतत्रिण-
स्तथा समं विष्णुगतिं विपश्चितः ॥"१५

टीका ।

नभ इति । यथा पक्षिणः, आत्मसमं-स्वशक्तयनुरूपम् एव नभः उत्पतन्ति' न तु कृत्स्न तथा विपश्चितः-विद्वांसः, अपि विष्णोः गति-लीलां, समं-स्वमत्यनुरूपम् एव, वदन्तीत्यर्थः ।

अनुवाद ।

पक्षिसमूह स्वीय शक्ति के अनुसार आकाश में उड़ते रहते हैं, पण्डितगण भी उक्त रूप ही बुद्धि को शक्ति के अनुसार श्रीभगवान् की लीला वर्णन करते हैं ।

सर्व-वैष्णवेर पा'ये मोर नमस्कार ।
इथे अपराध किछु नहुक आमार ॥१५१
संसारेर पार हैया भक्तिर सागरे ।
ये डुबिबे से भजुक् निताइचान्देरे ॥१५२
आमार प्रभुर प्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
उ बड़ भरसा चित्ते धरि निरन्तर ॥१५३

केहो बोले''प्रभु नित्यानन्द बलराम ।''
केहो बोले''चैतन्येर महा-प्रिय-धाम ॥''१५४
केहो बोले''महा तेजीयान् अधिकारी ।''
केरो बोले''कोनरूप बुझिते ना पारि ॥''१५५
किबा यति नित्यानन्द,किबा भक्त ज्ञानी ।
यार येन-मत इच्छा ना बोलये केनि ॥१५६
ये से केने चैतन्येर नित्यानन्द नहे ।
से चरण-धन मोर रहुक हृदये ॥१५७
एत परिहारेओ ये पापी निन्दा करे ।
तबे लाथि मारों तार शिरेर उपरे ॥१५८
जयजय नित्यानन्द चैतन्य जीवन ।
तोमार चरण मोर हउक शरण ॥१५९
तोमार हइया येन गौरचन्द्र गाङ ।
जन्मेजन्मे येन तोमा' संहति बेड़ाङ ॥१६०
ये शुनये आदिखण्डे चैतन्येर कथा ।
ताहारे श्रीगौरचन्द्र मिलिब सर्वथा ॥१६१
ईश्वरपुरीर स्थाने हइया बिदाय ।
गृहे आइलेन प्रभु श्रीगौराङ्ग-राय ॥१६२
शुनि सर्वनवद्वीप हैल आनन्दित ।
प्राण आसि देहे येन हैल उपनीत ॥१६३
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचन्द्र जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१६४
आदिखण्ड कथा ये श्रृण्वन्ति महात्मानः ।
सर्वापराधनिर्मुक्तास्ते भवन्ति सुनिश्चितम्॥१६५
ये पठन्ति महात्मानो विलिखन्ति परादरैः ।
प्रलयेऽपि च तेषां वै तिष्ठत्येव हरेः स्मृतिः॥१६६
जन्मारभ्य गयाभूमिगमने यः कथोदयः ।
तत् कथ्यते विज्ञजनैनादिखण्डस्य लक्षणम्॥१६७
कारुण्ये भक्तिदातृत्वे चैतन्यगुणवर्णने ।
अमायाकथने नास्ति नित्यानन्दसमःप्रभु ॥१६८

अनुवाद ।

जो सब महात्मा आदिखण्ड की अलौकिक कथा श्रवण करते हैं, वे सब निखिल अपराध से मुक्त होते हैं, सन्देह नहीं हैं ।

जो सब महात्मा आदर पूर्वक आदिखण्ड को लिपि बद्ध करते हैं, उन सबकी श्रीहरि स्मृति प्रलय में भी अक्षुण्ण रहती हैं ।

श्रीमन् महाप्रभु के जन्म से आरम्भ कर गया-धाम गमन पर्य्यन्त विन्यस्त कथा समूह को आदिखण्ड कहते हैं ।

करुणा प्रकाश, भक्तिप्रदान, श्रीचैतन्य गुणवर्णन, एवं अकपट व्यवहार, यह सब विषयों में नित्यानन्द के समकक्ष अपर कोई नहीं है ।

इति श्रीचैतन्यभागवते आदिखण्डे गयाभूमिगमनवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ।

*** समाप्तश्चायम् आदिखण्डः ***

ॐ श्रीहरिः ॐ



श्रीश्रीगदाधरगौरांगौ जयतः

श्रीचैतन्यभागवत

श्रीलवृन्दावनदासठाकुरविरचित

मध्यखण्ड

प्रथम अध्याय

(मङ्गलाचरण)

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ ।
सङ्कीर्त्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्मपालौ ।
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ ॥१
नमस्त्रिकालसत्याय जगन्नाथसुताय च ।
सभृत्याय सपुत्राय सकलत्राय ते नमः ॥२
जय जय जय विश्वम्भर द्विजराज ।
जय विश्वम्भरप्रिय वैष्णवसमाज ॥३
जय गौरचन्द्र धर्मसेतु महा-धीर ।
जय सङ्कीर्त्तनमय सुन्दर शरीर ॥४
जय नित्यानन्देर बान्धव धन प्राण ।
जय गदाधर-अद्वैतेर प्रेमधाम ॥५
जय श्रीजगदानन्द-प्रिय-अतिशय ।
जय बक्रेश्वर-काशीश्वरेर हृदय ॥६
जय जय श्रीवासादि-प्रियवर्ग-नाथ ।
जीव प्रति कर प्रभु शुभ दृष्टिपात ॥७
मध्यखण्ड-कथा येन अमृतेर खण्ड ।
से कथा शुनिले घुचे अन्तर-पाषण्ड ॥८
मध्यखण्ड-कथा भाइ ! शुन एकचित्ते ।
सङ्कीर्त्तन आरम्भ हइल येनमते ॥९
गया करि आइलेन श्रीगौरसुन्दरे ।
परिपूर्ण ध्वनि हैल नदीयानगरे ॥१०
धाइलेन सभे यत आप्तवर्ग आछे ।
केहो आगे, केहो माझे, केहो अति पाछे ॥११
यथायोग्य करि प्रभु सभारे सम्भाषे ।
विश्वम्भर देखि हैल सभार उल्लासे ॥१२
आगुबाढ़ि सभे आनिलेन निज-घरे ।
तीर्थ-कथा सभारे कहेन विश्वम्भरे ॥१३
प्रभु बोले "तोमा' सभाकार आशीर्वादे ।
गयाभूमि देखि आइलाङ निर्विरोधे ॥"१४
परम सुनम्र हइ प्रभु कथा कहे ।
सभे तुष्ट हैला देखि प्रभुर विनये ॥१५
शिरे हाथ दिया केहो 'चिरजीवी' करे ।
सर्व अङ्गे हस्त दिया केहो मन्त्र पढ़े ॥१६
केहो बक्षे हस्त दिया करे आशीर्वाद ।
"गोविन्द शीतलानन्द करुन प्रसाद ॥"१७

हइला आनन्दमय शची भाग्यवती ।
पुत्र देखि हरिषे ना जाने आछे कति ॥१८
लक्ष्मीर जनक-कुले आनन्द उठिल ।
पतिमुख देखिया लक्ष्मीर दुःख गेल ॥१९
सकल-वैष्णवगण हरिष हइला ।
देखितेओ सेइक्षणे केहो केहो गेला ॥२०
सभारे करिला प्रभु विनय-सम्भाष ।
बिदाय दिलेन सभे गेला निज वास ॥२१
विष्णुभक्त गुटि दुइ चारि जन लैया ।
रहःकथा कहिबारे बसिलेन गिया ॥२२
प्रभु बोले "बन्धु-सब! शुन कहि कथा ।
कृष्णेर अपूर्व ये देखिल यथा यथा ॥२३
गयार भितर मात्र हइलाङ प्रवेश ।
प्रथमेइ शुनिलाङ मङ्गल विशेष ॥२४
सहस्र सहस्र विप्र पढ़े वेदध्वनि ।
'देख देख विष्णुपादोदक तीर्थ-खानि ॥''२५
पूर्वे कृष्ण यबे कैला गया आगमन ।
सेइ स्थाने रहि प्रभु धुइला चरण ॥२६
याँर पादोदक लागि गङ्गार महत्त्व ।
शिरे धरि शिव जाने पादोदक-तत्त्व ॥२७
से चरण-उदक-प्रभावे सेइ स्थान ।
जगते हइल 'पादोदक-तीर्थ नाम ॥२८
पादपद्म-तीर्थेर लइते प्रभु नाम ।
अझोरे झरये दुइ कमल-नयान ॥२९
शेषे प्रभु हइलेन बड़ असम्वर ।
'कृष्ण' बलि कान्दिते लागिला बहुतर ॥३०
भरिल पुष्पेर वन महा-प्रेम-जले ।
महा-श्वास छाड़ि प्रभु 'कृष्णकृष्ण' बोले ॥३१
पुलके पूर्णित हैल सर्व-कलेबर ।
स्थिर नहे प्रभु कम्पभरे थरथर ॥३२
श्रीमान्‌पण्डित-आदि यत भक्तगण ।
देखेन अपूर्व कृष्णप्रेमेर क्रन्दन ॥३३
चतुर्द्दिगे नयने बहये प्रेमधारा ।
गङ्गा येन आसि करिलेन अवतार ॥३४
मनेमने सभेइ भावेन चमत्कार ।
"एमत इहाने कभु नाहि देखि आर ॥३५
श्रीकृष्णेर अनुग्रह हइल इहाने ।
कि विभव पथे बा हइल दरशने ॥"३६
बाह्यदृष्टि प्रभुर हइल कथोक्षणे ।
शेषे प्रभु सम्भाषा करिला सभा'सने ॥३७
प्रभु कहे "बन्धु सब ! आजि घरे याह ।
कालि यथा बोलोँ तथा आसिबारे चाह ॥३८
तोमा' सभा सहिते निर्जने एक स्थाने ।
मोर दुःख सकल करिब निवेदने ॥३९
कालि सभे शुक्लाम्वर-ब्रह्मचारि-घरे ।
तुमि आर सदाशिव चलिबे सत्वरे ॥''४०
समय करिया सभे करिला बिदाय ।
यथाकार्य्ये रहिलेन विश्वम्भर-राय ॥४१
निरवधि कृष्णावेश प्रभुर शरीरे ।
महाबिरक्तेर प्राय व्यवहार करे ॥४२
बुझिते ना पारे आइ पुत्रेर चरित ।
तथापिह पुत्र देखि महा-आनन्दित ॥४३
'कृष्णकृष्ण' बलि प्रभु करेन क्रन्दन ।
आइ देखे पूर्ण हय सकल अङ्गन ॥४४
कोथा कृष्ण कोथा कृष्ण' बोलये ठाकुर ।
बलिते बलिते प्रेम बाढ़ये प्रचुर ॥४५
किछु नाहि बुझे आइ कोन्ं बा कारण ।
कर-जोड़े गेला आइ गोविन्द-शरण ॥४६
आरम्भिला महाप्रभु आपन प्रकाश ।
अनन्त-ब्रह्माण्डमय हइल उल्लास ॥४७

'प्रेमवृष्टि करिते प्रभुर शुभारम्भ ।'
शुनि ध्वनि याय यथा भागवतवृन्द ॥४८
ये सब वैष्णव गेला प्रभु दरशने ।
समय करिला प्रभु ता' सभार सने ॥४९
"कालि शुक्लाम्वर-घरे मिलिबा आसिया ।
मोर दुःख निवेदिब निभृते बसिया ॥"५०
हरिषे पूर्णित हैला श्रीमान्पण्डित ।
देखिया अद्भुत प्रेम महा-हरषित ॥५१
यथाकृत्य करि ऊषःकाले साजि लैया ।
चलिला तुलिते पुष्प हरषित हैया ॥५२
एक झाड़ कुन्द आछे श्रीवास मन्दिरे ।
कुन्दरूपे किबा कल्पतरु अवतरे ॥५३
यतेक वैष्णव तोले,तुलिते ना पारे ।
अक्षय अव्यय पुष्प सर्वक्षण धरे ॥५४
ऊषःकाले उठिया यतेक भक्तगण ।
पुष्प तुलिबारे आसि हइया मिलन ॥५५
सभेइ तोलेन पुष्प कृष्णकथारसे ।
गदाधर गोपीनाथ रामाइ श्रीवासे ॥५६
हेनइ समये आसि श्रीमान्पण्डित ।
हासिते हासिते तथा हइला बिदित ॥५७
सभेइ बोलेन"आजि बड़ देखि हास्य ?"
श्रीमान् बोलेन"आछे कारण अवश्य ॥"५८
"कह देखि ?"बोले सब भागवतगण ।
श्रीमान्पण्डित बोले "शुनह कारण ॥५९
परम अद्भुत कथा, महा-असम्भव ।
निमाञिपण्डित हैला परम वैष्णव ॥६०
गया हैते आइलेन सकल कुशले ।
शुनि आमि सम्भाषिते गेलाङ बिकाले ॥६१
परम-विरक्त-रूप सकल सम्भाष ।
तिलार्द्धेक औद्धत्येर नाहिक प्रकाश ॥६२
निभृते कहिते लागिलेन कृष्णकथा ।
ये ये स्थाने देखिलेन ये अपूर्व यथा ॥६
पादपद्मतीर्थेर लइते मात्र नाम ।
दुनयने प्रेमधारा बहे अबिराम ॥६
सर्व-अङ्गे महा-कम्प-पुलके पूर्णित ।
'हा कृष्ण!' बलिया मात्र पड़िला भूमित
सर्व-अङ्गे धातु नाइ हइला मूर्च्छित ।
कथोक्षणे वाह्यदृष्टि हैला आचम्बित ॥६
शेषे ये बलिया'कृष्ण'कान्दिते लागिला ।
हेन बुझि गङ्गा-देवी आसिया मिलिला ॥
ये भक्ति देखिल आमि ताहान नयने ।
ताहाने मनुष्य-बुद्धि नाहि आर मने ॥६
सबे कथा एइ कहिलेन बाह्य हैले ।
'शुक्लाम्वर-गृहे कालि मिलिबा सकाले ॥
तुमि आर सदाशिव पण्डित मुरारि ।
तोमा'सभा स्थाने दुःख करिब गोहारि ॥
परम मङ्गल एइ कहिलाङ कथा
अवश्य कारण इथे आछये सर्वथा ॥"७
श्रीमानेर बचन शुनिया भक्तगण ।
'हरि' बलि महा-ध्वनि करिला तखन ॥७
प्रथमेइ बलिलेन श्रीवास उदार ।
"गोत्र बाढ़ाउक कृष्ण आमा'सभाकार ॥

तथाहि—

"गोत्रं नो वर्द्धताम् ॥"७४

टीका ।

गोत्रमिति । श्राद्धकर्मान्तर्गत-पिण्ड प्र कालीनमाशीर्वचनमेतत्। आशीर्वचन सामान्येनै लिखितम् । श्राद्धमन्त्रे गोत्रशब्देन वंशपर प्रसिद्धादिपुरुषब्राह्मणरूपएवात्रोऽवगम्यते-"दात नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिशब्दस्य पृथगुल्ले अत्र तु सन्ततिरूपोऽर्थ एव गोत्रशब्द सुधीभिरवधेयम् ।

अनुवाद ।

हम सब के गोत्र की वृद्धि हो; श्राद्धकर्मान्तर्गत पिण्डप्रदानकालीन आशीर्वाद वचन में उक्त वाक्य कथित हुआ है। श्राद्धमन्त्र में उल्लिखित गोत्रशब्द का अथ वंश परम्परा है, अर्थात् प्रसिद्ध आदि पुरुष का ग्रहण होता है। 'दानशील व्यक्तियों का अभ्युदय हो, वेद एवं सन्तति की वृद्धि हो' इस वाक्य में सन्तति शब्द का पृथक् उल्लेख है, यहाँपर सन्तति शब्द में ही गोत्र शब्द का प्रयोग हुआ है।

आनन्दे करेन सभे कृष्ण-सङ्कथन ।
उठिल मधुर कृष्ण-श्रवण-कीर्त्तन ॥७५
'तथास्तु तथास्तु' बोले भागवतगण ।
'सभेइ भजुक कृष्णचन्द्रे र चरण ॥'७६
हेनमते पुष्प तुलि सर्वभक्तगण ।
पूजा करिबारे सभे करिला गमन ॥७७
श्रीमान् पण्डित चलिलेन गङ्गातीरे ।
शुक्लाम्बर-ब्रह्मचारी—ताहान मन्दिरे ॥७८
शुनिया ए सब कथा प्रभु गदाधर ।
शुक्लाम्बर-गृह-प्रति चलिला सत्वर ॥७९
"कि आख्यान कृष्णेर कहेन शुनि गिया ।"
थाकिलेन शुक्लाम्बर-गृहे लुकाइया ॥८०
सदाशिव, मुरारि,श्रीमान् शुक्लाम्बर ।
मिलिला सकल यत प्रेम-अनुचर ॥८१
हेनइ समये विश्वम्भर द्विजराज ।
आसिया मिलिला यथा वैष्णव समाज ॥८२
परम-आदरे सभे करेन सम्भाष ।
प्रभुर नाहिक वाह्यदृष्टिर प्रकाश ॥८३
देखिलेन प्रभु मात्र भागवतगण ।
पढ़िते लागिला श्लोक—भक्तिर लक्षण ॥८४
"पाइलुँ ईश्वर मोर कोन् दिगे गेला ?"
एतबलि स्तम्भ कोले करिया पड़िला ॥८५
भाङ्गिल गृहेर स्तम्भ प्रभुर आदेशे ।
"कोथा कृष्ण?" बलि पड़िलेन मुक्तकेशे ॥८६
प्रभु पड़िलेन मात्र "हा कृष्ण!" बलिया ।
भक्त सब पड़िलेन ढलिया ढलिया ॥८७
गृहेर भितरे मूर्च्छा गेला गदाधर ।
केबा कोन् दिगे पड़े नाहि परापर ॥८८
अभेद हइला प्रेम-आनन्दे मूर्च्छित ।
हासेन जाह्नवी-देवी देखिया विस्मित ॥८९
कथोक्षणे वाह्य प्रकाशिया विश्वम्भर ।
'कृष्ण' बलि कान्दिते लागिला बहुतर ॥९०
'कृष्ण रे प्रभु रे! मोर कोन् दिगे गेला ?"
एत बलि प्रभु पुन भूमिते पड़िला ॥९१
कृष्णप्रेमे कान्दे प्रभु श्रीशचीनन्दन ।
चतुर्द्दिगे बेढ़ि कान्दे भागवतगण ॥९२
आछाड़ेर समुच्चय नाहिक श्रीअङ्गे ।
ना जाने ठाकुर किछु निज-प्रेम-रङ्गे ॥९३
उठिल परमानन्द कृष्णेर क्रन्दन ।
प्रेममय हैल शुक्लाम्बरेर भवन ॥९४
स्थिर हैया क्षणेके बसिला विश्वम्भर ।
तथापि आनन्दधारा बहे निरन्तर ॥९५
प्रभु बोले "कोन् जन गृहेर भितर ?"
ब्रह्मचारी बोलेन "तोमार गदाधर ॥"९६
हेँट-माथा करिया कान्देन गदाधर ।
देखिया सन्तोष प्रभु बोले विश्वम्भर ॥९७
प्रभु बोले "गदाधर! तोमार सुकृति ।
शिशु हैते कृष्णेते करिला दृढ़-मति ॥९८
आमार से हेनजन्म गेल वृथा-रसे ।
पाइलुँ अमूल्य निधि गेल दैव-दोषे ॥९९
एत बलि भूमिते पड़िला विश्वम्भर ।
धूलाय लोटाय सर्व-सेव्य-कलेवर ॥१००

पुनःपुनः हय वाह्य, पुनःपुनः पड़े ।
दैवे रक्षा पाय नाक मुख से आछाड़े ॥१०१
मेलिते ना पारे दुइ चक्षु प्रेमजले ।
सबे मात्र'कृष्णकृष्ण' श्रीवदने बोले ॥१०२
धरिया सभार गला कान्दे विश्वम्भर ।
"कृष्ण कोथा?बन्धु!सब बोलह सत्वर॥"१०३
प्रभुर देखिया आर्त्ति कान्दे भक्तगण ।
कारो मुखे आर किछु ना स्फुरे बचन ॥१०४
प्रभु बोले "मोर दुःख करह खण्डन ।
आनि देह मोरे नन्दगोपेर नन्दन ॥"१०५
एत बलि श्वास छाड़े'पुनःपुन कान्दे ।
लोटाय भूमिते केश, ताहो नाहि बान्दे ॥१०६
एइ सुखे सर्वदिन गेल क्षण-प्राय ।
कथञ्चित सभा प्रति हइला बिदाय ॥१०७
गदाधर, सदाशिव, श्रीमान् पण्डित ।
शुक्लाम्बर-आदि सभे हइला बिस्मित ॥१०८
ये ये देखिलेन प्रेम, सभेइ अवाक्य ।
अपूर्व देखिया कारो देहे नाहि वाह्य ॥१०९
वैष्णव समाजे सभे आइला हरिषे ।
आनुपूर्वि कहिलेन अशेष-विशेषे ॥११०
शुनिया सकल महाभागवतगण ।
'हरिहरि' बलि सभे करेन क्रन्दन ॥१११
शुनिया अपूर्व प्रेम सभेइ विस्मित ।
केहो बोले "ईश्वर बा हइला विदित ॥"११२
केहो बोले"निमाञि पण्डित भाल हैले ।
पाषण्डीर मुण्ड छिण्डिबारे पारि हेले ॥"११३
केहो बोले"हइबेक कृष्णेर रहस्य ।
सर्वथा सन्देह नाञि जानिह अवश्य ॥"११४
केहो बोले "ईश्वरपुरीर सङ्ग हैते ।
किबा देखिलेन कृष्ण प्रकाश गयाते ॥"११५

एइमत आनन्दे सकल भक्तगण ।
नाना जन नाना मते करेन कथन ॥११
सभे मिलि करिते लागिला आशीर्वाद ।
"हउक हउक सत्य कृष्णेर प्रसाद ॥"१
आनन्दे लागिला सभे करिते कीर्त्तन ।
केहो गाय केहो नाचे करये क्रन्दन ॥११
हेनमते भक्तगण आछेन हरिषे ।
ठाकुर आविष्ट हइ आछेन स्व-वासे ॥१
कथञ्चित वाह्य प्रकाशिया विश्वम्भर ।
चलिलेन गङ्गादास पण्डितेर घर ॥१
गुरुर करिला प्रभु चरण-बन्दन ।
सम्भ्रमे उठिया गुरु कैला आलिङ्गन ॥१
गुरु बोले"धन्य बाप!तोमार जीवन ।
पितृकुल मातृकुल करिलेन मोचन ॥१
तोमार पढ़ुया सब तोमार अवधि ।
पुँथि केहो नाहि मिले ब्रह्मा बोले यदि ॥१
एखने आइला तुमि सभार प्रकाश ।
कालि हैते पढ़ाइबा, आजि याह वास ॥"१
गुरु नमस्करिया चलिला विश्वम्भर ।
चतुर्द्दिगे पढ़ुया-वेष्टित शशधर ॥१
आइलेन श्रीमुकुन्द सञ्जयेर घरे ।
आसिया बसिला चण्डीमण्डप-भितरे ॥१
गोष्ठी-सह मुकुन्दसञ्जय पुण्यवन्त ।
ये हइल आनन्द, ताहार नाहि अन्त ॥१
पुरुषोत्तमसञ्जयेरे प्रभु कैला कोले ।
सिञ्चिलेन अङ्ग तान नयनेर जले ॥१
जयकार दिते लागिलेन नारीगण ।
परम आनन्द हैल मुकुन्द-भवन ॥१२
शुभ दृष्टिपात प्रभु करि सभाकारे ।
आइलेन महाप्रभु आपन मन्दिरे ॥१३

वसिला आसिया विष्णुगृहेर दुयारे ।
प्रीत करि विदाय दिलेन सभाकारे ॥१३१
येइ जन आइसे प्रभुरे सम्भाषिते ।
प्रभुर चरित्र केहो ना पारे बुझिते ॥१३२
पूर्व-विद्या-औद्धत्य ना देखे कोन जन ।
परम-विरक्त-प्राय थाके सर्वक्षण ॥१३३
पुत्रेर चरित्र शची किछुइ ना बुझे ।
पुत्रेर मङ्गल लागि गङ्गा-विष्णु पूजे ॥१३४
"स्वामी निला कृष्ण! मोर निला पुत्रगण ।
अवशिष्ट सकले आछये एकजन ॥१३५
अनाथिनी मोरे कृष्ण! एइ देह बर ।
सुस्थ-चित्ते गृहे मोर रहु विश्वम्भर ॥"१३६
लक्ष्मीरे आनिया पुत्रसमीपे बसाय ।
दृष्टिपात करियाओ प्रभु नाहि चा'य ॥१३७
निरवधि श्लोक पढ़ि करये क्रन्दन ।
"कोथाकृष्ण! कोथाकृष्ण!" बोले अनुक्षण॥१३८
कखनो कखनो ये बा हुङ्कार करये ।
डरे पलायेन लक्ष्मी शची पाय भये ॥१३९
रात्रे निद्रा नाहि यान प्रभु कृष्णरसे ।
विरहे ना पाय स्वास्थ्य, उठे पड़े वैसे ॥१४०
भिन्न जन देखिले करेन सम्बरण ।
ऊषःकाले गङ्गास्नाने करिला गमन ॥१४१
आइलेन प्रभु मात्र करि गङ्गास्नान ।
पड़ुयार वर्ग आसि हैल उपस्थान ॥१४२
'कृष्ण' विनु ठाकुरेर ना आइसे वदने ।
पड़ुया-सकल इहा किछुइ ना जाने ॥१४३
अनुरोधे प्रभु बसिलेन पढ़ाइते ।
पड़ुया-सभार स्थाने प्रकाश करिते ॥१४४
'हरि' बलि पुँथि मेलिलेन शिष्यगण ।
शुनिया आनन्द हैला श्रीशचीनन्दन ॥१४५

बाह्य नाहि प्रभुर शुनिया हरिध्वनि ।
शुभदृष्टि सभारे करिला द्विजमणि ॥१४६
आविष्ट हइया प्रभु करये व्याख्यान ।
सूत्र वृत्ति टीकाय सकले हरिनाम ॥१४७
प्रभु बोले "सर्व काल सत्य कृष्णनाम ।
सर्व-शास्त्रे 'कृष्ण' बइ ना बोलये आन ॥१४८
हर्त्ता कर्त्ता पालयिता कृष्ण से ईश्वर ।
अज-भव-आदि यत कृष्णेर किङ्कर ॥१४९
कृष्णेर चरण छाड़ि ये आर बाखाने ।
व्यर्थ जन्म यार तार अकथ्य कथने ॥१५०
आगम वेदान्त-आदि यत दरशन ।
सर्वशास्त्रे कहे 'कृष्णपदे भक्तिधन' ॥१५१
मुग्ध सब अध्यापक कृष्णेर मायाय ।
छाड़िया कृष्णेर भक्ति अन्य पथे याय ॥१५२
करुणासागर कृष्ण जगतजीवन ।
सेवकवत्सल नन्दगोपेर नन्दन ॥१५३
हेन कृष्णनामे यार नाहि रति मति ।
पढ़ियाओ सर्व शास्त्र ताहार दुर्गति ॥१५४
दरिद्र अधम यदि लय कृष्णनाम ।
सर्वदोष थाकिलेओ याय कृष्णधाम ॥१५५
एइमत सकल शास्त्रेर अभिप्राय ।
इहाते सन्देह यार, से-इ दुःख पाय ॥१५६
कृष्णेर भजन छाड़ि ये शास्त्र बाखाने ।
से अधम कभु शास्त्र-मर्म, नाहि जाने ॥१५७
शास्त्रेर ना जाने मर्म अध्यापना करे ।
गर्द्दभेर प्राय मात्र शास्त्र बहि' मरे ॥१५८
पड़िया शुनिया लोक गेल छारखारे ।
कृष्ण महामहोत्सबे वञ्चिल ताहारे ॥१५९
पूतनारे ये प्रभु करिला मुक्तिदान ।
हेन कृष्ण छाड़ि लोक करे अन्य ध्यान ॥१६०

अघासुर-हेन पापी ये कैल मोचन ।
कोन् सुखे छाड़े लोक ताँहार कीर्त्तन ॥१६१
ये कृष्णेर नामे हय जगत पवित्र ।
ना बोले दुःखित जीव ताँहार चरित्र ॥१६२
ये कृष्णेर महोत्सबे ब्रह्मादि विह्वल ।
ताहा छाड़ि नृत्यगीत करये मङ्गल ॥१६३
अजामिल उद्धारिल ये कृष्णेर नामे ।
धन-कुल-विद्या-मदे ताहा नाहि जाने ॥१६४
शुन भाइ-सब ! सत्य आमार बचन ।
भजह अमूल्य कृष्णपादपद्म-धन ॥१६५
ये चरण सेविते लक्ष्मीर अभिलाष ।
ये चरण सेविया शङ्कर शुद्ध दास ॥१६६
ये चरण हइते जाह्नवी-परकाश ।
हेन पादपद्मे भाइ ! सभे हइ दास ॥१६७
देखि कार शक्ति आछे एइ नवद्वीपे ।
खण्डुक आमार व्याख्या आमार समीपे ॥१६८
परं-ब्रह्म विश्वम्भर शब्द-मूर्त्तिमय ।
ये शब्दे ये बाखानेन से इ सत्य हय ॥१६९
मोहित पढ़ुया-सब शुने एकमने ।
प्रभुओ विह्वल हैया सत्ये से बाखाने ॥१७०
सहजेइ शब्द-मात्रे 'कृष्ण सत्य' कहे ।
ईश्वर ये बाखानिब किछु चित्र नहे ॥१७१
क्षणेके हइला बाह्य-दृष्टि विश्वम्भर ।
लज्जित हइया किछु कहये उत्तर ॥१७२
"आजि आमि कोन् रूप सूत्र बाखानिल ?"
पढ़ुया-सकल बोले "किछु ना बुझिल ॥१७३
यत किछु शब्दे बाखानह कृष्ण मात्र ।
बुझिते तोमार व्याख्या केबा आछे पात्र ॥१७४
हासि बोले विश्वम्भर शुन सब भाइ !
पुँथि बान्ध आजि चल गङ्गास्नाने याइ ॥१७५

बान्धिला पुस्तक सभे प्रभुर बचने ।
गङ्गास्नाने चलिलेन विश्वम्भर सने ॥१७
गङ्गाजले केलि करे प्रभु विश्वम्भर ।
समुद्रेर माझे येन पूर्ण-शशधर ॥१७
गङ्गाजले केलि करे विश्वम्भर-राय ।
परम-सुकृति सब देखे नदीयाय ॥१७
ब्रह्मादिर अभिलाष ये रूप देखिते ।
हेन प्रभु विप्र-रूपे खेलाय जगते ॥१७
गङ्गाघाटे स्नान करे यत सब जन ।
सभेइ चा'हेन गौरचन्द्रेर वदन ॥१८
अन्योऽन्ये सर्व-जने कहये बचन ।
"धन्य माता पिता यार एहेन नन्दन ॥" १८
गङ्गाय बाढ़िल प्रभु-परशे उल्लास ।
आनन्दे करये देवी तरङ्ग प्रकाश ॥१८
तरङ्गेर छले नृत्य करये जाह्नवी ।
अनन्त ब्रह्माण्ड याँर पदयुग-सेवी ॥१८
चतुर्द्दिगे प्रभुरे बेढ़िया जह्नुसुता ।
तरङ्गेर छले जल देइ अलक्षिता ॥१८
वेदे मात्र ए सब लीलार मर्म जाने ।
किछु शेषे व्यक्त हबे सकल पुराणे ॥१८
स्नान करि गृहे आइलेन विश्वम्भर ।
चलिला पढ़ुयावर्ग यथा यार घर ॥१८
वस्त्र परिवर्त्त करि धुइला चरण ।
तुलसीरे जल दिया करिला सेचन ॥१८
यथाविधि करि प्रभु गोविन्द-पूजन ।
आसिया बसिला गृहे करिते भोजन ॥१८
तुलसीर मञ्जरी सहित दिव्य अन्न ।
मा'ये आनि सम्मुखे करिला उपसन्न ॥१८
विश्वक्सेनेरे प्रभु करि निवेदन ।
अनन्त-ब्रह्माण्ड-नाथ करेन भोजन ॥१९

सम्मुखे बसिला शची जगतेर माता ।
गृहेर भितरे देखे लक्ष्मी पतिव्रता ॥१९१
मा'ये बोले"आजि बाप! कि पुँथि पड़िला ।
काहार सहित किबा कन्दल करिला ?"१९२
प्रभु बोले"आजि पढ़िलाङ कृष्णनाम ।
सत्य कृष्ण-चरण-कमल गुण-धाम ॥१९३
सत्य कृष्ण-नाम-गुण-श्रवण-कीर्त्तन ।
सत्य कृष्णचन्द्रेर सेवक ये ये जन ॥१९४
से-इ शास्त्र सत्य—कृष्णभक्ति कहे या'य ।
अन्यथा हइले शास्त्र पाषण्डत्व पाय ॥१९५
तथाहि जैमिनिभारते चाश्वमेधिके पर्वणि—
"यस्मिन् शास्त्रे पुराणे वा हरिभक्तिर्न दृश्यते ।
श्रोतव्यं नैव तत् शास्त्रं यदि ब्रह्मा स्वयं वदेत् ॥"१९६

अनुवाद ।

जिस शास्त्र अथवा पुराण में हरिभक्ति का वर्णन नहीं है, यदि स्वयं ब्रह्मा का भी आदेश होता है, तथापि उक्त शास्त्र ग्रहण करना समीचीन नहीं है ।

चण्डाल चण्डाल नहे—यदि कृष्ण बोले ।
विप्र नहे विप्र—यदि असत् पथे चले ॥"१९७
कपिलेर भावे प्रभु जननीर स्थाने ।
ये कहिल, ताइ प्रभु कहये एखाने ॥१९८
"शुनशुन माता!कृष्णभक्तिर प्रभाब ।
सर्वभावे कर' माता!कृष्णे अनुराग ॥१९९
कृष्णेर सेवक माता ! कभु नहे नाश ।
कालचक्र डरायेन देखि कृष्णदास ॥२००
गर्भवासे यत दुःख जन्मे बा मरणे ।
कृष्णेर सेवक माता! किछुइ ना जाने ॥२०१
जगतेर पिता कृष्ण, ये ना भजे बाप ।
पितृद्रोही पातकीर जन्मजन्म ताप ॥२०२
चित्त दिया शुन माता!जीवेर ये गति ।
कृष्ण ना भजिले पाय यतेक दुर्गति ॥२०३
मरिया मरिया पुनः पाय गर्भवास ।
सर्व-अङ्गे अमेध्य पङ्केर परकाश ॥२०४
कटु अम्ल लवण—जननी यत खाय ।
अङ्गे गिया लागे तार महामोह पाय ॥२०५
मांसमय अङ्ग कृमिकुले बेढ़ि खाय ।
घुचाइते नाहि शक्ति, मरये ज्वालाय ॥२०६
नड़िते ना पारे तप्त-पञ्जरेर माझे ।
तबे प्राण रहे भवितव्यतार काजे ॥२०७
कोन अतिपातकीर जन्म नाहि हय ।
गर्भेगर्भे हय पुन उत्पत्ति प्रलय ॥२०८
शुन शुन माता! जीवतत्त्वेर संस्थान ।
सात-मासे जीवेर गर्भेते हय ज्ञान ॥२०९
तखने से स्मङरिया करे अनुताप ।
स्तुति करे कृष्णेरे ये करिला बिलाप ॥२१०
रक्ष कृष्ण जगत-जीवन प्राणनाथ !
तोमा'बइ जीव दुःख निबेदिब का'त ॥२११
ये करये बन्दी'प्रभु! छाड़ाये से-इ से ।
सहज-मृतेर प्रभु! माया कर किसे ॥२१२
मिथ्या धन-पुत्र-रसे बञ्चिलुँ जनम ।
ना भजिलुँ तोर दुइ अमूल्य चरण ॥२१३
ये पुत्र पोषण कैलुँ अशेष बिधर्मे ।
कोथा बा से-सब गेल मोर एइ कर्मे ॥२१४
एखन ए दुःखे मोरे के करिबे पार ।
तुमि से एखन बन्धु करिबा उद्धार ॥२१५
एतेके जानिलुँ सत्य तोमार चरण ।
रक्ष प्रभु कृष्ण ! तोर लइलुँ शरण ॥२१६
तुमि-हेन कल्पतरु ठाकुर छाड़िया ।
भुलिलाङ असत्पथे प्रमत्त हइया ॥२१७

उचित ताहार एइ योग्य शास्ति हय ।
करिला त एबे कृपा कह' महाशय !२१८
एइ कृपा आर येन तोमा'ना पासरि ।
येखाने सेखाने केने ना जन्मि ना मरि ॥२१९
येखाने तोमार नाजि यशेर प्रचार ।
यथा नाजि वैष्णवगणेर अवतार ॥२२०
येखाने तोमार महा महोत्सव नाइ ।
इन्द्रलोक हईलेओ ताहा नाहि चाइ ॥२२१

तथाहि (भा० ५।१९।२३)—

"न यत्रवैकुण्ठकथासुधापगा
न साधवो भागवतास्तदाश्रयाः ।
न यत्र यज्ञेशमखा महोत्सवाः
सुरेशलोकोऽपि न वै स सेव्यताम् ॥"२२२

टीका ।

न यत्रेति । अतो यत्र, वैकुण्ठकथामृतनद्यो न सन्ति । तदाश्रयाः-कथापगाश्रयाः । महान्तो नृत्यादुत्सवा येषु तादृशाः यज्ञेशस्य-विष्णोः, मखाः-पूजाः; सः सुरेशस्य-ब्रह्मणः, अपि लोकः, न सेव्यतां इति श्रीधरः ।

अनुवाद ।

जहाँपर श्रीवैकुण्ठ अथवा श्रीकृष्ण की कथा रूपी सुधानदी नहीं है, एवं उक्त कथामृत नदी का एकान्त आश्रित भगवद् भक्तगण नहीं हैं, जहाँ पर श्रीयज्ञेश्वर श्रीविष्णु के अर्च्चा विग्रह नहीं है, साक्षात् ब्रह्मलोक होने पर भी उस का सेवन न करे ।

"गर्भ-वास-दुःख प्रभु ! एहो मोर भाल ।
यदि तोर स्मृति मोर रहे सर्वकाल ॥२२३
तोर पादपद्मेर स्मरण नाहि यथा ।
हेन कृपा कह' प्रभु! ना फेलिबा तथा ॥२२४
एइमत दुःख प्रभु! कोटिकोटि जन्म ।
पाइलुँ बिस्तर प्रभु! सब मोर कर्म ॥२२५
से दुःख-विपद प्रभु! रहु बारेबार ।
यदि तोर स्मृति थाके सर्व-वेद-सार ॥२२
हेन कर कृष्ण! एबे दास्ययोग दिया ।
चरणे राखह दासीनन्दन करिया ॥२२
बारेक करह यदि ए दुःखेर पार ।
तोमा'बइ तबे प्रभु! ना गाइमु आर ॥२२
एइमत गर्भवासे पोड़े अनुक्षण ।
ताहो भाल बासे कृष्णस्मृतिर कारण ॥२
एतबेर प्रभावे गर्भे दुःख नाहि पाय ।
काले पड़े भूमिते आपन अनिच्छाय ॥२
शुनशुन माता! जीवतत्त्वेर संस्थान ।
भूमिते पड़िले मात्र हय अगेयान ॥२
मूर्च्छागत हय क्षणे, क्षणे कान्दे श्वासे ।
कहिते ना पारे, दुःखसागरेते भासे ॥२
कृष्णेर सेवक जीव कृष्णेर मायाय ।
कृष्ण ना भजिले एइमत दुःख पाय ॥२
कथोदिने कालबशे हय बुद्धि-ज्ञान ।
इथे ये भजये कृष्ण से-इ भाग्यवान् ॥२
अन्यथा ना भजे कृष्ण, दुष्ट-सङ्ग करे ।
पुन सेइमत महापापे डुबे मरे ॥२

तथाहि भा० (३।३१।३२)—

"यद्यसद्भिः पथि पुनः शिश्नोदरकृतोद्यमैः ।
आस्थितो रमते जन्तुस्तमो विशति पूर्ववत् ॥
२

टीका ।

यदीति । यदि, असद्भिः-आस्थितः-अधि सन्' तेषां पथि रमते; पथि-सन्मार्गे आस्थितो यदि असद्भिः सह रमते इति वा; तर्हि, पूर्वव "यातनादेहम् आवृत्य" (भा० ३।३०।२०) इत्या पूर्वोक्त प्रकारेण तमः-नरकं विशति ।इति श्रीधर

अनुवाद।

जीव सत्पथ में अवस्थित होकर भी यदि शिश्नोदर पूर्त्ति के निमित्त ही उद्यम करता है, पुनर्वार असत् व्यक्तियों का सङ्ग करता है, आमोद प्रमोद वार्त्तालाप प्रभृति के द्वारा आयु व्यतीत करता है, तब वह जीव निश्चय ही अन्धकार नरक में पतित होता है।

"अनासेन मरणं विना दैन्यन जीवनम्।
अनाराधितगोविन्दचरणस्य कथं भवेत्॥"२३७

अनायास मरण, विना दैन्य से जीवित रहना श्रीगोविन्द की आराधना व्यतीत कैसे सम्भव होगा।

"अनायासे मरण, जीवन दैन्य विने।
कृष्ण भजिले से हय कृष्णेर स्मरणे॥२३८
एतेक भजह कृष्ण साधु-सङ्ग करि।
मने चिन्त कृष्ण माता! मुखे बोल हरि॥२३९
भक्तिहीन-कर्मे कोन फल नाहि पाय।
सेइ कर्म भक्तिहीन,—परहिंसा याय॥"२४०
कपिलेर भावे प्रभु मा'येरे शिखाय।
शुनि एइ वाक्य शची आनन्दे मिलाय॥२४१
कि भोजने, कि शयने, किबा जागरणे।
कृष्ण-विनु प्रभु आर किछु ना बाखाने॥२४२
आप्तमुखे ए कथा शुनिया भक्तगणे।
सर्व-गणे वितर्क भाबेन मने मने॥२४३
"किबा कृष्ण प्रकाश हइला से शरीरे?
किबा साधु-सङ्ग, किबा पूर्वेर संकार?"२४४
एइमत मने सभे करेन बिचार।
सुखमय चित्तवृत्ति हइल सभार॥२४५
खण्डिल भक्तेर दुःख पाषण्डीर नाश।
महाप्रभु विश्वम्भर हइला प्रकाश॥२४६
वैष्णव-आबेशे महाप्रभु विश्वम्भर।
कृष्णमय जगत देखये निरन्तर॥२४७
अहर्निशि श्रवणे शुनये कृष्णनाम।
वदने बोलये 'कृष्णचन्द्र' अभिराम॥२४८
ये प्रभु आछिला भोला महा विद्यारसे।
एबे कृष्ण-विनु आर किछुइ ना बासे॥२४९
पढ़ुयार वर्ग सब अति ऊषःकाले।
पढ़िबार निमित्ते आसिया सभे मिले॥२५०
पढ़ाइते वैसे गिया त्रिजगत्-राय।
कृष्ण-विनु किछु आर ना आइसे जिह्वाय॥२५१
"सिद्ध वर्णसमाम्नाय?" बोले शिष्यगण।
प्रभु बोले "सर्व-वर्णे सिद्ध नारायण॥"२५२
शिष्य बोले "वर्ण सिद्ध हइल केमने?"
प्रभु बोले "कृष्णदृष्टिपातेर कारणे॥"२५३
शिष्य बोले "पण्डित! उचित व्याख्या कर।
प्रभु बोले "सर्वक्षण श्रीकृष्ण स्मङर॥२५४
कृष्णेर भजन कहि—सम्यक् आम्नाय।
आदि मध्य अन्ते कृष्णभजन बुझाय॥"२५५
शुनिया प्रभुर व्याख्या हासे शिष्यगण।
केहो बोले "हेन बुझि वायुर कारण॥२५६
शिष्यवर्ग बोले "एबे केमत बाखान?"
प्रभु बोले "येन हय शास्त्रेर प्रमाण॥"२५७
प्रभु बोले "यदि नाहि बुझह एखने।
बिकाले सकल बुझाइब भाल-मने॥२५८
आमिह बिरले गिया बसि पुँथि चाइ।
बिकाले सकले येन हइ एकठाँइ॥२५९
शुनिया प्रभुर वाक्य सर्व-शिष्यगण।
कौतुके पुस्तक बान्धि करिला गमन॥२६०
सर्व-शिष्य गङ्गादासपण्डितेर स्थाने।
कहिलेन सब—यत ठाकुर बाखाने॥२६१
"एबे यत बाखानेन निमाञि पण्डित।
शब्द-सूत्रे बाखानेन कृष्ण-समीहित॥२६२

गया हैते यावत् आसियाछेन घरे ।
तदवदि कृष्ण विने व्याख्या नाहि स्फुरे ॥२६३
सर्वदा बोलेन 'कृष्ण–पुलकित-अङ्ग ।
क्षणे हासे हुङ्कार करये बहु रङ्ग ॥२६४
प्रति शब्दे-धातु सूत्र एकत्र करिया ।
प्रतिदिन कृष्ण-व्याख्या करेन बसिया ॥२६५
एबे भाल बुझिबारे ना पारि चरित ।
कि करिब आमि-सब बोलह पण्डित !''२६६
उपाध्यायशिरोमणि विप्र गङ्गादास ।
शुनिया सभार वाक्य उपजिल हास ॥२६७
ओझा बोले''घरे याह, आसिह सकाले ।
आजि आमि शिखाइब ताँहारे बिकाले ॥२६८
भालमत करि येन पढ़ायेन पुँथि ।
आसिह बिकाले सब ताहार संहति ॥''२६९
परम-हरिबे सभे बासाय चलिला ।
विश्वम्भर सङ्गे सबे बिकाले आइला ॥२७०
गुरुर चरण-धूलि प्रभु लय शिरे ।
''विद्यालाभ हउ''गुरु आशीर्वाद करे ॥२७१
गुरु बोले''बाप विश्वम्भर!शुन वाक्य ।
ब्राह्मणेर अध्ययन नहे अल्प भाग्य ॥२७२
मातामह यार–चक्रवर्त्ती नीलाम्बर ।
बाप यार–जगन्नाथ-मिश्रपुरन्दर ॥२७३
उभय-कुलेते मूर्ख नाहिक तोमार ।
तुमि त परम योग्य बिख्यात टीकार ॥२७४
अध्ययन छाड़िले से यदि भक्ति हय ।
बाप मातामह कि तोमार भक्त नय ?२७५
इहा जानि भालमते कर अध्ययन ।
अध्ययन हइले से वैष्णव ब्राह्मण ॥२७६
भद्राभद्र मूर्ख विप्र जानिब केमने ?
इहा जानि 'कृष्ण' कह कर अध्ययने ॥२७७
भालमते गिया शास्त्र बसिया पढ़ाओ ।
व्यतिरिक्त अर्थकर,मोर माथा खाओ ॥''
प्रभु बोले ''तोर दुइ-चरण-प्रसादे ।
नवद्वीपे केहो मोरे ना पारे बिबादे ॥२
आमि ये बाखानि सूत्र करिया खण्डन ।
नवद्वीपे इहा स्थापिबेन कोन् जन ?२
नगरे बसिया एइ पढ़ाइमु गिया ।
देखि कार् शक्ति आछे दूषुक आसिया ?''२
हरिष हइला गुरु शुनिया बचन ।
चलिल गुरुर करि चरण-बन्दन ॥२
गङ्गादासपण्डित-चरणे नमस्कार ।
वेदपति सरस्वतीपति शिष्य याँर ॥२
आर किबा गङ्गादासपण्डितेर साध्य ।
यार शिष्य चतुर्द्दश-भुवन-आराध्य ॥२
चलिला पढ़ुया-सङ्गे प्रभु विश्वम्भर ।
तारके बेष्टित येन पूर्ण-शशधर ॥२
बसिला आसिया नगरियार दुयारे ।
याहार चरण लक्ष्मी-हृदय-उपरे ॥२
योगपट्टछान्दे बस्त्र करिया बन्दन ।
सूत्रेर करये प्रभु खण्डन स्थापन ॥२
प्रभु बोले''सन्धिकार्य्य-ज्ञान नाहि यार ।
कलियुगे 'भट्टाचार्य्य' पदवी ताहार ॥२
शब्द-ज्ञान नाहि यार, से तर्क बाखाने ।
आमारे त प्रबोधिते नारे कोनजने ॥२
ये आमि खण्डन करि ये करि स्थापन ।
देखि ताहा अन्यथा करुक् कोन जन ॥''२
एइमत बोले विश्वम्भर विश्वनाथ ।
प्रत्युत्तर करिबेक हेन शक्ति का'त ?२
गङ्गा देखिबारे यत अध्यापक याय ।
शुनिया सभार अहङ्कार चूर्ण पाय ॥२

कार् शक्ति आछे विश्वम्भरेर समीपे ।
सिद्धान्त दिबेक हेन आछे नवद्वीपे ॥२९३
एइमत आवेशे बाखाने विश्वम्भर ।
चारि-दण्ड रात्रि तभु नाहि अवसर ॥२९४
दैवे आर एक नगरियार दुयारे ।
एक महाभाग्यवान् आछे विप्रबरे ॥२९५
'रत्नगर्भ-आचार्य्य' बिख्यात ताँर नाम ।
प्रभुर बापेर सङ्गी, जन्म एक ग्राम ॥२९६
तिन पुत्र ताँर कृष्णपद-मकरन्द ।
कृष्णानन्द, जीव, यदुनाथ-कविचन्द्र ॥२९७
भागवत परम सादर' विप्रबर ।
भागवत-श्लोक पढ़े करिया आदर ॥२९८

तथाहि (भा० १०।२३।२२)—
"श्यामं हिरण्यपरिधिं वनमाल्य-वर्ह
धातु-प्रवाल-नटवेशमनुव्रतांसे ।
विन्यस्तहस्तमितरेण धुनानमब्जं
कर्णोत्पलालककपोलमुखाब्जहासम् ॥" २९९

टीका ।

यज्ञपत्न्यो यमुनोपवने विचरन्तं श्रीकृष्णं कथम्भूतं ददृशुरित्याह, श्याममिति । हिरण्यवत्, परिधिः-परिधानं, यस्य तं पीताम्बरमित्यर्थः । वनमाल्यैः, वर्हैः धातुभिः, प्रबालैश्च नटवत् वेशो यस्य तम् । अनुव्रतस्य सख्युः, अंसे, विन्यस्तः-निहितः, हस्तो येन तम् । इतरेण हस्तेन अब्जं-लीलाकमलं धुनानं-भ्रामयन्तम् । कर्णयोः उत्पले यस्य, अलकाः कपोलयोर्यस्य' मुखाब्जे हासो यस्य तञ्च तञ्च तञ्च; यद्वा, कर्णोत्पलयोः, अलकानां, कपोलयोः, मुखाब्जस्य च, हासः-प्रकाश, यत्र तम् इति ।

अनुवाद ।

यज्ञपत्नीगणोंने कही-श्याम कान्तियुक्त कृष्ण पीताम्बर, वनमाला, मयूरपिच्छ, गैरिक धातु प्रवाल समूह से शोभित होकर विचित्र नट के समान सुशोभित हैं, श्रीकृष्ण एक हस्त वयस्य के स्कन्धदेश में स्थापन कर अपर हस्त द्वारा लीला कमल सञ्चालित कर रहे हैं, उनके कर्णद्वय में पद्मद्वय कर्ण भूषण रूप में शोभित है, कपोल युगल में कुञ्चित कुन्तल, एवं मुखपङ्कज में सुमधुर हास्य शोभित है ।

भक्तियोग-श्लोक पढ़े परम-सन्तोषे ।
प्रभुर कर्णेते आसि करिल प्रवेश ॥३००
भक्तिर प्रभाव मात्र शुनिल आसिया ।
सेइक्षणे पड़िलेन मूर्च्छित हइया ॥३०१
सकल पढ़ुयावर्ग बिस्मित हइला ।
क्षणेक अन्तरे प्रभु बाह्य प्रकाशिला ॥३०२
बाह्य पाइ "बोल बोल" बोले विश्वम्भर ।
गड़ागड़ि याय प्रभु धरणी-उपर ॥३०३
प्रभु बोले "बोल बोल"—बोले विप्रवर ।
उठिल समुद्र—कृष्ण-सुख मनोहर ॥३०४
लोचनेर जले हैल पृथिवी सिञ्चित ।
अश्रु कम्प पुलक—सकल सुविदित ॥३०५
प्रभुरे देखिया विप्र परम आनन्द ।
पढ़े भक्ति-श्लोक भक्ति-सने करि रङ्ग ॥३०६
देखिया ताँहार भक्तियोगेर पठन ।
तुष्ट हैया प्रभु ताने दिला आलिङ्गन ॥३०७
पाइया वैकुण्ठनायकेर आलिङ्गने ।
प्रेमे पूर्ण रत्नगर्भ हैला सेइक्षणे ॥३०८
प्रभुर चरण धरि रत्नगर्भ कान्दे ।
बन्दी हैला विप्र चैतन्येर प्रेमफान्दे ॥३०९
पुनःपुन पढ़े श्लोक प्रेमयुक्त हैया ।
"बोल बोल" बोले प्रभु हुङ्कार करिया ॥३१०
देखिया सभार हैल अपरूप-ज्ञान ।
नगरिया-सब देखि करे परणाम ॥३११

"ना पढ़िह आर" बलिलेन गदाधर।
सभे मिलि धरिलेन प्रभु विश्वम्भर ॥३१२
क्षणेके हइला वाह्यदृष्टि गौरराय।
"कि बोल कि बोल?" प्रभु जिज्ञासे सदाय॥३१३
प्रभु बोले "कि चाञ्चल्य करिलाङ आमि ?"
पढ़ुया-सकल बोले "कृष्ण सत्य तुमि ॥३१४
कि बलिते पारि आमा'सभार शकति।"
आप्तगणे निबारिल "ना करिह स्तुति॥" ३१५
वाह्य पाइ विश्वम्भर आपना सम्बरे।
सर्व-गणे चलिलेन गङ्गा देखिबारे ॥३१६
गङ्गा नमस्करि गङ्गाजल लैला शिरे।
गोष्ठीर सहित बसिलेन गङ्गातीरे ॥३१७
यमुनार तीरे येन बेढ़ि गोपगण।
नाना रस करिलेन नन्देर नन्दन ॥३१८
सेइमत शचीर नन्दन गङ्गातीरे।
भकत-सहित कृष्णप्रसङ्गे बिहरे ॥३१९
कथोक्षणे सभारे बिदाय दिया घरे।
विश्वम्भर चलिलेन आपन-मन्दिरे ॥३२०
भोजन करिया सर्व-भुवनेर नाथ।
योगनिद्रा प्रति करिलेन दृष्टिपात ॥३२१
पोहाइल निशा—सर्व-पढ़ुयार गण।
आसिया मेलिला पुँथि करिते चिन्तन ॥३२२
ठाकुर आइला झाट करि गङ्गास्नान।
बसिया करेन प्रभु पुस्तक-व्याख्यान ॥३२३
प्रभुर ना स्फुरे कृष्ण-व्यतिरिक्त आन।
शब्द-मात्र कृष्णभक्ति करये व्याख्यान ॥३२४
पढ़ुया-सकल बोले "धातु-संज्ञा कार ?"
प्रभु बोले "श्रीकृष्णेर शक्ति नाम यार॥३२५
धातु-सूत्र बाखानि—शुनह भाइगण।
देखि कार शक्ति आछे करुक् खण्डन ?३२६
यत देख राजा—दिव्य दिव्य कलेबर।
कनक भूषित—गन्धचन्दने सुन्दर ॥३२७
'यम लक्ष्मी याहार बचने' लोक कहे।
धातु विने शुन तार ये अबस्था हये ॥३२८
कोथा याय सर्वाङ्गेर सौन्दर्य्य चलिया।
केहो भस्माकार, कारे एड़ेन पुँतिया ॥३२९
सर्वदेहे धातुरूपे वैसे कृष्णशक्ति।
ताहा-सने करे स्नेह, ताहाने से भक्ति ॥३३०
भ्रमवशे अध्यापक ना बुझये इहा।
'हय नय' भाइसब! बुझ मन दिया ॥३३१
एबे यारे नमस्करि करि मान्य-ज्ञान।
धातु गेले तारे परशिले करि स्नान ॥३३२
ये बापेर कोले पुत्र थाके महा-सुखे।
धातु गेले से-इ पुत्र अग्नि देइ मुखे ॥३३३
धातु-संज्ञा कृष्णशक्ति वल्लव सभार।
देखि इहा दूषुक्, आछये शक्ति कार ?३३४
एमत पबित्र पूज्य ये कृष्णेर शक्ति।
हेन कृष्णे भाइसब! कर दृढ़ भक्ति ॥३३५
बोल कृष्ण, भजकृष्ण, शुन कृष्णनाम।
अहर्निशि कृष्णेर चरण कर ध्यान ॥३३६
याहार चरणे दूर्वा जल दिले मात्र।
कभु यम तान अधिकारे नहे पात्र ॥३३७
अघ-बक-पूतनारे ये कैल मोचन।
भज भज सेइ नन्दनन्दन-चरण ॥३३८
पुत्रबुद्धये अजामिल याहार स्मरणे।
चलिल वैकुण्ठपुरी कृष्णेर चरणे ॥३३९
याहार चरणरसे शिव दिगम्बर।
ये चरण सेविबारे लक्ष्मीर आदर ॥३४०
ये चरण-महिमा अनन्त गुण गाय।
दन्ते तृण करि भज हेन कृष्णपा'य ॥३४१

याबत आछये प्राण देहे आछे शक्ति ।
ताबत कृष्णेर पादपद्मे कर' भक्ति ॥३४२
कृष्ण माता,कृष्ण पिता,कृष्ण प्राण धन ।
चरणे धरिया बोलों "कृष्णे देह' मन ॥३४३
दास्यभावे कहे प्रभु आपन महिमा ।
हइल प्रहर दुइ तभु नहे सीमा ॥३४४
मोहित पढ़ुयासब शुने एकमने ।
द्विरुक्ति करिते कारो ना आइसे वदने ॥३४५
से सब कृष्णेर दास—जानिह निश्चय ।
कृष्ण यारे पड़ायेन, से कि अन्य हय ?३४६
कथोक्षणे वाह्य प्रकाशिला विश्वम्भर ।
चाहि'या सभार मुख—लज्जित-अन्तर ॥३४७
प्रभुबोले "धातु-सूत्र बाखानिल केन ?"
पढ़ुया सकल बोले "सत्य अर्थ येन ॥३४८
ये शब्दे ये अर्थ तुमि करिले बाखान ।
का'र् बापे ताहा करिबारे पारे आन ?३४९
यतेक बाखान' तुमि—सब सत्य हय ।
सबे ये उद्देशे पढ़ि, तार अर्थ नय ॥"३५०
प्रभु बोले"कह देखि आमारे सकल ।
वायु बा आमारे आसि करियाछे बिह्वल॥३५१
सूत्ररूपे कोन् बृत्ति करिये बाखान ?"
शिष्यवर्ग बोले "सबे एक हरिनाम ॥३५२
सूत्र, वृत्ति टीकाय बाखान'कृष्ण मात्र ।
बुझिते तोमार व्याख्या के आछये पात्र ?३५३
भक्तिर श्रवणे ये तोमार आसि हये ।
ताहाते तोमारे कभु नर-ज्ञान नहे ॥"३५४
प्रभु बोले"कोन् रूप देखह आमारे ?"
पढ़ुया-सकल बोले"यत चमत्कारे ॥३५५
ये कम्प, ये अश्रु, येबा पुलक तोमार ।
आमरा त कोथाओ कभु नाहि देखि आर॥३५६
कालि यबे पुँथि तुमि चिन्ताह नगरे ।
तखन पढ़िल श्लोक एक दिप्रवरे ॥३५७
भागवत श्लोक शुनि हइला मूर्च्छित ।
सर्व-अङ्गे नाहि प्राण आमरा बिस्मित ॥३५८
चैतन्य पाइया तुमि ये कैला क्रन्दन ।
गङ्गार आसिया येन हइल मिलन ॥३५९
शेषे ये बा कम्प आसि हइल तोमार ।
शत जन समर्थ ना हय धरिबार ॥३६०
आपादमस्तके हैल पुलक-उन्नति ।
लाला, घर्म धूलाय व्यापित गौरज्योति ॥३६१
अपूर्व से लीला देखे यत जन ।
सभेइ बोलेन 'ए पुरुष नारायण' ॥३६२
केहो बोले 'व्यास,शुक, नारद, प्रह्लाद ।
ताँहा सभाकार योग्य एमत प्रसाद ॥३६३
सभे मिलि धरिलेन करिया ये शक्ति ।
क्षणेके तोमार आसि हैल वाह्य मति ॥३६४
ए सब बृत्तान्त तुमि किछुइ ना जान ।
आर कथा कहि ताहा चित्त दिया शुन ॥३६५
दिन दश धरि कर' यतेक व्याख्यान ।
सर्व शब्दे कृष्णभक्ति कर कृष्णनाम ॥३६६
दश दिन धरि आजि पाठ-बाद हय ।
कहिते तोमारे सभे बड़ बासि भय ॥३६७
शब्देर अशेष अर्थ तोमार गोचर ।
ये बाखान' हासि ताहा के दिब उत्तर ॥३६८
प्रभु बोले "दश दिन पाठ बाद याय ।
तबे कि आमारे कहिबारे ना जुयाय ?"३६९
पढ़ुया-सकल बोले "बाखान' उचित ।
सत्य 'कृष्ण' सकल-शास्त्रेर समीहित ॥३७०
अध्ययन एइ से—सकल-शास्त्र-सार ।
तबे ये ना लइ, दोष आमा सभाकार ॥३७१

मूले ये बाखान' तुमि, ज्ञातव्य से-इ से ।
ताहाते ना लय चित्त निज कर्मदोषे ॥''३७२
पढ़ुयार व्याक्ये तुष्ट हइला ठाकुर ।
कहिते लागिला कृपा करिया प्रचुर ॥३७३
प्रभु बोले ''भाइसब! कहिला सुसत्य ।
आमार ए सब कथा अन्यत्र अकथ्य ॥३७४
कृष्णवर्ण एक शिशु मुरली बाजाय ।
सबे देखोँ ताइ भाइ! बोल सर्वथाय ॥३७५
यत शुनि श्रवणे-सकल कृष्णनाम ।
सकल भुवन देखोँ-गोविन्देर धाम ॥३७६
तोमा' सभा' स्थाने मोर एइ परिहार ।
आजि हैते आर पाठ नाहिक आमार ॥३७७
तोमा' सभाकार-यार स्थाने चित्त लय ।
तार ठाञि पढ़-आमि दिलाङ निर्भय ॥३७८
कृष्ण विनु आर वाक्य ना स्फुरे आमार ।
सत्य आमि कहिलाङ चित्त आपनार ॥३७९
एइ बोल महाप्रभु सभारे कहिया ।
दिलेन पुँथिते डोर अश्रुयुक्त हैया ॥३८०
शिष्यगण बोलेन करिया नमस्कार ।
''आमाराओ करिलाङ सङ्कल्प तोमार ॥३८१
तोमार स्थानेते पढ़िलाङ आमि सब ।
आर स्थाने करिब कि ग्रन्थ-अनुभव ''३८२
गुरुर बिच्छेद-दुःखे सर्व-शिष्यगण ।
कहिते लागिल सभे करिया क्रन्दन ॥३८३
''तोमार मुखेते यत शुनिल व्याख्यान ।
जन्म जन्म हृदये रहुक सेइ ध्यान ॥३८४
आर स्थाने गिया कि आमरा पढ़िबाङ ।
सेइ भाल तोमा' हैते यत जानिलाङ ॥''३८५
एत बलि प्रभुरे करिया हाथ-जोड़ ।
पुस्तके दिलेन सब-शिष्यगण डोर ॥३८६

'हरि' बलि शिष्यगण करिलेन ध्वनि ।
सभा' कोले करिया कान्देन द्विजमणि ॥३
शिष्यगण क्रन्दन करेन अधोमुखे ।
डुबिलेन शिष्यगण परानन्द सुखे ॥३
रुद्ध-कण्ठ हइलेन सर्व-शिष्यगण ।
आशीर्वाद करे प्रभु श्रीशचीनन्दन ॥३
''दिवसेको आमि यदि हइ कृष्णदास ।
तबे सिद्ध हउ तोमा' सभार अभिलाष ॥३
तोमरा सकले लह कृष्णेर शरण ।
कृष्णनामे पूर्ण हउ सभार वदन ॥३
निरवधि श्रवणे शुनह कृष्णनाम ।
कृष्ण हउ तोमा' सभाकार धन प्राण ॥३
ये पढ़िल, से-इ भाल, आर कार्य्य नाञि ।
सभे मिलि 'कृष्ण' बलि गाओ एकठाञि ॥३
कृष्णेर कृपाय शास्त्र स्फुरुक् सभार ।
तुमिसब जन्मजन्म बान्धव आमार ॥''३
प्रभुर अमृत वाक्य शुनि शिष्यगण ।
परमानन्दमन हइलेन ततक्षण ॥३
से सब शिष्येर पा'य मोर नमस्कार ।
चैतन्येर शिष्यत्वे हइल भाग्य यार ॥३
से सब कृष्णेर दास जानिह निश्चय ।
कृष्ण यारे पढ़ायेन, से कि अन्य हय ?३
से विद्याबिलास देखिलेन ये ये जन ।
तारेओ देखिले हय बन्धबिमोचन ॥३
हइल पापीष्ठ,-जन्म नहिल तखने ।
बञ्चित हइलाङ सेइ-मुख दरशने ॥३
तथापिह एइ कृपा कर' महाशय !
से विद्याबिलास मोर रहुक हृदय ॥४०
पढ़िलेन नवद्वीपे वैकुण्ठेर राय ।
अद्यापिह चिह्न आछे सर्व-नदीयाय ॥४०

चैतन्य-लीलार किछु अवधि ना हये ।
'आविर्भाव' तिरोभाव' एइ वेदे कहे ॥४०२
एइ हैते परिपूर्ण विद्यार विलास ।
सङ्कीर्त्तन आरम्भेर हइल प्रकाश ॥४०३
चतुर्द्दिगे अश्रुकण्ठे कान्दे शिष्यगण ।
सदय हइया प्रभु बोलेन बचन ॥४०४
"पढ़िलाङ शुनिलाङ एत काल धरि ।
कृष्णेर कीर्त्तन कर परिपूर्ण करि ॥"४०५
शिष्यगण बोलेन "केमन सङ्कीर्त्तन ?"
आपने शिक्षाय प्रभु श्रीशचीनन्दन ॥४०६

(केदार राग)

"हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन ॥"४०७
दिशा देखाइया प्रभु हाथे तालि दिया ।
आपने कीर्त्तन करे शिष्यगण लैया ॥४०८
आपने कीर्त्तननाथ करये कीर्त्तन ।
चौदिगे बेढ़िया गाय सबशिष्य-गण ॥४०९
आविष्ट हइया प्रभु निज नाम-रसे
गड़ागड़ि याय प्रभु धूलाय आवेशे ॥४१०
'बोल बोल' बलि प्रभु चतुर्द्दिगे पड़े ।
पृथिवी बिदीर्ण हय आछाड़े-आछाड़े ॥४११
गण्डगोल शुनि सब-नदीया नगर ।
धाइया आइला सब ठाकुरेर घर ॥४१२
निकटे बसये यत वैष्णवेर घर ।
कीर्त्तन शुनिया सभे आइला सत्वर ॥४१३
प्रभुर आवेश देखि सर्व-भक्तगण ।
परम अपूर्व सभे भावे मनेमन ॥४१४
परम सन्तोष सभे हइला अन्तरे ।
"एवे सङ्कीर्त्तन हैल नदीयानगरे ॥४१५
एमत दुर्ल्लभ भक्ति आछये जगते ।
नयन सफल हय ए भक्ति देखिते ॥४१६
यत उद्धतेर सीमा एइ विश्वम्भर ।
प्रेम देखिलाङ नारदादिर दुष्कर ॥४१७
हेन उद्धतेर यदि हेन भक्ति हय ।
ना बुझि कृष्णेर इच्छा ए बा किबा हय ॥"४१८
क्षणेके हइला वाह्य विश्वम्भरराय ।
सभे प्रभु 'कृष्णकृष्ण' बोलये सदाय ॥४१९
वाह्य हइलेओ वाह्य-कथा नाहि कहे ।
सर्व-वैष्णवेर गला धरिया कान्दये ॥४२०
सभे मिलि. ठाकुरेरे स्थिर कराइला ।
चलिला वैष्णवगण महानन्द हैया ॥४२१
कोन कोन पढ़ुया-सकल प्रभुसङ्गे ।
उदासीनपथ लइलेन प्रेमरङ्गे ॥४२२
आरम्भिला महाप्रभु आपन प्रकाश ।
सकल भक्तेर दुःख हइल बिनाश ॥४२३
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पद युगे गान ॥४२४

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे श्रीसङ्कीर्त्तनारम्भवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ।



द्वितीय अध्याय

जयजय जगतमङ्गल गौरचन्द्र।
दान देह' हृदये तोमार पदद्वन्द्व ॥१
भक्तगोष्ठी-सहिते गौराङ्ग जयजय।
शुनिले चैतन्य कथा भक्ति लभ्य हय ॥२
ठाकुरेर प्रेम देखि सर्व-भक्तगण।
परम बिस्मित हैल सभाकार मन ॥३
परम सन्तोषे सभे अद्वैतेर स्थाने।
सभे कहिलेन यत हैल दरशने ॥४
भक्तियोग-प्रभावे अद्वैत महाबल।
अवतरियाछे प्रभु' जानेन सकल ॥५
तथापि अद्वैततत्त्व बुझन ना याय।
सेइक्षणे प्रकाशिया तखने लुकाय ॥६
शुनिया अद्वैत बड़ हरिष हइला।
परम आबिष्ट हइ कहिते लागिला ॥७
"मोर आजुकार कथा शुन भाइ सब!
निशिते देखिलुँ आमि किछु अनुभव ॥८
गीतार पाठेर अर्थ भाल ना बुझिया।
थाकिलाङ दुःख भाबि उपास करिया ॥९
कथो रात्र्ये आमारे बोलये एकजन।
उठह आचार्य्य! झाट करह भोजन ॥१०
एइ पाठ एइ एइ अर्थ कहिल तोमारे।
उठिया भोजन कर पूजह आमारे ॥११
आर केने दुःख भाब' पाइले सकल।
ये लागि सङ्कल्प कैले, से हइल सफल ॥१२
यत उपवास कैले, यत आराधन।
यतेक करिले 'कृष्ण' बलिया क्रन्दन ॥१३
या'आनिते भुज तुलिते प्रतिज्ञा करिला।
से प्रभु तोमारे एबे बिदित हइला ॥१४
सर्वदेशे हइबेक कृष्णेर कीर्त्तन।
घरे घरे नगरे नगरे अनुक्षण ॥१५
ब्रह्मार दुर्ल्लभ मूर्त्ति जगते यतेक।
तोमार प्रसादे मात्र सभे देखिबेक ॥१६
एइ श्रीवासेर घरे यतेक वैष्णव।
ब्रह्मादिर दुर्ल्लभ देखिबे अनुभव ॥१७
भोजन करह तुमि, आमार बिदाय।
आरबार आसिबाङ भोजनबेलाय ॥१८
चक्षु मेलि चा'हि देखि—एइ विश्वम्भर।
देखिते देखिते मात्र हइला अन्तर ॥१९
कृष्णेर रहस्य किछु ना पारि बुझिते।
कोन् रूपे प्रकाश बा करेन काहाते ॥२०
इहार अग्रज पूर्व—विश्वरूप नाम।
आमा'-सङ्गे आसि गीता करित व्याख्यान ॥२१
एइशिशु परम-मधुर-रूपवान्।
भाइके डाकिते आइसेन मोर स्थान ॥२२
चित्तवृत्ति हरे' शिशु सुन्दर देखिया।
आशीर्वाद करों "भक्ति हउक' बलिया ॥२३
आभिजात्ये आछे बड़ मानुषेर पुत्र।
नीलाम्बर चक्रवर्त्ती—ताहार दौहित्र ॥२४
आपनेओ सर्वगुणे उत्तम पण्डित।
ताँहार कृष्णेते भक्ति हइते उचित ॥२५
बड़ सुखी हइलाङ ए कथा शुनिया।
आशीर्वाद कर' सभे 'तथास्तु' बलिया ॥२६
श्रीकृष्णेर अनुग्रह हउक सभारे।
कृष्णनामे मत्त हउ सकल संसारे ॥२७
यदि सत्य बस्तु हय तबे एइखाने।
सभे आसिबेन बामनार स्थाने ॥२८
आनन्दे अद्वैत करे परम हुङ्कार।
सकल वैष्णव करे जयजयकार ॥२९
'हरिहरि' बलि डाके वदन सभार।
उठिल कीर्त्तनरूप कृष्ण-अवतार ॥३०

२ अध्याय

केहो बोले "निमाञि पण्डित भाल हैले ।
तबे सङ्कीर्त्तन करि महाकुतूहले ॥" ३१
आचार्य्येरे प्रणति करिया भक्तगण ।
आनन्दे चलिला करि कृष्णेर कीर्त्तन ॥३२
प्रभु सङ्गे याहार याहार देखा हय ।
परम-आदरे सभे रहि सम्भाषय ॥३३
प्रातःकाले प्रभु यबे चले गङ्गास्नाने ।
वैष्णवसभार सने हय दरशने ॥३४
श्रीवासादि देखिले ठाकुर नमस्करे ।
प्रीत हैया भक्तगण आशीर्वाद करे ॥३५
"तोमार हउक भक्ति कृष्णेर चरणे ।
मुखे कृष्ण बोल, कृष्ण शुनह श्रवणे ॥३६
कृष्ण भजिले से बापु ! सब सत्य हय ।
ना भजिले कृष्ण, रूप विद्या किछु नय ॥३७
कृष्ण से जगतपिता कृष्ण से जीवन ।
दृढ़ करि भज बापु! कृष्णेर चरण ॥" ३८
आशीर्वाद शुनिया प्रभुर बड़ सुख ।
सभारे चा'हेन प्रभु तुलिया श्रीमुख ॥३९
"तोमरा से कर' सत्य करि आशीर्वाद ।
तोमरा बा केने अन्य करिबा प्रसाद ?४०
तोमरा से पार' कृष्णभजन दिबारे ।
दासेरे सेविले कृष्ण अनुग्रह करे ॥४१
तोमरा ये आमारे शिखाओ विष्णुधर्म ।
तेञि बुझि आमार उत्तम आछे कर्म ॥४२
तोमा' सभा' सेविले से कृष्णभक्ति पाइ ।"
एत बलि कारो पा'ये धरे सेइ ठाँइ ॥४३
निङ्गाड़ये बस्त्र कारो करिया यतने ।
धुतिबस्त्र तुलि कारो देन त आपने ॥४४
कुश गङ्गामृत्तिका काहारो देन करे ।
साजि बहि' कोन दिन चले कारो घरे ॥४५
सकल वैष्णवगण 'हाय हाय' करे ।
एमत उचित कर्म ना हय तोमारे ॥४६
एइमत प्रतिदिन प्रभु विश्वम्भर ।
आपन दासेर हय आपने किङ्कर ॥४७
कोन् कर्म सेवकेर कृष्ण नाहि करे ।
सेवकेर लागि निज धर्म परिहरे ॥४८
'सकल-सुहृत् कृष्ण' सर्व-वेदे कहे ।
एतेके कृष्णेर केहो द्वेष्य-योग्य नहे ॥४९
ताहो परिहरे कृष्ण भक्तेर कारणे ।
तार साक्षी दुर्य्योधनवंशेर मरणे ॥५०
कृष्णेर करये सेवा—भक्तेर स्वभाव ।
भक्त लागि कृष्णेर सकल अनुभाव ॥५१
कृष्णेरे बेचिते पारे भक्त भक्तिरसे ।
तार साक्षी सत्यभामा-द्वारका निवासे ॥५२
सेइ प्रभु गौराङ्गसुन्दर विश्वम्भर ।
गूढ़-रूपे आछे नवद्वीपेर भितर ॥५३
चिनिते ना पारे केहो प्रभु आपनार ।
या' सभार लागिया हइला अवतार ॥५४
कृष्ण भजिबार यार आछे अभिलाष ।
से भजुक कृष्णेर मङ्गल निज दास ॥५५
सभारे शिखाय गौरचन्द्र भगवाने ।
वैष्णवेर सेवा प्रभु करिया आपने ॥५६
साजि बहे, धुति बहे, लज्जा नाहि करे ।
सम्भ्रमे वैष्णवगण हस्ते आसि धरे ॥५७
देखि विश्वम्भरेर विनय भक्तगणे ।
अकैतबे आशीर्वाद करे काय-मने ॥५८
"भज कृष्ण, स्मर' कृष्ण, शुन कृष्णनाम ।
कृष्ण हउ सभार जीवन धन प्राण ॥५९
बोलह बोलाह कृष्ण, हओ कृष्णदास ।
तोमार हृदये हउ कृष्णेर प्रकाश ॥६०

कृष्ण बइ आर नाहि स्फुरुक तोमार ।
तोमा' हैते दुःख याउ आमा'सभाकार ।।६१
ये ये अज्ञ जन सब कीर्त्तनेरे हासे' ।
तोमा' हैते ताहारा डुबुक कृष्ण रसे ।।६२
येन तुमि शास्त्रे सब जिनिले संसार ।
तेन कृष्ण भजि कर पाषण्ड उद्धार ।।६३
तोमार प्रसादे येन आमरा-सकल ।
सुखे कृष्ण गाइ नाचि हइया बिह्वल ।।"६४

हस्त दिया प्रभुर श्रीअङ्गे भक्तगण ।
आशीर्वाद करे दुःख करि निवेदन ।।६५
"एइ नवद्वीपे बापु ! यत अध्यापक ।
कृष्णभक्ति बाखानिते सभे हय बक ।।६६
कि सन्न्यासी, कि तपस्वी किबा ज्ञानी यत ।
बड़ बड़ एइ नवद्वीपे आछे कत ।।६७
केहो ना बाखाने बापु! कृष्णेर कीर्त्तन ।
ना करुक व्याख्या आरो निन्दे'सर्वक्षण ।।६८
यतेक पापीष्ठ श्रोता सेइ बोल धरे ।
तृण-ज्ञाने केहो आमा'सभारे ना करे ।।६९
सन्तापे पोड़ये बापु ! सब देहभार ।
कोथाहो ना शुनि कृष्ण-कीर्त्तन-प्रचार ।।७०
एखने प्रसन्न कृष्ण हइला सभारे ।
ए- पथे प्रविष्ट करि दिलेन तोमारे ।।७१
तोमा' हैते हइबेक पाषण्डीर क्षय ।
मनेते आमरा इहा बुझिल निश्चय ।।७२
चिरजीवी हओ तुमि बलि कृष्णनाम ।
तोमा' हैते व्यक्त हउ लुप्त गुणग्राम ।।७३
भक्त-आशीर्वाद प्रभु शिरे करि लय ।
भक्त-आशीर्वादे से कृष्णेते भक्ति हय ।।७४
शुनिया भक्तेर दुःख प्रभु विश्वम्भर ।
प्रकाश हइते चित्त हइल सत्वर ।।७५

प्रभु बोले तुमि सब कृष्णेर दयित !
तोमरा ये बोल, से-इ हइब निश्चित ।।७६
धन्य मोर जीवन—तोमरा बोल भाल ।
तोमरा राखिले आसिबारे नारे काल ।।७७
कोन् छार हय पाप पाषण्डीर गण ।
सुखे गिया कर' कृष्णचन्द्रेर कीर्त्तन ।।७८
भक्तदुःख प्रभु कभु सहिते ना पार ।
भक्त लागि कृष्णेर सर्वत्र अवतारे ।।७९

ए त बुझि तोमरा आनाइबा कृष्णचन्द्र ।
नवद्वीपे कराइबा वैकुण्ठ-आनन्द ।।८०
तोमा'सभा हैते हैब जगत उद्धार ।
कराइबा तोमरा कृष्णेर अवतार ।।८१
'सेवक' करिया मोरे सभेइ जानिबा ।
एइ बर—मोरे कभु ना परिहरिबा ।।८२
सभार चरणधूलि लय विश्वम्भर ।
आशीर्वाद सभेइ करेन बहुतर ।।८३
गङ्गास्नान करिया चलिला सभे घरे ।
प्रभुओ चलिला किछु हासिया अन्तरे ।।८४
आपने भक्तेर दुःख शुनिया ठाकुर ।
पाषण्डीर प्रति क्रोध बाढ़िल प्रचुर ।।८५
"संहारिब सब बलि" करये हुङ्कार ।
"मुञि सेइ, मुञि सेइ"बोले बारेबार ।।८६
क्षणे हासे,क्षणे काँन्दे, क्षणे मूर्च्छा पाय ।
लक्ष्मीरे देखिया क्षणे मारिबारे याय ।।८७
एइमत हैला प्रभु वैष्णव-आवेशे ।
शची नाबुझये कोन् व्याधि बा बिशेषे ।।८८
स्नेह विनु शची किछु नाहि जाने आर ।
सभारे कहेन विश्वम्भरेर व्यवहार ।।८९
"विधाता ये स्वामी निल,निल पुत्रगण ।
अवशिष्ट सकले आछये एकजन ।।९०

ताहारो किरूप मति बुझने ना याय ।
क्षणे हासे क्षणे कान्दे क्षणे मूर्च्छा पाय ॥९१
आपना आपनि कहे मने मने कथा ।
क्षणे बोले 'छिण्डों' छिण्डों' पाषण्डीर माथा' ॥९२
क्षणे गिया गाछेर उपर डाले चढ़े ।
ना मेले लोचन, शून्य पृथिवीते पड़े ॥९३
दन्त कड़मड़ि करे, मालसाट मारे ।
गड़ागड़ि याय, किछु वचन नास्फुरे ॥"९४
नाहि शुने देखे लोक कृष्णेर बिकार ।
वायु-ज्ञान करि लोक बोले बान्धिवार ॥९५
शचीमुखे शुनि याय ये ये देखिबारे ।
वायु-ज्ञान करि सभे बोले बान्धिबारे ॥९६
पाषण्डी देखिया प्रभु खेदाड़िया याय ।
वायु-ज्ञान करि लोक हासिया पलाय ॥९७
आस्तेव्यस्ते मा'ये गिया आनये धरिया ।
लोके बोले "पूर्वं वायु जन्मिल आसिया ।।"९८
लोक बोले "तुमि त अबोध ठाकुराणि !
आर बा इँहार वार्त्ता जिज्ञासह केनि ?९९
पूर्वकार वायु आसि जन्मिल शरीरे ।
दुइ पा'ये बन्धन करिया राख घरे ॥१००
खाइबारे देह' डाबु नारिकेल जल ।
याबत उन्माद-वायु नाहि करे बल ।।"१०१
केहो बले "इथे अल्प औषधे कि करे ।
शिवाघृत-प्रयोगे से ए वायु निस्तरे ॥१०२
पाकतैल शिरे दिया कराइबा स्नान ।
याबत प्रलय नाहि हइयाछे ज्ञान ।।"१०३
परम उदार शची-जगतेर माता ।
यार मुखे येइ शुने' कहे सेइ कथा ॥१०४
चिन्ताय व्याकुल शची किछु नाहि जाने ।
गोविन्द-शरण गेला काय-वाक्य-मने ॥१०५

श्रीवासादि वैष्णव-सभार स्थाने स्थाने ।
लोकद्वारे शची करिलेन निवेदने ॥१०६
एकदिन गेला तथा श्रीवास पण्डित ।
उठि प्रभु नमस्कार कैला सावहित ॥१०७
भक्त देखि प्रभुर बाढ़िल भक्ति-भाव ।
लोमहर्ष, अश्रुपात, कम्प अनुराग ॥१०८
तुलसीरे आछिला करिते प्रदक्षिणे ।
भक्त देखि प्रभु मूर्च्छा पाइला तखने ॥१०९
वाह्य पाइ कथोक्षणे लागिला कान्दिते ।
महाकम्पे प्रभु स्थिर ना पारे हइते ॥११०
अद्भुत देखिया श्रीनिवास मने गणे' ।
"महाभक्तियोग; वायु बोले कोन् जने?"१११
वाह्य पाइ बोलेन प्रभु पण्डितेर स्थाने ।
"कि बुझ पण्डित! तुमि मोहर विधाने ॥११२
केहो बोले महा-वायु, बान्धिबार तरे ।
पण्डित! तोमार चित्ते कि लये आमारे ?"११३
हासि बोले श्रीवासपण्डित "भाल बाइ ।
तोमार येमत वाइ ताहा आमि चाइ ॥११४
महाभक्तियोग देखि तोमार शरीरे ।
श्रीकृष्णेर अनुग्रह हइल तोमारे ॥"११५
एतेक शुनिल यबे श्रीवासेर मुखे ।
श्रीवासेरे आलिङ्गन कैला बड़ सुखे ॥११६
"सभे बोले वायु, सबे आशंसिले तुमि ।
आजि बड़ कृतकृत्य हइलाङ आमि ॥११७
यदि तुमि वायु-हेन बलिता आमारे ।
प्रवेशितों आजि आमि गङ्गार भितरे ॥"११८
श्रीवास बोलेन "ये तोमार भक्तियोग ।
ब्रह्मा-शिव-शुकादि वाञ्छये एइ भोग ॥११९
सभे मिलि एकठात्रि करिब कीर्त्तन ।
ये-ते केने ना बोले पाषण्डि-पापीगण ॥"१२०

शची प्रति श्रीनिवास बलिला बचन ।
"चित्तेर यतेक दुःख करह खण्डन ॥१२१
'वायु नहे—कृष्णभक्ति' बलिब तोमारे ।
इहा कभु अन्य जन बुझिबारे नारे ॥१२२
भिन्न-लोक-स्थाने इहा किछु ना कहिबा ।
अनेक कृष्णेर यदि रहस्य देखिबा ॥"१२३
एतेक कहिया श्रीनिवास गेला घर ।
वायुज्ञान दूर हैल शचीर अन्तर ॥१२४
तथापिह अन्तर-दुःखिता शची हय ।
'बाहिराय पाछे पुत्र' एइ मने भय ॥१२५
एइमते आछे प्रभु विश्वम्भर-राय ।
के ताने जानिते पारे यदि ना जानाय ॥१२६
एकदिन प्रभु गदाधर करि सङ्गे ।
अद्वैते देखिते प्रभु चलिलेन रङ्गे ॥१२७
अद्वैत देखिल गिया प्रभु-दुइ-जन ।
बसिया करये जल-तुलसी-सेवन ॥१२८
दुइ भुज आस्फालिया बोले 'हरिहरि' ।
क्षणे हासे क्षणे कान्दे अर्च्चन पासरि ॥१२९
महामत्त सिंह येन करये हुङ्कार ।
क्रोध देखि—येन महारुद्र-अवतार ॥१३०
अद्वैत देखिया मात्र प्रभु विश्वम्भर ।
पड़िला मूर्च्छित हइ पृथिवी-उपर ॥१३१
भक्तियोग-प्रभावे अद्वैत महाबल ।
'एइ मोर प्राणनाथ' जानिला सकल ॥१३२
'कति याबे चोरा आजि' भाबे मनेमने ।
"एतदिन चुरि करि बुल' एइखाने ॥१३३
अद्वैतेर ठाञि चोरा ना लागे चोराइ ।
चोरेर उपरे चुरि करिब हेथाइ ॥"१३४
चुरिर समय एबे बुझिया आपने ।
सर्व-पूजा-सज्ज लइ नाम्बिला तखने ॥१३५
पाद्य, अर्घ्य आचमनी लइ सेइ ठाञि ।
चैतन्यचरण पूजे आचार्य्य गोसाञि ॥१३
गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, चरण उपरे ।
पुनःपुन एइ श्लोक पढ़ि नमस्करे ॥१३

तथाहि (विष्णुपुराणे १।१९।६५)—

"नमो ब्रह्मण्यदेवाय गो-ब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः॥"१

टीका ।

नम इति । ब्रह्मण्यानां, देवाय श्रेष्ठाय गोभ्यः-हविर्दोग्धृभ्यः, ब्राह्मणेभ्यः-वेदविद्भ्यः, हि यस्मात् तस्मै । गो-ब्राह्मणानां रक्षणेन यज्ञाद्यनुष्ठानतो रक्षितः स्यात् वैदिको धर्म इति अतएव जगद्धिताय जगतां हितसाधकाय । लीलाम गोविन्दायेति-गोपालनलीलायेत्यर्थः; तथाहि ब्र संहितायां (५।२९)—"सुरभीरभिपालन्तम्" इति न चानया न्यूनत्वमाशङ्कनीयं, "गोभ्यो य प्रवर्त्तन्ते गोभ्यो देवाः समुत्थिताः । गोभिर्वे समुद्गीर्णाः स-षड़ङ्गपदक्रमाः"। इति ग सूत्ता कृष्णायेत्यत्र यशोदास्तनन्धयायेति रूढ़्यर्थएव ग्राह्यः, न तु सत्ताभिन्नानन्दायेति योगार्थो 'रूढ़िर्योगमपहरति' इति न्यायात्; एवमुक्तं भ "लब्धात्मिका सती रूढ़िर्भवेद्योगापहारि कल्पनीया तु लभते नात्मानं योगबाधतः ॥" इति नामकौमुदीकृद्भिश्च-"कृष्णशब्दस्य तमालश्याम त्विषि यशोदास्तनन्धये परब्रह्मणि रूढ़िः" इति नमो नमो नम इति त्रिरावृत्तिः अत्यौत्सुक्येनैवे वगन्तव्यम् ॥

अनुवाद ।

प्रह्लादने कहा-कृष्ण ! आप ब्रह्मण्य देव गो ब्राह्मण के हित कर्त्ता हैं, समस्त जगत का हितकर्त्ता हैं, गोपालन आपकी एक लीला तज्जन्य एक नाम आपका 'गोविन्द' है, आप नमस्कार नमस्कार ।

पुनःपुन श्लोक पढ़ि पड़ये चरणे ।
चिनिञा आपन प्रभु करये क्रन्दने ॥१३

पाखालिल पद दुइ नयनेर जले ।
जोड़ हस्त करि दाण्डाइला पदतले ॥१४०
हासि बोले गदाधर जिह्वा कामड़ाये ।
"बालकेरे गोसाञि! एमत नाजुयाये ॥"१४१
हासये अद्वैत गदाधरेर बचने ।
"गदाधर! लालक जानिबा कथोदिने ॥"१४२
चित्ते बड़ बिस्मित हइला गदाधर ।
हेन बुझि अवतीर्ण हइला ईश्वर ॥"१४३
कथोक्षणे विश्वम्भर प्रकाशिला वाह्य ।
देखेन आवेशमय अद्वैत-आचार्य्य ॥१४४
आपनारे लुकायेन प्रभु विश्वम्भर ।
अद्वैतेरे स्तुति करे जुड़ि दुइ कर ॥१४५
नमस्कार करि ताँर पदधूलि लये ।
आपनार देह प्रभु ताँरे निवेदये ॥१४६
"अनुग्रह तुमि मोरे कर' महाशय !
तोमार आमि से हेन जानिय निश्चय ॥१४७
धन्य हइलाङ आमि देखिया तोमारे ।
तुमि कृपा करिले से कृष्णनाम स्फुरे ॥१४८
तुमि से करिते पार' भव-बन्ध-नाश ।
तोमार हृदये कृष्ण सर्वथा प्रकाश ॥१४९
निज भक्त बाढ़ाइते ठाकुर से जाने ।
येन करे भक्त, तेन करेन आपने ॥१५०
मने बोले अद्वैत "कि कर' भारि-भूरि ।
चोरेर उपरे आगे करियाछों चुरि ॥"१५१
हासिया अद्वैत किछु करिला उत्तर ।
"सभा' हैते तुमि मोर बड़ विश्वम्भर ! १५२
कृष्ण-कथा-कौतुके थाकिब एक ठाँइ ।
निरन्तर तोमा येन देखिबारे पाइ ॥१५३
सर्व-वैष्णवेर इच्छा तोमारे देखिते ।
तोमार सहित कृष्णकीर्त्तन करिते ॥"१५४
अद्वैतेर वाक्य शुनि परम-हरिषे ।
स्वीकार करिया चलिलेन निज-वासे ॥१५५
जानिला अद्वैत—हैल प्रभुर प्रकाश ।
परीक्षिते' चलिलेन शान्तिपुर-वास ॥१५६
"सत्य यदि प्रभु हये, मुञि हङ दास ।
तबे मोरे बान्धिया आनिब निज-पाश ॥"१५७
अद्वैतेर चित्त बुझिबार शक्ति कार ?
यार शक्ति-कारणे चैतन्य-अवतार ॥१५८
ए-सब कथाय यार नाहिक प्रतीत ।
अद्वैतेर सेवा तार निष्फल निश्चित ॥१५९
महाप्रभु विश्वम्भर प्रति-दिने दिने ।
कीर्त्तन करेन सर्व-वैष्णवेर सने ॥१६०
सभे बड़ आनन्दित देखि विश्वम्भर ।
लखिते ना पारे केहो आपन ईश्वर ॥१६१
सर्व-बिलक्षण ताँर परम-आवेश ।
देखिते सभार चित्ते सन्देह विशेष ॥१६२
यखन प्रभुर हय आनन्द आवेश ।
के कहिब ताहा, सबे पारे प्रभु 'शेष' ॥१६३
शतेक-जनेओ कम्प धरिबारे नारे ।
लोचने बहये नदी शतशत धारे ॥१६४
कनक-पनस येन पुलकित-अङ्ग ।
क्षणेक्षणे अट्टअट्ट हासे बहु रङ्ग ॥१६५
क्षणे हय आनन्दमूर्च्छित प्रहरेक ।
वाह्य हैले ना बोलये कृष्ण व्यतिरेक ॥१६६
हुङ्कार शुनिते दुइ श्रवण बिदरे ।
ताँर अनुग्रहे ताँर भक्त सब तरे' ॥१६७
सर्व-अङ्ग स्तम्भाकृति क्षणेक्षणे हय ।
क्षणे हय सेइ अङ्ग नवनीतमय ॥१६८
अपूर्व देखिया सब-भागवतगणे ।
नर-ज्ञान आर केहो ना करये मने ॥१६९

केह बोले''ए पुरुष अंश-अवतार।''
केहो बोले ''ए शरीरे कृष्णेर बिहार॥''१७०
केहो बोले''शुक किबा प्रह्लाद नारद।''
केहो बोले''हेन बुझि खण्डिल आपद॥''१७१
यत सब भागवतगणेर गृहिणी।
तांहारा बोलये''कृष्ण जन्मिल आपनि॥''१७२
केहो बोले ''एइ बुझि प्रभु अवतार।''
एइमत मने सभे करेन बिचार॥१७३
वाह्य हैले ठाकुर सभार गला धरि।
ये क्रन्दन करे, ताहा कहिते ना पारि॥१७४
''कोथा गेल पाइब से मुरलीवदन।''
बलिते छाड़ये श्वास करये क्रन्दन॥१७५
स्थिर हइ प्रभु सब-आप्तगण स्थाने।
प्रभु बोले''मोर दुःख करोँ निबेदने॥''१७६
प्रभु बोले मोहर दु-खेर अन्त नाञि।
पाइयाओ हाराइलुँ जीवन-कानाञि॥१७७
सभार सन्तोष हैल रहस्य शुनिते।
श्रद्धा करि सभे बसिलेन चारिभिते॥१७८
कानाञिर-नाटशाला-नामे एक ग्राम।
गया हैते आसिते देखिलुँ सेइ स्थान॥१७९
तमाल-श्यामल एक बालक सुन्दर।
नवगुञ्जा-सहित कुन्तल मनोहर॥१८०
बिचित्र-मयूरपुच्छ शोभे तदुपरि।
झलमल मणिगण–लखिते ना पारि॥१८१
हाथेते मोहन वंशी परम सुन्दर।
चरणे नूपुर शोभे अति मनोहर॥१८२
नीलस्तम्भ जिनि भुजे रत्न अलङ्कार।
श्रीवत्स कौस्तुभ बक्षे शोभे-मणिहार॥१८३
कि कहिब से पीत-धटीर परिधान।
मकर-कुण्डल शोभे कमल-नयान॥१८४

आमार समीपे आइला हासिते हासिते।
आमा आलिङ्गिया पलाइला कोन्‌भिते॥१८
किरूपे कहेन कथा श्रीगौरसुन्दरे।
ताँर कृपा विने ताहा के बुझिते पारे॥१८६
कहिते कहिते मूर्च्छा गेला विश्वम्भर।
पड़िला 'हा कृष्ण!' बलि पृथिवी उपर॥१८
आथेव्यथे धरे सभे 'कृष्णकृष्ण' बलि।
स्थिर करि झाड़िलेन श्रीअङ्गेर धूलि॥१८८
स्थिर हइयाओ प्रभु स्थिर नाहि हये।
'कोथाकृष्ण!कोथा!कृष्ण'बलिया कान्दये॥१८
क्षणेके हइला स्थिर श्रीगौरसुन्दर।
स्वभावे हइला अति-नम्र-कलेबर॥१९०
परम-सन्तोष-चत्त हइल सभार।
शुनिया प्रभुर भक्तिकथार प्रचार॥१९१
सभे बोले''आमरासभार बड़ पुण्य।
तुमि-हेन सङ्गे सभे हइलाङ धन्य॥१९२
तुमि यार सङ्गे,तार वैकुण्ठे कि करे।
तिलेके तोमार सङ्गे भक्ति फल धरे॥१९३
अनुपाल्य तोमार आमरा सर्वजन।
सभार नायक हइ करह कीर्त्तन॥१९४
पाषण्डीर वाक्ये दग्ध शरीर सकल।
ए तोमार प्रेमजले करह शीतल॥१९५
सन्तोषे सभार प्रति करिया आश्वास।
चलिलेन मत्त-सिंह-प्राय निज-वास॥१९६
गृहे आइलेओ नाहि व्याभार-प्रस्ताब।
निरन्तर आनन्द-आबेश-आविर्भाव॥१९७
कत बा आनन्दधारा बहे श्रीनयने।
चरणेर गङ्गा किबा आइला वदने॥१९८
'कोथा कृष्ण!कोथा कृष्ण!एइमात्र बोले।
आर केहो कथा नाहि पाय जिज्ञासिले॥१९९

ये वैष्णव ठाकुर देखेन विद्यमाने ।
ताँहारेइ जिज्ञासेन "कृष्ण कोन खाने ?" २००
बलिया क्रन्दन प्रभु करे अतिशय ।
ये जाने ये-मत सेइमत प्रबोधय ॥२०१
एकदिन ताम्बूल लइया गदाधर ।
सन्तोषे आइला तिँहो प्रभुर गोचर ॥२०२
गदाधरे देखि प्रभु करेन जिज्ञासा ।
"कोथा कृष्ण आछेन श्यामल पीतवासा ?" २०३
से आर्त्ति देखिते सर्व-हृदय बिदरे ।
कि बोल बलिब हेन बचन ना स्फुरे ॥२०४
सम्भ्रमे बोलेन गदाधर महाशय ।
"निरवधि आछे कृष्ण तोमार हृदय ॥" २०५
'हृदये आछेन कृष्ण' बचन शुनिया ।
आपन हृदय प्रभु चिरे नख हिया ॥२०६
आथेव्यथे गदाधर दुइ हाते धरि ।
नाना मते प्रबोधिया राखिला स्थिर करि॥२०७
एइ आसिबेन कृष्ण,स्थिर हओ खानि ।
गदाधर बोले, शची शुनेन आपनि ॥२०८
बड़ तुष्ट हैला आइ गदाधर-प्रति ।
"एमत शिशुर बुद्धि नाहि देखि कति ॥२०९
मुञि भये नाहि पारोँ सम्मुख हइते ।
शिशु हइ देख प्रबोधिल भाल-मते ॥" २१०
आइ बोले बाप!तुमि सर्वथा थाकिबा ।
छाड़िया उहार सङ्ग कोथाहो ना याबा॥२११
अद्भुत प्रभुर प्रेमयोग देखि आइ ।
पुत्र-हेन ज्ञान आर मने किछु नाइ ॥२१२
मने भाबे आइ "ए पुरुष नर नहे ।
मनुष्येर नयनेर कि एत धारा बहे ॥२१३
नाहि जानि आसियाछे कोन् महाशय ।"
भय पाइ प्रभुर सम्मुख नाहि हय ॥२१४
सर्व भक्तगण सन्ध्या आरम्भ हइले ।
आसिया प्रभुर गृहे अल्पे-अल्पे मिले ॥२१५
भक्तियोगसम्मत ये-सब श्लोक हय ।
पढ़िते लागिला श्रीमुकुन्द-महाशय ॥२१६
पुण्यवन्त मुकुन्देर हेन दिव्य ध्वनि ।
शुनिलेइ आबिष्ट हयेन द्विजमणि ॥२१७
'हरि बोल' बलि प्रभु लागिला गर्ज्जिते ।
चतुर्द्दिगे पड़े, केहो ना पारे धरिते ॥२१८
श्वास, हास, कम्प,स्वेद, पुलक, गर्जन ।
एककाले सर्व-भाब दिल दरशन ॥२१९
अपूर्व देखिया सुखे गाय भक्तगण ।
ईश्वरेर प्रेमाबेश नहे सम्वरण ॥२२०
सर्व-निशा याय येन मुहूर्त्तेक-प्राय ।
प्रभाते बा कथञ्चित प्रभु वाह्य पाय ॥२२१
एइमत निजगृहे श्रीशचीनन्दन ।
निरवधि निशिदिशि करेन कीर्त्तन ॥२२२
आरम्भिला महाप्रभु कीर्त्तन प्रकाश ।
सकल-भक्तेर दुःख हइल बिनाश ॥२२३
'हरि बोल' बलि डाके श्रीशचीनन्दन ।
घनघन पाषण्डीर हय जागरण ॥२२४
निद्रासुखभङ्गे बर्हिर्मुख क्रुद्ध हय ।
यार येनमत इच्छा बलिया मरय ॥२२५
केहो बोले "ए-गुलार हइल कि बाइ ।"
डाकाडाकि गण्डगोल निद्रा नाहि याइ ॥२२६
केहो बोले "इगुलार डाकाडाकि शुनि ।
निद्रा नाहि हय ये असुस्थ हब आमि ॥" २२७
केहो बोले गोसाञि रुषिब घन डाके ।
ए-गुलार सर्वनाश हैब एइ पाके ॥२२८
केह बोले "ज्ञान-योगे एड़िया बिचार ।
परम-उद्धत-हेन सभार ब्यभार ॥" २२९

केहो बोले "किसेर कीर्त्तन के बा जाने ।
एत पाक करे एइ श्रीवास-ब्रामने ॥२३०
मागिया खाइबार तरे मरे चारि भाइ ।
'हरि' बलि डाक छाड़े येन महाबाइ ॥२३१
मनेमने बलिले कि पुण्य नाहि हय ।
रात्रि करि डाकिले कि पुण्य जनमय ?"२३२
केहो बोले आरे भाइ! पड़िल प्रमाद ।
श्रीवासेर बादे हैल देशेर उत्साद ॥२३३
आजि मुञि देयाने शुनिलुँ सब कथा ।
राजार आज्ञाय दुइ नाओ आइसे एथा॥२३४
शुनिलेक नदीयाय कीर्त्तन विशेष ।
धरिया निबारे हैल राजार आदेश ॥२३५
ये-ते-दिगे पलाइब श्रीवास-पण्डित ।
आमा'सभा' लैया सर्वनाश उपस्थित ॥२३६
तखने बलिलुँ मुञि हइया मुखर ।
श्रीवासेर घर फेलि गङ्गार भितर ॥२३७
तखने ना कैले इहा परिहास-ज्ञाने ।
सर्वनाश हय एबे देख विद्यमाने ॥२३८
केहो बोले "आमरा सभेर कोन् दाय ।
श्रीवासे बान्दिया दिब येबा आसि चाय॥"२३९
एइमत कथा हैल नगरे नगरे ।
"राज नौका आइसे वैष्णव धरिबारे ॥"२४०
वैष्णव समाजे सब ए कथा शुनिला ।
गोविन्द स्मङरि सब भय निबारिला ॥२४१
ये करिब कृष्णचन्द्र–से-इ सत्य हय ।
से प्रभु थाकिते कोन् अधमेर भय ॥२४२
श्रीवास पण्डित बड़ परम उदार ।
येइ कथा शुने ताइ प्रतीत ताँहार ॥२४३
यबनेर राज्य देखि मने हैल भय ।
जानिलेन गौरचन्द्र भक्तेर हृदय ॥२४४

प्रभु अवतीर्ण नाहि जाने भक्तगण ।
जानाइते आरम्भिला श्रीशचीनन्दन ॥२४५
निर्भये बेड़ाय महाप्रभु विश्वम्भर ।
त्रिभुवने अद्वितीय मदन सुन्दर ॥२४६
सर्वाङ्गे लेपियाछेन सुगन्धि चन्दन ।
अरुण-अधर शोभे कमल नयन ॥२४७
चाँचर चिकुर शोभे पूर्णचन्द्र-मुख ।
स्कन्धे उपवीत शोभे मनोहर रूप ॥२४८
दिव्य बस्त्र परिधान, अधरे ताम्बूल ।
कौतुके कौतुके गेला भागीरथीकूल ॥२४९
सुकृति ये हय तारा देखिते हरिष ।
यतेक पाषण्डी सब हय बिमरिष ॥२५०
"एत भय शुनियाओ भय नाहि पाय ।
राजार कुमार येन नगरे बेड़ाय ॥"२५१
आर-जन बोले भाइ! बुझिलाङ थाक ।
यत देख ए सकल पलाबार पाक ॥२५२
निर्भये चा'हेन चारिदिगे विश्वम्भर ।
गङ्गार सुन्दर स्रोत पुलिन सुन्दर ॥२५३
गाभी एक यूथ देखे पुलिनेते चरे ।
हाम्बा-रब करि आइसे जल खाइबारे ॥२५४
ऊर्द्ध-पुच्छ करि केहो चतुर्द्दिगे धाय ।
केहो युझे, केहो शोये, केहो जलखाय ॥२५५
देखिया गर्जये प्रभु करये हुङ्कार ।
"मुञि सेइ मुञि सेइ" बोले बारेबार ॥२५६
एइमते ध्याया गेला श्रीवासेर घरे ।
कि करिस श्रीवासिया! बोले अहङ्कारे ॥२५७
नरसिंह श्रीवास पूजये येइ घरे ।
पुनःपुनः लाथि मारे ताहार दुयारे ॥२५८
काहारे बा पूजिस्, करिस् कार ध्यान् ?
याहाहारे पूजिस् तारे देख विद्यमान ॥२५९

ज्वलन्त-अनल येन श्रीवासपण्डित ।
हइल समाधि-भङ्ग, चा हे चारिभित ।।२६०
देखे बीरासने बसि आछे विश्वम्भर ।
चतुर्भुज—शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धर ।।२६१
गर्जिते-आछये येन मत्त-सिंह-सार ।
वाम-कक्षे तालि दिया करये हुङ्कार ।।२६२
देखिया हइल कम्प श्रीवास-शरीरे ।
स्तब्ध हैला श्रीवास, किछुइ ना स्फुरे ।।२६३
डाकिया बोलये प्रभु आरे श्रीवास !
एतदिन ना जानिस् आमार प्रकाश ?२६४
तोर उच्चसङ्कीर्त्तने, नाढ़ार हुङ्कार ।
छाड़िया वैकुण्ठ आइलुँ सर्व-परिबारे ।।२६५
निश्चिन्ते आछह तुमि आमारे आनिया ।
शान्तिपुरे गेल नाढ़ा आमारे एड़िया ।।२६६
साधु उद्धारिमु दुष्ट बिनाशिमु सब ।
तोर किछु चिन्ता नाइ, पढ़ मोर स्तब ।।२६७
प्रभुरे देखिया प्रेमे काँन्दे श्रीनिवास ।
घुचिल अन्तर-भय, पाइया आश्वास ।।२६८
हरिषे पूर्णित हैल सर्व-कलेबर ।
दाण्डाइया स्तुति करे जुड़ि दुइ कर ।।२६९
सहजे पण्डित बड़-महा-भागवत ।
आज्ञा पाइ स्तुति करे येन अभिमत ।।२७०
भागवपे आछे ब्रह्म-मोहापनोदन ।
सेइ श्लोक पढ़ि स्तुति करये प्रथम ।।२७१

तथाहि (भा० १०।१४।१)—

"नौमीड्य तेऽव्भ्रवपुषे तड़िदम्बराय
गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय ।
वन्यस्रजे कवल-वेत्र-विषाण-वेणु-
लक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय ।।"२७२

टीका ।

एवं श्रीमन्नन्दनन्दनचरणारविन्दमेव परम-पुरुषार्थतया निश्चत्य तद्रूपमेव स्तोतुमुपचक्रमे—नौमीति । हे ईड्य ! स्तुतियोग्य ! भवानेव ईड्य नान्यः कोऽपीत्यर्थः । ते तुभ्यं नौमि । स्तुत्या त्वामभिप्रेमि, पत्ये शेते इतिवदेतां स्तुतिं तुभ्यं ददामीत्यर्थः । यद्वा, त्वामेव प्राप्तुं प्रसादयितुं वा त्वां नौमीति । अभ्रतुल्यवपुषे तड़िदम्बरायेति भूतलसन्तापहारित्वं भक्तचातकजीवनत्वञ्च । गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय—गुञ्जाभिः गुञ्जा-फलैः रचितौ अवतंसौ कर्णभूषणे परिपिच्छं वर्हापीड़ं तैर्लसन् शोभमानं मुखं यस्य तस्मै । कवलादिभिः लक्ष्मभिः चिह्नैः श्रीः शोभा यस्य तस्मै अर्थात् तत्र कवलं दध्योदनग्रासो वामहस्ते वामकक्षे वेत्रविषाणे जठरपटसन्धौ वेणुरिति बोद्धव्यं तान्येव असाधारणलक्षणानि अतएव तैः श्रीः शोभा यस्य तस्मै । पशुपस्य श्रीनन्दस्य अङ्गजाय पुत्राय तत्कुमारत्वेन स्वत एव नित्यं तत्समवेतत्वात् इत्येतच्छ्रीबालगोपालरूपं त्वामत्र प्राप्तुं त्वां नौमीति परमलालसया प्रागेव प्रयोजनमुद्दिष्टमिति ।

अनुवाद ।

वत्स हरण के पश्चात् श्रीकृष्ण की स्वयं भगवत्ता को जानकर भीत होकर ब्रह्मा स्तुति करते हैं—हे ईड्य! हे जगद्वन्द्य ! मैंने देखा आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्त सबकुछ आपका स्तव करते रहते हैं, नवनीरद के तुल्य आपकी श्रीमूर्त्ति. एवं मेघमध्य-स्थित विद्युत् के समान आपका पीतवसन है। गुञ्जा निर्मित कर्णभूषण से एवं शिखाग्रवत्ति शिखिपुच्छ से आपके वदन मण्डल की अतिशय शोभा हुई है । आपके गलदेश में विविध पत्रपुष्पमयी माला विराजमान है, एवं वाम हस्त में दध्योदन मिश्रित ग्रास है. वामवक्ष में वेणु एवं शृङ्ग है, यह सब आपका अनुपम सौन्दर्य्य का द्योतक हैं। आप परम सुन्दर हैं, आपको प्राप्त करने के निमित्त आपका स्तव मैं करता हूँ नमस्कार करता हूँ ।

"विश्वम्भर-चरणे आमार नमस्कार ।
नव-घन जिनि वर्ण, पीतवास याँर ।।२७३

शचीर-नन्दन-पा'ये मोर नमस्कार ।
नव-गुञ्जा शिखिपुच्छ भूषण याँहार ॥२७४
गङ्गादास-शिष्य पा'ये मोर नमस्कार ।
वनमाला, करे दधि-ओदन याँहार ॥२७५
जगन्नाथपुत्र-पदे मोर नमस्कार ।
कोटी चन्द्र जिनि रूप वदन याँहार ॥२७६
शिङ्गा, वेत्र, वेणु चिह्न भूषण याँहार ।
सेइ तुमि, तोमार चरणे नमस्कार ॥२७७
चारि-वेदे याँरे घोषे,नन्देर कुमार' ।
सेइ तुमि, तोमार चरणे नमस्कार ॥''२७८
ब्रह्मस्तवे स्तुति करे प्रभुर चरणे ।
स्वच्छन्दे बोलये—यत आइसे वदने ॥२७९
तुमि विष्णु, तुमि कृष्ण,तुमि यज्ञेश्वर ।
तोमार चरणोदक—गङ्गा तीर्थवर ॥२८०
जानकीवल्लव तुमि, तुमि नरसिंह ।
अज-भव-आदि तोर चरणेर भृङ्ग ॥२८१
तुमि से वेदान्तवेद्य, तुमि नारायण ।
तुमि से छलिला बलि—हइया वामन ॥२८२
तुमि हयग्रीव, तुमि जगत-जीवन ।
तुमि नीलाचलचन्द्र—सभार तारण ॥२८३
तोमार मायाय कार् नाहि हय भङ्ग ?
कमल ना जाने—यार सने एकसङ्ग ॥२८४
सङ्गी, सखा, भाइ—सर्व-मते सेवे ये ।
हेन प्रभु मोह माने'—अन्य जना के ?२८५
मिथ्या-गृहवासे मोरे पड़ियाछ भोले ।
तोमा'ना जानिया मोर जन्म गेल हेले ॥२८६
नाना माया करि तुमि आमारे बञ्चिला ।
साजि-धुति आदि करि आमार बहिला ॥२८७
ताते मोर भय नाहि, शुन प्राणनाथ ।
तुमि-हेन प्रभु मोरे हइला साक्षात् ॥२८८

आजि मोर सकल दुःखेर हैल नाश ।
आजि मोर दिवस हइल सुप्रकाश ॥२८९
आजि मोर जन्म-कर्म—सकल सफल ।
आजि मोर उदय—सकल सुमङ्गल ॥२९०
आजि मोर पितृकुल हइल उद्धार ।
आजि से वसति धन्य हइल आमार ॥२९१
आजि मोर नयान-भाग्येर नाहि सीमा ।
ताहा देखि—यार श्रीचरण सेवे रमा ॥२९२
बलिते आबिष्ट हैला पण्डित श्रीवास ।
ऊर्द्ध्व-बाहु करि कान्दे, छाड़े घन श्वास ॥२९३
गड़ागड़ि याय भाग्यवन्त से श्रीवास ।
देखिते अपूर्व गौरचन्द्रेर प्रकाश ॥२९४
कि अमृत सुख हैल श्रीवास शरीरे ।
डुबिलेन विप्रबर आनन्द सागरे ॥२९५
हासिया शुनेन प्रभु श्रीवासेर स्तुति ।
सदय हइया बोले श्रीवासेर प्रति ॥२९६
"स्त्री-पुत्र-आदि यत तोमार बाड़ीर ।
देखुक आमार रूप, हइया बारिर ॥२९७
सस्त्रीक हइया पूज' चरण आमार ।
बर माग' येन इच्छा थाकये तोमार ॥"२९८
प्रभुर पाइया आज्ञा श्रीवास पण्डित ।
सर्व-परिकर-सह आइला त्वरित ॥२९९
विष्णुपूजा-निमित्त यतेक पुष्प छिल ।
सकल प्रभुर पा'ये साक्षातेइ दिल ॥३००
गन्ध-माल्य -धूप-दीपे पूजे श्रीचरण ।
सस्त्रीक हइया विप्र करये क्रन्दन ॥३०१
भाइ, पत्नी, दास, दासी सकल लइया ।
श्रीवास करये काकु चरणे पड़िया ॥३०२
श्रीवासेर प्रियकारी प्रभु विश्वम्भर ।
चरण दिलेन सर्व-शिरेर उपर ॥३०३

अलक्षिते बुले प्रभु माथाय सभार ।
हासि बोले "मोरे चित्त हउक सभाकार ॥" ३०४
हुङ्कार गर्जन करि प्रभु विश्वम्भर ।
श्रीवासेरे सम्बोधिया बोलेन उत्तर ॥ ३०५
अये रे श्रीवास ! किछु मने भय पाओ ?
शुनि तोमा' धरिते आइसे राज-नाओ ॥ ३०६
अनन्त-ब्रह्माण्ड-माझे यत जीव वैसे ।
सभार प्रेरक आमि आपनार रसे ॥ ३०७
मुञि यदि बोलाङ सेइ राजार शरीरे ।
तबे से बलिब सेइ धरिबार तरे ॥ ३०८
यदि बा एमत नहे,—स्वतन्त्र हइया ।
धरिबारे बोले, तबे मुञि चाहों इहा ॥ ३०९
मुञि गिया सर्व आगे नौकाय चढ़िमु ।
एइमत गिया राजगोचर हइमु ॥ ३१०
मोरे देखि राजा कि रहिब नृपासने ?
विह्वल करिया ना पाड़िमु सेइखाने ? ३११
यदि बा एमत नहे, जिज्ञासिब मोरे ।
सेहो मोर अभीष्ट शुनह कहों तोरे ॥ ३१२
शुनशुन अये राजा! सत्य मिथ्या जान' ।
यतेक मोल्ला काजी सब तोर आन' ॥ ३१३
हस्ती घोड़ा पशु पक्षी यत तोर आछे ।
सकल आनह राजा ! आपनार काछे ॥ ३१४
एबे हेन आज्ञा कर' सकल-काजीरे ।
आपनार शास्त्र बलि कान्दाउ सभारे ॥ ३१५
ना पारिल तारा यदि एतेक करिते ।
तबे से आपना व्यक्त करिब राजाते ॥ ३१६
सङ्कीर्त्तन माना कर' ए गुलार बोले ।
यत तार शक्ति एइ देखिलि सकले ॥ ३१७
मोर शक्ति देख एबे नयन भरिया ।
एत बलि मत्त-हस्ती आनिब धरिया ॥ ३१८
हस्ती, घोड़ा, मृग, पाखी एकत्र करिया ।
सेइखाने कान्दाइमु 'श्रीकृष्ण' बलिया ॥ ३१९
राजार यतेक गण—राजार सहिते ।
सभा कान्दाइमु 'श्रीकृष्ण' बलि भाल-मते ॥ ३२०
इहाते बा अप्रत्यय तुमि वास' मने ।
साक्षातेइ करों देख आपन-नयने ॥ ३२१
सम्मुखे देखये एक बालिका अज्ञानी ।
श्रीवासेर भ्रातृसुता—नाम 'नारायणी' ॥ ३२२
अद्यापिह वैष्णव-मण्डले याँर ध्वनि ।
चैतन्येर अवशेष-पात्र नारायणी ॥ ३२३
सर्व-भूत-अन्तर्यामी—प्रभु गौरचान्द ।
आज्ञा कैला नारायणी कृष्ण बलि कान्द ॥ ३२४
चारि-वत्सरेर सेइ उन्मत्त चरित ।
'हा कृष्ण!' बलिया कान्दे, नाहिक सम्वित् ॥ ३२५
अङ्ग बाहि पड़े धारा पृथिवीर तले ।
परिपूर्ण हैल स्थल नयनेर जले ॥ ३२६
हासिया हासिया बोले प्रभु विश्वम्भर ।
"एखन तोमार सब घुचिल कि डर ?" ३२७
महा-वक्ता श्रीनिवास—सर्व-तत्त्व जाने ।
आस्फालिया दुइ भुज बोले प्रभु-स्थाने ॥ ३२८
कालरूपी तोमार विग्रह भगवाने ।
यखने सकल सृष्टि संहारिया आने ॥ ३२९
तखने ना करि भय तोर नाम-बले ।
एखने किसेर भय, तुमि मोर घरे ॥ ३३०
बलिया आविष्ट हैला पण्डित-श्रीवास ।
गोष्ठीर सहित देखे प्रभुर प्रकाश ॥ ३३१
चारि-वेदे यारे देखिबारे अभिलाष ।
ताहा देखे श्रीवासेर यत दासी दास ॥ ३३२
कि बलिब श्रीवासेर उदार चरित्र ।
याहार चरण-धूले संसार पवित्र ॥ ३३३

कृष्ण-अवतार येन वसुदेव घरे ।
यतेक बिहार सब नन्देर मन्दिरे ॥३३४
जगन्नाथ घरे हैल एइ अवतार ।
श्रीवासपण्डित गृहे सकल बिहार ॥३३५
सर्व-वैष्णवेर प्रिय–पण्डित-श्रीवास ।
ताँर बाड़ी गेले मात्र सभार उल्लास ॥३३६
अनुभवे यारे स्तव करे वेद मुखे ।
श्रीवासेर दास दासी ताँरे देखे सुखे ॥३३७
एतेके वैष्णवसेवा परम उपाय ।
अवश्य मिलये कृष्ण वैष्णव कृपाय ॥३३८
श्रीवासेरे आज्ञा कैला प्रभु विश्वम्भर ।
ना कहिओ ए सब कथा काहारो गोचर ॥३३९
वाह्य पाइ विश्वम्भर लज्जित अन्तर ।
आश्वासिया श्रीवासेरे गेला निज घर ॥३४०
सुखमय हैला तबे श्रीवासपण्डित ।
पत्नी बधू भाइ दास दासीर सहित ॥३४
श्रीवास करिला स्तुति–देखिया प्रकाश ।
इहा येइ शुने, सेइ हय कृष्णदास ॥३४
अन्तर्यामि-रूपे बलराम भगवान ।
आज्ञा कैला चैतन्येर गाइते आख्यान ॥३४
वैष्णवेर पा'ये मोर एइ मनस्काम ।
जन्मजन्म प्रभु मोर हउ बलराम ॥३४
'नरसिंह' 'यदुसिंह' येन नाम-भेद ।
एइमत जान–'नित्यानन्द' 'बलदेव' ॥३४
चैतन्यचन्द्रेर प्रिय-विग्रह बलाइ ।
एबे 'अवधूतचन्द्र' करि यारे गाइ ॥३४
मध्यखण्ड-कथा भाइ! शुन एकचित्ते ।
वत्सरेक कीर्त्तन करिला येनमते ॥३४
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ३४

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे श्रीसङ्कीर्त्तनारम्भवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥



तृतीय अध्याय

जयजय सर्वप्राणनाथ विश्वम्भर ।
जय नित्यानन्द-गदाधरेर ईश्वर ॥१
जयजय अद्वैतआदि-भक्तेर अधीन ।
भक्ति-दान देह' प्रभु! उद्धारह दीन ॥२
एइरूपे नरद्वीपे प्रभु विश्वम्भर ।
भक्तिसुखे भासे लइ सर्व-अनुचर ॥३
प्राण-हेन सकल सेवक आपनार ।
'कृष्ण' बलि कान्दे गला धरिया सभार ॥
देखिया प्रभुर प्रेम सर्व-दासगण ।
चतुर्द्दिगे प्रभु बेड़ि करये क्रन्दन ॥५
आछुक दासेर काज, से प्रेम देखिते ।
शुष्ककाष्ठ-पाषाणादि मिलाय भूमिते ॥६

छाड़ि धन पुत्र गृह सर्व-भक्तगण ।
अहर्निश प्रभु-सङ्गे करेन कीर्त्तन ॥७
हइलेन गौरचन्द्र कृष्णभक्तिमय ।
यखन येरूप शुने, सेइमत हय ॥८
दास्यभावे प्रभु यबे करेन क्रन्दन ।
हइल प्रहर-दुइ गङ्गा आगमन ॥९
यबे हासे, तबे प्रभु प्रहरेक हासे ।
मूर्च्छित हइले—प्रहरेक नाहि श्वासे ॥१०
क्षणे हय स्वानुभाव' दम्भ करि वैसे ।
मुञि सेइ मुञि सेइ इहा बलि हासे ॥११
"कोथा गेला नाढ़ाबुड़ा ये आनिल मोरे ?
बिलाइमु भक्तिरस प्रति घरेघरे ॥" १२
सेइक्षणे "कृष्ण आरे बाप!" बलि कान्दे ।
आपनार केश आपनार पा'ये बान्धे ॥१३
अक्रूर-यानेर श्लोक पढ़िया पढ़िया ।
क्षणे पड़े पृथिवीते दण्डवत हैया ॥१४
हइलेन महाप्रभु येहेन अक्रूर ।
सेइमत कथा कहे, वाह्य गेल दूर ॥१५
"मथुराय चल नन्द ! राम कृष्ण लैया ।
धनुर्मख राजमहोत्सव देखि गिया ॥" १६
एइमत नाना-भावे नाना कथा कहे ।
देखिया वैष्णव-सब आनन्दे भासये ॥१७
एकदिन बराह-भावेर श्लोक शुनि ।
गर्जिया मुरारि-घरे चलिला आपनि ॥१८
अन्तरे मुरारिगुप्त-प्रति बड़ प्रेम ।
हनूमान-प्रति प्रभु रघुनाथ येन ॥१९
मुरारिर घरे गेला श्रीशचीनन्दन ।
सम्भ्रमे करिला गुप्त चरण बन्दन ॥२०
"शूकर शूकर" बलि प्रभु चलि याय ।
स्तम्भित मुरारिगुप्त चतुर्द्दिके चा'य ॥२१
विष्णुगृहे प्रविष्ट हइला विश्वम्भर ।
सम्मुखे देखिला जलभाजन सुन्दर ॥२२
बराह-आकार प्रभु हैला सेइक्षणे ।
स्वानुभावे गाड़ु प्रभु तुलिला दशने ॥२३
गर्जे यज्ञवराह, प्रकाशे' खुर चारि ।
"प्रभु बोले मोर स्तुति बोलह मुरारि !" २४
स्तब्ध हैला मुरारि अपूर्व दरशने ।
कि बलिब मुरारि, ना आइले वदने ॥२५
प्रभु बोले बोल बोल किछु भय नाञि ।
एतदिन नाहि जान मुञि एइ ठाञि ?२६
कम्पित मुरारि कहे करिया विनति ।
तुमि से जान प्रभु! तोमार ये स्तुति ॥२७
अनन्त—ब्रह्माण्ड यार फणा एक धरे ।
सहस्रवदन हइ यारे स्तुति करे ॥२८
तभु नाहि पाय अन्त, सेइ प्रभु कहे ।
तोमार स्तवेते आर के समर्थ हये ?२९
ये वेदेर मत करे सकल संसार ।
सेइ वेद सर्व-तत्त्व ना जाने तोमार ॥३०
यत देखि शुनि प्रभु! अनन्त भुवन ।
तोर लोमकूपे गिया मिलाय यखन ॥३१
एक सदानन्द तुमि ये कर' यखने ।
बोल देखि वेदे ताहा जानिब केमने ?३२
अतएव तुमि से तोमारे जान मात्र ।
तुमि जानाइले जाने तोमार कृपापात्र ॥३३
तोमार स्तुतिते मोर कोन् अधिकार ?
एत बलि कान्दे गुप्त करे नमस्कार ॥३४
के करिते पारे प्रभु तोमार स्तवन ।
गुप्त-वाक्ये तुष्ट हइ कैला आलिङ्गन ॥३५
गुप्त-वाक्ये तुष्ट हइ बराह-ईश्वर ।
वेद प्रति क्रोध करि बोलये उत्तर ॥३६

हस्त पाद मुख मोर नाहिक लोचन ।
वेद मोरे एइमत करे विड़म्बन ॥३७
काशीते पढ़ाय बेटा परकाशानन्द ।
सेइ बेटा करे मोर अङ्ग खण्डखण्ड ॥३८
बाखानये वेद, मोर विग्रह ना माने ।
सर्वाङ्गे हइल कुठ, तभु नाहि जाने ॥३९
सर्वयज्ञमय मोर ये अङ्ग पवित्र ।
अज-भव-आदि गाय याहार चरित्र ॥४०
पुण्य पवित्रता पाय ये-अङ्ग परशे ।
ताहा 'मिथ्या' बोले बेटा केमन साहसे ? ४१
"शुनरे मुरारिगुप्त !" कहये शूकर ।
वेद गुह्य कहि एइ तोमार गोचर ॥४२
आमि यज्ञबराह–सकल वेद-सार ।
आमि से करिलुँ पूर्व पृथिवी उद्धार ॥४३
सङ्कीर्त्तन-आरम्भे मोहर अवतार ।
भक्त-जन राखि दुष्ट करिमु संहार ॥४४
सेवकेर द्रोह मुञि सहिते ना पारों ।
पुत्र यदि हय मोर, तथापि संहारों ॥४५
पुत्र काटों आपनार सेवक लागिया ।
मिथ्या नाहि बोलों गुप्त! शुन मन दिया ॥४६
ये काले करिलुँ मुञि पृथिवी उद्धार ।
रहिल क्षितिर गर्भ–परशे आमार ॥४७
हइल 'नरक' नामे पुत्र महाबल ।
आपने पुत्रेरे धर्म करिलु सकल ॥४८
महाराजा हइलेन आमार नन्दन ।
देव द्विज गुरु भक्त करेन पालन ॥४९
दैव दोषे ताहार हइल दुष्ट-सङ्ग ।
वाणेर संसर्गे हैल भक्त द्रोह-रङ्ग ॥५०
सेवकेर हिंसा मुञि ना पारि सहिते ।
काटिलुँ आपन पुत्र–सेवक राखिते ॥५१

जन्मेजन्मे तुमि सेवियाछह आमारे ।
एतेके सकल तत्त्व कहिल तोमारे ॥५२
शुनिया मुरारिगुप्त प्रभुर बचन ।
विह्वल हइया गुप्त करेन क्रन्दन ॥५३
मुरारि-सहित गौरचन्द्र जयजय ।
जय यज्ञबराह–सेवक रक्षामय ॥५४
एइमत सर्व सेवकेर घरेघरे ।
कृपाय ठाकुर जानायेन आपनारे ॥५५
चिनिया सकल भृत्य–प्रभु आपनार ।
परानन्दमय चित्त हइल सभार ॥५६
पाषण्डीरे आर केहो भय नाहि करे ।
हाटे घाटे सभे 'कृष्ण' गाय उच्चस्वरे ॥५७
प्रभु-सङ्गे मिलिया सकल भक्तगण ।
महानन्दे अहर्निश करये कीर्त्तन ॥५८
मिलिला सकल भक्त, बइ नित्यानन्द ।
भाइ ना देखिया बड़ दुःखी गौरचन्द्र ॥५९
निरन्तर नित्यानन्द स्मरे विश्वम्भर ।
जानिलेन नित्यानन्द–अनन्त ईश्वर ॥६०
प्रसङ्गे शुनह नित्यानन्देर आख्यान ।
सूत्ररूपे जन्म-कर्म किछु कहि तान ॥६१
राढ़ माझे एकचाका-नामे आछे ग्राम ।
यहिँ जन्मिलेन नित्यानन्द भगवान ॥६२
मौड़ेश्वर-नामे देव आछे कथोदूरे ।
याँरे पूजियाछे नित्यानन्द हलधरे ॥६३
सेइ ग्रामे वैसे विप्र हाड़ाइ-पण्डित ।
महा-बिरक्तेर प्राय दयालु-चरित ॥६४
ताँर पत्नी–पद्मावती-नाम पतिव्रता ।
परम-वैष्णवीशक्ति–सेइ जगन्माता ॥६५
परम-उदार दुइ ब्राह्मण ब्राह्मणी ।
ताँर घरे नित्यानन्द जन्मिला आपनि ॥६६

सकल-पुत्रेर ज्येष्ठ—नित्यानन्द राय ।
सर्व-सुलक्षण देखि नयन जुड़ाय ॥३७
तान वाल्यलीला आदिखण्डे बिस्तर ।
एथाय कहिले हय ग्रन्थ बहुतर ॥३८
एइमत कथोदिन नित्यानन्दराय ।
हाड़ोपण्डितेर घरे आछेन लीलाय ॥३९
गृह छाड़िबारे प्रभु करिलेन मने ।
ना छाड़े जननी तात दुःखेर कारणे ॥४०
तिलमात्र नित्यानन्द ना देखिले माता ।
युगप्राय हेन वासे, ततोधिक पिता ॥४१
तिलमात्र नित्यानन्द-पुत्रेरे छाड़िया ।
कोथाओ हाड़ाइ-ओझा ना याय चलिया ॥४२
किबा कृषिकर्मे,किबा यजमान-घरे ।
किबा हाटे किबा घाटे यत कर्म करे ॥४३
पाछे यदि नित्यानन्दचन्द्र चलि याय ।
तिलार्द्धे शतेकबार उलटिया चाय ॥४४
धरिया धरिया पुनः आलिङ्गन करे ।
नुनीर पुतली येन मिलाय शरीरे ॥४५
एइमत पुत्र-सङ्गे बुले सर्व ठाँइ ।
प्राण हैला नित्यानन्द, शरीर हाड़ाइ ॥४६
अन्तर्यामी नित्यानन्द इहा सब जाने ।
पितृसुख-धर्म पालि आछे पिता सने ॥४७
दैवे एकदिन एक सन्न्यासी सुन्दरे ।
आइलेन नित्यानन्द जनकेर घरे ॥४८
नित्यानन्दपिता ताने भिक्षा कराइया ।
राखिलेन परम-आनन्दयुक्त हैया ॥४९
सर्वरात्रि नित्यानन्दपिता ताँर सङ्गे ।
आछिलेन कृष्णकथा कथन-प्रसङ्गे ॥५०
गन्तुकाम सन्न्यासी हइला ऊषःकाले ।
नित्यानन्दपिता-प्रति न्यासिबर बोले ॥५१
न्यासी बोले "एक भिक्षा आछये आमार ।"
नित्यानन्द पिता बोले ये इच्छा तोमार ॥५२
न्यासी बोले करिबाङ तीर्थ-पर्यटन ।
संहति आमार भाल नाहिक ब्राह्मण ॥५३
एइ ये सकल-ज्येष्ठ-नन्दन तोमार ।
कथोदिन लागि देह' संहति आमार ॥५४
प्राण-अतिरिक्त आमि देखिब उहाने ।
सर्व-तीर्थ देखिबेन बिविध विधाने ॥५५
शुनिया न्यासीर वाक्य शुद्ध विप्रबर ।
मनेमने चिन्ते बड़ हइया कातर ॥५६
प्राण भिक्षा करिलेन आमार सन्न्यासी ।
ना दिलेओ 'सर्वनाश हय' हेन बासी ॥५७
भिक्षुकेरे पूर्वे महापुरुष सकल ।
प्राणदान दियाछेन करिया मङ्गल ॥५८
रामचन्द्र पुत्र—दशरथेर जीवन ।
पूर्वे विश्वामित्र ताने करिला याचन ॥५९
यद्यपिह राम विने राजा नाहि जीये ।
तथापि दिलेन—एइ पुराणेते कहे ॥६०
सेइ त वृत्तान्त आजि हइल आमारे ।
ए धर्मसङ्कटे कृष्ण! रक्षा कर' मोरे ॥६१
दैवे सेइ वस्तु, केने नहिब से मति ?
अन्यथा लक्ष्मण केने गृहेते उत्पति ?६२
चिन्तिया ब्राह्मण गेला ब्राह्मणीर स्थाने ।
आनुपूर्व कहिलेन सब बिबरणे ॥६३
शुनिला बलिला पतिव्रता जगन्माता ।
ये तोमार इच्छा प्रभु! सेइ मोर कथा ॥६४
आइला सन्न्यासी-स्थाने नित्यानन्दपिता ।
न्यासीरे दिलेन पुत्र,नोङाइया माता ॥६५
नित्यानन्द लइ चलिलेन न्यासीबर ।
हेनमते नित्यानन्द छाड़िलेन घर ॥६६

नित्यानन्द गेला मात्र हाड़ाइ पण्डित ।
भूमिते पड़िल विप्र हइया मूर्च्छित ॥६७
से बिलाप क्रन्दन कहिब कोन् जने ?
बिदरे पाषाण काष्ठ ताहार श्रवणे ॥६८
भक्तिरसे जड़प्राय हइला बिह्वल ।
लोके बोले "हाड़ो-ओझा हइला पागल ॥" ६९
तिन मास नाकरिला अन्नेर ग्रहण ।
चैतन्य प्रभावे सबे रहिल जीवन ॥७०
प्रभु केने छाड़े, यार हेन अनुराग ?
विष्णु-वैष्णवेर एइ अचिन्त्य प्रभाब ॥७१
स्वामीहीना देवहूति-जननी छाड़िया ।
चलिला कपिल-प्रभु निरपेक्ष हैया ॥७२
व्यास-हेन वैष्णव जनक छाड़ि शुक ।
चलिला–उलटि नाहि चाहिलेन मुख ॥७३
शची-हेन जननी छाड़िया एकाकिनी ।
चलिलेन निरपेक्ष हइ न्यासीमणि ॥७४
परमर्थे एइ त्याग–त्याग कभु नहे ।
ए सकल कथा बुझे कोन महाशये ॥७५
ए सकल लीला जीव उद्धार कारणे ।
महाकाष्ठ द्रब्ये' येन इहार श्रवणे ॥७६
येन पिता–हाराइया श्रीरघुनन्दने ।
निर्भरे शुनिला ताहा कान्दये यबने ॥७७
हेनमते गृह छाड़ि नित्यानन्द-राय ।
स्वानुभाबानन्दे तीर्थ भ्रमिया बेड़ाय ॥७८
गया, काशी, प्रयाग, मथुरा, द्वारावती ।
नरनारायणाश्रम गेला महामति ॥७९
बौद्धाश्रम दिया गेला व्यासेर आलय ।
रङ्गनाथ, सेतुबन्ध, गेलेन मलय ॥८०
तबे अनन्तेर पुर गेला महाशय ।
भ्रमेण निर्जन-वने परम निर्भय ॥८१

गोमती, गण्डकी, गेला सरयू, काबेरी ।
अयोध्या, दण्डकवन बुलेन बिहरी ॥८२
त्रिमल्ल, बेङ्कटनाथ, सप्तगोदावरी ।
महेश्वर-स्थान गेला कन्यका नगरी ॥८३
रेबा माहिष्मती, मनु तीर्थ हरिद्वार ।
यहिँ पूर्वे अवतार हइल गङ्गार ॥८४
एइमत यत तीर्थ नित्यानन्द-राय ।
सब देखि पुन आइलेन मथुराय ॥८५
चिनिते ना पारे केहो अनन्तेर धाम ।
हुङ्कार करये देखि पूर्व-जन्म-स्थान ॥८६
निरवधि बाल्यभाब, आन नाहि स्फुरे ।
धूलाखेला खेले वृन्दावनेर भितरे ॥८७
आहारेर चेष्टा नाहि करये कोथाय ।
बाल्यभावे वृन्दावने गड़ागड़ि याय ॥८८
केहो नाहि बुझे तान चरित्र उदार ।
कृष्णरस विने आर ना करे आहार ॥८९
कदाचित कोनो दिने करे दुग्ध-पान ।
सेहो यदि अयाचित केहो करे दान ॥९०
एइमत वृन्दावने वैसे नित्यानन्द ।
नवद्वीपे प्रकाश हइला गौरचन्द्र ॥९१
निरन्तर सङ्कीर्त्तन–परम आनन्द ।
दुःख पाय प्रभु ना देखिया नित्यानन्द ॥९२
नित्यानन्द जानिलेन प्रभुर प्रकाश ।
ये अवधि लागि करे वृन्दावने वास ॥९३
जानिया आइला झाट नवद्वीपपुरे ।
आसिया रहिला नन्दन-आचार्य्येर घरे ॥९४
नन्दन-आचार्य्य महाभागवतोत्तम ।
देखि महातेजोराशि येन सूर्य्य-सम ॥९५
देखि महा-अवधूत बेश–प्रकाण्ड शरीर ।
निरवधि भक्तिरसे देखि महा-धीर ॥९६

अहर्निश वदने बोलये कृष्णनाम।
त्रिभुवने अद्वितीय चैतन्येर धाम ॥९७
निजानन्दे क्षणेक्षणे करये हुङ्कार।
महा-मत्त येन बलराम अवतार ॥९८
श्रीराग।
कोटि चन्द्र जिनिया वदन मनोहर।
जगत-जीवन हास्य सुन्दर अधर ॥९९
मुकुता जिनिया प्रभुर दशनेर ज्योति।
आयत अरुण दुइ लोचन-सुभाँति ॥१००
आजानु-लम्बित भुज, सुपीवर बक्ष।
चलिते कमलवत् पदयुग दक्ष ॥१०१
परम-कृपाये करे सभारे सम्भाष।
शुनिले श्रीमुखवाक्य कर्म-बन्ध-नाश ॥१०२
आइला नदीयापुरे नित्यानन्द-राय।
सकल-भुवने जयजयध्वनि गाय ॥१०३
से महिमा बोले हेन के आछे प्रचण्ड ?
ये प्रभु भाङ्गिला गौरसुन्दरेर दण्ड ॥१०४
बणिक् अधम मूर्ख ये करिला पार।
ब्रह्माण्ड पवित्र हय नाम लैले याँर ॥१०५
पाइया नन्दनाचार्य्य हरषित हैया।
राखिलेन निजगृहे भिक्षा कराइया १०६
नवद्वीपे नित्यानन्दचन्द्र आगमन।
इहा येइ शुने तारे मिले प्रेमधन ॥१०७
नित्यानन्द आगमन जानि विश्वम्भर।
अनन्त हरिष प्रभु हइला अन्तर ॥१०८
पूर्व्व व्यपदेशे सर्व-वैष्णवेर स्थाने।
व्यञ्जिया आछेन, केहो मर्म नाहि जाने ॥१०९
"आरे भाइ! दिन दुइ तिनेर भितरे।
कोन महापुरुष एक आसिब एथारे॥" ११०
दैवे सेइ दिन विष्णु पूजि गौरचन्द्र।
सत्वरे मिलिला यथा वैष्णवेर वृन्द ॥१११
सभाकार स्थाने प्रभु कहये आपने।
आजि आमि अपरूप देखिलुँ स्वपने ॥११२
ताल-ध्वज एक रथ—संसारेर सार।
आसिया रहिल रथ—आमार दुयारे ॥११३
तार पाछे देखि एक प्रकाण्ड शरीर।
महा एक स्तम्भ कान्धे, गति नहे स्थिर ॥११४
बेत्र-बान्धा एक कमण्डलु बाम-हाथे।
नीलाम्बर-परिधान, नीलबस्त्र माथे ॥११५
बाम-श्रुतिमूले एककुण्डल बिचित्र।
हलधर हेन तान बुझिये चरित्र ॥११६
एइ बाड़ी निमाञिपण्डितेर हये हये ?
दश-बार बिश-वार एइ कथा कहे ॥११७
महा-अवधूत-बेश परम प्रचण्ड।
आर कभु नाहि देखि एमन उद्दण्ड ॥११८
देखिया सम्भ्रम बड़ पाइलाम आमि।
जिज्ञासिल आमि 'कोन् महाजन तुमि' ?११९
हासिया आमारे बोले एइ भाइ हय।
तोमार आमार कालि हैब परिचय ॥१२०
हरिष बाढ़िल शुनि ताँहार बचन।
आपनारे वासोँ मुञि येन सेइ सम ॥१२१
कहिये प्रभुर वाह्य सब गेल दूर।
हलधर भावेप्रभु गर्जये प्रचुर ॥१२२
"मधु आन'मधु आन" बलि प्रभु डाके।
हुङ्कार शुनिते येइ दुइ कर्ण फाटे ॥१२३
श्रीवास पण्डित बोले शुनह गोसाञि !
ये मदिरा चाह तुमि, से तोमार ठाञि ॥१२४
तुमि यारे बिलाह सेइ ताहा पाय।
कम्पित सकलगण, दूरे रहि चा'य ॥१२५
मनेमने चिन्ते हब वैष्णवेर गण।
अवश्य इहार किछु आछये कारण ॥१२६

आर्य्या तर्जा पढ़े प्रभु अरुण-नयन ।
हासिया दोलाय अङ्ग–येन सङ्कर्षण ॥१२७
क्षणेके हइला प्रभु स्वभाव-चरित्र ।
स्वप्न-अर्थ सभारे बाखाने राममित्र ॥१२८
"हेन बुझि मोर चित्ते लय एइ कथा ।
कोन महापुरुष आसियाछे एथा ॥१२९
पूर्वे मुञि बलियाछों तोमा सभा स्थाने ।
कोन महाजन-सने हैब दरशने ॥१३०
हरिदास चल आर श्रीवासपण्डित ।
चाह गिया देखि के आइला कोन् भित ॥"१३१
दुइ महाभागवत प्रभुर आदेशे ।
सर्व-नवद्वीप चाहि बुलये हरिषे ॥१३२
चाहिते चाहिते कथा कहे दुइ जन ।
ये बुझि आइला किबा प्रभु सङ्कर्षण ॥१३३
आनन्दे बिह्वल दुँहो चाहिया बेड़ाय ।
तिलार्द्धेको उद्देश कोथाओ नाहि पाय ॥१३४
सकल नदीया तिन-प्रहर चाहिया ।
आइला प्रभुर स्थाने कारे ना देखिया ॥१३५
निबेदिल आसि दुँहे प्रभुर चरणे ।
"उपाधिक कोथाह नहिल दरशने ॥१३६
कि वैष्णव कि गृहस्थ कि सन्न्यासी स्थल ।
पाषण्डीर घर घर आदि–देखिल सकल ॥१३७
चाहिलाङ नवद्वीप ग्राम यार नाम ।
सबे ना चिनिल प्रभु! गिया आर ग्राम ॥"१३८
दोँहार बचन शुनि हासे गौरचन्द्र ।
छले बुझायेन बड़ गूढ़ नित्यानन्द ॥१३९
एइ अवतारे केहो गौरचन्द्र गाय ।
नित्यानन्द नाम शुनि उठिया पलाय ॥१४०
पूजये गोविन्द येन, ना माने शङ्कर ।
एइ पाके अनेक याइब यम घर ॥१४१
बड़ गूढ़ नित्यानन्द एइ अवतारे ।
चैतन्य देखाय यारे से देखिते पारे ॥१४२
ना बुझि ये निन्दे तान चरित्र अगाध ।
पाइयाओ विष्णुभक्ति हय तार बाध ॥१४३
सर्वथा श्रीवास-आदि ताँर तत्त्व जाने ।
ना हइल देखा कोन कौतुक कारणे ॥१४४
क्षणेके ठाकुर बोले ईषत हासिया ।
आइस आमार सङ्गे सभे देखि गिया ॥१४५
उल्लासे प्रभुर सङ्गे सर्व-भक्तगण ।
'जय कृष्ण' बलि सभे करिला गमन ॥१४६
सभाके लइया नन्दन-आचार्य्येर घर ।
याइया उठिला गिया श्रीगौरसुन्दर ॥१४७
बसिया आछये एक पुरुष-रतन ।
सभे देखिलेन–येन कोटि सूर्य्य-सम ॥१४८
अलक्षित-आबेश बुझन नाहि याय ।
ध्यानसुखे परिपूर्ण, हासये सदाय ॥१४९
महाभक्तियोग प्रभु बुझिया ताँहार ।
गण-सह विश्वम्भर कैला नमस्कार ॥१५०
सम्भ्रमे रहिला सर्व-गण दाण्डाइया ।
केहो किछु नाहि बुझे रहिल चा'हिया ॥१५१
सन्मुखे रहिला महाप्रभु विश्वम्भर ।
चिनिलेन नित्यानन्द–प्राणेर ईश्वर ॥१५२

केदार राग ।

विश्वम्भर मूर्त्ति येन मदन-समान ।
दिव्य गन्ध-माल्य दिव्य वास परिधान ॥१५३
कि हय कनक-ज्योति से देहेर आगे ।
से वदन देखिते चान्देर साध लागे ॥१५४
से दन्त देखिते कोथा मुकुतार मान ।
से केश-बन्धन देखि ना रहे गेयान ॥१५५

देखिते आयत दुइ अरुण नयान ।
आर कि 'कमल आछे' हेन हय ज्ञान ॥१५६
से आजानु दुइ भुज, हृदय सुपीन ।
ताहे शोभे शुभ्र यज्ञसूत्र अति क्षीण ॥१५७
ललाटे विचित्र उर्द्ध्व-तिलक सुन्दर ।
आभरण विने सर्व-अङ्ग मनोहर ॥१५८
किबा हय कोटि मणि से नख चा'हिते ।
से हास देखिते किबा करिब अमृते ॥१५९
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१६०

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे नित्यानन्दमिलनं नाम तृतीयोऽध्यायः ।



चतुर्थ अध्याय

नित्यानन्द सम्मुखे रहिला विश्वम्भर ।
चिनिलेन नित्यानन्द आपन-ईश्वर ॥१
हरिषे स्तम्भित हैला नित्यानन्द-राय ।
एकदृष्टि हइ विश्वम्भर-रूप चा'य ॥२
रसनाय लेहे येन दरशने पान ।
भुजे येन आलिङ्गन, नासिकाय घ्राण ॥३
एइमत नित्यानन्द हइला स्तम्भित ।
ना बोले ना करे किछु सभेइ बिस्मित ॥४
बुझिलेन सर्वप्राणनाथ गौरराय ।
नित्यानन्दे जानाइते सृजिला उपाय ॥५
इङ्गिते श्रीवास प्रति बोलेन ठाकुरे ।
एक भागवतेर बचन पढ़िबारे ॥६
प्रभुर इङ्गित बुझि श्रीवास पण्डित ।
कृष्ण-ध्यान एक श्लोक पढ़िला त्वरित ॥७

तथाहि (भा० १०।२१।५)—

"वर्हापीड़ं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं
विभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तीञ्च मालाम् ।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दै-
र्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद्गीतकीर्त्तिः"
॥८

टीका ।

यादृशं कृष्णस्मरणं तासां गोपीनां मनसः क्षोभकं जातं तदाह, वर्हापीड़मिति । नटवद्वरं वपुर्बिभ्रत् वृन्दावनं प्राविशत् । कथम्भूतं वनम् ? स्वपदैरङ्कितैः, रमणं रतिजनकम् । गोपवृन्दैर्गीतकीर्त्तिः । तथा वर्हमयमापीड़ं शिरोभूषणं विभ्रत् । वर्हमापीड़ो यस्मिन् इति वपुषो विशेषणं वा । वेणुवादनमुत्प्रेक्षते रन्ध्रान् वेणोरिति । अतो नूनमधरसुधैव पूर्णाद्वेणोरुच्चलन्ती गीतवत् प्रसर्पितुमर्हतीति भावः ॥ इति श्रीधरः ।

अनुवाद ।

श्रीकृष्ण, उसश्रीवृन्दावन में प्रवेश कियेथे, जिस समय गोपगण उनका यशोगान कर रहे थे । श्रीकृष्ण की मयूर पुच्छ रचित चूड़ा, उभय कर्ण में कर्णिकार कुसुम, कनक सदृश कपिश अथवा नील-पीत मिश्रित वर्ण का वस्त्र, एवं पञ्चवर्ण पुष्प के द्वारा ग्रथित वैजयन्ती माला द्वारा शोभित, नटवरके समान नियत निजाङ्ग नव नव शोभा से शोभित

एवं अधर सुधासे वेणुरन्ध्र को पूर्ण कर रहे थे, उनके चरणचिह्नसमूह सब को आनन्दित कर रहे थे।

शुनि मात्र नित्यानन्द श्लोक-उच्चारण ।
पड़िल मूर्च्छित हइया नाहिक चेतन ॥९
आनन्दे मूर्च्छित हैला नित्यानन्द राय ।
"पढ़ पढ़" श्रीवासेरे गौराङ्ग शिखाय ॥१०
श्लोक शुनि कथोक्षणे हइला चेतन ।
तबे प्रभु लागिलेन करिते क्रन्दन ॥११
पुनः पुनः श्लोक शुनि बाढ़ये उन्माद ।
ब्रह्माण्ड भेदय हेन शुनि सिंहनाद ॥१२
अलक्षिते अन्तरीक्षे पड़ये आछाड़ ।
सभे मने वासे किबा चूर्ण हैल हाड़ ॥१३
अन्येर कि दाय, वैष्णवेर लागे भय ।
"रक्ष कृष्ण! रक्ष कृष्ण!" सभेइ स्मरय ॥१४
गड़ागड़ि याय प्रभु पृथिवीर तले ।
कलेबर पूर्ण हैल नयनेर जले ॥१५
विश्वम्भर-मुख चाहि छाड़े घनश्वास ।
अन्तरे आनन्द—क्षणेक्षणे महाहास ॥१६
क्षणे नृत्य, क्षणे गड़ि क्षणे बाहु-ताल ।
क्षणे जोड़ेजोड़े लाफ देइ देखि भाल ॥१७
देखिया अद्भुत कृष्ण-उन्माद आनन्द ।
सकल-वैष्णव-सङ्गे कान्दे गौरचन्द्र ॥१८
पुनपुनः बाढ़े सुख अति अनिबार ।
धरेन सभेइ—केहो नारे धरिबार ॥१९
धरिते आरिला यदि वैष्णव सकले ।
विश्वम्भर लइलेन आपनार कोले ॥२०
विश्वम्भर कोले मात्र गेला नित्यानन्द ।
समर्पिया प्राण ताने हइलानिस्पन्द ॥२१
यार प्राण, ताने नित्यानन्द समर्पिया ।
आछेन प्रभुर कोले अचेष्ट हइया ॥२२

भासे नित्यानन्द चैतन्येर प्रेमजले ।
शक्तिहत लक्ष्मण येहेन राम कोले ॥२३
प्रेमभक्ति-वाणे मूर्च्छा गेला नित्यानन्द ।
नित्यानन्द कोले करि कान्दे गौरचन्द्र ॥२४
कि आनन्द-बिरह हइल सर्वगणे ।
पूर्वे येन शुनियाछि श्रीराम लक्ष्मणे ॥२५
गौर चन्द्रे नित्यानन्दे स्नेहेर ये सीमा ।
श्रीराम-लक्ष्मण बइ नाहिक उपमा ॥२६
वाह्य पाइलेन नित्यानन्द कथोक्षणे ।
हरिध्वनि जयध्वनि करे सर्वगणे ॥२७
नित्यानन्द कोले करि आछे विश्वम्भर ।
बिपरीत देखि मने हासे गदाधर ॥२८
"ये अनन्त निरवधि धरे विश्वम्भर ।
आजि ताँर गर्व चूर्ण कोलेरे भितर ॥"२९
नित्यानन्द प्रभावेर ज्ञाता गदाधर ।
नित्यानन्द ज्ञात गदाधरेर अन्तर ॥३०
नित्यानन्द देखिया सकल भक्तगण ।
नित्यानन्दमय हैल सभाकार मन ॥३१
नित्यानन्द गौरचन्द्र दोँहे दोँहा देखि ।
केहो किछु ना बोले झरये मात्र आँखि ॥३२
दोँहे दोँहा देखि बड़ बिबश हइला ।
दोँहार नयनजले पृथिवी भासिला ॥३३
विश्वम्भर बोले "शुभ दिवस आमार ।
देखिलाङ भक्तियोग चारि-वेद सार ॥३४
ए कम्प, ए अश्रु, एइ गर्जन हुङ्कार ।
एइ कि ईश्वर शक्ति बइ हय आर ॥३५
सकृत् ए भक्तियोग नयने देखिले ।
ताहारेओ कृष्ण ना छाड़ेन कोनो काले ॥३६
बुझिलाम—ईश्वरेर तुमि पूर्ण शक्ति ।
तोमा' भजिले से जीव पाय कृष्णभक्ति ॥३७

तुमि कर, चतुर्द्दशभुवन पवित्र ।
अचिन्त्य अगम्य गूढ़ तोमार चरित्र ॥३८
तोमा लखिबेक हेन आछे कोन् जन ।
मूर्त्तिमन्त तुमि कृष्णप्रेमभक्ति-धन ॥३९
तिलार्द्ध तोमार सङ्ग ये जनार हये ।
कोटि पाप थाकिलेओ तार मन्द नहे ॥४०
बुझिलाम—कृष्ण मोरे करिब उद्धार ।
तोमा हेन सङ्ग आनि दिलेन आमार ॥४१
महाभाग्ये देखिलाम तोमार चरण !
तोमा' भजिले से पाइ कृष्णप्रेम-धन ॥४२
तिलार्द्ध तोमार सङ्ग ये जनार हय ।
तोमा हइते हय तार भक्तिर उदय ॥''४३
आविष्ट हइया प्रभु गौराङ्गसुन्दर ।
नित्यानन्दे स्तुति करे,—नाहि अबसर ॥४४
नित्यानन्द-चैतन्येर अनेक आलाप
सर्व कथा ठारेठारे, नाहिक प्रकाश ॥४५
प्रभु बोले''जिज्ञासा करिते वासि भय ।
कोन् दिग हैते शुभ करिला विजय ?''४६
शिशुमति नित्यानन्द—परम विह्वल ।
बालकेर प्राय येन बचन चञ्चल ॥४७
'एइ प्रभु अवतीर्ण' जानिलेन मर्म ।
करजोड़ करि बोले हइ बड़ नम्र ॥४८
प्रभु स्तुति करे शुनि लज्जित हइया ।
व्यपदेशे सर्व-कथा कहेन भाङ्गिया ॥४९
नित्यानन्द बोले तीर्थ करिल अनेक ।
देखिल कृष्णेर स्थान यतेक यतेक ॥५०
स्थान मात्र देखि कृष्ण देखिते ना पाइ ।
जिज्ञासा करिल तबे भाल लोक ठाँइ ॥५१
सिंहासन-सब केने देखि आच्छादित ?
कइ भाइसव! कृष्ण गेला कोन् भित ?५२

तारा बोले—कृष्ण गियाछेन गौड़देशे ।
गया करि गियाछेन कथोक दिवसे ॥५३
नदीयाय शुनि बड़ हरिसङ्कीर्त्तन ।
केहो बोले तथाय जन्मिला नारायण ॥५४
पतितेर त्राण बड़ शुनि नदीयाय ।
शुनिया अइलुँ मुञि पातकी एथाय ॥५५
प्रभु बोले आमरा सकल भाग्यवान् ।
तुमि हेन भक्तेर हइल उपस्थान ॥५६
आजि कृतकृत्य हेन मानिल आमरा ।
देखिल ये तोमर आनन्द बारि-धारा ॥५७
तुमि यदि एथा आसि हइयाछ प्रवेश ।
दुइ जने श्रीकृष्णेर करिब उद्देश ॥५८
हासिया मुरारि बोले तोमरा तोमरा ।
उहा त ना बुझि किछु आमरा सभारा ॥५९
श्रीवास बोलेन उहा आमरा कि बुझि ?
माधव-शङ्कर येन दोँहे दोँहे पूजि ॥६०
गदाधर बोले''भाल बलिला पण्डित ।
सेइ बुझि येन राम-लक्ष्मण चरित ॥''६१
केहो बोले''दुइजन येन दुइ काम ।''
केहो बोले''दुइ जन कृष्ण-बलराम ॥''६२
केहो बोले''आमि किछु विशेष ना जानि ।
कृष्णकोले येन शेष आइला आपनि ॥''६३
केहो बोले दुइ सखा येन कृष्णार्ज्जुन ।
सेइमत देखिलाङ स्नेह परिपूर्ण ॥६४
केहो बोले दुइजने बड़ परिचय ।
किछु ना बुझिये—सब ठारे कथा कय ॥६५
एइमत हरिषे सकल भक्तगण ।
नित्यानन्द दरशने कहेन कथन ॥६६
नित्यानन्द गौरचन्द्र दोँहे दरशन ।
इहार श्रवणे हय बन्ध-बिमोचन ॥६७

सङ्गी, सखा, भाइ, छत्र, शयन वाहन ।
नित्यानन्द बइ अन्य नहे कोन जन ॥६८
नाना-रूपे सेवे प्रभु आपन इच्छाय ।
यारे देन अधिकार, से-इ जन पाय ॥६९
आदिदेव महायोगी ईश्वर वैष्णव ।
महिमार अन्त इहा नाहि जाने सब ॥७०
ना जानिया निन्दे' तार चरित्र अगाध ।
पाइयाओ विष्णुभक्ति हय तार बाध ॥७१
चैतन्येर प्रिय-देह नित्यानन्द राम ।
हउक मोर प्राणनाथ—एइ मनस्काम ॥७२
ताहान प्रसादे हैल चैतन्येते रति ।
ताहान आज्ञाये लिखि चैतन्येर स्तुति ॥७३
'रघुनाथ' 'यदुनाथ' येन नामभेद ।
एइमत भेद 'नित्यानन्द' 'बलदेव' ॥७४
संसारेर पार हआ भक्तिर सागरे ।
ये डुबिबे से भजुक् निताइचान्देरे ॥७५
येबा गाय एइ कथा हइया तत्पर ।
गोष्ठीसह बरदाता तारे विश्वम्भर ॥७६
जगते दुर्ल्लभ बड़ विश्वम्भर नाम ।
सेइ प्रभु चैतन्य—सभार धन प्राण ॥७७
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥७८

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे नित्यानन्द-चैतन्य-दर्शनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥



पचंम अध्याय

जय जय श्रीचैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौरभक्तवृन्द ॥१
हेनमते नित्यानन्द-सङ्गे कुतूहले ।
कृष्ण-कथारसे सभे हइला विह्वले ॥२
सभे महाभागवत परम-उदार ।
कृष्ण-रसे मत्त सभे करेन हुङ्कार ॥३
हासे प्रभु नित्यानन्द चारिदिगे देखि ।
बहये आनन्दधारा सभाकार आँखि ॥४
देखिया आनन्द महाप्रभु विश्वम्भर ।
नित्यानन्द-प्रति किछु बलिला उत्तर ॥५
"शुनशुन नित्यानन्द श्रीपाद गोसाञि !
व्यासपूचा तोमार हइब कोन् ठाञि ॥६
कालि हेब पौर्णमासी व्यासेर पूजन ।
आपने बुझिया बोल, यथा लय मन ॥"७
नित्यानन्द जानिलेन प्रभुर इङ्गित ।
हाते धरि आनिलेन श्रीवासपण्डित ॥८
हासि बोले नित्यानन्द शुन विश्वम्भर !
व्यासपूजा मोर एइ वामनार घर ॥९
श्रीवासेर प्रति बोले प्रभु विश्वम्भर ।
"बड़ भाल लागिल ये तोमार उपर ॥"१०
पण्डित बोलेन प्रभु! किछु नहे भार ।
तोमादेर प्रसादे सब घरेइ आमार ॥११
बस्त्र दुग्ध यज्ञसूत्र घृत गुया पान ।
विधियोग्य यत सज्ज—सब विद्यमान ॥१२

पद्धति-पुस्तक मात्र मागिया आनिब ।
कालि महाभाग्ये व्यासपूजन देखिब ॥१३
प्रीत हैला महाप्रभु श्रीवासेर बोले ।
हरिहरिध्वनि कैला वैष्णव-सकले ॥१४
विश्वम्भर बोले शुन श्रीपाद गोसाञि ।
शुभ कर सभे पण्डितेर घर याइ ॥१५
आनन्दित नित्यानन्द प्रभुर बचने ।
सेइक्षणे आज्ञा लञा करिला गमने ॥१६
सर्व-गणे चलिला ठाकुर विश्वम्भर ।
राम-कृष्ण बेढ़ि येन गोकुलकिङ्कर ॥१७
प्रविष्ट हइला मात्र श्रीवास-मन्दिरे ।
व्यक्त कृष्णानन्द हैल सभार शरीरे ॥१८
कपाट पड़िल तबे प्रभुर आज्ञाय ।
आप्तगण विने आर याइते ना पाय ॥१९
कीर्त्तन करिते आज्ञा करिला ठाकुर ।
उठिल कीर्त्तनध्वनि, वाह्य गेल दूर ॥२०
व्यासपूजा-अधिवास उल्लास कीर्त्तन ।
दुइ प्रभु नाचे, बेढ़ि गाय भक्तगण ॥२१
चिर-दिवसेर प्रेमे चैतन्य निताइ ।
दोँहे दोँहा ध्यान करि नाचे एकठाँइ ॥२२
हुङ्कार करये केहो, केहो बा गर्जन ।
केहो मूर्च्छा याय, केहो करये क्रन्दन ॥२३
कम्प,स्वेद, पुलकाश्रु, आनन्द-मूर्च्छित ।
ईश्वरेर बिकार-कहिते जानि कत ॥२४
स्वानुभावानन्दे नाचे प्रभु दुइ जन ।
क्षणे कोलाकुलि करि करये क्रन्दन ॥२५
दोहाँर चरण दोँहे धरिबारे चाहे ।
परम चतुर दोँहे—केहो नाहि पाये ॥२६
परम-आनन्दे दोँहे गड़ागड़ि याय ।
आपना ना जाने दोँहे आपन-लीलाय ॥२७
वाह्य दूर हइल, वसन नाहि रहे ।
धरये वैष्णवगण, धरण ना याये ॥२८
ये धरये त्रिभुवन, के धरिब तारे ।
महामत्त दुइ प्रभु कीर्त्तने बिहरे ॥२९
बोल बोल बलि डाके श्रीगौरसुन्दर ।
सिञ्चित आनन्दजले सर्व-कलेबर ॥३०
चिर-दिने नित्यानन्द पाइ अभिलाषे ।
वाह्य नाहि, आनन्द-सागर माझे भासे ॥३१
विश्वम्भर नृत्य करे अति मनोहर ।
निज शिर लागे गिया चरण उपर ॥३२
टलमल भूमि नित्यानन्द-पदताले ।
भूमिकम्प-हेन माने' वैष्णव-सकले ॥३३
एइमत आनन्दे नाचेन दुइ नाथ ।
से उल्लास कहिबारे शक्ति आछे का'त ?३४
नित्यानन्द प्रकाशिते प्रभु विश्वम्भर ।
बलराम भावे उठे खट्टार उपर ॥३५
महामत्त हैल प्रभु बलराम भावे ।
"मद आन मद आन" बलि घन डाके ॥३६
नित्यानन्द प्रति बोले श्रीगौरसुन्दर ।
"झाट देह मोरे हल मुषल सत्वर ॥"३७
पाइया प्रभुर आज्ञा प्रभु-नित्यानन्द ।
करे दिला, कर पाति लैला गौरचन्द्र ॥३८
कर देखे केहो आर किछुइ ना देखे ।
केहो बा देखिल हल मुषल प्रत्यक्षे ॥३९
यारे कृपा करे सेइ ठाकुरे से जाने ।
देखिलेह शक्ति नाहि कहिते कथने ॥४०
ए बड़ निगूढ़ कथा केहो मात्र जाने ।
नित्यानन्द व्यक्त सेइ-सब-जन-स्थाने ॥४१
नित्यानन्द-स्थाने हल मुषल लइया ।
"बारुणी बारुणी" प्रभु डाके मत्त हैया ॥४२

कारो बुद्धि नाहि स्फुरे ना बुझे उपाय।
अन्योऽन्ये सभार वदन सभे चा'य ॥४३
युगति करिया सभे मनेते भाबिया।
घट भरि गङ्गाजल सभे दिल लैया ॥४४
सर्व-गरगे देइ जल, प्रभु करे पान।
सत्य येन कादम्वरी पीये हेन भान ॥४५
चतुर्द्दिगे रामस्तुति पड़े भक्तगरग।
नाढ़ा नाढ़ा नाढ़ा प्रभु बोले अनुक्षरग ॥४६
सघनेढुलाय शिर नाढ़ा नाढ़ा बोले।
नाढ़ार सन्दर्भ केहो ना बुझे सकले ॥४७
सभे बलिलेन प्रभु!नाढ़ा बोल का'रे ?
प्रभु बोले आइलुँ मुञि याहार हुङ्कारे ॥४८
'अद्वैत-आचार्य्य' बलि नाम कह यार।
सेइ नाढ़ा लागि मोर एइ अवतार ॥४९
मोहरे आनिला नाढ़ा वैकुण्ठ थाकिया।
निश्चिन्ते रहिल गिया हरिदास लैया ॥५०
सङ्कीर्त्तन -आरम्भे मोहर अवतार।
घरेघरे करिमु कीर्त्तन अपार ॥५१
विद्या, धन, कुल, ज्ञान तपस्यार मदे।
मोर भक्तस्थाने यार आछे अपराधे ॥५२
से अधम-सभारे ना दिमु प्रेमयोग।
नगरिया प्रति दिमु ब्रह्मादिर भोग ॥५३
शुनिया आनन्दे भासे सब-भक्तगरग।
क्षरगेके सुस्थिर हैला श्रीशचीनन्दन ॥५४
''कि चाञ्चल्य करिलाम?''प्रभु जिज्ञासये।
भक्त सब बोले किछु उपाधिक नहे ॥५५
सभारे करेन प्रभु प्रेम-आलिङ्गन।
''अपराध मोर ना लइबा सर्व-क्षरग ॥''५६
हासे सर्व-भक्तगरग प्रभुर कथाय।
नित्यानन्द-महाप्रभु गड़ागड़ि याय ॥५७

सम्वरण नहे नित्यानन्देर आबेश।
प्रेमरसे विह्वल हइला प्रभु शेष ॥
क्षरगे हासे, क्षरगे कान्दे, क्षरगे दिगम्वर।
बाल्यभाबे पूर्ण हैल सर्व-कलेबर ॥
कोथा बा थाकिल दण्ड कोथा कमण्डुल।
कोथा बा बसन गेल, नाहि आदि मूल ॥
चञ्चल हइला नित्यानन्द महा धीर।
आपने धरिया प्रभु करिलेन स्थिर ॥
चैतन्येर बचन-अङ्कुश सबे माने।
नित्यानन्द मत्त-सिंह आर नाहि जाने ॥
स्थिर हओ कालि पूजिबारे चाह व्यास।
स्थिर कराइया प्रभु गेला निज वास ॥
भक्तगरग चलिलेन आपनार घरे।
नित्यानन्द रहिलेन श्रीवासमन्दिरे ॥
कथो रात्रे नित्यानन्द हुङ्कार करिया।
निज दण्ड कमण्डलु फ़ेलिला भाङ्गिया ॥
के बुझये ईश्वरेर चरित्र अखण्ड।
केने भाङ्गिलेन निज कमण्डलु दण्ड ॥
प्रभाते उठिया देखे रामाइ पण्डित।
भाङ्गा दण्ड कमण्डलु देखिया विस्मित ॥
पण्डितेर स्थाने कहिलेन ततक्षरगे।
श्रीवास वोलेन याओ ठाकुरेर स्थाने ॥
रामाइर मुखे शुनि आइला ठाकुर।
वाह्य नाहि नित्यानन्द हासेन प्रचुर ॥
दण्ड लइलेन प्रभु श्रीहस्ते तुलिया।
चलिलेन गङ्गास्नाने नित्यानन्द लैया ॥
श्रीवासादि सभेइ चलिला गङ्गास्नाने।
दण्ड थुइलेन प्रभु गङ्गाये आपने ॥
चञ्चल से नित्यानन्द, ना माने बचन।
तबे एकबार प्रभु करये गर्जन ॥

कुम्भीर देखिया तारे धरिबारे याय ।
गदाधर श्रीनिवास करे हाय हाय ॥७३
साँतरे गङ्गार माझे निर्भय-शरीर ।
चैतन्येर वाक्ये मात्र किछु हय स्थिर ॥७४
नित्यानन्द प्रति डाकि बोले विश्वम्भर ।
"व्यासपूजा आसि झाट करह सत्वर ॥"७५
शुनिया प्रभुर वाक्य उठिला तखने ।
स्नान करि गृहे आइलेन प्रभु-सने ॥७६
आसिया मिलिला सब-भागवतगण ।
निरवधि 'कृष्ण कृष्ण' करिते कीर्त्तन ॥७७
श्रीवासपण्डित–व्यासपूजार आचार्य्य ।
चैतन्येर आज्ञाय करेन सर्व-कार्य्य ॥७८
मधुर मधुर सभे करेन कीर्त्तन ।
श्रीवासमन्दिर हैल वैकुण्ठभुवन ॥७९
सर्वशास्त्रज्ञाता सेइ ठाकुर-पण्डित ।
करिला सकल कार्य्य ये विधिबोधित ॥८०
दिव्य-गन्ध-सहित सुन्दर वनमाला ।
नित्यानन्द हाथे दिया बलिते लागिला ॥८१
शुन शुन नित्यानन्द ! एइ माला धर ।
बचन पढ़िया व्यासदेवे नमस्कर ॥८२
शास्त्रविधि आछे माला आपने से दिबा ।
व्यास तुष्ट हैले, सर्व अभीष्ट पाइबा ॥८३
यत शुने नित्यानन्द करे 'हय हय' ।
किसेर बचन पाठ–प्रबोध ना लय ॥८४
कि बा बोले धीरे धीरे बुझन ना याय ।
माला हाथे करि पुन चारिदिगे चाय ॥८५
प्रभुरे डाकिया बोले श्रीवास उदार ।
"ना पूजेन व्यास एइ श्रीपाद तोमार ॥"८६
श्रीवासेर वाक्य शुनि प्रभु विश्वम्भर ।
धाइया सम्मुखे प्रभु आइला सत्वर ॥८७

प्रभु बोले"नित्यानन्द ! शुनह बचन ।
माला दिया झाट कर व्यासेर पूजन ॥८८
देखिलेन नित्यानन्द–प्रभु विश्वम्भर ।
माला तुलि दिला ताँर मस्तक उपर ॥८९
चाँचर-चिकुरे माला शोभे अति भाल ।
छय-भुज विश्वम्भर हइला तत्काल ॥९०
शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, श्रीहल, मुषल ।
देखिया विस्मित हैला निताइ विह्वल ॥९१
षड़्भुज देखि मूर्च्छा पाइला निताइ ।
पड़िला पृथिवी तले धातु मात्र नाइ ॥९२
भय पाइलेन सब वैष्णवेरगण ।
रक्ष कृष्ण रक्ष कृष्ण ! करेन स्मरण ॥९३
हुङ्कार करेन जगन्नाथेर नन्दन ।
कक्षे तालि देइ घन विशाल गर्जन ॥९४
मूर्च्छा गेला नित्यानन्द षड़्भुज देखिया ।
आपने चैतन्य तोले गा'ये हात दिया ॥९५
उठ उठ नित्यानन्द ! स्थिर कर चित ।
सङ्कीर्त्तन शुन–ये तोमार समीहित ॥९६
ये कीर्त्तन-निमित्त करिला सवतार ।
से तोमार सिद्ध हैल किबा चाह आर ॥९७
तोमार से प्रेमभक्ति, तुमि प्रेममय ।
विने तुमि दिले, कारो भक्ति नाहि हय ॥९८
आपना' सम्वरि उठ, निज जन चा'ह ।
याहारे तोमार इच्छा, ताहारे बलाह ॥९९
तिलार्द्धेक तोमारे याहार द्वेष रहे ।
भजिलेह से आमार प्रिय कभु नहे ॥१००
पाइया चैतन्य प्रभु–प्रभुर बचने ।
हइला आनन्दमय षड़्भुज दर्शने ॥१०१
ये अनन्त-हृदये वैसेन गौरचन्द्र ।
सेइ प्रभु अविस्मय जान नित्यानन्द ॥१०२

छय-भुज-दृष्टि ताने कोन् अद्भुत ।
अवतार-अनुरूप ए सब कौतुक ॥१०३
रघुनाथ-प्रभु येन पिण्डदान कैला ।
प्रत्यक्ष हइया आसि दशरथ लैला ॥१०४
से यदि अद्भुत, तबे एहो अद्भुत ।
निश्चय जानिह एइ कृष्णेर कौतुक ॥१०५
नित्यानन्दस्वरूपेर स्वभाब सर्वथा ।
तिलार्द्धेको दास्यभाब ना हय अन्यथा ॥१०६
लक्ष्मणेर स्वभाब येहेन अनुक्षण ।
सीताबल्लभेर दास्ये मन प्राण धन ॥१०७
एइ मत नित्यानन्दस्वरूपेर मन ।
चैतन्यचन्द्रेर दास्य प्रति अनुक्षण ॥१०८
यद्यपिह अनन्त ईश्वर निराश्रय ।
सृष्टि स्थिति प्रलयेर हेतु जगन्मय ॥१०९
सर्व-सृष्टि-तिरोभाब ये समये हये ।
तखनो अनन्त-रूप सत्य वेदे कहे ॥११०
तथापिह श्रीअनन्तदेवेर स्वभाव ।
निरवधि प्रभुपदे करे दास्यभाब ॥१११
युगेयुगे–प्रति अवतारे अवतारे ।
स्वभाव ताँहार दास्य' बुजह बिचारे ॥११२
श्रीलक्ष्मण-अवतारे अनुज हइया ।
निरवधि सेबेन अनन्त दास हैया ॥११३
अन्न पानी निद्रा छाड़ि श्रीरामचरण ।
सेवियाओ आकाङ्क्षा ना पूरे अनुक्षण॥११४
ज्येष्ठ हइयाओ बलराम-अवतारे ।
दास्ययोग कभु ना छाड़िलेन अन्तरे ॥११५
स्वामी करियाओ से बोलेन कृष्ण प्रति ।
भक्ति बइ कखनो ना हय अन्य-मति ॥११६
तथाहि (भा० १०।१३।४६)वत्सहरणे

श्रीबलदेववाक्यं—

"केयं वा कुत आयाता
दैवी वा नार्य्युता सुरी
प्रायो मायास्तु मे भर्त्तु-
र्नान्या मेऽपि विमोहिनी ॥"११

टीका ।

केयमिति । का इयं माया ?-देवानां नराणां वा, असुराणां वा ? कुतो वा ?-क प्रयुक्ता ? तत्र अन्यमाया न सम्भवति, यतो म मोहो वर्त्तते; अत प्रायशो मत्स्वामिन: श्रीकृष्ण मायेयमस्त्विवति सम्भावयति ॥ इति श्रीधरः॥

अनुवाद ।

श्रीबलराम बितर्क कर कहेथे,-यह कौन देवी, मानुषी, अथवा आसुरी माया है, मैं गया हूँ। यह माया प्रभु की है, कारण मैं भी मुग्ध हो रहा हूँ ।

सेइ प्रभु आपने अनन्त महाशय।
नित्यानन्द-महाप्रभु जानिह निश्चय ॥१
इहाते ये नित्यानन्द बलराम प्रति।
भेद-दृष्टि हेन करे–सेइ मूढ़मति ॥१
सेवाविग्रहेर प्रति अनादर यार।
विष्णुस्थाने अपराध सर्वथा ताहार ॥१

तथाहि श्रीरामचन्द्रवाक्यं—

"अजप्त्वा लाक्ष्मणं मन्त्रं रामचन्द्रं जपेत् तु
तस्य कार्य्यं न सिध्येत कल्पकोटिशतैरपि।
१

लक्ष्मण का मन्त्र जप न करके राममन्त्र करने से शत कोटि कल्प में कार्य्य सिद्धि होती है।

ब्रह्मा-महेश्वर-बन्द्य यद्यपि कमला।
तभु ताँर स्वभाब–चरणसेवा खेला ॥१

सर्व-शक्ति-समन्वित 'शेष' भगवान् ।
तथापि स्वभाव-धर्म—सेवा से ताहान ॥१२३
अतएव तान येन स्वभाव कहिते ।
सन्तोष पायेन प्रभु सकल हइते ॥१२४
ईश्वर स्वभाव से—केवल भक्ति-वश ।
विशेष प्रभुर सुख शुनितेइ यश ॥१२५
स्वभाव कहिते विष्णु-वैष्णवेर प्रीत ।
अतएव वेदे कहे स्वभाव-चरित ॥१२६
विष्णु-वैष्णवेर तत्त्व ये कहे पुराणे ।
सेइमत लिखि आमि पुराण प्रमाणे ॥१२७
नित्यानन्दस्वरूपेर एइ वाक्य मन ।
"चैतन्य ईश्वर, मुञि ताँर एकजन ॥"१२८
अहर्निश श्रीमुखे नाहिक अन्य कथा ।
मुञि ताँर, सेहो मोर ईश्वर सर्वथा ॥१२९
चैतन्येर सङ्गे ये मोहोर स्तुति करे ।
से-इ से मोहोर भृत्य, पाइबेक मोरे १३०
आपने कहिया आछेन षड़्भुजदर्शने ।
तान प्रीते कहि तान ए सब कथने ॥१३१
परमार्थे नित्यानन्द ताहान हृदये ।
दोँहे दोँहा देखिते आछेन सुनिश्चये ॥१३२
तथापिह अवतार-अनुरूप खेला ।
करेन ईश्वरसेवा बुझ तान लीला ॥१३३
सहजे स्वीकार प्रभु करये आपने ।
ताहा गाय वर्णे वेदे भारते पुराणे ॥१३४
ये कर्म करये प्रभु सेइ हय वेद ।
ताहि गाय सर्व-वेद छाड़ि सर्व-भेद ॥१३५
भक्तियोग विने इहा बुझन ना याय ।
जाने जन-कथो गौरचन्द्रेर कृपाय ॥१३६
नित्य शुद्ध ज्ञानवन्त वैष्णव-सकल ।
तबे ये कलह देख, सब कुतूहल ॥१३७
इहा ना बुझिया कोनो कोनो बुद्धि-नाश ।
एक बन्दे, आर निन्दे, याइबेक नाश ॥१३८

तथाहि नारदीये—

"अभ्यर्च्चयित्वा प्रतिमासु विष्णुं
दूष्यन् जने सर्वगतं तमेव ।
अभ्यर्च्चार्य पादौ द्विजनस्य मूर्द्धनि
द्रुह्यन्निवाज्ञो नरकं प्रयाति ॥"१३९

टीका ।

अभ्यर्च्चयित्वेति । अज्ञो जनः प्रतिमासु विष्णुम् अभ्यर्च्चयित्वा—सम्यक् पूजयित्वा वेवेष्टि सर्वं जगत् इति विष्णुशब्दव्युत्पत्तेः, अन्तर्यामिरूपेण सर्वगतं, तं—विष्णुम् एव, जने दूष्यन्—जने दोषाचरणेन तदन्तर्यामिणि विष्णावेव दोषम् आचरन्, द्विजनस्य संस्कारवतो ब्राह्मणस्य, पादौ अभ्यर्च्च्य, मूर्द्धनि द्रुह्यन् इव नरकं प्रयाति ।

अनुवाद ।

प्रतिमा में श्रीविष्णु की अर्च्चना यथाविधि करने के सहित यदि जनगण के प्रति विरुद्धाचरण कोई करता है, तब वह अपराध सर्वव्यापी विष्णु के निकट ही होता है। संस्कारापन्न ब्राह्मण की चरणपूजा करके यदि ब्राह्मण के मस्तक मैं पदाघात करता है, अथवा अवमानन करता है, उससे नरक गमन सुनिश्चित है।

वैष्णव-हिंसार कथा, से थाकुक दूरे ।
सहज-जीवेरे ये अधम पीड़ा करे ॥१४०
विष्णु पूजियाओ ये प्रजार द्रोह करे ।
पूजाओ निष्फल हय, आरो दुःखे मरे ॥१४१
सर्वभूते आछेन श्रीविष्णु ना जानिया ।
विष्णुपूजा करे अति प्राकृत हइया ॥१४२
एक हस्ते येन विप्र चरण पाखाले ।
आर हस्ते ढिल मारे माथाय कपाले ॥१४३
ए सब लोकेर कि कुशल कोन क्षणे ।
हइयाछे हइबेक ?—बुझ भावि मने ॥१४४

यत पाप हय प्रजागणेर हिंसने।
तार शतगुण हय वैष्णव निन्दने ॥१४५
श्रद्धा करि मूर्त्ति पूजे, भक्त ना आदरे।
मूर्ख-नीच-पतितेरे दया नाहि करे ॥१४६
एक अवतार भजे, ना भजये आर।
कृष्ण-रघुनाथे करे भेद-व्यवहार ॥१४७
बलराम-शिब प्रति प्रीत नाहि करे।
'भक्ताधम' शास्त्रे कहे ए सब जनारे ॥१४८

तथाहि (भा० ११।२।४७)—

"अर्च्चायामेव हरये पूजां यः श्रद्धयेहते।
न तद्भक्तेषु चान्येषु स भक्तः प्राकृतः स्मृत॥" १४९

अर्च्चायामिति। यः, हरये–हरिं प्रीणयितुम्, अर्च्चायां–प्रतिमायाम् एब, श्रद्धया–लोकपराम्परा-प्राप्तयैव, नतु शास्त्रार्थविश्वासमय्या, अन्येषु च, सुतरां न करोति, स भक्तः, प्राकृतः अधमः किन्तु–अधुनैव प्रारब्धभक्तिः, स्मृतः।

जो व्यक्ति श्रीहरि सन्तोष के निमित्त श्रद्धापूर्वक प्रतिमा का अर्च्चन करता है, किन्तु भक्त अथवा प्राणीमात्र को सम्मानदान नहीं करता है, उस भक्त को प्राकृत कहते हैं। अर्थात् भक्तिमार्ग में उसका प्रवेश सम्प्रति हुआ है।

प्रसङ्गे कहिल भक्ताधमेर लक्ष्मणे।
पूर्ण हैला नित्यानन्द षड़्भुज दरशने ॥१५०
एइ नित्यानन्देर षड़्भुज-दरशन।
इहा ये शुनये–तारे मिले प्रेमधन ॥१५१
वाह्य पाइ नित्यानन्द करेन क्रन्दने।
महानदी बहे दुइ कमल-नयने ॥१५२
सभा' प्रति महाप्रभु बलिला बचन।
"पूर्ण हैल व्यासपूजा, करह कीर्त्तन॥" १५३
पादया प्रभुर आज्ञा सभे आनन्दित।
चौदिगे उठिल कृष्णध्वनि आचम्वित ॥१५४
नित्यानन्द-गौरचन्द्र नाचे एकठाञि।
महामत्त दुइ भाइ कारो वाह्य नाञि ॥१५५
सकल वैष्णव हैला आनन्दे विह्वल।
व्यासपूजा-महोत्सव महा-कुतूहल ॥१५६
केहो नाचे केहो गाय केहो गड़ि याय।
सभेइ चरण धरे, ये याहार पाय ॥१५७
चैतन्यप्रभुर माता जगतेर आइ।
निभृते वसिया रङ्ग देखेन तथाइ ॥१५८
विश्वम्भर नित्यानन्द देखि दुइजने।
"दुइजन मोर पुत्र" हेन वासे मने ॥१५९
व्यासपूजा-महोत्सव परम उदार।
अनन्त-प्रभु से पारे इहा बर्णिबार ॥१६०
सूत्र आमि किछु कहि चैतन्यचरित।
ये ते मते कृष्ण गाइलेइ हय हित ॥१६१
दिन अबशेष हैल व्यासपूजा-रङ्गे।
नाचेन वैष्णवगण विश्वम्भर-सङ्गे ॥१६२
परानन्दे मत्त महाभागवतगण।
"हा कृष्ण!" बलिया सभे करेन क्रन्दन ॥१६३
एइमते निज भक्तियोग प्रकाशिया।
स्थिर हैला विश्वम्भर सर्व-गण लैया ॥१६४
ठाकुर-पण्डित प्रति बोले विश्वम्भर।
व्यासेर नैवद्य सब आनह सत्वर ॥१६५
ततक्षणे आनिलेन सर्व-उपहार।
आपनेइ प्रभु हस्ते दिलेन सभार ॥१६६
प्रभुर हस्तेर द्रव्य पाइ ततक्षण।
आनन्दे भोजन करे भागवतगण ॥१६७
यथेक आछिल सेइ बाड़ीर भितरे।
सभारे डाकिया प्रभु दिला निज करे ॥१६८
ब्रह्मादि पाइया याहा भाग्य-हेन माने।
ताहा पाय वैष्णवेर दास-दासीगणे ॥१६९

एसब कौतुक यत श्रीवासेर घरे ।
एतेके श्रीवास-भाग्य के बलिते पारे ॥१७०
एइमत नाना दिन नाना से कौतुके ।
नवद्वीपे हय, नाहि जाने सर्व-लोके ॥१७१
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावन दास तछु पदयुगे गान ॥१७२

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे श्रीव्यासपूजन-वर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः ।



षष्ठ अध्याय

जयजय जगतजीवन गौरचन्द्र ।
दान देह' हृदये तोमार पदद्वन्द्व ॥१
जयजय जगतजीवन विश्वम्भर ।
जयजय यत गौरचन्द्रेर किङ्कर ॥२
जय श्रीपरमानन्दपुरीर जीवन ।
जय दामोदरस्वरूपेर प्राण धन ॥३
जय रूप-सनातन प्रिय महाशय ।
जय जगदीश-गोपीनाथेर हृदय ॥४
जयजय द्वारपाल-गोविन्देर नाथ ।
जीव प्रति कर' प्रभु!शुभ दृष्टिपात ॥५
हेनमते नित्यानन्द-सङ्गे गौरचन्द्र ।
भक्तगण लैया करे सङ्कीर्त्तन-रङ्ग ॥६
एखने शुनह अद्वैतेर आगमन ।
मध्यखण्डे येनमते हैल दरशन ॥७
एकदिन महाप्रभु ईश्वर-आवेशे ।
रामाइरे आज्ञा करिलेन पूर्ण-रसे ॥८
चलह रामाञि! तुमि अद्वैतेर वास ।
ताँर स्थाने कह गिया आमार प्रकाश ॥९
यार लागि करिला बिस्तर आराधन ।
यार लागि करियाछ बिस्तर क्रन्दन ॥१०
यार लागि करिला बिस्तर उपवास ।
से प्रभु तोमार लागि हइला प्रकाश ॥११
भक्तियोग बिलाइते ताँर आगमन ।
आपनि आसिया झाट करह कीर्त्तन ॥१२
निर्जने कहिओ नित्यानन्द आगमन ।
ये किछु देखिले ताँरे कहिओ कथन ॥१३
आमार पूजार सज्ज उपहार लैया ।
झाट आसिबारे बोल सस्त्रीक हइया ॥१४
श्रीवास-अनुज-राम आज्ञा शिरे करि ।
सेइक्षणे चलिला स्मङरि 'हरि हरि' ॥१५
आनन्दे विह्वल—पथ ना जाने रामाञि ।
चैतन्येर आज्ञा लैया गेला सेइ ठाञि ॥१६
आचार्य्येरे नमस्कारि रामाञि-पण्डित ।
कहिते ना पारे कथा, आनन्दे पूर्णित ॥१७
सर्वज्ञ अद्वैत भक्तियोगेर प्रभावे ।
आइल प्रभुर आज्ञा जानियाछे आगे ॥१८
रामाञि देखिया हासि बोलये बचन ।
बुझि आज्ञा हैल आमा निबार कारण? ॥१९
करजोड़ करि बोले रामाञि पण्डित ।
सकल जानियाछह, चलह त्वरित ॥२०

आनन्दे विह्वल हैला आचार्य्य गोसाञि ।
हेन जानि जाने, देह आछे कोन् ठाञि ॥२१
के बुझये अद्वैतेर चरित्र गहन ।
जानियाओ नाना-मत कहये कथन ॥२२
कोथार गोसाञि आइला मानुष-भितरे ।
कोन् शास्त्रे बोले नदीयाय अवतारे ॥२३
मोर भक्ति अध्यात्म वैराग्य ज्ञान मोर ।
सकल जानये श्रीनिवास–भाइ तोर ॥२४
अद्वैतेर चरित्र रामाञि भाल जाने ।
उत्तर ना करे किछु, हासे मने मने ॥२५
एइमत अद्वैतेर चरित्र अगाध ।
सुकृतिर भाल, दुष्कृतिर कार्य्यबाध ॥२६
पुन बोले "कहकह रामाञि पण्डित !
कि कारणे तोमार गमन आचम्वित ?"२७
बुझिलेन–आचार्य्य हइला शान्तचित ।
तखने कान्दिया कहे रामाञि-पण्डित ॥२८
यार लागि करियाछ बिस्तर क्रन्दन ।
यार लागि करिला बिस्तर आराधन ॥२९
यार लागि करिला बिस्तर उपवास ।
से प्रभु तोमार लागि हइला प्रकाश ॥३०
भक्तियोग बिलाइते ताँर आगमन ।
तोमारे से आज्ञा करिबारे विवर्त्तन ॥३१
षड़ङ्ग-पूजार विधियोग्य सज्ज लैया ।
प्रभुर आज्ञाय चल सस्त्रीक हइया ॥३२
नित्यानन्द स्वरूपेर हैल आगमन ।
प्रभुर द्वितीय देह, तोमार जीवन ॥३३
तुमि से जानह ताँरे, मुञि कि कहिमु ।
भाग्य थाके मोर तबे एकत्र देखिमु ॥३४
रामाञिर मुखे यबे एतेक शुनिला ।
तखनि तुलिया बाहु कान्दितेलागिला ॥३५
कान्दिया हइला मूर्च्छा आनन्द-सहित ।
देखिया सकल-गण हइला बिस्मित ॥३६
क्षणेके पाइया बाह्य, करये हुङ्कार ।
आनिलुँ आनिलुँ बोले प्रभु आपनार ॥३७
मोर लागि प्रभु आइला वैकुण्ठ छाड़िया ।
एत बलि कान्दे पुनः भूमिते पड़िया ॥३८
अद्वैतगृहिणी पतिव्रता जगन्माता ।
प्रभुर प्रकाश शुनि कान्दे आनन्दिता ॥३९
अद्वैतेर तनय–'अच्युतानन्द, नाम ।
परम बालक भक्त कान्दे अबिराम ॥४०
कान्देन अद्वैत पत्नी-पुत्रेर सहिते ।
अनुचर-सब कान्दे बेढ़ि चारि-भिते ॥४१
के बा कोन् दिगे कान्दे, नाहि परापर ।
कृष्णप्रेममय हैल अद्वैतेर घर ॥४२
स्थिर हय अद्वैत–हइते नारे स्थिर ।
भावावेशे निरवधि दोलाये शरीर ॥४३
रामाञिरे बोले "प्रभु कि बलिल मोरे ?,'
रामाञि बोलेन "झाट चलिबार तरे ॥"४४
अद्वैत बोलये शुन रामाइ-पण्डित !
मोर प्रभु हेन तबे आमार प्रतीत ॥४५
आपन ऐश्वर्य्य यदि मोहोरे देखाय ।
श्रीचरण तुलि देइ आमार माथाय ॥४६
तबे से जानिमु मोर हय प्राणनाथ ।
सत्य सत्य सत्य एइ कहिलुँ तोमा'त ॥४७
रामाइ बोलेन', प्रभु! मुञि कि बलिमु ।
यदि मोर भाग्य थाके नयने देखिमु ॥४८
ये तोमार इच्छा प्रभु! से-इ से ताँहार ।
तोमार निमित्त प्रभु! एइ अवतार ॥"४९
हइला अद्वैत तुष्ट रामेर बचने ।
शुभ-यात्रा उद्‌योग करिला ततक्षणे ॥५०

पत्नीरे बलिला "झाट हओ सावधान ।
लइया पूजार सज्ज चल आगुयान ॥"५१
पतिव्रता सेइ चैतन्येर तत्त्व जाने ।
गन्ध,माल्य,धूप, वस्त्र अशेष-विधाने ॥५२
क्षीर, दधि, सुनवनी, कर्पूर, ताम्बूल ।
लइया चलिला यत सब अनुकूल ॥५३
सपत्नीक चलिला अद्वैत-महाप्रभु ।
रामेरे निषेधे इहा ना कहिबा कभु ॥५४
ना आइला आचार्य्य तुमि बलिबा बचन ।
देखि प्रभु मोरे तबे कि बोले तखन ॥५५
गुप्त थाकोँ मुञि नन्दन-आचार्य्येर घरे ।
ना आइला बलि तुमि करिबा गोचरे ॥५६
सभ'ार हृदये वैसे प्रभु विश्वम्भर ।
अद्वैत-सङ्कल्प चित्ते हइल गोचर ॥५७
आचार्य्येर आगमन जानिया तखने ।
ठाकुर-पण्डित-गृहे चलिला आपने ॥५८
प्राय यत चैतन्येर निज-भक्तगण ।
प्रभुर इच्छाय सब मिलिला तखन ॥५९
आवेशित-चित्त प्रभु सबेइ बुझिया ।
सशङ्के आछेन सभे नीरब हइया ॥६०
हुङ्कार करये प्रभु त्रिदशेर राय ।
उठिया बसिला प्रभु विष्णुर खट्टाय ॥६१
नाढ़ा आइसे, नाढ़ा आइसे बोले बारे बारे।
नाढ़ा चाहे मोर ठाकुराल देखिबारे ॥६२
नित्यानन्द जाने सब प्रभुर इङ्गित ।
बुझिया मस्तके छत्र धरिला त्वरित ॥६३
गदाधर बुझि देइ कर्पूर ताम्बूल ।
सर्व-जने करे सेवा—येन अनुकूल ॥६४
केहो पढ़े स्तुति, केहो कोन सेवा करे ।
हेनइ समये आसि रामाञि गोचरे ॥६५
नाहि कहितेइ प्रभु बोले रामाञिरे ।
परीक्षा करिते नाढ़ा आइला आमारे ॥६६
"नाढ़ा आइसे"बलि प्रभु मस्तक ढुलाय ।
जानिआओ नाढ़ा मोरे चालहे सदाय ॥६७
एथाइ रहिल नन्दनाचार्य्येर घरे ।
मोरे परीक्षिते नाढ़ा पाठाइल तोरे ॥६८
आन गिया शीघ्र तुमि एथाइ ताहाने ।
प्रसन्न श्रीमुखे प्रभु बलिला आपने ॥६९
आनन्दे चलिला पुन रामाञि पण्डित ।
सकल अद्वैत-स्थाने करिला बिदित ॥७०
शुनिया आनन्दे भासे अद्वैत-आचार्य्य ।
आइला प्रभुर स्थाने, सिद्ध हइल कार्य्य ॥७१
दूरे थाकि दण्डवत करिते करिते ।
सस्त्रीके आइसे स्तब पढ़िते पढ़िते ॥७२
आइला निर्भय-पद हइला सम्मुखे ।
निखिल ब्रह्माण्ड अपरूप वेश देखे ॥७३

(श्रीराग ।)

जिनिञा कन्दर्प कोटि लावण्य सुन्दर ।
ज्योतिर्मय कनक-सुन्दर कलेवर ॥७४
प्रसन्न-वदन कोटि चन्द्रेर ठाकुर ।
अद्वैतेर प्रति येन सदय प्रचुर ॥७५
दुइ बाहु-कोटि कनकेर स्तम्भ जिनि ।
तहिँ दिव्य अलङ्कार—रत्नेर खेँचनि ॥७६
श्रीवत्स कौस्तुभ-महामणि शोभे बक्षे ।
मकर-कुण्डल वैजयन्ती-माला देखे ॥७७
कोटि-महःसूर्य्य जिनि तेजे नाहि अन्त ।
पादपदे रमा, छत्र धरये अनन्त ॥७८
किबा नख किबा मणि ना पारे चिनिते ।
त्रिभङ्गे बाजाय वाँशी हासिते हासिते ॥७९
किबा प्रभु किबा गण,किबा अलङ्कार ।
ज्योतिर्मय बइ किछु नाहि देखे आर ॥८०

देखे पड़ियाछे चारि पञ्च शत मुख।
महाभये स्तुति करे नारदादि शुक ॥८१
मकरवाहन-रथ एक बराङ्गना।
दण्ड-परणामे आछे येन गङ्गा-समा ॥८२
तबे देखे—स्तुति करे सहस्रवदन।
चारि-दिगे देखे ज्योतिर्मय देवगण ॥८३
उलटिया चा'हे निज चरणेर तले।
सहस्र सहस्र देव पड़ि 'कृष्ण' बोले ॥८४
ये पूजार समये ये देव ध्यान करे।
ताहा देखे चारिदिगे चरणेर तले ॥८५
देखिया सम्भ्रमे दण्ड-परणाम छाड़ि।
उठिला अद्वैत-अद्भुत देखि बड़ि ॥८६
देखे सप्त फणाधर महानागगण।
ऊर्द्ध्व बाहु स्तुति करे तुलि सब फण ॥८७
अन्तरीक्षे परिपूर्ण देखे दिव्य रथ।
गज हंस अश्वे निरोधिल वायुपथ ॥८८
कोटि कोटि नागबधू सजल-नयने।
कृष्ण बलि स्तुति करे देखे विद्यमाने ॥८९
क्षिति अन्तरीक्षे स्थान नाहि अवकाशे।
देखे पड़ियाछे महा-ऋषिगण पाशे ॥९०
महा-ठाकुराल देखि पाइला सम्भ्रम।
पति पत्नी किछु बलिबारे नाहि क्षम ॥९१
परम-सदय मति प्रभु विश्वम्भर।
चाहिया अद्वैत प्रति करिला उत्तर ॥९२
तोमार सङ्कल्प लागि अवतीर्ण आमि।
बिस्तर आमार आराधना कैले तुमि ॥९३
शुतिया आछिलुँ क्षीरसागर-भितरे।
निद्रा-भङ्ग मोर तोर प्रेमेर हुङ्कारे ॥९४
देखिया जीवेर दुःख ना पारि सहिते।
आमारे आनिले सर्व-जीव उद्धारिते ॥९५
यतेक देखिले चतुर्द्दिगे मोर गण।
सभार हइल जन्म तोमार कारण ॥९६
ये वैष्णव देखिते ब्रह्मादि भावे मने।
तोमा' हैते ताहा देखिबेक सर्व-जने ॥९७

रामकिरि राग।

एतेक प्रभुर वाक्य अद्वैत शुनिया।
ऊर्द्ध्व बाहु करि कान्दे सस्त्रीक हइया ॥९८
आजि से सफल मोर दिन परकाश।
आजि से सफल कैलुँ यत अभिलाष ॥९९
आजि मोर जन्म देह सकल सफल।
साक्षाते देखिलुँ तोर चरणयुगल ॥१००
घोषे'मात्र चारिवेद यारे नाहि देखे।
हेन तुमि मोर लागि हैला परतेखे ॥१०१
मोर किछु शक्ति नाहि, तोमार करुणा।
तोमा' बइ जीव उद्धारिव कोन् जना ? ॥१०२
बलिते बलिते प्रेमे भासेन आचार्य्य।
प्रभु बोले आमार पूजार कर कार्य्य ॥१०३
पाइया प्रभुर आज्ञा परम हरिषे।
चैतन्य चरण पूजे अशेष-विशेषे ॥१०४
प्रथमे चरण धुइ सुवासित जले।
शेषे गन्धे परिपूर्ण पादपद्मे ढाले ॥१०५
चन्दने डुबाइ दिव्य तुलसीमञ्जरी।
अर्घ्येर सहित दिला चरण-उपरि ॥१०६
गन्ध, पुष्प, धूप, दीप—पञ्च उपचारे।
पूजा करे प्रेमजले बहे महा धारे ॥१०७
पञ्चशिखा ज्वालि पुन करेन बन्दना।
शेषे जय-जय-ध्वनि करये घोषणा ॥१०८
करिया चरण-पूजा षोड़शोपचारे।
आर-बार दिला माल्य बस्त्र अलङ्कारे ॥१०९
शास्त्र-दृष्टये पुजा करे पटल विधाने।
एइ श्लोक पढ़ि करे दण्ड-परणामे ॥११०

तथाहि—

"नमो ब्रह्मण्यदेवाय गो-ब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥" १११
एइ श्लोक पढ़ि आगे नमस्कार करि ।
शेषे स्तुति करे नाना शास्त्र-अनुसारि ॥११२
जय जय सर्वप्राणनाथ विश्वम्भर ।
जय जय गौरचन्द्र करुणासागर ॥११३
जय जय भकत-बचन-सत्यकारी ।
जय जय महाप्रभु महा-अवतारी ॥११४
जय जय सिन्धुसुता-रूप-सम्मोहन ।
जय जय श्रीवत्स-कौस्तुभ-विभूषण ॥११५
जय जय हरे-कृष्ण-मन्त्रेर प्रकाश ।
जय जय निज-भक्ति-ग्रहण-विलास ॥११६
जय जय महाप्रभु अनन्तशयन ।
जय जय जय सर्वजीवेर शरण ॥११७
तुमि विष्णु तुमि कृष्ण तुमि नारायण ।
तुमि मत्स्य तुमि कूर्म तुमि सनातन ॥११८
तुमि से बराह प्रभु, तुमि से वामन ।
तुमि कर युगे युगे वेदेर पालन ॥११९
तुमि रक्षःकुलहन्ता जानकी जीवन ।
तुमि गुह-बरदाता अहल्याजीवन ॥१२०
तुमि से प्रह्लाद लागि कैले अवतार ।
हिरण्य बधिया नरसिंह-नाम यार ॥१२१
सर्वदेवचूड़ामणि तुमि द्विजराज ।
तुमि से भोजन कर नीलाचल-माझ ॥१२२
तोमारे से चारि वेदे-बुले अन्वेषिया ।
तुमि एथा आसि रहियाछ लुकाइया ॥१२३
लुकाइते बड़ प्रभु तुमि महाधीर ।
भक्तजन धरि तोमा' करये बाहिर ॥१२४
सङ्कीर्तन-आरम्भे तोमार अवतार ।
अनन्त ब्रह्माण्डे तोमा बइ नाहि आर ॥१२५
एइ तोर दुइखानि चरणकमल ।
इहारि से रसे गौरी-शङ्कर विह्वल ॥१२६
एइ से चरण रमा सेवे' एक मने ।
इहारि ये यश गाय सहस्र वदने ॥१२७
एइ से चरण ब्रह्मा पूजये सदाय ।
श्रुति स्मृति पुराणे इहारि तत्त्व गाय ॥१२८
सत्यलोके आक्रमिल एइ से चरण ।
बलि-शिर धन्य हैल इहार स्पर्शने ॥१२९
एइ से चरण हैते गङ्गा अवतार ।
शङ्कर धरिला शिरे महावेग यार ॥१३०
कोटि वृहस्पति जिनि अद्वैतेर बुद्धि ।
भालमते जाने सेइ चैतन्येर शुद्धि ॥१३१
वर्णिते चरण—भासे नयनेर जले ।
पड़िल दीघल हइ चरणेर तले ॥१३२
सर्वभूत-अन्तर्यामी श्रीगौराङ्ग-राय ।
चरण तुलिया दिला अद्वैत माथाय ॥१३३
चरण अर्पण शिरे करिला यखन ।
'जय जय' महाध्वनि हइल तखन ॥१३४
अपूर्व देखिया सभे हइला विह्वल ।
'हरि हरि' बलि सभे करे कोलाहल ॥१३५
गड़ागड़ि याय केहो मालसाट् मारे ।
कारो गला धरि केहो कान्दे उच्चस्वरे ॥१३६
सस्त्रीके अद्वैत हैला पूर्ण-मनोरथ ।
पाइया चरण शिरे पूर्व अभिमत ॥१३७
अद्वैतेरे आज्ञा कैला प्रभु विश्वम्भर ।
आरो नाढ़ा! आमार कीर्त्तने नृत्य कर ॥१३८
पाइया प्रभुर आज्ञा आचार्य्य-गोसाञि ।
नाना-भक्तियोगे नृत्य करे सेइ ठाञि ॥१३९
उठिल कीर्त्तनध्वनि अति-मनोहर ।
नाचेन अद्वैत गौरचन्द्रेर गोचर ॥१४०

क्षणे बा बिशाल नाचे, क्षणे बा मधुर ।
क्षणे बा दशने तृण करये प्रचुर ॥१४१
क्षणे क्षणे उठे क्षणे पड़ि गड़ि याय ।
क्षणे घनश्वास बहे क्षणे मूर्च्छा पाय ॥१४२
ये कीर्त्तन यखन शुनये–सेइ हये ।
एक-भाबे स्थिर नहे आनन्दे नाचये ॥१४३
अबशेषे आसि सबे रहे दास्यभाब ।
बुझन ना याय सेइ अचिन्त्य-प्रभाब ॥१४४
धाइया धाइया याय ठाकुरेर पाशे ।
नित्यानन्द देखिया भ्रूकुटि करि हासे ॥१४५
हासि बोले''भाल हैल आइला निताइ ।
एतदिन तोमार नागालि नाहि पाइ ॥१४६
याइबा कोथाय आजि एड़िमु बान्धिया ।''
क्षणे बोले प्रभु क्षणे बोले मातालिया ॥१४७
अद्वैत-चरित्रे हासे नित्यानन्द-राय ।
एक मूर्त्ति, दुइ भाग कृष्णेर लीलाय ॥१४८
पूर्वे बलियाछि नित्यानन्द नानारूपे ।
चैतन्येर सेवा करे अशेष कौतुके ॥१४९
कोनो रूपे कहे कोनो रूपे करे ध्यान ।
कोनो रूपे छत्र शय्या कोनो रूपे गान ॥१५०
नित्यानन्द-अद्वैते अभेद प्रेम जान, ।
एइ अवतारे जाने सेइ भाग्यवान ॥१५१
ये किछु कलह-लीला देखह दोँहार ।
से सब अचिन्त्य-रङ्ग–ईश्वर व्यभार ॥१५२
ए दुइर प्रीति येन अनन्त शङ्कर ।
दुइ कृष्णचैतन्येर प्रिय-कलेवर ॥१५३
ये ना बुझि दोँहार कलह-पक्ष ध'रे ।
एक बन्दे, आर निन्दे, सेइ जन मरे ॥१५४
अद्वैतेर नृत्य देखि वैष्णव-सकल ।
आनन्द-सागरे मग्न हइला केबल ॥१५५

हइल प्रभुर आज्ञा–रहिबार तरे ।
ततक्षणे रहिलेन आज्ञा करि शिरे ॥
आपन-गलार माला अद्वैतेरे दिया ।
"बर माग बर माग''बोलेन हासिया ॥
शुनिया अद्वैत किछु नाकरे उत्तर ।
"माग माग''पुनःपुनः बोले विश्वम्भर ॥
अद्वैत बोलये "आर कि मागिमु बर ।
ये बर चाहिलुँ ताहा पाइलुँ सकल ॥
तोमारे साक्षात् करि आपने नाचिलुँ ।
चित्तेर अभीष्ट यत सकलि पाइलुँ ॥
कि चाहिमु,प्रभु! किबा शेष आछे आर ।
साक्षाते देखिलुँ प्रभु ! तोर अवतार ॥
कि चाहिमु किबा नाहि जानह आपने ।
किबा नाहि देख तुमि दिव्य दरशने ॥
माथा ढुलाइया बोले प्रभु विश्वम्भर ।
तोमार निमित्ते आमि हइलुँ गोचर ॥
घरे घरे करिमु कीर्त्तन परचार ।
मोर यशे नाचे येन सकल संसार ॥
ब्रह्म-भब नारदादि यारे तप करे ।
हेन भक्ति बिलाइमु बलिलुँ तोमारे ॥
अद्वैत बोलेन यदि भक्ति बिलाइबा ।
स्त्री-शूद्र-आदि यत मूर्खेरे से दिबा ॥
विद्या-धन-कुल आदि तपस्यार मदे ।
तोर भक्त, तोर भक्ति ये ये जने बाधे ॥
से पापिष्ठ-सब देखि मरुक पुड़िया ।
चण्डाल नाचुक तोर नाम गुण गाय्या ॥
अद्वैतेर वाक्य शुनि करिला हुङ्कार ।
प्रभु बोले सत्य ये तोमार अङ्गीकार ॥
ए सब वाक्येर साक्षी–सकल संसार ।
मूर्ख नीच प्रति कृपा हइल ताँहार ॥

चण्डालादि नाचये प्रभुर गुणग्रामे ।
भट्ट, मिश्र, चक्रवर्त्ती सबे निन्दा जाने ॥१७१
ग्रन्थ पढ़ि मुण्ड मुड़ि कारो बुद्धि नाश ।
नित्यानन्द निन्दे बृथा याइबारे नाश ॥१७२
अद्वैतेर बोले प्रेम पाइल जगते ।
ए सकल कथा कहि मध्यखण्ड हैते ॥१७३
चैतन्य-अद्वैते यत हइल से कथा ।
सकल जानेन सरस्वती जगन्माता ॥१७४
सेइ भगवती सर्व-जनेर जिह्वाय ।
अनन्त हइया चैतन्येर यश गाय ॥१७५
सर्व-वैष्णवेर पा'ये मोर नमष्कार ।
इथे अपराध किछु नहुक आमार ॥१७६
सस्त्रीके आनन्द हैला आचार्य्य गोसाञि ।
अभिमत पाइया रहिला सेइ ठाञि ॥१७७
श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पद युगे गान ॥१७८

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे श्रीअद्वैतमिलनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥



सप्तम अध्याय

नाचेरे चैतन्य गुणनिधि ।
असाधने चिन्तामणि हाथे दिल विधि ॥ध्रु॥
जय जय श्रीगौरसुन्दर सर्व-प्राण ।
जय नित्यानन्द अद्वैतेर प्रेमधाम ॥१
जय श्रीजगदानन्द-श्रीगर्भ जीवन ।
जय विद्यानिधि पुण्डरीक प्राण धन ॥२
जय जगदीश-गोपीनाथेर ईश्वर ।
जय हउ यत गौरचन्द्र-अनुचर ॥३
हेनमते नवद्वीपे श्रीगौराङ्ग राय ।
नित्यानन्द सङ्गे रङ्ग करेन सदाय ॥४
अद्वैत लइया सर्व-वैष्णव मण्डल ।
महा नृत्य गीत करे कृष्ण कोलाहल ॥५
नित्यानन्द रहिलेन श्रीवासेर घरे ।
निरन्तर बाल्यभाब, आन नाहि स्फुरे ॥६
आपनि तुलिया हाथे भात नाहि खाय ।
पुत्र-प्राय करि अन्न मालिनी योगाय ॥७
एबे शुन श्रीविद्यानिधिर आगमन ।
पुण्डरीक नाम—श्रीकृष्णेर प्रियतम ॥८
प्राच्य-भूमि चाटिग्राम धन्य करिबारे ।
तथा ताने अवतीर्ण करिला ईश्वरे ॥९
नवद्वीपे करिलेन ईश्वर प्रकाश ।
बिद्यानिधि ना देखिया छाड़े प्रभु श्वास ॥१०
नृत्य करि उठिया वसिल गौर-राय ।
पुण्डरीक नाम बलि कान्दे उच्च-रा'य ॥११
"पुण्डरीक आरे मोर बाप रे बन्धु रे !
कबे तोमा' देखिब आरे रे बाप रे !"१२
हेन चैतन्येर प्रियपात्र विद्यानिधि ।
हेन सब भक्त प्रकाशिल गौर-निधि ॥१३

प्रभु से क्रन्दन करे तान नाम लैया ।
भक्त-सब केहो किछु नाहि बुझे इहा ॥१४
सभे वोले "पुण्डरीक बोलेन कृष्णोरे ।"
विद्यानिधि-नाम शुनि सभेइ बिचारे ॥१५
कोन् प्रिय भक्त इहा सभे बुझिलेन ।
वाह्य हैले प्रभु-स्थाने सभे बलिलेन ॥१६
कोन् भक्त लागि प्रभु! करह क्रन्दन ।
सत्य आमा सभा प्रति करह कथन ॥१७
आमा सभाकार भाग्य हउ ताने जानि ।
ताँर जन्म-कर्म कोथा कह प्रभु शुनि ॥१८
प्रभु बोले तोमरा सकल भाग्यवान् ।
शुनिते हइल इच्छा ताँहार आख्यान ॥१९
परम-अद्भुत ताँर सकल चरित्र ।
ताँर नाम-श्रवणेओ संसार पवित्र ॥२०
विषयीर प्राय ताँर सकल वैभब ।
चिनिते नापारे केहो तिहोँ ये वैष्णव ॥२१
चाटिग्रामे जन्म, विप्र परम पण्डित ।
परम-आचार सर्व लोके अपेक्षित ॥२२
कृष्णभक्ति-सिन्धु-माझे भासे निरन्तर ।
अश्रु कम्प पुलक बेष्टित कलेबर ॥२३
गङ्गास्नान ना करेन पादस्पर्श-भये ।
गङ्गा दरशन करे निशार समये ॥२४
गङ्गाय ये सब लोक करे अनाचार ।
कुल्लोल, दन्तधावन' केशसंस्कार ॥२५
ए सकल देखिया पायेन मने व्यथा ।
एतेके देखेन गङ्गा निशाय सर्वथा ॥२६
विचित्र विश्वास आर एक शुन तान ।
देवार्च्चन-पूर्वे करे गङ्गाजल पान ॥२७
तबे से करेन पूजा आदि नित्य कर्म ।
इहा सर्व-पण्डितेरे बुझायेन धर्म ॥२८

चाटिग्रामे आछेन एथाहो बाड़ी आछे ।
आसिबेन संप्रति, देखिबा किछु पाछे ॥२९
ताँरे झाट केहो चिनिबारे ना पारिबा ।
देखिले 'विषयी' मात्र ज्ञान से करिबा ॥३०
ताँरे ना देखिया आमि स्वास्थ्य नाहि पाइ ।
सभे ताँरे आकर्षिया आनह एथाय ॥३१
कहिते ताँहार कथा आविष्ट रइला ।
"पुण्डरीक बाप!" बलि कान्दिते लागिला ॥३२
महा-उच्चस्वरे प्रभु रोदन करेन ।
ताँहार भक्तेर तत्त्व तिहोँ से जानेन ॥३३
भक्ततत्त्व चैतन्य-गोसाञि मात्र जाने ।
से-इ भक्त जाने, यारे जानान आपने ॥३४
ईश्वरेर आकर्षण हैल ताँर प्रति ।
नवद्वीपे आसिते ताँहार हैल मति ॥३५
अनेक सेवक सङ्गे अनेक सम्भार ।
अनेक ब्राह्मण सङ्गे शिष्य भक्त आर ॥३६
आसिया रहिला नवद्वीपे गूढ़-रूपे ।
परम-भोगीर प्राय सर्वलोके देखे ॥३७
वैष्णव-समाजे इहा केहो नाहि शुने ।
सबे मात्र मुकुन्द जानिला सेइक्षणे ॥३८
श्रीमुकुन्द-बेज-ओझा ताँर तत्त्व जाने ।
एकसङ्गे मुकुन्देरो जन्म चाटिग्रामे ॥३९
विद्यानिधि-आगमन जानिया गोसाञि ।
ये हइल आनन्द—ताहार अन्त नाञि ॥४०
कोनो वैष्णवेरे प्रभु ना कहेन भाङ्गिया ।
पुण्डरीक आछेन विषयी-प्राय हैया ॥४१
यत किछु तार प्रेम भक्तिर महत्त्व ।
मुकुन्द जानेन, आर वासुदेवदत्त ॥४२
मुकुन्देर बड़ प्रिय पण्डित-गदाधर ।
एकान्त मुकुन्द ताँर सङ्गे अनुचर ॥४३

यथाकार ये वार्त्ता—कहेन आसि सब ।
"आजि एथा आइला एक अद्भुत वैष्णव ।।४४
गदाधरपण्डित ! शुनह सावधाने ।
वैष्णव देखिते तुमि ये वाञ्छह मने ।।४५
अद्भुत वैष्णव आजि देखाब तोमारे ।
सेवक करिया येन स्मङर आमारे ।।"४६
शुनि गदाधर बड़ हरिष हइला ।
सेइक्षणे 'कृष्ण' बलि देखिते चलिला ।।४७
वसिया आछेन विद्यानिधि महाशय ।
सम्मुखे हइल गदाधरेर विजय ।।४८
गदाधरपण्डित करिला नमस्कार ।
वसाइला आसने ताँरे करि पुरस्कार ।।४९
जिज्ञासिल विद्यानिधि मुकुन्देर स्थाने ।
किबा नाम इहाँर थाकेन कोन् ग्रामे ?५०
विष्णुभक्ति-तेजोमय देखि कलेबर ।
आकृति प्रकृति—दुइ परम सुन्दर ।।५१
मुकुन्द बोलेन श्रीगदाधर नाम ।
शिशु हैते संसारे बिरक्त भाग्यवान् ।।५२
'माधव मिश्रेर पुत्र' कहि व्यबहारे ।
सकल-वैष्णव प्रीत वासेन इहाँरे ।।५३
भक्तिपथे रत, सङ्ग भक्तेर सहिते ।
शुनिया तोमार नाम आइला देखिते ।।५४
शुनि विद्यानिधि बड़ सन्तोष हइला ।
परम-गौरवे सम्भाषिते ये लागिला ।।५५
वसिया आछेन पुण्डरीक महाशय ।
राजपुत्र हेन करियाछेन विजय ।।५६
दिव्य खट्टा हिङ्गुल-पित्तले शोभा करे ।
दिव्य चन्द्रातप तिन ताहार उपरे ।।५७
तहिँ दिव्यशय्या शोभे अति सूक्ष्म-वास ।
पट्ट-नेत बालिस शोभये चारि पाश ।।५८
बड़-झारि छोट-झारि गुटि पाँच सात ।
दिव्य पित्तलेर बाटा पाका पान ता'त ।।५९
दिव्य आलबाटि दुइ शोभे दुइ पाशे ।
पान खाञा अधर देखि देखि हासे ।।६०
दिव्य मयूरेर पाखा लइ दुइ जने ।
वातास करिते आछे देहे सर्वक्षणे ।।६१
चन्दनेर ऊर्द्ध्व-पुण्ड्र तिलक कपाले ।
गन्धेर सहित तथि फागु-बिन्दु मिले ।।६२
कि कहिब से बा केशभारेर संस्कार ।
दिव्य गन्ध आमलकी बइ नाहि आर ।।६३
भक्तिर प्रभावे देह मदन-समान ।
ये ना चिने तार हय राजपुत्र-ज्ञान ।।६४
सम्मुखे बिचित्र एक दोला साहेवान ।
बिषयीर प्राय येन ब्यभार संस्थान ।।६५
देखिया बिषयी-रूप देव गदाधर ।
सन्देह बिस्मय किछु जन्मिल अन्तर ।।६६
आजन्म विरक्त गदाधर-महाशय ।
विद्यानिधि प्रति किछु जन्मिल संशय ।।६७
भाल त वैष्णव—सब बिषयीर बेश ।
दिव्य भोग दिव्य बेश दिव्य गन्ध-केश ।।६८
शुनिया त भाल भक्ति आछिल इहाने ।
आछिल से भक्ति सेह गेल दरशने ।।६९
बुझि गदाधर-चित्त श्रीमुकुन्दानन्द ।
विद्यानिधि प्रकाशिते करिला आरम्भ ।।७०
कृष्णेर प्रसादे गदाधर-अगोचर ।
किछु नाहि अवेद्य कृष्ण से मायाधर ।।७१
मुकुन्द सुस्वर बड़-कृष्णेर गायन ।
पढ़िलेन श्लोक—भक्तिमहिमावर्णन ।।७२
राक्षसी पूतना—शिशु खाइते निर्द्दया ।
ईश्वर बधिते गेला कालकूट लैया ।।७३

ताहारेओ मातृ-पद दिलेन ईश्वरे ।
ना भजे अबोध जीव हेन दयालुरे ॥७४

तथाहि (भा० ३।२।२३)—
"अहो बकी यं स्तनकालकूटं
जिघांसयाऽपाययदप्यसाध्वी ।
लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं
कं वा दयालुं शरणं व्रजेम ॥"७५

टीका ।

अहो इति—आश्चर्य्यम् ! हन्तुमिच्छयापि स्तनयोः सम्भृतं, कालकूटं महादुर्विषं—यम् अपाययत; वकी —वकस्वसा असाध्वी-दुष्टा, अपि, धात्र्याः-स्तन्यामृत-दायिन्याः मातुरिव उचितां गतिं तस्मादेव लेभे भक्तवेषमात्रेण यः सद्गतिं ददावित्यर्थः; तत्र च धात्रीगतिदाने स्तन्यदानं कपटेनापि मातृभावा-नुकरणञ्च कारणम्; तस्मात् श्रीकृष्णात् अन्यं कं वा दयालुं शरणं व्रजेम ? वा-शब्दः कटाक्षे । अतोऽन्यः कोऽपि दयालुर्नास्ति, अतस्तमेव वयं दीनाः शरणं गच्छाम इत्यर्थः ।

अनुवाद ।

अहो ! वकासुर भगिनीने जिनको हत्या करने के अभिप्रायसे कालकूट लिप्त स्तन्यदान किया, किन्तु उससे भी जिसने जिनके समीप से धात्रीजनोचित गति प्राप्त की, कहो ! अपर कौन दयालु हैं ? जिनकी शरण ग्रहण करूँ ।

दशमस्कन्धे च (भा० १०।६।३५)—
"पूतना लोकबालघ्नी राक्षसी रुधिराशना ।
जिघांसयापि हरये स्तनं दत्त्वाप सद्गतिम्॥"७६

टीका ।

पूतनेति । जात्या राक्षसी, तत्रापि लोकबालघ्नी तत्रापि रुधिराशना, पूतना, जिघांसया—हन्तुमिच्छया अपि, हरये—सर्वचित्तानां स्वभाव एव स्वस्मिन्नाकर्षकाय, स्तनं दत्त्वा, सदगतिं—सतां गतिं श्रीकृष्णमेव, आप ।

अनुवाद ।

शिशु हत्या ही जिसका कार्य्य है, जाति में राक्षसी है, रुधिराशना राक्षसी पूतना हत्या की इच्छा से स्तन प्रदानकर भी उत्तम गति को प्राप्त किये थे ।

शुनिलेन मात्र भक्तियोगेर स्तवन ।
विद्यानिधि लागिलेन करिते क्रन्दन ॥७७
नयने अपूर्व बहे आनन्दाश्रुधार ।
येन गङ्गादेवीर हइल अवतार ॥७८
अश्रु,कम्प,स्वेद,मूर्च्छा, पुलक हुङ्कार ।
एककाले हइल सभार अवतार ॥७९
बोल बोल बलि महा लागिला गर्जिते ।
स्थिर हइते ना पारिला पड़िला भूमिते ॥८०
लाथि आछाड़ेर घाये यतेक सम्भार ।
भाङ्गिल सकल,रक्षा नाहि कारो आर ॥८१
कोथा गेल दिव्य बाटा,दिव्य गुया पान ।
कोथा गेल झारि,याथे करे जल पान ॥८२
कोथाय पड़िल गिया शय्या पदाघाते ।
प्रेमावेशे दिव्य वस्त्र चिरे दुइ हाथे ॥८३
कोथा गेल से बा दिव्य केशेर संस्कार ।
धूलाय लोटाये करे क्रन्दन अपार ॥८४
कृष्ण रे ठाकुर रे कृष्ण रे ! मोर प्राण ।
मोरे से करिला काष्ठ-पाषाण समान ॥८५
अनुताप करिया कान्दये उच्चस्वरे ।
"मुञि से वञ्चित हैलुँ हेन अवतारे ॥"८६
महा गड़ागड़ि दिया ये पड़े आछाड़ ।
सभे मने करे किबा चूर्ण हैल हाड़ ॥८७
हेन से हइल कम्प—भावेर बिकारे ।
दश-जन धरिलेओ धरिते ना पारे ॥८८

वस्त्र,शय्या,झारि,बाटा यतेक सम्भार।
पदाघाते सब गेल, किछु नापि आर ॥८९
सेवक-सकल ये करिल सम्वरण।
सकले रहिल सेइ व्यवहार-धन ॥९०
एइमते कथोक्षण प्रेम प्रकाशिया।
आनन्दे मूर्च्छित हइ थाकिला पड़िया ॥९१
तिल मात्र धातु नाहि सकल शरीरे।
डुबिलेन विद्यानिधि आनन्दसागरे ॥९२
देखि गदाधर महा हइला विस्मित।
तखन से मने बड़ हइला चिन्तित ॥९३
हेन जन देखि मुञि अवज्ञा करिलुँ।
कोन् बा अशुभक्षणे देखिते आइलुँ ॥९४
मुकुन्देरे परम-सन्तोषे करि कोले।
सिञ्चिलेन अङ्ग ताँर प्रेमानन्दजले ॥९५
मुकुन्द!आमार तुमि कैले बन्धु-कार्य्य।
देखाइला भक्ति, विद्यानिधि भट्टाचार्य्य ॥९६
एमत वैष्णव किबा आछे त्रिभुवने ?
त्रैलोक्य पवित्र हय ए भक्त दर्शने ॥९७
आजि आमि एड़ाइलुँ परम-सङ्कटे।
सेहो ये कारणे तुमि आछिला निकटे ॥९८
विषयीर परिच्छद देखिया उहान।
विषयी-वैष्णव मोर चित्ते हैल ज्ञान ॥९९
बुझिया आमार चित्त तुमि महाशय।
प्रकाशिला पुण्डरीक-भक्तिर उदय ॥१००
यतखानि आमि करियाछि अपराध।
ततखानि कराइबा चित्तेर प्रसाद ॥१०१
ए पथे प्रविष्ट यत सब भक्तगण।
उपदेष्टा अवश्य करेन एकजन ॥१०२
ए पथेते आमि उपदेष्टा नाहि करि।
इहान स्थानेइ मन्त्र-उपदेश धरि ॥१०३
इहाने अवज्ञा येन करियाछि मने।
शिष्य हैले सब दोष क्षमिबे आपने ॥१०४
एत भावि गदाधर मुकुन्देर स्थाने।
दीक्षा करिबार कथा कहिलेन ताने ॥१०५
शुनिया मुकुन्द बड़ सन्तोष हइला।
'भाल भाल' बलि बड़ श्लाघिते लगिला ॥१०६
प्रहर दुइते विद्यानिधि महाधीर।
वाह्य पाइया बसिलेन हइया सुस्थिर ॥१०७
गदाधरपण्डितेर नयनेर जल।
अन्त नाहि—धारा अङ्ग तितिल सकल ॥१०८
देखिया सन्तोष विद्यानिधि-महाशये।
कोले करि थुइलेन आपन हृदये ॥१०९
परम-सम्भ्रमे रहिलेन गदाधर।
मुकुन्द कहेन ताँर मनेर उत्तर ॥११०
"व्यबहार ठाकुराल देखिया तोमार।
पूर्वे किछु चित्त दूषियाछिल उँहार ॥१११
इबे तार प्रायश्चित्त चिन्तिला आपने।
मन्त्रदीक्षा करिबेन तोमारइ स्थाने ॥११२
विष्णुभक्ति विरक्ति शैशवे वृद्धरीत।
माधवमिश्रेर कुलनन्दन-उचित ॥११३
शिशु हैते ईश्वरेर सङ्गे अनुचर।
गुरु-शिष्य योग्य—पुण्डरीक गदाधर ॥११४
आपने बुझिया चित्ते एक शुभदिने।
निज इष्ट-मन्त्र-दीक्षा कराह इहाने ॥" ११५
शुनिया हासेन पुण्डरीक विद्यानिधि।
आमारे त महारत्न मिलाइला विधि ॥११६
कराइब—इहाते सन्देह किछु नाइ।
बहु जन्म भाग्ये से एमत शिष्य पाइ ॥११७
एइ ये आइसे शुक्लपक्षेर द्वादशी।
सर्व-शुभ लग्न इथि मिलिबेक आसि ॥११८

इहाते सङ्कल्पसिद्धि हइब तोमार ।
शुनि गदाधर हर्ष हैला नमस्कार ॥११९
से-दिन मुकुन्द-सङ्गे करिया बिदाय ।
आइलेन गदाधर—यथा गौरराय ॥१२०
विद्यानिधि-आगमन शुनि विश्वम्भर ।
अनन्त-हरिष प्रभु हइला अन्तर ॥१२१
विद्यानिधि-महाशय अलक्षित बेशे ।
रात्रि करि आइलेन महाप्रभु पाशे ॥१२२
सर्व-सङ्ग छाड़ि एकेश्वर मात्र हञा ।
प्रभु देखि मात्र पड़िलेन मूर्च्छा पाञा ॥१२३
दण्डवत प्रभुरे ना पारिला करिते ।
आनन्दे मूर्च्छित हैया पड़िला भूमिते ॥१२४
क्षणेके चैतन्य पाइ करिया हुङ्कार ।
कान्दे पुन आपनाके करिया धिक्कार ॥१२५
"कृष्ण रे! पराण मोर, कृष्ण! मोर बाप ।
मुञि-अपराधीके कतेक देह ताप ॥१२६
सर्वजगतेर बाप! उद्धार करिला ।
सबे मात्र मोरे तुमि एकेला बञ्चिला ॥"१२७
विद्यानिधि हेन कोन वैष्णव ना चिने ।
सभेइ कान्देन मात्र ताँहार क्रन्दने ॥१२८
निज प्रियतम जानि श्रीभक्तवत्सल ।
सम्भ्रमे उठिया कोले कैला विश्वम्भर ॥१२९
"पुण्डरीक बाप!" बलि कान्देन ईश्वर ।
"बाप देखिलाम आजि नयनगोचर ॥"१३०
तखन से जानिलेन सर्वभक्तगण ।
विद्यानिधि गोसाञिर हैल आगमन ॥१३१
तखन ये हैल सर्व-वैष्णव क्रन्दन ।
परम अद्भुत—ताहा ना याय वर्णन ॥१३२
विद्यानिधि बक्षे करि श्रीगौरसुन्दर ।
प्रेमजले सिञ्चिलेन ताँर कलेबर ॥१३३
प्रियतम प्रभुर जानिया भक्तगणे ।
प्रीति भय आमता सभार हइल मने ॥१३
बक्ष हैते विद्यानिधि ना छाड़े ईश्वरे ।
लीन हैला येन प्रभु ताँहार शरीरे ॥१३
प्रहरेक गौरचन्द्र आछेन निश्चले ।
तबे प्रभु बाह्य पाइ डाकि हरि बोले ॥१३
"आजि कृष्ण बाञ्छासिद्धि कैलेन आमार ।
आजि पाइलाङ सर्व-मनोरथ पार ॥"१
सकल वैष्णव सङ्गे करिला मिलन ।
पुण्डरीक लइ सभे करिला कीर्त्तन ॥१३
इहाँर पदबी पुण्डरीक-प्रेमनिधि ।
प्रेमभक्ति बिलाइते गढ़िलेन बिधि ॥१३
एइमत ताँर गुण वर्णिया वर्णिया ।
उच्चस्वरे हरि बोले श्रीभुज तुलिया ॥१४
प्रभु बोले "आजि शुभप्रभात आमार ।
आजि महामङ्गल बासिये आपनार ॥१४
निद्रा हैते आजि उठिलाङ शुभक्षणे ।
देखिलाम प्रेमनिधि साक्षाते नयने ॥"१
श्रीप्रेमनिधिर आसि हैल बाह्यज्ञान ।
एखने से प्रभु चिनि करिला प्रणाम ॥१४
अद्वैतदेवेरे आगे करि नमस्कार ।
यथायोग्य प्रेमभक्ति कैलेन सभार ॥१
परानन्द हइलेन सर्व-भक्तगण ।
हेन प्रेमनिधि पुण्डरीक दरशन ॥१
क्षणेके ये हैल प्रेमभक्ति-आविर्भाब ।
ताहा वर्णिबार पात्र ब्यास महाभाग ॥१
गदाधर आज्ञा मागिलेन प्रभु स्थाने ।
पुण्डरीक-मुखे मन्त्र ग्रहण कारणे ॥१
ना जानिया उहान अगम्य व्यवहार ।
चित्ते अवज्ञान हइयाछिल आमार ॥१

एतेके उद्दान आमि हइवाङ शिष्य ।
शिष्य-अपराध गुरु क्षमिब अवश्य ॥१४९
गदाधर वाक्ये प्रभु सन्तोष हइला ।
"शीघ्र कर शीघ्र कर" बलिते लागिला ॥१५०
तबे गदाधरदेव प्रेमनिधि-स्थाने ।
मन्त्रदीक्षा करिलेन सन्तोषे आपने ॥१५१
कि कहिब आर पुण्डरीकेर महिमा ।
गदाधरशिष्य ताँर—भक्तिर एइ सीमा ॥१५२
कहिलाङ किछु विद्यानिधिर आख्यान ।
एइ मोर काम्य—येन देखा पाइ तान ॥१५३
योग्य गुरु-शिष्य—पुण्डरीक गदाधर ।
दुइ—कृष्णचैतन्येर प्रिय कलेबर ॥१५४
पुण्डरीक गदाधर—दुइर मिलन ।
ये पढ़े ये शुने तारे मिले प्रेमधन ॥१५५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१५६

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे पुण्डरीक-गदाधरमिलनं नाम सप्तमोऽध्यायः ।



अष्टम अध्याय

जयजय श्री गौरसुन्दर सर्वप्राण ।
जय नित्यानन्द-अद्वैतेर प्रेम-धाम ॥१
जय जय श्रीजगदानन्द श्रीगर्भ-जीवन ।
जय पुण्डरीक विद्यानिधि प्रेम धन ॥२
जय जगदीश-गोपीनाथेर ईश्वर ।
जय हउ यत गौरचन्द्र-अनुचर ॥३
हेनमते नवद्वीपे श्रीगौराङ्ग राय ।
नित्यानन्द सङ्गे रङ्ग करये सदाय ॥४
अद्वैत लइया सर्व वैष्णव मण्डल ।
महा-नृत्य-गीत करे कृष्णकोलाहल ॥५
नित्यानन्द रहिलेन श्रीवासेर घरे ।
निरन्तर बाल्यभाब, आर नाहि स्फुरे ॥६
आपनि तुलिया हाथे भात नाहि खाय ।
पुत्र प्राय करि अन्न मालिनी योगाय ॥७
नित्यानन्द-अनुभाब जाने पतिव्रता ।
नित्यानन्द सेवा करे येन पुत्र माता ॥८
एकदिन प्रभु श्रीनिवासेर सहित ।
बसिया कहेन कथा कृष्णेर चरित ॥९
पण्डितेरे परीक्षये प्रभु विश्वम्भर ।
"एइ अवधूत केने राख निरन्तर ?१०
कोन् जाति कोन् कुल किछुइ ना जानि ।
परम-उदार तुमि—बलिलाम आमि ॥११
आपनार जाति-कुल यदि रक्षा चाओ ।
तबे झाट एइ अवधूतेरे घुचाओ ॥"१२
ईषत हासिया बोले श्रीवास-पण्डित ।
आमारे परीक्ष प्रभु ! ए नहे उचित ॥१३
'दिनेको ये तोमा' भजे से-इ मोर प्राण ।
नित्यानन्द तोर देह—आमाते प्रमाण ॥१४

मदिरा यबनी यदि नित्यानन्द धरे ।
जाति प्राण धन यदि मोर नाश करे ॥१५
तथापि आमार प्रभु नाहिक अन्यथा ।
सत्यसत्य तोमारे कहिलुँ एइ कथा ॥१६
एतेक शुनिला यबे श्रीवासेर मुखे ।
हुङ्कार करिया प्रभु उठे तार बुके ॥१७
प्रभु बोले कि बलिला पण्डित श्रीवास !
नित्यानन्द प्रति तोर एतेक बिश्वास ?१८
मोर गोप्य नित्यानन्द जानिले से तुमि ।
तोमारे सन्तुष्ट हय्या वर दिब आमि ॥१९
यदि लक्ष्मी भिक्षा करे नगरे नगरे ।
तथापि दारिद्र तोर नहिबेक घरे ॥२०
बिड़ाल-कुक्कुर-आदि तोमार बाड़ीर ।
सभार आमाते भक्ति हइबेक स्थिर ॥२१
नित्यानन्द समर्पिल आमि तोमा स्थाने ।
सर्वमते सम्वरण करिबा आपने ॥२२
श्रीवासेरे बर दिया प्रभु गेला घरे ।
नित्यानन्द भ्रमे सर्व-नदीया नगरे ॥२३
क्षणेके गङ्गार माझे एड़ेन साँतार ।
महास्रोते लआ याय—सन्तोष अपार ॥२४
बालक सभार सङ्गे क्षणे क्रीड़ा करे ।
क्षणे याय गङ्गादास-मुरारीर घरे ॥२५
प्रभुर बाड़ीते क्षणे यायेन धाइया ।
बड़ स्नेह करे आइ ताहाने देखिया ॥२६
बाल्यभावे नित्यानन्द आइर चरण ।
धरिबारे याय—आइ करे पलायन ॥२७
एकदिन आइ किछु देखिल स्वपने ।
निभृते कहिला पुत्र-विश्वम्भर स्थाने ॥२८
निशि अवशेषे मुञि देखिलुँ स्वपन ।
तुमि आर नित्यानन्द—एइ दुइ जन ॥२९

बत्सर-पाँचेर दुइ छाओयाल हइया ।
मारामारि करि दोँहे बेड़ाओ धाइया ॥३०
दुइजने साम्भाइला गोसाञिर घरे ।
रामकृष्ण लइ दोँहे हइला बाहिरे ॥३१
ताँर हाथे कृष्ण, तुमि लइ बलराम ।
चारिजने मारामारि मोर विद्यमान ॥३२
राम-कृष्ण ठाकुर बोलये क्रुद्ध हइया ।
"के तोरा ढाङ्गाति हुइ बाहियाओ गिया ॥३३
ए बाड़ी ए घर सब आमा दोँहाकार ।
ए सन्देश दधि दुग्ध यत उपहार ॥"३४
नित्यानन्द बोलये'से काल गेल बय्या ।
ये-काले खाइला दधि नवनी लुटिया ॥३५
घुचिल गोयाला—हैल विप्र अधिकार ।
आपना चिनिया छाड़'सब उपहार ॥३६
प्रीते यदि ना छाड़िबा खाइबा मारण ।
लुटिया खाइले बा राखिबे कोन् जन ?३७
रामकृष्ण बोले आजि मोर दोष नाञि ।
बान्धिया एड़िमु दुइ ढङ्ग एइ ठाञि ॥३८
दोहाइ कृष्णेर यदि करोँ आजि आन ।
नित्यानन्द प्रति तर्जगर्ज करे राम ॥३९
नित्यानन्द बोले तोर कृष्णेरे कि डर ।
गौरचन्द्र विश्वम्भर—आमार ईश्वर ॥४०
एइमत कलह करह चारिजन ।
काढ़ाकाढ़ि करि सब करह भोजन ॥४१
काहारो हाथेर केहो काढ़ि लइ याय ।
काहारो मुखेर केहो मुख दिया खाय ॥४२
जननी!बलिया नित्यानन्द डाके मोरे ।
अन्न देह माता ! मोरे क्षुधा बड़ करे ॥४३
एतेक बलिते मुञि चैतन्य पाइलुँ ।
किछु ता बुझिलुँ मुञि तोमारे कहिलुँ ॥४४

हासे प्रभु विश्वम्भर शुनिया स्वपन ।
जननीर प्रति बोले मधुर बचन ॥४५
"बड़इ सुस्वप्न तुमि देखियाछ माता ।
आर कारो ठाञि पाछे कह एइ कथा ॥४६
तोमार घरेर मूर्त्ति परतेख बड़ ।
मोर चित्त तोमार स्वप्नेते हैल दढ़ ॥४७
मुञि देखों बारेबार नैवेद्येर साजे ।
आधाआधि ना थाके ना कहि कारे लाजे ॥४८
तोमार बधूरे मोर सन्देह आछिल ।
आजि से आमार मने सन्देह घुचिल ॥"४९
हासे लक्ष्मी जगन्माता—स्वामीर बचने ।
अन्तरे थाकिया सब स्वप्न-कथा शुने ॥५०
विश्वम्भर बोले "माता! शुनह बचन ।
नित्यानन्दे आनि झाट कराह भोजन ॥"५१
पुत्रेर बचने शची हरिष हइला ।
भिक्षार सामग्री यत करिते लागिला ॥५२
नित्यानन्द स्थाने गेला प्रभु विश्वम्भर ।
निमन्त्रण गिया ताने करिला सत्वर ॥५३
आमार बाड़ीते आजि गोसाञिर भिक्षा ।
चञ्चलता ना करिबा कराइल शिक्षा ॥५४
कर्ण धरि नित्यानन्द विष्णुविष्णु बोले ।
चञ्चलता करे यत पागल-सकले ॥५५
ए बुझिये मोरे तुमि वासह चञ्चल ।
आपनार मत तुमि देखह सकल ॥५६
एत बलि दुइ जने हासिते हासिते ।
कृष्णकथा कहिकहि आइला बाड़ीते ॥५७
आसिया वसिला एकठाञि दुइजन ।
गदाधर आदि आर परमाप्तगण ॥५८
ईशान दिलेन जल—धुइते चरण ।
नित्यानन्द-सङ्गे गेला करिते भोजन ॥५९
बसिलेन दुइ प्रभु करिते भोजन ।
कौशल्यार घरे येन श्रीराम-लक्ष्मण ॥६०
आइ परिबेषण करे परम सन्तोषे ।
त्रिभाग हइल भिक्षा—दुइजन हासे ॥६१
आरबार आसि आइ दुइजन देखे ।
वत्सर-पाँचेर शिशु येन परतेखे ॥६२
कृष्ण-शुक्ल-वर्ण देखे दुइ मनोहर ।
दुइजन चतुर्भुज—दुइ दिगम्बर ॥६३
शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, श्रीहल, मुषल ।
श्रीवत्स, कौस्तुभ देखे मकरकुण्डल ॥६४
आपनार बधू देखे पुत्रेर हृदये ।
सकृत देखिया आर देखिते ना पारे ॥६५
पड़िला मूर्च्छिता हैया पृथिवीर तले ।
तितिल बसन सब नयनेर जले ॥६६
अन्नमय सब घर हइल तखने ।
अपूर्व देखिया शची वाह्य नाहि जाने ॥६७
आथे व्यथे महाप्रभु आचमन करि ।
गाये हाथ दिया जननीरे तोले धरि ॥६८
"उठउठ माता! तुमि स्थिर कर चित ।
केने बा पड़िला पृथिवीते आचम्वित ?" ६९
वाह्य पाइ आइ आथेव्यथे केश बान्धे ।
ना बोलये किछु शची गृहमध्ये कान्दे ॥७०
महादीर्घश्वास छाड़े, कम्प सर्वगा'य ।
प्रेमे परिपूर्ण हैला, किछु नाहि भाय ॥७१
ईशान करिल सब गृह उपस्कार ।
यत छिल अबशेष—सकल ताँहार ॥७२
सेविलेन सर्वकाल आइरे ईशान ।
चतुर्द्दश लोक मध्ये महाभाग्यवान् ॥७३
एइमत अनेक कौतुके प्रतिदिने ।
मर्म भृत्य बइ इहा केहो नाहि जाने ॥७४

मध्यखण्ड-कथा बड़ अमृतेर खण्ड।
ये कथा शुनिले खण्डे अन्तर पाषण्ड ॥७५
एइमत गौरचन्द्र नवद्वीप माझे।
कीर्त्तन करेन सब भकतसमाजे ॥७६
यतयत स्थाने सब पार्षद जन्मिला।
अल्पेअल्पे सभे नवद्वीपेते आइला ॥७७
सभे जानिलेन—ईश्वरेर अवतार।
आनन्द-स्वरूप चित्त हइल सभार ॥७८
प्रभुर प्रकाप देखि वैष्णव सकल।
अभय-परमानन्दे हइला विह्वल ॥७९
प्रभुओ सभारे देखे प्राणेर समान।
सभेइ प्रभुर पारिषदेर प्रमाण ॥८०
वेदे यारे निरवधि करे अन्वेषण।
से प्रभु सभारे करे प्रेम-आलिङ्गन ॥८१
निरन्तर सभार मन्दिरे प्रभु याय।
चतुर्भुज-षड़्भुजादि विग्रह देखाय ॥८२
क्षणे याय गङ्गादास-मुरारिर घरे।
आचार्य्यरत्नेर क्षणे चलेन मन्दिरे ॥८३
निरबधि नित्यानन्द थाकेन संहति।
प्रभु-नित्यानन्देर बिच्छेद नाहि कति ॥८४
नित्यानन्दस्वरूपेर बाल्य निरन्तर।
सर्व-भावे आबेशित प्रभु विश्वम्भर ॥८५
मत्स्य, कूर्म, बराह, वामन, नरसिंह।
भाग्य-अनुरूप देखे चरणेर भृङ्ग ॥८६
कोनदिन गोपीभाबे करेन रोदन।
कारे बलि रात्रि दिन नाहिक स्मरण ॥८७
कोनदिन उद्धव-अक्रूर-भाब हय।
कोनदिन राम-भावे मदिरा याचय ॥८८
कोनदिन चतुर्मुख-भाबे विश्वम्भर।
ब्रह्म-स्तव पढ़ि पड़े पृथिवी उपर ॥८९

कोनदिन प्रह्लाद भाबेते स्तुति करे।
एइमत प्रभु भक्तिसागरे बिहरे ॥९०
देखिया आनन्दे भासे शची जगन्माता।
'बाहिराय पुत्र पाछे' एइ मन-कथा ॥९१
आइ बोले "बाप! गिया कर गङ्गास्नान।"
प्रभु बोले "बोल माता! जय कृष्णराम॥" ९२
यत किछु करे शची पुत्रेरे उत्तर।
कृष्ण बइ किछु नाहि बोले विश्वम्भर ॥९३
अचिन्त्य आवेश सेइ—बुझन ना याय।
यखन ये हये—से-इ अपूर्व देखाय ॥९४
एकदिन आसि एक शिवेर गायन।
डमरु बाजाय गाय शिवेर कथन ॥९५
आइल करिते भिक्षा प्रभुर मन्दिरे।
गाइया शिवेर गीत बेढ़ि नृत्य करे ॥९६
शङ्करेर गुण शुनि प्रभु विश्वम्भर।
हइला शङ्करमूर्त्ति दिव्य जटाधर ॥९७
एक लाफे उठे तार कान्धेर उपर।
हुङ्कार करिया बोले मुञि से शङ्कर ॥९८
केहो देखे जटा, शिङ्गा डमरु बाजाय।
'बोल बोल' महाप्रभु बोलये सदाय ॥९९
से गायने शिवगीत सतेक गाइल।
परिपूर्ण फल तार एकत्र पाइल ॥१
सेइ से गाइल शिव निर-अपराधे।
गौरचन्द्र आरोहण कैला यार कान्धे ॥१
वाह्य पाइ नाम्बिलेन प्रभु विश्वम्भर।
आपने दिलेन भिक्षा झुलिर भितर ॥१
कृतार्थ हइया सेइ पुरुष चलिल।
हरिध्वनि सर्व-गणे मङ्गल उठिल ॥१
जय पाइ उठे कृष्णभक्तिर प्रकाश।
ईश्वर सहित सर्व-दासेर विलास ॥१

प्रभु बोले "भाइसब ! शुन मन्त्र सार ।
रात्रि केने मिथ्या याय आमा'सबाकार ॥१०५

आजि हैते निर्बन्धित करह सकल ।
निशाय करिब सभे कीर्त्तन मङ्गल ॥१०६

सङ्कीर्त्तन करिया सकल-गण-सने ।
भक्तिस्वरूपिणी गङ्गा करिब मङने १०७

जगत उद्धार हउ शुनि कृष्णनाम ।
परार्थे से तोमाय सभार धनप्राण ॥"१०८

सर्व-वैष्णवेर हैल शुनिया उल्लास ।
आरम्भिला महाप्रभु कीर्त्तन विलास ॥१०९

श्रीवासमन्दिरे प्रति निशाय कीर्त्तन ।
कोन दिन हय चन्द्रशेखर भवन ॥११०

नित्यानन्द गदाधर अद्वैत श्रीनिवास ।
विद्यानिधि मुरारि हिरण्य हरिदास ॥१११

गङ्गादास वनमाली विजय नन्दन ।
जगदानन्द बुद्धिमन्तखान नारायण ॥११२

काशीश्वर वासुदेव राम गरुड़ाइ ।
गोविन्द गोविन्दानन्द सकल तथाइ ॥११३

गोपीनाथ जगदीश श्रीमान श्रीधर ।
सदाशिव वक्रेश्वर श्रीगर्भ शुक्लाम्बर ॥११४

ब्रह्मानन्द पुरुषोत्तम सञ्जयादि यत ।
अनन्त चैतन्य भृत्य—नाम जानि कत ॥११५

सभेइ प्रभुर नृत्ये थाकेन संहति ।
पारिषद बइ आर केहो नाहि तथि ॥११६

प्रभुर हुङ्कार आर निशा हरि ध्वनि ।
ब्रह्माण्ड भेदये येन हेनमत शुनि ॥११७

शुनिया पाषण्डि-सब मरये बलिगया ।
निशाय ए गुला खाय मदिरा आनिया ॥११८

ए-गुला सकल मधुमती सिद्धि जाने ।
रात्रि करि मन्त्र पढ़ि पञ्च कन्या आने ॥११९

चारि-प्रहर निशि निद्रा याइते ना पाइ ।
बोल बोल हुहुङ्कार शुनिये सदाइ ॥१२०

वलिगया मरये यत पाषण्डीर गण ।
आनन्दे कीर्त्तन करे श्रीशचीनन्दन ॥१२१

शुनिले कीर्त्तन मात्र प्रभुर शरीरे ।
वाह्य नाहि थाके, पड़े पृथिवी-उपरे ॥१२२

हेन से आछाड़ प्रभु पड़ेन निर्भर ।
पृथ्वी हय खण्डखण्ड सभे पाय डर ॥१२३

से कोमल शरीरे आछाड़ बड़ देखि ।
गोविन्द स्मरये आइ बुजि दुइ आँखि ॥१२४

प्रभु से आछाड़ खाय वैष्णव आवेशे ।
तथापिह आइ दुःख पाय स्नेहवशे ॥१२५

आछाड़ेर आइ ना जानेन प्रतिकार ।
एइ बोल बोले काकु करिया अपार ॥१२६

"कृपा कर' कृष्ण! मोरे देह एइ बर ।
ये समय आछाड़ खायेन विश्वम्भर ॥१२७

मुञि येन ताहा नाहि जानों से समय ।
हेन कृपा कर' मोरे कृष्ण महाशय !१२८

यद्यपिह परानन्दे ताँर नाहि दुःख ।
तथापिह ना जानिले मोर बड़ सुख ॥"१२९

आइर चित्तेर इच्छा जानि गौरचन्द्र ।
सेइ मत ताँहारे दिलेन परानन्द ॥१३०

यतक्षण प्रभु करे हरिसङ्कीर्त्तन ।
आइर ना थाके वाह्यमात्र ततक्षण ॥१३१

प्रभुर आनन्दनृत्ये नाहि अवसर ।
रात्रि दिने वेढ़ि सब गाय अनुचर ॥१३२

कोनदिन प्रभुर मन्दिरे भक्तगण ।
सभेइ गायेन, नाचे श्रीशचीनन्दन ॥१३३

कखन ईश्वरभावे प्रभु-परकाश ।
कखन रोदन करे बोले "मुञि दास ॥"१३४

चित्त दिया शुन भाइ! प्रभुर विकार ।
अनन्त-ब्रह्माण्डे सम नाहिक याहार ॥१३५
येमते करेन नृत्य प्रभु गौरचन्द्र ।
तेमते से महानन्दे गाय भक्तवृन्द ॥१३६
श्रीहरिवासरे हरिकीर्त्तन विधान ।
नृत्य आरम्भिला प्रभु जगतेर प्राण ॥१३७
पुण्यवन्त-श्रीवास-अङ्गने शुभारम्भ ।
उठिल कीर्त्तनध्वनि गोपाल गोविन्द ॥१३८
ऊषःकाल हैते नृत्य करे विश्वम्भर ।
यूथ यूथ हैल यत गायन सुन्दर ॥१३९
श्रीवासपण्डित लैया एक सम्प्रदाय ।
मुकुन्द लइया आर जन कथो गाय ॥१४०
लइया गोविन्द दत्त आर कथो जन ।
गौरचन्द्र-नृत्ये सभे करेन कीर्त्तन ॥१४१
धरिया बुलेन नित्यानन्द महाबली ।
अलक्षिते अद्वैत लयेन पदधूली ॥१४२
गदाधर-आदि यत सजल नयने ।
आनन्दे विह्वल हइला प्रभुर कीर्त्तने ॥१४३
शुनह चल्लिश-पद प्रभुर कीर्त्तन ।
ये विकारे नाचे प्रभु जगत-जीवन ॥१४४

भाटियारि राग ।

चौदिके मङ्गलध्वनि प्रभु नाचे रङ्गे ।
विह्वल हइला सब पारिषद सङ्गे ॥
हरि राम राम राम ॥ध्रु॥
यखन कान्दये प्रभु–प्रहरेक कान्दे ।
लोटाय भूमिते केश ताहा नाहि बान्धे ॥१४५
से क्रन्दन देखि हेन कोन् काष्ठ आछे ।
ना पड़े विह्वल हैया से प्रभुर पाछे ॥१४६
यखने हासये प्रभु महा-अट्टहास ।
सेइ हय प्रहरेक आनन्द-विलास ॥१४७

दास्यभावे प्रभु निज महिमा नाजाने ।
सेव्य सेवक प्रभु हइला आपने ॥१४
जिनिलुँ जिनिलुँ बोले उठे घनेघने ।
हासिया बिकल प्रभु हय सेइक्षणे ॥१४
क्षणे क्षणे आपने गायेन उच्च ध्वनि ।
ब्रह्माण्ड भेदये येन हेनमत शुनि ॥१५
क्षणेक्षणे अङ्ग हय ब्रह्माण्डेर भर ।
धरिते समर्थ केहो नहे अनुचर ॥१५
क्षणे हय तुला हैते अत्यन्त पातल ।
हरिषे करिया कान्धे बुलये सकल ॥१५
प्रभुरे करिया कान्धे भागवतगण ।
पूर्णानन्द हञा करे अङ्गने भ्रमण ॥१५
यखने बा हय प्रभु आनन्दे मूर्च्छित ।
कर्णमूले हरि बोले सभे अति भीत ॥१५
क्षणेक्षणे सर्व्व अङ्ग हय महाकम्प ।
महा शीते बाजे येन बालकेर दन्त ॥१५
क्षणेक्षणे महास्वेद हय कलेवरे ।
मूर्त्तिमती गङ्गा येन आइला शरीरे ॥१५
कखनो बा हय अङ्ग ज्वलन्त अनल ।
दिते मात्र मलयज शुखाय सकल ॥१५
क्षणेक्षणे अद्भुत बहे महाश्वास ।
सम्मुख छाड़िया सभे हय एकपाश ॥१५
क्षणे याय सभार चरण धरिबारे ।
पलाय वैष्णवगण चारिदिगे डरे ॥१५
क्षणे नित्यानन्द-अङ्गे पृष्ठदिया वैसे ।
चरण तुलिया सभाकारे चाहि हासे ॥१६
बुझिया इङ्गित सब भागवतगण ।
लुटये चरणधूलि–अपूर्व रतन ॥१६
आचार्य्यगोसाञि बोले "आरे आरे चोरा!
भाङ्गिल सकल तोर भारिभूरि मोरा ॥"१६

महानन्दे विश्वम्भर गड़ागड़ि याय ।
चारिदिगे भक्तगण कृष्ण-गुण गाय ॥१६३
यखन उद्दण्ड नाचे प्रभु विश्वम्भर ।
पृथिवी कम्पित हय, सभे पाय डर ॥१६४
कखनो वा मधुर नाचये विश्वम्भर ।
येन देखि नन्देर नन्दन नटबर ॥१६५
कखनो बा करे कोटि सिंहेर हुङ्कार ।
कर्ण रक्षा-हेतु सबे अनुग्रह ताँर ॥१६६
पृथिवीर आलग हइया क्षणे याय ।
केहो देखे केहो देखिबारे नहि पाय ॥१६७
भाबावेशे पाकल-लोचने यारे चाय ।
महात्रास पाय्या सेइ हासिया पलाय ॥१६८
कृष्णाबेशे चञ्चल हइया विश्वम्भर ।
नाचये विह्वल हआ, नाहि परापर ॥१६९
भाबाबेशे एकबार धरे यार पाय ।
आरबार पुन तार उठये माथाय ॥१७०
क्षणे यार गला धरि करये क्रन्दन ।
क्षणेके ताहार कान्धे करे आरोहण ॥१७१
क्षणे हय बाल्यभावे परम चञ्चल ।
मुखे वाद्य बा'य येन छाओयाल सकल ॥१७२
चरण नाचाय क्षणे खल खल हासे ।
जानुगति चले क्षणे बालक आबेशे ॥१७३
क्षणेक्षणे हय भाव—त्रिभङ्ग-सुन्दर ।
प्रहरेक सेइमत आछे निरन्तर ॥१७४
क्षणे ध्यान करे कर मुरलीर छन्द ।
साक्षात् देखिये येन वृन्दावनचन्द्र ॥१७५
वाह्य पाइ दास्यभावे करये क्रन्दन ।
दन्ते तृण करि चाहे चरण सेवन ॥१७६
चक्राकृति हइ क्षणे प्रहरेक फिरे ।
आपन चरण गिया लागे निज शिरे ॥१७७
यखन ये भाब हय, से-इसे अद्भुत ।
निज नामानन्दे नाचे जगन्नाथसुत ॥१७८
घनघन हिक्का हय सर्व अङ्ग नड़े ।
ना पारे हइते स्थिर पृथिवीते पड़े ॥१७९
गौरवर्ण देह क्षणे नाना वर्ण देखि ।
क्षणेक्षणे दुइगुण हय दुइ-आँखि ॥१८०
अलौकिक हैया प्रभु वैष्णव आबेशे ।
ये बलिते योग्य नहे प्रभु ताहा भाषे ॥१८१
पूर्वे ये वैष्णव देखि प्रभु करि बोले ।
ए बेटा आमार दास धरे तार चुले ॥१८२
पुर्वे ये वैष्णव देखि धरये चरणे ।
तार बक्षे उठि करे चरण-अर्पणे ॥१८३
प्रभुर आनन्द देखि भागवतगण ।
अन्योऽन्ये गलाधरि करये क्रन्दन ॥१८४
सभार अङ्गते शोभे श्रीचन्दन-माला ।
आनन्दे गायइ कृष्णरसे हइ भोला ॥१८५
मृदङ्ग मन्दिरा बाजे शङ्ख करताल ।
सङ्कीर्त्तन-सङ्गे सब हइल मिशाल ॥१८६
ब्रह्माण्डे उठिल ध्वनि पूरिया आकाशे ।
चौदिगेर अमङ्गल याय सब नाशे ॥१८७
ए कोन् अद्भुत!—यार सेवकेर नृत्य ।
सर्व बिघ्न नाश हये जगत पवित्र ॥१८८
से प्रभु आपने नाचे आपनार नामे ।
इहार कि फल किबा बलिब पुराणे ॥१८९
चतुर्द्दिगे श्रीहरि-मङ्गल सङ्कीर्त्तन ।
माझे नाचे जगन्नाथमिश्रेर नन्दन ॥१९०
यार नामानन्दे शिव वसन ना जाने ।
यार रसे नाचे शिव से नाचे आपने ॥१९१
यार नामे बाल्मीकि हइल तपोधन ।
यार नामे अजामिल पाइल मोचन ॥१९२

यार नाम-श्रवणे संसार बन्ध घुचे।
हेन प्रभु अवतरि कलियुगे नाचे ॥१९३
यार नाम लइ शुक नारद बेड़ाय।
सहस्रवदन प्रभु यार गुण गाय ॥१९४
सर्व्व-महा प्रायश्चित्त ये प्रभुर नाम।
से प्रभु नाचये देखे यत भाग्यवान् ॥१९५
हइल पापिष्ठ जन्म तखने ना हइल।
हेन महामहोत्सव देखिते ना पाइल ॥१९६
कलियुगे आशंसिल श्रीभागवते।
एइ अभिप्राय तार जानि ब्याससुते ॥१९७
निजानन्दे नाचे महाप्रभु विश्वम्भर।
चरणेर तालि शुनि अति मनोहर ॥१९८
भावावेशे माला नाहि रहये गलाय।
छिण्डिया पड़ये गिया भक्तेर गलाय ॥१९९
कति गेल गरुड़ेर आरोहण सुख।
कति गेल शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-रूप ॥२००
कोथाय रहिल सुख अनन्त शयन।
दास्य-भावे धूलि लुटि करये रोदन ॥२०१
कोथाय रहिल वैकुण्ठेर सुखभार।
दास्य-सुखे सब सुख पासरिल आर ॥२०२
कति गेल रमार वदन-दृष्टि-सुख।
बिरही हइया कान्दे तुलि बाहु युग ॥२०३
शङ्कर-नारद-आदि यार दास्य पाय्या।
सर्व्वैश्वर्य्य तिरस्करि भ्रमे दास हैया ॥२०४
सेइ प्रभु आपनेइ दन्ते तृण धरि।
दास्ययोग मागे सब सुख परिहरि ॥२०५
हेन दास्ययोग छाड़ि ये बा आर चाहे।
अमृत छाड़िया येन बिष लागि धाये ॥२०६
से बा केने भागवत पढ़े बा पढ़ाय।
भक्तिर प्रभाव नाहि याहार जिह्वाय ॥२०७
शास्त्रेर ना जाने मर्म अध्यापना करे।
गर्द्दभेर प्राय येन शास्त्र बहि मरे ॥२०८
एइ मत शास्त्र बहे, अर्थ नाहि जाने।
अधम-सभाय अर्थ अधम बाखाने ॥२०९
वेदे भागवते कहे 'दास्य बड़ धन'।
दास्य लागि रमा-अज-भबेर यतन ॥२१०
चैतन्येर वाक्ये यार नाहिक प्रमाण।
चैतन्य नाहिक तार, कि बलिब आन ॥२११
दास्यभावे नाचे प्रभु श्रीगौरसुन्दर।
चौदिगे कीर्त्तनध्वनि अति मनोहर ॥२१२
शुनिते शुनिते क्षणे हय मूरछित।
तृण-करे अद्वैत तखने उपनीत ॥२१३
आपाद मस्तक तृणे निछिया लइया।
निज शिरे थुइ नाचे भ्रूकुटी करिया ॥२१४
अद्वैतेर भक्ति देखि सभार तरास।
नित्यानन्द गदाधर—दुइजनेर हास ॥२१५
नाचे प्रभु गौरचन्द्र जगतजीवन।
आवेशेर अन्त नाहि हय घनेघन ॥२१६
याहा नाहि देखि शुनि श्रीभागवते।
हेन सब बिकार प्रकाशे शचीसुते ॥२१७
क्षणेक्षणे सर्व्व-अङ्ग हय स्तम्भाकृति।
तिलार्द्धेको नोङाइते नाहिक शकति ॥२१८
सेइ अङ्ग क्षणेक्षणे हेनमत हय।
अस्थिमात्र नाहि येन नवनीतमय ॥२१९
कखनो देखिये अङ्ग गुण दुइ तिन।
कखनो स्वभाव हैते अतिशय क्षीण ॥२२०
कखनो बा मत्त येन ढुलिढुलि याय।
हासिया दोलाय अङ्ग, आनन्द सदाय ॥२२१
सकल-वैष्णव प्रभु देखि एके एके।
भावावेशे पूर्व्व-नाम धरिधरि डाके ॥२२२

हलधर, शिव, शुक, नारद, प्रह्लाद ।
रमा, अज, उद्धव' बलिया करे नाद ॥२२३
एइमत सभा देखि नानामत बोले ।
ये बा सेइ बस्तु ताहा प्रकाशये छले ॥२२४
अपरूप कृष्णावेश अपरूप नृत्य ।
आनन्दे नयन भरि देखे सब भृत्य ॥२२५
गौर ए परम दयाल !
धन्य क्षिति धन्य अवतार धन्य कलि ॥ध्रु॥
पूर्वे येइ साम्भाइल बाड़ीर भितरे ।
से-इ मात्र देखे अन्ये प्रवेशिते नारे ॥२२६
प्रभुर आज्ञाय दृढ़ लागियाछे द्वार ।
प्रवेशिते नारे लोक सब नदीयाय ॥२२७
धाइया आइसे लोक कीर्त्तन शुनिया ।
प्रवेशिते नारे लोक द्वारे रहे गिया ॥२२८
सहस्रसहस्र लोक कलरब करे ।
"कीर्त्तन देखिब-झाट घुचाह दुयारे ॥"२२९
यतेक वैष्णव सब कीर्त्तनेर रसे ।
ना जाने आपन देह, अन्य बोल किसे ॥२३०
यतेक पाषण्डि-सब ना पाइया द्वार ।
बाहिरे थाकिया मन्द बोलये अपार ॥२३१
केहो बोले ए गुला सकल नाकि खाय ।
चिनिले पाइबे लाज द्वार ना घुचाय ॥२३२
केहो बोले "सत्यसत्य एइ से उत्तर ।
नहिले केमते डाके ए अष्ट प्रहर ॥"२३३
केहो बोले "अरे भाइ! मदिरा आनिया ।
सभे रात्रि करि खाय लोक लुकाइय ॥"२३४
केहो बोले भाल छिल निमाञि पण्डित ।
तार केने नारायण कैल हेन चित ॥२३५
केहो बोले हेन बुझि पूर्वेर संस्कार ।
केहो बोले सङ्गदोष हइल ताहार ॥२३६
नियामक बाप नाहि, ताते आछे बाइ ।
एतदिने सङ्गदोषे ठेकिल निमाइ ॥२३७
केहो बोले "पासरिल सब अध्ययन ।
मासेक ना चाहिले हय 'अवैयाकरण' ॥२३८
सबे शचीर अइ पुत्र आर नाहि योग्य ।
सेइ यदि क्षिप्त हइल बड़इ अभाग्य ॥"२३९
केहो बोले अरे भाइ! सब हेतु पाइल ।
द्वार दिया कीर्त्तनेर सन्दर्भ जानिल ॥२४०
रात्रि करि मन्त्र पढ़ि पञ्च कन्या आने ।
नानाविध द्रव्य आइसे ता सभार सने ॥२४१
भक्ष्य, भोज्य, गन्ध, माला विविध वसन ।
खाइया ता'सभा'सङ्गे विविध रमण ॥२४२
भिन्न लोक देखिले-ना हय तार सङ्ग ।
एतेके दुयार दिया करे नाना रङ्ग ॥२४३
केहो बोले कालि हउ, याइब देयाने ।
काँकालि बान्धिया सब निब जनेजने ॥२४४
ये ना छिल राज्यदेशे आनिया कीर्त्तन ।
दुर्भिक्ष हइल सब गेल चिरन्तर ॥२४५
देवे हरिलेक बृष्टि—जानिल निश्चय ।
धान्य मरि गेल, कड़ि उत्पन्न ना हय ॥२४६
खलियाति श्रीवासेर कालि करो कार्य्य ।
कालि बा करों देख अद्वैत आचार्य्य ॥२४७
कोथा हैते आसि नित्यानन्द-अवधूत ।
श्रीवासेर घरे थाकि करे एतरूप ॥२४८
एहमते नानारूपे देखायेन भय ।
आनन्दे वैष्णव-सब किछु ना शुनय ॥२४९
केहो बले "ब्राह्मणेर नहे नृत्य धर्म ।
पढ़ियाओ ए-गुला करये हेन कर्म ॥"२५०
केहो बोले ए-गुला देखिते ना जुयाय ।
ए-गुलार सम्भासे सकल कीर्त्ति याय २५१

ओ नृत्य कीर्त्तन यदि भाल लोक देखे ।
सेहो एइमत हय,–देख परतेखे ॥२५२
परम-सुबुद्धि छिल निमाञिपण्डित ।
ए-गुलार सङ्गे तार हेन हैल चित ॥२५३
केहो बोले आत्मा विना साक्षात करिया ।
डाकिले कि कार्य्य हय ना जानिब इहा ॥२५४
आपन शरीर-माझे आछे निरञ्जन ।
घरे हाराइया धन चाय गिया वन ॥२५५
केहो बोले कोन कार्य्य परेर चर्च्चिया ।
चल सभे घरे याइ,कि कार्य्य देखिया ॥२५६
केहो बोले ना देखिल निज कर्मदोषे ।
से सब सुकृति ता सभारे वलि किसे ॥२५७
सकल पाषण्डी तारा एकचाप हैया ।
एइ सेइ गण हेन बुझि याय ध्याय्या ॥२५८
ओ कीर्त्तन ना देखिले कि हइब मन्द ।
जन शत बेढ़ि येन करे महाद्वन्द्व ॥२५९
कोन् जप कोन् तप कोन् तत्त्वज्ञान ।
याहा ना देखिले, करि निज कर्मध्यान ॥२६०
चाल कला मुदग दधि एकत्र करिया ।
जाति नाश करि खाय एकत्र हइया ॥२६१
परिहासे आसि सभे देखिबार तरे ।
देखि त पागलगुला कोन कर्म करे ॥२६२
एतेक बलिया सभे चलिलेन घरे ।
एक याय, आर आसि बाजये दुयारे ॥२६३
पाषण्डी पाषण्डी येइँ दुइ देखा हय ।
गलागलि करि सब हासिया पड़य ॥२६४
पुन धरि लइ याय–येबा नाहि देखे ।
केहो बा निबर्त्त हय कारो अनुरोधे ॥२६५
केहो बोले भाइ! एइ देखिल शुनिल ।
निमाइपण्डित निश्चय पागल हइल ॥२६६
दुन्दुरि उठिया आछे श्रीवासेर वाड़ी ।
दुर्गोत्सबे साड़ि येन देइ हुड़ाहुड़ि ॥२६७
'हइ हइ हाय हाय' एइ मात्र शुनि ।
इहा सभा हैते हैल अपयश-वाणी ॥२६८
महामहाभट्टाचार्य्य सहस्र यथाय ।
हेन ढाङ्गाइत-गुला वैसे नदीयाय ॥२६९
श्रीवास-वामन एइ नदीया हइते ।
घर भाङ्गि कालि लैया फेलाइब स्रोते ॥२७०
ओ वामन घुचाइले ग्रामेर कुशल ।
अन्यथा यबने ग्राम करिबे कवल ॥२७१
एइमत पाषण्डी करये कोलाहल ।
तथापिह महाभाग्यवन्त से सकल ॥२७२
प्रभु-सङ्गे एकत्र जन्मिल एक-ग्रामे ।
देखिलेक शुनिलेक ए सब विधाने ॥२७३
चैतन्येर गण-सब मत्त कृष्णरसे ।
बहिर्मुखवाक्य किछु कर्णे ना प्रवेशे ॥२७४
"जय कृष्ण मुरारि मुकुन्द वनमाली ।"
अहर्निश गाय सभे हइ कुतूहली ॥२७५
अहर्निश भक्तसङ्गे नाचे विश्वम्भर ।
श्रान्ति नाहि कारो सब सत्त्व कलेवर ॥२७६
वत्सरेक नाम मात्र, कत युग गेल ।
चैतन्य आनन्दे केह किछु ना जानिल ॥२७७
येन महा रास क्रीड़ा कत युग गेल ।
तिलार्द्धेक हेन सब गोपिका मानिल ॥२७८
एइमत अचिन्त्य कृष्णेर परकाश ।
इहा जाने भाग्यवन्त चैतन्येर दास ॥२७९
एइमत नाचे महाप्रभु विश्वम्भर ।
निशि अबशेष मात्र से एक प्रहर ॥२८०
शालग्राम शिला सब निज कोले करि ।
उठिला चैतन्यचन्द्र खट्टार उपरि ॥२८१

मड़मड़ करे खट्टा विश्वम्भर भरे ।
थ्रथेव्यथे नित्यानन्द खट्टा स्पर्श करे ॥२८२
अनन्तेर अधिष्ठान हइल खट्टाय ।
ना भाङ्गिल खट्टा दोले श्रीगौराङ्ग-राय ॥२८३
चैतन्य आज्ञाय स्थिर हइल कीर्त्तन ।
कहे आपनार तत्त्व-करिया गर्जन ॥२८४
कलियुगे आमि कृष्ण, आमि नारायण ।
आमि सेइ भगवान् देवकीनन्दन ॥२८५
अनन्त-ब्रह्माण्ड कोटि-माझे आमि नाथ ।
यत गाओ सेइ आमि तोरा मोर दास ॥२८६
तोमा'सभा'लागिया आमार अवतार ।
तोरा येइ देह' सेइ आमार आहार ॥२८७
आमारे से दिया आछ सर्व उपहार ।
श्रीवास बोलेन प्रभु! सकल तोमार ॥२८८
प्रभु बोले"मुञि इहा खाइलुँ सकल ।
अद्वैत बोलये प्रभु! बड़इ मङ्गल ॥२८९
करे करे प्रभुरे योगाय सर्व-दासे ।
आनन्दे भोजन करे प्रभु निजावेशे ॥२९०
दधि खाय दुग्ध खाय नवनीत खाय ।
आर कि आछये आन बोलये सदाय ॥२९१
विविध सन्देश खाय शर्करा-म्रक्षित ।
शुद्ध नारिकेल जल शस्येर सहित ॥२९२
कदलक, चिपीटक, भर्जित तण्डुल ।
आरबार आन बोले खाइया बहुल ॥२९३
व्यबहारे जन शत दुइर आहार ।
निमिषे खाइया बोले कि आछये आर ॥२९४
प्रभु बोले आन आन एथा किछु नाञि ।
भक्त सब त्रास पाइ स्मङरे गोसाञि ॥२९५
करजोड़ करि सभे कय भय वाणी ।
तोमार महिमा प्रभु!आमरा कि जानि ॥२९६
अनन्त ब्रह्माण्ड आछे याहार उदरे ।
तारे कि करिब एइ क्षुद्र-उपहारे ॥२९७
प्रभु बोले क्षुद्र नहे भक्त उपहार ।
झाट आन झाट आन कि आछरे आर ॥२९८
कर्पूर ताम्बूल आछे शुनह गोसाञि ।
प्रभु बोले ताइ देह किछु चिन्ता नाञि ॥२९९
आनन्द हइल, भय गेल सभाकार ।
योगाय ताम्बूल-सबे यार अधिकार ॥३००
हरिषे ताम्बूल योगायेन सर्व-दासे ।
हस्त पाति लय प्रभु सभा प्रति हासे ॥३०१
अन्तर गम्भीर हइ क्षणेक्षणे हासे ।
सकल भक्तेर चित्ते लागये तरासे ॥३०२
दुइ चक्षु पाकाइया करये हुङ्कार ।
"नाढ़ा नाढ़ा नाढ़ा"प्रभु बोले बारेबार ॥३०३
महाशास्तिकर्त्ता हेन भक्त-सब देखे ।
हेन शक्ति नाहि कारो हइब सम्मुखे ॥३०४
नित्यानन्द महाप्रभु शिरे धरे छाति ।
जोड़करे अद्वैत सम्मुखे करे स्तुति ॥३०५
महा-भये जोड़हाथे सर्वभक्तगण ।
हेट माथा करि चिन्ते चैतन्य चरण ॥३०६
ए ऐश्वर्य्य शुनिते याहार हय सुख ।
अवश्य देखिब सेइ चैतन्य-श्रीमुख ॥३०७
येखाने ये आछे से आछये सेइखाने ।
तदूर्द्ध्व हइते केहो नारे आज्ञा विने ॥३०८
"बर माग" बोले अद्वैतेर मुख चा'इ ।
तोर लागि अवतार मोर एइ ठाँइ ॥३०९
एइमत सब भक्त देखिया देखिया ।
माग माग बोले प्रभु हासिया हासिया ॥३१०
एइ मत प्रभु निज ऐश्वर्य्य प्रकाशे ।
देखि भक्तगण सुख-सिन्धु-माझे भासे ॥३११

अचिन्त्य चैतन्य-रङ्ग बुझन ना याय।
क्षणेके ऐश्वर्य्य करि पुन मूर्च्छा पाय ।।३१२
वाह्य प्रकाशिया प्रभु करये क्रन्दन।
दास्य-भाब प्रकाश करये अनुक्षण ।।३१३
गला धरि कान्दे सर्व-वैष्णव देखिया।
सभारे सम्भाषे भाइ बान्धब बलिया ।।३१४
लखिते ना पारे प्रभु हेन माया करे।
भृत्य विनु ताँर तत्त्व के बुझिते पारे ।।३१५
प्रभुर चरित्र देखि हासे भक्तगण।
सभेइ बोलेन "अवतीर्ण नारायण।।"३१६
कथोक्षण थाकि प्रभु खट्टार उपर।
आनन्दे मूर्च्छित हैला श्रीगौरसुन्दर ।।३१७
धातु मात्र नाहि, पड़िलेन पृथिवीते।
देखि सब पारिषद कान्दे चारिभिते ।।३१८

सर्वभक्तगण युक्ति करिते लागिला।
आमा सभा छाड़िया बा ठाकुर चलिल।
यदि प्रभु एमत निष्ठुर भाव करे।
आमराह एइक्षणे छाड़िब शरीरे ।।
एतेक चिन्तिते सर्वज्ञेर चूड़ामणि।
वाह्य प्रकाशिया करे महा-हरिध्वनि ।।
सर्व-गणे उठिल आनन्द कोलाहल।
ना जानि के कोन् दिगे हय बा विह्वल ।।
एमत आनन्द हय नवद्वीपपुरे।
प्रेमरसे वैकुण्ठेर नाथ से बिहरे ।।
ए सकल पुण्यकथा ये करे श्रवण।
भक्तसङ्ग गौरचन्द्र रहे तार मन ।।
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ।।

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे श्रीचैतन्यैश्वर्य्य-प्रकाशादि वर्णनं नाम अष्टमोऽध्यायः।



नवम अध्याय

गौरनिधि कपट सन्न्यासीबेशधारी।
अखिल-भुवन-अधिकारी ।।ध्रु।।
जय जगन्नाथ-शची-नन्दन चैतन्य।
जय गौरसुन्दरेर सङ्कीर्त्तन धन्य ।।१
जय नित्यानन्द गदाधरेर जीवन।
जयजय अद्वैत श्रीवास प्राण-धन ।।२
जय श्रीजगदानन्द हरिदास प्राण।
जय बक्रेश्वर पुण्डरीक प्रेमधाम ।।३
जय वासुदेव श्रीगर्भेर प्राणनाथ।
जीव प्रति कर प्रभु! शुभ दृष्टिपात ।।४

भक्तगोष्ठी-सहिते गौराङ्ग जयजय।
शुनिले चैतन्य कथा भक्ति लभ्य हय ।।५
मध्यखण्ड कथा भाइ! शुन एकचित्ते।
महाप्रभु गौरचन्द्र विहरे येमते ।।६
एबे शुन चैतन्येर महा-परकाश।
यहिँ सर्व-वैष्णवेर सिद्ध अभिलाष ।।७
सातप्रहरिया-भाव लोके ख्याति यार।
यहिँ प्रभु हइलेन सर्व अवतार ।।८
अद्भुत भोजन यहिँ अद्भुत प्रकाश।
जनेजने विष्णुभक्ति दानेर विलास ।।९

राजराजेश्वर अभिषेक सेइदिने ।
करिलेन प्रभुरे सकल-भक्तगणे ॥१०
एकदिन महाप्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
आइलेन श्रीनिवास पण्डितेर घर ॥११
सङ्गे नित्यानन्दचन्द्र परम विह्वल ।
अल्पे अल्पे भक्तगण मिलिला सकल ॥१२
आवेशित-चित्त महाप्रभु गौरराय ।
परम-ऐश्वर्य्य करि चतुर्द्दिगे चाय ॥१३
प्रभुर इङ्गित बुझिलेन भक्तगण ।
उच्चस्वरे चतुर्द्दिगे करेन कीर्त्तन ॥१४
अन्यअन्य दिन प्रभु नाचे दास्यभावे ।
क्षणेके ऐश्वर्य्य प्रकाशिया पुन भाँगे ॥१५
सकल-भक्तेर भाग्ये ए दिन नाचिते ।
उठिया बसिला प्रभु विष्णुर खट्टाते ॥१६
आर सब दिने प्रभु भाव प्रकाशिया ।
वैसेन विष्णुर खाटे येन ना जानिया ॥१७
सातप्रहरिया-भावे—छाड़ि सर्व माया ।
वसिला प्रहर-सात प्रभु व्यक्त हैया ॥१८
जोड़हस्ते सम्मुखे सकल भक्तगण ।
रहिलेन परम-आनन्द युक्त मन ॥१९
कि अद्भुत सन्तोषेर हइल प्रकाश ।
सभेइ वासेन येन वैकुण्ठ विलास ॥२०
प्रभुओ वसिला येन वैकुण्ठेर नाथ ।
तिलार्द्धेको माया मात्र नाहिक कोथा त ॥२१
आज्ञा हैल "बोल मोर अभिषेक गीत ।"
शुनि गाय भक्तगण हइ हरषित ॥२२
अभिषेक शुनि प्रभु मस्तक ढुलाय ।
सभारे करेन कृपादृष्टि अमायाय ॥२३
प्रभुर इङ्गित बुझिलेन भक्तगण ।
अभिषेक करिते सभार हइल मन ॥२४

सर्व-भक्तगण वहि आने गङ्गाजल ।
आगे छाँकिलेन दिव्य वसने सकल ॥२५
शेषे श्रीकर्पूर-चतुःसम आदि दिया ।
सज्ज करिलेन सभे प्रेमयुक्त हैया ॥२६
महा जयजयध्वनि शुनि चारिभिते ।
अभिषेकमन्त्र सभे लागिला पढ़िते ॥२७
सर्वाद्ये श्रीनित्यानन्द जयजय बलि ।
प्रभुर शिरे जल देन हइ कुतूहली ॥२८
अद्वैत-श्रीवास-आदि यतेक प्रधान ।
पढ़िया पुरुषसूक्त करायेन स्नान ॥२९
गौराङ्गेर भक्त सब महा-मन्त्रवित ।
मन्त्र पढ़ि जल ढाले हइ हरषित ॥३०
मुकुन्दादि गाय अभिषेक-सुमङ्गल ।
केहो कान्दे केहो नाचे आनन्दे विह्वल ॥३१
पतिव्रतागण करे जयजयकार ।
आनन्दस्वरूप चित्त हइल सभार ॥३२
बसिया आछेन वैकुण्ठेर अधीश्वर ।
भृत्यगण जल ढाले शिरेर उपर ॥३३
नाम मात्र—अष्टोत्तर-शत घट जल ।
सहस्र घटेओ अन्त ना पाइ सकल ॥३४
देवता सकल धरे नरेर आकृति ।
गुप्ते अभिषेक करे ये हय सुकृति ॥३५
यार पादपद्मे जलबिन्दु दिले मात्र ।
सेहो ध्याने, साक्षाते के दिते आछे पात्र ॥३६
तथापिह तारे नाहि यमदण्ड-भय ।
हेन प्रभु साक्षाते सभार जल लय ॥३७
श्रीवासेर दास-दासीगणे आने जल ।
प्रभु स्नान करे भक्त सेवार एइ फल ॥३८
जल आने एक भाग्यवती दुःखी नाम ।
आपने ठाकुर देखि बोले आन आन ॥३९

आपने ठाकुर ताँर भक्तियोग देखि ।
दु:खी नाम घुचाइया थुइलेन सुखी ॥४०
नाना वेद मन्त्र पढ़ि सर्व-भक्तगण ।
स्नान कराइया अङ्ग करिल मार्जन ॥४१
परिधान कराइला नूतन बसन ।
श्रीअङ्गे लेपिला दिव्य सुगन्धि चन्दन ॥४२
विष्णुखट्टा पाड़िलेन उपस्कार करि ।
बसिलेन प्रभु निज-खट्टार उपरि ॥४३
छत्र धरिलेन शिरे नित्यानन्द-राय ।
कोन भाग्यवन्त रहि चामर ढुलाय ॥४४
पूजार सामग्री लइ सर्व-भक्तगणे ।
पूजिते लागिल निज प्रभुर चरणे ॥४५
पाद्य,अर्घ्य, आचमनी, गन्ध, पुष्प,धूप ।
प्रदीप, नैवेद्य, बस्त्र—यथा अनुरूप ॥४६
यज्ञसूत्र, यथाशक्ति अङ्गे अलङ्कार ।
पूजिलेन करिया षोड़श-उपचार ॥४७
चन्दने करिया लिप्त तुलसीमञ्जरी ।
पुन:पुन देन सभे चरण उपरि ॥४८
दशाक्षर-गोपाल मन्त्रेर विधिमते ।
पूजा करि सभे स्तब लागिला पढ़िते ॥४९
अद्वैतादि आर यत पार्षद-प्रधान ।
पड़िला चरणे करि दण्ड-परणाम ॥५०
प्रेमनदी बहे सर्व-गणेर नयने ।
स्तुति करि सभे, प्रभु अमायाय शुने ॥५१
"जयजय जय सर्व-जगतेर नाथ ।
तप्त-जगतेर कर शुभ दृष्टिपात ॥५१
जय आदिहेतु जय जनक सभार ।
जयजय सङ्कीर्त्तनारम्भ अवतार ॥५२
जयजय वेद धर्म साधु जन त्राण ।
जयजय आब्रह्म-स्तम्बेर मूल प्राण ॥५३

जयजय पतित पावन गुणसिन्धु ।
जयजय परम-शरण दीनबन्धु ॥
जयजय क्षीरसिन्धु-मध्ये गुप्तवासी ।
जयजय भक्त-हेतु प्रकट विलासी ॥
जयजय अचिन्त्य अगम्य आदि-तत्त्व ।
जयजय परम कोमल शुद्ध-सत्त्व ॥
जयजय विप्रकुल पावन भूषण ।
जय वेद-धर्म-आदि सभार जीवन ॥
जयजय अजामिल-पतित पावन ।
जयजय पूतना-दुष्कृति-बिमोचन ॥
जयजय अदोष-दरशी रमाकान्त ।
एइमत स्तुति करे सकल महान्त ॥
परम प्रकट रूप प्रभुर प्रकाश ।
देखि परानन्दे डुबिलेन सर्व-दास ॥
सर्व-माय घुचाइया प्रभु गौरचन्द्र ।
श्रीचरण दिलेन-पूजये भक्तवृन्द ॥
दिव्य गन्ध आनि केहो लेपे श्रीचरणे ।
तुलसी-कमले मेलि पूजे कोन जने ॥
केहो रत्न-सुवर्ण-रजत अलङ्कार ।
पादपद्मे दिया दिया करे नमस्कार ॥
पट्ट-नेत,शुक्ल नील सुपीत वसन ।
पादपद्मे दिया नमस्करे सर्व जन ॥
नानाविध धातुपात्र देइ सर्वजने ।
ना जानि कतेक आसि पड़े श्रीचरणे ॥
ये चरण पूजिबारे सभार भावना ।
अज-रमा-शिव करे ये लागि कामना ॥
वैष्णवेर दास-दासीगणे ताहा पूजे ।
एइमत फल हये—वैष्णवे ये भजे ॥
दूर्वा, धान्य, तुलसी लइया सर्व-जने ।
पाइया अभय सभे देन श्रीचरणे ॥

नानाविध फल आनि देन पदतले ।
गन्ध, पुष्प, चन्दन चरणे केहो ढाले ॥६९
केहो पूजे करिया षोड़प-उपचारे ।
केहो बा षड़ङ्ग-मते येन स्फुरे यारे ॥७०
कस्तूरी कुङ्कुम, श्रीकर्पूर फागुधूली ।
सभे श्रीचरणे देइ हइ कुतूहली ॥७१
चम्पक,मल्लिका, कुन्द, कदम्ब,मालती ।
नाना-पुष्पे शोभे श्रीचरण नख पाँति ॥७२
परम प्रकाश-वैकुण्ठेर चूड़ामणि ।
किछु देह खाइ प्रभु चाहेन आपनि ॥७३
हस्त पाते प्रभु सब देखे भक्तगण ।
ये येमत देइ-सब करेन भोजन ॥७४
केहो देइ कदलक केह दिव्य मुद्‌ग ।
केहो दधि क्षीर बा नवनी,केहो दुग्ध ॥७५
प्रभुर श्रीहस्ते सब देइ भक्तगण ।
अमायाय महाप्रभु करेन भोजन ॥७६
धाइल सकल गण नगरे नगरे ।
किनिया उत्तम द्रव्य आनेन सत्वरे ॥७७
केहो दिव्य नारिकेल उपस्कार करि ।
शर्करा-सहित देइ श्रीहस्त-उपरि ॥७८
नानाविध प्रकार सन्देश देइ आनि ।
श्रीहस्ते लइया प्रभु खायेन आपनि ॥७९
केहो देइ मेओया क्षिरा कर्कंठिका-फल ।
केहो देइ इक्षु, केहो देइ गङ्गाजल ॥८०
देखिया प्रभुर सभे आनन्द प्रकाश ।
दश-बार पाँच बार देइ कोन दास ॥८१
शतशत जने बा कतेक देइ जल ।
महायोगेश्वर पान करेन सकल ॥८२
सहस्र सहस्र भाण्ड-दधि क्षीर दुग्ध ।
सहस्र सहस्र कान्दि कला कत मुद्‌ग ॥८३
कतेक बा सन्देश, कतेक बा फलमूल ।
कतेक सहस्र बाटा कर्पूर ताम्बूल ॥८४
कि अपूर्व शक्ति प्रकाशिला गौरचन्द्र ।
केमते खायेन ? नाहि जाने भक्तवृन्द ॥८५
भक्तेर पदार्थ प्रभु खायेन सन्तोषे ।
खाइया सभार जन्म कर्म कहे शेषे ॥८६
ततक्षणे से भक्तेर हय स्मङरण ।
सन्तोषे आछाड़ खाय करये क्रन्दन ॥८७
श्रीवासेरे बोले अरे ! पड़े तोर मने ।
भागवत शुनिलि ये देवानन्द स्थाने ?८८
पदेपदे भागवत प्रेमरसमय ।
शुनिया द्रबिल अति तोमार हृदय ॥८९
उच्चस्वर करि तुमि लागिला कान्दिते ।
विह्वल हइया तुमि पड़िला भूमिते ॥९०
अबुध पढ़ूया भक्तियोग ना जानिया ।
बलये कान्दये केने ना बुझिल इहा ॥९१
वाह्य नाहि जान तुमि प्रेमेर बिकारे ।
पढ़ुया तोमारे निल बाहिर दुयारे ॥९२
देवानन्द इथे ना करिल निबारण ।
गुरु यथा अज्ञ-सेइमत शिष्यगण ॥९३
बाहिर दुयारे तोमा एड़िल टानिया ।
तबे तुमि आइला परम दुःख पाइया ॥९४
दुःख पाइ मने तुमि बिरले बसिया ।
आरबार भागवत चाहिते लागिला ॥९५
देखिया तोमार दुःख श्रीवैकुण्ठ हैते ।
आबिर्भाब हइलाङ तोमार देहेते ॥९६
तबे आमि एइ तोर हृदये बसिया ।
कान्दाइलुँ आपनार प्रेमयोग दिया ॥९७
आनन्द हइल देह शुनि भागवत ।
सब तिति स्थान हैल बरिषार मत ॥९८

अनुभव पाइया विह्वल श्रीनिवास ।
गड़ागड़ि याय कान्दे बहे घनश्वास ॥९९
एइमत अद्वैतादि यतेक वैष्णव ।
सभारे देखिया करायेन अनुभव ॥१००
आनन्दसागरे मग्न सर्व-भक्तगण ।
बसिया करेन प्रभु ताम्बूल भक्षण ॥१०१
कोन भक्त नाचे, केहो करे सङ्कीर्त्तन ।
केहो बोले "जय जय श्रीशचीनन्दन ॥"१०२
कदाचित् ये भक्त ना थाके सेइ-स्थाने ।
आज्ञा करि प्रभु ताने आनान आपने ॥१०३
किछु देइ खाइ बलि पातेन श्रीहस्त ।
येइ ये देयेन ताहा खायेन समस्त ॥१०४
खाइया बोलेन प्रभु तोर मने आछे ।
अमुक निशाय आमि बसि तोर काछे ॥१०५
विप्र रूपे तोर ज्वर करिलाम नाश ।
शुनिया विह्वल हइ पड़े सेइ दास ॥१०६
गङ्गादासे देखि बोले तोर मने जागे ।
राजभये पलाइस् यबे निशाभागे ॥१०७
सर्व-परिकर सने आसि खेयाघाटे ।
कोथाह नाहिक नौका पड़िला सङ्कटे ॥१०८
रात्रि शेष हैल तुमि नौका ना पाइया ।
कान्दिते लागिला अति दुःखित हइया ॥१०९
मोर आगे यबने स्पर्शिबे परिबार ।
गाङ्गे प्रवेशिते मन हइल तोमार ॥११०
तबे आमि नौका निया खेयारिर रूपे ।
गङ्गाय बाहिया याइ तोमार समीपे ॥१११
तबे नौका देखि तुमि सन्तोष हइला ।
अतिशय प्रीत करि कहिते लागिला ॥११२
अरे भाइ! आमारे राखह एइ बार ।
जाति प्राण धन देह सकलि तोमार ॥११३
रक्षा कर परिकर सङ्गे कर पार ।
एक-तङ्का एक जोड़ बस्त्र से तोमार ॥१
तबे तोमा सङ्गे परिकर करि पार ।
तबे निज वैकुण्ठे गेलाम आरबार ॥१
शुनि भासे गङ्गादास आनन्दसागरे ।
हेन लीला करे प्रभु गौराङ्गसुन्दरे ॥१
गङ्गाय हइते पार चिन्तिले आमारे ।
मने पड़े पार आमि करिलाम तोरे ॥१
शुनिया मूर्च्छित गङ्गादास गड़ि याय ।
एइमत कहे प्रभु अति अमायाय ॥१
बसिया आछेन वैकुण्ठेर अधीश्वर ।
चन्दन-मालाय परिपूर्ण कलेबर ॥१
कोन प्रियतम करे श्रीअङ्गे ब्यजन ।
श्रीकेश संस्कार करे अति प्रिय जन ॥१
ताम्बूल योगाय कोन अति प्रिय भृत्य ।
केहो गाय, केहो वाय सुखे करे नृत्य ॥१
एइमत सकल दिवस पूर्ण हैल ।
सन्ध्या आसि परम कौतुके प्रवेशिल ॥१
धूप दीप लइया सकल भक्तगण ।
अर्च्चना करिते लागिलेन श्रीचरण ॥१
शङ्ख, घण्टा करताल, मन्दिरा मृदङ्ग ।
बाजायेन बहुबिध उठिल आनन्द ॥१
अमायाय बसिया आछेन गौरचन्द्र ।
किछु नाहि बोले यत करे भक्तवृन्द ॥१
नानाविध पुष्प सभे पादपद्मे दिया ।
त्राहि प्रभु! बलि पड़े दण्डवत हैया ॥१
केहो काकु करे केहो करे जयध्वनि ।
चतुर्द्दिगे आनन्द कीर्त्तन मात्र शुनि ॥१
कि अद्भुत सुख हैल निशार प्रवेशे ।
ये आइसे से-इ येन वैकुण्ठे प्रवेशे ॥१

प्रभुर हइल महा-ऐश्वर्य्य-प्रकाश ।
जोड़हस्ते सम्मुखे रहिला सर्व दास ॥१२९
भक्त-अङ्गे अङ्ग दिया पादपद्म मेलि ।
लीलाय आछेन गौरसिंह कुतूहली ॥१३०
बरोन्मुख हइलेन श्रीगौरसुन्दर ।
जोड़हस्ते रहिलेन सर्व अनुचर ॥१३१
सातप्रहरिया भावे सर्वजनेजने ।
अमायाय प्रभु कृपा करेन आपने ॥१३२
आज्ञा हैल श्रीधरेर झाट गिया आन ।
आसिया देखुक मोर प्रकाश विधान ॥१३३
निरवधि भावे मने बड़ दुःख पाय्या ।
आसिया देखुक मोरे, झाट आन गिया ॥१३४
नगरेर अन्ते गिया थाकिह बसिया ।
ये मोरे डाकये तारे आनिह धरिया ॥१३५
धाइला वैष्णवगण प्रभुर बचने ।
आज्ञा लइ गेला तारा श्रीधर-भवने ॥१३६
सेइ श्रीधरेर किछु शुनह आख्यान ।
खोलार पसार करि राखे निज-प्राण ॥१३७
एकबार खोलागाछि किनिञा आनय ।
खानिखानि करि ताहा काटिया बेचय ॥१३८
ताहाते ये किछु हय दिवसे उपाय ।
तार अर्द्ध गङ्गार नैवेद्य लागि याय ॥१३९
अर्द्धेके सदाय हय निज प्राण रक्षा ।
एइमत हय विष्णु-भक्तेर परीक्षा ॥१४०
महासत्यवादी तिँहो येन युधिष्ठिर ।
यार येइ मूल्य बोले ना हय बाहिर ॥१४१
मध्येमध्ये ये बा जन ताँर तत्त्व जाने ।
ताँहार बचने मात्र द्रव्य-खानि किने ॥१४२
एइमते नवद्वीपे आछे महाशय ।
खोलाबेचा ज्ञान करि केहो ना चिनय ॥१४३
चारि प्रहर रात्रि निद्रा नाहि कृष्णनामे ।
सर्व-रात्रि हरि बोले दीघल आह्वाने ॥१४४
यतेक पाषण्डी बोले श्रीधरेर डाके ।
रात्रे निद्रा नाहि याइ दुइ कर्ण फाटे ॥१४५
महा चाषा बेटा भाते पेट नाहि भरे ।
क्षुधाय ब्यकुल हैया रात्रि जागि मरे ॥१४६
एइमत पाषण्डी मरये मन्द बलि ।
निज कार्य्य करये श्रीधर कुतूहली ॥१४७
'हरि' बलि डाकिते ये आछये श्रीधर ।
निशाभागे प्रेमयोगे डाके उच्चस्वर ॥१४८
आधपथ भक्तगण गेल मात्र धाय्या ।
श्रीधरेर डाक शुने—तथाइ थाकिया ॥१४९
डाक अनुसारे गेला भागवतगण ।
श्रीधरेरे धरिया लइला ततक्षण ॥१५०
"चलचल महाशय! प्रभु देखसिया ।
आमरा कृतार्थ हइ तोमा परशिया ॥"१५१
शुनिया प्रभुर नाम श्रीधर मूर्च्छित ।
आनन्दे विह्वल हइ पड़िला भूमित ॥१५२
आथेव्यथे भक्तगण लइया तुलिया ।
विश्वम्भर-अग्रे निल आलग करिया ॥१५३
श्रीधर देखिया प्रभु प्रसन्न हइला ।
आइस आइस करि बलिते लागिला ॥१५४
"बिस्तर करिया आछ मोर आराधन ।
बहु जन्म मोर प्रेमे त्यजिला जीवन ॥१५५
एइ जन्मे मोर सेवा करिला बिस्तर ।
तोमार खोलाय अन्न खाइलुं निरन्तर ॥१५६
तोमार हस्तेर द्रव्य खाइलुं बिस्तर ।
पासरिला आम'सङ्गे ये कैला उत्तर ॥"१५७
यखने करिला प्रभु विद्यार विलास ।
परम-उद्धत हेन यखने प्रकाश ॥१५८

सेइकाले गूढ़-रूपे श्रीधरेर सङ्गे ।
खोला-केना-बेचा-छले कैल बहु रङ्गे ॥१५९
प्रतिदिन श्रीधरेर पसारेते गिया ।
थोड़ कला मूला खोला आनेन किनिया ॥१६०
प्रतिदिन चारिदण्ड कलह करिया ।
तबे से किनये द्रव्य अर्द्ध-मूल्य दिया ॥१६१
सत्यवादी श्रीधर यथार्थ मूल्य बोले ।
अर्द्धमूल्य दिया प्रभु निज-हस्ते तोले ॥१६२
उठिया श्रीधरदास करे काढ़ाकाढ़ि ।
एइमत श्रीधर-ठाकुरेर हुड़ाहुड़ि ॥१६३
प्रभु बोले केने भाइ श्रीधर तपस्वि ।
अनेक तोमार अर्थ आछे हेन वासि ॥१६४
आमार हाथेर द्रव्य लहसि काढ़िया ।
एत-दिने केबा आमि ना जानिल इहा ॥१६५
परम ब्रह्मण्य श्रीधर—क्रुद्ध नाहि हय ।
वदन देखिया सब द्रव्य काड़ि लय ॥१६६
मदनमोहन रूप गौराङ्गसुन्दर ।
ललाटे तिलक ऊर्द्ध्व शोभे मनोहर ॥१६७
त्रिकच्छ-वसन शोभे कुटिल-कुन्तल ।
प्रकृते नयन दुइ परम चञ्चल ॥१६८
शुभ्र यज्ञसूत्र शोभे बेढ़िया शरीरे ।
सूक्ष्मरूपे अनन्त येहेन कलेबरे ॥१६९
अधरे ताम्बूले—हासे श्रीधरे चाहिया ।
आरबार खोला लये आपने तुलिया ॥१७०
श्रीधर बोलेन शुन ब्राह्मण ठाकुर ।
क्षमा कर मोरे मुञि तोमार कुक्कुर ॥१७१
प्रभु बोले जानि तुमि परम चतुर ।
खोला बेचा अर्थ आछे तोमार प्रचुर ॥१७२
आर कि पसार नाहि श्रीधर से बोले ।
अल्प कड़ि दिया तथा किन पात-खोले ॥१७३

प्रभु बोले योगानिआ आमि नाहि छाड़ि ।
थोड़ कला दिया मोरे तुमि लह कड़ि ॥
रूप देखि मुग्ध हैया श्रीधर से हासे ।
गालि पाड़े विश्वम्भर परम-सन्तोषे ॥
"प्रत्यह गङ्गारे द्रव्य देह'त किनिया ।
आमारे बा किछु दिले मूल्येते छाड़िया ॥
ये गङ्गा पूजह तुमि, आमि तार पिता ।
सत्यसत्य तोमारे कहिलुँ एइ कथा ॥"
कर्ण धरि श्रीधर से हरिहरि बोले ।
उद्धत देखिया ताँरे देइ पात खोले ॥
एइमत प्रतिदिन करेन कन्दल ।
श्रीधरेर ज्ञान—"विप्र परम चञ्चल ॥"
श्रीधर बोलेन मुञि हारिलुँ तोमारे ।
कड़ि-विनु किछु दिब क्षमा कर मोरे ॥
एकखण्ड खोला दिब एकखण्ड थोड़ ।
एकखण्ड कला मूल आरो दोष मोर ॥
प्रभु बोले भालभाल आर नाहि दाय ।
श्रीधरेर खोले प्रभु प्रत्यह अन्न खाय ॥
भक्तेर पदार्थ प्रभु हेनमते खाय ।
कोटि हैले अभक्तेर उलटि ना चा'य ॥
एइ लीला करिब चैतन्य हेन आछे ।
इहार कारणे से श्रीधर खोला बेचे ॥
एइ लीला लागिया श्रीधरे बेचे खोला ।
के बुझिते पारे विष्णु वैष्णवेर लीला ॥
विनि प्रभु जानाइले सेह नाहि जाने ।
सेइ कथा प्रभु कराइलेन स्मरणे ॥
प्रभु बोले श्रीधर ! देखह रूप मोर ।
अष्टसिद्धि दास आजि करि देङ तोर ॥
माथा तुलि चा'हे महापुरुष श्रीधर ।
तमाल-श्यामल देखे सेइ विश्वम्भर ॥

हाथे बंशी मोहन, दक्षिणे बलराम ।
महाज्योतिर्मय देखे विद्यमान ॥१८९
कमला ताम्बूल देइ हस्तेर उपरे ।
चतुर्मुख पञ्चमुख आगे स्तुति करे ॥१९०
महा फणा-छत्र देखे शिरेर उपरे ।
सनक, नारद, शुक, देखे जोड़ करे ॥१९१
प्रकृति स्वरूपा सब जोड़ हस्त करि ।
स्तुति करे चतुर्द्दिगे परमा सुन्दरी ॥१९२
देखिमात्र श्रीधर हइला मूर्च्छित ।
सेइमत ढलिया पड़िला पृथिवीत ॥१९३
"उठउठ श्रीधर!" प्रभुर आज्ञा हैल ।
प्रभु-वाक्ये श्रीधर से चैतन्य पाइल ॥१९४
प्रभु बोले श्रीधर आमारे कर स्तुति ।
श्रीधर बोलये नाथ! मुञि मूढ़मति ॥१९५
कोन् स्तुति जानोँ मुञि-छारेर शकति ।
प्रभु बोले तोर वाक्य—से-इ मोर स्तुति ॥१९६
प्रभुर आज्ञाय जगन्माता सरस्वती ।
प्रवेशिला जिह्वाय, श्रीधर करे स्तुति ॥१९७
जयजय जय महाप्रभु विश्वम्भर ।
जयजय जय नरद्वीप-पुरन्दर ॥१९८
जयजय अनन्त-ब्रह्माण्ड कोटि नाथ ।
जयजय शची पुण्यवती गर्भजात ॥१९९
जय महा-वेद गोप्य जय विप्रराज ।
युगेयुगे धर्म पाल' करि नाना साज ॥२००
गूढ़रूपे बेड़ाइला नगरे नगरे ।
विनि तुमि जानाइले के जानिते पारे ॥२०१
तुमि धर्म तुमि कर्म तुमि भक्ति ज्ञान ।
तुमि शास्त्र तुमि वेद तुमि सर्वध्यान ॥२०२
तुमि ऋद्धि तुमि सिद्धि तुमि योग भोग ।
तुमि श्रद्धा तुमि दया तुमि मोह लोभ ॥२०३
तुमि इन्द्र तुमि चन्द्र तुमि अग्नि जल ।
तुमि सूर्य्य तुमि वायु तुमि धन बल ॥२०४
तुमि भक्ति तुमि मुक्ति तुमि अज भव ।
तुमि बा हइबे केने तोमार ए सब ॥२०५
पूर्वे मोर स्थाने तुमि आपने बलिला ।
तोर गङ्गा देख मोर चरण सलिला ॥२०६
तभ् मोर पाप-चित्ते नहिल स्मरण ।
ना जानिलुँ तुया दुइ अमूल्य चरण ॥२०७
ये तुमि करिला धन्य गोकुल नगरे ।
एखने हइला नवद्वीप पुरन्दरे ॥२०८
राखिया बेड़ाओ भक्ति शरीर भितरे ।
हेनमते नवद्वीपे हइला बाहिरे ॥२०९
भक्तियोगे भीष्म तोमा जिनिल समरे ।
भक्तियोगे यशोदाय बान्धिल तोमारे ॥२१०
भक्तियोगे तोमारे बेचिल सत्यभामा ।
भक्तिबशे तुमि कान्धे कैले गोपरामा ॥२११
अनन्त-ब्रह्माण्ड-कोटि बहे यारे मने ।
से तुमि श्रीदाम गोप वहिला आपने ॥२१२
याहा हैते आपनार पराभब हये ।
सेइ बड़ गोप्य लोक काहारेओ ना कहे ॥२१३
भक्ति लागि सर्व-स्थाने परभब पाय्या ।
जिनिया बेड़ाओ तुमि भक्ति लुकाइया ॥२१४
से माया हइल चूर्ण—आर नाहि लागे ।
हेर-देख सकल भुवने भक्ति मागे ॥२१५
सेकाले हारिला जन-दुइ-चारि-स्थाने ।
ए काले बान्धिब तोमा' सर्वजनेजने ॥२१६
महा-शुद्धा सरस्वती श्रीधरेर शुनि ।
बिस्मय पाइला सर्व-वैष्णव आगणि ॥२१७
प्रभु बोले"श्रीधर बाछिया माग बर ।
अष्टसिद्धि दिब आजि तोमार गोचर ॥"२१८

श्रीधर बोलेन प्रभु! आरो भाण्डाइबा।
निश्चिन्त्ये थाकह तुमि आर ना पारिबा॥२१९
प्रभु बोले दरशन मोर व्यर्थ नहे।
अवश्य पाइबा बर–येइ चित्ते लये॥२२०
माग माग पुनःपुन बोले विश्वम्भर।
श्रीधर बोलये प्रभु! देह एइ बर॥२२१
ये ब्राह्मण काढ़िलेन मोर खोला पात।
से ब्राह्मण हय मोर जन्मेजन्मे नाथ॥२२२
ये ब्राह्मण मोर सङ्गे करिल कन्दल।
मोर प्रभु हउ ताँर चरण युगल॥२२३
बलिते बलिते प्रेम बाढ़ये श्रीधरे।
दुइ बाहु तुलि कान्दे महा-उच्चस्वरे॥२२४
श्रीधरेर भक्ति देखि वैष्णव सकल।
अन्योऽन्ये कान्दे सब हइया विह्वल॥२२५
हासि बोले विश्वम्भर शुनह श्रीधर!
एक महाराज्ये करोँ तोमारे ईश्वर॥२२६
श्रीधर बोलये आमि किछुइ ना चाइ।
हेन कर प्रभु! येन तोर नाम गाइ॥२२७
प्रभु बोले श्रीधर! आमार तुमि दास।
एतेके देखिले तुमि आमार प्रकाश॥२२८
एतेके तोमार मति-भेद ना हइल।
वेदगोप्य भक्तियोग तोरे आमि दिल॥२२९
जयजय ध्वनि हैल वैष्णवमण्डले।
श्रीधर पाइला बर शुनिल सकले॥२३०
धन नाहि जन नाहि नाहिक पाण्डित्य।
के चिनिब ए सकल चैतन्येर भृत्य॥२३१
कि करिब विद्या-धन-रूप-बेश कुले।
अहङ्कार बाढ़ि सब पड़ये निर्मूले॥२३२
कला मूला बेचिया श्रीधर पाइल याहा।
कोटि-कल्पे कोटीश्वरे ना देखिल ताहा॥२३३
अहङ्कार-द्रोह मात्र बिषयेते आछे।
अधःपात-फल तार ना जानये पाछे॥२३४
देखि मूर्ख दरिद्रेरे सुजने ये हासे।
कुम्भीपाके याय सेइ निज कर्म दोषे॥२३५
वैष्णव चिनिते पारे काहार शकति।
आछये सकल सिद्धि देखिते दुर्गति॥२३६
खोलाबेचा श्रीधर–ताहार एइ साक्षी।
भक्तिमात्र निल अष्ट-सिद्धिके उपेक्षि॥२३७
यत देख वैष्णवेर व्यबहार सुख।
निश्चय जानिह सेइ परानन्द सुख॥२३८
बिषयमदान्ध सब ए मर्म ना जाने।
विद्यामदे धनमदे वैष्णव ना चिने॥२३९
भागवत पढ़ियाओ कारो बुद्धि नाश।
नित्यानन्द निन्दा करे याइबेक नाश॥२४०
श्रीधर पाइला बर करिया स्तबन।
इहा येइ शुने तारे मिले प्रेमधन॥२४१
प्रेमभक्ति हय कृष्णचरणारविन्दे।
से-इ कृष्ण पाये येइ वैष्णवे ना निन्दे॥२४२
निन्दाये नाहिक कार्य्य सबे पाप-लाभ।
एतेके ना करे निन्दा महा-महाभाग॥२४३
अनिन्दुक हइ ये सकृत कृष्ण बोले।
सत्यसत्य कृष्ण तारे उद्धारिब हेले॥२४४
वैष्णवेर पा'ये मोर एइ मनस्काम।
श्रीचैतन्य-नित्यानन्द हउ मोर प्राण॥२४५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान।
वृन्दावनदास तच्छुपदयुगे गान॥२४६

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे श्रीधर-बर-लाभ वर्णनं नाम नवमोऽध्यायः।

दशम अध्याय

मोर मोर वधुँया । गौर गुणनिधिया ॥ध्रु॥
हेनमते प्रभु श्रीधरेरे बर दिया ।
नाढ़ा नाढ़ा नाढ़ा बोले मस्तक ढुलाञा ॥१
प्रभु बोले आचार्य्य! मागह निज कार्य्य ।
ये मागिलुँ ताहा पाइलुँ बोलये आचार्य्य ॥२
हुङ्कार करये जगन्नाथेर नन्दन ।
हेन शक्ति नाहि कारो—बलिते बचन ॥३
महापरकाश प्रभु विश्वम्भर-राय ।
गदाधर योगाय ताम्बूल प्रभु खाय ॥४
धरणीधरेन्द्र नित्यानन्द धरे छत्र ।
सम्मुखे अद्वैत-आदि सब महापात्र ॥५
मुरारिरे आज्ञा हैल "मोर रूप देख ।"
मुरारि देखये—रघुनाथ परतेख ॥६
दूर्वादलश्याम देखे सेइ विश्वम्भर ।
वीरासने बसि आछे महा धनुर्द्धर ॥७
जानकी लक्ष्मण देखे बामेते दक्षिणे ।
चौदिगे करये स्तुति बानरेन्द्रगणे ॥८
आपन प्रकृति वासे येहेन बानर ।
सकृत देखिया मूर्च्छा पाइल वैद्यवर ॥९
मूर्च्छित हइया गुप्त मुरारि पड़िला ।
चैतन्येर फाँदे गुप्त मुरारि रहिला ॥१०
डाकि बोले विश्वम्भर आरे रे बानरा ।
पासरिलि—तोरे पोड़ाइल सीताचोरा ॥११
तुइ तार पुरी पुड़ि कैलि वंशक्षय ।
सेइ प्रभु आमि तोरे दिल परिचय ॥१२
उठउठ मुरारि ! आमार तुमि प्राण ।
आमि सेइ राघवेन्द्र, तुमि हनूमान् ॥१३
सुमित्रानन्दन देख तोमार जीवन ।
यारे जीयाइले आनि से गन्धमादन ॥१४
जानकीर चरणे करह नमस्कार ।
यार दुःख देखि तुमि कान्दिला अपार ॥१५
चैतन्येर वाक्ये गुप्त चैतन्य पाइला ।
देखिया सकल प्रेमे कान्दिते लागिला ॥१६
शुष्क काष्ठ द्रबे शुनि गुप्तेर क्रन्दन ।
विशेषे द्रविला सर्व-भागवतगण ॥१७
पुनरपि मुरारिरे बोले विश्वम्भर ।
"ये तोमार अभिमत मागि लह वर ॥"१८
मुरारि बोलये प्रभु ! आर नाहि चाहोँ ।
हेन कर प्रभु ! येन तोर गुण गाङो ॥१९
ये-ते-ठाञि प्रभु! केने जन्म नहे मोर ।
तथाइ तथाइ येन स्मृति हय तोर ॥२०
जन्मजन्म तोमार ये सब प्रभु! दास ।
ताँ'सभार सङ्गे येन मोर वास ॥२१
तुमि प्रभु मुञि दास इहा नाहि यथा ।
हेन सत्य कर प्रभु ! ना फेलिबे तथा ॥२२
सपार्षदे तुमि यथा कर अवतार ।
तथाइ तथाइ दास हइब तोमार ॥२३
प्रभु बोले सत्यसत्य एइ बर दिल ।
महा-महा-जयध्वनि ततक्षणे हैल ॥२४
मुरारिर प्रति सर्व-वैष्णवेर प्रीत ।
सर्वभूते कृपालुता मुरारि-चरित ॥२५
ये-ते-स्थाने मुरारिर यदि सङ्ग हय ।
सेइ स्थान सर्व-तीर्थ-श्रीवैकुण्ठमय ॥२६
मुरारिर प्रभाव बलिते शक्ति कार ।
मुरारि वल्लभ प्रभु सर्व-अवतार ॥२७
ठाकुर चैतन्य बोले शुन सर्व-गण !
सकृत मुरारि-निन्दा करे येइ जन ॥२८

कोटि-गङ्गास्नाने तार नाहिक निस्तार ।
गङ्गा-हरि-नामे तार करिब संहार ॥२९
मुरारि वैसये गुप्ते इहार हृदये ।
एतेके मुरारि-गुप्त नाम योग्य हये ॥३०
मुरारिरे कृपा देखि भागवतगण ।
प्रेमयोगे कृष्ण बलि करये रोदन ॥३१
मुरारिरे कृपा कैल श्रीचैतन्य-राय ।
इहा येइ शुने सेइ प्रेमभक्ति पाय ॥३२
मुरारि श्रीधर कान्दे सम्मुखे पड़िया ।
प्रभुश्रो ताम्बूल खाय गर्जिया गर्जिया ॥३३
हरिदास प्रति प्रभु सदय हइया ।
मोरे देख हरिदास ! बोले डाक दिया ॥३४
एइ मोर देह हैते तुमि मोर बड़ ।
तोमार ये जाति, सेइ जाति मोर दढ़ ॥३५
पापिष्ठ यबने तोमा बड़ दिल दुःख ।
ताहा स्मङरिते मोर बिदरये बुक ॥३६
शुनशुन हरिदास ! तोमारे यखने ।
नगरेनगरे मारि बेड़ाय यबने ॥३७
देखिया तोमार दुःख चक्र धरि करे ।
नाम्बिलुँ वैकुण्ठ हैते सभा काटिबारे ॥३८
प्राणान्त करिया तोमा मारे ये सकल ।
तुमि मने चिन्त ताहा सभार कुशल ॥३९
श्रापने मारण खाश्रो ताहा नाहि लेख ।
तखनेश्रो ता'सभारे मने भाल देख ॥४०
तुमि भाल देखिले ना करोँ मुञि बल ।
तोलोँ चक्र, तोमा लागि से हय बिफल ॥४१
काटिते ना पारोँ तोर सङ्कल्प लागिया ।
तोर पृष्ठे पड़ोँ तोर मारण देखिया ॥४२
तोहोर मारण निज-श्रङ्गे करि लङो ।
एइ तार चिह्न श्राछे मिछा नाहि कहोँ ॥४३

ये बा गौण छिल मोर प्रकाश करिते ।
शीघ्र श्राइलुँ तोर दुःख ना पारो सहिते ॥४४
तोमारे चिनिल मोर नाढ़ा भालमते ।
सर्व-भावे मोरे बन्दी करिला श्रद्वैत ॥४५
भक्त बाढ़ाइते निज ठाकुर से जाने ।
कि बा बोले कि बा करे भक्तेर कारणे ॥४६
ज्वलन्त-श्रनल कृष्ण भक्त लागि खाय ।
भक्ते किङ्कर हय श्रापन इच्छाय ॥४७
भक्त बइ कृष्ण श्रार किछुइ ना जाने ।
भक्तेर समान नाहि श्रनन्त भुवने ॥४८
हेन कृष्णभक्त-नामे ना पाय सन्तोष ।
सेइ सब पापीरे लागिल दैव-दोष ॥४९
भक्तेर महिमा भाइ! देख चक्षु भरि ।
कि बलिला हरिदास प्रति गौरहरि ॥५०
प्रभु मुखे शुनि महा-कारुण्य बचन ।
मूर्च्छित पड़िला हरिदास ततक्षण ॥५१
वाह्य दूरे गेल, भूमितले हरिदास ।
श्रानन्दे डुबिला तिलार्द्धेक नाहि श्वास ॥५२
प्रभु बोले उठ उठ मोर हरिदास !
मनोरथ भरि देख श्रामार प्रकाश ॥५३
वाह्य पाइल हरिदास प्रभुर बचने ।
कोथा रूप-दरशन--करये क्रन्दने ॥५४
सकल-श्रङ्गने पड़ि गड़ागड़ि याय ।
महाश्वास बहे क्षणे क्षणे मूर्च्छा पाय ॥५५
महाबेश हैल हरिदासेर शरीरे ।
चैतन्य कराये स्थिर तबु नहे स्थिरे ॥५६
"बाप विश्वम्भर प्रभु जगतेर नाथ !
पातकीरे कर कृपा पड़िलुँ तोमात ॥५७
निर्गुण श्रधम सर्व-जाति बहिष्कृत ।
मुञि कि बलिब प्रभु! तोमार चरित ॥५८

देखिले पातक मोरे, परशिले स्नान ।
मुञि कि बलिब प्रभु तोमार आख्यान ॥५९
एक सत्य करियाछि आपन वदने ।
ये जन तोमार करे चरण स्मरणे ॥६०
कीटतुल्य हय तभु तारे नाहि छाड़ ।
इहाते अन्यथा हैले नरेन्द्रेरे पाड़ ॥६१
एइ बल नाहि मोर—स्मरण-बिहीन ।
स्मरण करिले मात्र राख तुमि दीन ॥६२
सभा-मध्ये द्रौपदी करिते बिवसन ।
आनिल पापिष्ठ दुर्य्योधन दुःशासन ॥६३
सङ्कटे पड़िया कृष्णा तोमा स्मङरिला ।
स्मरण प्रभावे तुमि बस्त्रे प्रवेशिला ॥६४
स्मरण प्रभावे बस्त्र हइल अनन्त ।
तथापि ना जानिल से सब दुरन्त ॥६५
कोन-काले पार्वतीरे डाकिनीर गणे ।
बेढ़िया खाइते कैल तोमार स्मरणे ॥६६
स्मरण प्रभावे तुमि आविर्भाब हैया ।
करिला सभार शास्ति वैष्णवी तारिया॥६७
हेन तुया स्मरण बिहीन मुञि पाप ।
मोरे तोर चरणे शरण देह बाप !६८
बिष,सर्प, अग्नि जले पाथरे बान्धिया ।
फेलिल प्रह्लादे दुष्ट हिरण्य धरियां ॥६९
प्रह्लाद करिल तोर चरण स्मरण ।
स्मरण प्रभावे सर्व-कृत्या बिमोचन ॥७०
कारो बा भाङ्गिल दन्त, कारो तेज नाश ।
स्मरण प्रभावे तुमि हइला प्रकाश ॥७१
पाण्डुपुत्र स्मरिल दुर्वासार भये ।
अरण्ये प्रत्यक्ष हैला हइया सदये ॥७२
चिन्ता नाहि युधिष्ठिर हेर देख आमि ।
आमि दिब मुनि भिक्षा बसि थाक तुमि ॥७३
अवशेषे एक शाक आछिल हाण्डीते ।
सन्तोषे खाइला निजभकत राखिते ॥७४
स्नाने सब ऋषिर उदर महा फुले ।
सेइ मत सब ऋषि पलाइला जले ॥७५
स्मरण प्रभावे पाण्डुपुत्रेर मोचन ।
ए सब कौतुक सब स्मरण प्रभावे ॥७६
अखण्ड स्मरण धर्म इहा सभार उद्धार ।
तेञि चित्र नहे इहा सभार उद्धार ॥७७
अजामिल स्मरणेर महिमा अपार ।
सर्व-धर्म-हीन ताहा बड़ नाहि आर ॥७८
दूतभये पुत्रस्नेहे देखि पुत्रमुख ।
स्मङरिल पुत्रनाम नारायण रूप ॥७९
सेइ त स्मरणे सब खण्डिल आपद ।
तेञि चित्र नहे—भक्त स्मरण-सम्पद ॥८०
हेन तोर चरण स्मरण-हीन मुञि ।
तथापिह प्रभु! मोरे ना छाड़िबि तुञि ॥८१
तोमा देखिबारे मोर कोन् अधिकार ।
एक बइ प्रभु! किछु ना चाहिब आर ॥८२
प्रभु बोले"बोल बोल सकल तोमार ।
तोमारे अदेय किछु नाहिक आमार ॥"८३
करजोड़ करि बोले प्रभु हरिदास ।
मुञि अल्प भाग्य प्रभु! करों बड़ आश ॥८४
तोमार चरण भजे ये सकल दास ।
तार अबशेष येन हय मोर ग्रास ॥८५
सेइ से भोजन मोर हउ जन्मजन्म ।
सेइ अबशेष मोर क्रिया कुलधर्म ॥८६
तोर स्मरण-हीन पाप-जन्म मोर ।
सफल करह दासोच्छिष्ट दिया तोर ॥८७
एइ मोर अपराध हेन चित्ते लय ।
महा-पद चाहो—से मोहर योग्य नय ॥८८

प्रभु रे नाथ रे मोर बाप विश्वम्भर !
भृत्य मुञि मोर अपराध क्षमा कर ॥८९
शचीर नन्दन बाप ! कृपा कर मोरे ।
कुक्कुर करिया मोरे राख भक्त-घरे ॥९०
प्रेमभक्तिमय हैला प्रभु हरिदास ।
पुनःपुन करे काकु, ना पूरये आश ॥९१
प्रभु बोले शुनशुन मोर हरिदास ।
दिवसेको तोमा'सङ्गे कैल येइ वास॥९२
तिलार्द्धेको तुमि यार सङ्गे कह कथा ।
से अवश्य आमा' पाइब नहे अन्यथा ॥९३
तोमारे ये करे श्रद्धा, से करे आमारे ।
निरन्तर आछि आमि तोमार शरीरे ॥९४
तुमि-हेन सेवके आमार ठाकुराल ।
तुमि मोरे हृदये बान्धिला सर्वकाल ॥९५
मोर स्थाने मोर सर्व-वैष्णवेर स्थाने ।
विनि-अपराधे तोरे भक्ति दिला दाने ॥९६
हरिदास-प्रति बर दिलेन यखने ।
जयजय-महाध्वनि उठिल तखने ॥९७
जाति कुल क्रिया धने किछु नाहि करे ।
प्रेमधन आर्त्ति विने ना पाइ कृष्णेरे ॥९८
ये-ते-कुले वैष्णवेर जन्म केने नहे ।
तथापिह सर्वोत्तम—सर्व शास्त्रे कहे ॥९९
एइ तार प्रमाण-यवन हरिदास ।
ब्रह्मादिर दुर्ल्लभ देखिल परकाश ॥१००
ये पापिष्ठ वैष्णवेर जाति बुद्धि करे ।
जन्मजन्म अधम-योनिते डुबि मरे ॥१०१
हरिदास-स्तुति-बर शुने येइ जन ।
अवश्य मिलिब तारे कृष्णप्रेमधन ॥१०२
ए बचन मोर नहे, सर्वशास्त्रे कहे ।
भक्ताख्यान शुनिले कृष्णेते भक्ति हये' ॥१०३

महाभक्त हरिदास जय जय जय ।
हरिदास स्मरणे सकल भक्ति हय ॥१०४
केहो बोले चतुर्मुख येन हरिदास ।
केहो बोले "प्रह्लादेर येन परकाश ॥" १०५
सर्वोत्तम महाभागवत हरिदास ।
चैतन्यगोष्ठीर सङ्गे याहार विलास ॥१०६
ब्रह्मा शिव हरिदास हेन भक्त-सङ्ग ।
निरवधि करिते चित्तेर बड़ रङ्ग ॥१०७
हरिदास स्पर्श बाञ्छा करे देवगण ।
गङ्गाओ बाञ्छेन हरिदासेर मज्जन ॥१०८
स्पर्शेर कि दाय, देखिलेइ हरिदास ।
छिण्डे सर्व-जीवेर अनादि कर्मपाश ॥१०९
प्रह्लाद येहेन दैत्य, कपि हनूमान् ।
एइमत हरिदास नीच जाति नाम ॥११०
हरिदास कान्दे कान्दे मुरारि श्रीधर ।
हासिया ताम्बूल खाय प्रभु विश्वम्भर ॥१११
बसि आछे महाज्योति खट्टार उपरे ।
महाज्योति नित्यानन्द छत्र धरे शिरे ॥११२
अद्वैतेर भिते चा'हि हासिया हासिया ।
मनेर वृत्तान्त ताँर कहे प्रकाशिया ॥११३
शुनशुन आचार्य्य ! तोमारे निशाभागे ।
भोजन कराइल आनि ताहा मने जागे ?११४
यखन आमार नाहि हय अवतार ।
आमारे आनिते श्रम करिले अपार ॥११५
गीता शास्त्र पढ़ाओ बाखान'भक्ति मात्र ।
बुझिते तोमार व्याख्या के बा आछे पात्र?११६
ये श्लोकेर व्याख्याय नाहि पाओ भक्तियोग ।
श्लोकेरे ना देह दोष छाड़ सर्वभोग ॥११७
दुःख पाइ शुति थाक करि उपवास ।
तबे आनि तोमा' स्थाने हइ परकाश ॥११८

तोमार उपासे मुञि मानो उपवास ।
तुमि मोरे येइ देह सेइ मोर ग्रास ॥११९
तिलार्द्ध तोमार दुःख आमि नाहि सहि ।
स्वप्ने आमि तोमार सहित कथा कहि ॥१२०
उठउठ आचार्य्य श्लोकेर अर्थ शुन ।
एइ अर्थ, एइ, पाठ, निःसन्देह जान ॥१२१
उठिया भोजन कर, ना कर उपास ।
तोमार लागिया आमि करिब प्रकाश ॥१२२
सन्तोषे उठिया तुमि करह भोजन ।
आमि बलि तुमि येन मानह स्वपन ॥१२३
एइमत येइ येइ पाठे द्विधा हय ।
आसिया चैतन्यचन्द्र आपने कहय ॥१२४
यत रात्रि स्वप्न हय, ये दिन यखने ।
यत श्लोक–सब प्रभु कहिला आपने ॥१२५
धन्यधन्य अद्वैतेर भक्तिर महिमा ।
भक्तिभक्ति कि बलिब एइ तार सीमा ॥१२६
प्रभु बोले सर्व-पाठ कहिल तोमारे ।
एक पाठ नाहि कहि, आजि कहि तोरे ॥१२७
सम्प्रदाय-अनुरोधे सभे मन्द पढ़े ।
सर्वतःपाणिपादन्तत् एइ पाठ नड़े ॥१२८
आजि तोरे सत्य कहि छाड़िया कपट ।
सर्वत्र पाणिपादन्तत् एइ सत्य पाठ ॥१२९

तथाहि (गीता १३।१४)—

"सर्वतःपाणिपादन्तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥" १३०

टीका ।

नन्वेवं ब्रह्मणः सदसद्विलक्षणत्वे सति–सर्वं खल्विदं ब्रह्म ब्रह्मैवेदं सर्वं इत्यादि श्रुतिभिर्विरुध्येत इत्याशङ्क्य–परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च' इत्यादिश्रुतिप्रसिद्धयाऽचिन्त्यशक्त्या सर्वात्मतां तस्य दर्शयन्नाह सर्वत इति पञ्चभिः। सर्वतः सर्वत्र पाणयः पादाश्च यस्य तत् । सर्वतोऽक्षीणि शिरांसि मुखानि च यस्य तत् । सर्वतः श्रुतिमच्छ्रवणेन्द्रियं युक्तं सल्लोके सर्वमावृत्य व्याप्य तिष्ठति । सर्वप्राणिवृत्तिभिः पाण्यादिभिरुपाधिभिः सर्वव्यवहारास्पदत्वेन तिष्ठतीत्यर्थः ॥ श्रीधरः ॥

अनुवाद ।

प्राणी समूह की समस्त इन्द्रियों में जो विराजित हैं, उसका प्रकार कहते हैं, "सर्वत्र उनके हस्त एवं पद, सर्वत्र उनके नेत्र, शिर एवं मुख, सर्वत्र उनकी श्रवणेन्द्रिय, एवं आप सर्वपदार्थ में सर्वत्र व्याप्त होकर अवस्थित हैं।

"अति-गुप्त-पाठ आमि कहिल तोमारे ।
तोमा बइ पात्र केबा आछे कहिबारे ॥" १३१
चैतन्येर गुप्त-शिष्य आचार्य्य गोसाञि ।
चैतन्येर सर्व-व्याख्या आचार्य्येर ठाञि ॥१३२
शुनिया आचार्य्य प्रेमे कान्दिते लागिला ।
पाइया मनेर कथा महानन्दे भोला ॥१३३
अद्वैत बोलये आर कि बलिब मुञि ।
एइ मोर महत्त्व ये मोर नाथ तुञि ॥१३४
आनन्दे विह्वल हइला आचार्य्य गोसाञि ।
प्रभुर प्रकाश देखि वाह्य किछु नाञि ॥१३५
ए सब कथाय यार नाहिक प्रतीत ।
अधःपात हय तार, जानिह निश्चित ॥१३६
महाभागवते बुझे अद्वैतेर व्याख्या ।
आपने चैतन्य यारे कराइल शिक्षा ॥१३७
वेदे येन नानामत करये कथन ।
एइमत आचार्य्येर दुर्ज्ञेय बचन ॥१३८
अद्वैतेर वाक्य बुझिबार शक्ति यार ।
जानिह ईश्वर-सङ्गे भेद नाहि तार ॥१३९

शरतेर मेघ येन परभाग्यबशे।
सर्वत्र ना करे बृष्टि नाहि तार दोषे ॥१४०

तथाहि (भा १०।२०।३६)—

"गिरयो मुमुचुस्तोयं क्वचिन्न मुमुचुः शिवम्।
यथा ज्ञानामृतं काले ज्ञानिनो ददते न वा॥" १४१

टीका।

गिरय इति। अयं भावः—न हि उपाध्यायाः कर्मविद्यामिव ज्ञानिनो ज्ञानामृतं सर्वतो वितरन्ति, अपि तु कृपया क्वचिदेव। एवं गिरयः, शिवं—निर्मलं, तोयं—जलं, क्वचित् मुमुचुः, क्वचित् न ; न पुनः प्रावृषीव सर्वत इति ॥ श्रीधरः ॥

अनुवाद।

जिस प्रकार ज्ञानीगण ज्ञानामृत प्रदान करते हैं, कदाचित् प्रदान नहीं करते हैं, उस प्रकार शरत् कालमें गिरि समूह सर्वत्र सुनिर्मल जल प्रकाश नहीं करते हैं, स्थल विशेष में नहीं भी करते हैं, अर्थात् बर्षाकाल के समान सर्वत्र जल की सुलभता नहीं है।

एइमत अद्वैतेर किछु दोष नाञि।
भाग्याभाग्य बुझि व्याख्या करे सेइ ठाञि॥१४२
चैतन्य चरण सेवा अद्वैतेर काज।
इहाते प्रमाण सब-वैष्णव समाज ॥१४३
सर्व-भागवतेर बचन अनादरि।
अद्वैतेर सेवा करे, नहे प्रियङ्करी ॥१४४
चैतन्येते महामहेश्वर-बुद्धि यार।
से-इ से अद्वैतभक्त—अद्वैत ताहार ॥१४५
सर्वप्रभु गौरचन्द्र इहा ये ना लय।
अक्षय-अद्वैत-सेवा व्यर्थ तार हय ॥१४६
शिरच्छेदे भक्ति येन करे दशानन।
ना मानये रघुनाथ,—शिवेर कारण ॥१४७
अन्तरे छाड़िल शिव से ना जाने इहा।
सेवा व्यर्थ हैल, मैल सवंशे पुड़िया ॥१४८

भाल-मन्द शिवे झाट भाङ्गिया ना कहे।
यार बुद्धि थाके से-इ चित्ते बुझि लये ॥१४९
एइमत अद्वैतेर चित्त ना बुझिया।
बोलाय अद्वैतभक्त—चैतन्य निन्दिया ॥१५०
ना बोले अद्वैत किछु स्वभाव कारणे।
ना धरे वैष्णववाक्य मरे भाल मने ॥१५१
याहार प्रसादे अद्वैतेर सर्व सिद्धि।
हेन चैतन्येर किछु ना जानये शुद्धि ॥१५२
इहा बलितेइ आइले धाइया मारिबारे।
अहो माया बलवती !—कि बलिब तारे ॥१५३
प्रभुर ये अलङ्कार इहा नाहि जाने।
अद्वैतेर प्रभु गौर—इहा नाहि माने ॥१५४
पूर्वे ये आख्यान हैल, सेइ सत्य हय।
ताहाते प्रतीत यार नाहि तार क्षय ॥१५५
यत यत शुन यार महत्त्व बड़ाञि।
चैतन्येर सेवा हैते आर किछु नाञि ॥१५६
नित्यानन्द महाप्रभु यारे कृपा करे।
यार येन योग्य भक्ति सेइ से आदरे ॥१५७
अहर्निश लओयाय ठाकुर नित्यानन्द।
बोल भाइसब ! मोर प्रभु गौरचन्द्र ॥१५८
चैतन्य-स्मरण करि आचार्य्य गोसाञि।
निरवधि कान्दे आर किछु स्मृति नाञि ॥१५९
इहा देखि चैतन्यते यार भक्ति नय।
ताहार आलापे हय सुकृतिर क्षय ॥१६०
वैष्णवाग्रगण्य-बुद्ध्ये ये अद्वैत गाय।
से-इ से वैष्णव जन्मजन्म कृष्ण पाय ॥१६१
अद्वैतेर से-इ से एकान्त प्रियकर।
ए मर्म ना जाने यत अधम किङ्कर ॥१६२
सभार ईश्वर प्रभु गौराङ्गसुन्दर।
ए कथाय अद्वैतेर प्रीति बहुतर ॥१६३

श्रद्वैतेर श्रीमुखेर ए सकल कथा।
इहाते सन्देह किछु ना कर सर्वथा ॥१६४
मध्यखण्ड कथा बड़ अमृतेर खण्ड।
ये कथा शुनिले सर्व खण्डये पाषण्ड ॥१६५
अद्वैतेरे बलिया गीतार सत्य पाठ।
विश्वम्भर घुचाइल भक्तिर कपाट ॥१६६
श्रीभुज तुलिया बोले प्रभु विश्वम्भर।
"सभे मोरे देख, माग मनोहित बर॥" १६७
आनन्द पाइला सभे प्रभुर बचने।
यार इच्छा मागे ताहार कारणे ॥१६८
अद्वैत बोलये प्रभु! माग एइ बर।
मूर्ख नीच दरिद्रेरे अनुग्रह कर ॥१६९
केहो बोले मोर बापे आसिबारे बाधे।
तार चित्त भाल होक तोमार प्रसादे ॥१७०
केहो बोले शिष्य प्रति केहो पुत्र प्रति।
केहो भार्य्या केहो भृत्ये यार यथा रति ॥१७१
केहो बोले आमार हउक गुरु भक्ति।
एइमत बर मागे यार येन शक्ति ॥१७२
भक्त-वाक्य सत्यकारी प्रभु विश्वम्भर।
हासिया हासिया सभाकारे देन बर ॥१७३
मुकुन्द आछेन अन्तःपटेर बाहिरे।
सम्मुख हइते शक्ति मुकुन्द ना धरे ॥१७४
मुकुन्द सभार प्रिय—परम-महान्त।
भालमते जाने सेइ सभार बृत्यान्त ॥१७५
निरवधि कीर्त्तन करिया प्रभु सने।
कोन अपराध नाहि तबे दण्ड केने ॥१७६
ठाकुरेह नाहि डाके आसिते ना पारे।
देखिया जन्मिल दुःख सभार अन्तरे ॥१७७
श्रीवास बोलेन शुन जगतेर नाथ!
मुकुन्द कि अपराध करिल तोमा'त ॥१७८
मुकुन्द सभार प्रिय—मो'सभार प्राण।
के बा नाहि द्रबे शुनि मुकुन्देर गान ॥१७९
भक्तिपरायण सर्वदिगे सावधान।
अपराध ना देखिये कर अपमान ॥१८०
यदि अपराध थाके, तार शास्ति कर।
आपनार दास केने दूरे परिहर ॥१८१
तुमि ना डाकिले नारे सम्मुख हइते।
देखुक तोमारे प्रभु! बोल भालमते ॥१८२
प्रभु बोले हेन वाक्य कभु नावलिबा।
ओ बेटार लागि मोरे केहो ना साधिबा ॥१८३
खड़ लय जाटि लय पूर्वे ये शुनिला।
अइ बेटा सेइ हय केहो ना चिनिला ॥१८४
क्षणे दन्ते तृण लय क्षणे जाठि मारे।
ओ खड़-जाठिया बेटा ना देखिब मोरे ॥१८५
महावक्ता श्रीनिवास बोले आरबार।
बुझिते तोमार वाक्य कार् अधिकार ॥१८६
आमरा त मुकुन्देर दोष नाहि देखि।
तोमार अभय-पादपद्म तार साक्षी ॥१८७
प्रभु बोले ओ बेटा यखन यथा याय।
सेइमत तथा कहि तथाय मिशाय ॥१८८
बाशिष्ठ पढ़ये यबे अद्वैतेर सङ्गे।
भक्तियोगे नाचे गाय तृण करि दन्ते ॥१८९
अन्य सम्प्रदाये गिया यखने साम्भाय।
नाहि माने भक्ति जाठि मारये सदाय ॥१९०
भक्ति हैते बड़ आछे ये इहा बाखाने।
निरन्तर जाठि मारे मोरे सेइ जने ॥१९१
भक्ति-स्थाने उहार हैल अपराध।
एतेके उहार हैल दरशन-बाध ॥१९२
मुकुन्द शुनये सब बाहिरे थाकिया।
ना पाइब दरशन शुनिलेन इहा ॥१९३

गुरु-उपरोधे पूर्वे ना मानिलुँ भक्ति ।
सब जाने महाप्रभु-चैतन्येर शक्ति ॥१९४
मने चिन्ते मुकुन्द परम भागवत ।
ए देह राखिते मोर न हय युगत ॥१९५
अपराधी शरीर छाड़िब आजि आमि ।
देखिब कतेक काले इहा आमि जानि ॥१९६
मुकुन्द बोलेन शुन ठाकुर श्रीवास !
कभुनि देखिमु मुञि? बोल प्रभु पाश ॥१९७
कान्दये मुकुन्द दुइ झरये नयने ।
मुकुन्देर दुःखे कान्दे भागवतगणे ॥१९८
प्रभु बोले आर यदि कोटि जन्म हय ।
तबे मोर दरशन पाइब निश्चय ॥१९९
शुनिल निश्चय-प्राप्ति प्रभुर श्रीमुखे ।
मुकुन्द सिञ्चित हैला परानन्द सुखे ॥२००
पाइब पाइब बलि करे महानृत्य ।
आनन्दे विह्वल हैला चैतन्येर भृत्य ॥२०१
महानन्दे मुकुन्द नाचये सेइखाने ।
देखिबेन हेन वाक्य शुनिया श्रवणे ॥२०२
मुकुन्द देखिया प्रभु हासे विश्वम्भर ।
आज्ञा हैल मुकुन्देरे आनह सत्वर ॥२०३
सकल वैष्णव डाके आइसह मुकुन्द !
ना जाने मुकुन्द किछु पाइया आनन्द ॥२०४
प्रभु बोले मुकुन्द ! घुचिल अपराध ।
आइस आमारे देख धरह प्रसाद ॥२०५
प्रभुर आज्ञाय सभे आनिला धरिया ।
पड़िला मुकुन्द महापुरुष देखिया ॥२०६
प्रभु बोले उठउठ मुकुन्द आमार ।
तिलार्द्धेको अपराध नहिक तोमार ॥२०७
सङ्ग-दोष तोमार सकल हैल क्षय ।
तोर स्थाने हइल आमार पराजय ॥२०८
कोटि जन्म पाइबा हेन बलिलाङ आमि ।
तिलार्द्धेके सब ताहा घुचाइले तुमि ॥२०९
अव्यर्थ आमार वाक्य तुमि से जानिला ।
तुमि आमा सर्वकाल हृदये बान्धिला ॥२१०
आमार गायन तुमि थाक आमा सङ्गे ।
परिहास पात्र सङ्गे आमि कैल रङ्गे ॥२११
सत्य यदि तुमि कोटि अपराध कर ।
से सकल मिथ्या तुमि मोर प्रिय दढ़ ॥२१२
भक्तिमय तोमार शरीर—मोर दास ।
तोमार जिह्वाय मोर निरन्तर वास ॥२१३
प्रभुर आश्वास शुनि कान्दये मुकुन्द ।
धिक्कार करिया आपनारे बोले मन्द ॥२१४
भक्ति ना मानिलुँ मुञि एइ छार-मुखे ।
देखिलेइ भक्तिशून्य कि पाइब सुखे ॥२१५
विश्वरूप तोमार देखिल दुर्य्योधन ।
याहा देखिबारे वेदे करे अन्वेषण ॥२१६
देखियाओ सवंशे मरिल दुर्य्योधन ।
ना पाइल सुख—भक्ति-शून्येर कारण ॥२१७
हेन भक्ति ना मानिल आमि छार मुखे ।
देखिले कि हैब आर मोर प्रेमसुखे ॥२१८
यखने चलिला तुमि रुक्मिणीहरणे ।
देखिल नरेन्द्र-सब गरुड़वाहने ॥२१९
अभिषेक हइल राजराजेश्वर नाम ।
तेखिल नरेन्द्र तोमा महा,ज्योतिर्धाम ॥२२०
ब्रह्मादि देखिते याहा करे अभिलाष ।
विदर्भ-नगरे ताहा करिला प्रकाश ॥२२१
ताहा देखि मरे सब नरेन्द्रेर गण ।
ना पाइल सुख—भक्तिशून्येर कारण ॥२२२
सर्वयज्ञमय रूप—कारण शूकर ।
आविर्भाव हैला तुमि जलेर भितर ॥२२३

अनन्त पृथिवी लागि' आछये दशने ।
ये प्रकाश देखिते देवेर अन्वेषणे ॥२२४
देखिलेक हिरण्य–अपूर्व दरशने ।
ना पाइल सुख–भक्तिशून्येर कारणे ॥२२५
आर महा प्रकाश देखिल तार भाइ ।
याहा गोप्य हृदयेते कमलार ठाँइ ॥२२६
अपूर्व नृसिंह-रूप कहे त्रिभुवने ।
ताह देखि मरे भक्तिशून्येर कारणे ॥२२७
हेन भक्ति मोर छार-मुखे ना मानिल ।
ए बड़ अद्भुत! मुख खसि ना पड़िल ॥२२८
कुब्जा, यज्ञपत्नी, पुरनारी मालाकार ।
कोथाय देखिल तारा प्रकाश तोमार ॥२२९
भक्तियोगे तोमारे पाइल सेइ सब ।
सेइखाने मरे कंश–देखि अनुभव ॥२३०
हेन भक्ति मोर छार-मुखे ना मानिल ।
एइ बड़ कृपा तोर–तथापि रहिल ॥२३१
ये भक्तिर प्रभावे अनन्त महाबली ।
अनन्त-ब्रह्माण्ड धरे हइ कुतूहली ॥२३२
सहस्र-फणार एक-फणे बिन्दु येन ।
यशे मत्त प्रभु ना जानये आछे हेन ॥२३३
निराश्रये पालन करेन सभाकार ।
भक्तियोग प्रभावे ए सब अधिकार ॥२३४
हेन भक्ति ना मानिलुँ मुञि पापमति ।
अशेष-जन्मेओ मोर नाहि भाल-गति ॥२३५
भक्तियोगे गौरीपति हइला शङ्कर ।
भक्तियोगे नारद हइला मुनिवर ॥२३६
वेद धर्म योग–नाना शास्त्र करि व्यास ।
तिलार्द्धेक चित्ते नाहि वासेन प्रकाश ॥२३७
महा-गोप्य-ज्ञाने भक्ति बलिला संक्षेपे ।
सभे एइ अपराध चित्तेर बिक्षेपे ॥२३८
नारदेर वाक्ये भक्ति करिला बिस्तार ।
तबे मनो दुःख गेल तारिला संसार ॥२३९
कीट हइ ना मानिलुँ मुञि हेन भक्ति ।
आरो तोमा देखिबारे आछे मोर शक्ति ?२४०
बाहु तुलि कान्दये मुकुन्द महादास ।
चलये शरीर येन, हेन बहे श्वास ॥२४१
सहजे एकान्त भक्त कि कहिब सीमा ।
चैतन्य प्रियेरमाझे याहार गणना ॥२४२
मुकुन्देर खेद देखि प्रभु विश्वम्भर ।
लज्जित हइया किछु करिला उत्तर ॥२४३
मुकुन्देर भक्ति मोर बड़ प्रियङ्करी ।
यथा गाओ तुमि तथा आमि अवतरी ॥२४४
तुमि यत कहिले सकल सत्य हय ।
भक्ति विने आमा देखिलेओ किछु नय ॥२४५
एइ तोरे सत्य कहि बड़ प्रिय तुमि ।
वेद-मुखे बलियाछि यत किछु आमि ॥२४६
ये ये कर्म कैले हय ये ये दिव्यगति ।
ताहा घुचाइते पारे काहार शकति ॥२४७
मुञि पारों सकल अन्यथा करिबारे ।
सर्व-विधि उपरे आमार अधिकारे ॥२४८
मुञि सत्य करियाछों आपनार मुहे ।
मोर भक्ति विने कोन कर्म किछु नहे ॥२४९
भक्ति ना मानिले हय मोर मर्म-दुःख ।
मोर दुःखे घुचे तार दरशन-सुख ॥२५०
रजकेओ देखिले, मागिल तार ठाञि ।
तथापि बञ्चित हैल याते प्रेम नाञि ॥२५१
आमा देखिबारे सेइ कत तप कैल ।
कत कोटि देह सेइ रजक छाड़िल ॥२५२
पाइलेक महाभाग्य मोर दरशने ।
ना पाइल सुख–भक्तिशून्येर कारणे ॥२५३

मोर सेवकेर ठाञि यार अपराध ।
मोर दरशन सुख तार हय बाध ॥२५४
भक्त-स्थाने अपराध कैले घुचे भक्ति ।
भक्तिर अभावे घुचे दरशन शक्ति ॥२५५
यतेक कहिले तुमि सब मोर कथा ।
तोमार मुखे बा केने आसिब अन्यथा ॥२५६
भक्ति बिलाइमु मुञि बलिल तोमारे ।
आगे प्रेमभक्ति दिल तोर कण्ठस्वरे ॥२५७
यतदेख आछे मोर वैष्णवमण्डले ।
शुनिले तोमार गान द्रबये सकले ॥२५८
आमार येमन तुमि वल्लभ एकान्त ।
एइमत हउ तोरे सकल महान्त ॥२५९
येखाने येखाने हय मोर अवतार ।
तथाय गायन तुमि हइबे आमार ॥२६०
मुकुन्देर प्रति यदि बर-दान कैल ।
महा-जयजयध्वनि तखने उठिल ॥२६१
हरि बोल हरि बोल जय जगन्नाथ ।
हरि बलि निबेदइ सभे तुलि हाथ ॥२६२
मुकुन्देर स्तुति बर शुने येइ जन ।
सेहो मुकुन्देर सङ्गे हइब गायन ॥२६३
ए सब चैतन्य कथा वेदेर निगूढ़ ।
सुबुद्धि मानये इहा ना मानये मूढ़ ॥२६४
शुनिले ए सब कथा यार हय सुख ।
अवश्य देखिब सेइ श्रीचैतन्य-मुख ॥२६५
एइमत यतयत भक्तेर मण्डल ।
सभे कैला स्तुति बर पाइल सकल ॥२६६
श्रीवासपण्डित अतिमहामहोदार ।
अतएब तान गृहे सब व्यबहार ॥२६७
यार येनमत इष्ट प्रभु आपनार ।
सेइ विश्वम्भर देखे सेइ अवतार ॥२६८

महा महा-परकाश इहारे से बलि ।
एमत करये गौरचन्द्र कुतूहली ॥२६९
एइमत दिनेदिने प्रभुर प्रकाश ।
सपत्नीके चैतन्येर देखे यत दास ॥२७०
देह-मन निर्विशेषे ये ये हय दास ।
तारा से देखिते पाय ए सब प्रकाश ॥२७१
सेइ नवद्वीपे आर कतकत आछे ।
तपस्वी,सन्न्यासी,ज्ञानी,योगी माझे माझे॥२
यावत्काल गीता भागवत केहो पढ़े ।
केहो बा पढ़ाय स्वधर्मेते नाहि नड़े ॥२७३
केहोकेहो परिग्रह किछुइ ना लय ।
बृथा आकुमार-धर्मे शरीर शोषय ॥२७४
सेइखाने हेन वैकुण्ठेर सुख हैल ।
बृथा-अभिमानी एको जना ना देखिल ॥२७५
श्रीवासेर दास दासी ये सब देखिल ।
शास्त्र पढ़ियाओ ताहा केहो ना जानिल ॥२
मुरारिगुप्तेर दासे ये प्रसाद पाइल ।
केहो माथा मुण्डाइया ताहा ना देखिल ॥२
धने कुले पाण्डित्ये चैतन्य नाहि पाइ ।
केबल भक्तिर बश चैतन्यगोसाञि ॥२
बड़ कीर्त्ति हइले चैतन्य नाहि पाइ ।
भक्तिबश सभे प्रभु—चारि वेदे गाइ ॥२
सेइ नवद्वीपे हेन प्रकाश हइल ।
यत भट्टाचार्य्य एको जना ना देखिल ॥२
दुष्कृतिर सरोवरे कभु जल नहे ।
एमन प्रकाशे कि बञ्छित जीव हये ?२
ए सब लीलार कभु नाहि परिच्छेद ।
आविर्भाब तिरोभाब एइ कहे वेद ॥२
अद्यापिह चैतन्य ए सब लीला करे ।
यखने याहारे करे दृष्टि-अधिकारे ॥२

से-इ देखे, आर देखिबारे शक्ति नाञि ।
निरन्तर क्रीड़ा करे चैतन्यगोसाञि ॥२८४
ये मन्त्रेते ये वैष्णव इष्ट-ध्यान करे ।
सेइमत देखाय ठाकुर-विश्वम्भरे ॥२८५
देखाइया आपने शिखाय सभाकारे ।
ए सकल कथा भाइ! शुने पाछे आरे ॥२८६
जन्मजन्म तोमरा पाइबे मोर सङ्ग ।
तोमासभार भृत्यओ देखिब मोर रङ्ग ॥२८७
आपन गलार माला दिला सभाकारे ।
चर्वित ताम्बूल आज्ञा हइल सभारे ॥२८८
महानन्दे खाय सभे हरषित हैया ।
कोटि-चान्द-शारद-मुखेर द्रव्य पाय्या ॥२८९
भोजनेर अवशेषे यतेक आछिल ।
नारायणी पुण्यवती ताहा से पाइल ॥२९०
श्रीवासेर भ्रातृसुता बालिका अज्ञान ।
ताहारे भोजन शेषे प्रभु करे दान ॥२९१
परम आनन्दे खाय प्रभुर प्रसाद ।
सकल वैष्णव ताँरे करे आशीर्वाद ॥२९२
"धन्यधन्य एइ से सेविला नारायण ।
बालिका स्वभाबे धन्य इहार जीवन ॥"२९३
खाइले प्रभुर आज्ञा हये नारायणी !
कृष्णेर परमानन्दे कान्द देखि शुनि ॥२९४
हेन प्रभु चैतन्येर आज्ञार प्रभाब ।
कृष्ण बलि कान्दे अति बालिकास्वभाब ॥२९५
अद्यापिह वैष्णवमण्डले यार ध्वनि ।
गौराङ्गेर अबशेषपात्र नारायणी ॥२९६
यारे येन आज्ञा करे ठाकुर चैतन्य ।
से आसिया अबिलम्वे हय उपसन्न ॥२९७
ए सब बचने यार नाहिक प्रतीत ।
सत्य अधःपात तार जानिह निश्चित ॥२९८
अद्वैतेर प्रिय प्रभु चैतन्य ठाकुर ।
एइ से अद्वैतेर बड़ महिमा प्रचुर ॥२९९
चैतन्येर प्रिय देह ठाकुर निताइ ।
एइ से महिमा तान चारि वेदे गाइ ॥३००
चैतन्येर भक्त हेन नाहि यार नाम ।
यदि बा से वस्तु तभु तृणेर समान ॥३०१
नित्यानन्द कहे आमि चैतन्येर दास ।
अहर्निश आर प्रभु ना करे प्रकाश ॥३०२
ताहान कृपाय हय चैतन्येते रति ।
नित्यानन्द भजिले आपद नाइ कति ॥३०३
आमार प्रभुर प्रभु गौराङ्गसुन्दर ।
ए बड़ भरसा चित्ते धरि निरन्तर ॥३०४
धरणीधरेन्द्र नित्यानन्देर चरण ।
देह प्रभु गौरचन्द्र ! आमारे शरण ॥३०५
बलराम-प्रीते गाइ चैतन्यचरित ।
कर बलराम प्रभु ! जगतेर हित ॥३०६
चैतन्येर दास बइ निताइ ना जाने ।
चैतन्येर दास्य नित्यानन्द करे दाने ॥३०७
नित्यानन्द-कृपाय से गौरचन्द्र चिनि ।
नित्यानन्द प्रसादे से भक्त तत्त्व जानि ॥३०८
सर्व-वैष्णवेर प्रिय नित्यानन्द-राय ।
सभे नित्यानन्द स्थाने भक्त-पद पाय ॥३०९
कोनमते यदि करे नित्यानन्दे हेला ।
आपने चैतन्ये बोले सेइ जन गेला ॥३१०
आदिदेव महायोगी ईश्वर वैष्णव ।
महिमार अन्त इहा ना जानये सब ॥३११
काहारो ना करे निन्दा कृष्णकृष्ण बोले ।
अजय चैतन्य सेइ जिनिबेक हेले ॥३१२
निन्दाय नाहिक लभ्य सर्व-शास्त्रे कहे ।
सभार सम्मान—भागवत-धर्म हये ॥३१३

मध्यखण्डकथा येन अमृतेर खण्ड ।
महा-निम्ब हेन वासे' यतेक पाषण्ड ॥३१४
केहो येन शर्कराये निम्ब स्वादु पाय ।
तार दैव—शर्कराय स्वादु नाहि याय ॥३१५
एइमत चैतन्येर परानन्द-यशे ।
शुनिते ना पाय सुख—हइ दैवबशे ॥३१६
सन्न्यासीह यदि नाहि माने गौरचन्द्र ।
जानिह से खल जन जन्मजन्म अन्ध ॥३१७
पक्षिमात्र यदि बोले चैतन्येर नाम ।
सेहो सत्य याइबेक चैतन्येर धाम ॥३१८
जय गौरचन्द्र !—नित्यानन्देर जीवन ।
तोर नित्यानन्द मोर हउ प्राण धन ॥३१९
यार यार सङ्गे तुमि करिला बिहार ।
से सब गोष्ठीर पाये मोर नमस्कार ॥३२०
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥३२१

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे महामहाप्रकाश-वर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ।



एकादश अध्याय

(राग मल्लार)
निधि गौराङ्ग—
कोथा हैते आइला प्रेमसिन्धु ।
अनाथेर नाथ प्रभु पतित जनेरबन्धु ॥ध्रु॥
जयजय विश्वम्भर द्विजकुलसिंह ।
जय हउ तोर यत चरणेर भृङ्ग ॥१
जय श्रीपरमानन्दपुरीर जीवन ।
जय दामोदरस्वरूपेर प्राण धन ॥२
जय रूप-सनातन-प्रिय महाशय ।
जय जगदीश-गोपीनाथेर हृदय ॥३
हेनमते नवद्वीपे प्रभु विश्वम्भर ।
क्रीड़ा करे नहे सर्व जनेर गोचर ॥४
नवद्वीपे मध्यखण्डे कौतुक अनन्त ।
घरे बसि देखये श्रीवास भाग्यवन्त ॥५
निष्कपटे प्रभुरे सेविला श्रीनिवास ।
गोष्ठी सङ्गे देखये प्रभुर प्रकाश ॥६
श्रीवासेर घरे नित्यानन्देर वसति ।
बाप! बलि श्रीवासेरे करये पिरीति ॥७
अहर्निश बाल्य-भावे वाह्य नाहि जाने ।
निरवधि मालिनीर करे स्तन पाने ॥८
कभु नाहि दुग्ध परसिले मात्र हय ।
ए सब अचिन्त्य-शक्ति मालिनी देखय ॥९
चैतन्येर निबारणे कारेओ ना कहे ।
निरवधि शिशु-रूप मालिनी देखये ॥१०
प्रभु विश्वम्भर बोले शुन नित्यानन्द !
काहारो सहित तुमि पाछे कर द्वन्द्व ॥११
चञ्चलता ना करिबा श्रीवासेर घरे ।
शुनि नित्यानन्द विष्णु-स्मङरण करे ॥१२

आमार चाञ्चल्य तुमि कभु ना पाइबा ।
आपनार मत तुमि कारो ना वासिबा ॥१३
विश्वम्भर बोले आमि तोमा भाले जानि ।
नित्यानन्द बोले दोष कह देखि शुनि ?१४
हासि बोले गौरचन्द्र कि दोष तोमार ।
सब्र घरे अन्नवृष्टि कर अवतार ॥१५
नित्यानन्द बोले इहा पागले से करे ।
ए छलाये घरे भात ना दिबे आमारे ॥१६
आमारे ना दिया भात सुखे तुमि खाओ ।
अपकीर्त्ति आर केने बलिया बेड़ाओ ॥१७
प्रभु बोले तोमार अपकीर्त्ति आमि पाइ ।
सेइ त कारणे आमि तोमारे शिखाइ ॥१८
हासि बोले नित्यानन्द बड़ भाल भाल ।
चाञ्चल्य देखिले शिखाइबा सर्वकाल ॥१९
निश्चय बलिला तुमि आमि से चञ्चल ।
एत बलि प्रभु चाहि हासे खलखल ॥२०
आनन्दे ना जाने वाह्य कोन कर्म करे ।
दिगम्बर हइ बस्त्र बान्धिलेन शिरे ॥२१
जोड़ेजोड़े लाफ देइ हासिया हासिया ।
सकल अङ्गने बुले ढुलिया ढुलिया ॥२२
गदाधर श्रीवास हासेन हरिदास ।
शिक्षार प्रसादे सभे देख दिग्त्रास ॥२३
डाकि बोले विश्वम्भर ए कि कर कर्म ।
गृहस्थेर बाड़ीते एमत नहे धर्म ॥२४
एखनि बलिला तुमि आमि कि पागल ?
एइक्षणे निज वाक्य घुचिल सकल ॥२५
यार वाह्य नाहि, तार बचने कि लाज ।
नित्यानन्द भासये आनन्दसिन्धुमाझ ॥२६
आपने धरिया प्रभु पराय वसन ।
एमत अचिन्त्य नित्यानन्देर कथन २७

चैतन्येर बचन अङ्कुश मात्र माने ।
नित्यानन्द महामत्त आर नाहि जाने ॥२८
आपने तुलिया हाथे भात नाहि खाय ।
पुत्र प्राय करि अन्न मालिनी योगाय ॥२९
नित्यानन्द-अनुभाव जाने पतिव्रता ।
नित्यानन्द-सेवा करे येन पुत्र माता ॥३०
एकदिन पित्तलेर बाटि निल काके ।
उड़िया बसिल काक ये डालेते थाके ॥३१
अदृश्य हइल काक कोन् राज्ये गेल ।
महा चिन्ता मालिनीर चित्तेते जन्मिल ॥३२
बाटि थुइ सेइ काक आइल आरबार ।
मालिनी देखये शून्य वदन ताहार ॥३३
महा-तीव्र ठाकुरपण्डित व्यबहार ।
श्रीकृष्णेर घृतपात्र हैल अपहार ॥३४
शुनिले प्रमाद हैब हेन मने गणि ।
नाहिक उपाय किछु कान्दये मालिनी ॥३५
हेन काले नित्यानन्द आइला सेइस्थाने ।
देखये मालिनी कान्दे नाहिक कारणे ॥३६
हासि बोले नित्यानन्द कान्द कि कारण ?
कोन् दुःख बोल सब्र करिब खण्डन ॥३७
मालिनी बोलये शुन श्रीपाद गोसाञि !
घृतपात्र काके लइ गेल कोन् ठाञि ॥३८
नित्यानन्द बोले माता! चिन्ता परिहर ।
आमि दिब बाटि तुमि क्रन्दन सम्वर ॥३९
काक प्रति हासि प्रभु बोलये बचन ।
"अहे काक! झाट बाटि आनह एखन ॥"४०
सभार हृदये नित्यानन्देर बसति ।
ताँर आज्ञा लङ्घिबेक काहार शकति ॥४१
शुनिया प्रभुर आज्ञा काक उड़ि याय ।
शोकाकुली मालिनी काकेर दिगे चाय ॥४२

क्षणेके उड़िया काक अदृश्य हइल।
बाटि मुखे करि काक पुन सेखाने आइल ॥४३
आनिया थुइल बाटि मालिनीर स्थाने।
नित्यानन्द प्रभाव मालिनी भाल जाने ॥४४
आनन्दे मूर्च्छिता हैला अपूर्व देखिया।
नित्यानन्द-प्रति स्तुति करे दाण्डाइया ॥४५
ये जन आनिल मृत गुरुर नन्दन।
ये जन पालन करे सकल भुवन ॥४६
यमेर घरेते हैते ये आनिते पारे।
काक-स्थाने बाटि आने कि महत्त्व ताँरे ॥४७
याँहार मस्तकोपरि अनन्त-भुवन।
लीलाय ना जाने भर, करये पालन ॥४८
अनादि अविद्या ध्वंस हय याँर नामे।
कि महत्त्व ताँर बाटि आने'काक स्थाने ॥४९
ये तुमि लक्ष्मण-रूपे पूर्वे वनवासे।
निरवधि रक्षक आछिला सीता पाशे ॥५०
तथापिह मात्र तुमि सीतार चरण।
इहा बइ सीता नाहि देखिले केमन ॥५१
तोमार से वाणे रावणेर वंश-नाश।
से तुमि ये बाटि आन केमन प्रकाश ॥५२
याँहार चरणे पूर्वे कालिन्दी आसिया।
स्तबन करिल महा-प्रभाव देखिया ॥५३
चतुर्द्दशभुवन पालन शक्ति याँर।
काक स्थाने बाटि आने कि महत्त्व ताँर ॥५४
तथापि तोमार कर्म अल्प नाहि हये।
येइ कर सेइ सत्य चारि-वेदे कहे ॥५५
हासे नित्यानन्द शुनि ताँहार स्तवन।
बाल्यभावे बोले मुञि करिमु भोजन ॥५६
नित्यानन्द देखिले ताँहार स्तन झरे।
बाल्यभावे नित्यानन्द स्तनपान करे ॥५७
एइमत अचिन्त्य नित्यानन्द चरित।
आमि कि बलिब—सर्वशास्त्रेते बिदित ॥५८
करये दुर्विज्ञ कर्म अलौकिक येन।
ये जानये तत्त्व से वासये सत्य हेन ॥५९
अहर्निश भावावेशे परम उद्दाम।
सर्व नदीयाय बुले ज्योतिर्मय धाम ॥६०
किबा योगी नित्यानन्द किबाभक्त ज्ञानी।
याहार ये मत इच्छा ना बोलये केनि ॥६१
ये से केने चैतन्येर नित्यानन्द नहे।
तभु से चरण धन रहुक हृदये ॥६२
एत परिहारेओ से पापी निन्दा करे।
तबे लाथि मारों तार शिरेर उपरे ॥६३
एइमत आछे प्रभु श्रीवासेर घरे।
निरवधि आपने गौराङ्ग रक्षा करे ॥६४
एकदिन निजगृहे प्रभु विश्वम्भर।
वसि आछे लक्ष्मी-सङ्गे परम सुन्दर ॥६५
योगाय ताम्बूल लक्ष्मी परम-हरिषे।
प्रभुर आनन्दे ना जानये रात्रिदिसे ॥६६
यखन थाकये लक्ष्मीसङ्गे विश्वम्भर।
शचीर चित्तेते हय आनन्द विस्तर ॥६७
मायेर चित्तेर सुख ठाकुर जानिया।
लक्ष्मीर सङ्गे ते प्रभु थाकेन वसिया ॥६८
हेनकाले नित्यानन्द आनन्द विह्वल।
आइला प्रभुर बाड़ी—परम चञ्चल ॥६९
बाल्यभावे दिगम्वर हैला दाण्डाइया।
काहारो ना करे लाज प्रेमाबिष्ट हैया ॥७०
प्रभु बोले,,नित्यानन्द! केने दिगम्वर ?"
नित्यानन्द हय हय करये उत्तर ॥७१
प्रभु बोले नित्यानन्द ! परह वसन।
नित्यानन्द बोले आजि आमार गमन ॥७२

प्रभु बोले "नित्यानन्द! इहा केने करि ?"
नित्यानन्द बोले आर खाइते ना पारि ॥७३
प्रभु बोले "एक एड़ि कह केने आर ?"
नित्यानन्द बोले आमि गेलुँ दशवार ॥७४
क्रुद्ध हइ बोले प्रभु मोर दोष नाइ ।
नित्यानन्द बोले प्रभु! एथा नाहि आइ ॥७५
प्रभु कहे कृपा करि परह वसन ।
नित्यानन्द बोले आमि करिब भोजन ॥७६
चैतन्येर भावे मत्त नित्यानन्द-राय ।
एक शुने आर कहे हासिया बेड़ाय ॥७७
आपने उठिया प्रभु पराय वसन ।
बाह्य नाहि हासे पद्मावतीर नन्दन ॥७८
नित्यानन्द चरित्र देखिया आइ हासे ।
विश्वरूप पुत्र हेन मने मने वासे ॥७९
सेइमत बचन शुनये सब मुखे ।
माझेमाझे से-इ रूप आइ मात्र देखे ॥८०
काहारे ना कहे आइ पुत्र स्नेह करे ।
सम-स्नेह करे नित्यानन्द-विश्वम्भरे ॥८१
बाह्य पाइ नित्यानन्द परिला वसन ।
सन्देश दिलेन आइ करिते भोजन ॥८२
आइस्थाने पञ्च क्षीर-सन्देश पाइया ।
एक खाइ, आर चारि फ़ेले छड़ाइया ॥८३
हाय हाय बोले आइ केने फेलाइला ।
नित्यानन्द बोले केने एक ठाञि दिला ॥८४
आइ बोले आर नाहि आर कि खाइबा ?
नित्यानन्द बोले चाह अवश्य पाइबा ॥८५
घरेर भितरे आइ अपरूप देखे ।
सेइ चारि सन्देश देखये परतेखे ॥८६
आइ बोले से सन्देश कोथाय पड़िल ।
घरेर भितरे कोन् पथेते आइल ? ८७
धूला घुचाइया सेइ सन्देश लइया ।
हरिषे आइला आइ अपूर्व देखिया ॥८८
आसि देखे नित्यानन्द सेइ लाड़ु खाय ।
आइ बोले बाप इहा पाइला कोथाय ? ८९
नित्यानन्द बोले याहा छड़ाइ फेलिलुँ ।
तोर दुःख देखि ताहा चाहिया आनिलुँ ॥९०
अद्भुत देखिया आइ मने मने गणे ।
नित्यानन्द महिमा ना जाने कोन जने ॥९१
आइ बोले नित्यानन्द केने मोरे भाँड़ ।
जानिल ईश्वर तुमि मोरे माया छाड़ ॥९२
बाल्यभावे नित्यानन्द आइर चरण ।
धरिबारे याय आइ करे पलायन ॥९३
एइमत नित्यानन्द चरित्र अगाध ।
सुकृतिर भाल दुष्कृतिर कार्य्य-बाध ॥९४
नित्यानन्द-निन्दा करे ये पापिष्ठ जन ।
गङ्गाओ ताहारे देखि करे पलायन ॥९५
वैष्णवेर अधिराज अनन्त ईश्वर ।
नित्यानन्द महाप्रभु शेष महीधर ॥९६
ये-ते केने चैतन्येर नित्यानन्द नहे ।
तभु से चरण-धन रहुक हृदये ॥९७
वैष्णवेर पा'ये मोर एइ मनस्काम ।
मोर प्रभु नित्यानन्द हउ बलराम ॥९८
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पद युगे गान ॥९९

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे नित्यानन्दचरित्र-वर्णनं नाम एकादशोऽध्यायः ।

द्वादश अध्याय

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौरभक्तवृन्द ॥१
हेन लीला नित्यानन्द विश्वम्भर सङ्गे ।
नवद्वीपे दुइजन करे बहु-रङ्गे ॥२
प्रेमानन्दे अलौकिक नित्यानन्द-राय ।
निरवधि बालकेर प्राय व्यवसाय ॥३
सभारे देखिया प्रीत मधुर सम्भाष ।
आपना आपनि नृत्य गीत वाद्य हास ॥४
स्वानुभावानन्दे क्षणे करये हुङ्कार ।
शुनिते अपूर्व बुद्धि जन्मये सभार ॥५
बर्षाय गङ्गार ढेउ कुम्भीरे बेष्टित ।
ताहाते भासये तिलार्द्धेक नाहि भीत ॥६
सर्वलोक देखि ताँरे करे हाय हाय ।
तथापि भासेन हासि नित्यानन्द-राय ॥७
अनन्तेर भावे प्रभु भासेन गङ्गाय ।
ना बुझिया सर्वलोक करे हाय हाय ॥८
आनन्दे मूर्च्छित वा हयेन कोनक्षण ।
तिन चारि दिवसेओ ना हय चेतन ॥९
एइमत आर कत अचिन्त्य-कथन ।
अनन्त मुखेओ नारि करिते वर्णन ॥१०
दैवे एकदिन यथा प्रभु बसि आछे ।
आइलेन नित्यानन्द ईश्वरेर काछे ॥११
बाल्यभावे दिगम्बर हास्य श्रीवदने ।
सर्वदा आनन्दधारा बहे श्रीनयने ॥१२
निरवधि एइ बलि करेन हुङ्कार ।
"मोर प्रभु निमाञिपण्डित नदीयार ॥"१३
हासे प्रभु देखे तान मूर्त्ति दिगम्बर ।
महा-ज्योतिर्मय तनु देखिते सुन्दर ॥१४
आथेव्यथे प्रभु निज-मस्तकेर वास ।
पराइया थुइलेन तथापिह हास ॥१५

आपने लेपिया ताँर अङ्गे दिव्य-गन्धे ।
शेषे माल्य परिपूर्ण दिलेन श्रीअङ्गे ॥१६
वसिते दिलेन निज-सम्मुखे आसन ।
स्तुति करे प्रभु, सुने सर्वभक्तगण ॥१७
नामे नित्यानन्द तुमि रूपे नित्यानन्द ।
एइ तुमि नित्यानन्द-राम मूर्त्तिमन्त ॥१८
नित्यानन्द-पर्य्यटक भोजन व्यबहार ।
नित्यानन्द विने किछु नाहिक तोमार ॥१९
तोमारे बुझिते शक्ति मनुष्येर कोथा ?
परम सुसत्य-तुमि यथा कृष्ण तथा ॥२०
चैतन्येर रसे नित्यानन्द महा-मति ।
ये बोलेन ये करेन सर्वत्र सम्मति ॥२१
प्रभु बोले एकखानि कौपीन तोमार ।
देह इहा बड़ इच्छा आछये आमार ॥२२
एत बलि प्रभु ताँर कौपीन आनिया ।
छोट करि चिरिलेक अनेक करिया ॥२३
सकल वैष्णवमण्डली जने जने ।
खानिखानि करि प्रभु दिलेन आपने ॥२४
प्रभु बोले ए बस्त्र बान्धह सभे शिरे ।
अन्येर कि दाय इहा बाञ्छे योगेश्वरे ॥२५
नित्यानन्द प्रसादे से हय विष्णुभक्ति ।
जानिह कृष्णेर नित्यानन्द पूर्ण-शक्ति ॥२६
कृष्णेर द्वितीय नित्यानन्द बइ नाइ ।
सङ्गी, सखा, शयन भूषण, बन्धु भाइ ॥२७
वेदेर अगम्य-नित्यानन्देर चरित्र ।
सर्व-जीव-जनक रक्षक सर्व-मित्र ॥२८
इहान व्यभार कर्म कृष्ण रसमय ।
इहाने सेविले कृष्णे प्रेमभक्ति हय ॥२९
भक्ति करि इहान कौपीन बान्ध शिरे ।
महा-यत्ने इहा पूजा कर गिया घरे ॥३०

पाइया प्रभुर आज्ञा सर्वभक्तगण ।
परम आदरे शिरे करिला बन्धन ॥३१
प्रभु बोले "शुनह सकल भक्तगण !
नित्यानन्दपादोदक करह ग्रहण ॥३२
करिले इँहार पादोदक-रस पान ।
कृष्णे दृढ़ भक्ति हय इथे नाहि आन ॥३३
आज्ञा पाइ सभे नित्यानन्देर चरण ।
पाखालिया पादोदक करये ग्रहण ॥३४
पाँचबार दशबार एको जने खाय ।
बाह्य नाहि नित्यानन्द हासये सदाय ॥३५
आपने बसिया महाप्रभु गौरराय ।
नित्यानन्द-पादोदक कौतुके लुटाय ॥३६
सभे नित्यानन्द पादोदक करि पान ।
मत्त-प्राय हरि बलि करये आह्वान ॥३७
केहो बोले आजि धन्य हइल जीवन ।
केहो बोले आजि सब खण्डिल बन्धन ॥३८
केहो बोले आजि हइलाङ कृष्णदास ।
केहो बोले आजि धन्य दिवस प्रकाश ॥३९
केहो बोले पादोदक बड़ स्वादु लागे ।
एखनेओ मुखेर मिष्टता नाहि भागे ॥४०
कि से नित्यानन्द-पादोदकेर प्रभाव ।
पान-मात्र सभे हैला चञ्चल-स्वभाव ॥४१
केहो नाचे केहो गाय केहो गड़ि याय ।
हुङ्कार गर्जन केहो करये सदाय ॥४२
उठिल परमानन्द कृष्णसङ्कीर्त्तन ।
विह्वल हइया नृत्य करे भक्तगण ॥४३
क्षणेके श्रीगौरचन्द्र करिया हुङ्कार ।
उठिया लागिला नृत्य करिते अपार ॥४४
नित्यानन्दस्वरूप उठिला ततक्षण ।
नृत्य करे दुइ प्रभु बेढ़ि भक्तगण ॥४५
कार् गाये केबा पड़े केबा कारे धरे ।
के बा कार् चरणेर धूलि लय शिरे ॥४६
के बा कार् गला धरि करये क्रन्दन ।
के बा कोन् रूप करे ना याय वर्णन ॥४७
प्रभु करियाओ कारो किछु भय नाञि ।
प्रभु-भृत्य सकले नाचये एक ठाञि ॥४८
नित्यानन्द चैतन्य करिया कोलाकोलि ।
आनन्दे नाचेन दुइ महाकुतूहली ॥४९
पृथिवी कम्पिता नित्यानन्द पदताले ।
देखिया आनन्दे सर्व गण हरि बोले ॥५०
प्रेमरसे मत्त हइ वैकुण्ठ-ईश्वर ।
नाचेन लइया सब प्रेम अनुचर ॥५१
ए सब लीलार कभु नाहि परिच्छेद ।
आविर्भाव तिरोभाव मात्र कहे वेद ॥५२
एइमत सर्वदिन प्रभु नृत्य करे ।
बसिलेन सर्वगण-सङ्गे गौरहरि ॥५३
हाथे तिन तालि दिया गौराङ्गसुन्दर ।
सभारे कहेन अति अमाया-उत्तर ॥५४
प्रभु बोले एइ नित्यानन्दस्वरूपेरे ।
ये करये भक्ति श्रद्धा से करे आमारे ॥५५
इहान चरण ब्रह्मा-शिवेरो बन्दित ।
अतएब इहाने करिह सभे प्रीत ॥५६
तिलार्द्धेको इहाने याहार द्वेष रहे ।
भक्त हइलेओ से आमार प्रिय नहे ॥५७
इहान बातास लागिबेक यार गाय ।
ताहारेओ कृष्ण ना छाड़िब सर्वथाय ॥५८
शुनिया प्रभुर वाक्य सर्वभक्तगण ।
महा जयजयध्वनि करिला तखन ॥५९
भक्ति करि ये शुनये ए सब आख्यान ।
तार स्वामी हय गौरचन्द्र भगवान ॥६०

नित्यानन्दस्वरूपेर ए सकल कथा ।
ये देखिल ताँहारे से जानये सर्वथा ॥६१
एइमत कत नित्यानन्देर प्रभाब ।
जाने यत चैतन्येर प्रिय महाभाग ॥६२
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥६३

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे नित्यानन्द-प्रभाव-वर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥

त्रयोदश अध्याय

जयजय शचीसुत द्विजकुलमणि ।
नित्यानन्दाद्वैत दुइ तहिमध्ये गणि ॥१
हेनमते नवद्वीपे प्रभु विश्वम्भर ।
क्रीड़ा करे नहे सर्व नयन गोचर ॥२
लोके देखे पूर्वे येन निमाञिपण्डित ।
अतिरिक्त आर येन ना देखे चरित ॥३
यखन प्रबिष्ट हय सेवकेर मेले ।
तखन भासेन एइ मतकुतूहले ॥४
यार येन भाग्य तेन ताहारे देखाय ।
बाहिर हइले सब आपना लुकाय ॥५
एकदिन आचम्विते हैल हेन मति ।
आज्ञा कैल नित्यानन्द हरिदास प्रति ॥६
शुन शुन नित्यानन्द ! शुन हरिदास !
सर्वत्र आमार आज्ञा करह प्रकाश ॥७
प्रति घरेघरे गिया कर एइ भिक्षा ।
कृष्ण भज कृष्ण बोल कर कृष्ण शिक्षा ॥८
इहा बइ आर ना बलिबा बोलाइबा ।
दिन अबसाने आसि आमारे कहिबा ॥९
तोमरा करिले भिक्षा येइ ना बलिब ।
तबे आमि चक्र हस्ते सभारे काटिब ॥१०
आज्ञा शुनि हासे सब वैष्णवमण्डल ।
अन्यथा करिते आज्ञा आछे कार बल ॥११
आज्ञा शिरे करि नित्यानन्द हरिदास ।
सेइक्षणे पथेत चलिला करि हास ॥१२
हेन आज्ञा याहा नित्यानन्द शिरे बहे ।
इहाते अप्रीत यार से सुबुद्धि नहे ॥१३
करये अद्वैत सेवा चैतन्य ना माने ।
अद्वैतेइ तारे संहारिव भाल मने ॥१४
आज्ञा पाइ दुइजने बुले घरेघरे ।
बोल कृष्ण गाओ कृष्ण भजह कृष्णरे ॥१५
कृष्ण प्राण कृष्ण धन कृष्ण से जीवन ।
हेन कृष्ण बोल भाइ ! हइ एक मन ॥१६
एइमत नदीयाय प्रति घरेघरे ।
बलिया बेड़ान दुइ जगत-ईश्वरे ॥१७
दोहान सन्न्यासी बेश यान यार घरे ।
आथेव्यथे आसि भिक्षा निमन्त्रण करे ॥१८
नित्यानन्द हरिदास बोले एइ भिक्षा ।
कृष्ण बोल कृष्ण भज कर कृष्ण शिक्षा ॥१९
एइ बोल बलि दुइजन चलि याय ।
ये हय सुजन, सेइ बड़ सुख पाय २०

अपरूप शुनि लोक दुइजन मुखे।
नाना जने नाना कथा कहे नाना सुखे ॥२१
करिब करिब केहो बोलये सन्तोषे।
केहो बोले दुइजन क्षिप्त मन्त्र दोषे ॥२२
तोमराह पागल हइया मन्त्र दोषे।
आमा'सभा पागल करिते आइस किसे ?२३
ये जन चैतन्य नृत्ये ना पाइल द्वार।
तार बाड़ी गेले मात्र बोले मार मार ॥२४
तोमरा पागल हैले दुष्ट सङ्ग-दोषे।
आमा' सभा पागल करिते आइस किसे ॥२५
भव्य भव्य लोक सब हइल पागल।
निमाञिपण्डित नष्ट करिल सकल ॥२६
केहो बोले दुइजन किबा चोर-चर।
छला करि चञ्चिया बुलये घरेघर ॥२७
एमत प्रकट केने करिब सुजने।
आर बार आइले धरि लइब देयाने ॥२८
शुनिशुनि नित्यानन्द हरिदास हासे।
चैतन्येर आज्ञा बले ना पाय तरासे ॥२९
एइमत घरेघरे बलिया बुलिया।
प्रतिदिन विश्वम्भर स्थाने कहे गिया ॥३०
एक दिन पथे देखे दुइ मातोयाल।
महा दैत्य प्राय हइ मद्यप बिशाल ॥३१
से दुइ जनेर कथा कहिते अपार।
तारा नाहि करे, हेन पाप नाहि आर ॥३२
ब्राह्मण हइया मद्य-गोमांस भक्षण।
डाका चुरि परगृह दाहे सर्वक्षण ॥३३
देयाने नाहिक देखा बोलाय कोटाल।
मद्यपान बिने आर नाहि याय काल ॥३४
दुइजन पथे पड़ि गड़ागड़ि याय।
याहारे लागालि पाय ताहारे किलाय ॥३५
दूरे थाकि लोकसब पथे देखे रङ्ग।
सेइखाने नित्यानन्द हरिदास सङ्ग ॥३६
क्षणे दुइजने प्रीत क्षणे धरे चुले।
चकार बकार शब्द उच्च करि बोले ॥३७
नदीयार विप्रेर करिब जाति नाश।
मद्येर बिक्षेपे कारे करये आश्वास ॥३८
सर्व पाप सेइ दुइर शरीरे जन्मिल।
वैष्णवेर निन्दा पाप सबे ना हइल ॥३९
अहर्निश मद्यपेर सङ्गे रङ्गे थाके।
नहिल वैष्णव-निन्दा एइ सब पाके ॥४०
ये सभाय वैष्णवेर निन्दा मात्र हय।
सर्व धर्म थाकिलेओ तभु हय क्षय ॥४१
सन्न्यासि सभाय यदि हय निन्द्य कर्म।
मद्यपेरो सभा हैते से सव अधर्म्य ॥४२
मद्यपेर निष्कृति आछये कोन काले।
परचर्च्चकेर गति नहे कभु भाले ॥४३
शास्त्र पढ़ियाओ कारो करो बुद्धिनाश।
नित्यानन्द निन्दा करे हबे सर्वनाश ॥४४
दुइजना किलाकिलि गालागालि करे।
नित्यानन्द हरिदास देखे थाकि दूरे ॥४५
लोक स्थाने नित्यानन्द जिज्ञासे आपने।
"कोन् जाति दुइजन हेन मत केने ?"४६
लोक बोले गोसाञि ब्राह्मण दुइजन।
दिव्य पिता माता महा कुले उतपन्न ॥४७
सर्वकाल नदीयाय पुरुषे पुरुषे।
तिलार्द्धेको दोष नाहि ए दोहार वंशे ॥४८
एइ दुइ गुणवन्त पासरिल धर्म।
जन्म हैते एमत करये अपकर्म ॥४९
छाड़िल गोष्ठीये बड़ दुर्जन देखिया।
मद्यपेर सङ्गे बुले स्वतन्त्र हैया ॥५०

ए दुइ देखिया सब नदीया डराय।
पाछे कारो कोन दिन वसति पोड़ाय ॥५१

हेन पाप नाहि याहा ना करे दुइजन।
डाका चुरि मद्य मांस करये भक्षण ॥५२

शुनि नित्यानन्द बड़ करुण हृदय।
दुइर उद्धार चिन्ते हइया सदय ॥५३

पापी उद्धारिते प्रभु कैला अवतार।
एमत पातकी कोथा पाइबेन आर ॥५४

लुकाइया करे प्रभु आपना प्रकाश।
प्रभाव ना देखि लोक करे उपहास ॥५५

ए दुइरे प्रभु यदि अनुग्रह करे।
तबे से प्रभाब देखे सकल संसारे ॥५६

तबे हङ नित्यानन्द चैतन्येर दास।
ए दुइरे करों यदि चैतन्य प्रकाश ॥५७

एखने ये मदे मत्त आपना ना जाने।
एइमत हय यदि श्रीकृष्णेर नामे ॥५८

मोर प्रभु बलि यदि कान्दे दुइजन।
तबे से सार्थक मोर यत पर्य्यटन ॥५९

ये ये जन ए-दुइर छाया परशिया।
बस्त्रेर सहित गङ्गास्नान कैल गिया ॥६०

सेइ सब जन यबे ए-दोँहारे देखि।
गङ्गास्नान हेन माने तबे मोरे लेखि ॥६१

श्रीनित्यानन्द प्रभुर से महिमा अपार।
पतितेर त्राण लागि याँर अवतार ॥६२

ए सब चिन्तिया मने हरिदास प्रति।
बोले हरिदास देख दोँहार दुर्गति ॥६३

ब्राह्मण हइया येन दुष्ट व्यबहार।
ए दोँहार यम घरे नाहि प्रतिकार ॥६४

प्राणान्ते मारिल तोमा ये यबनगणे।
ताहाराओ करिला तुमि भाल मनेमने ॥६५

यदि तुमि शुभानुसन्धान कर मने।
तबे से उद्धार पाय एइ दुइजने ॥६६

तोमार सङ्कल्प प्रभु ना करे अन्यथा।
आपने कहिला प्रभु एइ तत्त्व कथा ॥६७

प्रभुर प्रभाब सब देखुक संसार।
चैतन्य करिल हेन दुइर उद्धार ॥६८

येन गाय अजामिल उद्धार पुराणे।
साक्षाते देखुक एबे ए तिन भुवने ॥६९

नित्यानन्द तत्त्व हरिदास भाल जाने।
पाइल उद्धार दुइ जानिलेन मने ॥७०

हरिदास प्रभु बोले शुन महाशय!
तोमार ये इच्छा से-इ प्रभुर निश्चय ॥७१

आमारे भाण्डाह येन पशुरे भाण्डाह।
आमारे से तुमि पुनःपुनः परिखाह ॥७२

हासि नित्यानन्द ताने दिला आलिङ्गन।
अत्यन्त कोमल हइ बोलेन बचन ॥७३

"प्रभुर ये आज्ञा लइ आमरा बेड़ाइ।
ताहा कहि एइ दुइ मद्यपेर ठाँइ ॥७४

सभारे भजिते कृष्ण प्रभुर आदेश।
तार मध्ये अतिशय-पापीरे विशेष ॥७५

बलिबार भार मात्र आमा दोँहाकार।
बलिले ना लय यबे सेइ भार तार ॥"७६

बलिते प्रभुर आज्ञा से दुइर स्थाने।
नित्यानन्द हरिदास करिला गमने ॥७७

साधु लोके माना करे निकटे ना याओ।
नागालि पाइले पाछे पराण हाराओ ॥७८

आमरा अन्तरे थाकि परम तरासे।
तोमरा निकटे याह केमन साहसे ॥७९

किसेर सन्न्यासि ज्ञान ओ दुइर ठाञि।
ब्रह्मबधे गोबधे याहार अन्त नाञि ॥८०

अथापिह दुइजन कृष्णकृष्ण बलि ।
निकटे चलिला दोँहे महा-कुतूहली ॥८१
शुनिबारे पाय हेन निकटे थाकिया ।
कहेन प्रभुर आज्ञा डाकिया डाकिया ॥८२
बोल कृष्ण भज कृष्ण लह कृष्णनाम ।
कृष्ण माता कृष्ण पिता कृष्ण धन प्राण ॥८३
तोमा सभा लागिया कृष्णेर अवतार ।
हेन कृष्ण भज, सब छाड़ अनाचार ॥८४
डाक शुनि माथा तुलि चाहे दुइजन ।
महा क्रोधे दुइजन अरुण नयन ॥८५
सन्न्यासी आकार देखि माथा तुलि चाहे ।
"धर धर" बलि दोँहे धरिबारे याये ॥८६
आथेव्यथे निन्यानन्द हरिदास धाय ।
रह रह बलि दुइ दस्यु पाछे याय ॥८७
धाइया आइसे पाछे तर्जगर्ज करे ।
महा भय पाइ दुइ प्रभु धाय डरे ॥८८
लोके बोले तखनेइ निषेध करिल ।
ए दुइ सन्न्यासी आजि सङ्कटे पड़िल ॥८९
यतेक पाषण्डी सब हासे मनेमने ।
भण्डेर उचित शास्ति कैल नारायणे ॥९०
कृष्ण! रक्ष कृष्ण! रक्ष सुब्राह्मणे बोले ।
से स्थान छाड़िया भये चलिला सकले ॥९१
दुइ दस्यु धाय दुइ ठाकुर पलाय ।
धरिलुँ धरिलु बले लागि नाहि पाय ॥९२
नित्यानन्द बोले भाल हइल वैष्णव ।
आजि यदि प्राण वाँचे तबे पाइ सब ॥९३
हरिदास बोले ठाकुर! आर केने बोल ।
तोमार बुद्धिते अपमृत्ये प्राण गेल ॥९४
मद्यपेरे येन कैले कृष्ण उपदेश ।
उचित ताहार शास्ति प्राण अबशेष ॥९५
एत बलि धाय प्रभु हासिया हासिया ।
दुइ दस्यु पाछे याय तर्जिया गर्जिया ॥९६
दोँहार शरीर स्थूल ना पारे धाइते ।
तथापिह धाय दुइ मद्यप देखिते ॥९७
दुइ दस्यु बोले भाइ! कोथारे याइबा ।
जगाइ माधाइ हाते केमते वाँचिबा ॥९८
तोमरा ना जान एथा जगा-माधा आछे ।
खाणि रह उलटिला हेर् देख पाछे ॥९९
त्रासे धाय दुइ प्रभु बचन शुनिया ।
रक्ष कृष्ण रक्ष कृष्ण गोविन्द बलिया ॥१००
हरिदास बोले आमि ना पारि चलिते ।
जानिआओ आसि आमि चञ्चल-सहिते ॥१०१
राखिलेन कृष्ण काल यबनेर ठाँइ ।
चञ्चलेर बुद्ध्ये आजि प्राण से हाराइ ॥१०२
नित्यानन्द बोले आमि नहिये चञ्चल ।
मने भाबि देख तोमार प्रभु से विह्वल ॥१०३
ब्राह्मण हइया येन राज आज्ञा करे ।
तान बोल बलि सब प्रति घरे घरे ॥२०४
कोथाओ ये नाहि शुनि सेइ आज्ञा ताँर ।
चोर ढङ्ग बइ लोक नाहि बोले आर ॥१०५
ना करिले आज्ञा तान सर्वनाश करे ।
करिलेओ आज्ञा तान एइ फल धरे ॥१०६
आपन प्रभुर दोष ना जानह तुमि ।
दुइ जने बलिलाङ दोषभागी आमि ॥१०७
हेनमते दुइजने आनन्द कन्दल ।
दुइ दस्यु धाय पाछे देखिया बिकल ॥१०८
धाइया आइला निज ठाकुरेर बाड़ी ।
मद्येर बिक्षेपे दस्यु पाड़े रड़ारड़ि ॥१०९
देखा ना पाइया दुइ मद्यप रहिल ।
शेबे हुड़ाहुड़ि दुइजनेइ बाजिल ॥११०

मद्येर विक्षेपे दुइ किछु ना जानिल।
आछिल वा कोन् स्थाने कोथा वा रहिल ॥१११
कथोक्षणे दुइ प्रभु उलटिया चाहे।
कोथा गेल दुइ दस्यु देखिते ना पाये ॥११२
स्थिर हइ दुइजने कोलाकोलि करे।
हासिया चलिला यथा प्रभु विश्वम्भरे ॥११३
बसि आछे महाप्रभु कमललोचन।
सर्वाङ्गसुन्दर रूप मदनमोहन ॥११४
चतुर्द्दिगे रहियाछे वैष्णवमण्डल।
अन्योऽन्ये कृष्णकथा कहेन सकल ॥११५
कहये आपन तत्त्व सभा मध्ये रङ्गे।
श्वेतद्वीपपति येन सनकादि सङ्गे ॥११६
नित्यानन्द हरिदास हेनइ समय।
दिवस वृत्तान्त यत सम्मुखे कहय ॥११७
अपरूप देखिलाङ आजि दुइजन।
परम मद्यप पुन बोलाय ब्राह्मण ॥११८
भाल रे बलिल तारे बोल कृष्ण नाम।
खेदाड़िया आइल भाग्ये रहिल पराण ॥११९
प्रभु बोले के से दुइ किबा तार नाम।
ब्राह्मण हइया केने करे हेन काम ?१२०
सम्मुखे आछिला गङ्गादास श्रीनिवास।
कहये यतेक तार बिकर्म प्रकाश ॥१२१
से दुइर नाम प्रभु ! जगाइ माधाइ।
सुब्राह्मणपुत्र दुइ जन्म एइ ठाँइ ॥१२२
सङ्गदोषे से दोँहार हैल हेन मति।
आजन्म मदिरा बइ आन नाहि गति ॥१२३
से दुइर तरे नदीयार लोक डरे।
हेन नाहि यार घरे चुरि नाहि करे ॥१२४
से दुइर पातक कहिते नाहि ठाञि।
आपने सकल देख जानह गोसाञि !१२५

प्रभु बोले जानोँ जानोँ सेइ दुइ बेटा।
खण्डखण्ड करिमु आइले मोर एथा ॥१२६
नित्यानन्द बोले खण्डखण्ड कर तुमि।
से दुइ थाकिते कति ना याइब आमि ॥१२७
किसेर वा एत तुमि करह बड़ाइ।
आगे सेइ-दुइरे ये गोविन्द बोलाइ ॥१२८
स्बभाबेइ धार्मिक बोलये कृष्णनाम।
ए दुइ बिकर्म बइ नाहि जाने आन ॥१२९
ए दुइर उद्धार यदि दिया भक्ति दान।
तबे जानि पातकि पावन हेन नाम ॥१३०
आमारे तारिया यत तोमार महिमा।
ततोधिक ए दोँहार उद्धारेर सीमा ॥१३१
हासि बोले विश्वम्भर हइल उद्धार।
येइक्षणे दरशन पाइल तोमार ॥१३२
विशेषे चिन्तह तुमि एतेक मङ्गल।
अचिरात कृष्ण तार करिब कुशल ॥१३३
श्रीमुखेर वाक्य शुनि भागवतगण।
जयजय हरि ध्वनि करिला तखन ॥१३४
"हइल उद्धार" सभे मानिला हृदये।
अद्वैतेर स्थाने हरिदास तथा कहे ॥१३५
चञ्चलेर सङ्गे प्रभु आमारे पाठाय।
आमि थाकि कोथा से बा कोन् दिगे याय ॥१३६
बरिषाते जाह्नवीते कुम्भीरे बेड़ाय।
साँतार एड़िया तारे धरिबारे याय ॥१३७
कूले थाकि डाक पाड़ि करि हाय हाय।
सकल गङ्गार माझे भासिया बेड़ाय ॥१३८
यदि वा कूलेते उठे छाओयाल देखिया।
मारिबार तरे शिशु याय खेदाड़िया ॥१३९
तार पिता माता आइसे हाथे ठेङ्गा लइया।
तासभा पाठाइ आमि चरणे धरिया ॥१४०

गोयालार घृत दधि लइया पलाय।
आमारे धरिया तारा मारिबारे जाय ॥१४१
सेइ से करये कर्म ये युगत नहे।
कुमारी देखिया बोले मोरे विवाहिये ॥१४२
चढ़िया षाँड़ेर पिठे 'महेश' बोलाय।
परेर गाबीर दुग्ध ताहा दुहि खाय ॥१४३
आमि शिखाइते गालि पाड़ये तोमारे।
तोहोर अद्वैत मोर कि करिते पारे ॥१४४
चैतन्य-बलिस् यारे ठाकुर करिया।
से बा कि करिते पारे आमारे आसिया ॥१४५
किछुइ ना कहि आमि ठाकुरेर स्थाने।
दैवे भाग्ये आजि रक्षा पाइल पराणे ॥१४६
महा-मातोयाल दुइ पथे पड़ि आछे।
कृष्ण उपदेश गिया कहे तार काछे ॥१४७
महा-क्रोधे धाइया आइसे मारिबार।
जीवन रक्षार हेतु प्रसाद तोमार ॥१४८
हासिया अद्वैत बोले कोन चित्र नहे।
मद्यपेर उचित मद्यप सङ्ग हये ॥१४९
तिन मातोयाल सङ्ग एकत्र उचित।
नैष्ठिक हइया केने तुमि तार भित ?१५०
नित्यानन्द करिब सकल मातोयाल।
उहान चरित्र आमि जानि भालेभाल ॥१५१
एइ देख तुमि दिन दुइ तिन ब्याजे।
सेइ दुइ मद्यप आनिब गोष्ठी-माझे ॥१५२
बलिते अद्वैत हइलेन क्रोधावेश।
दिगम्बर हइ बोले अशेष विशेष ॥१५३
"शुषिब सकल चैतन्येर कृष्णभक्ति।
केमने नाचये गाय देखों ताँर शक्ति ॥१५४
देख कालि सेइ दुइ मद्यप आनिया।
निमाञि निताइ दुइ नाचिब मिलिया ॥१५५
एकाकार करिबेक सेइ दुइ जने।
जाति लइ तुमि आमि पलाइ यतने ॥"१५६
अद्वैतेर क्रोधावेशे हासे हरिदास।
मद्यप उद्धार चित्ते हइल प्रकाश ॥१५७
अद्वैत बचन बुझे काहार शकति।
बुझे हरिदास प्रभु यार येन मति ॥१५८
एबे पापीसब अद्वैतेर पक्ष हैया।
गदाधर निन्दा करे मरये पुड़िया ॥१५९
ये पापिष्ठ एक वैष्णवेर पक्ष हय।
अन्य वैष्णवेरे निन्दे से-इ याय क्षय ॥१६०
सेइ दुइ मद्यप बेड़ाय स्थाने स्थाने।
आइल ये घाटे प्रभु करे गङ्गास्नाने ॥१६१
दैवयोगे सेइखाने करिबेक थाना।
बेड़ाइया बुले सर्वठाञि देइ हाना ॥१६२
सकल लोकेर चित्त हइल सशङ्क।
किबा बड़ किबा धनी किबा महा रङ्क ॥१६३
निशा हेले केहो नाहि याय गङ्गास्नाने।
यदि याय दशविश करये गमने ॥१६४
प्रभुर बाड़ीर काछे थाके निशाभागे।
सर्व-रात्रि प्रभुर कीर्त्तन शुनि जागे ॥१६५
मृदङ्ग मन्दिरा बाजे कीर्त्तनेर सङ्गे।
मद्येर बिक्षेपे तारा शुनि नाचे रङ्गे ॥१६६
दूरे थाकि सब ध्वनि शुनिबारे पाय।
शुनिलेइ नाचिया अधिक मद्य खाय ॥१६७
यखन कीर्त्तन रहे सेह दुइ रहे।
शुनिया कीर्त्तन पुन उठिया नाचये ॥१६८
मद्यपाने विह्वल किछुइ नाहि जाने।
आछिल बा कोथाय आछये कोन स्थाने ॥१६९
प्रभुरे देखिया बोले निमाञिपण्डित !
कराइला संपूर्ण मङ्गलचण्डी गीत ॥१७०

गायेन सब भाल मुञि देखिबारे चाङ ।
सकल आनिया दिब यथा येइ पाङ ॥१७१
दुर्जन देखिया प्रभु दूरेदूरे याय ।
आर आर पथ दिया सभेइ पलाय ॥१७२
एकदिन नित्यानन्द नगर भ्रमिया ।
निशाय आइसे दोँहे धरिलेक गिया ॥१७३
के रे के रे बलि डाके जगाइ माधाइ ।
नित्यानन्द बोलेन प्रभुर बाड़ी याइ ॥१७४
मद्येर बिक्षेपे बोले किबा नाम तोर ?
नित्यानन्द बोले अबधूत नाम मोर ॥१७५
बाल्यभावे महा-मत्त नित्यानन्द राय ।
मद्यपेर सङ्गे कथा कहेन लीलाय ॥१७६
उद्धारिब दुइजने हेन आछे मने ।
अतएब निशाभागे आइला से स्थाने ॥१७७
अबधूत नाम शुनि माधाइ कुपिया ।
मारिल प्रभुर शिरे मुटुकी तुलिया ॥१७८
फुटिल मुटुकी शिरे रक्त पड़े धारे ।
नित्यानन्द महाप्रभु गोविन्द स्मङरे ॥१७९
दया हैल जगाइर रक्त देखि माथे ।
आरबार मारिते धरिल दुइ हाथे ॥१८०
"केने हेन करिले निर्द्दय तुमि दढ़ ।
देशान्तरी मारिया हैबा कोन् बड़ ?१८१
एड़ एड़ अबधूत ना मारिह आर ।
सन्नचासी मारिया कोन् लाभ बा तोमार॥१८२
आथेव्यथे लोक गिया प्रभुरे कहिला ।
साङ्गोपाङ्गे ततक्षणे ठाकुर आइला ॥१८३
नित्यानन्द अङ्गे सब रक्त पड़े धारे ।
हासे नित्यानन्द सेइ दुइर भितरे ॥१८४
रक्त देखि क्रोधे प्रभु वाह्य नाहि माने ।
"चक्र!चक्र!चक्र!" प्रभु डाके घने घने ॥१८५

आथेव्यथे चक्र आसि उपसन्न हैल ।
जगाइ माधाइ ताहा नयने देखिल ॥१८६
प्रमाद गणिला सब भागवतगण ।
आथेव्यथे नित्यानन्द करे निबेदन ॥१८७
माधाइ मारिते प्रभु ! राखिल जगाइ ।
दैवे से पड़िल रक्त दुःख नाहि पाइ ॥१८८
मोरे भिक्षा देह प्रभु ! ए दुइ शरीर ।
किछु दुःख नाहि मोर तुमि हओ स्थिर ॥१८९
जगाइ राखिल हेन बचन शुनिया ।
जगाइरे आलिङ्गन कैला सुखी हैया ॥१९०
जगाइरे बोले कृष्ण कृपा करु तोरे ।
नित्यानन्द राखिया किनिलि तुञि मोरे ॥१९१
ये अभीष्ट चित्ते देख ताहा तुमि माग ।
आजि हैते हउ तोर प्रेमभक्ति लाभ ॥१९२
जगाइरे बर शुनि वैष्णवमण्डल ।
जयजय हरि ध्वनि करिला सकल ॥१९३
प्रेमभक्ति हउ करि यखन बलिल ।
तखने जगाइ प्रेमे मूर्च्छित हइल ॥१९४
प्रभु बोले जगाइ उठिया देख मोरे ।
सत्य आमि प्रेमभक्ति दान दिल तोरे ॥१९५
चतुर्भुज शङ्ख चक्र गदा पद्मधर ।
जगाइ देखिल सेइ प्रभु विश्वम्भर ॥१९६
देखिया मूर्च्छित हैया पड़िल जगाइ ।
बक्षे श्रीचरण दिला चैतन्यगोसाञि ॥१९७
पाइया चरण धन लक्ष्मीर जीवन ।
धरिल जगाइ येन अमूल्य रतन ॥१९८
चरणे धरिया कान्दे सुकृति जगाइ ।
एमत अपूर्व करे गौराङ्गगोसाञि ॥१९९
एक जीव दुइ देह जगाइ माधाइ ।
एक-पुण्य एक-पाप वैसे एक ठाँइ ॥२००

जगाइरे प्रभु यबे अनुग्रह कैल ।
माधाइर चित्त ततक्षरणे भाल हैल ॥२०१
आथेव्यथे नित्यानन्द वसन एड़िया ।
पड़िल चरण धरि दण्डवत हैया ॥२०२
दुइजने एक-ठाञि कैल प्रभु ! पाप ।
अनुग्रह केने प्रभु ! हय दुइ भाग ?२०३
मोरे अनुग्रह कर लङ तोर नाम ।
आमारे उद्धार करिबारे नारे आन ॥२०४
प्रभु बोले तोर त्राण नाहि देखि मुञि ।
नित्यानन्द अङ्गे रक्त पाड़िलि से तुञि ॥२०५
माधाइ बोलेये इहा बलिते ना पार ।
आपनार धर्म प्रभु आपनि केने छाड़ ?२०६
बाणे बिन्धिलेक तोमा ये असुरगणे ।
निज पद ता'सभारे तबे दिले केने ?२०७
प्रभु बोले ताहा हैते तोर अपराध ।
नित्यानन्द अङ्गे तुञि कैलि रक्तपात ॥२०८
मो हइते मोर नित्यानन्द देह बड़ ।
तोर स्थाने एइ सत्य कहिलाम दढ़ ॥२०९
सत्य यदि कहिला ठाकुर मोर स्थाने ।
बोलह निष्कृति मुञि तरिमु केमने ?२१०
सर्व रोग नाश वैद्यचूड़ामणि तुमि ।
तुमि रोग चिकिच्छिले सुस्थ हइ आमि ॥२११
ना कर कपट प्रभु संसारेर नाथ !
बिदित हइला आर लुकाइबा का'त ?२१२
प्रभु बोले अपराध कैले तुमि बड़ ।
नित्यानन्दचरण धरिया तुमि पड़ ॥२१३
पाइया प्रभुर आज्ञा माधाइ तखन ।
धरिल अमूल्यधन निताइरचरण ॥२१४
ये चरण धरिले ना याइ कभु नाश ।
रेवती जानेन येइ चरण-प्रकाश ॥२१५

विश्वम्भर बोले शुन नित्यानन्द राय ।
पड़िले चरणे कृपा करिते जुयाय ॥२१६
तोमार अङ्गेते येन कैल रक्तपात ।
तुमि से क्षमिते पार यत अपराध ॥२१७
नित्यानन्द बोले प्रभु कि बलिब मुञि ।
भृत्य द्वारेकृपा कर सेह शक्ति तुञि ॥२१८
कोन जन्मे थाके यदि आमार सुकृति ।
सब दिलुँ माधइरे शुनह निश्चित ॥२१९
मोर यत अपराध किछु दाय नाइ ।
माया छाड़ कृपा कर तोमार माधाइ ॥२२०
विश्वम्भर बोले यदि क्षमिला सकल ।
माधाइरे कोल देह हउक कुशल ॥२२१
प्रभुर आज्ञाय कैल दृढ़ आलिङ्गन ।
माधाइर हैल सर्व बन्ध बिमोचन ॥२२२
माधाइर देहे नित्यानन्द प्रवेशिला
सर्व शक्ति समन्वित माधाइ हइला ॥२२३
हेनमते दुइजने पाइला मोचने ।
दुइजने स्तुति करे दुइर चरणे ॥२२४
प्रभु बोले तोरा आर ना करिस पाप ।
जगाइ माधाइ बोले आर नारे बाप ॥२२५
कभु बोले शुनशुन तुमि दुइ जन !
सत्य तोरे एइ आमि बलिल बचन ॥२२६
कोटि कोटि जन्मे यत आछे पाप तोर ।
आर यदि ना करिस् सब दाय मोर ॥२२७
तो सभार मुखे मुञि करिब आहार ।
तोर देह हइबेक मोर अवतार ॥२२८
प्रभुर शुनिया वाक्य जगाइ माधाइ ।
आनन्दे मूर्च्छित हइ पड़िला तथाइ ॥२२९
मोह गेल दुइ विप्र आनन्दसागरे ।
बुझि आज्ञा करिलेन प्रभु विश्वम्भरे ॥२३०

दुइजने तुलि लह आमार बाड़ीते ।
कीर्त्तन करिब दुइजनेर सहिते ॥२३१
ब्रह्मार दुर्लभ आजि ए दोँहारे दिब ।
ए दोँहारे जगतेर उत्तम करिब ॥२३२
ए दुइ परशे ये करिल गङ्गास्नान ।
ए दुइरे बलिवेक गङ्गार समान ॥२३३
नित्यानन्द प्रतिज्ञा अन्यथा नाहि हय ।
नित्यानन्द इच्छा मुञि जानिह निश्चय ॥२३४
जगाइ माधाइ सब वैष्णवे धरिया ।
प्रभुर बाड़ीर अभ्यन्तरे गेला लैया ॥२३५
आप्तगण साम्भाइला प्रभुर सहिते ।
पड़िल कपाट कारो शक्ति नाहि याइते ॥२३६
वसिला आसिया महाप्रभु विश्वम्भर ।
दुइ पाशे शोभे नित्यानन्द गदाधर ॥२३७
सम्मुखे अद्वैत वैसे महापात्र राज ।
चारिदिके वैसे सब वैष्णव समाज ॥२३८
पुण्डरीक विद्यानिधि प्रभु हरिदास ।
गरुड़ाइ रामाइ श्रीवास गङ्गादास ॥२३९
वक्रेश्वर-पण्डित चन्द्रशेखर आचार्य्य ।
ए सब जानये चैतन्येर सर्व कार्य्य ॥२४०
अनेक महान्त आर चैतन्य बेढ़िया ।
आनन्दे वसिला जगाइ माधाइ लइया ॥२४१
लोमहर्ष, महा अश्रु, कम्प सर्व गा,य ।
जगाइ माधाइ दुइ गड़ागड़ि याय ॥२४२
कार् शक्ति बुझिते चैतन्य अभिमत ।
दुइ दस्यु करे–दुइ महाभागवत ॥२४३
तपस्वी सन्नयासी करे परम पाषण्ड ।
एइमत लीला तान अमृतेर खण्ड ॥२४४
इहाते विश्वास यार से-इ कृष्ण पाय ।
इथे यार सन्देह से अधःपाते याय ॥२४५
जगाइ माधाइ दुइजने स्तुति करे ।
सभार सहित शुने गौराङ्गसुन्दरे ॥२४६
शुद्धा सरस्वती दुइजनेर जिह्वाय ।
वसिला चैतन्यचन्द्रप्रभुर आज्ञाय ॥२४७
नित्यानन्द चैतन्येर प्रकाश एकत्र ।
देखिलेन दुइजने यार येन तत्त्व ॥२४८
सेइमत स्तुति करे दुइ महाशय ।
ये स्तुति शुनिले कृष्णभक्ति लभ्य हय ॥२४९
जयजय महाप्रभु अय विश्वम्भर ।
जयजय नित्यानन्द विश्वम्भर धर ॥२५०
जयजय निजनाम-विनोद आचार्य्य ।
जय नित्यानन्द चैतन्येर सर्व-कार्य्य ॥२५१
जयजय जगन्नाथमिश्रेर नन्दन ।
जयजय नित्यानन्द चैतन्य शरण ॥२५२
जयजय शचीपुत्र करुणार सिन्धु ।
जयजय नित्यानन्द चैतन्येर बन्धु ॥२५३
जय राजपण्डितदुहिता प्राणेश्वर ।
जय नित्यानन्द कृपामय कलेवर ॥२५४
सेइ जय प्रभु तुमि यत कर काज ।
जय नित्यानन्दचन्द्र वैष्णवाधिराज ॥२५५
जयजय शङ्ख चक्र गदा पद्मधर ।
प्रभुर विग्रह जय अवधूतवर ॥२५६
जयजय अद्वैतजीवन गौरचन्द्र ।
जयजय सहस्रवदन नित्यानन्द ॥२५७
जय गदाधर-प्राण मुरारि-ईश्वर ।
जय हरिदास वासुदेव प्रियङ्कर ॥२५८
पापी उद्धारिले यत नाना अवतारे ।
परम अद्भुत याहा घोषये संसारे ॥२५९
आमि दुइ पातकीर देखिया उद्धार ।
अल्पत्व पाइल पूर्व महिमा तोमार ॥२६०

अजामिल-उद्धारेर यतेक महत्त्व ।
आमार उद्धारे सेहो पाइल अल्पत्व ॥२६१
सत्य कहि आमि किछु स्तुति नाहि करि ।
उचितेइ अजामिल मुक्ति-अधिकारी ॥२६२
कोटि ब्रह्म बधि यदि तोर नाम लये ।
सद्य मोक्ष तार वेदे एइ सत्य कहे ॥२६३
हेन नाम अजामिल कैल उच्चारण ।
तेञि चित्र नहे अजामिलेर मोचन ॥२६४
वेद-सत्य पालिते तोमार अवतार ।
मिथ्या हय वेद तबे ना कैले उद्धार ॥२६५
आमि द्रोह कैलुँ प्रिय शरीरे तोमार ।
तथापिह आमि-दुइ करिले उद्धार ॥२६६
एबे बुझि देख प्रभु आपनार मने ।
कत कोटि अन्तर आमरा दुइजने ॥२६७
नारायण नाम शुनि अजामिल-मुखे ।
चारि महाजन आइला सेइजन देखे ॥२६८
आमि देखिलाम तोमा' रक्तपाड़ि अङ्गे ।
साङ्गोपाङ्ग, अस्त्र, पारिषद सब सङ्गे ॥२६९
गोप्य करि राखिछिला ए सब महिमा ।
एबे व्यक्त हैल प्रभु ! महिमार सीमा ॥२७०
एबे से हइल वेद महाबलवन्त ।
एबे से बड़ाजि करि गाइब अनन्त ॥२७१
एबे से बिदित हैल गोप्य गुणग्राम ।
निर्लक्ष्य उद्धार प्रभु इहार से नाम ॥२७२
यदि हेन बोल कंस आदि दैत्यगण ।
ताहाराओ द्रोह करि पाइल मोचन ॥२७३
कत लक्ष्य आछे तथि देख निज मने ।
निरन्तर देखिलेक से नरेन्द्रगणे ॥२७४
तोमा'सने युझिलेक क्षत्रियेर धर्म ।
भये तोमा निरन्तर चिन्तिलेक मर्म ॥२७५

तथापि नारिल द्रोह पाप एड़ाइते ।
पड़िल नरेन्द्र सब वंशेर सहिते ॥२७६
तोमारे देखिते निज शरीर छाड़िल ।
तबे कोन् महाजने तारे परशिल ?२७७
आमारे परशे एबे भागवतगणे ।
छाया छुञि ये ये जन कैला गङ्गास्नान ॥२७८
सर्वमते प्रभु तोर ए महिमा बड़ ।
काहारे भाण्डिबे ? सभे जानिलेक दढ़ ॥२७९
महाभक्त गजराज करिला स्तवन ।
एकान्तशरण देखि करिला मोचन ॥२८०
दैवे से उपमा नहे असुरी पूतना ।
अघ-बक-आदि यत केहो नहे सीमा ॥२८१
छाड़िया से देह तारा गेल दिव्य गति ।
वेद विने ताहा देखे काहार शकति ॥२८२
ये करिला एइ दुइ पातकी शरीरे ।
साक्षाते देखिल इहा सकल संसारे ॥२८३
यतेक करिला तुमि पातकी उद्धार ।
कारो कोनरूपे लक्ष्य आछे सभाकार ॥२८४
निर्लक्ष्ये तारिला ब्रह्मदैत्य दुइजन ।
तोमार कारुण्य सबे इहार कारण ॥२८५
बलिया बलिया कान्दे जगाइ माधाइ ।
तोमाविनु दयाल ठाकुर आर नाञि ॥२८६
यतेक वैष्णवगण अपूर्व देखिया ।
जोड़हाथे स्तुति करे सभे दाण्डाइया ॥२८७
ये स्तुति करिल प्रभु एइ दुइ मद्यपे ।
तोर कृपा विने इहा जाने कार बापे ॥२८८
तोमार अचिन्त्य शक्ति के बुझिते पारे ।
यखन ये रूपे कृपा करह याहारे ॥२८९
प्रभु बोले ए दुइ मद्यप नहे आर ।
आजि हैते एइ दुइ सेवक आमार ॥२९०

सभे मिलि अनुग्रह करह दोँहारे।
जन्मेजन्मे आर येन आमा ना पासरे ॥२९१
ये ये रूपे यार ठाञि आछे अपराध।
क्षमिया ए दुइ प्रति करह प्रसाद ॥२९२
शुनिया प्रभुर आज्ञा जगाइ माधाइ।
सभार चरण धरि पड़िल तथाइ ॥२९३
सर्व-महाभागवत कैला आशीर्वाद।
जगाइ माधाइ हइला निर-अपराध ॥२९४
प्रभु बोले उठउठ जगाइ माधाइ!
हइला आमार दास आर चिन्ता नाइ ॥२९५
तुमि दुइ यत किछु करिला स्तवन।
परम सुसत्य, किछु ना हय खण्डन ॥२९६
सशरीरे कभु कारो हेन नाहि हय।
नित्यानन्द प्रसादे से जानिह निश्चय ॥२९७
तो सभार यत पाप मुञि निल सब।
साक्षाते देखह भाइ एइ अनुभव ॥२९८
दुइजनार शरीरे पातक नाहि आर।
इहा बुझाइते हैला कालिया आकार ।२९९
प्रभु बोले "तोमरा आमारे देख केन?"
अद्वैत बोलये श्रीगोकुलचन्द्र येन ॥३००
अद्वैत प्रतिभा शुनि हासे विश्वम्भर।
'हरि' बलि ध्वनि करे यत अनुचर ॥३०१
प्रभु बोले काला देख दुइर पातके।
कीर्त्तन करह सब याउक निन्दके ॥३०२
शुनिया प्रभुर वाक्य सभार उल्लास।
महानन्दे हइल कीर्त्तन परकाश ॥३०३
नाचे प्रभु विश्वम्भर नित्यानन्द सङ्गे।
बेढ़िया वैष्णव सब यश गाय रङ्गे ॥३०४
नाचेये अद्वैत यार लागि अवतार।
याहार कारणे हैल जगत उद्धार ॥३०५

कीर्त्तन करये सभे दिया करताली।
सभेइ करेन नृत्य हइ कुतूहली ॥३०६
प्रभु सङ्गे महानन्दे कारो नाहि भय।
प्रभु सङ्गे कत लक्ष ठेलाठेलि हय ॥३०७
बधु सङ्गे देखे आइ घरेर भितर।
वसिया भासये आइ आनन्दसागरे ॥३०८
सभेइ परमानन्द देखिया प्रकाश।
काहारो ना घुचे कृष्णावेशेर उल्लास ॥३०९
यार अङ्ग परशिते रमा पाय भय।
से प्रभुर अङ्ग सङ्गे मद्यप नाचय ॥३१०
मद्यपेरे उद्धारिला चैतन्यगोसाञि।
वैष्णव निन्दके कुम्भीपाके दिला ठाञि ॥३११
निन्दाय ना वाढ़े धर्म सबे पाप लाभ।
एतेक ना करे निन्दा कोनो महाभाग ॥३१२
दुइ दस्यु दुइ महाभागवत करि।
गण सङ्गे नाचे प्रभु गौराङ्ग श्रीहरि ॥३१३
नृत्यावेशे वसिला ठाकुर विश्वम्भर।
वसिला चौदिगे बेढ़ि वैष्णवमण्डल ॥३१४
सर्व अङ्गे धूला चारि अङ्गुलि प्रमाण।
तथापि सभार अङ्ग निर्मल गेयान ॥३१५
पूर्ववत हैला प्रभु गौराङ्गसुन्दर।
हासिया सभारे बोले प्रभु विश्वम्भर ॥३१६
ए दुइरे पापी हेन ना करिह मने।
ए दुइर पाप मुञि लइलुँ आपने ॥३१७
सर्वदेहे मुञि करोँ बोलोँ चालोँ खाङ।
तत देह पात यबे मुञि चलि याङ ॥३१८
येइ देहे अल्प दुःखे जीव डाक छाड़े।
मुञि विने सेइ देह पुड़िले ना नड़े ॥३१९
तबे ये जीवेर दुःख करे अहङ्कार।
मुञि करोँ बोलोँ बलि राय महामार ॥३२०

एतेक यतेक कैल एइ दुइ जने ।
करिलाम आमि घुचाइलाम आपने ॥३२१
इहा जानि ए दुइरे सकल वैष्णव ।
देखिबा अभेद दृष्ट्ये येन तुमि सब ॥३२२
शुन एइ आज्ञा मोर ये हओ आमार ।
ए दुइरे श्रद्धा करि ये दिब आहार ॥३२३
अनन्त ब्रह्माण्ड माझे यत मधु वैसे ।
ये हय कृष्णेर मुखे दिले प्रेमरसे ॥३२४
ए दुइरे बट मात्रो दिब येइजन ।
तार से कृष्णेर मुखे मधु समर्पण ॥३२५
ए दुइ जनेरे ये करिब परिहास ।
ए दुइर अपराधे तार सर्वनाश ॥३२६
शुनिया वैष्णवगण कान्दे महाप्रेमे ।
जगाइ माधाइ प्रति करे परणामे ॥३२७
प्रभु बोले शुन सब भागवतगण ।
चल सभे याइ भागीरथीर चरण ॥३२८
सर्व-गण सहित ठाकुर विश्वम्भर ।
पड़िला जाह्नवीजले बल महाबल ॥३२९
कीर्त्तन आनन्दे यत भागवतगण ।
शिशु-प्राय चञ्चल चरित्र सर्वक्षण ॥३३०
महा भव्य बृद्ध सब सेहो शिशुमति ।
एइमत हय विष्णुभक्तिर शकति ॥३३१
गङ्गास्नान महोत्सब कीर्त्तनेर शेषे ।
प्रभु भृत्य बुद्धि गेल आनन्द आबेशे ॥३३२
जल देइ प्रभु सर्व-वैष्णवेर गा'य ।
केहो नाहि पारे सभे हासिया पलाय ॥३३३
जलयुद्ध करे प्रभु यार यार सङ्गे ।
कथोक्षण युद्ध करि सभे देइ भङ्गे ॥३३४
क्षणे केलि अद्वैत गौराङ्ग नित्यानन्दे ।
क्षणे केलि हरिदास श्रीवास मुकुन्दे ॥३३५
श्रीगर्भ, श्रीसदाशिव मुरारि, श्रीमान् ।
पुरुषोत्तम सञ्जय बुद्धिमन्तखान ॥३३६
विद्यानिधि, गङ्गादास, जगदीश नाम ।
गोपीनाथ, गदाधर, गरुड़, श्रीराम ॥३३७
गोविन्द, श्रीधर कृष्णानन्द काशीश्वर ।
जगदानन्द,गोविन्दानन्द'श्रीशुक्लाम्बर ॥३३८
अनन्त चैतन्य भृत्य कत निब नाम ।
वेदव्यास हइते व्यक्त हइब पुराण ॥३३९
अन्योऽन्ये सर्वजन जलकेलि करे ।
परानन्दरसे केहो जिने केहो हारे ॥३४०
गदाधर गौराङ्ग मिलिया जलकेलि ।
नित्यानन्द अद्वैते खेलये हइ मेलि ॥३४१
अद्वैत नयने नित्यानन्द महाबली ।
निर्घात करिया जल दिला कुतूहली ॥३४२
दुइ चक्षु अद्वैत मेलिते नाहि पारे ।
महाक्रोधाबेशे प्रभु गालागालि पाड़े ॥३४३
नित्यानन्द मद्यप करिल चक्षु काण ।
कोथा देते मद्यपेर हैल उपस्थान ॥३४४
श्रीवासपण्डितेर मूले जाति नाञि ।
कोथाकार अवधूते आनि दिल ठाञि ॥३४५
शचीर नन्दन चोर एत कर्म करे ।
निरवधि अवधूत संहति बिहरे ॥३४६
नित्यानन्द बोले मुखे नाहि वास लाज ।
हारिले आपने आर कन्दले कि काज ॥३४७
गौरचन्द्र बोले एकवारे नाहि जानि ।
तिनबार हइले से हारि जिति मानि ॥३४८
आरबार जलयुद्ध अद्वैत निताइ ।
कौतुक लागिला एक देह दुइ ठाँइ ॥३४९
दुइजने जलयुद्ध केहो नाहि पारे ।
एक बार जिने केहो आर बार हारे ॥३५०

आर बार नित्यानन्द सम्भ्रम पाइया ।
दिलेन नयने जल निर्घात करिया ॥३५१
अद्वैत पाइया दुःख बोले मानालिया ।
सन्न्यासी ना हय कभु ए ब्रह्म बधिया ॥३५२
पश्चिमार घरेघरे खाइयाछे भात ।
कुल जन्म जाति केहो ना जाने कोथात ॥३५३
माता पिता गुरु नाहि ना जानि किरूप ।
खाय परे सकल बोलाय अवधूत ॥३५४
नित्यानन्द प्रति स्तब करे व्यपदेशे ।
शुनि नित्यानन्द प्रभु गण सह हासे ॥३५५
"संहारिब सतत आमार दोष नाहि ।"
एत बलि जले झाँपे आचार्य्यगोसाञि ॥३५६
आचार्य्येर क्रोधे हासे भागवतगण ।
क्रोधे तत्त्व कहे हेन शुनि कुबचन ॥३५७
हेन रस कलहेर मर्म ना बुझिया ।
भिन्न ज्ञाने निन्दे वन्दे से मरे पुड़िया ॥३५८
निश्चय गौराङ्गचन्द्र यारे कृपा करे ।
से-इ से वैष्णववाक्य बुझिबारे पारे ॥३५९
सेइ कथोक्षणे दुइ महाकुतूहली ।
नित्यानन्द अद्वैत हइल कोलाकोली ॥३६०
महामत्त दुइप्रभु गौरचन्द्र रसे ।
सकल गङ्गार माझ नित्यानन्द भासे ॥३६१
हेनमते जलकेलि कीर्त्तनेर शेषे ।
प्रतिरात्रि सभा लैया करे प्रभु रसे ॥३६२
ए लीला देखिते मनुष्येर शक्ति नाइ ।
सबे देखे देवगण सङ्गोपे तथाइ ॥३६३
सर्व-गणे गौरचन्द्र गङ्गास्नान करि ।
कूले उठि उच्च करि बोले 'हरिहरि' ॥३६४
सभारे दिलेन माला प्रसाद-चन्दन ।
विदाय हइया सभे करिते भोजन ॥३६५

जगाइ माधाइ समर्पिल सभा'स्थाने ।
आपन गलार माला दिला दुइजने ॥३६६
ए सब लीलार कभु अवधि ना हय ।
आविर्भाब तिरोभाब मात्र वेदे कय ॥३६७
गृहे आसि प्रभु धुइलेन चरण ।
तुलसीर करिलेन चरण बन्दन ॥३६८
भोजन करिते वसिलेन विश्वम्भर ।
नैवेद्यान्न आनि मा'ये करिला गोचर ॥३६९
सर्व-भागवतेरे करिया निवेदन ।
अनन्त-ब्रह्माण्ड नाथ करये भोजन ॥३७०
परम सन्तोषे महाप्रसाद खाइया ।
मुखशुद्धि करिवारे वसिला आसिया ॥३७१
बधू सङ्गे देखे आइ नयन भरिया ।
महानन्द सागरे शरीर डुबाइया ॥३७२
आइर भाग्येर सीमा के बलिते पारे ।
सहस्रवदन प्रभु यदि शक्ति धरे ॥३७३
प्राकृत शब्देओ ये बा बलिबेक आइ ।
आइ शब्द प्रभावेओ तार दुःख नाइ ॥३७४
पुत्रेर श्रीमुख देखि आइ जगन्माता ।
निज देह आइ नाहि जाने आछे कोथा ॥३७५
विश्वम्भर चलिलेन करिते शयन ।
तखन बिदाय करे गुप्त देवगण ॥३७६
चतुर्मुख पञ्चमुख आदि देवगण ।
निति आसि चैतन्येर करये सेवन ॥३७७
देखिते ना पाय इहा केहो आज्ञा विने ।
सेह प्रभु अनुग्रहे बोले कारो स्थाने ॥३७८
कोन दिन वसिया थाकये विश्वम्भर ।
सम्मुखे आइला मात्र कोन अनुचर ॥३७९
अइ खाने थाक प्रभु बोलये आपने ।
चारि पाँच-मुखगुला लोटाय अङ्गने ॥३८०

पड़िया आछये यत नाहि लेखाजोखा ।
तोमरा सभेरे कि ए गुला ना देय देखा ?३८१
कर जोड़ करि बोले सब भक्तगण ।
त्रि भुवने करे प्रभु ! तोमार सेवन ॥३८२
आमरा-सभेर कोन् शक्ति देखिबार ।
बिने प्रभु ! तुमि दिले दृष्टि अधिकार ॥३८३
ए सब अद्भुत चैतन्येर गुप्त कथा ।
सर्व सिद्धि हय इहा शुनिले सर्वथा ॥३८४
इहाते सन्देह किछु ना करिह मने ।
अज-भव निति आइसे गौराङ्गेर स्थाने ॥३८५
हेनमते जगाइ माधाइ परित्राण ।
करिला श्रीगौरचन्द्र जगतेर प्राण ॥३८६
सभार करिब गौरसुन्दर उद्धार ।
व्यतिरिक्त वैष्णवनिन्दुक दुराचार ॥३८७
शूलपाणि सम यदि भक्तनिन्दा करे ।
भागवत प्रमाण तथापि शीघ्र मरे ॥३८८

तथाहि (भा० ५।१०।२५)—
"महद्विमानात् स्वकृताद्धि मादृक्
नङ्क्ष्यत्यदूरादपि शूलपाणिः ॥"३८९

टीका ।

भरतं प्रति रहूगणस्योक्तिरियम् ।

महदिति । स्वकृतात् महतां, विमानात्-अवमानात्, मादृशः, अदूरात्-क्षिप्रं, हि-निश्चितं, नङ्क्ष्यति; शूल-पाणिरिव अतिसमर्थोऽपीत्यर्थः ।

अनुवाद ।

राजा रहूगण, श्रीभरत को कहे थे-महज्जन को अवमानित करने से उक्त स्वकृत अवमानना के फल से मादृश व्यक्ति शूलपाणि के समान अतिसमर्थ होने पर भी सत्वर विनष्ट होगा, इसमें सन्देह नहीं है ।

हेन वैष्णवेरे निन्दे यदि सर्वज्ञ हय ।
से जनेर अधःपात सर्व-शास्त्रे कय ॥३९०
सर्व-महाप्रायश्चित्त ये कृष्णेर नामे ।
वैष्णवापराधे से इ नामे लय प्राण ॥३९१
पद्मपुराणेर एइ परम बचन ।
प्रेमभक्ति हय इहा करिले पालन ॥३९२

तथाहि (पद्मपुराणे, ब्रह्मखण्डे २५।१४)—
"सतां निन्दा नाम्नः परममपराधं वितनुते ।
यतः ख्यातिं यातं कथमु सहते तद्विगरिहाम ॥
३९३

टीका ।

सत्यमिति । सतां निन्दत्यनेन हिंसादीनां वचनागोचरत्वं दर्शितम् । वितनुते-विस्तारयति । यतः-सद्भ्यः, ख्याति-प्रसिद्धिं प्राकट्यं बा, यातं-प्राप्तम् उ-खेदे, नाम्नः तेषां, विगरिहां-विगर्हां, निन्दाम् इकारागमश्छन्दोऽनुरोधात्, कथं सहते ?-अपि तु सोढुं न शक्नुयादेव ।

अनुवाद ।

पद्मपुराणस्थ नामापराधप्रसङ्ग में उक्त है-सज्जनगण की निन्दा श्रीहरिनाम के निकट उत्कट अपराध विस्तार करती है, श्रीहरिनाम, निज सद् व्यक्तिगण के द्वारा ख्याति प्राप्त करते हैं, श्रीहरिनाम कैसे उनसब की निन्दा को सहन करेंगे ?

ये शुने दुइ महादस्युर उद्धार ।
तारे उद्धारिब गौरचन्द्र अवतार ॥३९४
ब्रह्मदैत्य-पाबन गौराङ्ग ! जयजय ।
करुणासागर प्रभु परम-सदय ॥३९५
सहज करुणा सिन्धु महाकृपामय ।
दोष नाहि देखे प्रभु गुण मात्र लय ॥३९६
हेन प्रभु विरहे ये पापि प्राण रहे ।
सबे परमायु गुण आर किछु नहे ॥३९७
तथापिह एइ कृपा कर महाशय ।
श्रबणे वदने येन तोर यश लय ॥३९८
आमार प्रभुर सङ्गे गौराङ्गसुन्दर ।
यथा वैसे, तथा येन हउ अनुचर ॥३९९

चैतन्यकथार आदि अन्त नाहि जानि ।
ये-ते-मते चैतन्येर यश से बाखानि ॥४००
इथे अपराध किछु नहुक आमार ॥४०
गण-सह प्रभुपादपद्मे नमस्कार ।
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदासतछु पद युगे गान ॥४०

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे जगाइ-माधाइ-उद्धार-वर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ।



चतुर्दश अध्याय

चतुर्मुख-पञ्चमुख आदि देवगण ।
निति आसि चैतन्येर करये सेवन ॥१
आज्ञा विने केहो इहा देखिते ना पारे ।
तारा पुनि ठाकुरेर सभे सेवा करे ॥२
सर्वदिन देखे प्रभु यत लीला करे ।
शयन करिले प्रभु सभे चले घरे ॥३
ब्रह्मदैत्य-दुइर से देखिया उद्धार ।
आनन्दे चलिला तारा करिया बिचार ॥४
"एमत कारुण्य आछे चैतन्येर घरे ।
एमत जनेरे प्रभु करये उद्धारे ॥५
आजि बड़ चित्ते प्रभु दिलेन भरसा ।
अवश्य पाइब पार धरिलाम आशा ॥"६
एइमत अन्योऽन्ये करि सङ्कथन ।
महानन्दे चलिला सकल देवगण ॥७
प्रभु स्थाने नित्य आइसे यम धर्मराज ।
आपने देखिल प्रभु चैतन्येर काज ॥८
चित्रगुप्त स्थाने जिज्ञासये प्रभु यम ।
किबा ए-दुइर पाप किबा उपशम ?९
चित्रगुप्त बोले शुन धर्मराज ।
ए विफल परिश्रमे आर किबा काज ॥१०
लक्षेक कायस्थ यदि एकमास पढ़ि ।
तथापि पाइते अन्त शीघ्र हय बड़ि ॥११
तुमि यदि शुन लक्ष करिया श्रवण ।
तथापिह शुनिबारे तुमि से भोजन ॥१२
ए दुइर पाप निरन्तर दूते कहे ।
लिखिते कायस्थ सब उत्तापित हये ॥१३
ए दुइर पाप दूत कहे अनुक्षण ।
इहा लागि दूते कत खाइल मारण ॥१४
दूत बोले पाप करे सेइ दुइ जने ।
लेखाइते भार मोर मोरे मार केने ॥१५
ना लिखिले हय शास्ति हेन करि लिखि ।
पर्वत-प्रमाण गड़ा आछे तार साक्षी ॥१६
आमराओ कान्दियाछि ओ-दुइ लागिया ।
केमते बा ए यातना सहिव आसिया ॥१७
तिल-मात्र महाप्रभु सब कैला दूर ।
एबे आज्ञा कर गड़ा डुवाइ प्रचुर ॥१८
कभु नाहि देखि यम एमत महिमा ।
पातकी उद्धार यत तार एइ सीमा ॥१९
स्वभाव वैष्णव यम मूर्त्तिमन्त धर्म ।
भागवत धर्मेर जानये सर्व मर्म ॥२०

यखन शुनिला चित्रगुप्तेर बचन ।
कृष्णावेशे देह पासरिला ततक्षण ॥२१
पड़िल मूर्च्छित हैया रथेर उपरे ।
कोथाओ नाहिक धातु सकल शरीरे ॥२२
आथेव्यथे चित्रगुप्त आदि यतगण ।
धरिया लागिला सभे करिते क्रन्दन ॥२३
सर्व देव रथे याय कीर्त्तन करिया ।
रहिल यमेर रथ शोकाकुल हैया ॥२४
दुइ ब्रह्म-असुरेर मोचन देखिया ।
सेइ गुण कर्म सभे चलिला गाइया ॥२५
शङ्कर बिरिञ्चि शेष आदि देवगण ।
नारदादि गाय सेइ दुइर मोचन ॥२६
काहो केहो ना जानये आनन्द कीर्त्तने ।
कारुण्य देखिया केहो करये क्रन्दन ॥२७
रहियाछे यम रथ देखे देवगणे ।
रहिल सकल रथ यम रथ स्थाने ॥२८
शेष अज भब नारदादि ऋषिगणे ।
देखे पड़ि आछे यमदेव अचेतने ॥२९
विस्मित हइया सभे ना जानि कारण ।
चित्रगुप्त कहिलेन सकल कारण ॥३०
कृष्णावेश हेन जानि अज-पञ्चानन ।
कर्णमूले सभे मिलि करये कीर्त्तन ॥३१
उठिलेन यमदेव कीर्त्तन शुनिया ।
चैतन्य पाइया नाचे महामत्त हइया ॥३२
उठिल परमानन्द देव सङ्कीर्त्तन ।
कृष्णेर आवेशे नाचे सूर्य्येर नन्दन ॥३३
यम नृत्य देखि नाचे सर्व-देवगण ।
नारदादि सङ्गे नाचे अज पञ्चानन ॥३४
देवगण नृत्य शुन सावधान हैया ।
अति गुह्य वेदे व्यक्त करिबेन इहा ॥३५

श्रीराग ।

नाचइ धर्मराज, छाड़िया सकल काज'
कृष्णावेशे ना जाने आपना ।
स्मङरिया श्रीचैतन्य, बोले अति धन्य धन्य,
पतितपावन धन्य बाणा ॥३६
हुहुङ्कार गरजन, सपुलक महाप्रेम,
यमेर भावेर अन्त नाइ ।
विह्वल हइया यम, करे बहु क्रन्दन,
स्मङरिया जगाइ माधाइ ॥३७
यमेर यतेक गण देखिया यमेर प्रेम,
आनन्दे पड़िया गड़ि याय ।
चित्रगुप्त महाभाग, कृष्णेर बड़ अनुराग,
मालसाट पूरि पूरि धाय ॥३८
नाचे प्रभु शङ्कर, हइया दिगम्बर,
कृष्णावेशे वसन ना जाने ।
वैष्णवेर अग्रगण्य, जगत करये धन्य,
कहिया तारक रामनामे ॥३९
शिव नाचे महानन्दे, जटाओ नाहिक बान्धे,
देखि निज प्रभुर महिमा ।
कार्त्तिक गणेश नाचे, महेशेर पाछे पाछे,
स्मङरिया कारुण्येर सीमा ॥४०
नाचये चतुरानन, भक्ति याँर प्राण धन,
लइया सकल परिबार ।
कश्यप कर्द्दम दक्ष, मनु भृगु महामुख्य,
पाछे नाचे सकल ब्रह्मार ॥४१
सभे महाभागवत, कृष्णरसे महामत्त,
सभे करि भक्ति अध्यापना ।
वेढ़िया ब्रह्मार पाशे, कान्दे छाड़ि दीर्घ श्वासे,
स्मङरिया प्रभुर करुणा ॥४२
देवर्षि नारद नाचे, रहिया ब्रह्मार पाछे'
नयने बहये प्रेमजल ।

पाइया यशेर सीमा, कोथा वा रहिल वीणा,
ना जानये आनन्दे विह्वल ॥४३

चैतन्येर प्रिय भृत्य, शुकदेव करे नृत्य,
भक्तिर महिमा शुक जाने ।
लोटाइया पड़े धूलि, जगाइ माधाइ वलि,
करे बहु दण्ड परणामे ॥४४

नाचे इन्द्र सुरेश्वर' महाबीर वज्रधर,
आपनारे करे अनुताप ।
सहस्र नयने धार, अबिरत बहे यार,
सफल हइल ब्रह्मशाप ॥४५

प्रभुर महिमा देखि, इन्द्रदेव बड़ सुखी,
गड़ागड़ि याय परबश ।
कोथा गेल वज्रसार, कोथाय किरीट हार,
इहारे से बलि कृष्णरस ॥४६

चन्द्र सूर्य्य पवन, कुबेर वह्नि वरुण,
नाचे सब यत लोकपाल ।
सभेइ कृष्णेर भृत्य, कृष्णरसे करे नृत्य,
देखिया कृष्णेर ठाकुराल ॥४७

नाचे सभे देवगण, सभे उलसित मन,
छोट बड़ ना जाने हरिषे ।
बड़ हय ठेलाठेलि, तभु सभे कुतूहली,
सत्य सुख कृष्णेर आवेशे ॥४८

नाचे प्रभु भगवान्, अनन्त याँहार नाम,
विनतानन्दन करि सङ्गे ।
सकल वैष्णवराज, पालन याँहार काज,
आदिदेव सेहो नाचे रङ्गे ॥४९

अज भव नारद, शुक आदि यत देव,
अनन्त वेढ़िया सभे नाचे ।
गौरचन्द्र अवतार, ब्रह्मदैत्य उद्धार
सहस्रवदन गाय माझे ॥५०

केहो कान्दे केहो हासे, देखिमहापरकाशे
केहो मूर्च्छा पाय सेइ ठांइ ।
केहो बोले भालभाल, गौरचन्द्रठाकुराल,
धन्य पापी जगाइ माधाइ ॥५१

नृत्य-गीत कोलाहले, कृष्ण यश सुमङ्गले,
पूर्ण हैल सकल आकाश ।
महा जयजय ध्वनि, अनन्त ब्रह्माण्डे शुनि,
अमङ्गल सब गेल नाश ॥५२

सत्यलोक-आदि जिनि, उठिल मङ्गलध्वनि,
स्वर्ग मर्त्त्य पूरिल पाताल ।
ब्रह्मदैत्य उद्धार, विने नाहि शुनि आर,
प्रकट गौराङ्ग ठाकुराल ॥५३

हेनमते महाजन, भागवत देवगण,
कृष्णावेशे चलिलेन पुरे ।
गौराङ्गचन्द्रेर यश, विने आर कोन रस,
काहारो वदने नाहि स्फुरे ॥५४

जय जय श्रीचैतन्य, संसार तारण धन्य,
जय सर्व-जीवलोक-नाथ ।
उद्धारिला करुणाते, ब्रह्मदैत्य येनमते,
सभा'प्रति कर दृष्टिपात ॥५५

जय जगत मङ्गल, प्रभु गौरचन्द्र,
पतित पावन धन्य वाणा ।
श्रीचैतन्य नित्यानन्द, परम आनन्दकन्द,
वृन्दावनदास गुणगाना ॥५६

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे यवराज-सङ्कीर्त्तनं नाम चतुर्द्दशोऽध्यायः ।

पंचदश अध्याय

हेनमते नवद्वीपे विश्वम्भर-राय ।
अनन्त अचिन्त्य लीला करये सदाय ॥१
एत सब प्रकाशेओ केहो नाहि चिने ।
सिन्धुमाझे चन्द्र येन ना जानिल मीने ॥२
जगाइ माधाइ दुइ—चैतन्यकृपाय ।
परम धार्मिकरूपे वैसे नदीयाय ॥३
ऊषःकाले गङ्गास्नान करिया निर्जने ।
दुइलक्ष कृष्णनाम लय प्रतिदिने ॥४
आपनारे धिक्कार करिया अनुक्षण ।
निरवधि 'कृष्ण' बलि करये क्रन्दन ॥५
पाइया कृष्णेर रस परम उदार ।
कृष्णेर दयित देखे सकल संसार ॥६
पूर्वे ये करिला हिंसा, ताहा स्मङरिया ।
कान्दिया भूमिते पड़े मूर्च्छित हइया ॥७
"गौरचन्द्र आरे बाप पतित पावन !"
स्मङरि स्मङरि पुनः करये क्रन्दन ॥८
आहारेर चिन्ता गेल कृष्णेर आनन्दे ।
स्मङरि चैतन्यकृपा दुइजन कान्दे ॥९
सर्वजन सहित ठाकुर विश्वम्भर ।
अनुग्रह आश्वास करये निरन्तर ॥१०
आपने वसिया प्रभु भोजन कराय ।
तथापिह दुँहे चित्ते सोयाथ ना पाय ॥११
विशेषे माधाइ नित्यानन्देरे लङ्घिया ।
पुनःपुनः कान्दे विप्र ताहा स्मङरिया ॥१२
नित्यानन्द छाड़िल सकल अपराध ।
तथापिह माधाइ चित्ते ना पाय प्रसाद ॥१३
नित्यानन्द अङ्गे मुञि कैलुँ रक्तपात ।
इहा बलि निरन्तर करे आतमघात ॥१४
ये अङ्गे चैतन्यचन्द्र करये बिहार ।
हेन अङ्गे मुञि पापी करिलुँ प्रहार ॥१५
मूर्च्छागत हय इहा स्मङरिया माधाइ ।
अहर्निश कान्दे आर किछु चिन्ता नाइ ॥१६
नित्यानन्द महाप्रभु बालक आबेशे ।
अहर्निश नदीयाय बुलेन हरिषे ॥१७
सहजे परमानन्द नित्यानन्द-राय ।
अभिमान नाहि—सर्वनगरे बेड़ाय ॥१८
एकदिन नित्यानन्द निभृते देखिया ।
पड़िला माधाइ दुइ चरणे धरिया ॥१९
प्रेमजले धोयाइया प्रभुर चरण ।
दन्ते तृण करि करे प्रभुर स्तबन ॥२०
विष्णुरूपे तुमि प्रभु ! करह पालन ।
तुमि से फणाय धर अनन्त भुवन ॥२१
भक्तिर स्वरूप प्रभु ! तोमार कलेबर ।
तोमारे चिन्तये मने पार्वती-शङ्कर ॥२२
तोमार से भक्तियोग तुमि कर दान ।
तोमा' बइ चैतन्येर प्रिय नाहि आन ॥२३
तोमार से प्रसादे गरुड़ महाबली ।
लीलाय बहये कृष्ण हइ कुतूहली ॥२४
तुमि से अनन्त मुखे कृष्णगुण गाओ ।
सर्व-धर्म श्रेष्ठ भक्ति तुमि से बुझाओ ॥२५
तोमारि से गुण गाय ठाकुर नारद ।
तोमार से यत किछु चैतन्यसम्पद ॥२६
तोमार से कालिन्दीभेदन करि नाम ।
तोमा सेवि जनक पाइल महाज्ञान ॥२७
सर्वधर्ममय तुमि पुरुष पुराण ।
तोमारे से वेदे बोले आदिदेव नाम ॥२८
तुमि से जगत पिता महायोगेश्वर ।
तुमि से लक्ष्मणचन्द्र महाधनुर्द्धर ॥२९
तुमि से पाषण्डक्षय रसिक आचार्य्य ।
तुमि से जानह चैतन्येर कार्य्य ॥३०

तोमारे सेविया पूज्या हैला महामाया ।
अनन्त ब्रह्माण्ड चाहे तोमा पदछाया ॥३१
तुमि चैतन्येर भक्त तुमि महाभक्ति ।
यत किछु चैतन्येर तुमि सर्व शक्ति ॥३२
तुमि शय्या तुमि खट्वा तुमि से शयन ।
तुमि चैतन्येर छत्र तुमि प्राण धन ॥३३
तोमा बइ कृष्णेर द्वितीय नाहि आर ।
तुमि गौरचन्द्रेर सकल अवतार ॥३४
तुमि से करह प्रभु ! पतितेर त्राण ।
तुमि से संहार सर्व पाषण्डीर प्राण ॥३५
तुमि से करह प्रभु वैष्णवेर रक्षा ।
तुमि से वैष्णवधर्म कराइला शिक्षा ॥३६
तोमार कृपाय सृष्टि करे अज देवे ।
तोमारे से रेवती बारुणी कान्ति सेवे ॥३७
तोमार से क्रोधे महारुद्र-अवतार ।
सेइ द्वारे कर सर्व सृष्टिर संहार ॥३८
तथाहि श्रीविष्णुपुराणे (२।५।१९)—
सङ्कर्षणात्मको रुद्रो निष्क्रम्यात्ति जगत्त्रयम्॥३९

टीका ।

सङ्कर्षणात्मक इति । अस्य पूर्वार्द्धं—"कल्पान्ते यस्य वक्त्रेभ्यो विषानलशिखोज्ज्वलः ।" इति । यस्य अनन्तस्य, वक्त्रेभ्यः-मुखेभ्यः; । निष्क्रम्य-निर्गतो भूत्वा, जगत्त्रयम्, अत्ति-ग्रसते ।

अनुवाद ।

कल्पान्त समय में सङ्कर्षण स्वरूप से रुद्र निष्क्रान्त होकर स्वीय लेलिहान विषानल जिह्वा के द्वारा जगत्त्रय को ग्रास करते हैं ।

सकल करिया तुमि किछु नाहि कर ।
अनन्त ब्रह्माण्ड नाथ तुमि बक्षे धर ॥४०
परम कोमल सुख विग्रह तोमार ।
ये विग्रहे करे कृष्ण शयन बिहार ॥४१
सेहेन श्रीअङ्गे आमि करिलुँ प्रहार ।
मुञि-हेन दारुण पातकी नाहि आर ॥४२
पार्वती-प्रभृति नबार्वुद नारी लइया ।
ये अङ्ग पूजये शिव जीवन करिया ॥४३
ये अङ्ग स्मरणे सर्व बन्ध बिमोचन ।
हेन अङ्गे रक्त पड़े मोहर कारण ॥४४
चित्रकेतु-महाराजा ये अङ्ग सेविया ।
सुखे विहरये वैष्णवाग्रगण्य हैया ॥४५
ये अङ्ग सेविया शौनकादि ऋषिगण ।
पाइल नैमिषारण्ये बन्धबिमोचन ॥४६
अनन्त-ब्रह्माण्ड करे ये अङ्ग स्मरण ।
हेन अङ्ग मुञि पापी करिलुँ लङ्घन ॥४७
ये अङ्ग लङ्घिया इन्द्रजित गेल क्षय ।
ये अङ्ग लङ्घिया द्विविदेर नाश हय ॥४८
ये अङ्ग लङ्घिया नाशगेल जरासन्ध ।
आरो मोर कुशल लङ्घिलुँ हेन अङ्ग ॥४९
लङ्घनेर कि दाय याहार अपमाने ।
कृष्णेर श्यालक रुक्मी तयजिल पराणे ॥५०
दीर्घ-आयु ब्रह्मासन पाइयाओ सूत ।
तोमा देखि ना उठिल हैल भस्मीभूत ॥५१
याँर अपमान करि राजा दुर्य्योधन ।
सबान्धबे राजपुरे पाइल मरण ॥५२
दैवयोगे छिला तथा महाभक्तगण ।
ताँरा सब जानिलेन तोमार कारण ॥५३
कुन्ती, भीष्म, युधिष्ठिर, विदुर, अर्जुन ।
ताँ'सभार वाक्ये पुर पाइलेन पुन ॥५४
याँर अपमान मात्र जीवनेर नाश ।
मुञि दारुणेर कोन् लोके हैव वास ॥५५
बलिते बलिते प्रेमे भासये माधाइ ।
बक्षे दिया श्रीचरण पड़िला तथाइ ॥५६

ये चरण धरिले ना याइ कभु नाश।
पतितेर त्राण लागि याहार प्रकाश ॥५७
शरणागतेरे बाप! कर परित्राण।
माधाइर से जीवन धन प्राण ॥५८
जयजय जय पद्मावतीर नन्दन।
जय नित्यानन्द सर्व्ववैष्णवेर प्राणधन ॥५९
जयजय अक्रोध परमानन्द राय।
शरणागतेर दोष क्षमिते जुयाय ॥६०
दारुण चण्डाल मुञि कृतघ्न गो-खर।
सर्व अपराध प्रभु! मोर क्षमा कर ॥६१
माधाइर काकु प्रेम शुनिया स्तबन।
हासि नित्यानन्द राय बलिला बचन ॥६२
उठ उठ माधाइ आमार तुमि दास।
तोमार शरीरे हैल आमार प्रकाश ॥६३
शिशु पुत्रे मारिले कि बापे दुःख पाय?
एइमत तोमार प्रहार मोर गा'य ॥६४
तुमि ये करिला स्तुति इहा येइ शुने।
सेइ भक्त हइबेक आमार चरणे ॥६५
आमार प्रभुर तुमि अनुग्रहपात्र।
आमाते तोमार दोष नाहि तिल-मात्र ॥६६
ये जन चैतन्य भजे से इ मोर प्राण।
युगेयुगे आमि तार करि परित्राण ॥६७
ना भजि चैतन्य येबा मोरे भजे गाय।
मोर दुःखे जन्मे जन्मे सेही दुःख पाय ॥६८
एत बलि तुष्ट हैया दिला आलिङ्गन।
सर्व दुःख माधाइर हइल बिमोचन ॥६९
पुन बोले माधाइ धरिया श्रीचरण।
आर एक प्रभु मोर आछे निवेदन ॥७०
सर्व जीव हृदये वसह प्रभु तुमि।
हेन जीव बहु हिंसा करियाछि आमि ॥७१
कार बा ना करिल हिंसा कारे आमि चिनि।
चिनिले बा अपराध मागिये आपनि ॥७२
या'सभार स्थाने करिलाम अपराध।
कोनरूपे तारा मोरे करिब प्रसाद ॥७३
यदि मोरे प्रभु तुमि हइला सदय।
इथे उपदेश मोरे कर महाशय! ७४
प्रभु बोले शुन कहि तोमारे उपाय।
गङ्गाघाट तुमि सज्ज करह सदाय ॥७५
सुखे लोक यखने करिव गङ्गास्नान।
तखने तोमारे सभे करिब कल्याण ॥७६
अपराध-भञ्जनी गङ्गार सेवाकार्य्यं।
इहाते अधिक बा तोमार कोन् भाग्य ॥७७
काकु करि सभारे करिह नमस्कार।
सब अपराध तबे क्षमिब तोमार ॥७८
उपदेश पाइया माधाइ ततक्षणे।
चलिला प्रभुरे करि बहु प्रदक्षिणे ॥७९
कृष्णकृष्ण बलिते नयने बहे जल।
गङ्गाघाट सज्ज करे, देखये सकल ॥८०
लोके देखि करे बड़ अपरूप ज्ञान।
सभारे माधाइ करे दण्डपरणाम ॥८१
"ज्ञाने बा अज्ञाने यत कैलुँ अपराध।
सकल क्षमिया मोरे करह प्रसाद॥" ८२
माधाइर क्रन्दने कान्दये सर्वजन।
आनन्दे गोविन्द सभे करये स्मरण ॥८३
शुनिल सकल लोके निमाञिपण्डित।
जगाइ माधाइर कैल उत्तम चरित ॥८४
शुनिया सकल लोक हइला बिस्मित।
सभे बोले नर नहे निमाञिपण्डित ॥८५
ना बुझि निन्दये यत सकल दुर्जन।
निमाञिपण्डित सत्य करये कीर्त्तन ॥८६

निमाञिपण्डित सत्य गोविन्देर दास ।
नष्ट हैब ये ताँरे करिबे परिहास ॥८७
ए-दुइर बुद्धि भाल ये करिते पारे ।
सेइ बा ईश्वर कि ईश्वर शक्ति धरे ॥८८
प्राकृत मानुष नहे निमाञिपण्डित ।
एबे से महिमा तान हइल बिदित ॥८९
एइमत नदीयार लोक कहे कथा ।
आर लोक ना मिशाय निन्दा हय यथा ॥९०
परम कठोर तप करये माधाइ ।
ब्रह्मचारी हेन ख्याति हइल तथाइ ॥९१
निरवधि गङ्गा देखि थाके गङ्गाघाटे ।
स्वहस्ते कोदालि लइ आपनेइ खाटे ॥९२
अद्यापिह चिह्न आछे चैतन्य कृपाय ।
'माधाइर घाट' बलि सर्वलोके गाय ॥९३
महाप्रभु गौरचन्द्र सभार कारण।
जानिया लोकेर एबे भाल हैल मन ॥९४
एइमत सत्कीर्त्ति हइल दोँहाकार।
चैतन्यप्रसादे दुइ दस्युर उद्धार ॥९५
मध्यखण्डकथा येन अमृतेर खण्ड।
याहाते उद्धार दुइ परम पाषण्ड ॥९६
महाप्रभु गौरचन्द्र सभार कारण।
इहा शुनि यार दुःख खल सेइ जन ॥९७
चारिवेद गुप्त धन चैतन्येर कथा।
मन दिया शुन ये करिल यथायथा ॥९८
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान।
वृन्दावनदास तछु पद युगे गान ॥९९

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे जगाइ-माधाइ-चरित्र-वर्णनं नाम पञ्चदशोऽध्यायः।



षोड़श अध्याय

हेनमते नवद्वीपे विश्वम्भर-राय ।
भक्त-सङ्ग सङ्कीर्त्तन करये सदाय ॥१
द्वार दिया निशाभागे करये कीर्त्तन ।
प्रवेशिते नारे भिन्न लोक कोन जन ॥२
एकदिन नाचे प्रभु श्रीवासेर बाड़ी ।
घरे छिल लुकाइया श्रीवास-शाशुड़ी ॥३
ठाकुरपण्डित-आदि केहो नाहि जाने ।
डोल मुण्डे दिया आछे घरे एक कोणे ॥४
लुकाइले कि हय अन्तरे भाग्य नाइ ।
अल्प-भाग्ये सेइ नृत्य देखिते ना पाइ ॥५
नाचिते नाचिते प्रभु बोले घने घन।
"उल्लास आमार आजि नहे कि कारण ?" ॥६
सर्व-भूत अन्तर्य्यामी जानेन सकल।
जानियाओ ना कहेन करे कुतूहल ॥७
पुनःपुनः नाचि बोले सुख नाहि पाइ।
केबा जानि लुकाइया आछे कोन् ठाँइ ?८
सर्व बाड़ी बिचार करिल जनेजने।
श्रीवास चाहिल घर सकल आपने ॥९
भिन्न केहो नाहि बलि करये कीर्त्तन।
उल्लासे नाचये प्रभु श्रीशचीनन्दन ॥१०

आरबार रहि बोले सुख नाहि पाइ ।
आजि बा आमारे कृष्ण अनुग्रह नाइ ॥११
महात्रासे चिन्ते सब भागवतगण ।
आमा सभा बइ आर नाहि कोन जन ॥१२
आमराइ कोन बा करिल अपराध !
अतएव प्रभु चित्ते ना पाय प्रसाद ॥१३
आरबार ठाकुरपण्डित घरे गिया ।
देखे निज शाशुड़ी आछये लुकाइया ॥१४
कृष्णावेशे महामत्त ठाकुरपण्डित ।
यार वाह्य नाहि, तार किसेर गर्वित ॥१५
विशेष प्रभुर वाक्ये कम्पित शरीर !
आज्ञा दिया चुले धरि करिला बाहिर ॥१६
केहो नाहि जाने इहा आपने से जाने ।
उल्लसित विश्वम्भर नाचे ततक्षणे ॥१७
प्रभु बोले चित्ते एबे वासिये उल्लास ।
हासिया कीर्त्तन करे पण्डित श्रीवास ॥१८
महानन्दे हइल कीर्त्तन कोलाहल ।
हासिया पड़ये सब वैष्णवमण्डल ॥१९
नृत्य करे गौरसिंह महाकुतूहली ।
धरिया बोलेन नित्यानन्द महाबली ॥२०
चैतन्येर लीला के बा देखिबारे पारे ।
से-इ देखे यारे प्रभु देन अधिकारे ॥२१
एइमत प्रतिदिन हरिसङ्कीर्त्तन ।
गौरचन्द्र करे, नाहि देखे सर्वजन ॥२२
आर एकदिन प्रभु नाचिते नाचिते ।
ना पाय उल्लास प्रभु चाय चारिभिते ॥२३
प्रभु बोले आजि केने सुख नाहि पाइ ।
किबा अपराध हइयाछे कार ठाँइ ॥२४
स्वभावे चैतन्यभक्त आचार्य्यगोसाञि ।
चैतन्येर दास्य बइ मने आर नाञि ॥२५
यखन खट्वाय उठे प्रभु विश्वम्भर ।
चरण अर्पये सर्व-शिरेर उपर ॥२६
यखन ठाकुर निज ऐश्वर्य्य प्रकाशे ।
तखन अद्वैत सुख सिन्धु माझे भासे ॥२७
प्रभु बोले आरे नाढ़ा तुइ मोर दास ।
तखन अद्वैत पाय परम उल्लास ॥२८
अचिन्त्य गौराङ्गतत्त्व बुझन ना याय ।
सेइक्षणे धरे प्रभु वैष्णवेर पाय ॥२९
दशने धरिया तृण करये क्रन्दन ।
कृष्ण रे! बाप रे! तुमि आमार जीवन ॥३०
एमन क्रन्दन करे पाषाण बिदरे ।
निरन्तर दास्यभावे प्रभु केलि करे ॥३१
खण्डिले ईश्वरभाव सभाकार स्थाने ।
असर्वज्ञ-हेन प्रभु जिज्ञासे आपने ॥३२
किछु कि चाञ्चल्य भुजि उपाधिक करों ।
बलिह आमारे येन तखनेइ मरों ॥३३
कृष्ण मोर प्राण धन कृष्ण मोर धर्म ।
तोमरा आमार भाइ बन्धु जन्मजन्म ॥३४
कृष्णदास्य बइ मोर आर नाहि गति ।
बलिह आमारे पाछे हय अन्य मति ॥३५
भये सब वैष्णव करेन सङ्कोचन ।
हेन प्राण नाहि कारो करिब कथन ॥३६
एइमत यखन आपने आज्ञा करे ।
तखन से चरण स्पर्शिते केहो पारे ॥३७
निरन्तर दास्यभावे वैष्णव देखिया ।
चरणेर धूलि लय सम्भ्रमे उठिया ॥३८
इहाते वैष्णव सब दुःख पाय मने ।
अतएव सभारे करये आलिङ्गने ॥३९
गुरु बुद्धि अद्वैतेरे करे निरन्तर ।
एतेके अद्वैत दुःख पाय बहुतर ॥४०

आपनेह सेविते साक्षाते नाहि पाय ।
उलटिया आरो प्रभु धरे दुइ पा'य ॥४१
ये चरण मने चिन्ते से हैल साक्षाते ।
अद्वैतेर इच्छा थाके सदाइ ताहाते ॥४२
साक्षाते ना पारे प्रभु करियाछे राग ।
तथापिह चुरि करे चरण पराग ॥४३
भाबाबेशे प्रभु ये समये मूर्च्छा पाय ।
तखन अद्वैत चरणेर पाछु याय ॥४४
दण्डवत हइ पड़े चरणेर तले ।
पाखाले चरण दुइ-नयनेर जले ॥४५
कखनो बा निछिया पुँछिया लय शिरे ।
कखनो बा षड़ङ्ग विहित पूजा करे ॥४६
एहो कर्म अद्वैत करिते पारे मात्र ।
प्रभु करियाछे यारे महामहापात्र ॥४७
अतएब अद्वैत सभार अग्रगण्य ।
सकल वैष्णव बोले अद्वैत से धन्य ॥४८
अद्वैतसिंहेर एइ एकान्त महिमा ।
ए रहस्य ना जानये दुष्ट यत जना ॥४९
एकदिन महाप्रभु विश्वम्भर नाचे ।
आनन्दे अद्वैत तान बुले पाछे पाछे ॥५०
हइल प्रभुर मूर्च्छा अद्वैत बुझिया ।
लेपिला चरणधूला अङ्गे लुकाइय ॥५१
अशेष कौतुक जाने प्रभु गौरराय ।
नाचिते नाचिते प्रभु सुख नाहि पाय ॥५२
प्रभु कहे चित्ते केने ना वासोँ प्रकाश ।
कार अपरावे मोर ना हय उल्लास ॥५३
कोन् चोरे आमाये बा करियाछे चुरि ।
सेइ अपरावे आमि नाचिते ना पारि ॥५४
केहो बा कि लइयाछे मोर पदधूलि ।
सभे सत्य कह, चिन्ता नाहि आमि बलि ॥५५
अन्तर्यामि-बचन शुनिया भक्तगण ।
भये मौन सभे केहो ना बोले बचन ॥५६
बलिते अद्वैत-भय ना बलिले मरि ।
बुझिया अद्वैत बोले जोड़हाथ करि ॥५७
शुन बाप! चोरे यदि साक्षाते ना पाय ।
तबे तार अगोचरे चुरि से जुयाय ॥५८
मुञि चुरि करियाछोँ क्षम मोर दोष ।
आर ना करिब यदि तोमा असन्तोष ॥५९
अद्वैतेर वाक्ये महाक्रुद्ध विश्वम्भर ।
अद्वैत महिमा क्रोधे बोलये बिस्तर ॥६०
सकल संसार तुमि करिया संसार ।
तथापिह चित्ते नाहि वास प्रतिकार ॥६१
संहारेर अबशेष सबे आछि आमि ।
आमा संहारिया तबे सुखे थाक तुमि ॥६२
तपस्वी सन्न्यासी ज्ञानी योगी ख्याति यार ।
कारे तुमि नाहि कर शूलेते संहार ॥६३
कृतार्थ हइते ये आइसे तोमा स्थाने ।
ताहारे संहार कर धरिया चरणे ॥६४
मथुरा निवासी एक परम वैष्णव ।
तोमार देखिते आइल चरण वैभव ॥६५
तोमा देखि कोथा से पाइब विष्णुभक्ति ।
आरो संहारिले तार चिरन्तन शक्ति ॥६६
लइया चरणधूलि तारे कैला क्षय ।
संहार करिते तुमि परम निर्दय ॥६७
अनन्त ब्रह्माण्डे यत आछे भक्तियोग ।
सकल तोमारे कृष्ण दिला उपभोग ॥६८
तथापिह तुमि चुरि कर क्षुद्र स्थाने ।
क्षुद्र संहारिते कृपा नाहि वास' मने ॥६९
महा डाकाइत तुमि चोरे महा चोर ।
तुमि से करिला चुरि प्रेम सुख मोर ॥७०

एइमत छले कहे सुसत्य वचन ।
शुनिया आनन्दे भासे भागवतगण ॥७१
"तुमि से करिला चुरि आमि किना पारि ।
हेर देख चोरेर उपरे करों चुरि ॥"७२
एत बलि अद्वैतेरे आपने धरिया ।
लुटये चरण धूलि हासिया हासिया ॥७३
महाबली गौरसिंह अद्वैत ना पारे ।
अद्वैत चरण प्रभु घषे निज शिरे ॥७४
चरण धरिया बसे अद्वैतेरे बोले ।
हेर देख चोर बान्धिलाम निज कोले ॥७५
करिते थाकये चुरि चोर शतबार ।
बारेक गृहस्थ सर्व करये उद्धार ॥७६
अद्वैत बोलये सत्य कहिला आपनि ।
तुमि ये गृहस्थ आमि किछुइ ना जानि ॥७७
प्राण बुद्धि मन देह सकल तोमार ।
के राखिबे तुमि प्रभु करिले संहार ।७८
हरिषेरो दाता तुमि तुमि देह ताप ।
तुमि संहारिले बा राखिव कार बाप ॥७९
नारदादि याय प्रभु! द्वारका नगरे ।
तोमार चरण धन प्राण देखिबारे ॥८०
तुमि ता सभार लह चरणेर धूलि ।
से सब करिबे प्रभु! सेइ आमि बलि ॥८१
आपनार सेवक आपने यबे खाओ ।
कि करिब सेवके आपने भाबि चाओ ॥८२
कि दाय चरणधूलि, सेह रहु पाछे ।
काटिले तोमार शास्ता कोन् जन आछे ॥८३
तबे ये एमत कर नहे ठाकुराली ।
आमार संहार हय तुमि कुतूहली ॥८४
तोमार से देह तुमि राख बा संहार ।
ये तोमार इच्छा प्रभु! ताइ तुमि कर ॥८५
विश्वम्भर बोले तुमि भक्तिर भाण्डारी ।
एतेके तोमार चरणेर सेवा करि ॥८६
तोमार चरण धूलि सर्वाङ्गे लेपिले ।
भासये पुरुष कृष्णप्रेमरसजले ॥८७
विने तुमि दिले भक्ति केहो नाहि पाय ।
तोमार से आमि हेन जानि सर्वथाय ॥८८
तुमि आमा यथा वेच तथाइ बिकाइ ।
एइ सत्य कहिलाम तोमार से ठाँइ ॥८९
अद्वैतेर प्रति देखि कृपार वैभव ।
अपूर्व चिन्तये मने सकल वैष्णव ॥९०
सत्य से सेविला प्रभु ए महापुरुषे ।
कोटि मोक्ष तुल्य नहे ए कृपार लेशे ॥९१
कदाचित ए प्रसाद शङ्करे से पाय ।
याहा करे अद्वैतेरे श्रीगौराङ्गराय ॥९२
आमरास्रो भाग्यवन्त हेन भक्त सङ्गे ।
ए भक्तेर पदधूलि लइ सर्व अङ्गे ॥९३
हेन भक्त अद्वैतेरे बलिते हरिषे ।
पापी सब दुःख पाय निज कर्म दोषे ॥९४
से काले ये हैल कथा से-इ सत्य हय ।
ना माने वैष्णव वाक्य से-इ याय क्षय ॥९५
हरिबोल बलि उठे प्रभु विश्वम्भर ।
चतुर्द्दिगे बेढ़ि सब गाय अनुचर ॥९६
अद्वैत आचार्य्य महा-आनन्दे विह्वल ।
महामत्त हइया नाचे पासरि सकल ॥९७
तर्जगर्ज आचार्य्य दाड़िते दिया हाथ ।
भ्रूकुटी करिया नाचे शान्तिपुरनाथ ॥९८
"जय कृष्ण गोविन्द गोपाल वनमाली ।"
अहर्निश गाय सभे हइ कुतूहली ॥९९
नित्यानन्द महाप्रभु परम विह्वल ।
तथापि चैतन्य नृत्ये परम कुशल ॥१००

सावधाने चतुर्द्दिगे दुइ हस्त मेलि ।
पड़िते चैतन्य धरि रहे महाबली ॥१०१
अशेष आवेशे नाचे श्रीगौराङ्ग राय ।
ताहा वर्णिबार शक्ति कोन् बा जिह्वाय ॥१०२
सरस्वती सहिते आपने बलराम ।
सेइ से ठाकुर गाय पूरि मनस्काम ॥१०३
क्षणेक्षणे मूर्च्छा पाय क्षणेक्षणे कम्प ।
क्षणे तृण लय करे क्षणे महा-दम्भ ॥१०४
क्षणे हास क्षणे श्वास क्षणे बा निराश ।
एइमत प्रभुर भावेर परकाश ॥१०५
बीरासन करिया ठाकुर क्षणे वैसे ।
महा अट्ट अट्ट करि माझे प्रभु हासे ॥१०६
भाग्य-अनुरूप कृपा करये सभारे ।
डुबिल वैष्णव सब आनन्दसागरे ॥१०७
सम्मुखे देखये शुक्लाम्वर ब्रह्मचारी ।
अनुग्रह करे ताने गौराङ्ग श्रीहरि ॥१०८
सेइ शुक्लाम्वरेर शुनह किछु कथा ।
नवद्वीपे वसति प्रभुर बाड़ी यथा ॥१०९
परम स्वधर्मपर परम सुशान्त ।
चिनिते ना पाहे केहो परम महान्त ॥११०
नवद्वीपे घरेघरे झुलि लञा कान्वे ।
भिक्षा करि अहर्निश कृष्ण बलि कान्दे ॥१११
भिखारी करिया ज्ञान लोके नाहि चिने ।
दरिद्रेर अवधि–करये भिक्षाटने ॥११२
भिक्षा करि दिवसे ये किछु विप्र पाय ।
कृष्णेर नैवद्य करि तबे शेष पाय ॥११३
कृष्णानन्द प्रसादे दारिद्र नाहि जाने ।
बलिया बेड़ाय 'कृष्ण' सकल भवने ॥११४
चैतन्येर कृपापात्र के चिनिते पारे ?
यखने चैतन्य अनुग्रह करे यारे ॥११५

पूर्वे येन आछिल दरिद्र दामोदर ।
सेइमत शुक्लाम्वर विष्णुभक्तिधर ॥
सेइमत कृपाओ करिला विश्वम्वर ।
ये रहे प्रभुर नृत्ये बाड़ीर भितर ॥
झुलि कान्दे लइ विप्र नाचे महारङ्गे ।
देखि हासे प्रभु सब वैष्णवेर सङ्गे ॥
वसिया आछये प्रभु ईश्वर आवेशे ।
झुलि कान्दे शुक्लाम्वर नाचे कान्दे हासे ॥
शुक्लाम्वर देखिया गौराङ्ग कृपामय ।
आइस आइस करि प्रभु बोलये सदय ॥
दरिद्र सेवक मोर तुमि जन्मजन्म ।
आमारे सकल दिया तुमि भिक्षुधर्म ॥
आमिह तोमार द्रव्य अनुक्षण चाइ ।
तुमि ना दिलेओ आमि बल करि खाइ ॥
द्वारकार माझे खुद काढ़ि खाइलुँ तोर ।
पासरिला ? कमला धरिला हस्त मोर ॥
ए बलिया हस्त दिया झुलिर भितर ।
मुष्टिमुष्टि तण्डुल चिबाय विश्वम्भर ॥
शुक्लाम्वर बोले प्रभु कैला सर्वनाश ।
ए तण्डुले खुद-कण बिस्तर प्रकाश ॥
प्रभु बोले तोर खुद-कण मुञि खाङ ।
अभक्तेर अमृते उलटि नाहि चा'ङ ॥
स्वतन्त्र परमानन्द भक्तेर जीवन ।
चिबाय तण्डुल के करिब निबारण ॥
प्रभुर कारुण्य देखि सर्वभक्तगण ।
शिरे हाथ दिया सभे करेन क्रन्दन ॥
ना जानि के कोन दिगे पड़ये कान्दिया ।
सभेइ विह्वल हैला कारुण्य देखिया ॥
उठिल परमानन्द कृष्णेर कीर्त्तन ।
शिशु बृद्ध आदि करि कान्दे सर्वजन ॥

দন্তে তৃণ করে কেহো কেহো নমস্করে।
কেহো বোলে প্রভু! কভু না ছাড়িবা মোরে ॥১৩১
গড়াগড়ি যায়েন সুকৃতি শুক্লাম্বর।
তণ্ডুল খায়েন সুখে বৈকুণ্ঠ-ঈশ্বর ॥১৩২
প্রভু বোলে শুন শুক্লাম্বর ব্রহ্মচারী!
তোমার হৃদয়ে আমি সর্বথা বিহরি ॥১৩৩
তোমার ভোজনে হয় আমার ভোজন।
তুমি ভিক্ষায় চলিলে আমার পর্য্যটন ॥১৩৪
প্রেমভক্তি বিলাইতে মোর অবতার।
জন্মজন্ম তুমি প্রেম সেবক আমার ॥১৩৫
তোমারে দিলাম আমি প্রেমভক্তি দান।
নিশ্চয় জানিহ প্রেমভক্তি মোর প্রাণ ॥১৩৬
শুক্লাম্বরে বর শুনি বৈষ্ণবমণ্ডল।
জয়জয় হরি ধ্বনি করিলা সকল ॥১৩৭
কমলানাথের ভৃত্য ঘরেঘরে মাগে।
এ রসের মর্ম জানে কোনো মহাভাগে ॥১৩৮
দশ ঘরে মাগিয়া তণ্ডুল বিপ্র পায়।
লক্ষ্মীপতি গৌরচন্দ্র তাহা কাড়ি খায় ॥১৩৯
মুদ্রার সহিত নৈবেদ্যের যেন বিধি।
বেদরূপে আপনে বলিলা গুণনিধি ॥১৪০
তিনি সেই বিধি কিছু স্বীকার না করে।
সকল প্রতিজ্ঞা চূর্ণ ভক্তের দুয়ারে ॥১৪১
শুক্লাম্বর তণ্ডুল তাহার পরমাণ।
অতএব অকল বিধির ভক্তি প্রাণ ॥১৪২
যত বিধি প্রতিষেধ সব ভক্তি দাস।
ইহাতে যাহার দুঃখ সে-ই বুদ্ধিনাশ ॥১৪৩
ভক্তি বিধি-মূল কহিলেন বেদব্যাস।
সাক্ষাতে গৌরাঙ্গ তাহা করিলা প্রকাশ ॥১৪৪
মুদ্রা নাহি করে বিপ্র না দিল আপনে!
তথাপি তণ্ডুল প্রভু খাইলা যতনে ॥১৪৫
বিষয়মদান্ধ সব এ মর্ম না জানে।
সুত ধন কুল মদে বৈষ্ণব না চিনে ॥১৪৬
দেখি মূর্খ দরিদ্র যে সুজনেরে হাসে।
তার পূজা বিত্ত কভু কৃষ্ণেরে না বাসে ॥১৪৭

তথাহি (ভা০ ৪।৩১।২১)—

"ন ভজতি কুমনীষিণাং স ইজ্যাং
হরিরধনাত্মধনপ্রিয়ো রসজ্ঞঃ
শ্রুতধনকুলকর্মণাং মদৈর্য্যে
বিদধতি পাপমকিঞ্চনেষু সৎসু॥" ১৪৮

টীকা।

সত্যমেবং বশ্যোঽসৌ, অসতাং তু পূজামপি ন গৃহ্লাতীত্যাহ নেতি। কুমনীষিণাং—কুৎসিতমতীনাম্, অধনাশ্চ তে আত্মনাশ্চ ভগবদ্ধনাঃ, তে প্রিয়া যস্য সঃ; কে কুমনীষিণঃ?—তানাহ শ্রুতাদিনিমিত্তৈর্মদৈর্য্যে, সৎসু, পাপং—তিরস্কারং, কুর্বন্তি। ইতি শ্রীধরঃ॥

অনুবাদ।

দেবর্ষি নারদ প্রচেতাগণ কো নিষ্কিঞ্চন ভক্ত কী মহিমা কহতে হৈং—জো লোক, বেদবিদ্যা, ধনসম্পদ্ এবং কুল কর্ম কে বিবিধ অহঙ্কার কী মাদকতা সে নিষ্কিঞ্চন সজ্জনগণ কে প্রতি পাপাচরণ করতে হৈং, শ্রীহরি উন কুবুদ্ধিবর্গ কী পূজা গ্রহণ নহীং করতে হৈং, কারণ, আত্মরূপী ভগবান্ হী জিনকে একমাত্র ধন হৈং, উনসব বাসনাবন্ধনবিমুক্ত অকিঞ্চনগণ হী শ্রীহরি কে একমাত্র ধন এবং প্রীতিভাজন হোতে হৈং। কারণ, উনসব কা উস প্রকার প্রেম কা মহত্ত্ব আপ নহীং জানতে হৈং, এসা নহীং, কিন্তু আপ জানতে হৈং, অহো! যহ সব ব্যক্তি ধনপুত্রাদি কী মমতা বিসর্জন পূর্বক কেবল মুঝ কো হী অপনাএ হৈং।

অকিঞ্চন-প্রাণ কৃষ্ণ সর্ব বেদে গায়।
সাক্ষাতে গৌরাঙ্গ এই তাহারে দেখায় ॥১৪৯
শুক্লাম্বর-তণ্ডুল ভোজন যেই শুনে।
সেই প্রেমভক্তি পায় চৈতন্যচরণে ॥১৫০
শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য নিত্যানন্দচাঁদ জান।
বৃন্দাবন দাস তছু পদযুগে গান ॥১৫১

ইতি শ্রীচৈতন্যভাগবতে মধ্যখণ্ডে শুক্লাম্বর-তণ্ডুল-ভোজনং নাম ষোড়শোঽধ্যায়ঃ॥

सप्तदश अध्याय

मध्यखण्ड कथा येन अमृतेर खण्ड ।
ये कथा शुनिले घुचे अन्तर पाषण्ड ॥१
हेनमते नवद्वीपे प्रभु विश्वम्भर ।
गूढ़रूपे सङ्कीर्त्तन करे निरन्तर ॥२
यखन करये प्रभु नगरभ्रमण ।
सर्वलोक देखे येन साक्षात मदन ॥३
व्यबहारे देखे प्रभु येन दम्भमय ।
विद्याबल देखिया पाषण्डी करे भय ॥४
व्याकरण-शास्त्रे सबे विद्यार आदान ।
भट्टाचार्य्य प्रतिओ नाहिक तृणज्ञान ॥५
नगर भ्रमण करे प्रभु निज रङ्गे ।
गूढ़रूपे थाकये सेवक सब सङ्गे ॥६
पाषण्डी सकल बोले निमाञिपण्डित ।
तोमारे राजार आज्ञा आइसे त्वरित ॥७
लुकाइया निशाभागे करह कीर्त्तन ।
देखिते ना पाय लोक शापे अनुक्षण ॥८
मिथ्या नहे लोक वाक्य सम्प्रति फलिल ।
सुहृदज्ञाने से कथा तोमारे कहिल ॥९
प्रभु बोले अस्तु अस्तु ए सब बचन ।
मोर इच्छा आछे करोँ राज दरशन ॥१०
पढ़िलुँ सकल शास्त्र अल्प बयसे ।
शिशु ज्ञान करि मोरे केहो ना जिज्ञासे ॥११
मोरे खोजे हेन जन कोथाओ ना पाङ ।
ये बा जन मोरे खोजे मुञि इहा चाङ ॥१२
पाषण्डी बोलये राजा चाहिब कीर्त्तन ।
ना करे पाण्डित्य चर्चा राजा से यबन ॥१३
तृण ज्ञान पाषण्डीरे ठाकुर ना करे ।
आइलेन महाप्रभु आपन मन्दिरे ॥१४
प्रभु बोले हैल आजि पाषण्डी सम्भाष ।
सङ्कीर्त्तन कर सव दुःख याउ नाश ॥१५

नृत्य करे महाप्रभु वैकुण्ठ ईश्वर ।
चतुर्द्दिगे बेढ़ि गाय सब अनुचर ॥१६
रहिया रहिया बोले अरे भाइ सब !
आजि केने नहे मोर प्रेम अनुभव ॥१७
नगरे हइल किबा पाषण्डी सम्भाष ।
एइ बा कारणे नहे प्रेमेर प्रकाश ॥१८
तोमा सभा स्थाने बा हइल अबज्ञान ।
अपराध क्षमिया राखह मोर प्राण ॥१९
महापात्र अद्वैत भ्रूकुटी करि नाचे ।
केमते हइब प्रेम, नाढ़ा शुषियाछे ॥२०
मुञि नाहि पाङ प्रेम ना पाय श्रीवास ।
तेली माली सने कर प्रेमेर विलास ॥२१
अवधूत तोमार प्रेमेर हइल दास ।
आमि से बाहिर, आर पण्डित श्रीवास ॥२२
आमि सब नहिलाम प्रेम अधिकारी ।
अबधूत आजि आसि हइला भाण्डारी ॥२३
यदि मोरे प्रेमयोग ना देह गोसाञि ।
शुषिब सकल प्रेम मोर दोष नाञि ॥२४
चैतन्येर प्रेमे मत्त आचार्य्यगोसाञि ।
कि बोलये, कि करये किछु स्मृति नाञि ॥२५
सर्वमते कृष्णभक्ति महिमा बाढ़ाय ।
भक्तजने यथा बेचे तथाइ बिकाय ॥२६
ये भक्ति-प्रभावे कृष्णे बेचिबारे पारे ।
से ये वाक्य बलिलेक कि बिचित्र तारे ॥२७
नाना रूपे भक्त बाढ़ायेन गौरचन्द्र ।
के बुझिते पारे तान अनुग्रह दण्ड ॥२८
ठाकुर बिषाद ना पाइया प्रेम-सुखे ।
हाथे ताली दिया नाचे अद्वैत कौतुके ॥२९
अद्वैतेर वाक्य शुनि प्रभु विश्वम्भर ।
प्रभु आर किछु ना करिला प्रत्युत्तर ॥३०

সেইমতে রড় দিলা ঘুচাইলা দ্বার।
পাছে ধায় নিত্যানন্দ হরিদাস তাঁর ॥৩১
প্রেম শূন্য শরীর থুইয়া কি বা কাজ।
বিন্তিয়া পড়িলা প্রভু জাহ্নবীর মাঝ ॥৩২
ঝাঁপ দিয়া ঠাকুর পড়িলা গঙ্গা মাঝে।
নিত্যানন্দ হরিদাস ঝাঁপ দিলা পাছে ॥৩৩
আথেব্যথে নিত্যানন্দ ধরিলেন কেশে।
চরণ চাপিয়া ধরে প্রভু হরিদাসে ॥৩৪
দুইজনে ধরিয়া তুলিলা লৈয়া তীরে।
প্রভু বোলে তোমরা ধরিলে কেনে মোরে ॥৩৫
কি কাজে রাখিব প্রেমরহিত জীবন।
কিসেরে বা তোমরা ধরিলে দুইজন ?৩৬
দুইজনে মহা কম্প আজি কিবা ফলে।
নিত্যানন্দ দিগ চা'হি গৌরচন্দ্র বোলে ॥৩৭
"তুমি কেনে ধরিলা আমার কেশভারে।"
নিত্যানন্দ বোলে কেনে "যাও মরিবারে ?"৩৮
প্রভু বোলে জানি তুমি পরম বিহ্বল।
নিত্যানন্দ বোলে প্রভু ! ক্ষমহ সকল ॥৩৯
যার শাস্তি করিবারে পার সর্বমতে।
তার লাগি চল নিজ শরীর এড়িতে ॥৪০
অভিমানে সেবকে বা বলিল বচন।
প্রভু তাহে লয় কিবা ভৃত্যের জীবন ?৪১
প্রেমময় নিত্যানন্দ বহে প্রেমজল।
যার প্রাণ ধন বন্ধু চৈতন্য সকল ॥৪২
প্রভু বোলে শুন নিত্যানন্দ ! হরিদাস !
কারো স্থানে পাছে কর আমার প্রকাশ ॥৪৩
আমা না দেখিলা বলি বলিবা বচন।
আমার আজ্ঞায় এই কহিবা কথন ॥৪৪
মুঞি আজি সঙ্গোপে থাকিব এক ঠাঞি।
কারে পাছে কহ তবে মোর দোষ নাঞি ॥৪৫
এ বলিয়া প্রভু নন্দনের ঘরে যায়।
এ দুই সঙ্গোপ কৈলা প্রভুর আজ্ঞায় ॥৪৬
ভক্ত সব না পাইয়া প্রভুর উদ্দেশ।
দুঃখ ময় হৈল সব শ্রীকৃষ্ণ আবেশ ॥৪৭
পরম বিরহে সভে করেন ক্রন্দন।
কেহো কিছু না বোলয়ে পোড়ে সর্বমন ॥৪৮
সভার উপর যেন হইল বজ্রাঘাত।
মহা-অপরুদ্ধ হৈলা শান্তিপুরনাথ ॥৪৯
অপরুদ্ধ হই প্রভু প্রভুর বিরহে।
উপবাস করি থাকিলেন গিয়া গৃহে ॥৫০
সভেই চলিলা ঘরে শোকাকুলি হৈয়া।
গৌরাঙ্গ চরণ ধন হৃদয়ে বান্ধিয়া ॥৫১
ঠাকুর আইলা নন্দন আচার্য্যের ঘরে।
বসিলা আসিয়া বিষ্ণুখট্বার উপরে ॥৫২
নন্দন দেখিয়া গৃহে পরম মঙ্গল।
দণ্ডবত হইয়া পড়িলা ভূমিতল ॥৫৩
সত্বরে দিলেন আনি নূতন বসন।
তিতা বস্ত্র এড়িলেন শ্রীশচীনন্দন ॥৫৪
প্রসাদ,চন্দন,মালা, দিব্য অর্ঘ্য,গন্ধ।
চন্দনে ভূষিত কৈল প্রভুর শ্রীঅঙ্গ ॥৫৫
কর্পূর তাম্বূল আনি দিলেন সম্মুখে।
ভক্তের পদার্থ প্রভু খায় নিজ সুখে ॥৫৬
পাসরিলা দুঃখ প্রভু নন্দন সেবায়।
সুকৃতি নন্দন বসি তাম্বূল যোগায় ॥৫৭
প্রভু বোলে মোর বাক্য শুনহ নন্দন !
আজি তুমি আমারে করিবা সঙ্গোপন ॥৫৮
নন্দন বোলয়ে প্রভু এ বড় দুষ্কর।
কোথা লুকাইবা তুমি সংসার ভিতর ?৫৯
হৃদয়ে থাকিয়া না পারিলা লুকাইতে।
ত্রিদিত করিল তোমা ভক্ত তথা হৈতে ॥৬০

ये नारिल लुकाइते क्षीरसिन्धु-माझे ।
से केमने लुकाइब बाहिर समाजे ?६१
नन्दन आचार्य्य वाक्य शुनि प्रभु हासे ।
बञ्चिलेन निशि प्रभु नन्दन सम्भाषे ॥६२
भाग्यवन्त नन्दन अशेष कथा रङ्गे ।
सर्व्वरात्रि गोङाइला ठाकुरेर सङ्गे ॥६३
क्षण प्राय गेला निशा कृष्ण कथा रसे ।
प्रभु देखे—दिवस हइल परकाशे ॥६४
अद्वैतेर प्रति दण्ड करिया ठाकुर ।
शेषे अनुग्रह मने बाढ़िल प्रचुर ॥६५
आज्ञा कैल प्रभु नन्दन आचार्य्य चाहिया ।
"एकेश्वर श्रीवासपण्डिते आन गिया ॥"६६
सत्वरे नन्दन गेला श्रीवासेर स्थाने ।
आइला श्रीवास लैया प्रभु येइखाने ॥६७
प्रभु देखि ठाकुरपण्डित कान्दे प्रेमे ।
प्रभु बोले चिन्ता किछु ना करिह मने ॥६८
सदय हइया प्रभु जिज्ञासे आपने ।
आचार्य्येर बार्त्ता कह आछेन केमने ॥६९
"आरो बार्त्ता लह" बोले पण्डितश्रीवास ।
आचार्य्येर कालि प्रभु हैल उपवास ॥७०
आछिबारे आछे प्रभु सबे देह मात्र ।
कि बलिब आमरा तोमार प्रेमपात्र ७१
अन्य जन हइले कि आमराइ सहि ।
तोमार से सभेइ जीवन प्रभु बहि ॥७२
तोमा विने कालि प्रभु सभार जीवन ।
महाशोच्य वासिलाम आछे कि कारण ॥७३
येन दण्ड करिला बचन अनुरूप ।
एखन आसिया हओ प्रसाद सम्मुख ॥७४
श्रीवासेर बचन शुनिया कृपामय ।
चलिला आचार्य्य प्रति हइया सदय ॥७५

मूर्च्छागत आसि प्रभु देखे आचार्य्यरे ।
महा-अपराधी हेन माने आपनारे ॥७६
प्रसादे हइया मत्त बुले अहङ्कारे ।
पाइया प्रभुर दण्ड कम्प देहभारे ॥७७
देखिया सदय प्रभु बोलये उत्तर ।
उठह आचार्य्य हेर आमि विश्वम्भर ॥७८
लज्जाय अद्वैत किछु बोले ना बचन ।
प्रेमयोगे मने चिन्ते प्रभुर चरण ॥७९
आरबार बोले प्रभु उठह आचार्य्य !
चिन्ता नाहि उठि कर आपनार कार्य्य ॥८०
अद्वैत बोलये प्रभु कराइला कार्य्य ।
यत किछु बोल मोरे सब प्रभु वाह्य ॥८१
मोरे तुमि निरन्तर लओयाओ कुमति ।
अहङ्कार दिया मोरे कराओ दुर्गति ॥८२
सभारे उत्तम दिया आछ दास्यभाव ।
मोरे दियाछह प्रभु यत किछु राग ॥८३
लओयाओ आपने दण्ड कराह आपने ।
मुखे एक बोल तुमि कर आर मने ॥८४
प्राण, देह, धन, मन, सब तुमि मोर ।
तबे मोरे दुःख देह, ठाकुराली तोर ॥८५
हेन कर प्रभु ! मोरे दास्यभाव दिया ।
चरणे राखह दासीनन्दन करिया ॥८६
शुनिया अद्वैतवाक्य प्रभु विश्वम्भर ।
अकैतबे कहे सर्व वैष्णव भितर ॥८७
शुनशुन आचार्य्य तोमारे तत्त्व कइ ।
व्यबहार दृष्टान्त देखह तुमि एइ ॥८८
राजपात्र राजा-स्थाने चलये यखने ।
दुयारी प्रहरी सब करे निबेदने ॥८९
महापात्र यदि गोचरिया राजा-स्थाने ।
जीव्य लजादिले रहे गोष्ठीर जीवने ॥९०

ये महापात्रेर स्थाने करे निवेदन।
राज आज्ञा हैले काटे सेइ सब जन ॥९१
सब राज्यभार देइ ये महापात्रेरे।
अपराधे शोच्य हाथे तार शास्ति करे ॥९२
एइमत कृष्ण महाराजराजेश्वर।
कर्त्ता हर्त्ता ब्रह्मा शिव याहार किङ्कर ॥९३
सृष्टि आदि करितेओ दियाछेन शक्ति।
शास्ति करितेओ केहो ना करे दिरुक्ति॥९४
रमा आदि भवादिओ कृष्ण-दण्ड पाय।
दोष प्रभु सेवकेर क्षमये सदाय ॥९५
अपराध देखि कृष्ण यार शास्ति करे।
जन्मजन्म दास सेइ—बलिल तोमारे ॥९६
उठिया करह स्नान कर आराधन।
नाहिक तोमार चिन्ता करह भोजन ॥९७
प्रभुर बचन शुनि अद्वैत उल्लास।
दासेर शुनिया दण्ड, बड़ हैल हास ॥९८
"एखने से बलि प्रभु तोर ठाकुराली।"
नाचेन अद्वैत रङ्गे दियाकरताली ॥९९
प्रभुर आश्वास शुनि आनन्दे विह्वल।
पासरिला पूर्व यत विरह सकल ॥१००
सकल वैष्णव हैला परम आनन्द।
तखने हासये हरिदास नित्यानन्द ॥१०१
ए सब परमानन्द लीला कथा रसे।
केहोकेहो वञ्चित हइल दैवदोषे ॥१०२
चैतन्येर प्रेमपात्र श्रीअद्वैत राय।
ए सम्पत्ति अल्प हेन बुझये मायाय ॥१०३
अल्प करि ना मानिह दास हेन नाम।
अल्प भाग्ये दास नाहि करे भगवान् ॥१०४
आगे हय मुक्त तबे सर्व बन्ध नाश।
तबे सेइ हैते पारे 'श्रीकृष्णेर दास' ॥१०५

एइ व्याख्या करे भाष्यकारेर समाजे।
मुक्त सब लीलातनु करि कृष्ण भजे ॥१०६

तथाचोक्तं भाष्यकृद्भिः—

"मुक्ता अपि लीलया विग्रहं कृत्वा भगवन्तं भजन्ते ॥" १०७

टीका।

मुक्ता इति। लीलया—स्वेच्छया, नतु जीववत् कर्मपारतन्त्र्येणेत्यर्थः। विग्रहं कृत्वा-शरीरं परिगृह्य, भगवन्तं भजन्ते, मुक्तैरप्यधिकमानन्दमनुभवितुमित्यर्थः। तथाहि मध्वाचार्य्यधृतं "मुक्ता अपि हि कुर्वन्ति स्वेच्छयोपासनं हरेः।" इति ब्रह्मतर्कवचनं, "कृष्णो मुक्तैरपीज्यते" इति भारत-वचनञ्च (ब्रह्मसूत्र ३।३।३७ मध्वभाष्ये) एतमेवार्थमभिप्रैति। भाष्यकृद्भिरुक्तमिति— "यं सर्वेदेवा नमन्ति मुमुक्षवो ब्रह्मवादिनश्च" इति नृसिंहपूर्व-तापनीयश्रुतेः (२।५।१६) व्याख्याप्रसङ्ग इत्यवगन्तव्यम्।

अनुवाद।

मुक्त पुरुषगणभी स्वेच्छा से शरीर ग्रहण पूर्वक भगवान् का भजन करते हैं।

कृष्णेर सेवक सब कृष्णशक्ति धरे।
अपराध हइलेओ कृष्ण शास्ति करे ॥१०८
हेन कृष्णभक्त नामे कोन शिष्यगण।
अल्प हेन ज्ञाने द्वन्द्व करे अनुक्षण ॥१०९
से सब दुष्कृति अति जानिह निश्चय।
याथे सर्व वैष्णवेर पक्ष नाहि लय ॥११०
'सर्व प्रभु गौरचन्द्र' इथे द्विधा यार।
कभु शुद्ध भक्त नहे सेइ दुराचार ॥१११
गर्द्दभ शृगाल तुल्य शिष्यगण लैया।
केहो वोले आमि रघुनाथ भाव गिया ॥११२
सृष्टि स्थिति प्रलय करिते शक्ति यार।
चैतन्य-दासत्व बड़ बल नाहि आर ॥११३

अनन्त-ब्रह्माण्ड धरे प्रभु बलराम।
सेहो प्रभुदास्य करे के बा हय आन ॥११४
जयजय हलधर नित्यानन्द राय।
चैतन्यकीर्त्तन स्फुरे याँहार कृपाय ॥११५
ताँहार प्रसादे हैल चैतन्येते रति।
यत किछु बलि सब ताँहार शकति ॥११६
आमार प्रभुर प्रभु श्रीगौरसुन्दर।
ए बड़ भरसा चित्ते धरि निरन्तर ॥११७
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥११८

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे भक्त माहात्म्य-कीर्त्तनं नाम सप्तदशोऽध्यायः।



अष्टादश अध्याय

जयजय जगतमङ्गल गौरचन्द्र।
दान देह हृदये तोमार पदद्वन्द्व ॥१
जयजय नित्यानन्दस्वरूपेर प्राण।
जयजय भकतवत्सल गुणधाम ॥२
भक्तगोष्ठीसहिते गौराङ्ग जयजय।
शुनिले चैतन्यकथा भक्ति लभ्यहय ॥३
हेनमते नवद्वीपे विश्वम्भर राय।
सङ्कीर्त्तनसुख प्रभु करये सदाय ॥४
मध्यखण्डकथा भाइ! शुन एकमने।
लक्ष्मी-काचे प्रभु नृत्य करिला येमने ॥५
एकदिन प्रभु बलिलेन सभा'स्थाने।
आजि नृत्य करिवाङ अङ्केर विधाने ॥६
सदाशिव बुद्धिमन्तखानेरे डाकिया।
बलिलेन प्रभु काच सज्ज कर गिया ॥७
शङ्ख, काँचुली, पाटशाड़ी, अलङ्कार।
योग्य योग्य करि सज्ज कर सभाकार ॥८
गदाधर काचिबेन—रुक्मिणीर काच।
ब्रह्मानन्द ताँर बुड़ी सखी सुप्रभात ॥९
नित्यानन्द हइबेन बड़ाइ आमार।
कोतोयाल हरिदास जागाइते भार ॥१०
श्रीवास नारद काच, स्नातक श्रीराम।
दिउटिया हाड़ि मुञि बोलये श्रीमान् ॥११
अद्वैत बोलये के करिब पात्र-काच?
प्रभु बोले पात्र सिंहासने गोपीनाथ ॥१२
सत्वरे चलह बुद्धिमन्तखान! तुमि।
काच सज्ज कर गिया नाचिबाङ आमि ॥१३
आज्ञा शिरे करि सदाशिव बुद्धिमन्त।
गृहे चलिलेन, आनन्देर नाहि अन्त ॥१४
सेइक्षणे कथिबार चान्दोया खाटाञा।
काच सज्ज करिलेन सुन्दर करिया ॥१५
लइया यतेक काच बुद्धिमन्तखान।
थुइलेन लइया ठाकुर विद्यमान ॥१६
देखिया हइला प्रभु सन्तोषित मन।
सकल वैष्णव प्रति बलिला बचन ॥१७
"प्रकृति स्वरूपे नृत्य हइब आमार।
देखिते ये जितेन्द्रिय तार अधिकार ॥१८

सेइ ये याइब आजि बाड़ीर भितरे ।
सेइ जन इन्द्रिय धरिते शक्ति धरे ॥"१९
लक्ष्मीबेशे अङ्क-नृत्य करिब ठाकुर ।
सकल वैष्णव रङ्ग बाढ़िल प्रचुर ॥२०
शो प्रभु कथाखानि कहिलेन दढ़ ।
शुनिया हइला सभे विषादित बड़ ॥२१
सर्व्वाद्य भूमिते अङ्क दिलेन आचार्य्य ।
आजि नृत्य दरशने मोर नहे कार्य्य ॥२२
आमि से अजितेन्द्रिय ना याइब तथा ।
श्रीवासपण्डित कहे मोर ओइ कथा २३
शुनिया ठाकुर बोले ईषत हासिया !
तोमरा ना गेले नृत्य काहारे लइया ?२४
सर्व्वज्ञेर चूड़ामणि चैतन्यगोसाञि ।
पुन आज्ञा करिलेन कारो चिन्ता नाञि ॥२५
महायोगेश्वर आजि तोमरा हइबा ।
देखिया आमारे केहो मोह ना पाइबा ॥२६
शुनिया प्रभुर आज्ञा अद्वैत श्रीवास ।
सभार सहित महा पाइला उल्लास ॥२७
सर्वगण सहित ठाकुर विश्वम्भर ।
चलिला आचार्य्य-चन्द्रशेखरेर घर ॥२८
आइ चलिलेन निज पुत्र-बधूर सहिते ।
लक्ष्मीरूपे नृत्य बड़ अद्भुत देखिते ॥२९
यत आप्त-वैष्णवगणेर परिबार ।
चलिला आइर सङ्गे नृत्य देखिबार ॥३०
श्रीचन्द्रशेखर भाग्य तार एइ सीमा ।
यार घरे प्रभु प्रकाशिला ए महिमा ॥३१
वसिला ठाकुर सर्व वैष्णव सहिते ।
सभारे हइल आज्ञा स्वकाच काचिते ॥३२
करजोड़े अद्वैत बोलये बारबार ।
मोरे आज्ञा प्रभु कोन् काच काचिबार ?३३

प्रभु बोले यत काच सकल तोमार ।
इच्छा अनुरूप काच काच आपनार ॥३४
वाद्य नाहि अद्वैतेर कि करिब काच ।
भ्रूकुटी करिया नाचे शान्तिपुरनाथ ॥३५
सर्वभावे नाचे महा बिदूषक प्राय ।
आनन्द-सागर माझे भासिया बेड़ाय ॥३६
महा कृष्ण-कोलाहल उठिल सकल ।
आनन्दे वैष्णव सब हइला विह्वल ॥३७
कीर्त्तनेर शुभारम्भ करिला मुकुन्द ।
राम कृष्ण नरहरि गोपाल गोविन्द ॥३८
प्रथमे प्रविष्ट हैला प्रभु हरिदास ।
महा दुइ गोँफ करि वदन विलास ॥३९
महा पाग शोभे शिरे, धटि परिधान ।
दण्डहस्ते सभारे करये सावधान ॥४०
आरे आरे भाइ सब हओ सावधान ।
नाचिब लक्ष्मीर बेशे जगतेर प्राण ॥४१
हाथे नड़ि चारिदिके धाइया बेड़ाय ।
सर्वाङ्गे पुलक 'कृष्ण' सभारे जागाय ॥४२
कृष्ण भज कृष्ण सेब बोल कृष्ण नाम ।
दम्भ करि हरिदास करये आह्वान ॥४३
हरिदास देखिया सकल गण हासे ।
के तुमि एथाय केने ? सभेइ जिज्ञासे ॥४४
हरिदास बोले आमि वैकुण्ठ कोटाल ।
कृष्ण जागाइया आमि बुलि सर्वकाल ॥४५
वैकुण्ठ छाड़िया प्रभु आइलेन एथा ।
प्रेमभक्ति लुटाइब ठाकुर सर्वथा ॥४६
लक्ष्मी बेशे नृत्य आजि करिब आपने ।
प्रेमभक्ति लुटि आजि हओ सावधाने ॥४७
एत बलि दुइ गोँफ मोचड़ाय हाथे ।
रड़ दिया बुले गुप्त-मुरारिर साथे ॥४८

दुइ महा-विह्वल कृष्णेर प्रिय दास।
दुइर शरीरे गौरचन्द्रेर विलास ॥४९
क्षणेके नारद काच करिया श्रीवास।
प्रवेशिला सभा माझे करिया उल्लास ॥५०
महा-दीर्घ पाका दाड़ि फोटा सर्व गाय।
वीणा कान्धे कुश हस्ते चारिदिगे चाय ॥५१
रामाञि-पण्डित कक्षे करिया आसन।
हाथे कमण्डलु पाछे करिला गमन ॥५२
वसिते दिलेन राम पण्डित आसन।
साक्षात नारद येन दिला दरशन ॥५३
श्रीवासेर बेश देखि सर्वगण हासे।
करिया गभीर नाद अद्वैत जिज्ञासे ॥५४
के तुमि आइला एथा केमन कारणे?
श्रीवास बोलेन शुन कहिये कथने ॥५५
नारद आमार नाम कृष्णेर गायन।
अनन्त-ब्रह्माण्डे आमि करिये भ्रमण ॥५६
वैकुण्ठे गेलाम कृष्ण देखिबार तरे।
शुनिलाम कृष्ण गेला नदीया नगरे ॥५७
शून्य देखिलाम वैकुण्ठेर घर द्वार।
गृहिणी गृहस्थ नाहि, नाहि परिबार ॥५८
ना पारि रहिते शून्य वैकुण्ठ देखिया।
आइलाम आपन ठाकुर स्मङरिया ॥५९
प्रभु आजि नाचिबेन धरि लक्ष्मी बेश।
अतएब ए सभाय आमार प्रवेश ॥६०
श्रीवासेर नारद निष्ठार वाक्य शुनि।
हासिया वैष्णव सब करे जयध्वनि ॥६१
अभिन्न नारद येन श्रीवासपण्डित।
से-इ रूप से-इ वाक्य से-इ से चरित ॥६२
यत पतिव्रतागण सकल लइया।
आइ देखे कृष्ण-सुधा रसे मग्न हैया ॥६३

मालिनीरे बोले आइ एइ नि पण्डित?
मालिनी बोलये आइ! अइ सुनिश्चित ॥६४
परम वैष्णवी आइ सर्व लोक माता।
श्रीवासेर मूर्त्ति देखि हइला बिस्मिता ॥६५
आनन्दे पड़िला आइ हइया मूर्च्छित।
कोथाओ नाहिक धातु सभे चमकित ॥६६
सत्वरे सकल पतिव्रता नारीगण।
कर्णमूले 'कृष्णकृष्ण' करेन स्मरण ॥६७
संवित पाइया आइ गोविन्द स्मङरे।
पतिव्रतागणे धरे, धरिते ना पारे ॥६८
एइमन कि घरे बाहिरे सर्वजन।
वाह्य नाहि स्फुरे सभे करेन क्रन्दन ॥६९
गृहान्तरे बेश करे प्रभु विश्वम्भर।
रुक्मिणीर भावे मग्न हइला निर्भर ॥७०
आपना ना जाने प्रभु रुक्मिणी आवेशे।
बिदर्भेर सुता हेन आपनारे वासे ॥७१
नयनेर जले पत्र लिखये आपने।
पृथिवी हइल पत्र अङ्गुली कलमे ॥७२
रुक्मिणीर पत्र 'सप्त श्लोक' भागवते।
ये आछे पढ़ये ताहा कान्दिते कान्दिते ॥७३
गीतबन्धे शुन सात श्लोकेर व्याख्यान।
ये कथा शुनिले स्वामी हय भगवान् ॥७४

तथाहि (भा० १०।५२।३७)—

"श्रुत्वा गुणान् भुवनसुन्दर ! शृण्वतां ते
निर्विश्य कर्णविवरैर्हरतोऽङ्गतापम्।
रूपं दृशां दृशिमतामखिलार्थलाभं
त्वय्यच्युताविशति चित्तमपत्रपं मे ॥" ७५

टीका।

श्रुत्वेति। हे अच्युत! हेभुवनसुन्दर! शृण्वतां जनानां कर्णविवरैः निर्विश्य—अन्तः प्रविश्य अङ्गताप-

अङ्गेति पृथक् सम्बोधनं वा, हरतः, ते—तव, गुणान् श्रुत्वा, तथा, दृशिमतां—चक्षुष्मतां, दृशां—दृगिन्द्रियाणाम्, अखिलार्थलाभात्मकं रूपञ्च श्रुत्वा, अच्युता, त्रपा—लज्जा, यस्मात्, तन्मे चित्तं त्वयि, आविशति – आसज्जते ।

अनुवाद ।

श्रीरुक्मिणी देवी बोलीं, हे भुवनसुन्दर ! तुम्हारे गुणग्राम की कथा का श्रवण करते करते गुणराशि कर्णरन्ध्र में प्रविष्ट होकर जनगण का ताप हरण करती हैं, और जिनके नयन हैं, उन नयनों के द्वारा तुम्हारा रूप का दर्शन कर "निखिलार्थ लाभ हुआ है" यह मानते हैं । हे अच्युत ! मेरा चित्त भी तुम्हारे रूपगुण वृत्तान्त को सुनकर लज्जा को जलाञ्जली देकर तुम्हारे अभ्यन्तर में प्रविष्ट होता है ।

का त्वा मुकुन्द ! महती कुलशील रूप
विद्या वयोद्रविणधामभिरात्मतुल्यम् ।
धीरा पतिं कुलवती न वृणीत कन्या
काले नृसिंह नरलोकमनोभिरामम् ॥७६
(१०।५२।३८)

टीका ।

अहो कुलकन्यानामतिधार्ष्ट्यमिति मा शङ्कीरित्याह का त्वां पतिं न वृणीत । मय्येव केयं दोष शङ्केति भावः, कथम्भूतम् ? कुलशीलादिभिरात्मनैव तुल्यं निरुपममित्यर्थः । द्रविणं – द्रव्य सम्पत् । धाम-प्रभावः, तथा नरलोकस्य मनसामभिरमणं यस्मात् तम् किञ्च काले विवाहावसरे ।

अनुवाद ।

हे मुकुन्द ! मेरा क्या दोष है , हे नृसिंह ! ऐसी कौन कन्या है , जो विवाहावसर में महती कुल,शील रूप विद्या वयः द्रव्यसम्पत, प्रभाव एवं आत्मतुल्य नरलोक में मनोऽभिराम व्यक्ति को वरण नहीं करेगी ?

तन्मे भवान् खलु वृतः पतिरङ्ग जाया
मात्मार्पितश्च भवतोऽत्र विभो विधेहि ।
मा वीरभागमभिमर्शतु चैद्य आराद्
गोमायुवन्मृगपतेर्बलिमम्बुजाक्ष ॥७७

टीका ।

हे विभो ! तत् तस्मात् मे मया भवान् खलु पतिर्वृतः । आत्मा च भवतोऽर्पितः, अत स्त्वमत्रागत्य मा मां भवतो जायां विधेहि, विपक्षे बाधकं द्योतयन्नाह–मा वीरभागमिति. वीरस्य तव, भागं माम् आरात् शीघ्रमेत्य आगत्य चैद्यो माभिमर्शतु मा स्पृशतु , मृगपतेर्बलिं, गोमायुवत् गोमायुः शृगाल इवेति ।

अनुवाद ।

हे विभो ! मैंने भी आप को पति रूपमें वरण किया एवं आत्मार्पण भी किया । हे अम्बुजाक्ष! अतएव आप मुझको भार्य्यारूप में अङ्गीकार करें, यदि मैं वैसा नहीं करती तो जिस प्रकार सिंह का भाग शृगाल बलपूर्वक ग्रहण करता है, वैसा ही होना, चैद्य आकर मुझ को स्पर्श करता ।

पूर्त्तेष्टदत्तनियमव्रतदेवविप्र–
गुर्वर्चनादिभिरलं भगवान् परेशः ।
आराधितो यदि गदाग्रज एत्य पाणिं
गृह्णातु मे न दमघोषसुतादयोऽन्ये ॥७८

अनेकजन्मकृतैः सुकृतैरिदमेव भूयादिति प्रार्थयते पूर्त्तेति । पूर्त्तं कूपादि इष्टमग्निहोत्रादि । दत्तं हिरण्यादिदानम् । नियमस्तीर्थाटनादिः व्रतं कृच्छ्रादि ।

अनुवाद ।

हे गदाग्रज ! मैंने सोचा कि— जन्मजन्मान्तर में यदि मैंने शुभकर्म जलदान, अग्निहोत्र, सुवर्णदान, तीर्थपर्य्यटनादि किया हो, और उससे यदि भगवान् परमेश्वर प्रसन्न हुये हैं, तो गदाग्रज ही मेरा पाणि ग्रहण करें । किन्तु दमघोष सुतादि मेरा पाणि ग्रहण न करें ।

श्वो भाविनि त्वमजितोद्वहने विदर्भान्
गुप्तः समेत्य पृतनापतिभिः परीतः ।
निर्मथ्य चैद्य मगधेन्द्रबलं प्रसह्य
मां राक्षसेन विधिनोद्वह वीर्यशुल्काम् ॥७९

टीका ।

ननु चैद्याय बन्धुभिरर्पितायां त्वं किमधुना करणीयमित्यपेक्षायामाह—श्वो भाविनीति । अजित! श्वो भाविनि उद्वहने विवाहे प्रथमं गुप्तः—अलक्षितः, एवागत्य, पश्चात् पृतना पतिभिः परिवृतः चैद्यादिबलं निर्मथ्य, प्रसह्य बला[त्] वीर्य प्रभाव दर्शनमेव शुल्कं वैवाहिकं देयं यस्यास्तां माम् अनेन राक्षसविधिना उद्वहेत्युपदेशरहस्यम् ।

अनुवाद ।

हे अजित ! आगामि दिवस में परिणय कार्य्य सम्पन्न होगा, अतः तुम प्रथम गुप्तरूप में आकर मुझको राक्षस विवाह विधि से ग्रहण करो, अनन्तर चैद्य जरासन्ध प्रभृति का सैन्य क्षय करो ।

अन्तःपुरान्तरचरीमनिहत्य बन्धून्
त्वामुद्वहे कथमिति प्रवदाम्युपायम् ।
पूर्वेद्युरस्ति महती कुलदेवियात्रा
यस्यां वहिर्नववधू गिरिजामुपेयात् ॥८०

टीका ।

ननु भवतु शिशुपालादिबलप्रमथनम्, अन्तःपुर मध्यगतायास्तव हरणे त्वद्बन्धुवधोऽपि प्रसज्जेत इत्यत आह—अन्तः पुरेति । पुराद् वहिर्वर्त्तमानाम् गिरिजामम्बिकाम्, अम्बिका गृहादेव मम हरणं सुकरमिति भावः ।

अनुवाद ।

अन्तःपुरवासिनी होने पर भी मुझको ग्रहण करने में न क्लेश होगा, न तो बन्धू बध ही होगा, पूर्वदिन अम्बिका मन्दिर गमन निबन्धन नव बधू की अम्बिका मन्दिर यात्रा होती है । मैं भी उस नियम से अम्बिका मन्दिर को जाऊँगी । वहाँ से मुझको ग्रहण करना सहज होगा ।

यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजः स्नपनं महान्तो
वाञ्छन्त्युमापतिरिवात्मतमोऽपहत्यै ।
यर्ह्यम्बुजाक्ष न लभेय भवेत्प्रसादं
जह्यामसून् व्रतकृशान् शतजन्मभिः स्यात् ॥

टीका ।

ननु किमनेन अनर्थकारिणा निर्बन्धेन चैद्योऽपि तावत् प्रख्यात गुणकर्मा । योग्य एव इति चेत्तत्राह यस्येति । हे अम्बुजाक्ष! भवतोऽङ्घ्रिपङ्कजरजोभिः स्नपनम् आत्म स्तमसोऽपहत्यै उमापतिरिव महान्तो वाञ्छन्ति, भवतः प्रसादं यर्ह्यहं न लभेय न प्राप्नुयां, व्रतैरूपवासादिभिः कृशान् असून् प्राणान् त्यजेयम् । ततः किमित्यत आह—शतजन्मभिरिति एवमेव बारं बारं जह्यान् यावच्छतजन्मभिरपि प्रसादः स्यादिति ।

अनुवाद ।

आग्रह से प्रयोजन क्या है, चैद्य भी कुल सम्पन् सम्पन्न है ? उत्तर में कहती है, हे अम्बुजा पवित्र होने के निमित्त शिवादि महान् व्यक्ति जिनकी चरण रज की कामना करते रहते हैं, आप हैं । आपकी प्रसन्नता लाभ यदि नहीं होता तो शतजन्म व्रतादि के द्वारा शरीर त्याग कर उसे प्राप्त करने का व्रत मैं करूँगी ।

कारुण्यसारदा-रागेण गीयते ।

शुनिया तोमार गुण भुवनसुन्दर !
दूर भेल अङ्गताप त्रिविध दुष्कर ॥८२
सर्व-निधि लाभ तोर रूप दरशने ।
सुखे देखे विधि यारे दिलेक लोचने ॥८३
शुनि यदुसिंह ! तोर यशेर बाखान ।
निर्लज्ज हइया चित्त याय तोर स्थान ॥८४
कोन् कुलवती धीरा आछे जगत माझे ।
काल पाइ तोमार चरण नाहि भजे ॥८५

विद्या कुल शील धन रूप बेश धामे ।
सकल बिफल हइ—तोमार बिहने ॥८६
मोर धाष्टर्य क्षमा कर त्रिदशेर राय !
ना पारि राखिते चित्त तोमार धेयाय ॥८७
एतेके बरिल तोर चरण युगल ।
मन प्राण बुद्धि तोहे अर्पिल सकल ॥८८
पत्नीपद दिया मोरे कर निज दासी ।
तोर भागे शिशुपाल नहुक विलासी ॥८९
कृपा करि मोरे परिग्रह कर नाथ ।
हेन सिंह भाग नहे शृगालेर साथ ॥९०
व्रत, दान, गुरु विप्र देवेर अर्चन ।
सत्य यदि सेवियाछों अच्युत चरण ॥९१
तबे गदाग्रज मोर हउ प्राणेश्वर ।
दूर हउ शिशुपाल, एइ मोर बर ॥९२
कालि मोर विवाह हइब हेन आछे ।
आजि झाट आसिबा बिलम्ब कर पाछे ॥९३
गुप्ते आसि रहिबा बिदर्भपुर काछे ।
शेषे सर्व सैन्य सङ्गे आसिबा समाजे ॥९४
चैद्य शाल्व जरासन्ध मथिया सकल ।
हरि लेह मोरे—देखाइया बाहुबल ॥९५
दर्प प्रकाशेर प्रभु ! एइ से समय ।
तोमार वनिता—शिशुपालेर योग्य नय ॥९६
विनि बन्धु बधि मोरे हरिबा येमने ।
ताहार उपाय बोलों तोमार चरणे ॥९७
विवाहेर पूर्व दिने कुलधर्म आछे ।
नव-वधू चलि याय भवानीर काछे ॥९८
सेइ अवसरे प्रभु ! हरिबा आमारे ।
ना मारिबा बन्धु, दोष क्षमिबा सभारे ॥९९
याहार चरणधूली सर्व अङ्गे स्नान ।
उमापति चाहे, चाहे यतेक प्रधान ॥१००
हेन धूलि प्रसाद ना कर यदि मोरे ।
मरिब करिया व्रत बलिलुँ तोमारे ॥१०१
यत जन्मे पाङ तोर अमूल्य चरण ।
तावत मरिब शुन कमललोचन !२०२
चल चल ब्राह्मण सत्वर कृष्ण स्थाने ।
कह गिया ए सकल मोर बिबरणे १०३
एइमत बोले प्रभु रुक्मिणी आवेशे ।
सकल वैष्णवगण प्रेमे कान्दे हासे ॥१०४
हेन रङ्ग हय चन्द्रशेखर मन्दिरे ।
चतुर्द्दिगे हरिध्वनि शुनि उच्चस्वरे ॥१०५
जाग जाग जाग डाके प्रभु हरिदास ।
नारदेर काचे नाचे पण्डित-श्रीवास ॥१०६
प्रथम प्रहरे एइ कौतुक विशेष ।
द्वितीय प्रहरे गदाधरेर प्रवेश ॥१०७
'सुप्रभात' तान सखी—करि निज सङ्गे ।
ब्रह्मानन्द ताहार बड़ाइ बुले रङ्गे ॥१०८
हाथे नड़ि काँखे डालि नेत परिधान ।
ब्रह्मानन्द येहेन बड़ाइ विद्यमान ॥१०९
डाकि बोले हरिदास के सब तोमरा ।
ब्रह्मानन्द बोले याइ मथुरा आमरा ॥११०
श्रीवास बोलये दुइ काहार वनिता ?
ब्रह्मानन्द बोले केने जिज्ञास बारता ?१११
श्रीवास बोले जानिबारे ना जुयाय ?
हय बलि ब्रह्मानन्द मस्तक ढुलाय ॥११२
गङ्गादास बोले आजि कोथाय रहिबा ?
ब्रह्मानन्द बोले स्थान खानि तुमि दिबा ॥११३
गङ्गादास बोले तुमि जिज्ञासिले धर ।
जिज्ञासाय कार्य्य नाहि झाट तुमि नड़ ॥११४
अद्वैत बोलये एत बिचारे कि काज ।
मातृ सम पर नारी केने देह लाज ॥११५

नृत्य-गीत-प्रिय बड़ आमार ठाकुर ।
एथाये नाचाह धन पाइबा प्रचुर ॥११६
अद्वैतेर वाक्य शुनि परम सन्तोषे ।
नृत्य करे गदाधर प्रेम परकाशे ॥११७
रमा बेशे गदाधर नाचे मनोहर ।
समय उचित गीत गाय अनुचर ॥११८
गदाधर नृत्य देखि आछे कोन जन ।
विह्वल हइया नाहि करये क्रन्दन ॥११९
प्रेमनदी बहे गदाधरेर नयाने ।
पृथिवी हइया सिक्त धन्य हेन माने ॥१२०
गदाधर हैला येन गङ्गा मूर्त्तिमती ।
सत्य सत्य गदाधर कृष्णेर प्रकृति ॥१२१
आपने चैतन्य बलियाछे बारेबार ।
"गदाधर मोर वैकुण्ठेर परिबार ॥"१२२
ये गाय ये देखे सब भासिलेन प्रेमे ।
चैतन्य प्रसादे केहो बाह्य नाहि जाने ॥१२३
'हरिहरि' बलि कान्दे वैष्णवमण्डल ।
सर्व-गणे हइल आनन्द कोलाहल ॥१२४
चौदिके शुनिया कृष्णप्रेमेर क्रन्दन ।
गोपीकार बेशे नाचे माधवनन्दन ॥१२५
हेनइ समये महा प्रभु विश्वम्भर ।
प्रवेश करिला आद्याशक्ति बेशधर ॥१२६
आगे नित्यानन्द बुड़ी बड़ाइर बेशे ।
बङ्क बङ्क करि हाँटे, प्रेमरसे भासे ॥१२७
मण्डली करिया सब वैष्णव रहिला ।
जयजय महाध्वनि करिते लागिला ॥१२८
केहो नारे चिनिते ठाकुर विश्वम्भर ।
हेन अति अलक्षित बेश मनोहर ॥१२९
नित्यानन्द महाप्रभु-प्रभुर बड़ाइ ।
ताँर पाछे प्रभु आर किछु चिह्न नाइ ॥१३०

अतएव सभेइ चिनिलेन प्रभु एइ ।
बेशे केहो लखिते ना पारे प्रभु सेइ ॥१३
सिन्धु हैते प्रत्यक्ष कि हइला कमला ।
रघुसिंहगृहिणी कि जानकी आइला ॥१३
किबा महालक्ष्मी किबा आइला पार्वती ।
किबा वृन्दावनेर सम्पत्ति मूर्त्तिमती ॥१३
किबा भागीरथी किबा रूपवती दया ।
किबा सेइ महेश मोहिनी महामाया ॥१३
एइमत अन्योऽन्ये सर्व-जनेजने ।
ना चिनिया प्रभुरे आपने मोहमाने ॥१३
आजन्म धरिया प्रभु देखिल याहारा ।
तथापि लखिते नारे तिलार्द्धेक तारा ॥१३
अन्येर कि दाय आइ ना पारे चिनिते ।
मूर्त्तिभेदे लक्ष्मी किबा आइला नाचिते ॥१३
अचिन्त्य अव्यक्त सत्य महायोगेश्वरी ।
भकति स्वरूपा हैला आपने श्रीहरि ॥१३
महायोगेश्वर हर ये रूप देखिया ।
महामोह पाइलेन पार्वती लइया ॥१३
तबे ये नहिल मोह वैष्णव सभार ।
पूर्व अनुग्रह आछे एइ हेतु तार ॥१४
कृपा जलनिधि प्रभु हइला सभारे ।
सभार जननीभाब हइल अन्तरे ॥१४
परलोक हैते येन आइला जननी ।
आनन्दे नन्दन सब आपना ना जानि ॥१४
एइमत अद्वैतादि प्रभुरे देखिया ।
कृष्णप्रेमसिन्धु माझे बुलेन भासिया ॥१४
जगतजननीभावे नाचे विश्वम्भर ।
समय उचित गीत गाय अनुचर ॥१४
हेन दढ़ाइते केहो नारे कोन जन ।
कोन् प्रकृतिर भावे नाचे नारायण ॥१४

कखनो बोलये विप्र ! कृष्ण कि आइला ?
तखन बुझिये येन विदर्भेर बाला ॥१४६
नयने आनन्दधारा देखिगे यखन ।
मूर्तिमती गङ्गा येन बुझिये तखन ॥१४७
भावावेशे यखन बा अट्ट अट्ट हासे ।
महाचण्डी हेन सभे बुझेन प्रकाशे ॥१४८
ढुलिया ढुलिया प्रभु नाचये यखने ।
साक्षात रेवती येन कादम्बरी पाने ॥१४९
क्षणे बोले चल बड़ाइ याइ वृन्दावने ।
गोकुलसुन्दरी भाब बुझिये तखने ॥१५०
बीरासने क्षणे प्रभु वसे ध्यान करि ।
सभे देखे येन महा कोटि योगेश्वरी ॥१५१
अनन्त ब्रह्माण्डे यत निज शक्ति आछे ।
सकल प्रकाशे प्रभु रुक्मिणीर काचे ॥१५२
व्यपदेशे महाप्रभु शिखाय सभारे ।
पाछे मोर शक्ति कोन जन निन्दा करे ॥१५३
लौकिक वैदिक यत किछु विष्णु शक्ति ।
सभार सम्माने हय कृष्णे दृढ़ भक्ति ॥१५४
देव द्रोह करिले कृष्णेर बड़ दुःख ।
गण सहे कृष्ण पूजा करिलेइ सुख ॥१५५
ये शिखाये कृष्णचन्द्र से-इ सत्य हय ।
अभागये पापिष्ठ मति ताहा नाहि लय ॥१५६
सर्व शक्ति स्वरूपा नाचये विश्वम्भर ।
केहो नाहि देखे हेन नृत्य मनोहर ॥१५७
ये देखे ये शुने ये बा गाय प्रभु सङ्गे ।
सभेइ भासये प्रेम-सागर तरङ्गे ॥१५८
एको वैष्णवेर यत नयनेर जल ।
सेइ येन महा वन्या—थाकुक सकल ॥१५९
आद्याशक्ति वेशे नाचे प्रभु गौरसिंह ।
सुखे देखे ताँर यत चरणेर भृङ्ग ॥१६०
कम्प-स्वेद-पुलक अश्रुर अन्त नाञि ।
मूर्तिमती भक्ति हैला चैतन्यगोसाञि ॥१६१
नाचेन ठाकुर धरि नित्यानन्द-हाथ ।
से कटाक्ष स्वभाव वर्णिते शक्ति का'त ॥१६२
सम्मुखे देउटि धरे पण्डित-श्रीमान् ।
चतुर्द्दिगे हरिदास करे सावधान ॥१६३
हेनइ समये नित्यानन्द हलधर ।
पड़िला मूर्च्छित हइया पृथिवी उपर ॥१६४
कोथाय बा गेल बुड़ी बड़ाइर साज ।
कृष्णरसे विह्वल हइला नागराज ॥१६५
येइमात्र नित्यानन्द पड़िला भूमिते ।
सकल वैष्णवगण कान्दे चारिभिते ॥१६६
हुड़ाहुड़ि हैल कृष्णप्रेमेर क्रन्दन ।
सकल कराय प्रभु श्रीशचीनन्दन ॥१६७
कारो गला धरि केहो कान्दे उच्च रा'य ।
काहारो चरण धरि केहो गड़ि याय ॥१६८
क्षणेके ठाकुर गोपीनाथे कोले करि ।
महालक्ष्मी-भावे उठे खट्वार उपरि ॥१६९
सम्मुखे रहिला सभे जोड़ हस्त करि ।
मोर स्तब पड़ बोले गौराङ्ग श्रीहरि ॥१७०
'जननी आवेशे' बुझिलेन सर्वजने ।
से-इ रूपे सभे स्तुति पड़े प्रभु शुने ॥१७१
केहो पड़े लक्ष्मीस्तब केहो चण्डी स्तुति ।
सभे स्तुति पढ़ेन—याहार येन मति ॥१७२

मालशी (राग)

जयजय जगत-जननी महामाया ।
दुःखित जीवेर देह चरणेर छाया ॥१७३
जयजय अनन्त ब्रह्माण्ड-कोटीश्वरि !
तुमि युगेयुगे धर्म राख अवतरि ॥१७४
ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरे तोमार महिमा ।
बलिते ना पारे अन्य के दिबेक सीमा ॥१७५

जगत-स्वरूपा तुमि तुमि सर्व शक्ति ।
तुमि श्रद्धा,दया,लज्जा,तुमि विष्णुभक्ति॥१७६
यत विद्या—सकल तोमार मूर्त्तिभेद ।
सर्वप्रकृतिर शक्ति तुमि कहे वेद ॥१७७
निखिल ब्रह्माण्डे परिपूर्ण तुमि माता ।
के तोमार स्वरूप कहिते पारे कथा ॥१७८
तुमि त्रिजगत हेतु गुणत्रयमयी ।
ब्रह्मादि तोमारे नाहि जाने, जाने कोइ ॥१७९
सर्वाश्रया तुमि सर्वजीवेर वसति ।
तुमि आद्या अविकारा परमा प्रकृति ॥१८०
जगत आधार तुमि द्वितीय रहिता ।
मही-रूपे तुमि सर्वजीब पालयिता ॥१८१
जल-रूपे तुमि सर्व जीवेर जीवन ।
तोमा स्मङरिले खण्डे अशेष बन्धन ॥१८२
साधुजन गृहे तुमि लक्ष्मी मूर्त्तिमती ।
असाधुर घरे तुमि कालरूपाकृति ॥१८३
तुमि से कराह त्रिजगते सृष्टि स्थिति ।
तोमा ना भजिले पाय त्रिविध दुर्गति ॥१८४
तुमि श्रद्धा वैष्णवेर सर्वत्र उदया ।
राखह जननि ! चरणेर दिया छाया ॥१८५
तोमार मायाय मग्न सकल संसार ।
तुमि ना राखिले माता के राखिब आर ॥१८६
सभार उद्धार लागि तोमार प्रकाश ।
दुःखित जीवेरे माता ! कर निज-दास ॥१८७
ब्रह्मादिर वन्द्य तुमि सर्व-भूत-बुद्धि ।
तोमा'स्मङरिले सर्व मन्त्रादिर शुद्धि ॥१८८
एइमत स्तुति करे सकल महान्त ।
वर मुख महाप्रभु शुनये नितान्त ॥१८९
पुनःपुनः सभे दण्डप्रणाम करिया ।
पुन स्तुति करे श्लोक पढ़िया पढ़िया ॥१९०

"सभे लइलाम माता ! तोमार शरण ।
शुभदृष्टि कर तोर पदे रहु मन ॥"॥१९१
एइमत सभेइ करेन निबेदन ।
ऊर्द्धबाहु करि सभे करेन क्रन्दन ॥१९२
गृहमाझे कान्दे सब पतिव्रतागण ।
आनन्द हइल चन्द्रशेखरभवन ॥१९३
आनन्दे सकल लोक वाह्य नाहि जाने ।
हेनइ समये निशि हैल अवसाने ॥१९४
आनन्दे ना जाने केहो निशि भेल शेष ।
दारुण अरुण आसि भेल परबेश ॥१९५
पोहाइल निशि हैल नृत्य अवसान ।
बाजिल सभार बुके येन महावाण ॥१९६
चमकित हइ सभे चारिदिगे चा'य ।
पोहाइल निशि करि कान्दे उभरा'य ॥१९७
कोटि पुत्र शोकेओ एतेक दुःख नहे ।
ये दुःख जन्मिल सर्व वैष्णव हृदये ॥१९८
ये दुःखे वैष्णव सब अरुणेरे चाहे ।
प्रभुर कृपार लागि भस्म नाहि हये ॥१९९
ए रङ्ग रहिब हेन बिषाद पाइया ।
अतएब गौरचन्द्र करिलेन इहा ॥२००
कान्दे सर्व-भक्तगण बिषाद भाबिया ।
पतिव्रता कान्दे भूमिते पड़िया ॥२०१
यत नारायणी शक्ति जगत जननी ।
सेइ सब हइयाछे वैष्णव गृहिणी ॥२०२
अन्योऽन्ये कान्दे सब पतिव्रतागण ।
सभेइ धरेन शचीदेवीर चरण ॥२०३
चौदिगे उठिल विष्णुभक्तिर क्रन्दन ।
प्रेममय हैल चन्द्रशेखरभवन ॥२०४
सहजेइ वैष्णवेर क्रन्दन उचित ।
जन्मजन्म जाने यारा कृष्णेर चरित ॥२०५

केहो बोले आरे रात्रि ! केने पोहाइला ?
हेन रसे केने कृष्ण ! वञ्चित करिला ?२०६
चौदिगे देखिया सब वैष्णव क्रन्दन ।
अनुग्रह करिलेन श्रीशचीनन्दन ॥२०७
माता पुत्रे येन हय स्नेह अनुराग ।
एइमत सभारे दिलेन पुत्र भाव ॥२०८
मातृभावे विश्वम्भर सभारे धरिया ।
स्तनपान कराय परम स्निग्ध हैया ॥२०९
कमला, पार्वती, दया, महानारायणी ।
आपने हइला प्रभु जगतजननी ॥२१०
सत्य करिलेन प्रभु आपनार गीता ।
आमि पिता, पितामह, आमि धाता, माता ॥२११

तथाहि (गीता ९।१७)

पिताहमस्य जगतो माता धा ।। पितामहः॥२१२

अनुवाद ।

मैं इस जगत के पिता, माता, धाता कर्मफल दाता एवं पितामह हूँ ।

आनन्दे वैष्णव सब करे स्तनपान ।
कोटिकोटि जन्म यारा महाभाग्यवान् ॥२१३
स्तनपाने सभार विरह गेल दूर ।
प्रेमरसे सभे मत्त हइला प्रचुर ॥२१४
ए सब लीलार कभु अवधि ना हय ।
आविर्भाव तिरोभाव मात्र वेदे कय ॥२१५
महाराजराजेश्वर गौराङ्गसुन्दर ।
एहो रङ्ग करिलेन नदीया भितर ॥२१६
निखिल ब्रह्माण्डे यत स्थूल सूक्ष्म आछे ।
सब चैतन्येर रूप भेद कर पाछे ॥२१७
इच्छाय काचये काच, इच्छाय घुचाय ।
इच्छाय करये सृष्टि इच्छाय मिलाय ॥२१८
इच्छामय महेश्वर इच्छा काच काचे ।
तान इच्छा नाहि करे हेन कोन् आछे ॥२१९
तथापि ताँहार काच सकलि सुसत्य ।
जीव तारिबार लागि ए सब महत्त्व ॥२२०
इहा ना बुझिया कोन् पापी जना जना ।
प्रभुरे बोलये "गोपी" खाइया आपना ॥२२१
अद्भुत गोपीका नृत्य चारि वेद धन ।
कृष्णभक्ति हय इहा करिले श्रवण ॥२२२
हइला बड़ाइ बुड़ी प्रभु नित्यानन्द ।
से लीलार हेन लक्ष्मी काचे गोरचन्द्र ॥२२३
यखने ये रूपे गौरसुन्दर विहरे ।
सेइ अनुरूप रूप नित्यानन्द धरे ॥२२४
प्रभु हइलेन गोपी, निताइ बड़ाइ ।
के बुझिब इहा यार अनुभव नाइ ॥२२५
कृष्ण अनुग्रहे से ए-सब-मर्म जानि ।
अल्प भाग्ये नित्यानन्दस्वरूप ना जानि ॥२२६
किबा योगी नित्यानन्द किबा भक्त ज्ञानी ।
यार येनमत इच्छा ना बोलये केनि ॥२२७
ये से केने चैतन्येर नित्यानन्द नहे ।
तथापि से पादपद्म रहुक हृदये ॥२२८
एत परिहारेओ ये पापी निन्दा करे ।
तबे लाथि मारोँ तार शिरेर उपरे ॥२२९
मध्यखण्ड कथा येन अमृत श्रवण ।
यहिँ लक्ष्मीवेशे नृत्य कैला नारायण ॥२३०
नाचिला जननीभावे भक्ति शिखाइया ।
सभार पूरिला आश स्तन पियाइया ॥२३१
सप्तदिन श्री आचार्य्यरत्नेर मन्दिरे ।
परम अद्भुत तेज छिल निरन्तरे ॥२३२
चन्द्र सूर्य्य विद्युत् एकत्र येन ज्वले ।
देखये सुकृति सब महाकुतूहले ॥२३३

यतेक आइसे लोक आचार्य्यमन्दिरे ।
चक्षु मेलिबारे शक्ति केहो नाहि धरे ॥२३४
लोके बोले कि कारणे आचार्य्येर घरे ।
दुइ चक्षु मेलिते फुटिया येन पड़े ?२३५
शुनिया वैष्णवगण मने मने हासे ।
केहो आर किछु नाहि करये प्रकाशे ॥२३६
हेन से चैतन्य माया परम गहन ।
तथापिह केहो किछु ना बुझे कारण ॥२३७
एमत अचिन्त्य लीला गौरचन्द्र करे ।
नवद्वीपे सर्व शक्ति सहिते विहरे ॥२३८
शुनशुन आरे भाइ ! चैतन्येर कथा ।
मध्यखण्डे ये ये कर्म कैला यथायथा ॥२३९
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥२४०

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे गौराङ्गस्य गोपिकानृत्यवर्णनं नाम अष्टादशोऽध्यायः ।



ऊनविंश अध्याय

जय विश्वम्भर सर्व वैष्णवेर नाथ ।
भक्ति दिया जीव प्रभु कर आतमसाथ ॥१
हेनमते नवद्वीपे प्रभु विश्वम्भर ।
क्रीड़ा करे नहे सर्व नयन गोचर ॥२
आपने भक्तेर सब मन्दिरे मन्दिरे ।
नित्यानन्द गदाधर संहति विहरे ॥३
प्रभुर आनन्दे पूर्ण भागवतगण ।
कृष्ण-परिपूर्ण देखे सकल भुवन ॥४
निरवधि सभार आवेशे नाहि वाह्य ।
सङ्कीर्त्तन विना आर नाहि कोन कार्य्य ॥५
सभा हैते मत्त बड़ आचार्य्यगोसाञि ।
अगाध चरित्र बुझे हेन केहो नाञि ॥६
जाने जनकथोक श्रीचैतन्य कृपाय ।
"चैतन्येर महाभक्त शान्तिपुरराय ॥"७
वाह्य हैले विश्वम्भर सर्व वैष्णवेरे ।
महाभक्ति करेन, विशेष अद्वैतेरे ॥८
इहाते असुखी बड़ शान्तिपुरनाथ ।
मनेमने गर्जे चित्ते ना पाय सोयाथ ॥९
निरवधि चोरा मोरे विड़म्बना करे ।
प्रभुता छाड़िया मोर चरणेते धरे ॥१०
बले नाहि पारोँ मुञि, प्रभु महाबली ।
धरियाओ लय मोर चरणेर धूली ॥११
भक्ति बल सबे मोर आछये उपाय ।
भक्ति विना विश्वम्भरे जिना नाहि याय ॥१२
तबे से 'अद्वैतसिंह' नाम लोके घोषे ।
चूर्ण करोँ माया यबे अशेषविशेषे ॥१३
भृगुरे जिनिया आश पाइयाछे चोरा ।
भृगु हेन शतशत शिष्य आछोँ मोरा ॥१४
हेन क्रोध जन्माइमु प्रभुर शरीरे ।
स्वहस्ते आपने येन मोर शास्ति करे ॥१५
'भक्ति' बुझाइते से प्रभुर अवतार ।
'हेन भक्ति ना मानिमु' मन्त्रणा आमार ॥१६

भक्ति ना मानिले क्रोधे आपना पासरि ।
प्रभु मोरे शास्ति करिबेन चुले धरि ॥१७
एइ मन्त्र चिन्तिया अद्वैत महारङ्गे ।
बिदाय हइला प्रभु, हरिदास सङ्गे ॥१८
कोन कार्य्य लक्ष्य करि गृहेते आइला ।
आसिया मनेर मन्त्र करिते लागिला ॥१९
निरवधि भाबाबेशे दोले मत्त हइया ।
बाखाने बाशिष्ठ-शास्त्र ज्ञान प्रकाशिया ॥२०
ज्ञान विने किबा शक्ति धरे विष्णुभक्ति ।
अतएव सभार प्राण ज्ञान सर्वशक्ति ॥२१
हेन 'ज्ञान' ना बुझिया कोनकोन जन ।
घरे हाराइया धन, चाहे गिया वन ॥२२
विष्णुभक्ति दर्पण, लोचन हय ज्ञान ।
चक्षुहीन जनेर दर्पणे कोन् काम ?२३
आदि वृद्ध आमि पढ़िलाम सर्वशास्त्र ।
बुझिलाम सर्व-अभिप्राय 'ज्ञान' मात्र ॥२४
अद्वैत-चरित्र भाल बुझे हरिदास ।
व्याख्यान शुनिया महा अट्टअट्ट हास ॥२५
एइमत अद्वैतेर चरित्र अगाध ।
सुकृतिर भाल, दुष्कृतिर कार्य्यबाध ॥२६
सर्ववाञ्छाकल्पतरु प्रभु विश्वम्भर ।
अद्वैत सङ्कल्प चित्ते हइल गोचर ॥२७
एकदिन नगर भ्रमये प्रभु रङ्गे ।
देखये आपन सृष्टि नित्यानन्द सङ्गे ॥२८
आपनारे 'सुकृति' करिया प्रभु माने ।
मोर शिल्प चा'हे प्रभु सदय नयने ॥२९
दुइ चन्द्र येन दुइ चलिया से याय ।
मति अनुरूप सभे दरशन पाय ॥३०
अन्तरीक्षे थाकि सभे देखे देवगण ।
दुइ चन्द्र देखि—सभे गणे मनेमन ॥३१
आन लोकेर हैल वसुमती ज्ञान ।
चान्द देखि पृथिवीरे हैल स्वर्ग-भान ॥३२
नर ज्ञान आपनारे सभार जन्मिल ।
चन्द्रेर प्रभावे नरे देव बुद्धि हैल ॥३३
दुइ चन्द्र देखि सभे करेन बिचार ।
कभु स्वर्गे नाहि दुइ चन्द्रेर अधिकार ॥३४
कोन देव बोले शुन बचन आमार ।
मूल चद्र एक प्रतिविम्व तार ॥३५
कोन देव बोले हेन बुझिये कारण ।
भाग चन्द्र विधि किबा करिल योजन ॥३६
केहो बोले पिता पुत्र एकरूप हय ।
एक विधु बुझि एक चन्द्रेर तनय ॥३७
वेदे नारे निश्चयिते ये प्रभुर रूप ।
ताहाते ये देव मोहे, ए नहे कौतुक ॥३८
हेनमते नगरे भ्रमये दुइजन ।
नित्यानन्द, जगन्नाथमिश्रेर नन्दन ॥३९
नित्यानन्द, सम्बोधिया बोले विश्वम्भर ।
"चल याइ शान्तिपुर आचार्य्येर घर ॥"४०
महारङ्गी दुइ प्रभु परम चञ्चल ।
से-इ पथे चलिलेन आचार्य्येर घर ॥४१
मध्य-पथे गङ्गार समीपे एक ग्राम ।
मुलुकेर काछे से 'ललितपुर' नाम ॥४२
सेइ ग्रामे गृहस्थ सन्न्यासी एक आछे ।
पथेर समीपे घर जाह्नवीर काछे ॥४३
नित्यानन्द स्थाने प्रभु करये जिज्ञासा ।
काहार मण्डप जान काहारो ओ वासा ?४४
नित्यानन्द बोले प्रभु सन्न्यासी आलय ।
प्रभु बोले तारे देखि यदि भाग्य हय ॥४५
हासि गेला दुइ प्रभु सन्न्यासीर स्थाने ।
विश्वम्भर सन्न्यासीरे करिला प्रणामे ॥४६

देखिया मोहन मूर्त्ति द्विजेर नन्दन ।
विस्मित हइल सेइ सन्न्यासीर मन ॥४७
सन्तोषे सन्न्यासी करे बहु आशीर्वाद ।
"धन वंश सुविवाह हउ विद्यालाभ ॥"४८
प्रभु बोले गोसाञि ! ए नहे आशीर्वाद ।
हेन बोले तोरे हउ कृष्णेर प्रसाद ॥४९
विष्णुभक्ति आशीर्वाद अक्षय अव्यय ।
ये बलिला गोसाञि तोमार योग्य नय ॥५०
हासिया सन्न्यासी बोले पूर्वे ये शुनिल ।
साक्षात ताहार आजि निदान पाइल ॥५१
भाल रे बलिते लोक ठेङ्गा लैया धाय ।
ए विप्रपुत्रेर सेइमत व्यबसाय ॥५२
'धन बर' दिल आमि परम सन्तोषे ।
कोथा गेल उपकार आर आमा दोषे ॥५३
सन्न्यासी बोलये शुन ब्राह्मण कुमार ।
केने तुमि आशीर्वाद निन्दिले आमार ॥५४
पृथिवीते जन्मिया ये ना कैल विलास ।
उत्तम कामिनी यार ना हइल पाश ॥५५
यार धन नाहि तार जीवने कि काज ।
हेन धन बर दिते पाओ तुमि लाज ॥५६
हइल बा विष्णुभक्ति तोमार शरीरे ।
धन विना कि खाइबा ? बोल त आमारे ॥५७
हासे प्रभु सन्न्यासीर बचन शुनिया ।
श्रीहस्त दिलेन निजकपाले तुलिया ॥५८
व्यपदेशे महाप्रभु सभारे शिखाय ।
भक्ति विने केहो येन किछुइ ना चाय ॥५९
शुनशुन गोसाञि सन्न्यासी ये खाइब ।
निजकर्मे ये आछे, से आपने मिलिब ॥६०
धन वंश निमित्त संसारे काम्य करे ।
बोल तार धन वंश तबे केन मरे ॥६१
ज्वरेर लागिया केहो कामना ना करे ।
तबे केने ज्वर आसि पीड़ये शरीरे ॥६२
शुनशुन गोसाञि इहार हेतु कर्म ।
कोन महाजने से इहार जाने मर्म ॥६३
वेदेओ बुझाय स्वर्ग बोले जनाजना ।
मूर्ख प्रति से केबल वेदेर करुणा ॥६४
बिषयसुखेते बड़ लोकेर सन्तोष ।
चित्त बुझि कहे वेद ; वेदेर कि दोष ॥६५
धन पुत्र पाइ गङ्गास्नान हरिनामे ।
शुनिया चलये सब वेदेर कारणे ॥६६
ये ते मते गङ्गास्नान हरिनाम लैले ।
द्रव्येर प्रभावे भक्ति हइबेक हेले ॥६७
एइ वेद अभिप्राय मूर्ख नाहि बुझे ।
कृष्णभक्ति छाड़िया, बिषयसुखे मजे ॥६८
भाल मन्द बिचारिया बुझह गोसाञि !
कृष्णभक्ति-व्यतिरिक्त आर बर नाञि ॥६९
सन्न्यासीर लक्ष्ये शिक्षागुरु भगवान् ।
'भक्तियोग' कहे वेद करिया प्रमाण ॥७०
ये कहे चैतन्यचान्द से-इ सत्य हय ।
परनिन्दा पापे जीव ताहा नाहि लय ॥७१
हासये सन्न्यासी शुनि प्रभुर बचन ।
ए बुझि पागल विप्र मन्त्रेर कारण ॥७२
हेन बुझि एइ से सन्न्यासी बुद्धि दिया ।
लइ याय ब्राह्मणकुमार भाङ्गाइया ॥७३
सन्न्यासी बोलये हेन काल से हइल ।
शिशुर अग्रेते आमि किछु ना जानिल ॥७४
आमि करिलाम ये पृथिवी पर्य्यटन ।
अयोध्या, मथुरा, माया, वदरिकाश्रम ॥७५
गुजराट काशी गया विजयनगरी ।
सिंहल गेलाम आमि यत आछे पुरी ॥७६

आमि ना जानिल भाल मन्द हय काय ।
दुयेर छाओयाल आजि आमारे शिखाय ॥७७
हासि बोले नित्यानन्द शुनह गोसाञि !
शिशु सङ्ग तोमार बिचारेर कार्य्य नाञि ॥७८
आमि से जानिये भाल तोमार महिमा ।
आमारे देखिया तुमि सब कर क्षमा ॥७९
आपनार श्लाघा शुनि सन्न्यासी सन्तोषे ।
भिक्षा करिबारे झट बोलये हरिषे ॥८०
नित्यानन्द बोले कार्य्यगौरबे चलिब ।
किछु देह स्नान करि पथेते खाइब ॥८१
सन्न्यासी बोलये स्नान कर एइखाने ।
किछु खाइ स्निग्ध हइ करह गमने ॥८२
पातकी तारिते दुइ प्रभु अवतारे ।
रहिलेन दुइ प्रभु सन्न्यासीर घरे ॥८३
जाह्नवीर मज्जने घुचिल पथश्रम ।
फलाहार करिते बसिला दुइजन ॥८४
दुग्ध आम्र पनसादि करि कृष्णसाथ ।
शेष खाये दुइ प्रभु सन्न्यासी साक्षात ॥८५
वामपन्थि-सन्न्यासी मदिरा पान करे ।
नित्यानन्द प्रति ताहा कहे ठारेठोरे ॥८६
शुनह श्रीपाद ! किछु आनन्द आनिब ।
तोमा हेन अतिथि बा कोथाय पाइब ॥८७
देशान्तर करि नित्यानन्द सब जाने ।
मद्यप सन्न्यासी हेन जानिलेन मने ॥८८
आनन्द आनिब न्यासी बोले बारबार ।
नित्यानन्द बोले तबे लड़ से आमार ॥८९
देखिया दोहार रूप मदन समान ।
सन्न्यासीर पत्नी चाहे जुड़िया धेयान ॥९०
सन्न्यासीरे निरोध करये तार नारी ।
भोजनेते तुमि केने बिरोध आचरि ॥९१
प्रभु बोले कि आनन्द बोलये सन्न्यासी ?
नित्यानन्द बोलये मदिरा हेन वासि ॥९२
विष्णु विष्णु स्मरण करये विश्वम्भर ।
आचमन करि प्रभु चलिला सत्वर ॥९३
दुइप्रभु चञ्चल गङ्गाय झाँप दिया ।
चलिला आचार्य्यगृहे गङ्गाय भासिया ॥९४
स्त्रैण मद्यपेरे प्रभु अनुग्रह करे ।
निन्दक वेदान्ती यदि तथापि संहरे ॥९५
न्यासी हैया मद्य पिये स्त्रीसङ्ग आचरे ।
तथापि ठाकुर गेला ताहार मन्दिरे ॥९६
वाकोवाक्य कैला प्रभु शिखाइला धर्म ।
बिश्राम करिया कैला भोजनेर कर्म ॥९७
ना हये ए-जन्मे भाल हैब आर जन्मे ।
सबे निन्दकेरे नाहि वासे भाल मर्मे ॥९८
देखा नाहि पाय यत अभक्त सन्न्यासी ।
तार साक्षी सन्न्यासी यतेक काशीवासी ॥९९
शेषखण्डे यखने चलिला प्रभु काशी ।
शुनिलेक यत काशीनिवासी सन्न्यासी ॥१००
शुनिया आनन्द बड़ हैला न्यासि गण ।
देखिब चैतन्य, बड़ शुनि महाजन ॥१०१
सभेइ वेदान्ती ज्ञानी सभेइ तपस्वी ।
आजन्म काशीते वास, सभेइ यशस्वी ॥१०२
एक दोषे सकल गुणेर गेल शक्ति ।
पढ़ाये वेदान्त ना बाखाने विष्णुभक्ति ॥१०३
अन्तर्य्यामी गौरसिंह इहा सब जाने ।
गियाओ काशीते नाहि दिला दरशने ॥१०४
रामचन्द्रपुरीर मठेते लुकाइया ।
रहिलेन दुइमास वाराणसी गिया ॥१०५
विश्वरूपक्षौरेर दिवस दुइ आछे ।
लुकाइया चलिला, देखये केहो पाछे ॥१०६

पाछे शुनिलेन सब सन्न्यासीर गण ।
चलिलेन चैतन्य, नहिल दरशन ॥१०७
सर्व बुद्धि हरिलेक एक निन्दा पाप ।
पाछेश्रो काहारो चिते ना जन्मिल ताप ॥१०८
ग्रारो बोले ग्रामरा सकल पूर्वाश्रमी ।
ग्रामा'सभा सम्भाषिया विना गेला केनी॥१०९
दुइदिन लागि केने स्वधर्म छाड़िया ।
के गेला विश्वरूपक्षौर से लङ्घिया ॥११०
भक्तिहीन हइले एइमत बुद्धि हय ।
निन्दकेर पूजा शिव कभु नाहि लय ॥१११
काशीते ये पर निन्दे से शिवेर दण्ड ।
शिव ग्रपराधे विष्णु नहे तार बन्ध्य ॥११२
सभार करिब गौरसुन्दर उद्धार ।
व्यतिरिक्त वैष्णव निन्दक दुराचार ॥११३
मद्यपेर घरे कैला सिनान भोजन ।
निन्दा करे वेदान्ती ना पाइल दरशन ॥११४
चैतन्येर दण्डे यार चित्ते नाहि भय ।
जन्मेजन्मे सेइ जीव यमदण्ड्य हय ॥११५
ग्रज भव ग्रनन्त कमला सर्वमाता ।
सभार श्रीमुखे निरवधि याँर कथा ॥११६
हेन गोरचन्द्र यशे यार नहे मति ।
व्यर्थ तार सन्न्यास वेदान्त पाठे रति ॥११७
हेन मते दुइ प्रभु ग्रापन ग्रानन्दे ।
सुखे दुइ चलिलेन जाह्नवीतरङ्गे ॥११८
महाप्रभु निरवधि करये हुङ्कार ।
मुञि सेइ मुञि सेइ बोले बारेबार ॥११९
मोहोरे ग्रानिला नाढ़ा शयन भाङ्गिया ।
एखने बाखाने ज्ञान भक्ति लुकाइया ॥१२०
तार शास्ति करोँ ग्राजि सब परतेखे ।
केमने देखिब ग्राजि ज्ञानयोग राखे ॥१२१
तर्जगर्ज महाप्रभु गङ्गास्रोते भासे ।
मौन हइ नित्यानन्द मनेमने भासे ॥१२२
दुइ प्रभु भासि याय गङ्गार उपरे ।
ग्रनन्त मुकुन्द येन क्षीरोदसागरे ॥१२३
भक्तियोग प्रभावे ग्रद्वैत महाबल ।
बुझिलेन चित्ते मोर हइबेक फल ॥१२४
ग्राइसे ठाकुर क्रोधे ग्रद्वैत जानिया ।
ज्ञानयोग बाखाने ग्रधिक मत्त हइया ॥१२५
चैतन्यभक्तेर के बुझिने पारे लीला ।
गङ्गापथे दुइ प्रभु ग्रासिया मिलिला ॥१२६
क्रोधमुखे विश्वम्भर नित्यानन्द सङ्गे ।
देखये ग्रद्वैत दोले ज्ञानानन्दरङ्गे ॥१२७
प्रभु देखि हरिदास दण्डवत हय ।
ग्रच्युत प्रणाम करे ग्रद्वैततनय ॥१२८
ग्रद्वैत गृहिणी मनेमने नमस्करे ।
देखया प्रभुर मूर्त्ति चिन्तित ग्रन्तरे ॥१२९
विश्वम्भर तेज येन कोटि सूर्य्यमय ।
देखिया सभार चित्ते उपजिल भय ॥१३०
क्रोधमुखे बोले प्रभु ग्रारे ग्रारे नाढ़ा ।
बोल देखि ज्ञान भक्ति दुइते के बाढ़ा ?१३१
ग्रद्वैत बोलये सर्वकाल बड़ 'ज्ञान, ।
ज्ञान नाहि यार तार भक्तिते कि काम ॥१३२
ज्ञान बड़ ग्रद्वैत शुनिया बचन ।
क्रोधे वाह्य पासरिला श्रीशचीनन्दन ॥१३३
पिण्डा हैते ग्रद्वैतेरे धरिया ग्रानिया ।
स्वहते किलाय प्रभु उठाने पाड़िया ॥१३४
ग्रद्वैतगृहिणी पतिव्रता जगन्माता ।
सर्व तत्त्व जानियाग्रो करये व्यग्रता ॥१३५
बुढ़ा विप्र बुढ़ा विप्र राख राख प्राण ।
काहार शिक्षाय एत कर ग्रपमान ॥१३६

एइ बुड़ा वामनेरे, आर कि करिबा ।
कोन किछु हैले एड़ाइते ना पारिबा ॥१३७
पतिव्रता वाक्य शुनि नित्यानन्द हासे ।
भये कृष्ण स्मङरये प्रभु हरिदासे ॥१३८
क्रोधे प्रभु पतिव्रता वाक्य नाहि शुने ।
तर्जगर्ज अद्वैतेरे सदम्भ बचने ॥१३९
सुतिया आछिलुँ क्षीरसागरेर माझे ।
आरे नाढ़ा ! निद्राभङ्ग मोर तोर काजे ॥१४०
भक्ति प्रकाशिबि तुइ आमारे आनिया ।
एबे वाखानिस् ज्ञान भक्ति लुकाइया ॥१४१
यदि लुकाइबि भक्ति तोर चित्ते आछे ।
तबे मोरे प्रकाश करिलि कोन् काजे ॥१४२
तोहोर सङ्कल्प मुञि ना करोँ अन्यथा ।
तुञि मोरे बिड़म्वना करिस् सर्वथा ॥१४३
अद्वैत एड़िया प्रभु वसिला दुयारे ।
प्रकाशे आपन तत्त्व करि हुहुङ्कारे ॥१४४
आरे आरे कंस ये मारिल सेइ मुञि ।
आरे नाढ़ा सकल जानिस् देख तुञि ॥१४५
अज भब शेष रमा मोर करे सेवा ।
मोर चक्रे काटिल शृगाल वासुदेवा ॥१४६
मोर चक्रे वाराणसी दहिल सकल ।
मोर वाणे मरिल रावण महाबल ॥१४७
मोर चक्रे काटिल वाणेर बाहुगण ।
मोर चक्रे नरकेर लइल जीवन ॥१४८
मुञि से धरिलुँ गिरि दिया बामहाथ ।
मुञि से आनिलुँ स्वर्ग हैते पारिजात ॥१४९
मुञि से छलिलुँ बलि करिलुँ प्रसाद ।
मुञि से हिरण्य मारि राखिलुँ प्रह्लाद ॥१५०
एइमत प्रभु निज ऐश्वर्य्य प्रकाशे ।
शुनिया अद्वैत प्रेमसिन्धुमाझे भासे ॥१५१
शास्ति पाइ अद्वैत परमानन्दमय ।
हाथे तालि दिया नाचे करिया बिनय ॥१५२
येन अपराध कैलुँ तेन शास्ति पाइलुँ ।
भालइ करिला प्रभु ! अल्पे एड़ाइलुँ ॥१५३
एखने से ठाकुरालि बलिये तोमार ।
दोष अनुरूप शास्ति करिला आमार ॥१५४
इहाते से प्रभु भृत्ये चित्ते बल पाय ।
बलिया आनन्दे नाचे शान्तिपुरराय ॥१५५
आनन्दे अद्वैत नाचे सकल अङ्गने ।
भ्रूकुटी करिया बोले प्रभुर चरणे ॥१५६
कोथा गेल एबे मोरे तोमाय से स्तुति ।
कोथा गेल एबे तोर से सब ढाङ्गाति ॥१५७
दुर्वासा ना हङ मुञि यारे कदर्थिबा ।
यार अबशेष अन्न सर्वाङ्गे लेपिबा ॥१५८
भृगु मुनि नहोँ मुञि यार पदधूली ।
बक्षे दिया हइबा श्रीवत्स कुतूहली ॥१५९
मोर नाम अद्वैत तोमार शुद्ध दास ।
जन्मेजन्मे तोमार उच्छिष्ट मोर ग्रास ॥१६०
उच्छिष्ट प्रभाबे नाहि गणोँ तोर माया ।
करिला त शास्ति एबे देह पद छाया ॥१६१
एत बलि भक्ति करे शान्तिपुरनाथ ।
पड़िला प्रभुर पद लइया माथात ॥१६२
सम्भ्रमे उठिया कोले कैला विश्वम्भर ।
अद्वैतेरे कोले करि कान्दये बिस्तर ॥१६३
अद्वैतेर भक्ति देखि नित्यानन्दराय ।
क्रन्दन करये येन नदी बहि याय ॥१६४
भूमिते पड़िया कान्दे प्रभु हरिदास ।
अद्वैतगृहिणी कान्दे, कान्दे यत दास ॥१६५
कान्दये अच्युतानन्द अद्वैततनय ।
अद्वैतभवन हैल कृष्णप्रेममय ॥१६६

अद्वैतेरे मारिया लज्जित विश्वम्भर ।
सन्तोषे आपने देन अद्वैतेरे बर ॥१६७
तिलार्द्धेको ये तोमार करिबे आश्रय ।
से केने पतङ्ग कीट पशु पक्षी नर ॥१६८
यदि मोर स्थाने करे शत अपराध ।
तथापि ताहारे मुञि करिमु प्रसाद ॥१६९
बर शुनि कान्दये अद्वैत महाशय ।
चरणे धरिया कहे करिया विनय ॥१७०
ये तुमि बलिला प्रभु कभु मिथ्या नय ।
मोर एक प्रतिज्ञा शुनह महाशय ! १७१
यदि तोरे ना मानिया मोरे भक्ति करे ।
सेइ मोर भक्ति तबे ताहारे संहरे ॥१७२
तोर पादपद्मे यार ना पशिबे मन ।
तोरे ना मानिले प्रभु कभु नहे मोर जन ॥१७३
ये तोमारे सेवे प्रभु से मोर जीवन ।
ना पारोँ सहिते मुञि तोमार लङ्घन ॥१७४
यदि मोर पुत्र हय, हय बा किङ्कर ।
वैष्णवापराधी मुञि ना देखोँ गोचर ॥१७५
तोमारे लङ्घिया यदि कोटि देव भजे ।
सेइ देव ताहारे संहरे कोन व्याजे ॥१७६
मुञि नाहि बोलो एइ वेदेर बाखान ।
सुदक्षिण मरण ताहार ताहार परमाण ॥१७७
सुदक्षिण नाम काशीराजेर नन्दन ।
महासमाधिये शिव कैल आराधन ॥१७८
परम सन्तोषे शिव बोले माग बर ।
पाइबे अभीष्ट अभिचारयज्ञ कर ॥१७९
विष्णु भक्त प्रति यदि कर अपमान ।
तबे सेइ यज्ञे तोर लइब पराण ॥१८०
शिव कहिलेन व्याजे से इहा ना बुझे ।
शिवाज्ञाय अभिचारयज्ञ गिया भजे ॥१८१

यज्ञ हैते उठे एक महाभयङ्कर ।
तिन कर चरण-त्रिशिर रूपधर ॥१८२
तालजङ्घ परमाण बोले बर माग ।
राजा बोले द्वारका पोड़ाह महाभाग ! १८३
शुनिया दुःखित हैला महाशैवमूर्त्ति ।
बुझिलेन इहार इच्छार नाहि पूर्त्ति ॥१८४
अनुरोधे गेला मात्र द्वारकार पाशे ।
द्वारकारक्षक चक्र खेदाड़िरा आइसे ॥१८५
पलाइले ना एड़ाइ सुदर्शनस्थाने ।
महाशैव पड़ि बोले चक्रेर चरणे ॥१८६
यार स्थाने पलाइते नारिल दुर्वासा ।
नारिल राखिते अज भव दिगवासा ॥१८७
हेन महावैष्णव तेजेर स्थाने मुञि ।
कोथा पलाइब प्रभु ! ये करिस् तुञि ॥१८८
जयजय प्रभु मोर सुदर्शन नाम ।
द्वितीय शङ्कर तेज जय कृष्णधाम ॥१८९
जय महाचक्र जय वैष्णव प्रधान ।
जय दुष्टभयङ्कर जय शिष्टत्राण ॥१९०
स्तुति शुनि सन्तोषे बलिल सुदर्शन ।
पोड़ गिया यथा आछे राजार नन्दन ॥१९१
पुन सेइ महाभयङ्कर बाहुड़िया ।
चलिला काशीर राजपुत्र पोड़ाइया ॥१९२
तोमारे लङ्घिया प्रभु शिवपूजा कैल ।
अतएब तार यज्ञे ताहारे मारिल ॥१९३
तेञि से बलिलुँ प्रभु तोमारे लङ्घिया ।
मोर सेवा करे तारे मारिमु पुड़िया ॥१९४
तुमि मोर प्राण-नाथ तुमि मोर धन ।
तुमि मोर पिता माता तुमि बन्धु जन ॥१९५
ये तोमा लङ्घिया करे मोरे नमस्कार ।
से जन काटिया शिर करे प्रतिकार ॥१९६

सूर्य्येर साक्षात करि राजा सत्राजित ।
भक्तिवशे सूर्य्य तार हइलेन मित ॥१९७
लङ्घिया तोमार आज्ञा आज्ञाभङ्ग-दुःखे ।
दुइ भाइ मारा याय, सूर्य्य देखे सुखे ॥१९८
बलदेवशिष्यत्व पाइया दुर्य्योधन ।
तोमारे लङ्घिया पाय सवंशे मरण ॥१९९
हिरण्यकशिपु बर पाइया ब्रह्मार ।
लङ्घिया तोमारे गेल सवंशे संहार ॥२००
शिरश्छेदे शिव पूजियाओ दशानन ।
तोमा लङ्घि पाइलेक सवंशे मरण ॥२०१
सर्व देव मूल तुमि सभार ईश्वर !
दृश्यादृश्य यत-सब तोमार किङ्कर ॥२०२
प्रभुरे लङ्घिया ये दासेरे भक्ति करे ।
पूजा खाइ सेइ दास ताहारे संहरे ॥२०३
तोमा ना मानिया ये शिवादिदेव भजे ।
वृक्ष मूल काटि येन पल्लवेरे पूजे ॥२०४
देव, विप्र, यज्ञ, धर्म सर्वमूल तुमि ।
ये तोमा ना भजे तार पूज्य नहि आमि ॥२०५
महातत्त्व अद्वैतेर शुनिया बचन ।
हुङ्कार करिया बोले श्रीशचीनन्दन ॥२०६
मोर एइ सत्य सभे शुन मन दिया ।
येइ मोरे पूजे मोर सेवक लङ्घिया ॥२०७
से अधम जने मोरे खण्डखण्ड करे ।
तार पूजा मोर गा'ये अग्नि हेन पड़े ॥२०८
येइ मोर दासेर सकृत निन्दा करे ।
मोर नाम कल्पतरु ताहारे संहरे ॥२०९
अनन्त ब्रह्माण्ड यत सब मोर दास ।
एतेके ये पर हिंसे से-इ याय नाश ॥२१०
तुमि त आमार निज देह हैते बड़ ।
तोमारे लङ्घिया दैवे नाश हय दढ़ ॥२११
सन्न्यासीओ यदि अनिन्दक निन्दा करे ।
अधःपाते याय सर्व धर्म परिहरे ॥२१२
बाहु तुलि जगतेरे बोले गौरधाम ।
अनिन्दक हइ सभे बोल कृष्णनाम ॥२१३
अनिन्दक हइ से सकृत कृष्ण बोले ।
सत्यसत्य मुञि तारे उद्धारिमु हेले ॥२१४
एइ यदि महाप्रभु बलिला बचन ।
जयजय जय बोले सर्वभक्तगण ॥२१५
अद्वैत कान्दये दुइ चरणे धरिया ।
प्रभु कान्दे अद्वैतेरे कोलेते करिया ॥२१६
अद्वैतेर प्रेमे भासे सकल मेदिनी ।
एइमत महाचिन्त्य अद्वैत काहिनी ॥२१७
अद्वैतेर वाक्य बुझिबार शक्ति यार ।
जानिह ईश्वर सने भेद नाहि तार ॥२१८
नित्यानन्द अद्वैते ये गालागाली बाजे ।
सेइ से परमानन्द यदि जने बुझे ॥२१९
दुर्बिज्ञेय विष्णु वैष्णवेर वाक्य कर्म ।
तान अनुग्रहे से बुझये तान मर्म ॥२२०
एइमत यत आर हइल कथन ।
नित्यानन्दाद्वैत प्रभु आर यत गण ॥२२१
इहा कहिबार शक्ति प्रभु बलराम ।
सहस्रवदने गाय एइ गुणग्राम ॥२२२
क्षणेकेइ वाह्य दृष्टि दिया विश्वम्भर ।
हासिया अद्वैत प्रति बोलये उत्तर ॥२२३
किछु कि चाञ्चल्य करियाछोँ मुञि शिशु ?
अद्वैत बोलये उपाधिक नहे किछु ॥२२४
प्रभु बोले शुन नित्यानन्द महाशय ।
रक्षिबा चाञ्चल्य यदि मोर किछु हय ॥२२५
नित्यानन्द चैतन्य अद्वैत हरिदास ।
परस्पर सभे सभा' चा'हि महाहास ॥२२६

अद्वैतगृहिणी महासती पतिव्रता ।
विश्वम्भर महाप्रभु यारे बोले माता ॥२२७
प्रभु बोले शीघ्र "गिया करह रन्धन ।
कृष्णेर नैवद्य कर करिब भोजन ॥"२२८
नित्यानन्द हरिदास अद्वैतादि सङ्गे ।
गङ्गास्नाने विश्वम्भर चलिलेन रङ्गे ॥२२९
से सब आनन्द वेदे वर्णिब विस्तर ।
स्नान करि प्रभुसब आइलेन घर ॥२३०
चरण पाखालि महाप्रभु विश्वम्भर ।
कृष्णेरे करये दण्डप्रणाम विस्तर ॥२३१
अद्वैत पड़िला विश्वम्भर पदतले ।
हरिदास पड़िला अद्वैत पदमूले ॥२३२
अपूर्व कौतुक देखि नित्यानन्द हासे ।
धर्मसेतु हेन तिन विग्रह प्रकाशे ॥२३३
उठि देखे ठाकुर–अद्वैत पदतले ।
आथेव्यथे उठि प्रभु विष्णुविष्णु बोले ॥२३४
अद्वैतेर हाथे धरि नित्यानन्द सङ्गे ।
चलिला भोजनगृहे विश्वम्भर रङ्गे ॥२३५
भोजने वसिला तिन प्रभु एकठाञि ।
विश्वम्भर नित्यानन्द आचार्य्यगोसाञि ॥२३६
स्वभावचञ्चल तिनप्रभु निजावेशे !
उपाधिक नित्यानन्द प्रभु बाल्यरसे ॥२३७
द्वारे वसि भोजन करये हरिदास ।
यार देखिबार शक्ति –सकल प्रकाश ॥२३८
अद्वैतगृहिणी महासती योगेश्वरी ।
करे परिबेषण स्मङरि हरिहरि ॥२३९
भोजन करेन तिन ठाकुर चञ्चल ।
दिव्य अन्न घृत दुग्ध पायस सकल ॥२४०
अद्वैत देखिया हासे नित्यानन्द राय ।
एक बस्तु दुइ भाग, कृष्णेर लीलाय ॥२४१
भोजन हइल पूर्ण, किछु मात्र शेष ।
नित्यानन्द हइला परम बाल्यावेश ॥२४२
सर्व-घरे अन्न छड़ाइया हैल हास ।
प्रभु बोले हाय हाय, हासे हरिदास ॥२४३
देखिया अद्वैत क्रोधे अग्नि हेन ज्वले ।
नित्यानन्द तत्त्व कहे क्रोधाबेश छले ॥२४४
जातिनाश करिलेक एइ नित्यानन्द ।
कांथा हैते आसि हैल मद्यपेर सङ्ग ॥२४५
गुरु नाहि बोलय सन्न्यासी करि नाम ।
जन्म बा निश्चय नाहि जानि कोन ग्राम ॥२४६
केहो त ना चिने नाहि जानि कोन् जाति ।
ढुलियाढुलिया बुले येन माता हाथी ॥२४७
घरेघरे पश्चिमार खाइयाछे भात ।
एखने आसिया हैल ब्राह्मणेर साथ ॥२४८
नित्यानन्द मद्यपे करिब सर्वनाश ।
सत्य सत्य सत्य एइ शुन हरिदास !२४९
क्रोधाबेशे अद्वैत हइला दिग्वास ।
हाथे तालि दिया नाचे अट्ट अट्ट हास ॥२५०
अद्वैत चरित्र देखि हासे गौरराय ।
हासि नित्यानन्द दुइ अङ्गुली देखाय ॥२५१
शुद्ध हास्यमय अद्वैतेर क्रोधाबेशे ।
किबा बृद्ध किबा शिशु हासये विशेषे ॥२५२
क्षणेके हइल वाह्य, कैल आचमन ।
परस्पर सन्तोषे करिला आलिङ्गन ॥२५३
नित्यानन्द अद्वैते हइल कोलाकुलि ।
प्रेमरसे दुइ प्रभु महाकुतूहली ॥२५४
प्रभुविग्रहेर दुइ बाहु दुइजन ।
प्रीत बइ अप्रीत नाहिक कोनजन ॥२५५
तबे ये कलह देख, से कृष्णेर लीला ।
बालकेर प्राय विष्णु वैष्णवेर खेला ॥२५६

हेनमते महाप्रभु अद्वैतमन्दिरे ।
स्वानुभावानन्दे हरिकीर्त्तन बिहरे ॥२५७
इहा बलिवार शक्ति प्रभु बलराम ।
अन्य नाहि जानये ए सब गुणग्राम ॥२५८
सरस्वती जाने बलरामेर कृपाय ।
सभार जिह्वाय सेइ भगवती गाय ॥२५९
ए सब कथार नाहि जानि अनुक्रम ।
ये ते मते गाइ मात्र कृष्णेर बिक्रम ॥२६०
चैतन्यप्रियेर पा'य मोर नमस्कार ।
इहाते ये अपराध क्षमिह आमार ॥२६१
अद्वैतेर गृहे प्रभु बञ्चि कथोदिन ।
नवद्वीपे आइला संहति करि तिन ॥२६२
नित्यानन्द, अद्वैत, तृतीय हरिदास ।
एइ तिन सङ्गे प्रभु आइला निज वास ॥२६३
शुनिला वैष्णवसब "आइला ठाकुर ।"
धाइया आइला सभे आनन्द प्रचुर ॥२६४
देखि सर्व ताप हरे से चन्द्रवदन ।
धरिया चरण सभे करेन क्रन्दन ॥२६५
विश्वम्भर महाप्रभु सभार जीवन ।
सभारे करिल प्रभु प्रेम आलिङ्गन ॥२६६
सभेइ प्रभुर निज विग्रह समान ।
सभेइ उदार भागवतेर प्रधान ॥२६७
सभेइ करिला अद्वैतेरे नमस्कार ।
यार भक्ति कारणे चैतन्य अवतार ॥२६८
आनन्दे हइला मत्त वैष्णव सकल ।
सभे करे प्रभु सङ्गे कृष्णकोलाहल ॥२६९
पुत्र देखि आइ हैला आनन्द विह्वल ।
बधू सङ्गे गृहे करे आनन्द मङ्गल ॥२७०
इहा बलिबार शक्ति सहस्रवदन ।
ये प्रभु आमार जन्मजन्मेर जीवन ॥२७१
'द्विज' :विप्र' 'ब्राह्मण' येहेन नामभेद ।
एइमत प्रभु 'नित्यानन्द' 'बलदेव' ॥२७२
अद्वैत गृहेते प्रभु यत कैल केलि ।
इहा ये शुनये सेहो पाय सेइ मेलि ॥२७३
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥२७४

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे अद्वैत-गृह-विलासवर्णनं नाम ऊनविंशोऽध्यायः ।



विंश अध्याय

जयजय गौरसिंह श्रीशचीकुमार ।
जय सर्बतापहर चरण तोमार ॥१
जयगदाधर-प्राण नाथ महाशय ।
कृपा कर प्रभ ! हेन तोहे मन रय ॥२
हेनमते भक्तगोष्ठी ठाकुर देखिया ।
नाचे गाये हासे कान्दे प्रेमपूर्ण हैया ॥३
एइमते प्रतिदिन अशेष कौतुक ।
भक्त-सङ्गे विश्वम्भर करे नानारूप ॥४

एकदिन महाप्रभु नित्यानन्द सङ्गे ।
श्रीनिवासगृहे वसि आछे नाना रङ्गे ॥५
आइला मुरारिगुप्त हेनइ समय ।
प्रभुर चरणे दण्डपरणाम हय ॥६
शेषे नित्यानन्देरे करिया परणाम ।
सम्मुखे रहिला गुप्त महाज्योतिर्धाम ॥७
मुरारिगुप्तेरे प्रभु बड़ सुखी मने ।
अकपटे मुरारिरे कहेन आपने ॥८
ये करिला मुरारि ना हय व्यबहार ।
व्यतिक्रम करिया करिला नमस्कार ॥९
कोथा तुमि शिखाइबा, ये ना इहा जाने ?
व्यबहारे हेन धर्म तुमि लङ्घ केने ?१०
मुरारि बोलये प्रभु जानों केनमते ।
चित्त तुमि लओयाइया आछ येनमते ॥११
प्रभु बोले भालभाल आजि याह घरे ।
सकल जानिबा कालि बलिब तोमारे ॥१२
सम्भ्रमे चलिला गुप्त सभय हरिषे ।
शयन करिला गिया आपनार वासे ॥१३
स्वप्ने देखे महाभागवतेर प्रधान ।
मल्लवेशे नित्यानन्द चले आगुयान ॥१४
नित्यानन्दशिरे देखे महानागफणा ।
करे देखे श्रीहल मुषल ताल-वाणा ॥१५
नित्यानन्दमूर्त्ति देखे येन हलधर ।
शिरे पाखा धरि पाछे याय विश्वम्भर ॥१६
स्वप्ने प्रभु हासि बोले जानिला मुरारि ।
आमि ये कनिष्ठ, मने बुझह बिचारि ॥१७
स्वप्ने दुइ प्रभु हासे मुरारि देखिया ।
दुइ भाइ मुरारिरे गेला शिखाइया ॥१८
चैतन्य पाइया गुप्त करेन कीर्त्तन ।
नित्यानन्द बलि श्वास छाड़े घनेघन ॥१९

महासती मुरारिगुप्तेर पतिव्रता ।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण बोले हइ सचकिता ॥२०
बड़ मुरारि नित्यानन्द जानिया ।
चलिला प्रभुर स्थाने आनन्दित हैया ॥२१
वसि आछे महाप्रभु कमललोचन ।
दक्षिणे से नित्यानन्द प्रफुल्ल वदन ॥२२
आगे नित्यानन्देर चरणे नमस्करि ।
पाछे बन्दे विश्वम्भर चरण मुरारि ॥२३
हासि बोले विश्वम्भर मुरारि ए केन ?
मुरारि बोलये प्रभु लओयाइले येन ॥२४
पवन कारणे येन शुष्क तृण चले ।
जीवेर सकल कर्म तोर शक्तिबले ॥२५
प्रभु बोले मुरारि आमार प्रिय तुमि ।
अतएब तोमारे भाङ्गिल मर्म आमि ॥२६
कहे प्रभु निज तत्त्व मुरारिर स्थाने ।
योगाय ताम्बूल प्रिय गदाधर नामे ॥२७
प्रभु बोले दास मोर मुरारि प्रधान ।
एत बलि चर्वित ताम्बूल कैला दान ॥२८
सम्भ्रमे मुरारि जोड़हस्त करि लय ।
खाइया मुरारि महानन्दे मत्त हय ॥२९
प्रभु बोले मुरारि सकाले धोह हात ।
मुरारि तुलिया हस्त दिलेक माथात ॥३०
प्रभु बोले आरे बेटा जाति गेल तोर ।
तोर अङ्गे उच्छिष्ट लागिल सब मोर ॥३१
बलिते प्रभुर हैल ईश्वर आबेश ।
दन्त कड़मड़ि करि बोलये विशेष ॥३२
सन्न्यासी प्रकाशानन्द वैसये काशीते ।
मोरे खण्डखण्ड बेटा करे भालमते ॥३३
पढ़ाये वेदान्त, मोर विग्रह ना माने ।
कुष्ठ कराइलुँ अङ्गे तभु नाहि जाने ॥३४

अनन्त ब्रह्माण्ड मोर ये अङ्गेते वैसे ।
ताहा मिथ्या बोले बेटा केमन साहसे ॥३५
सत्य कहों मुरारि आमार तुमि दास ।
ये ना माने मोर अङ्ग से-इ याय नाश ॥३६
अज भवानन्द माझे ये विग्रह सेवे ।
ये विग्रह प्राण करि पूजे सर्व देवे ॥३७
पुण्य पतिव्रता पाय ये अङ्ग परशे ।
ताहा मिथ्या बोले बेटा केमन साहसे ॥३८
सत्यसत्य करों तोरे एइ परकाश ।
सत्य मुञि सत्य मोर दास तार दास ॥३९
सत्य मोर लीला कर्म सत्य मोर स्थान ।
इहा मिथ्या बोले मोरे करे खानखान ॥४०
ये यश श्रवणे आदि अविद्या बिनाश ।
पापी अध्यापके बोले मिथ्या से विलास ॥४१
ये यश श्रवण रसे शिव दिगम्बर ।
याहा गाय आपने अनन्त महीधर ॥४२
ये यश श्रवणे शुक नारदादि मत्त ।
चारिवेदे बाखाने ये यशेर महत्त्व ॥४३
हेन पुण्य कीर्त्ति प्रति अनादर यार ।
से कभु ना जाने गुप्त मोर अवतार ॥४४
गुप्त लक्ष्ये सभारे शिखाय भगवान् ।
सत्य मोर विग्रह सेवक लीलास्थान ॥४५
आपनार तत्त्व प्रभु आपने शिखाय ।
इहा ये ना माने से आपने नाश याय ॥४६
क्षणेके हइला वाह्यद्दृष्टि विश्वम्भर ।
पुन से हइला प्रभु अकिञ्चनबर ॥४७
भाइ ! बलि मुरारिरे कैला आलिङ्गन ।
बड़ स्नेह करि बोले सदय बचन ॥४८
"सत्य तुमि मुरारि आमार शुद्ध दास ।
तुमि से जानिला नित्यानन्देर प्रकाश ॥४९
नित्यानन्दे याहार तिलेक द्वेष रहे ।
दास हइलेओ सेइ मोर प्रिय नहे ॥५०
घरे याह गुप्त तुमि आमारे किनिला ।
नित्यानन्दतत्त्व गुप्त तुमि से जानिला ॥"५१
हेनमते मुरारि प्रभुर कृपापात्र ।
ए कृपार पात्र सबे हनूमान् मात्र ॥५२
आनन्दे मुरारिगुप्त घरेरे चलिला ।
नित्यानन्द सङ्गे प्रभु हृदये रहिला ॥५३
अन्तरे विह्वल गुप्त गेला निजवासे ।
एक बोले आर करे खलखली हासे ॥५४
परम उल्लासे बोले "करिब भोजन ।"
पतिव्रता अन्न आनि कैल निबेदन ॥५५
विह्वल मुरारिगुप्त चैतन्येर रसे ।
खाओ खाओ बलि अन्नफेले ग्रासेग्रासे ॥५६
घृत माखि अन्न सब पृथिवीते फेले ।
खाओ खाओ खाओ कृष्ण एइ बोल बोले ॥५७
हासे पतिव्रता देखि गुप्तेर ब्यभार ।
पुनःपुनः अन्न आनि देइ बारेबार ॥५८
महाभागवत गुप्त पतिव्रता जाने ।
कृष्ण बलि गुप्तेरे कराय सावधाने ॥५९
मुरारि दिले से प्रभु करये भोजन ।
कभु ना लङ्घये प्रभु गुप्तेर बचन ॥६०
यत अन्न देइ गुप्त ताहा प्रभु खाय ।
बिहाने आसिया प्रभु गुप्तेरे जानाय ॥६१
वसिया आछेन गुप्त कृष्णप्रेमानन्दे ।
हेनकाले प्रभु आइला देखि गुप्त बन्दे ॥६२
परम आनन्दे गुप्त दिलेन आसन ।
वसिलेन जगन्नाथमिश्रेर नन्दन ॥६३
गुप्त बोले प्रभु केने विजयागमन ?
प्रभु बोले "बिष्टम्भेर चिकित्सा कारण ॥"६४

गुप्त बोले "कह देखि अजीर्ण कारण ?
कोन् कोन् द्रव्य कालि करिला भोजन ?" ६५
प्रभु बोले आरे बेटा जानिबि केमने ।
खाओ खाओ बलि अन्न फेलिलि यखने ॥६६
तुञि पासरिलि यबे तोर पत्नी जाने ।
तुञि दिबि मुञि बा ना खाइमु केमने ? ६७
कि लागि चिकित्सा कर अन्य बा पाचन ।
बिष्टम्भ मोहोर तोर अन्नेर कारण ॥६८
जलपाने अजीर्ण करिते नारे बल ।
तोर अन्ने अजीर्ण औषध तोर जल ॥६९
एत बलि धरि मुरारिर जलपात्र ।
जल पिये प्रभु भक्तिरसे पूर्ण मात्र ॥७०
कृपा देखि मुरारि हइल अचेतन ।
महाप्रेमे गुप्तगोष्ठी करये क्रन्दन ॥७१
हेन प्रभु, हेन भक्तियोग, हेन दास ।
चैतन्य प्रसादे हैल भक्तिर प्रकाश ॥७२
मुरारिगुप्तेर दासे ये प्रसाद पाइल ।
सेइ नदीयार भट्टाचार्य्य ना देखिल ॥७३
विद्या धन प्रतिष्ठाय किछु नाहि करे ।
वैष्णवेर प्रसादे से भक्ति-फल धरे ॥७४
ये से केने नहे वैष्णवेर दासी दास ।
सर्वोत्तम से-इ एइ वेदेर प्रकाश ॥७५
एइमत मुरारिरे प्रतिदिनेदिने ।
कृपा करे महाप्रभु आपने आपने ॥७६
शुनशुन मुरारिर अद्भुत आख्यान ।
शुनिले मुरारि कथा पाइ भक्तिदान ॥७७
एकदिन महाप्रभु श्रीवासमन्दिरे ।
हुङ्कार करिया प्रभु निज मूर्त्ति धरे ॥७८
शङ्ख: चक्र, गदा, पद्म शोभे चारि कर ।
गरुड़ ! गरुड़ ! बलि डाके विश्वम्भर ॥७९
हेनइ समये गुप्त आविष्ट हइया ।
श्रीवास मन्दिरे आइला हुङ्कार करिया ॥८०
गुप्त देहे हैल महा वैनतेय भाव ।
गुप्त बोले मुञि सेइ गरुड़ महाभाग ॥८१
गरुड़ ! गरुड़ ! बलि डाके विश्वम्भर ।
गुप्त बोले मुञि एइ तोहोर किङ्कर ॥८२
प्रभु बोले बेटा तुञि मोहोर वाहन ।
हय हय हय गुप्त बोलये बचन ॥८३
विह्वल मुरारि गुप्त बोलेन बचन ।
पूर्व तोमार किछु हये स्मङरण ॥८४
गुप्त बोले पासरिला तोमारे बइया ।
स्वर्ग हैते पारिजात आनिलुँ बहिया ॥८५
पासरिला तोमा लैया गेलुँ बाणपुरे ।
खण्डखण्ड कैलुँ मुञि स्कन्देर मयूरे ॥८६
एइ मोर स्कन्धे प्रभु ! आरोहण कर ।
आज्ञा कर निब्र कोन् ब्रह्माण्ड भितर ? ८७
गुप्त स्कन्धे चढ़े मिश्रचन्द्रेर नन्दन ।
जयजयध्वनि हैल श्रीवासभवन ॥८८
स्कन्धे कमलार नाथ वैद्येर नन्दन ।
रड़ दिया पाक फिरे सकल अङ्गन ॥८९
जय हुलाहुलि देइ पतिव्रता गण ।
महाप्रेमे भक्तसब करये क्रन्दन ॥९०
केहो बोले 'जयजय' केहो बोले 'हरि' ।
केहो बोले एइ रूप येन ना पासरि ॥९१
केहो मालसाट् मारे परम उल्लासे ।
भाल रे ठाकुर मोर बलि केहो हासे ॥९२
"जयजय मुरारि वाहन विश्वम्भर ।"
बाहु तुलि केहो डाके करि उच्चस्वर ॥९३
मुरारिर कान्धे दोले गौराङ्ग सुन्दर ।
उल्लासे भ्रमये गुप्त बाड़ीर भितर ॥९४

सेइ नवद्वीपे हय ए सब प्रकाश ।
दुष्कृति ना देखे गौरचन्द्रेर विलास ॥६५
धन कुल प्रतिष्ठाय कृष्ण नाहि पाइ ।
केवल भक्तिर बश चैतन्यगोसाञि ॥६६
जन्मेजन्मे ये सब करिल आराधन ।
सुखे देखे एबे तार दास दासीगण ॥६७
ये वा देखिलेक, से वा कृपा करि कहे ।
तथापिह दुष्कृतिर चित्ते नाहि लये ॥६८
मध्यखण्डे गुप्त कान्धे प्रभुर उत्थान ।
सर्व अवतारे गुप्त सेवक प्रधान ॥६६
ए सब लीलार कभु अवधि ना हय ।
आविर्भाब तिरोभाब एइ वेदे कय ॥१००
वाह्य पाइ नाम्विला गौराङ्ग महाधीर ।
गुप्तेर गरुड़ भाव हइल सुस्थिर ॥१०१
ए वड़ निगूढ़ कथा केहो केहो जाने ।
गुप्त कान्धे महाप्रभु कैला आरोहणे ॥१०२
मुरारिरे कृपा देखि वैष्णवमण्डल ।
'धन्य धन्य धन्य' बलि प्रशंसे सकल ॥१०३
धन्य भक्त मुरारि सफल विष्णुभक्ति ।
विश्वम्भर लीलाय बहये यार शक्ति ॥१०४
एइमत मुरारिगुप्तेर पुण्य कथा ।
अवेकत आछये ये कैला यथायथा ॥१०५
एकदिन मुरारि परम शुद्ध मति ।
निज मनेमने गणे अवतारस्थिति ॥१०६
साङ्गोपाङ्ग याबत आछये अवतार ।
तावत चिन्तिये आमि निज प्रतिकार ॥१०७
ना बुझि कृष्णेर लीला कखन कि करे ।
तखने सृजये लीला, तखने संहरे ॥१०८
ये सीता लागिया मारे सवंशे राबण ।
आनिया छाड़िला सीता केमन कारण ॥१०६
ये यादबगण निज प्राणेर समान ।
साक्षाते देखये तारा हाराय पराण ॥११०
अतएव याबत आछये अवतार ।
ताबत आमार देहत्याग प्रतिकार ॥१११
देह एड़िबार मोर एइ से समय ।
पृथिवीते याबत आछये महाशय ॥११२
एतेक निर्वेद गुप्त चिन्ति मने मने ।
खरसान काति एक आनिल यतने ॥११३
आनिया थुइल काति घरेर भितरे ।
"निशाय एड़िब देह हरिष अन्तरे ॥"११४
सर्वभूत हृदय ठाकुर विश्वम्भर ।
मुरारिर चित्तवृत्ति हइल गोचर ॥११५
सत्वरे आइला प्रभु मुरारिभवन ।
सम्भ्रमे करिला गुप्त चरणबन्दन ॥११६
आसने वसिया प्रभु कृष्णकथा कहे ।
मुरारिगुप्तेरे हइ बड़इ सदये ॥११७
प्रभु बोले गुप्त वाक्य राखिबा आमार ।
गुप्त बोले प्रभु मोर शरीर तोमार ॥११८
प्रभु बोले ए त सत्य ? गुप्त बोले हय ।
काति खानि देह मोरे प्रभु कारो कय ॥११६
ये काति थुइला देह छाड़िबार तरे ।
ताहा आनि देह आछे घरेर भितरे ॥१२०
हाय हाय करि गुप्त महादुःख माने ।
मिछा कथा कहिल तोमारे कोन् जने ?१२१
प्रभु बोले मुरारि बड़ त देखि भाल ।
परे कहिले कि आमि जानि हेन बोल ॥१२२
ये गड़िया दिल काति ताहा जानि आमि ।
ताहा जानि यथा काति थुइयाछ तुमि ॥१२३
सर्वभूत अन्तर्यामी जाने सर्व स्थान ।
घरे गिया काटारि आनिला विद्यमान ॥१२४

प्रभु बोले गुप्त ! एइ तोमार व्यभार ।
कोन् दोषे आमा छाड़ि चाह याइबार ॥१२५
तुमि गेले काहारे लइया मोर खेला ।
हेन बुद्धि तुमि कार स्थाने बा शिखिला ?१२६
एखने मुरारि मोरे देह' एइ भिक्षा ।
आर कभु हेन बुद्धि ना करिबा शिक्षा ॥१२७
कोले करि मुरारिरे प्रभु विश्वम्भर ।
हस्त तुलि दिला निज शिरेर उपर ॥१२८
मोर माथा खाओ गुप्त मोर माथा खाओ ।
यदि आरबार देह छाड़िबारे चाओ ॥१२९
आथेव्यथे मुरारि पड़िला भूमितले ।
पाखालिल प्रभुर चरण प्रेमजले ॥१३०
सुकृति मुरारि कान्दे धरिया चरण ।
गुप्त कोले करि कान्दे श्रीशचीनन्दन ॥१३१
ये प्रसाद मुरारिगुप्तेरे प्रभु करे ।
ताहा बाञ्छे रमा अज अनन्त शङ्करे ॥१३२
ए सब देवता चैतन्येर भिन्न नहे ।
इहारा अभिन्न कृष्ण वेदे एइ कहे ॥१३३
सेइ गौरचन्द्र शेष-रूपे मही धरे ।
चतुर्मुख-रूपे सेइ प्रभु सृष्टि करे ॥१३४
संहारे ओ गौरचन्द्र त्रिलोचन रूपे ।
आपनारे स्तुति करे आपनार मुखे ॥१३५
भिन्न नाहि भेद नाहि ए सकल देवे ।
ये सकल देवे चैतन्येर पद सेवे ॥१३६
पक्षी मात्र यदि बोले चैतन्येर नाम ।
सेहो सत्य याइवेक चैतन्येर धाम ॥१३७
सन्न्यासीओ यदि नाहि माने गौरचन्द्र ।
जानिह से दुष्टगण जन्मजन्म अन्ध ॥१३८
येन तपस्वी वेशे थाके बाटोयार ।
एइमत सन्न्यासी निन्दक दुराचार ॥१३९
निन्दक तपस्वी बाटोयारे नाहि भेद ।
दुइते निन्दक बड़ एइ कहे वेदे ॥१४०

तथाहि श्रीनारदीये —

प्रकटं पतितः श्रेयान् य एको यत्यधः स्वयम् ।
वकवृत्तिः स्वयं पापः पातयत्यपरानपि ॥१४१
हरन्ति दस्यवोऽकुट्यां विमोह्यास्त्रैर्नृणां धनम् ।
पावित्रै रतितीक्ष्णाग्रैर्वाणैरेवं वकव्रताः ॥१४२

टीका ।

हरन्तीति । अकुट्यां—गृहाद्वहिः, विजनदेशे इत्यर्थः । पावित्रैः—पवित्रचरित्रैः, तैरेव सुतीक्ष्णैर्वाणैः ।

अनुवाद ।

जो जन प्रकाश्य रूप से पतित है, वह उत्तम है, कारण वह एकक स्वयं अधोगामी होता है, किन्तु जो जन मूर्त्तिमान् पाप स्वरूप हैः वक के समान भण्डवृत्ति के आनुगत्य करता है, वर व्यक्ति अनेकों को पातित करता है। दस्युगण विजन प्रदेश में विविध अस्त्रों से भीत करके अपर का धनापहरण करते हैं।

भाल रे आइसे लोक तपस्वी देखिते ।
साधुनिन्दा शुनि मरि याय भालमते ॥१४३
साधुनिन्दा शुनिले सुकृति हय क्षय ।
जन्मजन्म अधःपात चारिवेदे कय ॥१४४
बाटोयारे सबे मात्र एकजन्मे मारे ।
जन्मेजन्मे क्षणेक्षणे निन्दके संहरे ॥१४५
अतएब निन्दक तपस्वी बाटोयार ।
बाटोयार हैतेओ अत्यन्त दुराचार ॥१४६
आब्रह्म स्तम्वादि सब कृष्णेर वैभव ।
निन्दा मात्र कृष्ण रुष्ट कहे शास्त्र सब ॥१४७
अनिन्द हइ ये सकृत् 'कृष्ण' बोले ।
सत्यसत्य कृष्ण तारे उद्धारिब हेले ॥१४८

चारि वेद पढ़ियाओ यदि निन्दा करे ।
जन्मेजन्मे कुम्भीपाके डुबिया से मरे ॥१४९
भागवत पढ़ियाओ कारो बुद्धिनाश ।
नित्यानन्द निन्दा करे हैब सर्वनाश ॥१५०
एइ नवद्वीपे गौरचन्द्रेर प्रकाश ।
ना माने निन्दक सब से सत्य विलास ॥१५१
चैतन्यचरणे यार आछे रतिमति ।
जन्मजन्म हय येन ताहार संहति ॥१५२
अष्ट सिद्धि युत चैतन्येते भक्तिशून्य ।
कभु येन ना देखों से पापी हीनपुण्य ॥१५३
मुरारिगुप्तेरे प्रभु सान्त्वना करिया ।
चलिला आपन घरे हरषित हैया ॥१५४
हेनमते मुरारिगुप्तेर अनुभाव ।
आमि कि बलिब व्यक्त ताँहार प्रभाव ॥१५५
नित्यानन्द प्रभु मुखे वैष्णवेर तत्त्व ।
किछुकिछु शुनिलाम सभार महत्त्व ॥१५६
जन्मजन्म नित्यानन्द हउ मोर पति ।
याहार प्रसादे हैल चैतन्येते रति ॥१५७
जयजय जगन्नाथमिश्रेर नन्दन ।
तोर नित्यानन्द हउ मोर प्राण धन ॥१५८
मोर प्राणनाथेर जीवन विश्वम्भर ।
ए बड़ भरसा चित्ते धरि निरन्तर ॥१५९
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१६०

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे मुरारिगुप्त-प्रभाववर्णनं नाम विंशतितमोऽध्यायः ॥



एकविंश अध्याय

जयजय नित्यानन्द प्राण विश्वम्भर ।
जयजय गदाधरपति अद्वैत ईश्वर ॥१
जय श्रीनिवास हरिदास प्रियङ्कर ।
जय गङ्गादास वासुदेवेर ईश्वर ॥२
भक्तगोष्ठी सहित गौराङ्ग जयजय ।
शुनिले चैतन्यकथा भक्ति लभ्य हय ॥३
हेनमते नवद्वीपे प्रभु विश्वम्भर ।
विहरे संहति नित्यानन्द गदाधर ॥४
एकदिन प्रभु करे नगर भ्रमण ।
चारिदिगे यत आप्त भागवतगण ॥५
सार्वभौमपिता-विशारद महेश्वर ।
ताँहार जाङ्गाले गेला प्रभु विश्वम्भर ॥६
सेइखाने देवानन्दपण्डितेर वास ।
परम सुशान्त विप्र मोक्ष अभिलाष ॥७
ज्ञानवन्त तपस्वी आजन्म उदासीन ।
भागवते पढ़ाय -तथापि भक्तिहीन ॥८
'भागवत महा-अध्यापक' लोके घोषे ।
मर्म अर्थ ना जानेन भक्तिहीन दोषे ॥९
जानिबार योग्यता आछये पुनि तान ।
कोन् अपराधे नहे, कृष्ण से प्रमाण ॥१०

दैवे प्रभु भक्तसङ्गे सेइपथे याय ।
येखानेते तान व्याख्या शुनिबारे पाय ॥११
सर्वभूतहृदय जानये सर्व तत्त्व ।
ना शुनये व्याख्या भक्तियोगेर महत्त्व ॥१२
कोपे बोले प्रभु बेटा कि अर्थ बाखाने ।
भागवत अर्थ कोन जन्मेओ ना जाने ॥१३
ए बेटार भागवते कोन् अधिकार ।
ग्रन्थस्वरूपे भागवत कृष्ण अवतार ॥१४
सबे पुरुषार्थ भक्ति भागवते हय ।
'प्रेमरूप भागवत' चारि वेदे कय ॥१५
चारिवेद 'दधि' भागवत 'नवनीत' ।
मथिलेन शुके खाइलेन परीक्षित ॥१६
मोर प्रिय शुक से जानेन भागवत ।
भागवते कहे मोर तत्त्व अभिमत ॥१७
मुञि मोर दास आर ग्रन्थ भागवते ।
यार भेद आछे तार नाश भालमते ॥१८
भागवत तत्त्व प्रभु कहे क्रोधावेशे ।
शुनिया वैष्णवगण महानन्दे भासे ॥१९
भक्ति विने भागवते ये आर बाखाने ।
प्रभु बोले से अधम किछुइ ना जाने ॥२०
निरवधि भक्तिहीन ए बेटा बाखाने ।
आजि पुँथि चिरोँ एइ देख विद्यमाने ॥२१
पुँथि चिरिबारे प्रभु क्रोधावेशे याय ।
सकल वैष्णवगण धरिया रहाय ॥२२
महाचिन्त्य भागवत सर्वशास्त्रराय ।
इहा ना बुझिये विद्या-तप प्रतिष्ठाय ॥२३
'भागवत बुझि' हेन यार आछे ज्ञान ।
से ना जाने कभु भागवतेर प्रमाण ॥२४
भागवते अचिन्त्य ईश्वर बुद्धि यार ।
से जानये भागवत अर्थ भक्ति सार २५

सर्वगुणे देवानन्दपण्डित समान ।
पाइते बिरल बड़ हेन ज्ञानवान् ॥२६
से सब लोकेर याते भागवते भ्रम ।
ताते ये अन्येर गर्व तार शास्ता यम ॥२७
भागवत पढ़ाइया कारो बुद्धिनाश ।
निन्दे अवधूतचान्द जगतनिवास ॥२८
एइमत प्रतिदिन प्रभु विश्वम्भर ।
भ्रमये नगर सब सङ्गे अनुचर ॥२९
एकदिन ठाकुरपण्डित सङ्गे करि ।
नगरभ्रमण करे विश्वम्भर हरि ॥३०
नगरेर अन्ते आछे मद्यपेर घर ।
याइते पाइला गन्ध प्रभु विश्वम्भर ॥३१
मद्यगन्धे वारुणीर हइल स्मरण ।
बलराम भाव हैला शचीर नन्दन ॥३२
वाह्य पासरिया प्रभु करये हुङ्कार ।
उठोँ गिया श्रीवासेरे बोल बारबार ॥३३
प्रभु बोले श्रीनिवास एइ उठोँ गिया ।
माना करे श्रीनिवास चरणे धरिया ॥३४
प्रभु बोले मोरेओ कि विधिप्रतिषेध ?
तथापिह श्रीनिवास करये निषेध ॥३५
श्रीनिवास बोले तुमि जगतेर पिता ।
तुमि क्षय करिते बा के आर रक्षिता ॥३६
ना बुझि तोमार लीला निन्दिब ये जन ।
जन्मेजन्मे दुःखे तार हइब मरण ॥३७
नित्य धर्ममय तुमि प्रभु सनातन ।
ए लीला तोमार बुझिबेक कोन् जन ॥३८
यदि तुमि उठ प्रभु ! मद्यपेर घरे ।
प्रबिष्ट हइमु मुञि गङ्गार भितरे ॥३९
भक्तेर सङ्कल्प प्रभु ना करे लङ्घन ।
हासे प्रभु श्रीवासेर शुनिया बचन ॥४०

प्रभु बोले तोमार नाहिक याते इच्छा ।
ना उठिब तोर वाक्य ना करिब मिछा ॥४१
श्रीवास वचने सम्वरिया राम भाव ।
धीरेधीरे राजपथे चले महाभाग ॥४२
मद्यपाने मत्त सब ठाकुरे देखिया ।
'हरिहार' बोले सब डाकिया डाकिया ॥४३
केहो बोले भालभाल निमाञि पण्डित !
भाल भाव लागे भाल लागे नाटगीत ॥४४
हरि बलि हाथे तालि दिया केहो नाचे ।
उल्लासे मद्यपगण याय तान पाछे ॥४५
महा हरि ध्वनि करे मद्यपेर गणे ।
एइमत हय विष्णु वैष्णव दर्शने ॥४६
मद्यपेर चेष्टा देखि विश्वम्भर हासे ।
आनन्दे श्रीवास कान्दे देखि परकाशे ॥४७
मद्यपेओ सुख पाय चैतन्ये देखिया ।
एकले निन्दये पापी सन्न्यासो हइया ॥४८
चैतन्यचन्द्रेर यशे यार आछे दुःख ।
कोनो जन्मे आश्रमे नाहिक तार सुख ॥४९
ये देखिल चैतन्यचन्द्रेर अवतार ।
हउक मद्यप तभु तारे नमस्कार ॥५०
मद्यपेरे शुभदृष्टि करि विश्वम्भर ।
निजावेशे भ्रमे प्रभु नगरे नगर ॥५१
कथोदूरे देखिया पण्डित देवानन्द ।
महाक्रोधे किछु तारे बोले गौरचन्द्र ॥५२
देवानन्दपण्डितेरे श्रीवासेर स्थाने ।
पूर्व्वे अपराध आछे ताहा हैल मने ॥५३
ये समये नाहि किछु प्रभुर प्रकाश ।
प्रेमशून्य जगत, दुःखित सब दास ॥५४
यदि वा पढ़ाय केहो गीत भागवत ।
तथापि ना शुने केहो भक्ति अभिमत ॥५५
से समये देवानन्द परम महान्त ।
लोके बड़ अपेक्षित परम सुशान्त ॥५६
भागवत अध्यापना करे निरन्तर ।
आकुमार सन्न्यासीर प्राय व्रतधर ॥५७
दैवे एकदिन तथा गेला श्रीनिवास ।
भागवत शुनिते करिया अभिलाष ॥५८
अक्षरे अक्षरे भागवत प्रेममय ।
शुनिया द्रविल श्रीनिवासेर हृदय ॥५९
भागवत शुनिया कान्दये श्रीनिवास ।
महाभागवत विप्र छाड़े घनश्वास ॥६०
पापिष्ठ पढ़ुया बोले हइल जञ्जाल ।
पढ़िते ना पाइ भाइ व्यर्थ याय काल ॥६१
संवरण नहे श्रीनिवासेर क्रन्दन ।
चैतन्येर प्रिय देह जगतपावन ॥६२
पापिष्ठ पढ़ुया सब युगति करिया ।
बाहिरे एड़िल निया श्रीवासे टानिया ॥६३
देवानन्दपण्डितो ना कैल निबारण ।
गुरु यथा भक्तिशून्य तथा शिष्यगण ॥६४
वाह्य पाइ श्रीनिवास दुःखे गेला घर ।
ताहा सब जाने अन्तर्य्यामी विश्वम्भर ॥६५
देवानन्द दरशने हइल स्मरण ।
क्रोधमुखे बोले प्रभु शचीर नन्दन ॥६६
अये अये देवानन्द ! बलिये तोमारे ।
तुमि एबे भागवत पढ़ाओ सभारे ॥६७
ये श्रीवास देखिते गङ्गार मनोरथ ।
हेन जन शुनिबारे गेला भागवत ॥६८
कोन् अपराधे तारे शिष्य हाथाइया ।
बाड़ीर बाहिरे तारे एड़िले टानिया ?६९
भागवत शुनिते ये कान्दे कृष्णरसे ।
टानिया फेलिते से ताहार योग्य आइसे ॥७०

बुझिलाम तुमि ये पढ़ाओ भागवत ।
कोनो जन्मे ना जान ग्रन्थेर अभिमत ॥७१
परिपूर्ण करिया से सब जने खाय ।
तबे बहिर्द्देश गिया से सन्तोष पाय ॥७२
प्रेममय भागवत पढ़ाइया तुमि ।
तत सुख ना पाइला कहिलाम आमि ॥७३
शुनिया बचन देवानन्द विप्रवर ।
लज्जाय रहिल किछु ना करे उत्तर ॥७४
क्रोधाबेशे बलिया चलिला विश्वम्भर ।
दुःखिते चलिला देवानन्द निज घर ॥७५
तथापिह देवानन्द बड़ पुण्यवन्त ।
वचनेओ प्रभु यारे करिलेन दण्ड ॥७६
चैतन्येर दण्ड महासुकृति से पाय ।
यार दण्डे मरिले वैकुण्ठपुरी याय ॥७७
चैतन्येर दण्ड ये मस्तके करि लय ।
सेइ दण्ड तार तरे भक्तियोग हय ॥७८
चैतन्येर दण्डे यार चित्ते नाहि भय ।
जन्मजन्म से पापिष्ठ यमदण्ड्य हय ॥७९
भागवत तुलसी गङ्गाय भक्तजने ।
चतुर्द्धा विग्रह कृष्ण एइ चारि सने ॥८०
जीवन्यास करिले से मूर्त्ति पूज्य हय ।
जन्म मात्र ए चारि ईश्वर वेदे कय ॥८१
चैतन्यकथार आदि अन्त नाहि जानि ।
ये ते मते चैतन्येर यश से बाखानि ॥८२
चैतन्यदासेर पा'ये मोर नमस्कार ।
इथे अपराध किछु नहुक आमार ॥८३
मध्यखण्ड कथा येन अमृतेर खण्ड ।
ये कथा शुनिले घुचे अन्तर पाषण्ड ॥८४
चैतन्येर प्रिय देह नित्यानन्द राय ।
प्रभु भृत्य सङ्गे येन ना छाड़े आमाय ॥८५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥८६

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे देवानन्द-वाक्यदण्डो नाम एकोविंशोऽध्यायः ।



द्वाविंश अध्याय

जयजय गौरचन्द्र कृपार सागर ।
जय शची जगन्नाथ नन्दन सुन्दर ॥१
हेनमते नवद्वीपे प्रभु विश्वम्भर ।
बिहरे संहति नित्यानन्द गदाधर ॥२
वाक्यदण्ड देवानन्दपण्डितेरे करि ।
आइल आपन घरे गौराङ्ग श्रीहरि ॥३
देवानन्दपण्डित चलिला निज वासे ।
दुःख पाइलेन विप्र दुष्ट सङ्ग दोषे ॥४
देवानन्द हेन साधु चैतन्येर ठाँइ !
सम्मुख हइते योग्य नहिल तथाइ ॥५
वैष्णवेर कृपाय से पाइ विश्वम्भर ।
भक्ति विने जप तप अकिञ्चित्कर ॥६

वैष्णवेर ठाञि यार हय अपराध ।
कृष्णप्रेम हइलेओ आर प्रेम बाध ॥७
आमि नाहि बलि एइ वेदेर बचन ।
साक्षातेओ कहियाछे शचीर नन्दन ॥८
ये शचीर गर्भे गौरचन्द्र अवतार ।
वैष्णवापराध पूर्वे आछिल ताँहार ॥९
आगने से अपराध प्रभु घुचाइया ।
मा'येरे दिलेन प्रेम सभा शिखाइया ॥१०
ए बड़ अद्भुत कथा शुन सावधाने ।
वैष्णव अपराध घुचे इहार श्रवणे ॥११
एकदिन महाप्रभु गौराङ्गसुन्दर ।
आसिया वसिला विष्णुखट्वार उपर ॥१२
निजमूर्त्ति शिला सब करि निज कोले ।
आपना प्रकाशे गौरचन्द्र कुतूहले ॥१३
मुञि कलियुगे कृष्ण मुञि नारायण ।
मुञि रामरूपे कैलुँ सागरबन्धन ॥१४
सुतिया आछिलुँ क्षीरसागर भितरे ।
मोर निद्रा भाङ्गिलेक नाढ़ार हुङ्कारे ॥१५
प्रेमभक्ति बिलाइते मोहोर प्रकाश ।
माग माग आरे नाढ़ा माग श्रीनिवास ! १६
देखि महापरकाश नित्यानन्दराय ।
ततक्षणे तुलि छत्र धरिला माथाय ॥१७
वामदिके गदाधर ताम्बूल योगाय ।
चारिदिके भक्तगण चामर ढुलाय ॥१८
भक्तियोग बिलाय गौराङ्ग महेश्वर ।
याहार याहाते प्रीत लय सेइ बर ॥१९
केहो बोले मोर बाप बड़ दुष्टमति ।
तार चित्त भाल हैले मोर अव्याहति ॥२०
केहो मागे गुरुप्रति केहो शिष्यप्रति ।
केहो पुत्र केहो पत्नी यार यथा मति ॥२१

भक्त वाक्य सत्यकारी प्रभु विश्वम्भर ।
हासिया सभारे दिल प्रेमभक्ति बर ॥२२
महाशय श्रीनिवास बलेन गोसाञि !
आइरे देहत भक्ति सभे एइ चाइ ॥२३
प्रभु बोले इहा ना बलिबा श्रीनिवास ।
ताँरे नाहि दिमु प्रेमभक्तिर विलास ॥२४
वैष्णवेर ठाञि तान आछे अपराध ।
अतएब तान हैल प्रेमभक्ति बाध ॥२५
महावक्ता श्रीनिवास बोले आरबार ।
ए कथाय प्रभु देह त्याग सभाकार ॥२६
तुमि हेन पुत्र याँर गर्भे अवतार ।
ताँर कि नहिब प्रेमयोगे अधिकार ॥२७
सभार जीवन आइ जगतेर माता ।
माया छाड़ि प्रभु ताने हओ भक्ति दाता ॥२८
तुमि याँर पुत्र प्रभु से सर्व जननी ।
पुत्र स्थाने मा'येर कि अपराध गणि ॥२९
यदि बा वैष्णवस्थाने थाके बा अपराध ।
तथापिह खण्डाइया करह प्रसाद ॥३०
प्रभु बोले उपदेश कहिते से पारि ।
वैष्णव अपराध आमि खण्डाइते नारि ॥३१
ये वैष्णव स्थाने अपराध हय यार ।
पुन से क्षमिले अपराध घुचे तार ॥३२
दुर्वासार अपराध अम्वरीष स्थाने ।
तुमि देख जान क्षय हइल येमने ॥३३
नाढ़ार स्थानेते आछे तान अपराध ।
नाढ़ा क्षमिले से हय प्रेमेर प्रसाद ॥३४
अद्वैत चरण धूलि लइले माथाय ।
हइबेक प्रेमभक्ति आमार आज्ञाय ॥३५
तखने चलिला सभे अद्वैत स्थाने ।
अद्वैतेरे कहिलेन सब विवरणे ॥३६

शुनिया अद्वैत करे श्रीविष्णु स्मरण।
"तोमरा लइते चाह आमार जीवन ॥३७
याँर गर्भे मोहोर प्रभुर अवतार।
से मोर जननी, मुञि पुत्र से ताँहार ॥३८
ये आइर चरणधूलिर आमि पात्र।
से आइर प्रभाव ना जान तिल मात्र ॥३९
विष्णुभक्तिस्वरूपिणी आइ पतिव्रता।
तोमरा बा मुखे केने आन हेन कथा ॥४०
प्राकृत शब्देओ ये बा बलिबेक आइ।
'आइ' शब्द प्रभावे ताहार दुःख नाइ ॥४१
येन गङ्गा तेन आइ किछु भेद नाइ।
देवकी यशोदा येइ बस्तु से-इ आइ ॥"४२
कहिते आइर तत्त्व आचार्य्यगोसाञि।
पड़िला आबिष्ट हइ वाह्य किछु नाञि ॥४३
बुझिया समय आइ आइला बाहिरे।
आचार्य्य चरणधूलि लइलेन शिरे ॥४४
परम वैष्णवी आइ मूर्त्तिमती भक्ति।
विश्वम्भर गर्भे धरिलेन याँर शक्ति ॥४५
आचार्य्य चरणधूलि लइला यखने।
विह्वले पड़िला किछु वाह्य नाहि जाने ॥४६
जयजय हरि बोले वैष्णवमण्डल।
अन्योऽन्ये करये चैतन्य कोलाहल ॥४७
अद्वैतेर वाह्य नाहि आइर प्रभावे।
आइर नाहिक वाह्य अद्वैतानुभावे ॥४८
दोहाँर प्रभावे दोँहे हइला विह्वल।
'हरि हरि हरि' बोले वैष्णवसकल ॥४९
हासे प्रभु विश्वम्भर खट्वार उपरे।
प्रसन्न हइया प्रभु बोले जननीरे ॥५०
एखने से विष्णुभक्ति हइल तोमार।
अद्वैतेर स्थाने अपराध नाहि आर ॥५१
श्रीमुखेर अनुग्रह शुनिया बचन।
जयजय हरि ध्वनि हइल तखन ॥५२
जननीर लक्ष्ये शिक्षागुरु भगवान्।
करायेन वैष्णवापराध सावधान ॥५३
शूल पाणि सम यदि वैष्णवेरे निन्दे।
तथापिह नाश याय कहे शास्त्रवृन्दे ॥५४
तथाहि—
"महद्विमानात् स्वकृताद्धि मादृक्
नङ्क्ष्यत्यदूरादपि शूलपाणिः ॥"५५

टीका।

भरतं प्रति रहूगणस्योक्तिरियम्। महदिति। स्वकृतात् महतां, विमानात्-अवमानात्. मादृशः, अदूरात्-क्षिप्रं, हि-निश्चितं, नङ्क्ष्यति; शूलपाणिरिव अतिसमर्थोऽपीत्यर्थः।

अनुवाद।

राजा रहूगण, श्रीभरत को कहे थे-महज्जन को अवमानित करने से उक्त स्वकृत अवमानना के फल से मादृश व्यक्ति शूलपाणि के समान अतिसमर्थ होने पर भी सत्वर विनष्ट होगा, इस में सन्देह नहीं है।

इहा ना मानिया ये सुजन निन्दा करे।
जन्मजन्म से पापीष्ठ दैव दोषे मरे ॥५६
अन्येर कि दाय गौरसिंहेर जननी।
ताहानेओ वैष्णवापराध करि गणि ॥५७
बस्तु बिचारे सेहो अपराध नहे।
तथापिह अपराध करि प्रभु कहे ॥५८
इहाने अद्वैत नाम केने लोके घोषे?
'द्वैत" बलिलेन आइ कोन असन्तोषे ॥५९
सेइ कथा कहि शुन हइ सावधान।
प्रसङ्गे कहिये विश्वरूपेर आख्यान ॥६०
प्रभुर अग्रज—विश्वरूप महाशय।
भुवनदुर्ल्लभ रूप महातेजोमय ॥६१

सर्व शास्त्रे बिशारद परम सुधीर ।
नित्यानन्दस्वरूपेर अभेद शरीर ॥६२
तान कथा बुझे हेन नाहि नवद्वीपे ।
शिशु-भावे थाके प्रभु बालक समीपे ॥६३
एकदिन सभाय चलिला मिश्रबर ।
पाछे विश्वरूप पुत्र परम सुन्दर ॥६४
भट्टाचार्य्यसभाय चलिला जगन्नाथ ।
विश्वरूप देखि बड़ कौतुक सभा'त ॥६५
नित्यानन्द रूप प्रभु परम सुन्दर ।
हरिलेन सर्व चित्त सर्व शक्तिधर ॥६६
एक भट्टाचार्य्य बोले "कि पढ़ छाओयाल !"
विश्वरूप बोले किछु किछु सभाकार ॥६७
शिशु ज्ञाने केहो किछु ना बलिल आर ।
मिश्र पाइलेन दुःख, शुनि अहङ्कार ॥६८
निज कार्य्य करि मिश्र चलिलेन घर ।
पथे विश्वरूपेरे मारिला एक चड़ ॥६९
ये पुँथि पढ़िस् बेटा ताहा ना बलिया ।
कि बोल बलिलि तुइ सभा माझे गिया ॥७०
तोमारे त सभार हइल मूर्ख ज्ञान ।
आमारेओ दिले लाज कहि अप्रमाण ॥७१
परम उदार जगन्नाथ महाभाग ।
घरे गेला पुत्रेरे करिया बड़ राग ॥७२
पुन विश्वरूप सेइ सभामाझे गिया ।
भट्टाचार्य्य सभा प्रति बोलेन हासिया ॥७३
तोमरा त आमारे जिज्ञासा ना करिला ।
बापेर स्थानेते मोर शास्ति कराइला ॥७४
जिज्ञासा करिते याहा लय कारो मने ।
सभे मिलि ताहा जिज्ञासह आमा'स्थाने ॥७५
हासि बोले एक भट्टाचार्य्य शुन शिशु !
आजि ये पढ़िले ताहा बाखानह किछु ॥७६

बाखानये सूत्र विश्वरूप भगवान् ।
सभार चित्तेते व्याख्या हइल प्रमाण ॥७७
सभेइ बोलेन सूत्र भाल बाखानिला ।
प्रभु बोले भाण्डाइलुँ किछु ना बुझिला ॥७८
यत बाखानिल सब करिला खण्डन ।
बिस्मय सभार चित्ते हइल तखन ॥७९
एइमत तिनबार करिया खण्डन ।
पुन सेइ तिनबार करिला स्थापन ॥८०
परम सुबुद्धि करि सभे बाखानिल ।
विष्णुमायामोहे केहो तत्त्व ना जानिल ॥८१
हेनमते नवद्वीपे वैसे विश्वरूप ।
भक्तिशून्य लोक देखि नाहि पाय सुख ॥८२
व्यबहारमदे मत्त सकल संसार ।
ना करे वैष्णव यश मङ्गल बिचार ॥८३
पुत्रादिर महोत्सवे करे धन व्यय ।
कृष्णपूजा कृष्णधर्म केहो ना जानय ॥८४
यत अध्यापक सब तर्के से बाखाने ।
कृष्णभक्ति कृष्णपूजा किछुइ ना माने ॥८५
यदि बा पढ़ाय केहो भागवत गीता ।
केहो ना बाखाने भक्ति करे सूक्ष्म चिन्ता ॥८६
सर्व स्थाने विश्वरूप ठाकुर बेड़ाय ।
भक्तियोग ना शुनिया बड़ दुःख पाय ॥८७
सकले अद्वैतसिंह पूर्ण कृष्णशक्ति ।
पढ़ाइया बाशिष्ठ बाखाने कृष्णभक्ति ॥८८
अद्वैतेर व्याख्या बुझे हेन कोन् आछे ।
वैष्णवेर अग्रगण्य नदीया समाझे ॥८९
चारिदिगे विश्वरूप पाय मनोदुःख ।
अद्वैतेर स्थाने सबे पाय प्रेमसुख ॥९०
निरवधि थाके प्रभु अद्वैतेर सङ्गे ।
विश्वरूप सहित अद्वैत वैसे रङ्गे ॥९१

परम बालक प्रभु गौराङ्गसुन्दर ।
कुटिल कुन्तल, वेश अति मनोहर ॥९२
मा'ये बोले विश्वम्भर याह रड़ दिया ।
तोमार भाइरे झाट आनह डाकिया ॥९३
मा'येर आदेश प्रभु धाय विश्वम्भर ।
सत्वरे आइला यथा अद्वैतेर घर ॥९४
वसियाछे अद्वैत बेढ़िया भक्तगण ।
श्रीवासादि करिया यतेक महाजन ॥९५
विश्वम्भर बोले भाइ भात खाओसिया ।
बिलम्व ना कर बोले हासिया हासिया ॥९६
हरिल सभार चित्त प्रभु विश्वम्भर ।
सभेइ चा'हेन रूप परम सुन्दर ॥९७
मोहित हइया चा'हे अद्वैत आचार्य्य ।
सेइ मुख चाहे सबे परिहरि कार्य्य ॥९८
एइमत प्रतिदिन मायेर आदेशे ।
विश्वरूप डाकिबार छले प्रभु आइसे ॥९९
चिन्तये अद्वैत. चिते देखि विश्वम्भर ।
मोर चित हरे शिशु परम सुन्दर ॥१००
मोर चित्त हरिते कि पारे अन्य जन ।
एइ बा मोहोर प्रभु मोहे मोर मन ॥१०१
सर्व्वभूत हृदय ठाकुर विश्वम्भर !
चिन्तिते अद्वैत झाट चलि याय घर ॥१०२
निरवधि विश्वरूप अद्वैतेर सङ्गे ।
छाड़िया संसारसुख गोङायेन रङ्गे ॥१०३
विश्वरूप कथा आदिखण्डे बिस्तर ।
अनन्त चरित्र नित्यानन्दकलेवर ॥१०४
ईश्वरेर इच्छा सबे ईश्वर से जाने ।
विश्वरूप सन्न्यास करिला कथोदिने ॥१०५
जगते बिदित नाम श्रीशङ्करारण्य ।
चलिला अनन्त पथे वैष्णवाग्रगण्य ॥१०६
करि दण्डग्रहण चलिला विश्वरूप ।
आइर विदरे निरवधि शोके बुक ॥१०७
मनेमने गणे आइ हइया सुस्थिर ।
अद्वैत से मोर पुत्र करिला बाहिर ॥१०८
तथापिह आइ वैष्णवापराध भये ।
किछु ना बोलये मने महा दुःख पाये ॥१०९
विश्वम्भर देखि सब पासरिला दुःख ।
प्रभुओ मा'येर बड़ बाढ़ायेन सुख ॥११०
दैवे कथोदिने प्रभु करिला प्रकाश ।
निरवधि अद्वैतेर संहति विलास ॥१११
छाड़िया संसारसुख प्रभु विश्वम्भर ।
लक्ष्मी परिहरि थाके अद्वैतेर घर ॥११२
ना रहे गृहेते पुत्र हेन देखि आइ ।
एहो पुत्र निला मोर आचार्य्य गोसाञि ॥११३
सेइ दुःखे सबे एइ बलिलेन आइ ।
के बोले अद्वैत, द्वैत ए बड़ गोसाञि ॥११४
चन्द्रसम एक पुत्र करिया बाहिर ।
एहो पुत्र ना दिलेन करिबारे स्थिर ॥११५
अनाथिनी–मोरे त काहारो नाहि दया ।
जगतेरे अद्वैत मोरे से द्वैत माया ॥११६
सबे एइ अपराध, आर किछु नाञि ।
इहार लागिया भक्ति ना देन गोसाञि ॥११७
ए काले ये वैष्णवेरे छोट बड़ बोले ।
निश्चिन्ते थाकुक् से जानिब कथोकाले ॥११८
जननीर लक्ष्ये शिक्षागुरु भगवान् ।
वैष्णवापराध करायेन सावधान ॥११९
चैतन्यसिंहेर आज्ञा करिया लङ्घन ।
ना बुझि वैष्णव निन्दे पाइब बन्धन ॥१२०
ए कथार हेतु किछु शुन मन दिया ।
ये निमित्त गौरचन्द्र कहिलेन इहा ॥१२१

त्रिकाल जानेन प्रभु श्रीशचीनन्दन ।
जाने सेविबेक अद्वैतेरे दुष्टगण ॥१२२
अद्वैतेरे गाइबेक श्रीकृष्ण करिया ।
यत किछु वैष्णवेर बचन लङ्घिया ॥१२३
ये बलिब अद्वैतेरे परम वैष्णव ।
ताहारेइ बेढ़िया लङ्घिब पापी सब ॥१२४
से सब गणेर पक्ष अद्वैत धरिते ।
अतएव शक्ति नाहि ए दण्ड देखिते ॥१२५
सकल सर्वज्ञ चूड़ामणि विश्वम्भर ।
जानिला विलम्बे हइबेक बहुतर ॥१२६
अतएव दण्ड देखाइया जननीरे ।
साक्षी करिलेन अद्वैतादि वैष्णवेरे ॥१२७
वैष्णवेर निन्दा करिबेक यार गण ।
तार रक्षा समर्थ नहिब कोन जन ॥१२८
वैष्णव निन्दकगण याहार आश्रय ।
आपने एड़ाइते ताहार संशय ॥१२९
बड़ अधिकारी हय आपने एड़ाय ।
क्षुद्र हैले गणसह अधःपाते याय ॥१३०
चैतन्येर दण्ड बुझिबारे शक्ति कार ।
जननीर लक्ष्ये दण्ड करिला सभार ॥१३१
ये वा जन अद्वैतेरे वैष्णव बलिते ।
निन्दा करे द्वन्द्व करे मरे भालमते ॥१३२
सर्वप्रभु गौराङ्गसुन्दर महेश्वर ।
एइ बड़ स्तुति ये 'ताहान अनुचर' ॥१३३
नित्यानन्दस्वरूपे से निष्कपट हैया ।
कहिलेन गौरचन्द्र ईश्वर करिया ॥१३४
नित्यानन्द प्रसादे से गौरचन्द्र जानि ।
नित्यानन्द प्रसादे से वैष्णवेरे चिनि ॥१३५
नित्यानन्द प्रसादे से निन्दा याय क्षय ।
नित्यानन्द प्रसादे से विष्णुभक्ति हय ॥१३६
निन्दा नाहि नित्यानन्द सेवकेर मुखे ।
अहर्निश चैतन्येर यश गाय सुखे ॥१३७
नित्यानन्दभृत्य सर्वदिगे सावधान ।
नित्यानन्दभृत्येर चैतन्य धन प्राण ॥१३८
अल्प भाग्ये नाहि हय नित्यानन्द दास ।
याहारा लओयाय गौरचन्द्रेर प्रकाश ॥१३९
ये जन शुनये विश्वरूपेर आख्यान ।
से हय अनन्तदास नित्यानन्द प्राण ॥१४०
नित्यानन्द विश्वरूप अभेद शरीर ।
आइ इहा जाने आर कोन महा धीर ॥१४१
जय नित्यानन्द गौरचन्द्रेर शयन ।
जयजय नित्यानन्द सहस्रवदन ॥१४२
गौड़देश इन्द्र जय नित्यानन्द राय ।
के पाय चैतन्य विने तोमार कृपाय ॥१४३
नित्यानन्द हेन प्रभु हाराय याहार ।
कोथाओ जीवने सुख नाहिक ताहार ॥१४४
हेन दिन हइब कि चैतन्य निताइ ।
देखिब कि पारिषद सहे एक ठाँइ ॥१४५
आमार प्रभुर प्रभु गौराङ्गसुन्दर ।
ए बड़ भरसा चिते धरि निरन्तर ॥१४६
अद्वैतचरणे मोर एइ नमस्कार ।
तान प्रिय ताहे मति रहुक आमार ॥१४७
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१४८

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे शचीदेव्या वैष्णवापराध-खण्डनं नाम द्वाविंशतितमोऽध्यायः

त्रयोविंश अध्याय

जयजय श्रीकृष्णचैतन्य गुणनिधि।
जय विश्वम्भर जय भवादिर विधि ॥१
जयजय नित्यानन्द प्रिय द्विजराज।
जयजय चैतन्येर भकत समाज ॥२
हेनमते नवद्वीपे प्रभु विश्वम्भर।
क्रीड़ा करे नहे सर्व नयन गोचर ॥३
दिनेदिने महानन्द नवद्वीपपुरी।
वैकुण्ठ नायक विश्वम्भर अवतरी ॥४
प्रियतम नित्यानन्द सङ्गे कुतूहले।
भकतसमाजे निज नाम रसे खेले ॥५
प्रतिदिन निशाभागे करये कीर्त्तन।
भक्त विने थाकिते ना पाय अन्य जन ॥६
एत वड़ विश्वम्भर शक्तिर महिमा।
त्रिभुवन लङ्घिते ना पारे केहो सीमा ॥७
अगोचरे दूरे थाकि मिलि दश पाँचे।
मन्द मात्र बोले, यम घरे याय पाछे ॥८
केहो बोले "कलियुगे किसेर वैष्णव।
यत देख हेर पेटपोषागुला सब ॥"९
केहो बोले ए गुलार बान्धि हाथ पाय।
जले फेलि जीये यदि तबे धन्य गाय ॥१०
केहो बोले आरे भाइ जानिह निश्चित।
ग्राम खान लुटाइब निमाञिपण्डित ॥११
भय देखायेन सभे देखिबार तरे।
अन्तरे नाहिक भाग्य चातुर्य्ये कि करे ॥१२
सङ्कीर्त्तन करे प्रभु शचीर नन्दन।
जगतेर चित्तवृत्ति करये शोधन ॥१३
देखिते ना पाय लोक, करे अनुताप।
सभेइ अभाग्य बलि छाड़ये निश्वास ॥१४
सङ्गोपे कीर्त्तन गिया देखिबार तरे।
केहो बा काहारो ठाञि परिहार करे ॥१५
प्रभु से सर्वज्ञ इहा सर्व दासे जाने।
एइ भये केहो कारे ना लय से स्थाने ॥१६
एक ब्रह्मचारी सेइ नवद्वीपे वैसे।
तपस्वी परम साधु वसये निर्दोषे ॥१७
सर्वकाल पय:पान, अन्न नाहि खाय।
शुनिते कीर्त्तन विप्र देखिवारे चाय ॥१८
प्रभु से दुयार दिया करये कीर्त्तन।
प्रवेशिते नारे भक्त विने अन्य जन ॥१९
सेइ विप्र प्रति दिन श्रीवासेर स्थाने।
नृत्य देखिवार लागि साधय आपने ॥२०
तुमि यदि एकदिन कृपा कर मोरे।
आपने लइया याओ बाड़ीर भितरे ॥२१
तबे से देखिते पाङ पण्डितेर नृत्य।
लोचन सफल करों हङ कृतकृत्य ॥२२
एइमत प्रतिदिन साधये ब्राह्मण।
आर दिन श्रीवास से बलिला वचन ॥२३
तोमारे त जानि सर्वकाल बड़ भाल।
ब्रह्मचर्य्ये फलाहारे गोङाइला काल ॥२४
कोन पाप नाहि जानि तोमार शरीरे।
देखिबार तोमार आछये अधिकारे ॥२५
प्रभुर से आज्ञा नाहि केहो याइवारे।
सङ्गोपे थाकिबा एइ बलिलुँ तोमारे ॥२६
एत बलि ब्राह्मणेरे लइया चलिला।
एकदिगे आड़ हइ सङ्गोपे थाकिला ॥२७
नृत्य करे चतुर्द्दशभुवनेर नाथ।
चतुर्द्दिगे महाभाग्यवन्तवर्ग साथ ॥२८
कृष्ण राम मुकुन्द मुरारि वनमाली।
सभेइ गायेन हइ महाकुतूहली ॥२९
नित्यानन्द गदाधर धरिया बेड़ाय।
आनन्दे अद्वैतसिंह चारिदिगे धाय ॥३०

परानन्द सुखे केहो वाह्य नानि जाने ।
बैकुण्ठनायक नृत्य करये आपने ॥३१
हरि बोल हरि बोल हरि बोल भाइ !
इहा बइ आर किछु शुनिते ना पाइ ॥३२
अश्रु, कम्प, लोमहर्ष, सघन-हुङ्कार ।
के कहिते पारे विश्वम्भरेर बिकार ॥३३
सर्व्वेर चूड़ामणि विश्वम्भर राय ।
जाने विप्र लुकाइया आछये एथाय ॥३४
रहिया रहिया बोले प्रभु विश्वम्भर ।
आजि केने प्रेमयोगे ना पाङ निर्भर ॥३५
केहो वा आसिया आछे बाड़ीर भितरे ।
किछु नाहि बुझों सत्य कह देखि मोरे ॥३६
भय पाइ श्रीवास से बोलये बचन ।
पाषण्डेर इथे प्रभु ! नाहि आगमन ॥३७
सबे एक ब्रह्मचारी बड़ सुब्राह्मण ।
सर्वकाल पयःपान निष्पाप जीवन ॥३८
देखिते तोमार नृत्य श्रद्धा ताँर बड़ ।
निभृते आछये प्रभु ! जानियाछ दढ़ ॥३९
शुनि क्रोधाबेशे बोले प्रभु विश्वम्भर ।
"झाट काड़ि बाड़ीर बाहिर निया कर ॥"४०
मोर नृत्य देखिते उहार कोन् शक्ति ।
पयःपान करिले कि मोहे हय भक्ति ?४१
दुइ भुज तुलि प्रभु अङ्गुली देखाय ।
पयःपाने कभु मोरे केहो नाहि पाय ॥४२
चण्डालेहो मोहोर शरण यदि लय ।
सेहो मोर मुञि तार जानिह निश्चय ॥४३
सन्न्यासीओ यदि मोर ना लय शरण ।
सेहो मोर नहे सत्य बलिलुँ बचन ॥४४
गजेन्द्र बानर गोप कि तप करिल ।
बोल देखि तारा मोरे कि तपे पाइल ॥४५
असुरेओ तप करे, कि हय ताहार ।
विने मोर शरण लइले नाहि पार ॥४६
प्रभु बोले पयःपाने मोरे नाहि पाइ ।
सकल करिमु चूर्ण, देखिबा एथाइ ॥४७
महाभये ब्रह्मचारी हइला बाहिर ।
मने मने चिन्तये ब्राह्मण महाधीर ॥४८
एइ मोर भाग्य बड़ ये किछु देखिलुँ ।
अपराध अनुरूप शास्तिओ पाइलुँ ॥४९
अद्भुत देखिलुँ नृत्य अद्भुत कीर्त्तन ।
अपराध अनुरूप पाइलुँ भर्त्सन ॥५०
सेवक हइले एइमत बुद्धि हय ।
सेवके से प्रभुर सकल दण्ड सय ॥५१
एइमत चिन्तिया चलिते विप्रवर ।
जानिलेन अन्तर्य्यामी श्रीगौराङ्गसुन्दर ॥५२
डाकिया आनिया पुनः करुणासागर ।
पादपद्म दिला तार मस्तक उपर ॥५३
प्रभु बोले तप करि ना करिह बल ।
विष्णुभक्ति सर्वश्रेष्ठ जानिह केबल ॥५४
हरि बलि सन्तोषे सकल भक्तगण ।
दण्डवत हइया पड़िला ततक्षण ॥५५
श्रद्धा करि ये जन शुनये ए रहस्य ।
गौरचन्द्र प्रभु ताँरे मिलिब अवश्य ॥५६
ब्रह्मचारी प्रति कृपा करिया ठाकुर ।
आनन्द आबेशे नृत्य करेन प्रचुर ॥५७
सेइ विप्र चरणे आमार नमस्कार ।
चैतन्येर दण्डे हैल हेन बुद्धि यार ॥५८
एइमत प्रति निशा करये कीर्त्तन ।
देखिबार शक्ति नाहि धरे अन्यजन ॥५९
अन्तरे दुःखित लोक सब नदीयार ।
सभे पाषण्डीरे मन्द बोलये अपार ॥६०

पापिष्ठ निन्दक बुद्धिनाशेर लागिया ।
हेन महोत्सव देखिबारे नारे गिया ॥६१
पापिष्ठ पाषण्डी सब सबे निन्दा जाने ।
बञ्चित हइया मरे एहेन कीर्त्तने ॥६२
पाप पाषण्डीर लागि निमाञिपण्डित ।
भालरेओ द्वार नाहि देन कदाचित ॥६३
तेँहो से कृष्णेर भक्त जानेन सकल ।
ताहान हृदय पुनि परम निर्मल ॥६४
आमरा सभेर यदि ताँरे भक्ति थाके ।
तबे नृत्य देखिब अवश्य कोन पाके ॥६५
कोन नगरिया बोले वसि थाक भाइ !
नयन भरिया देखिवाङ एइ ठाँइ ॥६६
संसार उद्धार लागि निमाञिपण्डित ।
नदीयार माझे आसि हइला बिदित ॥६७
घरेघरे नगरे नगरे प्रतिद्वारे ।
करिबेन सङ्कीर्त्तन, बलिल सभारे ॥६८
भाग्यवन्त नगरिया सर्व अवतारे ।
पण्डितेर गण सब निन्दा करि मरे ॥६९
दिवस हइले सब नगरियागण ।
प्रभु देखिबार तरे करेन गमन ॥७०
केहो बा नूतन द्रव्य कारो हाथे कला ।
केहो घृत केहो दधि केहो दिव्य माला ॥७१
लइया चलेन सभे प्रभु देखिबारे ।
प्रभु देखि सर्वजन दण्डवत करे ॥७२
प्रभु बोले कृष्णभक्ति हउक सभार ।
कृष्ण गुण नाम बइ ना बलिह आर ॥७३
आपने सभारे प्रभु करे उपदेश ।
कृष्णनाम महामन्त्र शुनह विशेष ॥७४
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥७५

प्रभु बोले कहिलाम एइ महामन्त्र ।
इहा गिया जप सभे करिया निर्बन्ध ॥७६
इहा हैते सर्वसिद्धि हइब सभार ।
सर्वक्षण बोल इथे विधि नाहि आर ॥७७
दश पाँचे मिलि निज दुयारे वसिया ।
कीर्त्तन करह सभे हाथे तालि दिया ॥७८
हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन ॥७९
कीर्त्तन कहिल एइ तोमा सभाकारे ।
स्त्रीये पुत्रे बापे मिलि कर गिया घरे ॥८०
प्रभु मुखे मन्त्र पाइ सभार उल्लास ।
दण्डवत करि सभे गेला निज वास ॥८१
निरवधि सभेइ जपेन कृष्णनाम ।
प्रभुर चरणे काय मने करे ध्यान ॥८२
सन्ध्या हैले आपन दुयारे सभे मिलि ।
कीर्त्तन करेन सभे दिया करतालि ॥८३
एइमत नगरेनगरे सङ्कीर्त्तन ।
कराइते लागिलेन शचीर नन्दन ॥८४
सभारे उठिया प्रभु आलिङ्गन करे ।
आपन गलार माला देइ सभाकारे ॥८५
दन्ते तृण करि प्रभु परिहार करे ।
अहर्निश भाइसब ! बोलये कृष्णेरे ॥८६
प्रभुर देखिया आर्त्ति कान्दे सर्वजन ।
कायमनोवाक्ये लइलेन सङ्कीर्त्तन ॥८७
परम आनन्दे सब नगरियागण ।
हाथे तालि दिया बोले राम नारायण ॥८८
मृदङ्ग मन्दिरा शङ्ख आछे सर्वभरे ।
दुर्गोत्सवकाले बाद्य बाजाबार तरे ॥८९
सेइ सब बाद्य एबे कीर्त्तन समये ।
गायेन बा'येन सभे आनन्द हृदये ॥९०

'हरि ओ राम राम हरि ओ राम।'
एइ मत नगरे उठिल ब्रह्म-नाम ॥९१
खोलावेचा श्रीधर यायेन सेइ पथे।
दीर्घ करि हरिनाम बलिते बलिते ॥९२
शुनिया कीर्त्तन आरम्भिला महानृत्य।
आनन्दे विह्वल हैला चैतन्येर भृत्य ॥९३
देखिया ताहार सुख नगरियागण।
बेढ़िया चौदिगे सभे करेन कीर्त्तन ॥९४
गड़ागड़ि यायेन श्रीधर प्रेमरसे।
बहिर्मुख सकल दूरेते थाकि हासे ॥९५
कोन पापी बोले हेर देख भाइ सब !
खोलाबेचा मुनिसाओ हइल वैष्णव ॥९६
परिधान बस्त्र नाहि, पेटे नाहि भात।
लोकेरे जानाय भाब हइल आमा'त ॥९७
नगरियागुला बोले मागि खाइ मरे।
अकालेइ दुर्गोत्सव आनिलेक घरे ॥९८
एइमत पाषण्डीरा बलगये सदाय।
प्रतिदिन नगरियागण 'कृष्ण' गाय ॥९९
दैवे एकदिन काजि सेइपथे याय !
मृदङ्ग मन्दिरा शङ्ख शुनिबारे पाय ॥१००
हरिनाम कोलाहल चतुर्द्दिगे मात्र।
शुनिया स्मङरे काजि आपनार शास्त्र ॥१०१
काजि बोले धर धर आजि करों कार्य्य।
आजि बा कि करे तोर निमाञि आचार्य्य॥१०२
आथेव्यथे पलाइल नगरियागण।
महात्रासे केश केहो ना करे बन्धन ॥१०३
याहारे पाइल काजि, मारिल ताहारे।
भाङ्गिल मृदङ्ग, अनादर कैल द्वारे ॥१०४
काजि बोले हिन्दुयानि हइल नदीया।
करिमु इहार शास्ति नागालि पाइया ॥१०५
क्षमा करि याङ आजि दैवे हैल राति।
आरदिन लागि पाइलेइ लैब जाति ॥१०६
एइमत प्रतिदिन दुष्टगण लैया।
नगरे भ्रमये काजि कीर्त्तन चाहिया ॥१०७
दुःखे सब नगरिया थाके लुकाइया।
हिन्दुके काजि सब मारे कदर्थिया ॥१०८
केहो बोले हरिनाम लैब मनेमने।
हुड़ाहुड़ि बलियाछे केमन पुराणे ॥१०९
लङ्घिले वेदेर वाक्य एइ शास्ति हय।
जाति बलियाओ ए गुलार नाहि भय ॥११०
निमाञिपण्डित ये करेन अहङ्कारे।
सब चूर्ण हइबेक काजिर दुयारे ॥१११
नगरेनगरे ये बुलेन नित्यानन्द।
देख तार कोन् दिन बाहिराय रङ्ग ॥११२
उचित बलिते हइ आमरा पाषण्ड।
धन्य नदीयाय एत उपजिल भण्ड ॥११३
भये केहो किछु नाहि करे प्रत्युत्तर।
प्रभुस्थाने गिया सभे करिला गोचर ॥११४
काजीर भयेत आर ना करि कीर्त्तन।
प्रतिदिन बुले लइ सहस्रेक जन ॥११५
नवद्वीप छाड़िया याइब अन्यस्थाने।
गोचरिल एइ दुइ तोमार चरणे ॥११६
कीर्त्तनेर बाध शुनि प्रभु विश्वम्भर।
क्रोधे हइलेन प्रभु रुद्र मूर्त्तिधर ॥११७
हुङ्कार करये प्रभु शचीर नन्दन।
कर्ण धरि हरि बोले नगरियागण ॥११८
प्रभु बोले नित्यानन्द ! हओ सावधान।
एइक्षणे चल सर्व वैष्णवेर स्थान ॥११९
सर्व नवदीपे आजि करिमु कीर्त्तन।
देखों मोरे कोन् कर्म करे कोन् जन ॥१२०

देख आजि काजिर पोड़ाङ घरद्वार ।
कोन् कर्म करे राजा बा ताहार ॥१२१
प्रेमभक्ति बृष्टि आजि करिब बिशाल ।
पाषण्डीर गणेरे हइब आजि काल ॥१२२
चलचल भाइसब नगरियागण !
सर्वत्र आमार आज्ञा करह कथन ॥१२३
कृष्णेर रहस्य आजि देखिबेक येइ ।
एके महादीप लइ आसिबेक सेइ १२४
भाङ्गिब काजिर घर काजिर दुयारे ।
कीर्त्तन करिमु, देखों कोन् कर्म करे ॥१२५
अनन्त ब्रह्माण्ड मोर सेवकेर दास ।
मुञि विद्यमानेओ कि भयेर प्रकाश ॥१२६
तिलार्द्धेको भय केहो ना करिह मने ।
बिकाले आसिवे झाट करिया भोजने ॥१२७
ततक्षणे चलिलेन नगरियागण ।
आनन्दे डुबिला सभे, किसेर भोजन ॥१२८
निमाञिपण्डित आजि नगरेनगरे ।
नाचिबेन ध्वनि हैल प्रतिघरेघरे ॥१२९
यार नृत्य ना देखिया नदीयार लोक ।
कत कोटि सहस्र करिया आछे शोक ॥१३०
हेन जन नाचिबेन नगरेनगरे ।
आनन्दे देउटि बान्धे प्रति घरेघरे ॥१३१
बापे बान्धिलेओ पुत्र बान्धे आपनार ।
केहो कारो हरिबे ना पारे राखिबार ॥१३२
ता बड़ ता बड़ करि सभेइ बान्धेन ।
बड़बड़ भाण्डे तैल करिया लयेन ॥१३३
अनन्त अर्वुद लक्ष लोक नदीयार ।
देउटिर संख्या करिबारे शक्ति कार ॥१३४
इति मध्ये ये ये व्यबहारे बड़ हय ।
सहस्रेको साजाइया कोन जन लय ॥१३५

हइल देउटिमय नवद्वीपपुर ।
स्त्री बाल बृद्धेरो रङ्ग बाढ़िल प्रचुर ॥१३६
एहो शक्ति आनेर कि हय कृष्ण विने ।
तभु पापी लोक ना जानिल एतदिने ॥१३७
ईषत आज्ञाय मात्र सर्व नवद्वीप ।
चलिला देउटि लइ प्रभुर समीप ॥१३८
शुनि सर्व वैष्णव आइला ततक्षण ।
सभारे करेन आज्ञा शचीर नन्दन ॥१३९
आगे नृत्य करिबेन आचार्य्यगोसाञि ।
एत सम्प्रदाय गाइबेन तान ठाञि ॥१४०
मध्ये नृत्य करि याइबेन हरिदास ।
एक सम्प्रदाय गाइबेन तान पाश ॥१४१
तबे नृत्य करिबेन श्रीवासपण्डित ।
एक सम्प्रदाय गाइबेन तान भित ॥१४२
नित्यानन्ददिगे मात्र चाहिलेन प्रभु ।
नित्यानन्द बोले तोमा ना छाड़िब कभु ॥१४३
धरिया बुलिब प्रभु ! एइ कार्य्य मोर ।
तिलेको हृदये पद ना छाड़िब तोर ॥१४४
स्वतन्त्र नाचिते प्रभु मोर कोन् शक्ति ।
यथा तुमि तथा मुञि एइ मोर भक्ति ॥१४५
प्रेमानन्द धारा देखि नित्यानन्द अङ्गे ।
आलिङ्गन करि राखिलेन निज सङ्गे ॥१४६
एइमत यार येन चित्तेर उल्लास ।
केहो बा स्वतन्त्र नाचे केहो प्रभु पाश ॥१४७
मन दिया शुन भाइ नगरकीर्त्तन ।
ये कथा शुनिले कर्मबन्धेर खण्डन ॥१४८
गदाधर वक्रेश्वर मुरारि श्रीवास ।
गोपीनाथ जगदीश विप्र गङ्गादास ॥१४९
रामाइ गोविन्दानन्द श्रीचन्द्रशेखर ।
वासुदेव श्रीगर्भ श्रीमुकुन्द श्रीधर ॥१५०

गोविन्द, जगदानन्द, नन्दन-आचार्य्य ।
शुक्लाम्बर आदि ये ये जाने रहःकार्य्य ॥१५१
अनन्त चैतन्यभृत्य, कत जानि नाम ।
वेदव्यास द्वारे व्यक्त हइब पुराण ॥१५२
साङ्गोपाङ्ग अस्त्र पारिषदे प्रभु नाचे ।
इहा वर्णिबारे कि नरेर शक्ति आछे ॥१५३
अवतारो एमत कि आछे अद्भुत ।
याहा प्रकाशिलेन हइया शचीसुत ॥१५४
तिलेतिले बाढ़े विश्वम्भरेर उल्लास ।
अपराह्ण आसिया हइल परकाश ॥१५५
भक्तगणेर चित्ते हइल आनन्द ।
सुखसिन्धु माझे भासे सब भक्तवृन्द ॥१५६
नगरे नाचिब प्रभु कमलार कान्त ।
देखिया जीवेर दुःख घुचिब नितान्त ॥१५७
स्त्री बालक वृद्ध किबा स्थाबर जङ्गम ।
से नृत्य देखिले सर्वबन्धेर बिमोचन ॥१५८
काहारो नाहिक वाह्य आनन्द आबेशे ।
गोधूलि समय आसि हइल प्रवेशे ॥१५९
कोटिकोटि लोक आसि आछये दुयारे ।
परशिया ब्रह्माण्ड श्रीहरिध्वनि करे ॥१६०
हुङ्कार करिला प्रभु शचीर नन्दन ।
सुखे परिपूर्ण हैल सभार श्रवण ॥१६१
हुङ्कारेर सुखे सभे हइला विह्वल ।
हरि बलि सभे दीप ज्वालिल सकल ॥१६२
लक्ष कोटि दीप सब चारिदिगे ज्वले ।
लक्ष कोटि लोक चारिदिगे हरि बोले ॥१६३
कि शोभा हइल से बलिते शक्ति कार ।
कि सुखेर ना जानि हइल अवतार ॥१६४
किबा चन्द्र शोभा करे किबा दिनमणि ।
किबा तारागण ज्वले किछुइ ना जानि ॥१६५
सबे ज्योतिर्मय देखे सकल आकाश ।
ज्योतीरूपे कृष्ण किबा करिला प्रकाश ॥१६६
'हरि' बलि डाकिलेन गौराङ्गसुन्दर ।
सकल वैष्णवगण हइला सत्वर ॥१६७
करिते लागिला प्रभु बेढ़िया कीर्त्तन ।
सभार अङ्गेते माला श्रीफागु चन्दन ॥१६८
करताल मन्दिरा सभार शोभे करे ।
कोटि सिंह जिनिया सभेइ शक्ति धरे ॥१६९
चतुर्द्दिगे आपन विग्रह भक्तगण ।
बाहिर हइला प्रभु श्रीशचीनन्दन ॥१७०
प्रभु मात्र बाहिर हइला नृत्यरसे ।
हरि बलि सर्वलोक महानन्दे भासे ॥१७१
संसारेर ताप हरे श्रीमुख देखिया ।
सर्वलोक हरि बोले डाकिया डाकिया ॥१७२
जिनिया कन्दर्प कोटि लावण्येर सीमा ।
हेन नाहि याहा दिया करिब उपमा ॥१७३
तथापिह बलि तान कृपा अनुसारे ।
अन्यथा से रूप कहिबारे के बा पारे ॥१७४
ज्योतिर्मय कनक विग्रह वेद सार ।
चन्दने भूषित गौरचन्द्रेर आकार ॥१७५
चाँचर चिकुरे शोभे मालतीर माला ।
मधुरमधुर हासे जिनि सर्वकला ॥१७६
ललाटे चन्दन शोभे फागुबिन्दु सने ।
बाहु तुलि हरिहरि बोले श्रीवदने ॥१७७
आजानुलम्बित माला सर्व-अङ्गे दोले ।
सर्व अङ्ग तिते पद्मनयनेर जले ॥१७८
दुइ महाभुज येन कनकेर स्तम्भ ।
पुलकेर शोभा येन कनक कदम्ब ॥१७९
सुरङ्ग अधर अति सुन्दर दशन ।
श्रुतिमूले शोभा करे भ्रू भङ्ग पत्तन ॥१८०

गजेन्द्र जिनिया स्कन्ध, हृदय सुपीन।
तहिँ शोभे शुक्ल-यज्ञसूत्र अति क्षीण ॥१८१
चरणारबिन्द-रमा तुलसीर स्थान।
परम निर्मल सूक्ष्म वास परिधान ॥१८२
उन्नत नासिका, सिंह ग्रीब मनोहर।
सभा हैते सुपीत सुदीर्घ कलेवर ॥१८३
ये से खाने थाकिया सकल लोक बोले।
ओइ ठाकुरेर केश शोभे नाना फुले ॥१८४
एतेक लोकेर से हइल समुच्चय।
सरिषाओ पड़िलेओ तल नाहि हय ॥१८५
तथापिह हेन कृपा हइल तखन।
सभेइ देखेन सुखे प्रभुर वदन ॥१८६
प्रभुर श्रीमुख देखि सब नारीगण।
हुलाहुलि दिया 'हरि' बोले अनुक्षण ॥१८७
कान्दिर सहित कला सकल दुयारे।
पूर्ण-घट शोभे नारिकेल आम्रसारे ॥१८८
घृतेर प्रदीप ज्वले परम सुन्दर।
दधि दूर्वा धान्य दिव्य बाटार उपर ॥१८९
एइमत नदीयार प्रतिद्वारेद्वारे।
हेन नाहि जानि इहा कोन् जन करे ॥१९०
बुले स्त्री पुरुष सर्वलोक प्रभु सङ्गे।
केहो काहो ना जाने परमानन्द रङ्गे ॥१९१
चोरेर आछिल चित्त एइ अवसरे।
आजि चुरि करिबाङ प्रतिघरेघरे ॥१९२
सेह चोर पासरिल आपन बेभार।
हरि बइ मुखे कारो ना आइसे आर ॥१९३
हइल सकल पथ खइ कड़ि मय।
के बा करे के बा फेले हेन रङ्ग हय ॥१९४
स्तुति हेन ना मानिह ए सकल कथा।
एइमत हये कृष्ण बिहरये यथा ॥१९५

नवलक्ष प्रासाद द्वारका रत्नमय।
निमिषे हइल, एइ भागवते कय ॥१९६
ये काले यादव सङ्गे सेइ द्वारकाय।
जलकेलि करिलेन एइ द्विजराय ॥१९७
जगते बिदित हय लवणसागर।
इच्छामात्र हइल अमृत जल धर ॥१९८
हरिवंशे कहेन ए सब गोप्य कथा।
एतेके सन्देह किछु ना करिह एथा ॥१९९
से इ प्रभु नाचे निज कीर्त्तने बिह्वल।
आपनेइ उपसन्न सकल मङ्गल ॥२००
भागीरथीतीरे प्रभु नृत्य करि याय।
आगे पाछे हरि बलि सर्वलोके धाय ॥२०१
आचार्य्यगोसाञि आगे जनकथो लैया।
नृत्य करि चलिलेन परानन्द हैया ॥२०२
तबे हरिदास कृष्णसुखेर सागर।
आज्ञाय चलिला नृत्य करिया सुन्दर ॥२०३
तबे नृत्य करिया चलिल श्रीनिवास।
कृष्णसुखे परिपूर्ण याहार विलास ॥२०४
एइमत भक्तगण आगे नाचि याय।
सभारे बेढ़िया एक सम्प्रदाय गाय ॥२०५
सकल पश्चाते प्रभु गौराङ्गसुन्दर।
यायेन करिया नृत्य अतिमनोहर ॥२०६
मधु कण्ठ हइलेन सर्वभक्तगण।
कभु नाहि गाये सेहो हइल गायन ॥२०७
मुरारि गोविन्द-दत्त रामाञि मुकुन्द।
वक्रेश्वर वासुदेव आदि यतवृन्द ॥२०८
सभेइ नाचेन प्रभु बेढ़िया गायेन।
आनन्दे पूर्णित प्रभु संहति यायेन ॥२०९
नित्यानन्द गदाधर याय दुइ पाशे।
प्रेम सुधा सिन्धु माझे दुइजन भासे ॥२१०

चलिलेन महाप्रभु नाचिते नाचिते ।
लक्ष कोटि लोक धाय प्रभुरे देखिते ॥२११
कोटिकोटि महाताप ज्वलिते लागिल ।
चन्द्रेर किरण सर्वशरीरे हइल ॥२१२
चतुर्द्दिगे कोटिकोटि महादीप ज्वले ।
कोटिकोटि लोक चतुर्द्दिके हरि बोले ॥२१३
देखिया प्रभुर नृत्य अपूर्व बिकार ।
आनन्दे बिह्वल लोक सब नदीयार ॥२१४
क्षणे हय प्रभु अङ्ग सब धूलामय ।
नयनेर जले क्षणे सब पाखालय ॥२१५
से कम्प से घर्म से बा पुलक देखिते ।
पाषण्डीर चित्तवृत्ति करये नाचिते ॥२१६
नगरे उठिल महा कृष्ण कोलाहल ।
हरि बलि ठाञिठाञि नाचये सकल ॥२१७
हरि ओ राम राम हरि ओ राम ।
हरि बलि नाचये सकल भाग्यवान् ॥२१८
ठाञिठाञि एइ मत मेलि दश पाँचे ।
केहो गाय केहो बाय केहो माझे नाचे ॥२१९
लक्षलक्ष कोटिकोटि हैल सम्प्रदाय ।
आनन्दे नाचिया सर्वनवद्वीपे याय ॥२२०
हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन ॥२२१
केहोकेहो नाचये हइया एकमेलि ।
दशे पाँचे गाय केहो दिया करतालि ॥२२२
दुइ हाथ जोड़ा दीप तैलेर भाजने ।
ए बड़ अद्भुत तालि दिलेक केमने ॥२२३
हेन बुझि वैकुण्ठ आइला नवद्वीपे ।
वैकुण्ठ स्वभाब धर्म पाइलेक लोके ॥२२४
जीवमात्र चतुर्भुज हइल सकल ।
ना जानिल केहो कृष्ण आनन्दे विह्वल ॥२२५
स्वहस्त हइल चारि ताहो नाहि जाने ।
आपनार स्मृति गेल तबे तालि केने ॥२२६
हेनमते वैकुण्ठेर सुख नवद्वीपे ।
नाचिया यायेन सभे गङ्गार समीपे ॥२२७
विजय करिला येन नन्दघोषेर बाला ।
बाम हाथे बाँशी गले कदम्वेर माला ॥२२८
एइमत कीर्त्तन करिया सर्वलोक ।
पासरिल देह धर्म यत दुःख शोक ॥२२९
गड़ागड़ि याय केहो मालसाट् पुरे ।
काहारो जिह्वाय नाना मत वाक्य स्फुरे ॥२३०
केहो बोले एबे काजि बेटा गेल कोथा ।
लागि पाङ एखने छिँड़िया फेलोँ माथा ॥२३१
रड़ दिया याय केहो पाषण्डी धरिते ।
केहो पाषण्डीर नामे किलाय माटिते ॥२३२
ना जानि बा कत जने मृदङ्ग बाजाय ।
ना जानि बा महानन्दे कत जने गाय ॥२३३
हेन प्रेमबृष्टि हैल सर्व नदीयाय ।
वैकुण्ठ सेवको याहा चाहे सर्वथाय ॥२३४
ये सुखे विह्वल अज अनन्त शङ्कर ।
हेन रसे भासे सर्व नदीयानगर ॥२३५
गङ्गातीरेतीरे प्रभु वैकुण्ठेर राय ।
साङ्गोपाङ्ग अस्त्र पारिषदे नाचि याय ॥२३६
पृथिवीर आनन्दे नाहिक समुच्चय ।
आनन्दे हइला सर्वदिग पथमय ॥२३७
तिल मात्र अनाचार हेन भूमि नाञि ।
परम उद्यान हैल सर्व ठाञि ठाञि ॥२३८
नाचिया यायेन प्रभु गौराङ्गसुन्दर ।
बेढ़िया गायेन चतुर्द्दिगे अनुचर ॥२३९
"तुया चरणे मन लागहुँ रे सारङ्गधर !
तुया चरणे मन लागहुँ रे ॥"२४०

चैतन्यचन्द्रेर एइ आदि सङ्कीर्त्तन।
भक्तगण गाय, नाचे श्रीशचीनन्दन ॥२४१
कीर्त्तन करेन सभे ठाकुरेर सने।
कोन् दिके याइ इहा केहो नाहि जाने ॥२४२
लक्ष कोटि लोके ये करये हरिध्वनि।
ब्रह्माण्ड भेदये येन हेनमत शुनि ॥२४३
ब्रह्मलोक शिवलोक वैकुण्ठ पर्य्यन्त।
कृष्णसुखे पूर्ण हैल नाहि तार अन्त ॥२४४
सर्पार्षदे सर्वदेव आइला देखिते।
देखिया मूर्च्छित हैला सभार सहिते ॥२४५
चैतन्य पाइया क्षणे सर्वदेवगण।
नर रूपे मिशाइया करये कीर्त्तन ॥२४६
अज, भव, कुबेर, बरुण, देवराज।
यम, सोम आदि यत देवेर समाज ॥२४७
ब्रह्मसुख स्वरूप अपूर्व देखि रङ्ग।
सभे हैला नररूपे चैतन्येर सङ्ग ॥२४८
देवे नरे एकत्र हइया हरि बोले।
आकाश पूरिया सब महा-द्वीप ज्वले ॥२४९
कदलक बृक्ष प्रति दुयारे दुरारे।
पूर्ण-घट धान्य दूर्वा दीप आम्रसारे ॥२५०
नदीयार सम्पत्ति बर्णिते शक्ति कार।
असङ्ख्य नगर घर चत्वर बाजार ॥२५१
एको जाति लोक याथे अर्वुद अर्वुद।
इहा सङ्ख्या करिबेक केमन अबुध ॥२५२
अवतरिबेन प्रभु जानिया विधाता।
सकल सम्पूर्ण करि थुइलेन तथा ॥२५३
स्त्रीये यत जयकार दिया बोले हरि।
ताहि लक्ष वत्सरेओ बर्णिते ना पारि ॥२५४
ये सब देखये प्रभु नाचिया याइते।
तारा आर चित्तवृत्ति ना पारे धरिते ॥२५५
से कारुण्य देखिते, से क्रन्दन शुनिते।
परम लम्पट पड़े कान्दिया भूमिते ॥२५६
बोल बोल बलि नाचे गौराङ्गसुन्दर।
सर्व अङ्गे शोभे माला अति मनोहर ॥२५७
यज्ञसूत्र त्रिकच्छ बसन परिधान।
धूलाय धूसर प्रभु कमल नयान ॥२५८
मन्दाकिनी हेन प्रेम धारेर गमन।
चान्देरे ना लय मन देखि से वदन ॥२५९
सुन्दर नासाते बहे अविरत धार।
अतिक्षीण देखि येन मुकुतार हार ॥२६०
सुन्दर चाँचर केश-बिचित्र बन्दन।
तहिँ मालतीर माला अति सुशोभन ॥२६१
'जनमजनम प्रभु! देह' एइ दान।
हृदये रहुक एइ केलि अबिराम ॥२६२
एइमत बर मागे सकल भुवन।
नाचिया यायेन प्रभु श्रीशचीनन्दन ॥२६३
प्रियतम सब आगे नाचिनाचि याय।
आपने नाचये पाछे वैकुण्ठेर राय ॥२६४
चैतन्यप्रभु से भक्त बाढ़ाइते जाने।
येन करे भक्त तेन करे आपने ॥२६५
एइमत महाप्रभु नाचिते नाचिते।
सभार सहित आइसेन गङ्गापथे ॥२६६
वैकुण्ठनायक नाचे सर्व नदीयाय।
चतुर्द्दिके भक्तगण पुण्य कीर्त्ति गाय ॥२६७
हरि बोल मुगधा! गोविन्द बोल रे।
याहे नाहि हय शमन भय रे॥ ध्रु॥
एइ सब कीर्त्तने नाचेन गौरचन्द्र।
ब्रह्मादि सेवये यार पादपद्मद्वन्द्व ॥२६८

पाहिड़ा (राग)।

नाचे विश्वम्भर, वैकुण्ठ ईश्वर,
भागीरथी तीरे तीरे।
यार पदधूली, हइ कुतूहली,
सभेइ धरये शिरे ॥२६६
शिव शिव नाचे विश्वम्भर ॥ध्रु॥
अपूर्व विकार, नयने सु-धार,
हुङ्कार गर्जन शुनि।
हासिया हासिया, श्रीभुज तुलिया,
बोले हरि हरि वाणी ॥२७०
मदन सुन्दर, गौर कलेवर,
दिव्य वास परिधान।
चाँचर चिकुरे, माला मनोहरे,
येन देखि पाँचवाण ॥२७१
चन्दन चर्चित, श्रीअङ्ग शोभित,
गले दोले वनमाला।
ढुलिया पड़ये, प्रेमे थिर नहे,
आनन्दे शचोर बाला ॥२७२
काम-शराशन, भ्रू युग पत्तन,
भाले मलयज बिन्दु।
मुकुता दशन, श्रीयुत वदन,
प्रकृति करुणासिन्धु ॥२७३
क्षणे शतशत, बिकार अद्भुत,
कत करिब निश्चय।
अश्रु कम्प घर्म, पुलक वैवर्ण्य,
ना जानि कतेक हय ॥२७४
त्रिभङ्ग हइया, कबहुँ रहिया,
अङ्गुली मुरली बा'य।
जिनि मत्त गज, चलइ सहज,
देखि नयन जुड़ाय ॥२७५

अति मनोहर, यज्ञ सूत्र वर,
सदय हृदये शोभे।
ए बुझि अनन्त, हआ गुणवन्त,
रहल परश लोभे ॥२७६
नित्यानन्दचान्द, माधव नन्दन,
शोभा करे दुइ पाशे।
यत प्रियगण, करये कीर्त्तन,
सभा चाहि चाहि हासे ॥२७७
याहार कीर्त्तन, करि अनुक्षण,
शिव दिगम्बर भेला।
से प्रभु बिहरे, नगरे नगरे,
करिया कीर्त्तन खेला ॥२७८
ये करे ये केश, ये अङ्गे ये बेश,
कमला लालन करे।
से प्रभु धूलाय, गड़ागड़ि याय,
प्रति नगरे नगरे ॥२७९
लाख कोटि दीपे, चान्देर आलोके,
ना जानि कि भेल सुखे।
सकल संसार, हरि बइ आर,
किछु ना बोलइ मुखे ॥२८०
अपूर्व कौतुक, देखि सर्व लोक,
आनन्द हइल भोर।
सभेइ सभार, चाहिया वदन,
बोले भाइ हरि बोल ॥२८१
प्रभुर आनन्द, जाने नित्यानन्द,
यखन ये रूप हय।
पड़िबार बेले, दुइ बाहु मेले,
येन अङ्गे प्रभु रय ॥२८२
नित्यानन्द धरि, बीरासन करि,
क्षणे महाप्रभु वैसे।

बामकक्षे तालि, दिया कुतूहली,
हरि हरि बलि हासे ॥२८३
अकपटे क्षणे, कहये आपने,
मुञि देव नारायण ।
कंस अरि मारि, मुञि से कंसारि,
बलि छलिया वामन ॥२८४
सेतु बन्ध करि, राघब संहारि,
मुञि से राघब राय ।
करिया हुङ्कार, तत्त्व आपनार,
कहि चारिदिगे चा'य ॥२८५
के बुझे से तत्त्व, अचिन्त्य महत्त्व,
सेइक्षणे कहे आन ।
दन्ते तृण धरि, प्रभुप्रभु बलि,
मागये भक्ति दान ॥२८६
यखने ये करे, गौराङ्गसुन्दरे,
सब मनोहर लीला ।
आपन वदने, आपन चरणे,
अङ्गुलि धरिया खेला ॥२८७
वैकुण्ठ ईश्वर, प्रभु विश्वम्भर,
सब नवद्वीपे नाचे ।
श्वेतद्वीप नाम, नवद्वीप ग्राम,
वेदे प्रकाशिब पाछे ॥२८८
मन्दिरा मृदङ्ग, करताल शङ्ख,
ना जानि कतेक बाजे ।
महा हरिध्वनि, चतुर्द्दिगे शुनि,
माझे शोभे द्विजराजे ॥२८९
जय जय जय, नगर कीर्त्तन,
जय विश्वम्भर नृत्य ।
विंश पद गीत, चैतन्य चरित,
जय चैतन्येर भृत्य ॥२९०
येइ दिगे चाय, विश्वम्भर राय,
सेइ दिगे प्रेमे भासे ।
श्रीकृष्णचैतन्य, नित्यानन्दचान्द,
गाय वृन्दावनदासे ॥२९१
शिव नाचे विश्वम्भर ।
अतिसुमङ्गलं शिवशिवोच्चारणम् ॥२९२
हेन महा रङ्गे प्रति नगरेनगर ।
कीर्त्तन करेन सर्वलोकेर ईश्वर ॥२९३
अविच्छिन्न हरिध्वनि सर्वलोके करे ।
ब्रह्माण्ड भेदिया ध्वनि याय वैकुण्ठेरे ॥२९४
शुनिया वैकुण्ठनाथ प्रभु विश्वम्भर ।
सन्तोषे पूर्णित हय सब कलेवर ॥२९५
पुनःपुन बोल बोल बोले विश्वम्भर ।
उल्लासे उठये प्रभु आकाश उपर ॥२९६
मत्त सिंह जिनि कत तरङ्ग प्रभुर ।
देखिते सभार हर्ष बाढ़ये प्रचुर ॥२९७
गङ्गातीरेतीरे पथ आछे नदीयाय ।
आगे सेइ पथे नाचि याय गौरराय ॥२९८
आपनार घाटे आगे बहु नृत्य करि ।
तबे माधाइर घाटे गेला गौरहरि ॥२९९
बारकोना घाटे नगरिया घाटे गिया ।
गङ्गार नगर दिया गेला सिमुलिया ॥३००
लक्ष कोटि महा-दीप चतुर्द्दिगे ज्वले ।
लक्ष कोटि लोक चतुर्द्दिगे हरि बोले ॥३०१
चन्द्रेर आलोक अति अपूर्व देखिते ।
दिबानिशि एको केहो नारे निश्चयिते ॥३०२
सकल दुयारे शोभा करे सुमङ्गले ।
रम्भा पूर्ण-घट आम्रसार दीप ज्वले ॥३०३
अन्तरीक्षे थाकि यत स्वर्ग देवगण ।
चम्पक मल्लिकापुष्प करे बरिषण ॥३०४

…वृष्टि हैल नवद्वीप वसुमती ।
…रूपे जिह्वार से करिल उन्नति ॥३०५
…कुमार पदाम्बुज प्रभुर जानिया ।
जिह्वा प्रकाशिला देवी पुष्प रूप हञा ॥३०६
…गे नाचे अद्वैत श्रीवास हरिदास ।
…छे नाचे गौरचन्द्र सभार उल्लास ॥३०७
… नगरे प्रवेश करये गौरराय ।
…ह बित्त परिहरि शुनि लोक धाय ॥३०८
…खिया से चन्द्रमुख जगतजीवन ।
दण्डवत हइया पड़ये सर्वजन ॥३०९
नारीगण हुलाहुली दिया बोले हरि ।
स्वामी पुत्र गृह बित्त सकल पासरि ॥३१०
अर्बुद अर्वुद नगरिया नदीयार ।
…ष्ण रस उन्माद हैल सभाकार ॥३११
केहो नाचे गाय केहो बोले हरिहरि ।
केहो गड़ागड़ि याय आपना पासरि ॥३१२
केहो केहो नानामत बाद्य बाय मुखे ।
केहो कारो कान्धे उठे परानन्दसुखे ॥३१३
केहो कारो चरण धरिया पड़िया कान्दे ।
केहो कारो चरण आपन केशे बान्धे ॥३१४
केहो दण्डवत हय काहारो चरणे ।
केहो कोलाकोली बा करये कारो सने ॥३१५
केहो बोले मुञि एइ निमाञि पण्डित ।
जगत उद्धार लागि हइलुँ बिदित ॥३१६
केहो बोले आमि श्वेतद्वीपेर वैष्णव ।
केहो बोले आमि वैकुण्ठेर पारिषद ॥३१७
केहो बोले एबे काजि बेटा गेल कोथा ।
नागालि पाइले आजि चूर्ण करों माथा ॥३१८
पाषण्डी धरिते केहो रड़ दिया याय ।
घर घर एइ पाप पाषण्डी पलाय ॥३१९
बृक्षेर उपरे गिया केहो केहो चढ़े ।
यूथेयूथे केहो केहो लाफ दिया पड़े ॥३२०
पाषण्डीरे क्रोध करि केहो भाङ्गे डाल ।
केहो बोले एइ मुञि पाषण्डीर काल ॥३२१
अलौकिक शब्द केहो उच्च करि बोले ।
यमराजा बान्धिया आनिते केहो चले ॥३२२
एइ खाने थाकि बोले आरे यमदूत !
बोल गिया यथा तोर आछे सूर्य्यसुत ॥३२३
वैकुण्ठनायक अवतरि शची घरे ।
आपने कीर्त्तन करे नगरेनगरे ॥३२४
ये नाम प्रभावे तोर धर्मराज यम ।
ये नामे तरिल अजामिल विप्राधम ॥३२५
हेन नाम सर्वमुखे प्रभु बोलाइल ।
उच्चारणे शक्ति नाहि से ताहा शुनिल ॥३२६
प्राणिमात्र केहो यदि कर अधिकार ।
मोर दोष नाहि तबे करिमु संहार ॥३२७
झाट कह गिया यथा आछे चित्रगुप्त ।
पापिर लिखन सब झाट करु लुप्त ॥३२८
ये नाम प्रभावे तीर्थराज बाराणसी ।
याहा गाय शुद्धसत्त्व श्वेतद्वीपवासी ॥३२९
सर्व बन्द्य महेश्वर ये नाम प्रभावे ।
हेन नाम सर्वलोके शुने बोले एबे ॥३३०
हेन नाम लओ, छाड़ पर अपकार ।
भज विश्वम्भर नहे करिमु संहार ॥३३१
आर जन दश बिशे रड़ दिय याय ।
धरधर कोथा काजि भाण्डिया पलाय ॥३३२
कृष्णेर कीर्त्तन ये ये पापि नाहि माने ।
कोथा गेल से सकल पाषण्डी एखने ॥३३३
माटिते किलाय केहो पाषण्डी बलिया ।
हरि बलि बुले पुन हुङ्कार करिया॥३३४

एइमत कृष्णेर उन्मादे सर्वक्षण ।
किबा बोले किबा करे नाहिक स्मरण ॥३३५
नगरिया सकलेर उन्माद देखिया ।
मरये पाषण्डी सब ज्वलिया पुड़िया ॥३३६
सकल पाषण्डी मेलि गणे मनेमने ।
गोसाञि करेन काजि आइसे एखने ॥३३७
कोथा याय रङ्ग ढङ्ग कोथा याय डाक ।
कोथा याय नाट गीत कोथा याय जाँक ॥३३८
कोथा याय कला पोँता घट आम्रसार ।
ए सकल बचनेर शुधि तबे धार ॥३३९
यत देख महाताप देउटी सकल ।
यत देख हेर सब भावक मण्डल ॥३४०
गण्डगोल शुनिया आइसे काजि यबे ।
सभार गङ्गार झाप देखिवाङ तबे ॥३४१
केहो बोले मुञि तबे कुलिते थाकिया ।
नगरिया सब देङ गलाय बान्धिया ॥३४२
केहो बोले चल याइ काजिरे कहिते ।
केहो बोले युक्त नहे एमत करिते ॥३४३
केहो बोले भाइसब ! एक युक्ति आछे ।
सभे रड़ दिया याइ भावकेर काछे ॥३४४
आइसे करिया काजि बचन तोलाइ ।
तबे एकजनाओ ना रहिब एक ठाँइ ॥३४५
एइमत पाषण्डी आपना खाय मने ।
चैतन्येर गण मत्त श्रीहरिकीर्त्तने ॥३४६
सभार अङ्गेते शोभे श्रीचन्दन माला ।
आनन्दे गायेन कृष्ण सभे हइ भोला ॥३४७
नदीयार एकान्त नगर सिमुलिया ।
नाचिते नाचिते प्रभु उत्तरिला गिया ॥३४८
अनन्त अर्बुद हरि हरि ध्वनि शुनि ।
हुङ्कार करिया नाचे द्विज कुल मणि ॥३४९

से कमल नयने बा कत आछे जल ।
कतक बा धारा बहे परम निर्मल ॥३५०
कम्प भावे उठे पड़े अन्तरीक्ष हैते ।
कान्दे नित्यानन्द प्रभु ना पारे धरिते ॥३५१
शेषे बा हय मूर्च्छा आनन्द सहित ।
प्रहरेक धातु नाहि सबे चमकित ॥३५२
एइमत अपूर्व देखिया सर्वजन ।
सभेइ बोलेन "ए पुरुष नारायण ॥" ३५३
केहो बोले नारद प्रह्लाद शुक येन ।
केहो बोले ये ते हउ मनुष्य नहेन ॥३५४
एइमत बोले येन यार अनुभव ।
अत्यन्त तार्किक बोले परम वैष्णव ॥३५५
वाह्य नाहि प्रभुर परम भक्ति रसे ।
बाहु तुलि हरि बोल हरि बोल घोषे ॥३५६
श्रीमुखेर बचन शुनिया एकबारे ।
सर्वलोके हरिध्वनि बोले उच्चस्वरे ॥३५७
गौराङ्गसुन्दर याये ये दिगे नाचिया ।
सेइ दिगे सर्वलोके चलये धाइया ॥३५८
काजिर बाड़ीर पथ धरिला ठाकुर ।
बाद्य कोलाहल काजि शुनये प्रचुर ॥३५९
काजी बोले जान भाइ कि गीत बाजन ।
किबा कारो विभा किबा भूतेर कीर्त्तन ॥३६०
मोर बोल लङ्घिया के करे हिन्दुयानि ।
झाट जानि आइस तबे चलिब आपनि ॥३६१
काजिर आदेशे तार अनुचर धाय ।
समृद्ध देखिया आपनार शास्त्र गाय ॥३६२
अनन्त अर्बुद लोक बोले काजि मार ।
डरे फेलाइल तबे बेष्टन माथार ॥३६३
रड़ दिया काजिरे कहिल झाट गिया ।
कि कर चलह झाट याइ पलाइया ॥३६४

कोटि कोटि लोक सङ्गे निमाञिआचार्य्य ।
नाचिया आइसे आजि किबा करे कार्य्य ॥३६५
लक्षलक्ष महाताप देउटी सब ज्वले ।
कोटि कोटि लोक मेलि हिन्दुयानि बोले ॥३६६
दुयारे दुयारे कला घट आम्रसार ।
पुष्पमय पथ सब देखि नदीयार ॥३६७
ना जानि कतेक खइ कड़ि फुल पड़े ।
गर्जन शुनिते दुइ श्रबण उफड़े ॥३६८
एमत नदीयार प्रति घरे घरे ।
राजा आसितेओ केहो एमत ना करे ॥३६९
ए भावकेर बड़ निमाञिपण्डित ।
आजि चले से नाचिया याये येइ भित ॥३७०
ए सकल नगरिया मारिल आमरा ।
आजि काजि मार बलि आइसे ताहारा ॥३७१
ओ ये हुङ्कार करे निमाञि आचार्य्य ।
ए वा हिन्दुर भूत ये ताहार कार्य्य ॥३७२
केहो बोले वामना एतेक कान्दे केने ।
वामनेर दुइ चक्षे नदी बहे येने ॥३७३
केहो बोले वामन आछाड़ यत खाय ।
एइ दुःखे कान्दे हेन बुझिये सदाय ॥३७४
केहो बोले वामन देखिते लागे भय ।
गिलिते आइसे येन, देखि कम्प हय ॥३७५
काजि बोले हेन बुझि निमाञिपण्डित ।
बिभा करिबारे बा चलिला कोन भित ॥३७६
एबा नहे मोरे लङ्घि हिन्दुयानि करे ।
तबे जाति निमु आजि सभार नगरे ॥३७७
एमन युक्ति काजि करे सर्व गणे ।
महावाद्य कोलाहल शुनि ततक्षणे ॥३७८
त्रैलोकचूड़ामणि प्रभु विश्वम्भर ।
आइला नाचिते यथा काजिर नगर ॥३७९

कोटिकोटि हरिध्वनि महाकोलाहल ।
स्वर्ग मर्त्य पातालादि पूरिल सकल ॥३८०
शुनिया कम्पित काजि गण सहे धाय ।
सर्प भये येन भेक इन्दुर पलाय ॥३८१
पूरिल सकल स्थान विश्वम्भर गणे ।
भये पलाइते केहो दिग नाहि जाने ॥३८२
माथार फेलिया पाग केहो सेइ मेले ।
अलक्षिते नाचये अन्तरे प्राण हाले ॥३८३
यार दाड़ि आछे से हइया अधोमुख ।
नाचे माथा नाहि तोले डरे हाले बुक ॥३८४
अनन्त अर्बुद लोक के बा कारे चिने ।
आपनार देहमात्र केहो नाहि जाने ॥३८५
सभेइ नाचेन सभे गायेन कौतुके ।
ब्रह्माण्ड पूरिया हरि बोले सर्वलोके ॥३८६
आसिया काजिर द्वारे प्रभु विश्वम्भर ।
क्रोधाबेशे हुङ्कार करये बहुतर ॥३८७
क्रोधे बोले प्रभु आरे काजि बेटा कोथा ।
झाट आन धरिया काटिया फेलों माथा ॥३८८
निर्यबन करों आजि सकल भुवन ।
पूर्वे येन बध कैलुँ से कालयवन ॥३८९
प्राण लञा कोथा काजि गेल दिया द्वार ।
घर भाङ्ग भाङ्ग प्रभु बोले बारेबार ॥३९०
सर्वभूत अन्तर्यामी श्रीशचीनन्दन ।
आज्ञा लङ्घिबेक हेन आछे कोन् जन ॥३९१
महामत्त सर्वलोक चैतन्य आवेशे ।
घरे उठिलेन सभे प्रभुर आदेशे ॥३९२
केहो घर भाङ्गे केहो भाङ्गये दुयार ।
केहो लाथि मारे केहो करये हुङ्कार ॥३९३
आम्र पनसेर डाल केहो भाङ्गि फेले ।
कदलक वन भाङ्गि केहो हरि बोले ॥३९४

पुष्पेर उद्याने लक्षलक्ष लोक गिया ।
उपाड़िया फेले सब हुङ्कार करिया ॥३९५
पुष्पेर सहित डाल छिण्डिया छिण्डिया ।
हरि बलि नाचे सब श्रुतिमूले दिया ॥३९६
एकटि करिया पत्र सर्व लोके निते ।
किछु ना रहिल आर काजिर बाड़ीते ॥३९७
भाङ्गिलेन सब यत बाहिरेर घर ।
प्रभु बोले अग्नि देह बाड़ीर भितर ॥३९८
पुड़िया मरुक सर्व गणेर सहिते ।
सर्व बाड़ी बेढ़ि अग्नि देइ चारिभिते ॥३९९
देखोँ मोरे कि करे उहार नरपति ।
देखोँ आजि कोन् जने करे अव्याहति ॥४००
यम काल मृत्यु—मोर सेवकेर दास ।
मोर दृष्टिपाते हय सभार प्रकाश ॥४०१
सङ्कीर्त्तन आरम्भे मोहोर अवतार ।
कीर्त्तन बिरोधि पापी करिमु संहार ॥४०२
सर्वपातकीओ यदि करये कीर्त्तन ।
अबश्य ताहार मुञि करिमु स्मरण ॥४०३
तपस्वी सन्न्यासी ज्ञानी योगी ये ये जन ।
संहारिमु सब यदि ना करे कीर्त्तन ॥४०४
अग्नि देह घरे तोरा ना करिह भय ।
आजि सब यबनेर करिमु प्रलय ॥४०५
देखिया प्रभुर क्रोध सर्वभक्तगण ।
गलाय बान्धिया बस्त्र पड़िला तखन ॥४०६
ऊर्द्ध्वबाहु करिया सकल भक्तगण ।
प्रभुर चरणारबिन्दे करे निबेदन ॥४०७
तोमार प्रधान अंश प्रभु सङ्कर्षण ।
अकाले ताँहार क्रोध ना हय कखन ॥४०८
ये काले हइब सर्वसृष्टिर संहार ।
सङ्कर्षण क्रोधे हये रुद्र अवतार ॥४०९
ये रुद्र सकल सृष्टि क्षणेके संहरे ।
शेषे तिँहो आसि मिले तोमार शरीरे ॥४१०
अंशांशेर क्रोधे यार सकल संहरे ।
से तुमि करिले क्रोध कोन्‌जन तरे ॥४११
अक्रोध परमानन्द तुमि वेदे गाय ।
वेदवाक्य प्रभु घुचाइते ना जुयाय ॥४१२
ब्रह्मादिओ तोमार क्रोधेर नहे पात्र ।
सृष्टि स्थिति प्रलय तोमार लीला मात्र ॥४१३
करिला त काजिर अनेक अपमान ।
आर यदि घटे तबे संहारिब प्राण ॥४१४
जय विश्वम्भर महाराजराजेश्वर ।
जय सर्वलोकनाथ श्रीगौरसुन्दर ॥४१५
जयजय अनन्तशयन रमाकान्त ।
बाहु तुलि स्तुति करे सकल महान्त ॥४१६
हासे महाप्रभु सर्वदासेर बचने ।
हरि बलि नृत्यरसे चलिला तखने ॥४१७
काजिरे करिया दण्ड सर्व लोक राय ।
सङ्कीर्त्तनरसे सर्व गणे नाचि याय ॥४१८
मृदङ्ग मन्दिरा बाजे शङ्ख करताल ।
राम कृष्ण जय ध्वनि गोविन्द गोपाल ॥४१९
काजिर भाङ्गिया घर सर्व नगरिया ।
महानन्दे हरि बलि यायेन नाचिया ॥४२०
पाषण्डीर हइल परम चित्तभङ्ग ।
पाषण्डी बिषाद भाबे वैष्णवेर रङ्ग ॥४२१
"जय कृष्ण मुकुन्द मुरारि वनमाली ।"
गाय सब नगरिया दिया करताली ॥४२२
जय कोलाहल प्रति नगरे नगरे ।
भासये सकल लोक आनन्दसागरे ॥४२३
के बा कोन्‌दिगे नाचे के बा गाय बा'य ।
हेन नाहि जानि कोन्‌दिगे के बा धाय ॥४२४

...ते नृत्य करिया चलये भक्तगण ।
...े चले महाप्रभु कमललोचन ॥४२५
...र्तनीया ब्रह्म शिव अनन्त आपनि ।
...त्य करे सर्व वैकुण्ठेर चूड़ामणि ॥४२६
...हाते सन्देह किछु ना करिह मने ।
...इ प्रभु कहियाछे कृपाय आपने ॥४२७
...नन्त अर्वुद लोके सङ्गे विश्वम्भर ।
...वेश करिला शङ्खवणिक नगर ॥४२८
...ङ्खवणिकेर पुरे उठिल आनन्द ।
...रि बलि बाजाय मृदङ्ग घण्टा शङ्ख ॥४२९
...मय पथे नाचि चले विश्वम्भर ।
...तुर्दिगे ज्वले दीप परम सुन्दर ॥४३०
...चन्द्रेर शोभाओ कि कहिबारे पारि ।
...हाते कीर्त्तन करे गौराङ्ग श्रीहरि ॥४३१
...तिद्वारे पूर्णकुम्भ रम्भा आम्रसार ।
...नारीगणे हरि बलि देइ जयकार ॥४३२
...हेमत सकल नगरे शोभा करे ।
...इला ठाकुर तन्त्रवायेर नगरे ॥४३३
...ठिल मङ्गलध्वनि जयकोलाहल ।
...न्त्रवाय सब हैला आनन्दे विह्वल ॥४३४
...गे सब नगरिया दिया करताली ।
...रि बोल मुकुन्द गोपाल वनमाली ॥४३५
...मुखे हरिनाम शुनि प्रभु हासे ।
...चिया चलिला प्रभु श्रीधरेर वासे ॥४३६
...ङ्गा एक घर मात्र श्रीधरेर सार ।
...लिला गिया प्रभु ताहार दुयार ॥४३७
...े एक लौहपात्र आछये दुयारे ।
...ठाञि तालि ताहा चोरेओ ना हरे ॥४३८
...ृत्य करे महाप्रभु श्रीधर अङ्गने ।
...पूर्ण पात्र प्रभु देखिला आपने ॥४३९

भक्तप्रेम बुझाइते श्रीशचीनन्दन ।
लौहपात्र तुलि लइलेन ततक्षण ॥४४०
जल पिये महाप्रभु सुखे आपनार ।
कार् शक्ति आछे ताहा नय करिबार ॥४४१
मइलुँ मइलुँ बलि डाकये श्रीधर ।
मोरे संहारिते से आइला मोर घर ॥४४२
बलिया मूर्च्छित हैला सुकृति श्रीधर ।
प्रभु बोले शुद्ध मोर आजि कलेवर ॥४४३
आजि मोर भक्ति हैल कृष्णेर चरणे ।
श्रीधरेर जलपान करिलुँ यखने ॥४४४
एखने से विष्णुभक्ति हइल आमार ।
कहिते कहिते पड़े नयने सु-धार ॥४४५
वैष्णवेर जल पाने विष्णुभक्ति हय ।
सभारे बुझाय प्रभु गौराङ्ग सदय ॥४४६

तथाहि पद्मपुराणे—आदिखण्डे (३१।११२)

प्रार्थयेद् वैष्णवस्यान्नं प्रयत्नेन विचक्षणः ।
सर्वपापविशुद्धयर्थं तदभावे जलं पिवेत् ॥४४७

अनुवाद ।

विचक्षण व्यक्ति, समस्त पापों से अपने को मुक्त करनेके निमित्त परम आदर से वैष्णव के समीप में अन्न प्रार्थना करे, अथवा वैष्णव के निकट से जलपान करे ।

भकतवात्सल्य देखि सर्वभक्तगण ।
सभार उठिल महा आनन्द क्रन्दन ॥४४८
नित्यानन्द गदाधर पड़िला कान्दिया ।
अद्वैत श्रीवास कान्दे भूमिते पड़िया ॥४४९
कान्दे हरिदास गङ्गादास वक्रेश्वर ।
मुरारि मुकुन्द कान्दे श्रीचन्द्रशेखर ॥४५०
गोविन्द गोविन्दानन्द श्रीगर्भ श्रीमान् ।
कान्दे काशीश्वर श्रीजगदानन्द राम ॥४५१

जगदीश गोपीनाथ कान्देन नन्दन ।
शुक्लाम्बर गरुड़ कान्दे सर्वजन ॥४५२
लक्ष कोटि लोक कान्दे शिरे दिया हाथ ।
कृष्णरे ठाकुर मोर अनाथेर नाथ ॥४५३
कि हैल बलिते नारि श्रीधरेर वासे ।
सर्वभावे प्रेमभक्ति हइल प्रकाशे ॥४५४
कृष्ण बलि कान्दे सर्वजगत हरिषे ।
सङ्कल्प हइल सिद्ध गौरचन्द्र हासे ॥४५५
देख सब भाइ ! एइ भक्तेर महिमा ।
भक्तवात्सल्येर प्रभु करिलेन सीमा ॥४५६
लौहमय जलपात्र बाहिरेर जल ।
परम आदरे पान कैलेन सकल ॥४५७
परमार्थे पान इच्छा हइल यखने ।
शुद्धामृत भक्त जल हइल तखने ॥४५८
भक्ति बुझाइते एमन पात्रे जल ।
परमार्थे वैष्णवेर सकल निर्मल ॥४५९
दाम्भिकेर रत्नपात्र दिव्य जल सने ।
आछुक पिवार कार्य्य ना देखे नयने ॥४६०
ये से द्रव्य सेवकेर सर्वभावे खाय ।
नैवेद्यादि विधिरो अपेक्षा नाहि चाय ॥४६१
अल्प देखि दासे ना दिलेओ बले खाय ।
तार साक्षी ब्राह्मणेर क्षुद द्वारकाय ॥४६२
अबशेषे सेवकेर करे आतमसाथ ।
तार साक्षी वनवासे युधिष्ठिर शाक ॥४६३
सेवक कृष्णेर पिता माता पत्नी भाइ ।
दास बइ कृष्णेर द्वितीय आर नाइ ॥४६४
ये रूप चिन्तये दासे सेइ रूप हय ।
दासे कृष्ण करिबारे पारये बिक्रय ॥४६५
सेवकवत्सल प्रभु चारिवेदे गाय ।
सेबकेर स्थाने प्रभु प्रकाश सदाय ॥४६६
नयन भरिया देख दासेर प्रभाव ।
हेन दास्यभावे कृष्णे कर अनुराग ॥४६७
अल्प हेन ना मानिह कृष्णदास नाम ।
अल्प भाग्ये दास नाहि करे भगवान् ॥४६८
बहु कोटि जन्म ये करिल निज धर्म ।
अहिंसाय अमायाय करे सर्व कर्म ॥४६९
अहर्निश दास्यभावे ये करे प्रार्थन ।
गङ्गा लभ्य हय काले बलि नारायण ॥४७०
तबे हय मुक्त सर्वबन्धेर बिनाश ।
मुक्त हैले सेइ हय गोविन्देर दास ॥४७१
एइ व्याख्या करे भाष्यकारेर समाजे ।
मुक्त सब लीलातनु करि कृष्ण भजे ॥४७२

तथाचोक्तं सर्वज्ञैर्भाष्यकृद्भिः—
"मुक्ता अपि लीलया विग्रहं कृत्वा भगवन्तं भजन्ते ॥"४७३

अनुवाद ।

मुक्त पुरुषगण भी स्वेच्छा से शरीर ग्रहण पूर्वक भगवान् का भजन करते हैं ।

अतएब भक्त हय ईश्वर समान ।
भक्तस्थाने पराभब मागे भगवान् ॥४७४
अनन्त ब्रह्माण्डे यत आछे स्तुतिमाला ।
भक्त हेन स्तुतिर ना धरे केहो कला ॥४७५
दास नामे ब्रह्मा शिव हरिष सभार ।
धरणीधरेन्द्रो चाहे दास अधिकार ॥४७६
ए सब ईश्वर तुल्य स्वभावेइ भक्त ।
तथापिह भक्त हइबारे अनुरक्त ॥४७७
हेन भक्त अद्वैतेरे बलिते हरिषे ।
पापी सब दुःख पाय निज कर्म दोषे ॥४७८
कृष्णेर सन्तोष बड़ भक्त हेन नामे ।
कृष्णचन्द्र बइ भक्ति आर केबा जाने ॥४७९

उदर भरण लागि एबे पापी सब ।
लओयाय ईश्वर आमि मूले जरद्‌गव ॥४८०
गर्द्दभ शृगाल तुल्य शिष्यगण लैया ।
केहो बोले आमि रघुनाथ भाव गिया ॥४८१
कुक्कुरेर भक्ष्य देह इहारे लइया ।
बोलाय ईश्वर विष्णुमायामुग्ध हैया ॥४८२
सर्व प्रभु गौरचन्द्र श्रीशचीनन्दन ।
देख ताँर शक्ति एइ भरिया नयन ॥४८३
इच्छामात्र कोटिकोटि समृद्ध हइल ।
कत कोटि महादीप ज्वलिते लागिल ॥४८४
के बा रुइलेक कला प्रतिघरे घरे ।
के बा गाय बाय के बा पुष्पवृष्टि करे ॥४८५
करिलेन मात्र श्रीधरेर जलपान ।
कि हइल ना जानि प्रेमेर अधिष्ठान ॥४८६
भकतवात्सल्य देखि त्रिभुवन कान्दे ।
भुमिते लोटाय केहो केश नाहि ना बान्धे ॥४८७
श्रीधर कान्दये तृण धरिया दशने ।
उच्च करि हरि बोले सजल नयने ॥४८८
कि जल करिल पान त्रिदशेर राय ।
नाचये श्रीधर कान्दे करे हाय हाय ॥४८९
भक्तजल पान करि प्रभु विश्वम्भर ।
श्रीधर अङ्गने नाचे वैकुण्ठ ईश्वर ॥४९०
प्रियगणे चतुर्दिगे गाय प्रेम रसे ।
नित्यानन्द गदाधर शोभे दुइ पाशे ॥४९१
खोलावेचा सेवकेर देख भाग्य सीमा ।
ब्रह्मा शिव कान्दे यार देखिया महिमा ।।४९२
धनेजने पाण्डित्ये कृष्णेरे नाहि पाइ ।
केवल भक्तिर बश चैतन्यगोसाञि ॥४९३
जलपाने श्रीधरेरे अनुग्रह करि ।
नगरे आइला पुन गौराङ्ग श्रीहरि ॥४९४

नाचे गोरचन्द्र भक्तिरसेर ठाकुर ।
चतुर्द्दिगे हरिध्वनि शुनिये प्रचुर ॥४९५
सर्व लोक जिने नवद्वीपेर शोभाय ।
हरि बोल शुनि मात्र सभार जिह्वाय ॥४९६
ये सुखे विह्वल शुक नारद शङ्कर ।
से सुखे विह्वल सब नदीया नगर ॥४९७
सर्व नदीयाय नाचे त्रिभुवन राय ।
गादिगाछा पारडाङ्गा आदि दिया याय ॥४९८
एक निशा हेन ज्ञान ना करिह मने ।
कत कल्प गेल सेइ निशिर कीर्त्तने ॥४९९
चैतन्यचन्द्रेर किछु असम्भब नय ।
भ्रूभङ्गे याहार हय ब्रह्मार प्रलय ॥५००
महाभाग्यवाने से ए सब तत्त्व जाने ।
सूक्ष्म तर्कबादी पापी किछुइ ना माने ॥५०१
ये नगरे नाचे वैकुण्ठेर अधिराज ।
ताहारा भासये परानन्द सिन्धु माझ ॥५०२
से हुङ्कार से गर्जन से प्रेमेर जल ।
देखिया कान्दये स्त्री पुरुष सकल ॥५०३
केहो बोले शचीर चरणे नमस्कार ।
हेन महापुरुष जन्मिला गर्भे याँर ॥५०४
केहो बोले जगन्नाथमिश्र पुण्यवन्त ।
केहो बोले नदीयार भाग्येर नाहि अन्त ॥५०५
एइमत बलि सभे देइ जयकार ।
सर्वलोक हरि बइ ना बोलये आर ५०६
प्रभु देखि सर्वलोक दण्डवत हैया ।
पड़ये पुरुष स्त्रीये बालक लइया ॥५०७
शुभदृष्टि गौरचन्द्र करिया सभारे
स्वानुभाबानन्दे प्रभु कीर्त्तन बिहरे ॥५०८
ए सब लीलार कभु नाहि परिच्छेद ।
आविर्भाब तिरोभाब एइ कहे वेद ॥५०९

येखाने ये रूपे प्रभु भक्तगणे करे ध्यान।
सेइ खाने से-इ रूपे प्रभु विद्यमान ॥५१०

तथाहि (भा० ३।६।११)—

"यद्यद्धिया त उरुगाय! विभावयन्ति
तत्तद्वपुः प्रणयसे सदनुग्रहाय॥"५११

टीका।

यद्यदिति। ते—भक्ताः, धिया—मनसा, यद्यद्वपुः रूपं विभावयन्ति—स्वेच्छया ध्यायन्ति, त्वं तत् तत्, प्रणयसे—प्रकर्षेण तत्समीपे नयसि प्रकटयसीत्यर्थः। सतां तद्भक्तानां अनुग्रहाय। इति श्रीधरः। उरुगायेति—वेदेन त्वम् उरुधैव गीयस इति।

अनुवाद।

हे प्रभो! वेद में आप के विविध रूपों का वर्णन है। तज्जन्य आप उरुगाय हैं। आप के भक्तगण उन मूर्त्तियों के मध्य में जिसका ध्यान स्वेच्छा पूर्वक करते हैं, आप उनके निकट उस मूर्त्ति में प्रकट होते हैं।

अद्यापिह चैतन्य ए सब लीला करे।
यार भाग्ये थाके से देखये निरन्तरे ॥५१२
मध्यखण्ड कथा बड़ अमृतेर खण्ड।
ये कथा शुनिले घुचे अन्तर पाषण्ड ॥५१३
भक्त लागि प्रभु सकल अवतार।
भक्त बइ कृष्ण मर्म नाजानये आर ॥५१४
कोटि जन्म यदि योग तप करि मरे।
भक्ति विने कोन कर्म फल नाहि धरे ॥५१५
हेन भक्ति विने भक्त सेविले ना हय।
अतएब भक्त सेवा सर्व शास्त्रे कय ॥५१६
आदिदेव जयजय नित्यानन्दराय।
चैतन्यकीर्त्तन स्फुरे याहार कृपाय ॥५१७
केहो बोले नित्यानन्द बलराम सम।
केहो बोले चैतन्येर बड़ प्रियतम ॥५१८
केहो बोले महातेज अंश अधिकारी।
केहो बोले कोनरूप बुझिते ना पारि ॥५१९
किबा जीव नित्यानन्द किबा भक्त ज्ञानी।
यार येनमत इच्छा ना बोलये केनि ॥५२०
ये से केने चैतन्येर नित्यानन्द नहे।
तभु से चरण धन रहुक हृदये ॥५२१
एत परिहारेओ ये पापी निन्दा करे।
तबे लाथि मारों तार शिरेर उपरे ॥५२२
चैतन्यप्रियेर पाये मोर नमस्कार।
अवधूतचन्द्र प्रभु हउक आमार ॥५२३
चैतन्येर कृपाय से नित्यानन्द चिनि।
नित्यानन्द जानाइले गोरचन्द्र जानि ॥५२४
नित्यानन्द गौरचन्द्र श्रीराम लक्ष्मण।
नित्यानन्द गौरचन्द्र कृष्ण सङ्कर्षण ॥५२५
नित्यानन्दस्वरूपेर ये कृष्ण भक्ति।
सर्वभावे करिते धरये प्रभु शक्ति ॥५२६
चैतन्येर यत प्रिय सेवक प्रधान।
ताहारा से ज्ञाता नित्यानन्देर आख्यान ॥५२७
तबे ये देखह हेर अन्योऽन्ये बाजे।
रङ्ग करे कृष्णचन्द्र केहो नाहि बुझे ॥५२८
इहाते ये एक वैष्णवेर पक्ष लय।
अन्य वैष्णव निन्दे से इ याय क्षय ॥५२९
सर्वभावे भजे कृष्ण ये कारे ना निन्दे।
सेइ से गणना पाय वैष्णवेर वृन्दे ॥५३०
अद्वैतचरणे मोर एइ नमस्कार।
तान प्रिये ताहे मति रहुक आमार ॥५३१
सर्वगोष्ठी सहिते गौराङ्ग जयजय।
शुनिले चैतन्य कथा भक्ति लभ्य हय ॥५३२
अद्वैतेर पक्ष हैया निन्दे गदाधर।
से अधम कभी नहे अद्वैत किङ्कर ॥५३३

चैतन्यचन्द्रेर कथा अमृतमधुर ।
सकल जीवेर मने वाढुक प्रचुर ॥५३४
शुनिले चैतन्य कथा यार हय सुख ।
से अवश्य देखिवेक चैतन्य श्रीमुख ॥५३५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥५३६

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे श्रीधरजलपानादि-वर्णनं नाम त्रयोविंशोतितमोऽध्यायः ।



चतुर्विंश अध्याय

जय जय जय गौर सिंह महाधीर ।
जयजय शिष्ट पाल जय दुष्ट बीर ॥१
जय जगन्नाथपुत्र श्रीशचीनन्दन ।
जय जय जय पुण्य श्रवरण कीर्त्तन ॥२
जय श्रीजगदानन्देर जीवन ।
जय हरिदास काशीश्वर प्राण धन ॥३
जय कृपासिन्धु दीनबन्धु सर्व तात ।
ये बोले तोमार प्रभु तार हओ नाथ ॥४
हेन मते नवद्वीपे विश्वम्भर राय ।
विदित कीर्त्तन प्रभु हइला सदाय ॥५
हेन से हइला प्रभु हरिसङ्कीर्त्तने ।
नाम शुनि मात्र प्रभु पड़े ये ते स्थाने ॥६
कि नगरे कि चत्वरे किवा जले बने ।
निरन्तर अश्रुधारा बहे श्रीनयने ॥७
आप्तगणे रक्षिया बुलेन निरन्तर ।
भक्तिरसमय हइलेन विश्वम्भर ॥८
केहो यदि कोनरूपे बोले मात्र हरि ।
शुनिलेइ पड़े प्रभु आपना पासरि ॥६
महाकम्प अश्रु हय पुलक सर्वाङ्गे ।
गड़ागड़ि यायेन नगरे महारङ्गे ॥१०
ये आवेश देखिले ब्रह्मादि धन्य हय ।
ताहा देखे नदीयार लोक समुच्चय ॥११
शेषे अति मूर्च्छा देखि मिलि सर्वदासे ।
आलग करिया किआ चलिलेन वासे ॥१२
तबे द्वार दिया ये करेन कीर्त्तन ।
से सुखे पूर्णित हय अनन्त भुवन ॥१३
यत सब भाव हय अकथ्य सकल ।
हैन नाहि बुझि प्रभु कि रसे विह्वल १४
क्षणे बोले मुञि सेइ मदन गोपाल ।
क्षणे बले मुञि कृष्णदास सर्वकाल ॥१५
गोपी गोपी गोपी मात्र कोन दिन जपे ।
शुनिले कृष्णेर नाम ज्वले महाकोपे ॥१६
कोथाकार कृष्ण तोर महादस्यु से ।
शठ धृष्ट कितब, भजे बा तारे के ॥१७
स्त्रीजित हइया स्त्रीर काटे नाक कान ।
लुब्धकेर प्राय लैल बालिर पराण ॥१८
कि कार्य्य आमार से बा चोरेर कथाय ।
ये कृष्ण बोलये तारे खेदाड़िया याय ॥१६
गोकुल गोकुल मात्र बोले बोले क्षणेक्षणे ।
वृन्दावन वृन्दावन बोले कोनदिने ॥२०

'मथुरा मथुरा' कोनदिन बोले मुखे ।
कोन दिन पृथिवीते नखे अङ्क लेखे ॥२१
क्षणे पृथिवीते लेखे त्रिभङ्ग आकृति ।
चाहिया रोदन करे, भासे सब क्षिति ॥२२
क्षणे बोले भाइसब ! बड़ देखि वन ।
पालेपाले सिंहव्याघ्र भल्लुकेर गण ॥२३
दिबसेरे बोले रात्रि रात्रिरे दिवस ।
एइमत प्रभु हइलेन भक्तिवस ॥२४
प्रभुर आबेश देखि सर्वभक्तगण ।
अन्योऽन्ये गला धरि करेन क्रन्दन ॥२५
ये आबेश देखिते ब्रह्मार अभिलाष ।
सुखे देखे ताहा सर्व-वैष्णवेर दास ॥२६
छाड़िया आपन वास प्रभु विश्वम्भर ।
वैष्णवेर घरे प्रभु थाके निरन्तर ॥२७
वाह्य चेष्टा ठाकुर करेन कोन क्षणे ।
से केबल जननीर सन्तोष कारणे ॥२८
सुखमय हइलेन सर्वभक्तगण ।
विनि ठाकुरेओ सभे करेन कीर्त्तन ॥२९
नित्यानन्द मत्तसिंह सर्वनदीयाय ।
घरेघरे बोले प्रभु अनन्त लीलाय ॥३०
प्रभु सङ्गे गदाधर थाकेन सर्वथा ।
अद्वैत लइया सर्व-वैष्णवेर कथा ॥३१
एकदिन अद्वैत नाचेन गोपीभावे ।
कीर्त्तन करेन सभे महा अनुरागे ॥३२
आर्त्ति करि नाचये अद्वैत महाशय ।
पुनःपुन दन्ते तृण करिया पड़य ॥३३
गड़ागड़ि यायेन अद्वैत प्रेमरसे ।
चतुर्द्दिगे भक्तगण गायेन उल्लासे ॥३४
दुइ प्रहरेओ नृत्य नहे सम्वरण ।
श्रान्त हइलेन सब भागवतगण ॥३५
सभे मेलि आचार्य्येरे स्थिर कराइया ।
वसिलेन चतुर्द्दिके आचार्य्य बेढ़िया ॥३६
किछु स्थिर हइ यदि आचार्य्य वसिला ।
श्रीवास रामाइ आदि तबे स्नाने गेला ॥३७
आर्त्ति योग आचार्य्येर पुनःपुन बाढ़े ।
एकेश्वर श्रीवास अङ्गने गड़ि पाड़े ॥३८
कार्य्यान्तरे निजगृहे छिला विश्वम्भर ।
अद्वैतेर आर्त्ति चित्ते हइल गोचर ॥३९
भक्त आर्त्ति पूर्णकारी सदानन्द राय ।
आइला अद्वैत यथा गड़ागड़ि याय ॥४०
अद्वैतेर आर्त्ति देखि धरि ताँर करे ।
द्वार दिया वसिलेन गिया विष्णुघरे ॥४१
हासिया ठाकुर बोले शुनह आचार्य्य !
कि तोमार इच्छा बोल कि बा चाह कार्य्य ॥४२
अद्वैत बोलये तुमि सर्ववेदसार ।
तोमारेइ चाहों प्रभु कि चाहिब आर ॥४३
हासि बोले प्रभु आमि एइ त साक्षात ।
आर कि आमारे चाह बोलह आमा'त ॥४४
अद्वैत बोलये प्रभु कहिला सुसत्य ।
एइ तुमि प्रभु सर्ववेदान्तेर तत्त्व ॥४५
तथापिह विभब देखिते किछु चाइ ।
प्रभु बोले कि इच्छा बोलह मोर ठाँइ ॥४६
अद्वैत बोलये प्रभु पूर्वे अर्ज्जुनेरे ।
याहा देखाइला तथि इच्छा बड़ धरे ॥४७
बलिते अद्वैत मात्र देखे एक रथ ।
चतुर्द्दिगे सैन्य देखे महा युद्ध पथ ॥४८
रथेर उपरे देखे श्यामल सुन्दर ।
चतुर्भुज शङ्ख चक्र गदा पद्मधर ॥४९
अनन्त ब्रह्माण्ड रूप देखे सेइक्षणे ।
चन्द्र सूर्य्य सिन्धु गिरि नदी उपवने ॥५०

कोटि चक्षु बाहु मुख देखे पुनःपुन ।
सम्मुखे देखये स्तुति करये अर्ज्जुन ॥५१
महा अग्नि येन ज्वले सकल वदन ।
पोड़े यत पतङ्ग पाषण्ड दुष्टगण ॥५२
ये पापिष्ठ पर निन्दे परद्रोह करे ।
चैतन्येर मुखाग्निते सेइ पुड़ि मरे ॥५३
एरूप देखिते अन्य कारो शक्ति नाइ ।
प्रभुर कृपाय देखे आचार्य्य गोसाञि ॥५४
प्रेमसुखे अद्वैत कान्देन अनुरागे ।
दन्ते तृण करि पुनःपुनः दास्य मागे ॥५५
परम आनन्द प्रभु नित्यानन्दराय ।
पर्य्यटनसुखे भ्रमे सर्वनदीयाय ॥५६
प्रभुर प्रकाश सब जाने नित्यानन्द ।
जानिलेन प्रभु हइयाछे विश्व अङ्ग ॥५७
सत्वरे आइला यथा आछेन ठाकुर ।
विष्णु गृहे द्वार दिया गर्जेन प्रचुर ॥५८
नित्यानन्द आगमन जानि विश्वम्भर ।
द्वार घुचाइला प्रभु हइला भितर ॥५९
अनन्त ब्रह्माण्ड रूप नित्यानन्द देखि ।
दण्डवत हइया पड़िला बुझि आँखि ॥६०
प्रभु बोले उठ नित्यानन्द मोर प्राण !
तुमि से जानह मोर सकल आख्यान ॥६१
ये तोमारे प्रीत करे मुञि सत्य तार ।
तोमा वइ प्रियतम नाहिक आमार ॥६२
तुमि आर अद्वैते ये करे भेद बुद्धि ।
भालमते ना जाने से अवतार शुद्धि ॥६३
नित्यानन्द अद्वैत देखिया विश्वराय ।
आनन्दे कान्दिया विष्णुगृहे गड़ि याय ॥६४
हुङ्कार गर्जन करे श्रीशचीनन्दन ।
देख देख करि प्रभु डाके घनेघन ॥६५
प्रभु प्रभु बलि स्तुति करे दुइजन ।
विश्वमूर्त्ति देखिया आनन्दमय मन ॥६६
ए सब कौतुक हय श्रीवास मन्दिरे ।
तथापि देखिते शक्ति अन्य नाहि धरे ॥६७
अद्वैतेर श्रीमुखेर ए सकल कथा ।
इहा ये ना मानये से दुष्कृति सर्वथा ॥६८
सर्वमहेश्वर गौरचन्द्र ये ना माने ।
वैष्णवेर अदृश्य से पापी सर्वस्थाने ॥६९
आमार प्रभुर प्रभु गौराङ्गसुन्दर ।
एइ से भरसा मुञि धरिये अन्तर ॥७०
नवद्वीपे हेन सब प्रकाशेर स्थान ।
तथापिह भक्त बइ ना जानये आन ॥७१
भक्तियोग भक्तियोग भक्तियोग धन ।
भक्ति एइ कृष्णनाम स्मरण कीर्त्तन ॥७२
कृष्ण बलि कान्दिले से कृष्ण नाथ मिले ।
धने कुले किछु नहे कृष्ण ना भजिले ॥७३
मध्यखण्ड कथा बड़ अमृतेर खण्ड ।
ये कथा शुनिले खण्डे अन्तर पाषण्ड ॥७४
दुइ ठाकुरेर विश्वरूप दरशन ।
इहा ये शुनये तारे मिले कृष्णधन ॥७५
क्षणेके सकल सम्वरिया गौरचन्द्र ।
चलिलेन निजगृहे लइ भक्तवृन्द ॥७६
विश्वरूप देखिया अद्वैत नित्यानन्द ।
काहारो नाहिक वाह्य परम आनन्द ॥७७
विभव दर्शन सुखे मत्त दुइ जन ।
धूलाय यायेन गड़ि सकल अङ्गन ॥७८
केहो नाचे केहो गाय दिया करताली ।
ढुलिया ढुलिया बुले दुइ महाबली ॥७९
एइमत दुइजन महा कुतूहली ।
शेषे दुइजने बाजिल गालागली ॥८०

अद्वैत बोलये अवधूत मातालिया !
एथा कोन् जन तोके आनिल डाकिया ।।८१
दुयार भाङ्गिया आसि साम्भाइलि केने ।
सन्न्यासी बलिया तोरे बोले कोन् जने ।।८२
हेन जाति ना खाइला यार घरे ।
जाति आछे हेन कोन् जने बोले तोरे ।।८३
वैष्णव सभाय केने महामातोयाल ।
झाट नाहि पलाइले नहिबेक भाल ।।८४
नित्यानन्द बोले आरे नाढ़ा वसि थाक ।
किलाइया पाड़ोँ पाछे देखाङ प्रताप ।।८५
आरे बुढ़ा वामना तोमार भय नाइ ।
आमि अवधूत मत्त ठाकुरेर भाइ ।।८६
स्त्रीये पुत्रे गृहे तुमि परम संसारी ।
परमहंसेर पथे आमि अधिकारी ।।८७
आमि मारिलेओ तुमि बलिते ना पार ।
आमा'सने अकारणे तुमि गर्व कर ।।८८
शुनिया अद्वैत क्रोधे अग्नि हेन ज्वले ।
दिगम्बर हइया अशेष मन्द बोले ।।८९
मत्स्य खाय मांस खाय केमत सन्न्यासी ।
बस्त्र एड़िलाम एइ आमि दिग्वासी ।।९०
कोथा माता पिता कोन् देशे बा वसति ।
के जानये आसिया बलुक देखि इथि ।।९१
एक चोरा आसिया एतेक करे पाक ।
खाइमु शुषिमु संहारिमु सब थाक ।।९२
तारे बलि सन्न्यासी ये किछु नाहि चाय ।
बोलाय सन्न्यासी दिने तिनबार खाय ।।९३
श्रीनिवासपण्डितेर मूले जाति नाहि ।
कोथाकार अवधूते आनि दिल ठाञि ।।९४
अवधूत करिब सकल जाति नाश ।
कोथा हैते मद्यपेर हइल प्रकाश ।।९५
कृष्णप्रेमसुधारसे मत्त दुइजन ।
अन्योऽन्ये कलह करेन अनुक्षण ।।९६
इथि एकजनेर हइया पक्ष येइ ।
अन्य जने निन्दा करे क्षय याय सेइ ।।९७
हेन प्रेमकलहेर मर्म ना जानिया ।
एक निन्दे आर बन्दे से मरे पुड़िया ।।९८
अद्वैतेर पक्ष हइ निन्दे गदाधर ।
से अधम कभु नहे अद्वैतकिङ्कर ।।९९
ईश्वरे से ईश्वरेर कलहेर पात्र ।
के बुझये विष्णु वैष्णवेर लीला मात्र ।।१००
सकल वैष्णव प्रति अभेद देखिया ।
ये कृष्णचरण भजे से याय तरिया ।।१०१
भक्तगोष्ठीसहिते गौराङ्ग जयजय ।
विष्णु आर वैष्णव समान दुइ हय ।।१०२
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ।।१०३

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे विश्वरूप-दर्शनादि-वर्णनं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ।



पंचविंश अध्याय

जयजय सर्वलोकनाथ गौरचन्द्र ।
जय धर्म वेद विप्र सन्न्यासी महेन्द्र ॥१
जय शची-गर्भ रत्न करुणासागर ।
जय नित्यानन्द प्रभु जय विश्वम्भर ॥२
भक्तगोष्ठीसहिते गौराङ्ग जयजय ।
शुनिले चैतन्यकथा भक्ति लभ्य हय ॥३
मध्यखण्डकथा भक्तिरसेर निधान ।
नवद्वीपे ये क्रीड़ा करिला सर्वप्राण ॥४
निरवधि करे प्रभु हरि सङ्कीर्त्तन ।
आपन ऐश्वर्य्य प्रकाशये अनुक्षण ॥५
नृत्य करे महाप्रभु निजनामावेशे ।
हुङ्कार करिया क्षणे महा अट्ट हासे ॥६
प्रेमरसे निरवधि गड़ागड़ि याय ।
ब्रह्मार बन्दित अङ्ग पूर्णित धूलाय ७
प्रभुर आनन्द आबेशेर नाहि अन्त ।
नयन भरिया देखे सब भाग्यवन्त ॥८
बाह्य हैले वैसेन सकल गण लैया ।
कोनदिन गङ्गाजले बिहरहे गिया ॥९
कोनदिन नृत्य करि वैसेन अङ्गने ।
घरे स्नान करायेन सर्वभक्तगणे ॥१०
यतक्षण प्रभुर आनन्दनृत्य हये ।
ततक्षण दुःखी पुण्यवती जल बहे ॥११
गणेके देखिया नृत्य सजल नयने ।
पुनःपुन गङ्गाजल बहि बहि आने ॥१२
सारि सारि चतुर्द्दिगे एड़े कुम्भगण ।
देखिया सन्तोष वड़ श्रीशचीनन्दन ॥१३
श्रीवासेर स्थाने प्रभु जिज्ञासे आपने ।
प्रतिदिन गङ्गाजल कोन् जन आने ?१४
श्रीवास बोलये प्रभु ! दुःखी बहि आने ।
प्रभु बोले सुखी तारे बोल सर्वजने ॥१५

ए जनेर दुःखी नाम कभु योग्य नहे ।
सर्वकाल सुखी हेन मोर चित्ते लये ॥१६
एतेक कारुण्य शुनि प्रभुर श्रीमुखे ।
कान्दिते लागिला भक्तगण प्रेमसुखे ॥१७
सभे सुखी बलिलेन प्रभुर आज्ञाय ।
दासी बुद्धि श्रीवास ना करे सर्वथाय ॥१८
प्रेमयोगे सेवा करिले से कृष्ण पाइ ।
माथा मुड़ाइले यमदण्ड ना एड़ाइ १९
कुले रूपे धने बा विद्याय किछु नहे ।
प्रेमयोगे भजिले से कृष्ण तुष्ट हये ॥२०
यतेक कहेन तत्त्व वेदे भागवते ।
सब देखायेन गौरसुन्दर साक्षाते ॥२१
दासी हइ ये प्रसाद दुःखीरे हइल ।
बृथा अभिमानी सब ताहा ना देखिल ॥२२
कि कहिब श्रीवासेर भाग्येर महिमा ।
यार दास दासीर प्रसादेर नाहि सीमा ॥२३
एकदिन नाचे प्रभु श्रीवासमन्दिरे ।
सुखेते श्रीवास आदि सङ्कीर्त्तन करे ॥२४
दैवे व्याधियोगे गृहे श्रीवासनन्दन ।
परलोक हइलेन देखे नारीगण ॥२५
आनन्दे करेन नृत्य श्रीशचीनन्दन ।
श्रीवासेर गृहे महा उठिल क्रन्दन ॥२६
सत्वरे आइला गृहे पण्डित श्रीवास ।
देखे पुत्र हइयाछे परलोकवास ॥२७
परम गभीर भक्त महा तत्त्व ज्ञानी ।
स्त्रीगणेरे प्रबोधिते लागिला आपनि ॥२८
तोमरा त सब जान कृष्णेर महिमा ।
सम्वर क्रन्दन सभे चित्ते देह क्षमा ॥२९
अन्तकाले सकृत शुनिले यार नाम ।
अतिमहापातकीओ याय कृष्णधाम ॥३०

हेन प्रभु आपने साक्षाते करे नृत्य ।
गुण गाय ताँर यत ब्रह्मा आदि भृत्य ॥३१
ए समये याहार हइल परलोक ।
इहाते कि जुयाय करिते आर शोक ॥३२
कोन काले ए शिशुर भाग्ये पाइ यबे ।
कृतार्थ करिया आपनारे मानि तबे ॥३३
यदि बा संसारधर्मे नार सम्वरिते ।
विलम्बे कान्दिह यार येन लय चिते ॥३४
अन्य येन केहो ए आख्यान ना शुनये ।
पाछे ठाकुरेर नृत्यसुखभङ्ग हये ॥३५
कलरब शुनि यदि प्रभु वाह्य पाय ।
तबे आजि गङ्गा प्रवेशिमु सर्वथाय ॥३६
सभे स्थिर हइलेन श्रीवासेर बचने ।
चलिलेन श्रीवास प्रभुर सङ्कीर्त्तने ॥३७
परानन्दे संकीर्त्तन करये श्रीवास ।
पुनःपुन बाढ़े आरो विशेष उल्लास ॥३८
श्रीनिवासपण्डितेर एमन महिमा ।
चैतन्येर पार्षदेर एइ गुण सीमा ॥३९
स्वानुभाबानन्दे नृत्य करे गौरचन्द्र ।
कथोक्षणे रहिलेन लइया भक्तवृन्द ॥४०
परम्परा शुनिलेन सर्वभक्तगण ।
पण्डितेर पुत्रेर हइला वैकुण्ठ गमन ॥४१
तथापिह केहो किछु व्यक्त नाहि करे ।
बड़ दुःख पाइलेन सभेइ अन्तरे ॥४२
सर्वज्ञेर चूड़ामणि श्रीगौरसुन्दर ।
जिज्ञासेन प्रभु सर्वजनेर अन्तर ॥४३
प्रभु बोले आजि मोर चित्त केमन करे ।
कोन दुःख हइयाछे पण्डितेर घरे ॥४४
पण्डित बोलये प्रभु मोर कोन् दुःख ।
यार घरे सुप्रसन्न तोमार श्रीमुख ॥४५
शेबे आछिलेन यत सकल महान्त ।
कहिलेन पण्डितेर पुत्रेर बृत्तान्त ॥४६
सम्भ्रमे बोलये प्रभु कह कतक्षण ?
शुनिलेन चारिदण्ड रजनी यखन ॥४७
तोमार आनन्द भङ्ग भये श्रीनिवास ।
काहारेओ इहा नाहि करेन प्रकाश ॥४८
परलोक हइयाछे आढ़ाइ प्रहर ।
एबे आज्ञा देह कार्य्य करिते सत्वर ॥४९
शुनि श्रीवासेर अति अद्भुत कथन ।
गोविन्द गोविन्द प्रभु करेन स्मरण ॥५०
प्रभु बोले हेन सङ्ग छाड़िब केमते ?
एत बलि महाप्रभु लागिला कान्दिते ॥५१
पुत्रशोक ना जानिल मोहोर प्रेमे ।
हेन सब सङ्ग मुञि छाड़िब केमने ॥५२
एत बलि महाप्रभु कान्दये निर्भर ।
त्याग वाक्य शुनि सभे चिन्तेन अन्तर ॥५३
ना जानि कि परमाद पड़ये कखन ।
अन्योऽन्ये चिन्तये सकल भक्तगण ॥५४
गारस्थ छाड़िया प्रभु करिब सन्न्यास ।
तार ध्वनि करि कान्दे छाड़ि दीर्घश्वास ॥५५
स्थिर हइलेन यदि ठाकुर देखिया ।
सत्कार करिते शिशु यायेन लइया ॥५६
मृत शिशु प्रति प्रभु जिज्ञासे आपने ।
श्रीवासेर घर छाड़ि याह कि कारणे ?५७
शिशु बोले प्रभु येन निर्बन्ध तोमार ।
अन्यथा करिते शक्ति आछये काहार ॥५८
मृत पुत्र उत्तर करये प्रभु सने ।
परम अद्भुत शुने सर्वभक्तगणे ॥५९
शिशु बोले ए देहेते यतेक दिवस ।
निर्बन्ध आछिल भुञ्जिलाम सेइ रस ॥६०

निर्बन्ध घुचिल आर रहिते ना पारि ।
एबे चलिलाम अन्य निर्बन्धित पुरो ॥६१
के वा कार् बाप प्रभु के कार नन्दन ।
सभे आपनार कर्म करये भुञ्जन ॥६२
यतदिन भाग्य छिल पण्डितेर घरे ।
आछिलाम एबे चलिलाम अन्य पुरे ॥६३
सपार्षदे तोमार चरणे नमस्कार ।
अपराध ना लइह, बिदाय आमार ॥६४
एत बलि नीरव हइला शिशु-काय ।
एमत कौतुक करे श्रीगौराङ्ग राय ॥६५
मृत पुत्र मुखे शुनि अपूर्व कथन ।
आनन्दसागरे भासे सर्वभक्तगण ॥६६
पुत्रशोक दूरे गेल श्रीवासगोष्ठीर ।
कृष्णप्रेमानन्दे सभे हइला अस्थिर ॥६७
कृष्णप्रेमे श्रीनिवास गोष्ठीर सहिते ।
प्रभुर चरण धरि लागिला कान्दिते ॥६८
जन्मजन्म तुमि पितामाता पुत्र प्रभु ।
तोमार चरण येन ना पासरि कभु ॥६९
येखाने सेखाने प्रभु ! जन्म केने नहे ।
तोमार चरणे हेन प्रेमभक्ति रहे ॥७०
चारि भाइ प्रभुर चरणे काकु करे ।
चतुर्द्दिगे भक्तगण कान्दे उच्चस्वरे ॥७१
कृष्णप्रेमे चतुर्द्दिगे उठिल क्रन्दन ।
कृष्णप्रेममय हैल श्रीवासभवन ॥७२
प्रभु बोले शुनशुन श्रीवासपण्डित !
तुमि त सकल जान संसारचरित ॥७३
ए सब संसारदुःख तोमार कि दाय ।
ये तोमारे देखे, सेहो कभु नाहि पाय ॥७४
आमि नित्यानन्द दुइ नन्दन तोमार ।
चित्ते तुमि व्यथा किछु ना भाविह आर ॥७५

श्रीमुखेर परम कारुण्य वाक्य शुनि
चतुर्द्दिगे भक्तगण करे जय ध्वनि ॥७६
सर्वगण सह प्रभु बालक लइया ।
चलिलेन गङ्गातीरे कीर्त्तन करिया ॥७७
यथोचित क्रिया करि करि गङ्गास्नान ।
कृष्ण बलि सभे गृहे करिला पयान ॥७८
प्रभु भक्तगण सभे गेला निज घर ।
श्रीवासेर गोष्ठी सब हइला विह्वल ॥७९
ए सब निगूढ़ कथा ये करे श्रवण ।
अवश्य मिलये तारे कृष्णप्रेमधन ॥८०
श्रीवासेर चरणे रहुँ कोटि नमस्कार ।
गौरचन्द्र नित्यानन्द नन्दन याहार ॥८१
ए सब अद्भुत सेइ नवद्वीपे हय ।
तथापिह भक्त विने अन्ये ना जानय ॥८२
मध्यखण्डे परम अद्भुत सब कथा ।
मृतदेहे तत्त्वज्ञान कहाइलेन यथा ॥८३
हेनमते नवद्वीपे श्रीगौरसुन्दर ।
बिहरये सङ्कीर्त्तनसुखे निरन्तर ॥८४
प्रेमरसे प्रभुर संसार नाहि स्फुरे ।
अन्येर कि दाय विष्णु पूजिते ना पारे ॥८५
स्नान करि वैसे प्रभु श्रीविष्णु पूजिते ।
प्रेम जले सकल श्रीअङ्ग बस्त्र तिते ॥८६
बाहिर हइया प्रभु से बस्त्र छाड़िया ।
पुनः अन्य बस्त्र परि विष्णु पूजे गिया ॥८७
पुनः प्रेमानन्दजले तिते से बसन ।
पुनः बाहिराइ अङ्ग करे प्रक्षालन ॥८८
एइमत बस्त्र परिबर्त्त करे मात्र ।
प्रेमे विष्णु पूजिबारे नारे तिल मात्र ॥८९
शेषे गदाधर प्रति बलिलेन वाक्य ।
तुमि विष्णु पूज मोर नाहिक से भाग्य ॥९०

एइमत वैकुण्ठ नायक भक्तिरसे।
बिहरये नवद्वीपे रात्रिये दिवसे ॥९१
एकदिन शुक्लाम्बरब्रह्मचारि स्थाने।
कृपाय ताहाने अन्न मागिला आपने ॥९२
"तोर अन्न खाइते आमार इच्छा बड़।
किछु भय ना करिय बलिलाम दढ़॥"९३
एइमत महाप्रभु बोले बारबार।
शुनि शुक्लाम्बर काकु करेन अपार ॥९४
भिक्षुक अधम मुञि पापिष्ठ गर्हित।
तुमि धर्म सनातन मुञि से पतित ॥९५
मोरे कोथा दिबे प्रभु चरणेर छाया।
कीटतुल्य नहों मोरे एत बड़ माया ॥९६
प्रभु बोले माया हेन ना वासिह मने।
बड़ इच्छा वसे मोर तोमार रन्धने ॥९७
सत्वरे नैवेद्य गिया करह वासाय।
आजि आमि मध्याह्ने याइब सर्वथाय ॥९८
तथापिह शुक्लाम्बर भय पाइ मने।
युक्ति जिज्ञासिलेन सकल भक्त स्थाने ॥९९
सभे बलिलेन तुमि केने कर भय।
परमार्थे ईश्वरेर केहो भिन्न नय ॥१००
विशेषे ये जन ताने सर्वभावे भजे।
सर्वकाल तान अन्न आपनेइ खोजे ॥१०१
आपने सुदामा आर विदुरेर स्थाने।
अन्न मागि खाइलेन स्वभाव कारणे ॥१०२
भक्तस्थाने मागि खाय प्रभुर स्वभाव।
देह गिया तुमि त करिया अन्न पाक ॥१०३
तथापिह तुमि यदि भय वास मने।
आलगोछे तुमि तबे करह रन्धने ॥१०४
बड़ भाग्य तोमार प्रभु एमत कृपा करे।
शुनि विप्र हरिषे आइला निज घरे ॥१०५

स्नान करि शुक्लाम्बर अति सावधाने।
सुवासित जल तप्त करिला आपने ॥१०६
तण्डुलसहित तबे दिव्य गर्भथोड़।
आलगोछे दिया विप्र कैला करयोड़ ॥१०७
"जय कृष्ण गोविन्द गोपाल वनमाली।"
बलिते लागिला शुक्लाम्बर कुतूहली ॥१०८
सेइक्षणे भक्त अन्ने रमा जगन्माता।
दृष्टिपात करिलेन महापतिव्रता ॥१०९
ततक्षणे सर्वामृत हैल सेइ अन्न।
स्नान करि प्रभु आसि हैला उपसन्न ॥११०
सङ्गे नित्यानन्द आदि आप्त कथो जन।
तिता बस्त्र एड़िलेन श्रीशचीनन्दन ॥१११
आपने लइया अन्न तान इच्छा पालि।
शुक्लाम्बर देखिया हासेन कुतूहली ॥११२
गङ्गार अग्रेते घर गङ्गार सम्मुखे।
विष्णु निबेदन करिलेन बड़ सुखे ॥११३
हासि बसिलेन प्रभु आनन्दभोजने।
नयन भरिया देखे सर्वभृत्य गणे ॥११४
ब्रह्मादिर यज्ञभोक्ता ये गौरसुन्दर।
सेहो ध्याने एमत साक्षाते सुदुष्कर ॥११५
हेन प्रभु बोले जन्म याबत आमार।
एमन अन्नेर स्वादु नाहि पाइ आर ॥११६
किबा गर्भथोड़ स्वादु ना पारि बलिते।
आलगोछा एमत रान्धिला केमने ॥११७
तुमिहेन जन से आमार बन्धु-कुल।
तुमि सब लागि से आमार आदि मूल ॥११८
शुक्लाम्बर प्रति देखि कृपार वैभव।
कान्दिते लागिला अन्योऽन्ये भक्त सब ॥११९
एइमत प्रभु पुनःपुनः आस्वादिया।
करिलेन भोजन आनन्दयुक्त हैया ॥१२०

ये प्रसाद पायेन भिक्षुक शुक्लाम्बर ।
देखुक अभक्त सब पापी कोटिश्वर ॥१२१
धने जने पाण्डित्ये चैतन्य नाहि पाइ ।
भक्तिरसे बश प्रभु चारिवेदे गाइ ॥१२२
वसिलेन प्रभु प्रेम भोजन करिया ।
ताम्बूल खायेन प्रभु हासिया हासिया ॥१२३
पात्र लइ भृत्यगण भुलिला आनन्दे ।
ब्रह्मा शिव अनन्त ये पात्र शिरे बन्दे ॥१२४
कि आनन्द हइल से भिक्षुकेर घरे ।
एमत कौतुक करे श्रीगौराङ्गसुन्दरे ॥१२५
कृष्णकथा प्रसङ्ग करिया कथक्षण ।
सेइखाने महाप्रभु करिला शयन ॥१२६
भक्तगण करिला तथाइ शयन ।
तथि मध्ये अद्भुत देखये एकजन ॥१२७
ठाकुरेर एकशिष्य श्रीविजयदास ।
से महापुरुष किछु देखिला प्रकाश ॥१२८
नवद्वीपे तेनमत नाहि आँखरिया ।
प्रभुके अनेक पुँथि दियाछे लिखिया ॥१२९
आँखरिया विजय करिया सभे घोषे ।
मर्म नाहि जाने लोक भक्ति-हीन दोषे ॥१३०
शयने ठाकुर तान अङ्गे दिला हस्त ।
विजय देखेन अति अपूर्व समस्त ॥१३१
हेम स्तम्भ प्राय हस्त दीर्घ सुबलन ।
परिपूर्ण देखे तहिँ रत्न आभरण ॥१३२
श्रीरत्नमुद्रिका यत अङ्गुलीर मूले ।
ना जानि कि कोटि सूर्य्य चन्द्र मणि ज्वले॥१३३
आब्रह्म पर्य्यन्त सब देखे ज्योतिर्मय ।
हस्त देखि परानन्द हइला विजय ॥१३४
विजय उद्योगमात्र करिला डाकिते ।
श्रीहस्त दिलेन प्रभु ताँहार मुखेते ॥१३५

प्रभु बोले यतदिन मुञि थाकोँ एथा ।
तावत काहाके पाछे कह एइ कथा ॥१३६
एत बलि हासे प्रभु विजय चाहिया ।
विजय उठिला महा हुङ्कार करिया ॥१३७
विजयेर हुङ्कारे जागिला भक्तगण ।
धरेन विजय तभु ना याय धरण ॥१३८
कथोक्षण उन्माद करिया महाशय ।
शेषे हइला परानन्द मूर्च्छित तन्मय ॥१३९
भक्त सब बुझिलेन विभव दर्शन ।
सर्व गण लागिलेन करिते क्रन्दन ॥१४०
सभारे जिज्ञासे प्रभु कि बोल इहार ।
आचम्बिते विजयेर बड़इ हुङ्कार ॥१४१
प्रभु बोले जानिलाम गङ्गार प्रभाब ।
विजयेर विशेषे गङ्गार अनुराग ॥१४२
नहे शुक्लाम्बरगृहे देव अधिष्ठान ।
किबा देखिलेन इहा कृष्ण से प्रमाण ॥१४३
एत बलि विजयेर अङ्गे दिया हस्त ।
चैतन करिल हासे वैष्णव समस्त ॥१४४
उठियाओ विजय हइला जड़ प्राय ।
सप्तदिन भ्रमिलेन सर्वनदीयाय ।१४५
आहार पानी निद्रा रहित देहधर्म ।
भ्रमये विजय केहो नाहि जाने मर्म ॥१४६
कथोदिने वाह्य चेष्टा जानिला विजय ।
शुक्लाम्बरगृहे हेन सब रङ्ग हय ॥१४७
शुक्लाम्बर भाग्य बलिबार शक्ति कार ।
गौरचन्द्र अन्न परिग्रह कैला यार ॥१४८
एइमत भाग्यवन्त शुक्लाम्बर घरे ।
गोष्ठीर सहित गौरसुन्दर विहरे ॥१४९
विजयेरे कृपा शुक्लाम्बरान्न भोजन ।
इहार श्रवणे मात्र मिले भक्ति धन ॥१५०

हेनमते नवद्वीप श्रीगौरसुन्दर।
सर्व्ववेदवन्द्य लीला करे निरन्तर॥१५१
एइमत प्रतिदिन वैष्णवेर घरेघरे।
कृपाए ठाकुर जानान आपनारे॥१५२
निरवधि प्रेमरसे शरीर विह्वल।
भाव नामे यत ताहा प्रकाशे सकल॥१५३
मत्स्य कूर्म नरसिंह बराह वामन।
रघुसिंह बौद्ध कल्कि श्रीनन्दनन्दन॥१५४
एइमत यत अवतार से सकल।
सेइ रूप हय प्रभु स्वभाववत्सल॥१५५
ए सकल भाव हइ लुकाय तखने।
सबे ना घुचिल राम भाव चिरदिने॥१५६
महामत्त हैला प्रभु हलधर भावे।
मद आन मद मद आन महा उच्च डाके॥१५७
नित्यानन्द जानेन प्रभुर समीहित।
घट भरि गङ्गाजल दिला साबहित॥१५८
हेन से हुङ्कार शुनि हेन से गर्जन।
नवद्वीप आदि करि काँपे त्रिभुवन॥१५९
हेन से करेन महा ताण्डव प्रचण्ड।
पृथिवीते पड़िले पृथिवी हय खण्ड॥१६०
टलमल करे भूमि ब्रह्माण्डसहिते।
भय पाइल भृत्य सब से नृत्य देखिते॥१६१
बलराम वर्णना गायेन सभे गीत।
शुनिया हयेन प्रभु आनन्दे मूर्च्छित॥१६२
आर्य्यातर्ज्जा पढ़ेन परम मत्त प्राय।
ढुलिया ढुलिया सब अङ्गने बेड़ाय॥१६३
कि सौन्दर्य्य प्रकाश हइल राम भावे।
देखिते देखिते कारो आर्त्ति नाहि भागे॥१६४
अति अनिर्वचनीय देखि मुखचन्द्र।
घनघन डाके नित्यानन्द नित्यानन्द॥१६५
कदाचित कखन प्रभुर वाह्य हय।
प्राण याय मोर सबे एइ कथा कय॥१६६
प्रभु बोले बाप कृष्ण राखिलेन प्राण।
मारिलेन हेन देखि जेठा बलराम॥१६७
एतेक बलिया प्रभु हेन मूर्च्छा याय।
देखि त्रासे भक्तगण कान्दे उच्च-राय॥१६८
येइ क्रीड़ा करे प्रभु से महा अद्भुत।
नाना भावे नृत्य करे जगन्नाथसुत॥१६९
कखनो बा बिरह प्रकाश हेन हये।
अकथ्य अद्भुत प्रेम सिन्धु येन बहे॥१७०
हेन से डाकिया प्रभु करेन रोदन।
शुनिले बिदीर्ण हय अनन्त भुवन॥१७१
आपनार रसे प्रभु आपने विह्वल।
आपना पासरि कहेन सकल॥१७२
पूर्वे येन गोपी सब कृष्णेर बिरहे।
पायेन मरण भय चन्द्रेर उदये॥१७३
सेइ सब भाव प्रभु करिया स्वीकार।
कान्देन सभार गला धरिया अपार॥१७४
भावावेशे प्रभुर देखिया विह्वलता।
रोदन करे गृहे शची जगन्माता॥१७५
एइमत प्रभुर अपूर्व प्रेमभक्ति।
मनुष्य कि ताहा वर्णिबारे पारे शक्ति॥१७६
नाना रूपे नाट्य करे प्रभु दिनेदिने।
ये भाव प्रकाश प्रभु करेन यखने॥१७७
एकदिन गोपीभावे जगत ईश्वर।
वृन्दावन गोपीगोपी बोले निरन्तर॥१७८
कोनो योगे तहिँ एक पढ़ुया आछिल।
भाव मर्म ना जानिया से उत्तर दिल॥१७९
गोपी गोपी केने बोल निमाञिपण्डित!
गोपी गोपी छाड़ि कृष्ण बोलह त्वरित॥१८०

कि पुण्य जन्मिब गोपी गोपी नाम लैले ।
कृष्णनाम लइले से पुण्य वेदे बोले ॥१८१
भिन्न भाव प्रभुर से आज्ञा नाहि बुझे ।
प्रभु बोले दस्यु कृष्ण कोन् जने भजे ॥१८२
कृतघ्न हइया 'बालि' मारे दोष विने ।
स्त्रीजित हइया काटे स्त्रीर नाक काणे ॥१८३
सर्वस्व लइया 'बलि' पाठाय पाताले ।
कि हइब आमार ताहार नाम लैले ॥१८४
एत बलि महाप्रभु स्तम्भ हाते लैया ।
पढ़ुया मारिते याय भाबाबिष्ट हैया ॥१८५
आथेव्यथे पढ़ुया उठिया दिल रड़ ।
पाछे धाय महाप्रभु बोले धर धर ॥१८६
देखिया प्रभुर क्रोध ठेङ्गा हाते धाय ।
सत्वरे संशय मानि पढ़ुया पलाय ॥१८७
भिन्न भावे धाय प्रभु ना जाने पढ़ुया ।
प्राण लैया महात्रासे याय पलाइया ॥१८८
आथेव्यथे धाइया प्रभुर भक्तगण ।
आनिलेन धरिया प्रभुरे ततक्षण ॥१८९
सभे मेलि स्थिर कराइलेन प्रभुरे ।
महाभये पढ़ुया पलाञा गेल दूरे ॥१९०
सत्वरे चलिला यथा पढ़ुयार गण ।
सर्व अङ्गे घर्म श्वास बहे घनेघन ॥१९१
सम्भ्रमे जिज्ञासे सभे भयेर कारण ।
कि जिज्ञास आजि भाग्ये रहिल जीवन ॥१९२
सभे बोले बड़ साधु निमाञि पण्डित ।
देखिते गेलाम आजि ताहार बाड़ीत ॥१९३
देखिलाम वसि मात्र जपे एइ नाम ।
अहर्निश गोपी गोपी ना बोलये आन ॥१९४
ताहे आमि बलिलाम कि कर पण्डित ।
कृष्ण कृष्ण बोल येन शास्त्रेर बिहित ॥१९५

एइ वाक्य शुनि महा क्रोधे अग्नि हैया ।
ठेङ्गा हाते आमारे आनिल खेदाड़िया ॥१९६
कृष्णेरेह हइल यतेत गालागालि ।
ताहा आर मुखे आमि आनिते न पारि ॥१९७
रक्षा पाइलाम आजि परमायु गुणे ।
कहिलाम एइ आजिकार बिवरणे ॥१९८
शुनिया हासये सब महा मूर्ख गणे ।
बलिते लागिल यार येन लय मने ॥१९९
केहो बोले भाल त वैष्णव बोले लोके ।
ब्राह्मण लङ्घिते आइसेन महाकोपे ॥२००
केहो बोले वैष्णव बा बलिब केमने ।
कृष्ण हेन नाम त ना बोलेन वदने ॥२०१
केहो बोले शुनिलाम अद्भुत आख्यान ।
वैष्णवे जपये मात्र गोपी गोपी नाम ॥२०२
केहो बोले एत बा सम्भ्रम केने करि ।
आमरा कि ब्राह्मणेर तेज नाहि धरि ॥२०३
तेँहो से ब्राह्मण आमरा कि विप्र नहि ।
तेहो मारिते बा आमरा केने बा सहि ॥२०४
राजा त नहेन तेँहो मारिबेन केने ।
आमराह समबाय हञो सर्वजने ॥२०५
यदि तेँहो मारिते धायेन पुनर्वार ।
आमराह सकल तबे ना सहिब आर ॥२०६
तिंहो नवद्वीपे जगन्नाथमिश्र सुत ।
आमराह नहि अल्प मनुष्येर पुत ॥२०७
हेर सभे पढ़िलाम कालि तान सने ।
आजि तिँहो गोसाञि बा हइला केमने ॥२०८
एइमत युक्ति करिलेन पापिगण ।
जानिलेन अन्तर्यामी श्रीशचीनन्दन ॥२०९
एकदिन महाप्रभु आछेन वसिया ।
चतुर्द्दिगे सकल पार्षदगण लैया ॥२१०

एक वाक्य अर्जुन बलिला आचम्बित ।
केहो ना बुझिल अर्थ सभे चमकित ॥२११
करिल पिप्पलिखण्ड कफ निबारिते ।
उलठिया आरो कफ बाढ़िल देहेते ॥२१२
बलि अट्टअट्ट हासे सर्वलोकनाथ ।
कारण ना बुझि भय जन्मिल सभा'त ॥२१३
नित्यानन्द बुझिलेन प्रभुर अन्तर ।
जानिलेन प्रभु शीघ्र छाड़िबेन घर ॥२१४
बिषादे हइला मग्न नित्यानन्द राय ।
हइब सन्न्यासी रूप प्रभु सर्वथाय ॥२१५
ए सुन्दर केशेर हइब अन्तर्द्धान ।
दुःखे नित्यानन्देर बिकल हैल प्राण ॥२१६
क्षणेके ठाकुर नित्यानन्द हाथे धरि ।
निभृते वसिला गिया गौराङ्ग श्रीहरि ॥२१७
प्रभु बोले शुन नित्यानन्द महाशय !
तोमारे कहिये निज हृदय निश्चय ॥२१८
भाले आइलाम आमि जगत तारिते ।
तारण नहिल आइलाम संहारिते ॥२१९
आमारे देखिया कोथा पाइब बन्ध नाश ।
एकगुण बन्ध आरो हैल कोटि पाश ॥२२०
आमारे मारिते यबे करिलेक मने ।
तखनेइ पड़ि गेल अशेष बन्धने ॥२२१
भाल लोक राखिते करिलुँ अवतार ।
आपने करिलुँ सर्वजीवेर संहार ॥२२२
देख कालि-शिखा सूत्र सब मुण्डाइया ।
भिक्षा करि बेड़ाइमु सन्न्यास करिया ॥२२३
ये ये जने चाहियाछे मोरे मारिबारे ।
भिक्षुक हइमु कालि ताहार दुयारे ॥२२४
तबे मोरे देखि से-इ धरिब चरणे ।
एइमते उद्धारिब सकल भुवने ॥२२५
सन्न्यासीरे सर्वलोके करे नमस्कार ।
सन्न्यासीरे केहो आर ना करे प्रहार ॥२२६
सन्न्यासी हइया कालि प्रति घरे-घरे ।
भिक्षा करि बुलों देखों के मोहरे मारे ॥२२७
तोमारे कहिलुँ एइ आपन हृदय ।
गारिहस्थ वास आमि छाड़िब निश्चय ॥२२८
इथे तुमि किछु दुःख ना भाबिह मने ।
विधि देह तुमि मोरे सन्न्यास करणे ॥२२९
ये रूप कराह तुमि से-इ हइ आमि ।
एतेके विधान देह अवतार जानि ॥२३०
जगत उद्धार यदि चाह करिबारे ।
इहाते निषेध नाहि करिबे आमारे ॥२३१
इथे मने दुःख ना भाबिह कोन क्षण ।
तुमि त जानह अवतारेर कारण ॥२३२
शुनि नित्यानन्द श्रीशिखार अन्तर्द्धान ।
अन्तरे बिदीर्ण हैल मन देह प्राण ॥२३३
कोन् विधि दिब किछु ना आइसे वदने ।
अवश्य करिब प्रभु जानिलेन मने ॥२३४
नित्यानन्द बोले प्रभु तुमि इच्छामय ।
तोमार ये इच्छा सेइ आमार निश्चय ॥२३५
विधि बा निषेध के तोमारे दिते पारे ।
सेइ सत्य ये तोमार आछये अन्तरे ॥२३६
सर्वलोकपाल तुमि सर्वलोकनाथ ।
भाल हये येमते से बिदित तोमा'त ॥२३७
येरूपे करिबे तुमि जगत उद्धार ।
तुमि से जानह ताहा के जानये आर ॥२३८
स्वतन्त्र परमानन्द तोमार चरित ।
तुमि ये करिबे सेइ हइबे निश्चित ॥२३९
तथापिह कह सर्वसेवकेर स्थाने ।
के बा कि बोलेन ताहा शुनह आपने ॥२४०

तबे ये तोमार इच्छा करिब ताहारे ।
के तोमार इच्छा प्रभु विरोधिते पारे ॥२४१
नित्यानन्द वाक्ये प्रभु सन्तोष हइला ।
पुनःपुन आलिङ्गन करिते लागिला ॥२४२
एइमत नित्यानन्दसङ्गे युक्ति करि ।
चलिलेन वैष्णवसमाजे गौरहरि ॥२४३
गृह छाड़िबेन प्रभु जानि नित्यानन्द ।
वाक्य नाहि स्फुरे देह हइल निस्पन्द ॥२४४
स्थिर हइ नित्यानन्द गणे मनेमने ।
प्रभु गेले आइ प्राण धरिब केमने ॥२४५
केमते बञ्चिब आइ काल–दिन राति ।
एतेक चिन्तिते मूर्च्छा पाय महामति ॥२४६
भाबिया आइर दुःख नित्यानन्दराय ।
निभृते वसिया प्रभु कान्दये सदाय ॥२४७
मुकुन्देर वासाय आइला गौरचन्द्र ।
देखिया मुकुन्द हैला परम आनन्द ॥२४८
प्रभु बोले गाओ किछु कृष्णेर मङ्गल ।
मुकुन्द गायेन प्रभु शुनिया विह्वल ॥२४९
बोल बोल हुङ्कार करये द्विजमणि ।
पुण्यवन्त मुकुन्देर शुनि दिव्य ध्वनि ॥२५०
क्षणेके करिला प्रभु भाब सम्वरण ।
मुकुन्देर सङ्गे तबे कहेन कथन ॥२५१
प्रभु बोले मुकुन्द शुनह किछु कथा ।
बाहिर हइब आमि ना रहिब एथा ॥२५२
गार्हस्थ आमि छाड़िवाङ सुनिश्चित ।
शिखा सूत्र छाड़िया चलिब ये ये भित ॥२५३
श्रीशिखार अन्तर्द्धान शुनिया मुकुन्द ।
पड़िला बिरहे सब घुचिल आनन्द ॥२५४
काकु करि बोलये मुकुन्द महाशय ।
यदि प्रभु एमत करिबा निश्चय ॥२५५
दिने कथो एइरूपे करह कीर्त्तने ।
तबे प्रभु करिह से ये तोमार मने ॥२५६
मुकुन्देर काकु शुनि गौराङ्गसुन्दर ।
चलिलेन यथाय आछेन गदाधर ॥२५७
सम्भ्रमे चरण बन्दिलेन गदाधर ।
प्रभु बोले शुन किछु आमार उत्तर ॥२५८
ना रहिब गदाधर ! आमि गृहवासे ।
ये ते दिगे चलिलाम कृष्णेर उद्देशे ॥२५९
शिखा सूत्र सर्वथाय आमि ना राखिब ।
माथा मुण्डाइय ये ते दिगे चलि याब ॥२६०
श्रीशिखार अन्तर्द्धान शुनि गदाधर ।
वज्रपात येन हैल शिरेर उपर ॥२६१
अन्तरे दुःखित हइ बोले गदाधर ।
यतेक अद्भुत सेइ तोमार उत्तर ॥२६२
शिखा सूत्र मुड़ाइले यदि कृष्ण पाइ ।
गृहस्थ तोमार मते वैष्णव कि नाइ ॥२६३
माथा मुण्डाइले से सकल देखि हये ।
तोमार से मत ए वेदेर मत नहे ॥२६४
अनाथिनी मायेरे बा केमते छाड़िबे ।
प्रथमे त जननी बधेर भागी हबे ॥२६५
तुमि गेले सर्वथा जीवन नाहि तान ।
सबे अबशिष्ट आछ तुमि ताँर प्राण ॥२६६
घरे थाकिले कि ईश्वरेर प्रीत नहे ।
गृहस्थ से सभार प्रीतेर स्थलि हये ॥२६७
तथापिह माथा मुण्डाइले स्वास्थ्य पाओ ।
ये तोमार इच्छा ताइ कर चल याओ ॥२६८
एइमत आप्त वैष्णवेर स्थाने स्थाने ।
शिखा सूत्र घुचाइमु बलिला आपने ॥२६९
सभेइ शुनिया श्रीशिखार अन्तर्द्धान ।
मूर्च्छित पड़िला कारो देहे नाहि ज्ञान ॥२७०

(रामकिरि राग)

करिवेन महाप्रभु शिखार मुण्डन ।
श्रीशिखा स्मङरि कान्दे सर्व भक्तगण ॥ ध्रु ॥
केहो बोले से सुन्दर चाँचर चिकुरे ।
आर माला गाँथिया कि ना दिब उपरे ॥२७१
केहो बोले ना देखिया से केश बन्धन ।
केमते रहिव ए पापिष्ठ जीवन ॥२७२
"से केशेर दिव्य गन्ध ना लइब आर ।"
एत बलि शिरे कर हाने आपनार ॥२७३
केहो बोले से सुन्दर केशे आरबार ।
आमलकी दिया कि ना करिब संस्कार ॥२७४
हरिहरि बलि केहो कान्दे उच्चस्वरे ।
डुबिलेन भक्तगण दुःखेर सागरे ॥२७५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥२७६

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे भक्तदुःखवर्णनं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ।



षड्विंश अध्याय

एइमत अन्योऽन्ये सर्वभक्तगण ।
प्रभुर बिरहे सभे करेन क्रन्दन ॥१
"कोथा याइबेन प्रभु सन्न्यास करिया ।
कोथा बा आमरा देखिवाङ गिया ॥२
सन्न्यास करिले आमे ना आसिब आर ।
कोन् दिगे यायेन वा करिया बिचार ॥"३
एइमत भक्तगण भावे निरन्तरे ।
अन्न पान कारो नाहि रोचये शरीरे ॥४
सेवकेर दुःख प्रभु सहिते ना पारे ।
प्रसन्न हइया प्रभु प्रबोधे सभारे ॥५
प्रभु बोले तोमरा चिन्तह कि कारण ।
तुमि सब यथा, तथा आमि सर्वक्षण ॥६
तोमराह भाब आमि सन्न्यास करिया ।
चलिलाम आमि तोमा'सभारे छाड़िया ७
सर्वथा तोमरा इहा ना भाबिह मने ।
तोमा'सभा आमि ना छाड़िब कोन क्षणे ॥८
सर्वकाल तोमरा सकल मोर सङ्ग ।
एइ जन्म हेन ना जानिबा जन्मजन्म ॥९
एइ जन्मे येन तुमिसब आमा' सङ्गे ।
निरवधि आछ सङ्कीर्त्तन सुख रङ्गे ॥१०
एइमत आर आछे दुइ अवतार ।
कीर्त्तन आनन्द रूप हइब आमार ॥११
ताहातेओ तुमि सब एइमन रङ्गे ।
कीर्त्तन करिबा महासुखे आमासङ्गे ॥१२
लोकरक्षा निमित्त से आमार सन्न्यास ।
एतेके तोमरा सब चिन्ता कर नाश ॥१३
एतेक बलिया प्रभु धरिया सभारे ।
प्रेम आलिङ्गन प्रभु पुनः पुनः करे ॥१४

प्रभुवाक्ये भक्तसब/ किछु स्थिर हैला ।
सभा प्रबोधिया प्रभु निजवासे गेला ॥१५
परम्परा ए सकल यतेक आख्यान ।
शुनिया शचीर देहे नाहि रहे प्राण ॥१६
प्रभुर सन्न्यास शुनि शची जगन्माता ।
हेन दुःख जन्मिल ना जाने आछे कोथा ॥१७
मूर्च्छित हइया क्षणे पड़े पृथिवीते ।
निरवधि धारा बहे ना पारे राखिते ॥१८
वसिया आछेन प्रभु कमललोचन ।
कहिते लागिला शची करिया क्रन्दन ॥१९

भाटियारी राग ।

ना याइय ना याइय बाप आमारे छाड़िया ।
पाप जीउ आछे तोर श्रीमुख देखिया ॥
गौराङ्ग हे! ॥ध्रु॥
कमल-नयन तोर श्रीचन्द्र वदन ।
अधर सुरङ्ग, कुन्द मुकुता दशन ॥२०
आमारे बरिखे येन सुन्दर वचन ।
केमने बञ्चिब ना देखि गजेन्द्र गमन ॥२१
अद्वैत श्रीवास आदि तोर अनुचर ।
नित्यानन्द आछे तोर प्राणेर दोसर ॥२२
परम बान्धब गदाधर आदि सङ्गे ।
गृहे रहि कीर्त्तन करह तुमि रङ्गे ॥२३
धर्म बुझाइते बाप! तोर अवतार ।
जननी छाड़िबा कोन् धर्म बा बिचार ॥२४
तुमि धर्ममय यदि जननी छाड़िबा ।
केमते जगते तुमि धर्म बुझाइबा ॥२५
प्रेमशोके कहे शची, शुने विश्वम्भर ।
प्रेमेते रोधितकण्ठ ना करे उत्तर ॥२६
तोमार अग्रज आमा छाड़िया चलिला ।
वैकुण्ठे तोमार बाप गमन करिला ॥२७
तोमा देखि सकल सन्ताप पासरिलुं ।
तुमि गेले प्राण मुञि सर्वथा छाड़िमु ॥२८

करुण भाटियारि राग ।

प्राणेर गौराङ्ग हेर बाप,
अनाथिनी छाड़िते ना जुयाय ।
सभा लञा कर निच अङ्गने कीर्त्तन,
नित्यानन्द आछेन सहाय ॥ध्रु॥
तोमार प्रेममय दुइ आँखि,
दीर्घभुज दुइ देखि,
वचनेते अमिया बरिखे हे ।
विनि दीपे घर मोर,
अङ्गेते उज्ज्वल तोर,
राङ्गा पा'ये कत मधु वैसे हे ॥
प्रेमशोके कहे शची विश्वम्भर शुने वसि,
येन रघु नाथे कौशल्या बुझाय ।
श्रीचैतन्य नित्यानन्द सुखदाता सदानन्द,
वृन्दावन रस गाय ॥
एइमत बिलाप करये शचीमाता ।
मुख तुलि ठाकुर ना कहे एको कथा ॥२९
बिवर्ण हइला शची अस्थि चर्म सार ।
शोकाकुली देवी किछु ना करे आहार ॥३०
प्रभु देखे जननीर जीवन ना रहे ।
निभृते वसिया ताने गोप्य कथा कहे ॥३१
प्रभु बोले माता तुमि स्थिर कर मन ।
शुन आमि यत जन्म तोमार नन्दन ॥३२
चित्त दिया शुनह आपन गुणग्राम ।
कोनो काले आछिल तोमार पृश्नि नाम ॥३३
तथाह आछिला तुमि आमार जननी ।
तबे तुमि स्वर्ग हैला अदिति आपनि ॥३४
तबे आमि हइलुं वामन अवतार ।
तथाह आछिला तुमि जननी आमार ॥३५

तबे तुमि देवहूति हैला आरबार ।
तथाह कपिल आमि नन्दन तोमार ॥३६
तबे त कौशल्या हइला आरबार तुमि ।
तथाह तोमार पुत्र रामचन्द्र आमि ॥३७
तबे तुमि मथुराय दैवकी हइया ।
कंसासुर अन्तपुरे बन्धने आछिला ॥३८
तथाह आमार तुमि आछिला जननी ।
तुमि सेइ देवकी देवकी पुत्र आमि ॥३९
आरो दुइ जन्म एइ सङ्कीर्त्तनारम्भे ।
हइब तोमार पुत्र आमि अविलम्बे ॥४०
एइमत तुमि मोर माता जन्मेजन्मे ।
तोमार आमार कभु त्याग नाहि मर्मे ॥४१
अमायाय एइ सब कहिलाम कथा ।
आर तुमि मने दुःख ना भाव सर्वथा ॥४२
कहिलेन प्रभु अति रहस्य कथन ।
शुनिया शचीर किछु स्थिर हइल मन ॥४३
एइमत आछेन ठाकुर विश्वम्भर ।
सङ्कीर्त्तन आनन्द करेन निरन्तर ॥४४
स्वेच्छामय महेश्वर कखने कि करे ।
ईश्वरेर मर्म केहो बुझिते ना पारे ॥४५
निरवधि परानन्द सङ्कीर्त्तन रङ्गे ।
हरिषे थाकेन सर्व वैष्णवेर सङ्गे ॥४६
परानन्दे विह्वल सकल भक्तगण ।
पासरि रहिला सभे प्रभुर गमन ॥४७
सर्व देवे मने भावे याहारे देखिते ।
क्रीड़ा करे भक्तगण से प्रभु सहिते ॥४८
ये दिन चलिब प्रभु सन्न्यास करिते ।
नित्यानन्दस्थाने ताहा कहिला निभृते ॥४९
शुन शुन नित्यानन्दस्वरूप गोसाञि !
एकथा भाङ्गिबे सभे पञ्चजन ठाञि ॥५०
एइ संक्रमण उत्तरायण दिवसे ।
निश्चय चलिब आमि करिते सन्न्यासे ॥५१
इन्द्राणि निकटे काटोया नामे ग्राम ।
तथा आछे केशवभारती शुद्ध नाम ॥५२
तान स्थाने आमार सन्न्यास सुनिश्चित ।
ए पञ्च जनारे कथा कहिबा बिदित ॥५३
आमार जननी, गदाधर, ब्रह्मानन्द ।
श्रीचन्द्रशेखराचार्य्य अपर मुकुन्द ॥५४
एइ कथा नित्यानन्दस्वरूपेर स्थाने ।
कहिलेन प्रभु इहा केहो नाहि जाने ॥५५
पञ्च जन स्थाने मात्र ए सब कथन ।
कहिलेन नित्यानन्द प्रभुर गमन ॥५६
सेइ दिन प्रभु सर्व वैष्णवेर सङ्गे ।
सर्वदिन गोङाइला सङ्कीर्त्तनरङ्गे ॥५७
परम आनन्दे प्रभु करिया भोजन ।
सन्ध्याय करिला गङ्गा देखिते गमन ॥५८
गङ्गा नमस्करिया वसिला गङ्गातीरे ।
क्षणेक थाकिया पुनः आइलेन घरे ॥५९
आसिया वसिला गृहे गौराङ्गसुन्दर ।
चतुर्द्दिगे वसिलेन सर्व अनुचर ॥६०
से दिने चलिब प्रभु केहो नाहि जाने ।
कौतुके आछेन सभे ठाकुरेर सने ॥६१
वसिया आछेन प्रभु कमललोचन ।
सर्वाङ्गे शोभित माला सुगन्धि चन्दन ॥६२
यतेक वैष्णव आइसेन देखिबारे ।
सभेइ चन्दन माला लइ दुइ करे ॥६३
हेन आकर्षण प्रभु करिला आपनि ।
के बा कोनदिग् हैते आइसे नाहि जानि ॥६४
कतेक बा नगरिया आइसे देखिते ।
ब्रह्मादिरो शक्ति इहा नाहिक लिखिते ॥६५

दण्डपरणाम हञा पड़े सर्वजन ।
एकदृष्टेच सभेइ चा'हेन श्रीवदन ॥६६
आपन गलार माला सभाकारे दिया ।
आज्ञा करे प्रभु सभे कृष्ण गाओ गिया ॥६७
बोल कृष्ण भज कृष्ण गाओ कृष्ण नाम ।
कृष्ण विनु केहो किछु ना भाबिह आन ॥६८
यदि आमा प्रति स्नेह थाके सभाकार ।
तबे कृष्ण व्यतिरिक्त ना गाइह आर ॥६९
कि शयने कि भोजने किबा जागरणे ।
अहर्निश चिन्त कृष्ण बोलह वदने ॥७०
एइमत शुभदृष्टि प्रभु सभाकारे ।
उपदेश कहिया कहेन याओ घरे ॥७१
एइमत कत याय कत बा आइसे ।
केहो कारो नाहि चिने आनन्देते भासे ॥७२
पूर्ण हैल श्रीविग्रह चन्दन मालाय ।
चन्द्रेर किरण शोभा कहन ना याय ॥७३
प्रसाद पाइया सभे हरषित हैया ।
उच्च हरिध्वनि सभे यायेन करिया ॥७४
एक लाउ हाथे करि सुकृति श्रीधर ।
हेनइ समये आसि हइला गोचर ॥७५
लाउ भेट देखि हासे वैकुण्ठेर राय ।
कोथाय पाइला ? प्रभु जिज्ञासे सदाय ॥७६
निज मने जाने प्रभु कालि चलिवाङ ।
एइ लाउ भोजन करिते नारिलाङ ॥७७
श्रीधरेर पदार्थ कि हइब अन्यथा ।
ए लाउ भोजन आजि करिब सर्वथा ॥७८
एतेक चिन्तिया भक्त बात्सल्य राखिते ।
जननीरे बलिलेन रन्धन करिते ॥७९
हेनइ समये आर कोन पुण्यवान् ।
दुग्ध भेट आनिया दिलेन विद्यमान ॥८०
हासिया ठाकुर बोले बड़ भालभाल ।
दुग्ध लाउ पाक गिया करह सकाल ॥८१
सन्तोषे चलिला शची करिते रन्धन ।
हेन भक्तवत्सल श्रीशचीर नन्दन ॥८२
एइमते महानन्दे वैकुण्ठ ईश्वर ।
कौतुके आछेन रात्रि द्वितीय प्रहर ॥८३
सभारे बिदाय दिया प्रभु विश्वम्भर ।
भोजने वसिला आसि त्रिदश ईश्वर ॥८४
भोजन करिया प्रभु मुखशुद्धि करि ।
चलिला शयन गृहे गौराङ्ग श्रीहरि ॥८५
योग निद्रा प्रति दृष्टि करिला ईश्वर ।
निकटे शुइला हरिदास गदाधर ॥८६
आइ जाने आजि प्रभु करिब गमन ।
आइर नाहिक निद्रा कान्दे अनुक्षण ॥८७
दण्ड चारि रात्रि आछे ठाकुर जानिया ।
उठिलेन चलिबार सामग्री लइया ॥८८
गदाधर हरिदास उठिलेन जानि ।
गदाधर बोलेन चलिब सङ्गे आमि ॥८९
प्रभु बोले आमार नाहिक कारो सङ्ग ।
एक अद्वितीय से आमार सर्व रङ्ग ॥९०
आइ जानिलेन मात्र प्रभुर गमन ।
दुयारे वसिया रहिलेन ततक्षण ॥९१
जननीरे देखि प्रभु धरि तान कर ।
वसिया कहेन ताने प्रबोध उत्तर ॥९२
बिस्तर करिला तुमि आमार पालन ।
पड़िलाम शुनिलाम तोमार कारण ॥९३
आपनार तिलार्द्धेको ना भाबिया दुख ।
आजन्म आमार तुमि बाढ़ाइला सुख ॥९४
दण्डेदण्डे यत तुमि करिला आमार ।
आमि कोटि कल्पे नारिब शुधिबार ॥९५

तोमार साद्गुण्य से ताहार प्रतिकार ।
आमि पुनः जन्मजन्म ऋणी से तोमार ॥९६
शुन माता ! ईश्वरेर अधीन संसार ।
स्वतन्त्र हइते शक्ति नाहिक काहार ॥९७
संयोग वियोग यत करे सेइ नाथ ।
तान इच्छा बुझिबारे शक्ति आछे कात ॥९८
दशदिन अन्तरे कि एखने बा आमि ।
चलिलेओ कोन चिन्ता ना करिह तुमि ॥९९
व्यवहार परमार्थ यतेक तोमार ।
सकल आमाते लागे सब मोर भार ॥१००
बुके हाथ दिया प्रभु बोले बार बार ।
तोमार सकल भार आमार आमार ॥१०१
यत किछु बोले प्रभु, सब शची शुने ।
उत्तर ना स्फुरे कान्दे अझर नयने ॥१०२
पृथिवी स्वरूपा हैला शची जगन्माता ।
के बुझये कृष्णेर अचिन्त्य सर्व कथा ॥१०३
जननीर पदधूली लइ प्रभु शिरे ।
प्रदक्षिण करि ताने चलिला सत्वरे ॥१०४
चलिलेन वैकुण्ठनायक गृह हैते ।
सन्न्यास करिया सर्व जीव उद्धारिते ॥१०५
शुन शुन आरे भाइ ! प्रभुर सन्न्यास ।
ये कथा शुनिले कर्मबन्ध याय नाश ॥१०६
प्रभु चलिलेन मात्र शची जगन्माता ।
जड़ हइलेन किछु नाहि स्फुरे कथा ॥१०७
भक्तगण ना जानेन ए सब वृत्तान्त ।
उषःकाले स्नान करि यतेक महान्त ॥१०८
प्रभु नमस्करिते आइला प्रभुघरे ।
आसिया देखेन आइ बाहिर दुयारे ॥१०९
प्रथमेइ बलिलेन श्रीवास उदार ।
"आइ केने रहियाछे बाहिर दुयार ॥" ११०
जड़प्राय आइ किछु ता स्फुरे उत्तर ।
नयनेर धारा मात्र बहे निरन्तर ॥१११
क्षणेके बलिला आइ शुन बाप सब !
विष्णुर द्रव्येर भागी सकल वैष्णव ॥११२
एतेके ये किछु द्रव्य आछये ताहान ।
तोमरा सभेर हय शास्त्रेर प्रमाण ॥११३
एतेके तोमरा सभे आपने मिलिया ।
येन इच्छा तेन कर मो याङ चलिया ॥११४
शुनि मात्र भक्तगण प्रभुर गमन ।
भूमिते पड़िला सभे हइ अचेतन ॥११५
कि हइल से वैष्णव गणेर बिषाद ।
कान्दिते लागिला सभे करि आर्त्तनाद ॥११६
अन्योऽन्ये सभेइ सभार धरि गला ।
बिविध बिलाप सभे करिते लागिला ॥११७
कि दारुण निशि पोहाइल गोपीनाथ ।
बलिया आनन्द करे, करे आत्मघात ॥११८
ना देखिया से श्रीमुख बञ्चिब केमने ।
किबा कार्य्य ए ना आर पापीष्ठ जीवने ॥११९
आचम्बिते केने हेन हैल बज्रपात ।
गड़ागड़ि याय केहो करे आर्त्तनाद ॥१२०
सम्वरण नहे भक्तगणेर क्रन्दन ।
हइल क्रन्दनमय प्रभुर भवन ॥१२१
ये भक्त आइसे प्रभु देखिबार तरे ।
से-इ आसि डुबे महा बिरह सागरे ॥१२२
कान्दे सब भक्तगण भूमिते पड़िया ।
सन्न्यास करिते प्रभु गेलेन चलिया ॥१२३
कथोक्षणे भक्तगण हइ किछु शान्त ।
शचीदेवी बेढ़ि सब वसिला महान्त ॥१२४

"अनाथेर नाथ प्रभु गेलेन चलिया ।
आमा सबे बिरह समुद्रे फेलाइया ॥
कांदे सब भक्तगण, हइया अचेतन,
हरिहरि वलि उच्चस्वरे ।
किबा मोर धन जन, किबा मोर जीबन,
प्रभु छाड़ि गेला सभाकारे ॥
माथाय दिया हात, बुके मारे घाति,
हरि हरि प्रभु विश्वम्भर, ।
सन्न्यास करिते गेला, आमा सभा ना वलिला,
काँदे भक्त धूलाय धूसर ॥
प्रभुर अङ्गने पड़ि, कान्दे मुकुन्द मुरारि,
श्रीधर गदाधर गङ्गादास ।
श्रीवासेर गण यत, तारा काँदे अबिरत,
श्रीआचार्य्य काँदे हरिदास ॥
शुनिया क्रन्दन रब, नदीयार लोक सब,
देखिते आइसे सब धाञा ।
ना देखि प्रभुर मुख, सबे पाय महा शोक,
काँदे सबे माथे हाथ दिया ॥
नागरिया यत भक्त, तारा काँदे अबिरत,
बाल बृद्ध नाहिक बिचार ।
काँदे सब स्त्रीपुरुषे, पाषण्डीर गण हासे,
निमाइरे ना देखिमु आर ॥"

कथोक्षणे सर्वनवद्वीपे हैल ध्वनि ।
सन्न्यास करिते प्रभु गेला द्विजमणि ॥१२५
शुनि सर्वलोकेर लागिल चमत्कार ।
धाइया आइला सर्वलोक नदीयार ॥१२६
आसि सर्वलोके देखे प्रभुर बाड़ीते ।
शून्य बाड़ी सभे लागियाछेन कान्दिते ॥१२७
सबने से हाय हाय करे सर्वलोक ।
परम निन्दक पाषण्डीओ पाय शोख ॥१२८
"पापीष्ठ आमरा ना चिनिल हेन जन ।"
अनुताप भावि सभे करेन क्रन्दन ॥१२९
भूमिते पड़िया कान्दे नगरियागण ।
आर ना देखिब बाप से चन्द्रवदन ॥१३०
केहो बोले चल घर द्वारे अग्नि दिया ।
काणे परि कुण्डल चलिब योगी हैया ॥१३१
हेन प्रभु नवद्वीप छाड़िल यखन ।
आर केने आछे आमा'सभार जीवन ॥१३२
कि स्त्री पुरुष ये शुनिल नदीयार ।
सभेइ बिषाद बइ ना भावये आर ॥१३३
प्रभु से जानये यारे तारिब येमते ।
सर्वजीव उद्धार पाइब हेनमते ॥१३४
निन्दा द्वेष याहार मनेते आछिल ।
प्रभुर बिषये सर्वजीवेर खण्डिल ॥१३५
सर्वजीवनाथ गौरचन्द्र जयजय ।
भाल रङ्गे सभा उद्धारिला दयामय ॥१३६
शुनशुन आरे भाइ प्रभुर सन्न्यास ।
ये कथा शुनिले कर्म बन्ध याय नाश ॥१३७
गङ्गार हइया पार श्रीगौरसुन्दर ।
सेइ दिन आइलेन कण्टक नगर ॥१३८
यारे यारे प्रभु आज्ञा करिया आछिला ।
ताँहाराह अल्पे अल्पे आसिया मिलिला ॥१३९
अवधूतचन्द्र गदाधर श्रीमुकुन्द ।
श्रीचन्द्रशेखराचार्य्य आर ब्रह्मानन्द ॥१४०
आइलेन प्रभु यथा केशवभारती ।
मत्त सिंह प्राय प्रियवर्गेर संहति ॥१४१
अद्भुत देहेर ज्योति देखिया ताहान ।
उठिलेन केशवभारती पुण्यवान् ॥१४२
दण्डवत प्रणाम करिया ताने ।
करजोड़ करि स्तुति करेन आपने ॥१४३

"अनुग्रह तुमि मोरे कर महाशय !
पतितपावन तुमि महाकृपामय ।।१४४
तुमि से दिबारे पार कृष्णप्राण नाथ ।
निरवधि कृष्णचन्द्र वसये तोमा'त ।।१४५
कृष्णदास्य बइ येत मोर नहे आन ।
हेन उपदेश तुमि मोरे देह दान ।।"१४६
प्रेमजले अङ्ग भासे प्रभुर कहिते ।
हुङ्कार करिया शेषे लागिला नाचिते ।।१४७
गाइते लागिला मुकुन्दादि भक्तगण ।
निजाबेशे मत्त नाचे श्रीशचीनन्दन ।।१४८
अर्वुदअर्वुद लोक शुनि सेइक्षणे ।
आसिया मिलिला नाहि जानि कोथा हने।।१४९
देखिया प्रभुर रूप मदन सुन्दर ।
एकदृष्टचे पान सभे करेन निर्भर ।।१५०
अकथ्य अद्भुत धारा प्रभुर नयने ।
ताहो कि कहिल हय अनन्त वदने ।।१५१
पाक दिया नृत्य करिते ये छुटे जल ।
ताहातेइ लोक स्नान करिल सकल ।।१५२
सर्वलोक तितिल प्रभुर प्रेमजले ।
स्त्री पुरुषे बाल बृद्धे 'हरिहरि' बले ।।१५३
क्षणे कम्प क्षणे स्वेद क्षणे मूर्च्छा हय ।
आछाड़ देखिते सर्वलोके पाय भय ।।१५४
अनन्त ब्रह्माण्ड नाथ निज दास्यभावे ।
दन्ते तृण करि सभे हरि भक्ति मागे ।।१५५
से कारुण्य देखिया कान्दये सर्वलोक ।
सन्न्यास शुनिया सभे भावे महाशोक ।।१५६
केमने धरिब प्राण इहार जननी ।
आजि तान पोहाइल कि काल रजनी ।।१५७
कोन् पुण्यवती हेन पाइलेक निधि ।
कोन् बा दारुण दोषे हरिलेक विधि ।।१५८
आमरा सबार प्राण विदरे देखिते ।
भार्य्या बा जननी प्राण राखिब केमते ।।१५९
एइमत नारीगण दुःख भाबि कान्दे ।
सर्वलोक पड़िलेन चैतन्येर फान्दे ।।१६०
क्षणेक सम्बरि नृत्य वैसे विश्वम्भर ।
वसिलेन चतुर्दिगे सर्व अनुचर ।।१६१
देखिया प्रभुर भक्ति केशवभारती ।
आनन्दसागरे पूर्ण हइ करे स्तुति ।।१६२
ये भक्ति तोमार आमि देखिल नयने ।
ए भक्ति अन्येर नहे ईश्वरेर विने ।।१६३
तुमि से जगत्गुरु जानिल निश्चय ।
तोमार गुरुर योग्य केहो कभु नय ।।१६४
तभु तुमि लोकशिक्षा निमित्त कारणे ।
करिबा आमारे गुरु हेन लय मने ।।१६५
प्रभु बोले माया मोरे ना कर प्रकाश ।
हेन दीक्षा देह येन हङ कृष्णदास ।।१६६
एइमत कृष्णकथा आनन्द प्रसङ्गे ।
बञ्चिलेन से निशा ठाकुर सभा सङ्गे ।।१६७
पोहाइला निशि सर्वभुवनेर पति ।
आज्ञा करिलेन चन्द्रशेखरेर प्रति ।।१६८
विधियोग्य यत कर्म सब कर तुमि ।
तोमारेइ प्रतिनिधि करिलाम आमि ।।१६९
प्रभुर आज्ञाय चन्द्रशेखर आचार्य्य ।
करिते लागिला सर्व विधियोग्य कार्य्य ।।१७०
नानाग्राम हइते यत नाना उपायन ।
आसिते लागिल अति अकथ्य कथन ।।१७१
दधि दुग्ध घृत मुद्ग ताम्बूल चन्दन ।
पुष्प यज्ञसूत्र बस्त्र आने सर्वजन ।।१७२
नानाविध भक्ष्यद्रव्य लागिल आसिते ।
केह नाहि जानि के आनये कोन् भिते ।।१७३

परम आनन्दे सभे करे हरि ध्वनि ।
त्रिविध लोकेर मुखे अन्य नाहि शुनि ॥१७४
तबे महाप्रभु सर्वजगतेर प्राण ।
वसिला करिते श्रीशिखार अन्तर्द्धान ॥१७५
नापित वसिला आसि सम्मुखे यखने ।
क्रन्दनेर कलरव उठिल तखने ॥१७६
क्षुर निते से सुन्दर चाँचर चिकुरे ।
हाथ नाहि देय नापित क्रन्दन मात्र करे ॥१७७
नित्यानन्द आदि करि यत भक्तगण ।
भूमिते पड़िया सभे करेन क्रन्दन ॥१७८
भक्तेर कि दाय व्यवहारि यत लोक ।
ताहाराओ कान्दिते लागिला करि शोक ॥१७९
केहो बोले कोन् विधि सृजिल सन्न्यास ।
एत बलि नारीगणे छाड़े महाश्वास ॥१८०
अगोचरे थाकि कान्दे सर्व देवगण ।
अनन्तब्रह्माण्डमय हइल क्रन्दन ॥१८१
हेन से कारुण्यरस गौरचन्द्र करे ।
शुष्क काष्ठ पाषाणादि द्रवये अन्तरे ॥१८२
ए सकल लीला जीव उद्धार कारण ।
एइ तार साक्षी देख कान्दे सर्वजन ॥१८३
प्रेमरसे परम चञ्चल गौरचन्द्र ।
स्थिर नहे निरवधि भाव अश्रु कम्प ॥१८४
बोल बोल करि प्रभु उठे विश्वम्भर ।
गायेन मुकुन्द प्रभु नाचे मनोहर ॥१८५
वसिलेओ प्रभु स्थिर हइते ना पारे ।
प्रेमरसे महा कम्प बहे अश्रुधारे ॥१८६
बोल बोल करि प्रभु करये हुङ्कार ।
क्षौरकर्म नापित ना पारे करिबार ॥१८७
कथं कथमपि सर्वदिन अवशेषे ।
क्षौरकर्म निर्वाह हइल प्रेमरसे ॥१८८

तबे सर्वलोकनाथ करि गङ्गास्नान ।
आसिया वसिला यथा सन्न्यासेर स्थान ॥१८९
सर्वशिक्षा गुरु गौरचन्द्र वेदे बोले ।
केशवभारती स्थाने ताहा कहे छले ॥१९०
प्रभु बोले स्वप्ने मोरे कोन महाजन ।
कर्णे सन्न्यास मन्त्र करिला कथन ॥१९१
बुझ देखि ताहा तुमि हय किबा नहे ।
एत बलि प्रभु ताँर कर्णे मन्त्र कहे ॥१९२
छले प्रभु कृपा करि ताँरे शिष्य कैल ।
भारतीर चित्ते महा विस्मय जन्मिल ॥१९३
भारती बलेन एइ महामन्त्रवर ।
कृष्णेर प्रसादे कि तोमार अगोचर ॥१९४
प्रभुर आज्ञाय तबे केशवभारती ।
सेइ मन्त्र प्रभुरे कहिला महामति ॥१९५
चतुर्द्दिगे हरिनाम सुमङ्गल शुनि ।
सन्न्यास करिला वैकुण्ठेर चूड़ामणि ॥१९६
परिलेन अरुण वसन मनोहर ।
ताहाते हइला कोटि कन्दर्प सुन्दर ॥१९७
सर्वअङ्ग श्रीमस्तक चन्दने लेपित ।
मालाय पूर्णित श्रीविग्रह सुशोभित ॥१९८
दण्ड कमण्डलु दुइ श्रीहस्ते उज्जल ।
निरवधि निजप्रेमे आनन्द विह्वल ॥१९९
कोटिकोटि चन्द्र जिनि शोभे श्रीवदन ।
प्रेमधारे पूर्ण दुइ कमल लोचन ॥२००
कि सन्न्यासी रूपेर हइल परकाश ।
पूर्ण करि ताहा कहिबेन वेदव्यास ॥२०१
सहस्रनामेते ये कहिला वेदव्यास ।
कोनो अवतारे प्रभु करेन सन्न्यास ॥२०२
एइ ताहा सत्य करिलेन द्विजराज ।
ए मर्म जानये सर्व वैष्णव समाज ॥२०३

तथाहि महाभारते दानधर्मे सहस्रनामस्तोत्रे (६३)—

"सन्न्यासकृत् शमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥" २०४

टीका।

सन्न्यासकृदिति। सन्न्यासं—पारिव्राज्यं, करोतीति सन्न्यासकृत्। शमयति—आलोचयति, रहस्यं हरेरिति शमः, 'शम' आलोचने चुरादिर्मत्। शाम्यति—उपरमति, कृष्णान्यविषयादिति शान्तः। नितिष्ठन्त्यस्यां हरिकीर्त्तनप्रधाना भक्तियज्ञा इति निष्ठा, "कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्र-पार्षदम्। यज्ञैः सङ्कीर्त्तनप्रायैर्यजन्ति हि सुमेधसः॥" (भा० ११।५।३२) इति स्मरणात्। शाम्यन्त्यनया भक्तिविरोधिनः केवलाद्वैतिप्रमुखा इति शान्तिः। महाभावान्तानां भावभेदानां परमम् अयनम् इति परायणम्। 'निष्ठा-शान्तिःपरायणः', इति पाठे, निष्ठा—चित्तस्य एकाग्रता, शान्ति—समस्तविद्या-निवृत्तिः, तत्परायणः।

अनुवाद।

सन्न्यासकारी, शम, शान्त,निष्ठा शान्ति परायण—अर्थात् महाभावपर्य्यन्त भावसमूह का एक मात्र आश्रय स्वरूप श्रीहरि हैं।

तबे नाम थुइबारे केशवभारती।
मनेमने चिन्तिते लागिला महामति ॥२०५
चतुर्द्दश भुवनेते एमत वैष्णव।
आमार नयने नाहि हय अनुभव ॥२०६
एतेके कोथाओ ये ना थाके हेन नाम।
थुइले से इहान आमार पूर्णकाम ॥२०७
मूले भारतीर शिष्य भारती से हये।
इहाने त ताहा थुइबारे योग्य नहे ॥२०८
भाग्यवान् न्यासिवर एतेक चिन्तिते।
शुद्धा सरस्वती तान आइला जिह्वाते ॥२०९
पाइया उचित नाम केशवभारती।
प्रभु बक्षे हस्त दिया बोले शुद्ध मति ॥२१०
यत जगतेरे तुमि कृष्ण बोलाइया।
कराइला चैतन्य कीर्त्तन प्रकाशिया ॥२११
एतेके तोमार नाम श्रीकृष्णचैतन्य।
सर्वलोके तोमा हैते याते हैल धन्य ॥२१२
एइ यदि न्यासिवर बलिला वचन।
जयध्वनि पुष्पबृष्टि हइल तखन ॥२१३
चतुर्द्दिगे महाहरिध्वनि कोलाहल।
करिया आनन्दे भासे वैष्णव सकल ॥२१४
भारतीरे सर्वभक्त करिला प्रणाम।
प्रभुओ हइला तुष्ट लभिया स्व-नाम ॥२१५
श्रीकृष्णचैतन्य नाम हइल प्रकाश।
दण्डवत हइया पड़िला सर्व दास ॥२१६
हेनमते सन्न्यास करिया प्रभु धन्य।
प्रकाशिला आत्मनाम श्रीकृष्णचैतन्य ॥२१७
ए सकल कथार अवधि नाहि हय।
आविर्भाव तिरोभाव मात्र वेदे कय ॥२१८
सर्वकाल चैतन्य सकल लीला करे।
कृपाय यखन ये देखायेन याहारे ॥२१९
आर कत लीलारस हैल सेइ स्थाने।
नित्यानन्दस्वरूपे से सर्व तत्त्व जाने ॥२२०
ताँहार आज्ञाय आमि कृपा अनुरूपे।
किछु मात्र सूत्र आमि लिखिल पुस्तके ॥२२१
सर्व-वैष्णवेर पा'ये मोर नमस्कार।
इथे अपराध किछु नहुक आमार ॥२२२
दैवे इहा कोटि कोटि मुनि वेदव्यासे।
वर्णिबेन नाना मते अशेष विशेषे ॥२२३
एइमते मध्यखण्डे प्रभुर सन्न्यास।
ये कथा शुनिले हय चैतन्येर दास ॥२२४

मध्यखण्डे ईश्वरेर सन्न्यास ग्रहण ।
इहार श्रवणे मिले कृष्णप्रेमधन ॥२२५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द दुइ प्रभु ।
एइ वाञ्छा इहा येन ना पासरि कभु ॥२२६
हेन दिन हइब कि चैतन्य नित्यानन्द ।
देखिब बेढ़ित चतुर्द्दिगे भक्तवृन्द ॥२२७
आमार प्रभुर प्रभु श्रीगौराङ्गसुन्दर ।
ए बड़ भरसा चित्ते धरि निरन्तर ॥२२८
मुखेह ये जन बोले नित्यानन्ददास ।
से अवश्य देखिबेक चैतन्य प्रकाश ॥२२९
चैतन्येर प्रियतम नित्यानन्द राय ।
प्रभु भृत्य सङ्गे येन ना छाड़े आमाय ॥२३०
जगतेर प्रेमदाता हेन नित्यानन्द ।
तान हञा येन भजोँ प्रभु गौरचन्द्र ॥२३१
संसारेर पार हैया भक्तिर सागरे ।
ये डुबिबे से भजुक निताइचान्देरे ॥२३२
काष्ठेर पुतली येन कुहके नाचाय ।
एइमत गौरचन्द्र मोरे ये बोलाय ॥२३३
पक्षी येन आकाशेर अन्त नाहि पाय ।
यत शक्ति थाके तत दूर उड़ि याय ॥२३४
एइमत चैतन्य कथार अन्त नाइ ।
यार यतदूर शक्ति सभे तत गाइ ॥२३५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥२३६

इति श्रीचैतन्यभागवते मध्यखण्डे श्रीचैतन्य-सन्न्यास-वर्णनं नाम षड्‌विंशोऽध्यायः ।



*** समाप्तश्चायं मध्यखण्डः ***

ॐ श्रीहरिः ॐ



श्रीश्रीगदाधरगौरांगौ जयतः

श्रीचैतन्यभागवत

श्रीलवृन्दावनदासठाकुरविरचित

अन्त्यखण्ड

प्रथम अध्याय

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ
सङ्कीर्त्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्मपालौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ ॥१
नमस्त्रिकालसत्याय जगन्नाथसुताय च ।
सभृत्याय सपुत्राय सकलत्राय ते नमः ॥२
जयजय श्रीकृष्णचैतन्य लक्ष्मीकान्त ।
जयजय नित्यानन्द वल्लभ एकान्त ॥३
जयजय वैकुण्ठ ईश्वर न्यासिराज ।
जयजय जय श्रीभकतसमाज ॥४
जयजय पतितपावन गौरचन्द्र ।
दान देह' हृदये तोमार पद-द्वन्द्व ॥५
शेषखण्ड कथा भाइ ! शुन एकचित्ते ।
नीलाचले गौरचन्द्र आइला येमते ॥६
करिया सन्न्यास वैकुण्ठेर अधीश्वर ।
से रात्रि आछिला प्रभु कण्टक नगर ॥७
करिलेन मात्र प्रभु सन्न्यास ग्रहण ।
मुकुन्देरे आज्ञा हैल करिते कीर्त्तन ॥८
बोल बोल बलि प्रभु आरम्भिला नृत्य ।
चतुर्द्दिगे गाइते लागिला सब भृत्य ॥९
श्वास हास स्वेद कम्प पुलक हुङ्कार ।
ना जानि कतेक हय अनन्त बिकार ॥१०
कोटि सिंह प्राय येन बिशाल गर्जन ।
आछाड़ देखिते भय पाय सर्वजन ॥११
कोन् दिगे कमण्डलु बा पड़िल ।
निज प्रेमे वैकुण्ठेर पति मत्त हैल ॥१२
नाचिते नाचिते प्रभु गुरुरे धरिया ।
आलिङ्गन करिलेन बड़ तुष्ट हैया ॥१३
पाइया प्रभुर अनुग्रह आलिङ्गन ।
भारतीर विष्णुभक्ति हइल तखन ॥१४
पाक दिया दण्ड कमण्डलु दूरे फेलि ।
सुकृति भारती नाचे 'हरिहरि' बलि ॥१५
वाह्य दूरे गेल भारतीर प्रेमरसे ।
गड़ागड़ि याय बस्त्र ना सम्वरे शेषे १६
भारतीरे कृपा हैल प्रभुर देखिया ।
सर्व-गण हरि बोले डाकिया डाकिया ॥१७
सन्तोषे गुरुर सङ्गे प्रभु करे नृत्य ।
देखिया परम सुखे गाय सब भृत्य ॥१८
चारि वेदे ध्याने यारे देखिते दुष्कर ।
ताँर सङ्गे साक्षाते नाचये न्यासिवर ॥१९
केशव भारती पा'ये बहु नमस्कार ।
अनन्त ब्रह्माण्ड नाथ शिष्य रूपे याँर ॥२०
एइमत सर्व रात्रि गुरुर संहति ।
नृत्य करिलेन वैकुण्ठेर अधिपति ॥२१

प्रभात हइले प्रभु वाह्य प्रकाशिया ।
चलिलेन गुरु स्थाने बिदाय करिया ॥२२

"अरण्ये प्रबिष्ट मुञि हइमु सर्वथा ।
प्राणनाथ मोर कृष्ण चन्द्र पाङ यथा ॥"२३

गुरु बोले आमिह चलिव तोमा'सङ्गे ।
थाकिब तोमार सङ्गे सङ्कीर्त्तन रङ्गे ॥२४

कृपा करि प्रभु सङ्गे लइलेन ताने ।
अग्रे गुरु करिया चलिला प्रभु वने ॥२५

तबे चन्द्रशेखर आचार्य्य कोले करि ।
उच्चस्वरे कान्दिते लागिला गौरहरि ॥२६

गृहे चल तुमि सर्व वैष्णवेर स्थाने ।
कहिओ सभारे आमि चलिलाम वने ॥२७

गृहे चल तुमि दुःख ना भाबिह मने ।
तोमार हृदये आमि बन्दी सर्वक्षणे ॥२८

तुमि मोर पिता मुञि नन्दन तोमार ।
जन्मजन्म तुमि प्रेम संहति आमार ॥२९

एतेक बलिया ताने ठाकुर चलिला ।
मूर्च्छागत हइ चन्द्रशेखर पड़िला ॥३०

कृष्णेर अचिन्त्य शक्ति बुझने ना याय ।
अतएव से बिरहे प्राण रक्षा पाय ॥३१

तबे नवद्वीपे चन्द्रशेखर आइला ।
सभा'स्थाने कहिलेन प्रभु वने गेला ॥३२

श्रीचन्द्रशेखर मुखे शुनि भक्तगण ।
आर्त्तनादे लागिलेन करिते क्रन्दन ॥३३

शुनिया हइला मात्र अद्वैत मूर्च्छित ।
प्राण नाहि देहे प्रभु पड़िला भूमित ॥३४

शचीदेवी शोके रहिलेन जड़ हैया ।
कृत्रिम पुतली येन आछे दाण्डाइया ॥३५

भक्तपत्नी सब यत पतिव्रतागण ।
भूमिते पड़िया सभे करेन क्रन्दन ॥३६

कोटि मुख हइलेओ से सब बिलाप ।
वर्णिते ना पारि ताँ'सभार अनुताप ॥३७

अद्वैत बोलये मोर ना रहे जीवन ।
बिदरे पाषाण काष्ठ शुनि से क्रन्दन ॥३८

अद्वैत बोलये आर कि कार्य्य जीवने ।
से हेन ठाकुर मोर छाड़िल यखने ॥३९

प्रविष्ट हइमु आजि सर्वथा गङ्गाय ।
दिने लोक धरिबेक चलिमु निशाय ॥४०

एइमत बिरहे सकल भक्तगण ।
सभार हइल बड़ चित्त उचाटन ॥४१

कोनमते चित्ते केहो स्वास्थ्य नाहि पाय ।
देह एड़िबारे सभे निरवधि चाय ॥४२

यद्यपिह सभेइ परम महा धीर ।
तभो केहो कारो करिबारे नारे स्थिर ॥४३

भक्तगण देहत्याग भाविला निश्चय ।
जानि सभा प्रबोधि आकाशवाणी हय ॥४४

दुःख ना भाबिह अद्वैतादि भक्तगण !
सभे सुखे कर कृष्णचन्द्र आराधन ॥४५

सेइ प्रभु एइ दिन दुइ चारि व्याजे ।
आसिया मिलिब तोमा'सभार समाजे ॥४६

देहत्याग केहो किछु ना भाबिह मने ।
पूर्ववत् सभे बिहरिबा प्रभु सने ॥४७

शुनिया आकाशवाणी महाभक्तगण ।
देहत्याग प्रति सभे छाड़िलेन मन ॥४८

प्रभु अवलम्बन प्रभुर गुण नाम ।
शची बेढ़ि भक्तगण थाके अभिराम ॥४९

तबे गौरचन्द्र सन्न्यासीर चूड़ामणि ।
चलिला पश्चिम मुखे करि हरिध्वनि ॥५०

नित्यानन्द गदाधर मुकुन्द संहति ।
गोविन्द पश्चाते आगे केशवभारती ॥५१

चलिलेन मात्र प्रभु मत्त सिंह प्राय ।
लक्ष कोटि लोक पाछे पाछे कान्दि याय ॥५२
चतुर्द्दिगे वन भाङ्गि लोक सब धाय ।
सभारे करेन प्रभु कृपा अमायाय ॥५३
सभे घर याह लह गिया हरिनाम ।
सभार हउक कृष्णचन्द्र धनप्राण ॥५४
ब्रह्मा शिव शुकादि ये रस बाञ्छा करे ।
हेन रस हउ तोमा'सभार शरीरे ॥५५
बर शुनि सर्वलोक कान्दे उच्चस्वरे ।
परबश प्राय सभे आइलेन घरे ॥५६
राढ़े आसि गौरचन्द्र हइला प्रवेश ।
अद्यापिह सेइ भाग्ये धन्य राढ़ देश ॥५७
राढ़ देश भूमि यत देखिते सुन्दर ।
चतुर्द्दिगे अश्वत्थ मण्डली मनोहर ॥५८
स्वभाब सुन्दर स्थान शोभे गाभीगणे ।
देखिया आबिष्ट प्रभु हय सेइक्षणे ॥५९
बोल बोल बलि प्रभु आरम्भिला नृत्य ।
चतुर्द्दिगे गाइते लागिला सब भृत्य ॥६०
हुङ्कार गर्जन करे वैकुण्ठेर राय ।
जगतेर चित्तबृत्ति शुनि शोक पाय ॥६१
एइमत प्रभु धन्य करि राढ़ देश ।
सर्वपथे चलिलेन करि नृत्याबेश ॥६२
प्रभु बोले वक्रेश्वर आछेन ये वने ।
तथाइ याइमु मुञि थाकिमु निर्जने ॥६३
एतेक बलिया प्रेमाबेशे चलि याय ।
नित्यानन्द आदिसब पाछेपाछे धाय ॥६४
अद्भुत प्रभुर नृत्य अद्भुत कीर्त्तन ।
शुनि मात्र धाइया आइसे सर्वजन ॥६५
यद्यपिह कोन देशे नाहि सङ्कीर्त्तन ।
केहो नाहि देखे कृष्णप्रेमेर क्रन्दन ॥६६
तथापि प्रभुर देखि अद्भुत क्रन्दन ।
दण्डवत हइया पड़ये सर्वजन ॥६७
तथि मध्ये केहो केहो परम पामर ।
तारा बोले एत केने कान्देन बिस्तर ॥६८
सेहो सब जन एबे प्रभुर कृपार ।
सेइ प्रेम स्मङरिया कान्दे गड़ि याय ॥६९
सकल भुवन एबे गाय गौरचन्द्र ।
तथापिह सबे नाहि गाय भूतवृन्द ॥७०
श्रीकृष्णचैतन्य नामे बिमुख ये जन ।
निश्चय जानिह सेइ पापी भूतगण ॥७१
हेनमते नृत्यरसे वैकुण्ठेर नाथ ।
चलिया यायेन सर्वभक्तवर्ग साथ ॥७२
दिन अवशेषे प्रभु एक धन्य ग्रामे ।
रहिलेन पुण्यवन्त ब्राह्मण आश्रमे ॥७३
भिक्षा करि महाप्रभु करिला शयन ।
चतुर्द्दिगे बेढ़िया शुइला भक्तगण ॥७४
प्रहर खानेक निशा थाकिते ठाकुर ।
सभा' छाड़ि पलाइया गेला कथो दूर ॥७५
शेषे सभे एठिया चाहेन भक्तगण ।
ना देखिया प्रभु सभे करेन क्रन्दन ॥७६
सर्व ग्राम बिचार करिया भक्तगण ।
प्रान्तर भू मते तबे करिला गमन ॥७७
निज प्रेमरसे वैकुण्ठेर अधीश्वर ।
प्रान्तरे रोदन करे करि उच्चस्वर ॥७८
कृष्णरे प्रभुरे आरे कृष्ण मोर बाप !
बलिया रोदन करे सर्व जीव नाथ ॥७९
हेन से डाकिया कान्दे न्यासिचूड़ामणि ।
क्रोशेकेर पथ याय रोदनेर ध्वनि ॥८०
कथो दूरे थाकिया सकल भक्तगण ।
शुनेन प्रभुर अति अद्भुत क्रन्दन ॥८१

चलिलेन सभे क्रन्दनेर अनुसारे ।
देखिलेन प्रभु कान्दे उच्चस्वरे ॥८२
प्रभुर क्रन्दने कान्दे सर्वभक्तगण ।
मुकुन्द लागिला तवे करिते कीर्त्तन ॥८३
शुनिया कीर्त्तन प्रभु लागिला नाचिते ।
आनन्दे गायेन सभे बेढ़ि चारि भिते ॥८४
एइमत सर्व पथे नाचिया नाचिया ।
यायेन पश्चिम मुखे आनन्दित हैया ॥८५
क्रोश चारि सकले आछेन वक्रेश्वर ।
सेइस्थाने फिरिलेन श्रीगौराङ्गसुन्दर ॥८६
नाचिया यायेन प्रभु पश्चिमाभिमुखे ।
पूर्व मुख पुनः हइलेन निजसुखे ॥८७
पूर्व मुखे चलिया यायेन नृत्य रसे ।
अन्तर आनन्दे प्रभु अट्ट अट्ट हासे ॥८८
बाह्य प्रकाशिया प्रभु निज कुतूहले ।
बलिलेन आमि चलिलाम नीलाचले ॥८९
जगन्नाथप्रभुर हइल आज्ञा मोरे ।
नीलाचले तुमि झाट आइस सत्वरे ॥९०
एत बलि चलिलेन हइ पूर्व मुख ।
भक्तगण पाइलेन परानन्दसुख ॥९१
तान इच्छा तिँहो से जानेन सबे मात्र ।
तान अनुग्रहे जाने तान कृपापात्र ॥९२
कि इच्छाय चलिलेन वक्रेश्वर प्रति ।
केने वा गेला, बुझे काहार शकति ॥९३
हेन बुझि करि प्रभु वक्रेश्वर व्याज ।
धन्य करिलेन सर्व राढ़ेर समाज ॥९४
गङ्गा मुख हइया चलिला गौरचन्द्र ।
निरवधि देहे निज प्रेमेर आनन्द ॥९५
भक्तिशून्य सर्व देश ना जाने कीर्त्तन ।
कारो मुखे नाहि कृष्णनाम उच्चारण ॥९६

प्रभु बोले हेन देशे आइलाम केने ।
कृष्ण हेन नाम कारो ना शुनि वदने ॥९७
केने हेन देशे मुञि करिलुँ प्रयाण ।
ना राखिमु देह मुञ छाड़ोँ एइ प्राण ॥९८
हेनइ समये गरु राखे शिशुगण ।
तार मध्ये सुकृति आछये एकजन ॥९९
हरिध्वनि करिते लागिला आचम्वित ।
शुनिया हैला प्रभु अति हरषित ॥१००
हरिबोल वाक्य प्रभु शुनि शिशुमुखे ।
बिचार करिते लागिलेन महासुखे ॥१०१
दिन तिन चारि यत देखिलाम ग्राम ।
काहारो मुखेते ना शुनिलुँ हरिनाम ॥१०२
आचम्विते शिशुमुखे शुनि हरिध्वनि ।
कि हेतु इहार सभे कह देखि शुनि ?१०३
प्रभु बोले गङ्गा कत दूर एथा हैते ?
सभे बलिलेन एक प्रहरेर पथे ॥१०४
प्रभु बोले ए महिमा केबल गङ्गार ।
अतएब एथा हरिनामेर सञ्चार ॥१०५
गङ्गार वातास किबा लाचियाछे एथा ।
अतएब शुनिलाम हरि गुण गाथा ॥१०६
गङ्गार महिमा व्याख्या करिते ठाकुर ।
गङ्गा प्रति अनुराग बाढ़िल प्रचुर ॥१०७
प्रभु बोले आजि आमि सर्वथा गङ्गाय ।
मज्जन करिब एत बलि चलि याय ॥१०८
मत सिंह प्राय चलिलेन गौरसिंह ।
पाछे धाइलेन सब चरणेर भृङ्ग ॥१०९
गङ्गादरशनाबेशे प्रभुर गमन ।
लाग नाहि पाय केहो यत भक्तगण ॥११०
सबे एक नित्यानन्दसिंह करि सङ्गे ।
सन्ध्याकाले गङ्गातीरे आइलेन रङ्गे ॥१११

नित्यानन्द सङ्गे करि गङ्गाय मज्जन ।
गङ्गा गङ्गा बलि बहु करिला क्रन्दन ॥११२
पूर्ण करि करिलेन गङ्गाजल पान ।
पुनःपुन स्तुति करि करेन प्रणाम ॥११३
प्रेमरसस्वरूप तोमार दिव्य जल ।
शिव ये तोमार तत्त्व जानेन सकल ॥११४
सकृत तोमार नाम करिले श्रवण ।
तार विष्णुभक्ति हय कि पुन भक्षण ॥११५
तोमार प्रसादे से श्रीकृष्ण हेन नाम ।
स्फुरये जीवेर मुखे इथे नाहि आन ॥११६
कीट पक्षी शृगाल कुक्कुर यदि हय ।
तथापि तोमार यदि निकटे वसय ॥११७
तथापि ताहार यत भाग्येर उपमा ।
अन्यत्रेर कोटीश्वर नहे तार समा ॥११८
पतित तारिते से तोमार अवतार ।
तोमार समान तुमि बइ नाइ आर ॥११९
एइमत स्तुति करे श्रीगौराङ्गसुन्दर ।
शुनिया जाह्नवी देवी लज्जित अन्तर ॥१२०
ये प्रभुर पादपद्मे वसति गङ्गार ।
से प्रभु करये स्तुति हेन अवतार ॥१२१
ये शुनये गौराङ्गेर गङ्गा प्रति स्तुति ।
तार हय श्रीकृष्णचैतन्ये रति मति ॥१२२
नित्यानन्द संहति से निशा सेइ ग्रामे ।
आछिलेन कोन पुण्यवन्तेर आश्रमे ॥१२३
तबे आर दिने कथोक्षणे भक्तगण ।
आसिया प्रभुर पाइलेन दरशन ॥१२४
तबे प्रभु सर्वभक्तगण करि सङ्गे ।
नीलाचल प्रति शुभ करिलेन रङ्गे ॥१२५
प्रभु बोले शुन नित्यानन्द महामति !
सत्वरे चलह तुमि नवद्वीप प्रति ॥१२६
श्रीवासादि यत आछे भागवतगण ।
सभार करह गिया दुःखविमोचन ॥१२७
एइ कथा तुमि गिया कहिओ सभारे ।
आमि याइ नीलाचलचन्द्र देखिबारे ॥१२८
सभार अपेक्षा आमि करि शान्तिपुरे ।
रहिबाङ श्रीअद्वैत आचार्य्येर घरे ॥१२९
ताँ'सभा लइया तुमि आसिबा सत्वरे ।
आमि याइ हरिदासेर फुलिया नगरे ॥१३०
नित्यानन्दे पाठाइया श्रीगौरसुन्दर ।
चलिलेन महाप्रभु फुलिया नगर ॥१३१
प्रभुर आज्ञाय महामल्ल नित्यानन्द ।
नवद्वीपे चलिलेन परम आनन्द ॥१३२
प्रेमरसे महामत्त नित्यानन्द राय ।
हुङ्कार गर्जन प्रभु करये सदाय ॥१३३
मत्त सिंह प्राय प्रभु आनन्दे विह्वल ।
विधि निषेधेर पार बिहार सकल ॥१३४
क्षणेके कदम्बवृक्षे करि आरोहण ।
बाजाय मोहन वेणु त्रिभङ्गमोहन ॥१३५
क्षणेके देखिया गोष्ठे गड़ागड़ि याय ।
वत्स प्राय हइया गावीर दुग्ध खाय ॥१३६
आपना आपनि सर्वपथे नृत्य करे ।
वाह्य नाहि जाने डुबे आनन्द सागरे ॥१३७
कखनो बा पथे वसि करेन रोदन ।
हृदय बिदरे ताहा करिते श्रवण ॥१३८
कखनो हासेन अति महा अट्ट हास ।
कखनो बा शिरे वस्त्र बान्धि दिगवास ॥१३९
कखनो बा स्वानुभावे अनन्त आबेशे ।
सर्प प्राय हइया गङ्गार स्रोते भासे ॥१४०
अनन्तेर भावे प्रभु गङ्गार उपरे ।
भासिया यायेन अति देखि मनोहरे ॥१४१

…अचिन्त्य अगम्य नित्यानन्देर महिमा ।
त्रिभुवने अद्वितीय कारुण्येर सीमा ॥१४२
एइमत गङ्गामध्ये भासिया भासिया ।
नवद्वीपे प्रभु घाटे मिलिला आसिया ॥१४३
आपना सम्वरि नित्यानन्द महाशय ।
प्रथमे उठिला आसि प्रभुर आलय ॥१४४
आसि देखे आइर द्वादश उपवास ।
सबे कृष्णशक्तिबले देहे आछे श्वास ॥१४५
यशोदार भावे आइ परम विह्वल ।
निरवधि नयने बहये प्रेमजल ॥१४६
यारे देखे आइ ताहारेइ वार्त्ता लय ।
मथुरार लोक कि तोमरा सब हय ?१४७
कह कह राम कृष्ण आछेन केमने ?
बलिया मूर्च्छित हइ पड़ये तखने ॥१४८
क्षणे बोले आइ ओइ शुनि शिङ्गा बाजे ।
अक्रूर आइल किवा पुन गोष्ठमाझे ॥१४९
एइमत आइ कृष्ण बिरह-सागरे ।
डुबिया आछेन वाह्य नाहि कलेवरे ॥१५०
नित्यानन्द महाप्रभु हेनइ समये ।
आइर चरणे आसि दण्डवत हये ॥१५१
नित्यानन्द देखि सब भागवतगण ।
उच्चस्वरे लागिलेन करिते क्रन्दन ॥१५२
बाप बाप ! बलि आइ हइला मूर्च्छित ।
ना जानिये के के बा पड़ये कोन् भित ॥१५३
नित्यानन्द महाप्रभु सभा'करि कोले ।
सिञ्चिलेन सभार शरीर प्रेमजले ॥१५४
शुभ वाणी नित्यानन्द कहेन सभारे ।
सत्वरे चलह सभे प्रभु देखिबारे ॥१५५
शान्तिपुर गेला प्रभु आचार्य्येर घरे ।
आमि आइलाम तोमा'सभारे निबारे ॥१५६

चैतन्यबिरहे जीर्ण सर्व भक्तगण ।
पूर्ण हैला शुनि नित्यानन्देर बचन ॥१५७
सभेइ हइला अति आनन्दे विह्वल ।
उठिल परमानन्द कृष्णकोलाहल ॥१५८
ये दिवसे गेला प्रभु करिते सन्न्यास ।
से दिवस अवधि आइर उपवास ॥१५९
द्वादश उपास तान नाहिक भोजन ।
चैतन्य प्रभावे सबे आछये जीवन ॥१६०
देखि नित्यानन्द बड़ दुःखित अन्तर ।
आइरे प्रबोधि बोले मधुर उत्तर ॥१६१
कृष्णेर रहस्य कोन् ना जान बा तुमि ।
तोमारे वा किबा कहिबारे जानि आमि ॥१६२
तिलार्द्धेको चित्ते नाहि करिह बिषाद ।
वेदेओ कि पाइवेन तोमार प्रसाद ॥१६३
वेदे यारे निरवधि करे अन्वेषण ।
से प्रभु तोमार पुत्र सभार जीवन ॥१६४
हेन प्रभु बक्षे हाथ दिया आपनार ।
आपने सकल भार लइल तोमार ॥१६५
व्यबहार परमार्थ यतेक तोमार ।
मोर दाय प्रभु बलियाछे बारबार ॥१६६
भाल हय येमते प्रभु से सब जाने ।
सुखे थाक तुमि देह समर्पिया ताने ॥१६७
शीघ्र गिया कर माता कृष्णेर रन्धन ।
आनन्दित हउक सकल भक्तगण ॥१६८
तोमार हस्तेर अन्ने सभाकार आश ।
तोमार उपासे हय कृष्णेर उपवास ॥१६९
तुमि ये नैवद्य कर करिया रन्धन ।
मोहोर एकान्त ताहा खाइबारे मन ॥१७०
तबे आइ शुनि नित्यानन्देर वचन ।
पासरि बिरह गेला करिते रन्धन ॥१७१

कृष्णेर नैवद्य करि आइ पुण्यवती ।
अग्रे दिला नित्यानन्दस्वरूपेर प्रति ॥१७२
तबे आइ सर्व वैष्णवेरे आगे दिया ।
करिलेन भोजन सभारे सन्तोषिया ॥१७३
परम आनन्द हइलेन भक्तगण ।
द्वादश उपासे आइ करिला भोजन ॥१७४
तबे सर्वभक्तगण नित्यानन्द सङ्गे ।
प्रभु देखिबारे सज्ज हइलेन रङ्गे ॥१७५
ए सब आख्यान यत नवद्वीपवासी ।
शुनिलेन गौरचन्द्र हइला सन्न्यासी ॥१७६
शुनिया अद्भुत नाम श्रीकृष्णचैतन्य ।
सर्वलोक 'हरि' बलि बोले धन्यधन्य ॥१७७
फुलिया नगरे प्रभु आछेन शुनिया ।
देखिते चलिला सर्वलोके हर्ष हञा ॥१७८
किबा बृद्ध किबा शिशु कि पुरुष नारी ।
आनन्दे चलिला सभे बलि हरिहरि ॥१७९
पूर्वे ये पाषण्डी सब करिल निन्दन ।
ताराओ सपरिबारे करिल गमन ॥१८०
गूढ़रूपे नवद्वीपे लइलेन जन्म ।
ना जानिया निन्दा करिलाम तान धर्म ॥१८१
एबे लइ गिया तान चरणे शरण ।
तबे सब अपराध हइबे खण्डन ॥१८२
एइमत बलि लोक महानन्दे याय ।
हेन नाहि जानि लोक कत पथे धाय ॥१८३
अनन्त अर्बुद लोक हैल खेयाघाटे ।
खेयारि करिते पार पड़िल सङ्कटे ॥१८४
केहो बान्धे भेला केहो घट बुके करे ।
केहो बा कलार गाच धरिया साँतरे ॥१८५
कत बा हइल लोक नाहि समुच्चय ।
ये येमते पारे सेइमते पार हय ॥१८६
सहस्रसहस्र लोक एको नाये चड़े ।
कथोदूर गिया मात्र नौका डुबि पड़े ॥१८७
भासे सर्व लोक हरि बोले उच्चस्वरे ।
तथापिह चित्ते केहो बिषाद ना करे ॥१८८
हेन से आनन्द जन्मि आछये अन्तरे ।
सर्वलोक भासे येन आनन्दसागरे ॥१८९
ये ना जाने साँतरिते सेहो भासे सुखे ।
ईश्वर प्रभावे कूल पाय विनि दुखे ॥१९०
कतदिगे लोक पार हय नाहि जानि ।
सबे एक चतुर्द्दिगे शुनि हरिध्वनि ॥१९१
एइमत आनन्दे चलिल सब लोक ।
पासरिया सभे क्षुधा तृष्णा गृह शोक ॥१९२
आइल सकल लोक फुलिया नगरे ।
ब्रह्माण्ड स्पर्शिया हरि बोले उच्चस्वरे ॥१९३
शुनिया अपूर्व अति उच्च हरिध्वनि ।
बाहिर हइला सर्व न्यासि शिरोमणि ॥१९४
कि अपूर्व शोभा से कथन किछु नय ।
कोटि चन्द्र येन आसि करिल उदय ॥१९५
सर्वदा श्रीमुखे हरे कृष्ण हरे हरे ।
बलिते आनन्दधारा निरवधि झरे ॥१९६
चतुर्द्दिगे सर्वलोक दण्डवत हय ।
के कार उपरे पड़े नाहि समुच्चय ॥१९७
कण्टकभूमिते लोक नाहि करे भय ।
आनन्दित सर्वलोक दण्डवत हय ॥१९८
सर्वलोक त्राहि त्राहि बले हात तुलि ।
एइमत करे गौरचन्द्र कुतूहली ॥१९९
अनन्त अर्वुद लोक एत से हइल ।
कि प्रान्तर किबा ग्राम सकल पूरिल ॥२००
नाना ग्राम हैते लोक लागिल आसिते ।
केहो नाहि याय घर से मुख देखिते ॥२०१

इते लागिल बड़ लोकेर गहल ।
फुलिया नगर पूर्ण हइल सकल ॥२०२
देखि गौरचन्द्रेर श्रीमुख मनोहर ।
सर्वलोक पूर्ण हैल बाहिर अन्तर ॥२०३
तबे प्रभु कृपादृष्टि करिया सभारे ।
चलिलेन शान्तिपुर आचार्य्येर घरे ॥२०४
सम्भ्रमे आचार्य्य देखि निज प्राणनाथ ।
पादपद्मे पड़िलेन हइ दण्डपात ॥२०५
आर्त्तनादे लागिलेन क्रन्दन करिते ।
ना छाड़ेन पादपद्म दुइबाहु हैते ॥२०६
श्रीचरण अभिषेक करि प्रेमजले ।
आनन्दे मूर्च्छित हइलेन पदतले ॥२०७
दुइ हस्ते तुलि प्रभु लइलेन कोले ।
आचार्य्य भासिला ठाकुरेर प्रेमजले ॥२०८
स्थिर हइ ठाकुर वसिला कथोक्षणे ।
उठिल परमानन्द अद्वैत भवने ॥२०९
दिगम्बर शिशुरूप अद्वैततनय ।
नाम श्रीअच्युतानन्द महाज्योतिर्मय ॥२१०
परम सर्वज्ञ तिँहो अतर्क्य प्रभाव ।
योग्य अद्वैतेर पुत्र सेइ महाभाग ॥२११
धूलाय धूसर अङ्ग हासिते हासिते ।
जानिया आइला प्रभु चरण देखिते ॥२१२
आसिया पड़िला गौरचन्द्र पदतले ।
धूलार सहित प्रभु लइलेन कोले ॥२१३
प्रभु बोले अच्युत आचार्य्य मोर पिता ।
से सम्बन्धे तोमाय आमाय दुइ भ्राता ॥२१४
अच्युत बोलेन तुमि दैवे जीव सखा ।
तबे के तोमार बाप एइ नाहि लेखा ॥२१५
हासे प्रभु भक्तगण अच्युन वचने ।
विस्मय सभार बड़ उपजिल मने ॥२१६
"ए सकल कथा ता शिशुर कभु नय ।
ना जानि जन्मियाछेन कोन् महाशय ?"२१७
हेनइ समये श्री अनन्त नित्यानन्द ।
आइला नदीया हैते सङ्गे भक्तवृन्द ॥२१८
श्रीवासादि भक्तगण देखिया ठाकुर ।
लागिलेन हरिध्वनि करिते प्रचुर ॥२१९
दण्डवत हैया सकल भक्तगण ।
क्रन्दन करेन सभे धरि श्रीचरण ॥२२०
सभारे करिला प्रभु आलिङ्गन दान ।
सभेइ प्रभुर निज प्राणेर समान ॥२२१
आर्त्तनादे क्रन्दन करेन भक्तगण ।
शुनिया पवित्र हय सकल भुवन ॥२२२
कृष्णप्रेमानन्दे कान्दे ये सुकृति जन ।
से ध्वनि श्रवणे सर्व बन्ध विमोचन ॥२२३
चैतन्यकृपाय व्यक्त हैल हेन धन ।
ब्रह्मादिर दुर्ल्लभ रस भुञ्जे ये-ते जन ॥२२४
भक्तगण देखि प्रभु परम हरिषे ।
नृत्य आरम्भिला प्रभु निज प्रेम रसे ॥२२५
सत्वरे गाइते लागिलेन भक्तगण ।
बोल बोल बलि प्रभु गर्जे घनेघन ॥२२६
धरिया बुलेन नित्यानन्द महाबली ।
अलक्षिते अद्वैत लयेन पदधूली ॥२२७
अश्रु कम्प पुलक हुङ्कार अट्टहास ।
किबा अद्भुत अङ्गभङ्गीर प्रकाश ॥२२८
किबा से मधुर पद चालन भङ्गिमा ।
किबा से श्रीहस्त चालनादिर महिमा ॥२२९
कि कहिब से बा प्रेमरसेर माधुरी ।
आनन्दे तुलिया बाहु बोले हरिहरि ॥२३०
रसमय नृत्य अति अद्भुत कथन ।
देखिया परमानन्दे डुबे भक्तगण ॥२३१

हाराइयाछिला प्रभु सर्वभक्तगण ।
हेन प्रभु पुनर्व्वार दिला दरशन ॥२३२
आनन्दे नाहिक वाह्य काहारो शरीरे ।
प्रभु बेढ़ि सभेइ उल्लासे नृत्य करे ॥२३३
केबा कार गा'ये पड़े केबा कारे धरे ।
केबा कार चरण धरिया वक्षे करे ॥२३४
के बा कारे धरि कान्दे के बा किबा बोले ।
केहो किछु ना जाने प्रेमेर कुतूहले ॥२३५
सपार्षदे नृत्य करे वैकुण्ठ ईश्वर ।
एमत अपूर्व हय पृथिवी भितर ॥२३६
हरि बोल हरि बोल हरि बोल भाइ !
इहा बइ आर किछु शुनिते ना पाइ ॥२३७
कि आनन्द हइल से अद्वैत भवने ।
से मर्म्म जानेन सबे सहस्रवदने ॥२३८
आपने ठाकुर तबे धरि जने जने ।
सर्व वैष्णवेरे करे प्रेम आलिङ्गने ॥२३९
पाइया वैकुण्ठनायकेर आलिङ्गन ।
विशेष आनन्दे मत्त हय भक्तगण ॥२४०
हरि बलि सर्व-गणे करे सिंहनाद ।
पुनःपुन बाढ़े आरो सभार उन्माद ॥२४१
साङ्गोपाङ्गे नृत्य करे वैकुण्ठेर पति ।
पदभरे टलमल करे वसुमती ॥२४२
नित्यानन्द महाप्रभु परम उद्दाम ।
चैतन्य बेढ़िया नाचे महाज्योतिर्धाम ॥२४३
आनन्दे अद्वैत नाचे करये हुङ्कार ।
सभेइ चरण धरे—ये पाय याहार ॥२४४
नवद्वीप येन हैल आनन्द प्रकाश ।
सेइमत नृत्य गीत, सकल विलास ॥२४५
कथोक्षणे महाप्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
स्वानुभावे वैसे विष्णुखट्टार उपर ॥२४६

जोड़हाथे सभे रहिलेन चारिभिते ।
प्रभु लागिलेन निज तत्त्व प्रकाशिते ॥२४७
मुञि कृष्ण मुञि राम मुञि नारायण ।
मुञि मत्स्य मुञि कूर्म बराह वामन ॥२४८
मुञि पृश्निगर्भ हयग्रीव महेश्वर ।
मुञि बुद्ध कल्कि हंस मुञि हलधर ॥२४९
मुञि नीलाचलचन्द्र कपिल नृसिंह ।
दृश्यादृश्य सब मोर चरणेर भृङ्ग ॥२५०
मोर यश गुणग्राम बोले सर्ववेदे ।
मोहोरे से अनन्त ब्रह्माण्ड कोटि सेवे ॥२५१
मुञि सर्व-कालरूपी भक्तगण विने ।
सकल आपद खण्डे मोहोर स्मरणे ॥२५२
द्रौपदीरे लज्जा हैते मुञि उद्धारिलुँ ।
जतु गृहे मुञि पञ्च पाण्डवे राखिलुँ ॥२५३
वृकासुर बधि मुञि राखिलुँ शङ्कर ।
मुञि उद्धारिलुँ मोर गजेन्द्र किङ्कर ॥२५४
मुञि से करिलुँ प्रह्लादेरे बिमोचन ।
मुञि से करिलुँ गोपवृन्देरे रक्षण ॥२५५
मुञि से करिलुँ पूर्वे अमृतमन्थन ।
बञ्चिया असुर रक्षा कैलुँ देवगण ॥२५६
मुञि से बधिलुँ मोर भक्तद्रोही कंस ।
मुञि से करिलुँ दुष्ट रावण निर्वंश ॥२५७
मुञि से धरिलुँ वाम हाथे गोवर्द्धन ।
मुञि से करिलुँ कालि नागेर दमन ॥२५८
मुञि करोँ सत्ययुगे तपस्या प्रचार ।
त्रेतायुगे यज्ञ लागि करोँ अवतार ॥२५९
एइ मुञि अवतीर्ण हइया द्वापरे ।
पूजा धर्म बुझाइलुँ सकल लोकेरे ॥२६०
कत मोर अवतार वेदेओ ना जाने ।
सम्प्रति आइलुँ मुञि कीर्त्तन कारणे ॥२६१

कीर्तन आरम्भे प्रेमभक्तिर विलास ।
अतएव कलियुगे आमार प्रकाश ॥२६२
सर्व वेदे पुराणे आश्रय मोर चाय ।
भक्तेर आश्रये मुञि थाकोँ सर्वदाय ॥२६३
भक्त वइ आमार द्वितीय आर नाइ ।
भक्त मोर पिता माता बन्धु पुत्र भाइ ॥२६४
यद्यपि स्वतन्त्र आमि स्वतन्त्र-बिहार ।
तथापिह भक्तबश स्वभाव आमार ॥२६५
तोमरा से जन्मजन्म संहति आमार ।
तोमा'सभा लागि मोर सर्व अवतार ॥२६६
तिलार्द्धेको आमि तोमा'सभारे छाड़िया ।
कोथाओ ना थाकि सभे सत्य जान इहा ॥२६७
एइमत प्रभु तत्त्व कहे करुणाय ।
शुनि सब भक्तगण कान्दे ऊर्द्ध्व रा'य ॥२६८
पुनःपुन सभे दण्डप्रणाम करिया ।
उठेन पड़ेन काकु करेन कान्दिया ॥२६९
कि आनन्द हइल से अद्वैतेर घरे ।
ये रस हइल पूर्वे नदीया नगरे ॥२७०
पूर्णमनोरथ हइलेन भक्तगण ।
अनेक पूर्वेर दुःख हइल खण्डन ॥२७१
प्रभु से जानेन भक्त दुःख खण्डाइते ।
हेन प्रभु दुःखी जीव ना भजे केमते ॥२७२
करुणासागर गौरचन्द्र महाशय ।
दोष नाहि देखे प्रभु, गुण मात्र लय ॥२७३
क्षणेके ऐश्वर्य्य सम्वरिया महाधीर ।
बाह्य प्रकाशिया प्रभु हइलेन स्थिर ॥२७४
सभारे लइया प्रभु गङ्गास्नाने गेला ।
जाह्नवीते बहुविध जलक्रीड़ा कैला ॥२७५
सभार सहित आइलेन करि स्नान ।
तुलसीरे प्रदक्षिण करि जलदान ॥२७६
विष्णु गृहे प्रदक्षिण नमस्कार करि ।
सभा लइ भोजने वसिला गौरहरि ॥२७७
मध्ये वसिलेन प्रभु नित्यानन्द सङ्गे ।
चतुर्द्दिगे सर्व-गण वसिलेन रङ्गे ॥२७८
सर्वाङ्गे चन्दन प्रभु प्रफुल्ल वदन ।
भोजन करेन चतुर्द्दिगे भक्तगण ॥२७९
वृन्दावन मध्ये येन गोपगण सङ्गे ।
राम कृष्ण भोजन करेन सेइ रङ्गे ॥२८०
सेइ सब कथा प्रभु सभारे कहिया ।
भोजन करेन प्रभु हासिया हासिया ॥२८१
कार शक्ति आछे इहा सब वर्णिबारे ।
ताँहार कृपाय येन बोलान याहारे ॥२८२
भोजन करिया प्रभु चलिलेन मात्र ।
भक्तगण लुटि खाइलेन शेष पात्र ॥२८३
भव्यभव्य वृद्ध सब हैला शिशुमनि ।
एइमत हय विष्णुभक्तिर शकति ॥२८४
ये सुकृति जने शुने ए सब आख्यान ।
ताहारे मिलये गौरचन्द्र भगवान् ॥२८५
पुन प्रभु सङ्गे भक्तगण दरशन ।
पुनर्वार ऐश्वर्य्य आबेशे सङ्कीर्त्तन ॥२८६
सर्ववैष्णवेरे प्रभु संहति भोजन ।
इहा ये शुनये तारे मिले प्रेमधन ॥२८७
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥२८८

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे आचार्य्यगृहे पुनःसम्मेलनं नाम प्रथमोऽध्यायः ।

द्वितीय अध्याय

जयजय गौरचन्द्र जय सर्वप्राण ।
जय दुष्ट भयङ्कर जय शिष्ट त्राण ॥१
जय शेष रमा अज भवेर ईश्वर ।
जय कृपासिन्धु दीनबन्धु न्यासिवर ॥२
भक्तगोष्ठी सहित गौराङ्ग जयजय ।
कृपाकर प्रभु! येन तोँहे मन रय ॥३
हेनमते श्रीगौरसुन्दर शान्तिपुरे ।
करिला अशेष रङ्ग अद्वैतेर घरे ॥४
बहुविध आपन रहस्य कथा रङ्गे ।
सुखे प्रभु रात्रि गोङाइला भक्त सङ्गे ॥५
पोहाइल निशा प्रभु करि नृत्य कृत्य ।
वसिलेन चतुर्द्दिगे बेढ़ि सब भृत्य ॥६
प्रभु बोले आमि चलिलाम नीलाचले ।
किछु दुःख ना भाबिह तोमरा सकले ॥७
नीलाचलचन्द्र देखि आमि पुनर्व्वार ।
आसिया हइब सङ्ग तोमा'सभाकार ॥८
सभे गिया गृहे सुखे करह कीर्त्तन ।
जन्मजन्म तुमि सब आमार जीवन ॥९
भक्तगण बोले प्रभु ये तोमार इच्छा ।
कार शक्ति ताहा करिबारे पारे मिछा ॥१०
तथापिह हइयाछे दुर्घट समय ।
से राज्ये एखने केहोपथ नाहि बय ॥११
दुइ राजाय हइयाछे अत्यन्त विबाद ।
महायुद्ध स्थाने स्थाने परम प्रमाद ॥१२
याबत उत्पात किछु उपशम हय ।
ताबत बिश्राम कर यदि चित्ते लय ॥१३
प्रभु बोले ये से केने उत्पात ना हय ।
अवश्य चलिब आमि करिल निश्चय ॥१४
बुझिलेन अद्वैत प्रभुर चित्तबृत्त ।
चलिबेन नीलाचले नहिला निवृत्त ॥१५
जोड़हाथे सत्य कथा लागिला कहिते ।
के पारे तोमार पथ निरोध करिते ?१६
सर्व विघ्न–किङ्करेर किङ्कर तोमार ।
तोमार करिते विघ्न शक्ति आछे कार ॥१७
यखने करिया आछ चित्त नीलाचले ।
तखने चलिबा प्रभु महाकुतूहले ॥१८
शुनिया अद्वैतवाक्य प्रभु सुखी हैला ।
परम सन्तोषे हरि बलिते लागिला ॥१९
सेइक्षणे महाप्रभु मत्त सिंह गति ।
चलिलेन शुभ करि नीलाचल प्रति ॥२०
धाइया चलिला पाछे सर्वभक्तगण ।
केहो नाहि पारे सम्वरिबारे क्रन्दन ॥२१
कथोदूरे गिया प्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
सभा' प्रबोधेन बलि मधुर उत्तर ॥२२
"चित्ते केहो कोनो किछु ना भाबिह व्यथा ।
तोमा'सभा' आमि नाहि छाड़िब सर्वथा ॥२३
कृष्णनाम लह सभे वसि गिया घरे ।
आमिह आसिब दिन कथोक भितरे ।।"२४
एत बलि महाप्रभु सर्ववैष्णवेरे ।
प्रत्येके प्रत्येक धरि आलिङ्गन करे ॥२५
प्रभुर नयनजले सर्वभक्तगण ।
सिञ्चित हइया अङ्ग करेन क्रन्दन ॥२६
एइमत नानारूपे सभा प्रबोधिया ।
चलिलेन प्रभु दक्षिणाभिमुख हैया ॥२७
कान्दिया कान्दिया प्रेमे सब भक्तगण ।
उठेन पड़ेन पृथिवीते अनुक्षण ॥२८
येन गोपीगण कृष्ण मथुरा चलिले ।
डुबिलेन महाशोकसमुद्रेर जले ॥२९
येरूपे रहिल ताँहा सभार जीवन ।
सेइमत बिरहे रहिला भक्तगण॥३०

...अध्याय

...से-इ से प्रभु, भक्तगण से-इ सब ।
...जाओ से-इ से, से-इ से अनुभब ॥३१
...करेत मने कृष्ण इच्छाय से हय ।
...ना अमृत भक्षिलेओ किछु नय ॥३२
...ते याहारे कृष्णचन्द्र राखे मारे ।
...बइ आर केहो करिते ना पारे ॥३३
...मते गौराङ्गसुन्दर नीलाचले ।
...लेन चलिया आपन कुतूहले ॥३४
...त्यानन्द गदाधर मुकुन्द गोविन्द ।
...ति जगदानन्द आर ब्रह्मानन्द ॥३५
...प्रभु परीक्षा करेन सभा' प्रति ।
...सम्वल आछे कह काहार संहति ॥३६
...ना कि दियाछे कारे पथेर सम्वल ।
...कपटे मोर स्थाने कह त सकल ॥३७
...बोले प्रभु विना तोमार आज्ञाय ।
...द्रव्य लइते शक्ति आछे बा काहाय ॥३८
...या ठाकुर बड़ सन्तोष हइला ।
...सेइ लक्ष्ये तत्त्व कहिते लागिला ॥३९
...बोले काहारो ये किछु ना लइला ।
...ते आमार बड़ सन्तोष करिला ॥४०
...तव्य अदृष्टे थाके ये दिने लिखन ।
...येओ आसि मिले अवश्य तखन ॥४१
...यारे ये दिने बा ना लिखे आहार ।
...पुत्र हउ तभो उपवास तार ॥४२
...कोलेओ खाइते ना पारे आज्ञा विने ।
...कस्मात कन्दल करये कारो सने ॥४३
...न करि बोले मुञि ना खाइमु भात ।
...ध करि रहे निज शिरे दिया हाथ ॥४४
...सा सकल द्रव्य हैल विद्यमान ।
...निते देहे ज्वर हैल अधिष्ठान ॥४५

ज्वरवेदनाय कोथा थाकिल भक्षण ।
अतएब ईश्वरेर इच्छा से कारण ॥४६
त्रिभुवने कृष्ण दियाछेन अन्नछत्र ।
ईश्वरेर इच्छा थाके मिलिब सर्वत्र ॥४७
आपने ईश्वर सर्वजनेरे शिखाय ।
इहाते विश्वास यार से-इ सुख पाय ॥४८
ये ते मते केने कोटि प्रयत्न ना करे ।
ईश्वरेर इच्छा हइले से फल से धरे ॥४९
हेनमते प्रभु तत्त्व कहिते कहिते ।
उत्तरिला आसि आटिसारा नगरेते ॥५०
सेइ आटिसारा ग्रामे महाभाग्यवान् ।
आछेन परम साधु श्रीअनन्त नाम ॥५१
रहिलेन प्रभु आसि ताँहार आलय ।
कि कहिब आर ताँर भाग्य समुच्चय ॥५२
अनन्त पण्डित अति परम उदार ।
पाइया परमानन्द वाह्य नाहि आर ॥५३
वैकुण्ठेर पति आसि अतिथि हइला ।
सन्तोषे भिक्षार सज्ज करिते लागिला ॥५४
सर्व-गण सह प्रभु करिलेन भिक्षा ।
सन्न्यासीर भिक्षा धर्म कराइला शिक्षा ॥५५
सर्वरात्रि कृष्ण कथा कीर्त्तन प्रसङ्गे ।
आछिलेन अनन्तपण्डित गृहे रङ्गे ॥५६
शुभ दृष्टि अनन्तपण्डित प्रति करि ।
प्रभाते चलिला प्रभु बलि हरिहरि ॥५७
एइमत प्रभु जाह्नवीर कूलेकूले ।
आइलेन छत्रभोग महाकुतूहले ॥५८
सेइ छत्रभोगे गङ्गा हइ शतमुखी ।
बहिते पाछेन सर्वलोके करि सुखी ॥५९
जलमय शिवलिङ्ग आछे सेइस्थाने ।
'अम्बुलिङ्गघाट' करि बोले सर्वजने ॥६०

अम्बुलिङ्ग शङ्कर हइला ये निमित्त ।
सेइ कथा कहि शुन हइ एकचित्त ॥६१
पूर्वे भगीरथ करि गङ्गा आराधन ।
गङ्गा आनिलेन वंश उद्धार कारण ॥६२
गङ्गार बिरहे शिव विह्वल हइया ।
शिव आइलेन शेषे गङ्गा स्मङरिया ॥६३
गङ्गारे देखिया शिव सेइ छत्रभोगे ।
विह्वल हइला अति गङ्गा अनुरागे ॥६४
गङ्गा देखि मात्र शिव गङ्गाय पड़िला ।
जलरूपे शिव जाह्नवीते मिशाइला ॥६५
जगन्माता जाह्नवीओ देखिया शङ्कर ।
पूजा करिलेन भक्ति करिया बिस्तर ॥६६
शिव ये जानेन गङ्गाभक्तिर महिमा ।
गङ्गाओ जानेन शिवभक्तिर ये सीमा ॥६७
गङ्गाजल स्पर्शे शिव हैला जलमय ।
गङ्गाओ पाइया शिव करिला विनय ॥६८
जलरूपे शिव रहिलेन सेइस्थाने ।
'अम्बुलिङ्गघाट' बलि घोषे सर्वजने ॥६९
गङ्गा शिव प्रभावे से छत्रभोग ग्राम ।
हइला परम धन्य महातीर्थ नाम ॥७०
तथि मध्ये विशेष महिमा हैल आर ।
पाइया चैतन्यचन्द्र चरण बिहार ॥७१
छत्रभोग गेला प्रभु अम्बुलिङ्गघाटे ।
शतमुखी गङ्गा प्रभु देखिला निकटे ॥७२
देखिया हइला प्रभु आनन्दे विह्वल ।
हरि बलि हुङ्कार करेन कोलाहल ॥७३
आछाड़ खायेन नित्यानन्द कोले करि ।
सर्वगणे जय दिया बोले 'हरिहरि' ॥७४
आनन्द आबेशे प्रभु सर्व-गण लैया ।
सेइ घाटे स्नान करिलेन सुखी हैया ॥७५
अनेक कौतुके प्रभु करिलेन स्नाने ।
वेदव्यास ताहा सब लिखिब पुराणे ॥७६
स्नान करि महाप्रभु उठिलेन कूले ।
येइ वस्त्र परे सेइ तिते प्रेमजले ॥७७
पृथिवीते बहे एक शतमुखी धार ।
प्रभुर नयने बहे शतमुखी आर ॥७८
अपूर्व देखिया सभे हासे भक्तगण ।
हेन महाप्रभु गौरचन्द्रेर क्रन्दन ॥७९
सेइ ग्रामे अधिकारी रामचन्द्रखान ।
यद्यपि विषयी तभु महाभाग्यवान् ॥८०
अन्यथा प्रभुर सङ्गे तान देखा केने ।
दैवगति आसिया मिलिला सेइस्थाने ॥८१
देखिया प्रभुर तेज भय हैल मने ।
दोला हैते सत्वरे नामिला सेइक्षणे ॥८२
दण्डवत हइया पड़िला भूमितले ।
प्रभुर नाहिक वाह्य प्रेमानन्दजले ॥८३
हा हा जगन्नाथ ! प्रभु बोले घनेघन ।
पृथिवीते पड़ि घन करये क्रन्दन ॥८४
देखिया प्रभुर आर्त्ति रामचन्द्रखान ।
अन्तरे बिदीर्ण हैल सज्जनेर प्राण ॥८५
"कोन् मते ए आर्त्ति हय सम्वरण ।"
कान्दे आर एइमत चिन्ते मनेमन ॥८६
त्रिभुवने हेन आछे देखि से क्रन्दन ।
बिदीर्ण ना हय काष्ठ पाषाणेर मन ॥८७
किछु स्थिर हइ वैकुण्ठेर चूड़ामणि ।
रामचन्द्रखाने जिज्ञासिलेन "के तुमि ?"८८
सम्भ्रमे करिया दण्डवत करजोड़ ।
बोले प्रभु दास-अनुदास मुञि तोर ॥८९
तबे शेषे सर्व लोक लागिला कहिते ।
एइ अधिकारी प्रभु दक्षिण राज्येते ॥९०

…भु बोले तुमि अधिकारी बड़ भाल ।
…ीलाचले आमि याइ केमते सकाल ॥९१
…हये आनन्दधारा कहिते कहिते ।
…ीलाचलचन्द्र बलि पड़िला भूमिते ॥९२
रामचन्द्रखान बोले सुन महाशय !
…ये आज्ञा तोमार से-इ कर्त्तव्य निश्चय ॥९३
…बे प्रभु ! हइयाछे विषम समय ।
…दे देशे ए देशे केहो पथ नाहि बय ॥९४
…जार त्रिशूल पुँथियाछे स्थाने स्थाने ।
…थिक पाइले जाशु बलि लय प्राणे ॥९५
…ोन् दिग् दिया बा पाठाङ लुकाइया ।
…ाहाते डराङ प्रभु ! शुन मन दिया ॥९६
…ुनि से नस्कर एथाकार मोर भार ।
…ागालि पाइले आगे संशय आमार ॥९७
…थापिह ये-ते केने प्रभु मोर नय ।
… तोमार आज्ञा ताहा करिमु निश्चय ॥९८
…दि मोरे भृत्य हेन ज्ञाने थाके मने ।
… आजि एथा भिक्षा कर सर्व-गणे ॥९९
…ाति प्राण धन केने मोहोर ना याय ।
…ग्ये आजि तोमा पाठाइमु सर्वथाय ॥१००
…ुनिया हइला सुखी वैकुण्ठेर नाथ ।
…सि ताने करिलेन शुभदृष्टिपात ॥१०१
…ष्टि मात्र ताँर सर्व बन्ध क्षय करि ।
…ाह्मण आश्रमे रहिलेन गौरहरि ॥१०२
…ाह्मण मन्दिरे हैल परम मङ्गल ।
…क्ष पाइल सर्व सुकृतेर फल ॥१०३
…ा यत्ने दृढ़ भक्तियोग चित्त हैया ।
…ुर रन्धन विप्र करिलेन गिया ॥१०४
…म मात्र ठाकुर से करेन भोजन ।
…ावेशे अवकाश नाहि ताँर क्षण ॥१०५

भिक्षा करे प्रभु प्रियवर्ग सन्तोषार्थ ।
निरवधि प्रभुर भोजन परमार्थ ॥१०६
विशेषे चलिला ये अवधि जगन्नाथे ।
नाम से भोजन प्रभु करे सेइ हैते ॥१०७
निरवधि जगन्नाथ प्रति आर्त्ति करि ।
आइसेन सर्व पथ आपना पासरि ॥१०८
कारे बलि रात्रि दिन पथेर सञ्चार ।
किबा जल किबा स्थल पार बाओ पार ॥१०९
किछुइ ना जाने प्रभु डुबि भक्तिरसे ।
प्रियवर्ग राखे निरवधि रहि पाशे ॥११०
ये आबेशे महाप्रभु करेन प्रकाश ।
ताहा के कहिते पारे विने वेदव्यास ॥१११
ईश्वरेर चरित्र बुझिते शक्ति कार ।
कखन किरूपे कृष्ण करेन बिहार ॥११२
कारे बा करेन आर्त्ति कान्देन काहारे ।
ए मर्म जानिते नित्यानन्द शक्ति धरे ॥११३
निज भक्ति रसे डुबि वैकुण्ठेर राय ।
आपना ना जाने प्रभु आपन लीलाय ॥११४
आपनेइ जगन्नाथ भावेन आपने ।
आपने करिया आर्त्ति लओयायेन जने ॥११५
यदि कृपादृष्टि ना करेन जीव प्रति ।
तबे कार आछे ताने जानिते शकति ॥११६
नित्यानन्द आदि सर्व प्रियवर्ग लैया ।
भोजन करिते प्रभु वसिलेन गिया ॥११७
किछु मात्र अन्न प्रभु परिग्रह करि ।
उठिलेन हुङ्कार करिया गौरहरि ॥११८
आविष्ट हइला प्रभु करि आचमन ।
कतदूर जगन्नाथ ? बोले घनेघन ॥११९
मुकुन्द लागिला मात्र कीर्त्तन करिते ।
आरम्भिला वैकुण्ठेर ईश्वर नाचिते ॥१२०

पुण्यवन्त यतयत छत्रभोगवासी।
सभे देखे नृत्य करे वैकुण्ठ विलासी ॥१२१

अश्रु कम्प हुङ्कार पुलक स्तम्भ घर्म।
कत हय के जाने बिकारेर मर्म ॥१२२

किबा से अद्भुत नयनेर प्रेम-धार।
भाद्रमासे ये हेन गङ्गार अवतार ॥१२३

पाक दिया नृत्य करिते ये छुटे जल।
ताहातेइ लोक स्नान करिल सकल ॥१२४

इहारे से कहि प्रेममय अवतार।
ए शक्ति चैतन्यचन्द्र विने नाहि आर ॥१२५

एइमते गेल रात्रि द्वितीय प्रहर।
स्थिर हइलेन प्रभु श्रीगौराङ्ग सुन्दर ॥१२६

सकल लोकेर चित्ते येन क्षणप्राय।
सभार निस्तार हइल चैतन्यकृपाय ॥१२७

हेनइ समय कहे रामचन्द्रखान।
नौका आसि घाटे प्रभु हैल विद्यमान ॥१२८

सेइक्षणे हरि बलि श्रीगौरसुन्दर।
उठिलेन गिया प्रभु नौकार उपर ॥१२९

शुभदृष्टेच लोकेरे बिदाय दिया घरे।
चलिलेन प्रभु नीलाचल निजपुरे ॥१३०

प्रभुर आज्ञाय श्रीमुकुन्द महाशय।
कीर्त्तन करेन प्रभु नौकाय विजय ॥१३१

अबुध नाइया बोले हइल संशय।
बुझिलाम आजि आर प्राण नाहि रय ॥१३२

कूले उठिले से बाघे लइया पलाय।
जले से पड़िले बोल कुम्भीरेइ खाय ॥१३३

निरन्तर ए पानीते डाकाइत फिरे।
पाइलेइ धन प्राण दुइ नाश करे ॥१३४

एतेके यावत उड़ियार देश पाइ।
ताबत नीरब हओ सकल गोसाञि ! १३५

सङ्कोच हइल सभे नाइयार बोले।
प्रभु से भासेन निरवधि प्रेमजले ॥१३६

क्षणेके उठिला प्रभु करिया हुङ्कार।
सभाके बोलेन केने भय कर कार ॥१३७

एइ ना सम्मुखे सुदर्शनचक्र फिरे।
वैष्णवजनेर निरवधि बिघ्न हरे ॥१३८

किछु चिन्ता नाहि कर कृष्णसङ्कीर्त्तन।
तोरा कि ना देख हेर फिरे सुदर्शन ॥१३९

शुनिया प्रभुर वाक्य सर्वभक्तगण।
आनन्दे लागिला सभे करिते कीर्त्तन ॥१४०

व्यपदेशे महाप्रभु कहेन सभारे।
निरवधि सुदर्शन भक्तरक्षा करे ॥१४१

ये पापिष्ठ वैष्णवेर पक्ष हिंसा करे।
सुदर्शन अग्निते से पापी पुड़ि मरे ॥१४२

विष्णुचक्र सुदर्शन रक्षक थाकिते।
कार् शक्ति आछे भक्तजनेरे लङ्घिते ॥१४३

एइमत श्रीगौरचन्द्रेर गोप्य कथा।
तान कृपा यारे से-इ बुझये सर्वथा ॥१४४

हेनमते महाप्रभु सङ्कीर्त्तनरसे।
प्रवेश हइला आसि श्रीउत्कलदेशे ॥१४५

उत्तरिला गिया नौका श्रीप्रयागघाटे।
नौका हैते महाप्रभु उठिलेन तटे ॥१४६

प्रवेश करिला गौरचन्द्र ओड्रदेशे।
इहा ये शुनये से भासये प्रेमरसे १४७

आनन्दे ठाकुर ओड्रदेश हइ पार।
सर्व-गण सहित हइला नमस्कार ॥१४८

सेइस्थाने आछे तार गङ्गाघाट नाम।
तहिँ गौरचन्द्र प्रभु करिलेन स्नान ॥१४९

युधिष्टिर स्थापित महेश तथा आछे।
स्नान करि ताँरे नमस्करिलेन पाछे ॥१५०

ओड़्देशे प्रवेश करिला गौरचन्द्र ।
गण-सह हइलेन परम आनन्द ॥१५१
एक देवस्थाने प्रभु थुइया सभारे ।
आपने चलिला प्रभु भिक्षा करिबारे ॥१५२
यार घरे गिया प्रभु उपसन्न हय ।
से विग्रह देखिते काहार मोह नय ॥१५३
आँचल पातेन प्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
सभेइ तण्डुल आनि देयेन सत्वर ॥१५४
भक्ष्य द्रव्य उत्कृष्ट ये थाके यार घरे ।
सन्तोषे सभेइ आनि देन प्रभु करे ॥१५५
जगतेर अन्नपूर्णा ये लक्ष्मीर नाम ।
से लक्ष्मी मागेन याँर पादपद्मे स्थान ॥१५६
हेन प्रभु आपने सकल घरेघरे ।
न्यासिरूपे भिक्षा छले जीव धन्य करे ॥१५७
भिक्षा करि प्रभु हइ हरषित मन ।
आइलेन यथा वसि आछेन भक्तगण ॥१५८
भक्ष्य द्रव्य देखि सभे लागिला हासिते ।
सभेइ बोलेन प्रभु ! पारिबा पुषिते ॥१५९
सन्तोषे जगदानन्द करिला रन्धन ।
सभार संहति प्रभु करिला भोजन ॥१६०
सर्व रात्रि सेइ ग्रामे करि सङ्कीर्त्तन ।
उषःकाले महाप्रभु करिला गमन ॥१६१
कथो दूरे गेले मात्र दानी दुराचार ।
राखिलेक दान चाहे ना देय याइबार ॥१६२
देखिया प्रभुर तेज पाइल विस्मय ।
जिज्ञासिल तोमार कतेक लोक हय ?१६३
प्रभु कहे जगते आमार केहो नय ।
आमिह काहारो नहि कहिल निश्चय ॥१६४
एक आमि दुइ नाहि सर्वथा आमार ।
कहिते नयने बहे अविरत धार ॥१६५

दानी बोले गोसाञि ! करह शुभ तुमि ।
ए सभार दान पाइले छाड़ि दिब आमि ॥१६६
शुभ करिलेन प्रभु गोविन्द बलिया ।
कथोदूरे सभा छाड़ि वसिलेन गिया ॥१६७
सभा परिहरि प्रभु करिला गमन ।
हरिष बिषाद हइलेन भक्तगण ॥१६८
देखिया प्रभुर अति निरपेक्ष खेला ।
अन्योऽन्ये सर्व-गणे हासिते लागिला ॥१६९
पाछे प्रभु सभा छाड़ि करेन गमन ।
एतेके बिषाद आसि धरिलेक मन ॥१७०
प्रबोधिया नित्यानन्द बोले चिन्ता नाञि ।
आमा'सभा छाड़ि ना याइबेन गोसाञि ॥१७१
दानी बोले तोमरा त सन्न्यासीर नह ।
एतेके आमार ये उचित दान देह ॥१७२
कथो दूरे प्रभु सर्व पार्षद छाड़िया ।
हेटमाथ करि मात्र कान्देन वसिया ॥१७३
काष्ठ पाषाणादि द्रबे शुनिया क्रन्दन ।
अद्भुत देखिया दानी गणे मनेमन ॥१७४
दानी बोले ए पुरुष नर कभु नय ।
मनुष्येर नयने कि एत जल हय ॥१७५
सभारे जिज्ञासे दानी प्रणति करिया ।
के तोमरा कार लोक कह त भाङ्गिया ?१७६
सभे बलिलेन ओइ ठाकुर सभार ।
श्रीकृष्णचैतन्य नाम शुनियाछ याँर ॥१७७
सभेइ उहार भृत्य आमरा सकल ।
कहिते सभार आँखि बहि पड़े जल ॥१७८
देखिया सभार प्रेम मुग्ध हैल दानी ।
दानीर नयन दुइ बहि पड़े पानी ॥१७९
आथेव्यथे दानी गिया प्रभुर चरणे ।
दण्डवत हइ बोले विनय वचने ॥१८०

कोटिकोटि जन्मे यत आछिल मङ्गल ।
तोमा देखि आजि पूर्ण हइल सकल ॥१८१
अपराध क्षमा कर करुणासागर !
चल नीलाचल गिया देखह सत्वर ॥१८२
दानी प्रति करि प्रभु शुभदृष्टिपात ।
हरि बलि चलिलेन सर्वजीवनाथ ॥१८३
सभार करिब गौरसुन्दर उद्धार ।
विना पापी वैष्णवनिन्दक दुराचार ॥१८४
असुर द्रबिल चैतन्येर गुण नामे ।
अत्यन्त दुष्कृति पापी से-इ नाहि माने ॥१८५
हेनमते नीलाचले वैकुण्ठेर नाथ ।
आइसेन सभारे करिया दृष्टिपात ॥१८६
निज प्रेमानन्दे प्रभु पथ नाहि जाने ।
अहर्निश सुविह्वल प्रेमरसपाने ॥१८७
एइमते महाप्रभु चलिया आसिते ।
कथो दिने उत्तरिला सुवर्णरेखाते ॥१८८
सुवर्णरेखार जल परम निर्मल ।
स्नान करिलेन प्रभु वैष्णव सकल ॥१८९
स्नान करि स्वर्णरेखा नदी धन्य करि ।
चलिलेन श्रीगौरसुन्दर नरहरि ॥१९०
रहिला अनेक पाछे नित्यानन्दचन्द्र ।
संहति ताँहार सभे श्रीजगदानन्द ॥१९१
कथो दूरे गौरचन्द्र वसिलेन गिया ।
नित्यानन्दस्वरूपेर अपेक्षा करिया ॥१९२
चैतन्य आवेशे मत्त नित्यानन्द राय ।
विह्वलेर प्राय व्यवसाय सर्वथाय ॥१९३
कखनो हुङ्कार करे कखनो रोदन ।
क्षणे महा अट्ट हास क्षणे बा गर्जन ॥१९४
क्षणे बा नदीर माझे एड़ेन साँतार ।
क्षणे सर्व अङ्गे धूला माखेन अपार ॥१९५
क्षणे बा ये आछाड़ खायेन प्रेमरसे ।
चूर्ण हय अङ्ग हेन सर्व लोक वासे ॥१९६
आपना आपनि नृत्य करेन कखने ।
टलमल करये पृथिवी सेइक्षणे ॥१९७
ए सकल कथा ताने किछु चित्र नय ।
अवतीर्ण आपने अनन्त महाशय ॥१९८
नित्यानन्द कृपाय ए सब शक्ति हय ।
निरवधि गौरचन्द्र याहार हृदय ॥१९९
नित्यानन्दस्वरूपे थुइया एक स्थाने ।
चलिला जगदानन्द भिक्षा अन्वेषणे ॥२००
ठाकुरेर दण्ड श्रीजगदानन्द बहे ।
दण्ड थुइ नित्यानन्दस्वरूपेरे कहे ॥२०१
ठाकुरेर दण्डे मन दिह सावधाने ।
भिक्षा करि आमिह आसिब एइक्षणे ॥२०२
आथेव्यथे नित्यानन्द दण्ड धरि करे ।
वसिलेन सेइ स्थाने विह्वल अन्तरे ॥२०३
दण्ड हाथे करि हासे नित्यानन्द राय ।
दण्डेर सहित कथा कहेन लीलाय ॥२०४
अये दण्ड ! आमि यारे बहिये हृदये ।
से तोमारे बहिबेक ए त युक्त नहे ॥२०५
एत बलि बलराम परम प्रचण्ड ।
फेलिलेन दण्ड भाङ्गि करि तिन खण्ड ॥२०६
ईश्वरेर इच्छा मात्र ईश्वर से जाने ।
केने भाङ्गिलेन जानिब केमने ॥२०७
नित्यानन्द ज्ञाता गौरचन्द्रेर अन्तर ।
नित्यानन्देरेओ जाने श्रीगौरसुन्दर ॥२०८
आगे येन दुइ भाइ श्रीरामलक्ष्मण ।
दोँहार अन्तर दोँहे जाने अनुक्षण ॥२०९
एक बस्तु दुइ भाग भक्ति बुझाइते ।
गौरचन्द्र जानि सभे नित्यानन्द हैते ॥२१०

...लराम विने अन्य चैतन्येर दण्ड ।
...भाङ्गिबारे पारे हेन के आछे प्रचण्ड ?२११
...कल बुझाय छले श्रीगौरसुन्दरे ।
...ये जानये मर्म सेइ जन सुखे तरे ॥२१२
...दण्ड भाङ्गि नित्यानन्द आछेन वसिया ।
...हेन काले जगदानन्द मिलिला आसिया ॥२१३
...भग्न दण्ड देख महा हइला बिस्मित ।
...अन्तरे जगदानन्द हइला चिन्तित ॥२१४
...वार्त्ता जिज्ञासेन दण्ड भाङ्गिलेक के ?
नित्यानन्द बोले दण्ड धरिलेक ये ॥२१५
...आपनार दण्ड प्रभु भाङ्गिला आपने ।
...ताँर दण्ड भाङ्गिते कि पारे अन्यजने ॥२१६
...शुनि विप्र आर ना करिला प्रत्युत्तर ।
...भाङ्गा दण्ड लइ मात्र चलिला सत्वर ॥२१७
...वसिया आछेन यथा श्रीगौरसुन्दर ।
...भाङ्गा दण्ड फेलि दिल प्रभुर गोचर ॥२१८
...प्रभु बोले कह दण्ड भाङ्गिले केमने ।
...पथे ना कि कोन्दल करिला कारो सने ?२१९
...कहिला जगदानन्दपण्डित सकल ।
...भाङ्गिलेन दण्ड नित्यानन्द सुविह्वल ॥२२०
...नित्यानन्द प्रति प्रभु जिज्ञासे आपनि ।
...कि लागि भाङ्गिला दण्ड कह देखि शुनि ॥२२१
...नित्यानन्द बोले भाङ्गियाछि बाँश खान ।
...ना पार क्षमिते कर ये शास्ति प्रमाण ॥२२२
...प्रभु बोले याहे सर्व देव अधिष्ठान ।
...से तोमार मते कि हइल बाँश खान ?२२३
...के बुझिते पारे गौरसुन्दरेर लीला ।
...मने करे एक, मुखे पाते आर खेला ॥२२४
...एतेके ये बोले बुझि कृष्णेर हृदय ।
...से अबुध इहा जानिह निश्चय ॥२२५

मारिबेन हेन यारे आछये अन्तरे ।
ताहारेओ देखि येन महा प्रीति करे ॥२२६
प्राण सम अधिक बा ये सकल जन ।
ताहारेओ देखि येन निरपेक्ष मन ॥२२७
एइमत अचिन्त्य अगम्य लीला मात्र ।
तान अनुग्रहे बुझे तान कृपापात्र ॥२२८
दण्ड भाङ्गिलेन आपनेइ इच्छा करि ।
शेषे क्रोध व्यञ्जिते लागिला गौरहरि ॥२२९
प्रभु बोले सबे दण्ड मात्र छिल सङ्ग ।
ताहो आजि कृष्णेर इच्छाते हैल भङ्ग ॥२३०
एतेके आमार सङ्ग कारो सङ्ग नाइ ।
तोमरा बा आगे चल आमि वा आगाइ ॥२३१
द्विरुक्ति करिते आज्ञा शक्ति आछे कार ।
सभेइ हइला शुनि चिन्तित अपार ॥२३२
मुकुन्द बोलेन तबे तुमि चल आगे ।
आमार सभार किछु कृत्य आछे पाछे ॥२३३
भाल ! बलि चललेन श्रीगौरसुन्दर ।
मत्त सिंह प्राय गति लक्षिते दुष्कर ॥२३४
मुहूर्त्तेके गेला प्रभु जलेश्वर ग्रामे ।
बराबर गेला जलेश्वर देव स्थाने ॥२३५
जलेश्वर पूजिते आछेन विप्रगणे ।
गन्ध पुष्प धूप दीप माल्यादि आसने ॥२३६
बहुविध वाद्य उठियाछे कोलाहल ।
चतुर्द्दिगे नृत्य गीत परम मङ्गल ॥२३७
देखि प्रभु क्रोध पासरिलेन सन्तोषे ।
सेइ बाद्ये प्रभु मिशाइला प्रेमरसे ॥२३८
निज प्रिय शङ्करेर विभव देखिया ।
नृत्य करे गौरचन्द्र परानन्द हैया ॥२३९
शिवेर गौरव बुझायेन गौरचन्द्र ।
एतेके शङ्करप्रिय सर्वभक्तवृन्द ॥२४०

ना माने चैतन्य पथ बोलाय वैष्णव ।
शिवेरे अमान्य करे व्यर्थ तार सब ॥२४१
करिते आछेन नृत्य जगतजीवन ।
पर्वत विदरे हेन हुङ्कार गर्जन ॥२४२
देखि शिवदास सब हइला विस्मित ।
सभेइ बोलेन शिव हइला विदित ॥२४३
आनन्दे अधिक सभे करे गीत बाद्य ।
प्रभुओ नाचेन तिलार्द्धेको नाहि वाह्य ॥२४४
कथोक्षणे भक्तगण आसिया मिलिला ।
आसियाइ मुकुन्दादि गाइते लागिला ॥२४५
प्रियगण देखि प्रभु अधिक आनन्दे ।
नाचिते लागिला बेढ़ि गाय भक्तवृन्दे ॥२४६
से बिकार कहिते बा शक्ति आछे कार ।
नयने बहये सुरधुनी शत धार ॥२४७
एबे से शिवेर पुर हइल सफल ।
याहे नृत्य करे वैकुण्ठेर अधीश्वर ॥२४८
कथोक्षणे प्रभु परानन्द प्रकाशिया ।
स्थिर हइ रहिलेन प्रियगोष्ठी लैया ॥२४९
सभा प्रति करिलेन प्रेम आलिङ्गन ।
सभेइ निर्भय हैला परानन्द मन ॥२५०
नित्यानन्द देखि प्रभु लइलेन कोले ।
बलिते लागिला ताँरे किछु कुतूहले ॥२५१
कोथा तुमि आमारे करिबे सम्वरण ।
येमते आमार हय सन्न्यास रक्षण ॥२५२
आरो आमा पागल करिते तुमि चाओ ।
आर यदि कर तबे मोर माथा खाओ ॥२५३
येन कर तुमि आमा तेन आमि हइ ।
सत्यसत्य एइ आमि सभा स्थाने कइ ॥२५४
सभारे शिखाय गौरचन्द्र भगवान् ।
नित्यानन्द प्रति सभे हओ सावधान ॥२५५

नित्यानन्द द्वारे यार हय अपराध ।
मोर दोष नाहि तार प्रेमभक्ति बाध ॥२५६
मोर देह हैते नित्यानन्द देह बड़ ।
सत्यसत्य सभारे कहिलुँ एइ दढ़ ॥२५७
नित्यानन्दे याहार तिलेक द्वेष रहे ।
भक्त हईलेओ से आमार प्रिय नहे ॥२५८
आत्मस्तुति शुनि नित्यानन्द महाशय ।
लज्जाय रहिला प्रभु माथा ना तोलय ॥२५९
परम आनन्द हैला सर्व भक्तगण ।
हेन लीला करे प्रभु श्रीशचीनन्दन ॥२६०
एइमत जलेश्वर से रात्रि रहिया ।
उषःकाले चलिला सकल गण लैया ॥२६१
बाँशदाय पथे एक शाक्त न्यासिबेश ।
आसिया प्रभुरे पथे करिला आदेश ॥२६२
शक्ति हेन प्रभु जानिलेन निजमने ।
सम्भाषिते लागिलेन मधुर वचने ॥२६३
प्रभु बोले कहकह कोथा तुमि सब ।
चिरदिने आजि देखिलाम ये बान्धव ॥२६४
प्रभुर मायाय शाक्त मोहित हइल ।
आपनार तत्त्व यत कहिते लागिल ॥२६५
यतयत शाक्त वैसे यतयत देशे ।
सब कहे एके एके शुनि प्रभु हासे ॥२६६
शाक्त बोले चल झाट मठेते आमार ।
सभेइ आनन्द आजि करिब अपार ॥२६७
पापी शाक्त मदिरारे बोलये आनन्द ।
बुझिया हासेन गौरचन्द्र नित्यानन्द ॥२६८
प्रभु बोले आसि आमि आनन्द करिते ।
आगे गिया तुमि सज्ज करह त्वरिते ॥२६९
शुनिया चलिला शाक्त हइ हरषित ।
एइमत ईश्वरेर अगाध चरित ॥२७०

३य अध्याय

पतित पावन कृष्ण सर्व्ववेदे कहे ।
अतएव शाक्त सह प्रभु कथा कहे ॥२७१
लोके बोले ए शाक्तेर हइल उद्धार ।
ए शाक्त परशे अन्य शाक्तेर निस्तार ॥२७२
एइमत श्रीगौरसुन्दर भगवान् ।
नानामते करिलेन सर्व-जीव त्राण ॥२७३
हेनमते शाक्तेर सहित रस करि ।
आइला रेमुणा ग्रामे गौराङ्ग श्रीहरि ॥२७४
रेमुणाय देखि निज मूर्त्ति गोपीनाथ ।
बिस्तर करिल नृत्य भक्तगण साथ ॥२७५
आपनार प्रेमे मत्त पासरि आपना ।
रोदन करेन अति करिया करुणा ॥२७६
से करुणा शुनिते पाषाण काष्ठ द्रवे ।
एबे ना द्रबिल धर्मध्वजिगण सबे ॥२७७
कथोदिने महाप्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
आइलेन याजपुर ब्राह्मणनगर ॥२७८
यहि आदिबराहेर अद्भुत प्रकाश ।
याँर दरशने हय सर्व बन्ध नाश ॥२७९
महातीर्थ बहे यथा नदी वैतरणी ।
याँर दरशने पाप पलाय आपनि ॥२८०
जन्तुमात्र ये नदीर हइलेइ पार ।
देवगणे देखे चतुर्भुजेर आकार ॥२८१
नाभिगया विरजादेवीर यथा स्थान ।
यथा हैते क्षेत्र दश योजन प्रमाण ॥२८२
याजपुरे यतेक आछये देवस्थान ।
लक्ष वत्सरेओ नारि लैते सब नाम ॥२८३
देवालय नाहि हेन नाहि तथि स्थान ।
केवल देवेर वास याजपुर नाम ॥२८४
प्रथमे दशाश्वमेधिघाटे न्यासिमणि ।
स्नान करिलेन भक्त संहति आपनि ॥२८५
तबे गेला प्रभु आदिबराह सम्भाषे ।
बिस्तर करिल नृत्य गीत प्रेमरसे ॥२८६
बड़ सुखी हइला प्रभु देखि याजपुर ।
पुनःपुन बाड़े आनन्दाबेश प्रचुर ॥२८७
के जाने कि इच्छा तान धरिलेक मने ।
सभा छाड़ि एका पलाइलेन आपने ॥२८८
प्रभु ना देखिया सभे हइला विकल ।
देवालये चाहि चाहि बुलेन सकल ॥२८९
ना पाइया कोथाओ प्रभुर अन्वेषण ।
परम चिन्तित हइलेन भक्तगण ॥२९०
नित्यानन्द बोले सभे स्थिर कर चित्त ।
जानिलाम प्रभु गियाछेन ये निमित्त ॥२९१
निभृते ठाकुर सब याजपुर ग्राम ।
देखिबेन यतयत आछये देवस्थान ॥२९२
आमराओ सभे भिक्षा करि एक ठाँइ ।
आजि थाकि कालि प्रभु पाइब एथाइ ॥२९३
सेइ मत करिलेन सर्वभक्तगण ।
भिक्षा करि आनि सभे करिला भोजन ॥२९४
प्रभुओ बुलिया सब याजपुर ग्राम ।
देखिया यतेक याजपुर पुण्य स्थान ॥२९५
सर्वभक्तगण यथा आछेन वसिया ।
आरदिन सेइस्थाने मिलिला आसिया ॥२९६
आथेव्यथे भक्तगण 'हरिहरि' बलि ।
उठिलेन सभेइ हइया कुतूहली ॥२९७
सभा' लइ प्रभु याजपुर धन्य करि ।
चलिलेन हरि बलि गौराङ्ग श्रीहरि ॥२९८
हेनमते महानन्दे श्रीगौरसुन्दर ।
आइलेन कथोदिने कटक नगर ॥२९९
भाग्यवती महानदी जले करि स्नान ।
आइलेन प्रभु साक्षीगोपालेर स्थान ॥३००

देखि साक्षिगोपालेर लावण्य मोहन ।
आनन्दे करेन प्रभु हुङ्कार गर्जन ॥३०१
प्रभु ! बलि नमस्कार करेन स्तवन ।
अद्भुत करेन प्रेम आनन्द क्रन्दन ॥३०२
यार मन्त्रे सकल मूर्त्तिते वैसे प्राण ।
सेइ प्रभु श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र नाम ॥३०३
तथापिह निरवधि करे दास्यलीला ।
अवतार हैले हय एइमत खेला ॥३०४
तबे प्रभु आइलेन श्रीभुवनेश्वर ।
गुप्तकाशी वास यथा करेन शङ्कर ॥३०५
सर्वतीर्थ जल यथा बिन्दु बिन्दु आनि ।
'बिन्दुसरोवर' शिव सृजिला आपनि ॥३०६
शिव प्रिय सरोवर जानि श्रीचैतन्य ।
स्नान कवि विशेषे करिला अति धन्य ॥३०७
देखिलेन गिया प्रभु प्रकट शङ्कर ।
चतुर्द्दिगे शिवध्वनि करे अनुचर ॥३०८
चतुर्द्दिके सारिसारि घृतदीप ज्वले ।
निरवधि अभिषेक हइतेछे जले ॥३०९
निज प्रिय शङ्करेर देखिया विभव ।
तुष्ट हइलेन प्रभु सकल वैष्णव ॥३१०
ये चरण रसे शिव बसन ना जाने ।
हेन प्रभु नृत्य करे शिव विद्यमाने ॥३११
नृत्य गीत शिव अग्रे करिया आनन्द ।
से रात्रि रहिला सेइ ग्रामे गौरचन्द्र ॥३१२
सेइ स्थान शिव शिव पाइलेन येनमते ।
सेइ कथा शुन स्कन्धपुराणेर मते ॥३१३
काशीमध्ये पूर्वे शिव पार्वती सहिते ।
आछिला अनेक काल परम निभृते ॥३१४
तबे गौरी सह शिव गेला त कैलास ।
नर-राजागणे काशी करये विलास ॥३१५
तबे काशीराज नामे हैला एक राजा ।
काशीपुर भोग करे करि शिवपूजा ॥३१६
दैवे आसि कालपाश लागिल ताहारे ।
उग्र तपे शिव पूजे कृष्ण जिनिबारे ॥३१७
प्रत्यक्ष हइला शिव तपेर प्रभावे ।
बर माग बलिलेन राजा बर मागे ॥३१८
एक बर मागों प्रभु ! तोमार चरणे ।
येन मुञि कृष्ण जिनिबारे पारों रणे ॥३१९
भोलानाथ शङ्करेर चरित्र अगाध ।
के बुझे किरूपे कारे करेन प्रसाद ॥३२०
तारे बलिलेन राजा ! चल युद्धे तुमि ।
तोर पाछे सर्व-गण सह आछि आमि ॥३२१
तोरे जिनिबेक हेन कार् शक्ति आछे ।
पाशुपत अस्त्र लइ मुञि तोर पाछे ॥३२२
पाइया शिवेर बल सेइ मूढ़ मति ।
चलिला हरिषे युद्धे कृष्णेर संहति ॥३२३
शिवो चलिलेन तार पाछे सर्व-गणे ।
तार पक्ष हइ युद्ध करिबार मने ॥३२४
सर्वभूत अन्तर्यामी देवकी नन्दन ।
सकल बृत्तान्त जानिलेन सेइक्षण ॥३२५
जानिया बृत्तान्त निजचक्र सुदर्शन ।
एड़िलेन कृष्णचन्द्र सभार दलन ॥३२६
कारो अव्याहति नाहि सुदर्शन स्थाने ।
काशीराज मुण्ड गिया काटिल प्रथमे ॥३२७
शेषे तार सम्बन्धे सकल वाराणसी ।
पुड़िया झाड़िया करिलेन भस्मराशि ॥३२८
वाराणसी दाह देखि क्रुद्ध महेश्वर ।
पाशुपत अस्त्र एड़िलेन भयङ्कर ॥३२९
पाशुपत अस्त्र कि करिब चक्र स्थाने ।
चक्र तेज देखि पलाइल सेइ क्षणे ॥३३०

येन महेश्वर प्रति यायेन धाइया ।
चक्र भये शङ्करो यायेन पलाइया ॥३३१
चक्र तेजे व्यापिलेक सकल भुवन ।
पलाइते दिग् ना पायेन त्रिलोचन ॥३३२
पूर्वे येन चक्र तेजे दुर्वासा पीड़ित ।
हइलेन शिवेरो हइल सेइ रीत ॥३३३
तो शिव बुझिलेन सुदर्शन स्थाने ।
रक्षा करिबेक हेन नाहि कृष्ण विने ॥३३४
एतेक चिन्तिया वैष्णवाग्र त्रिलोचन ।
भये त्रस्त हइ गेला गोविन्द शरण ॥३३५
जयजय महाप्रभु देवकीनन्दन ।
जय सर्वव्यापि सर्वजीवेर शरण ॥३३६
जयजय सुबुद्धि कुबुद्धि सर्वदाता ।
जयजय स्रष्टा हर्त्ता सभार रक्षिता ॥३३७
जयजय अदोषदरशी कृपासिन्धु ।
जयजय सन्तप्तजनेर एकबन्धु ॥३३८
जय सर्व अपराध भञ्जन शरण ।
दोष क्षमा कर प्रभु लइलुँ शरण ॥३३९
शुनि शङ्करेर स्तव सर्वजीवनाथ ।
चक्र तेज निबारिया हइला साक्षात ॥३४०
चतुर्दिगे शोभा करे गोपगोपीगण ।
किछु क्रोध हास्य मुखे बोलेन वचन ॥३४१
केने शिव तुमि त जानह मोर शुद्धि ।
एतकाले तोमार ये हइल कुबुद्धि ॥३४२
कोन् कीट काशीराज अधम नृपति ।
तार लागि युद्ध कर आमार संहति ॥३४३
एइ ये देखह मोर चक्र सुदर्शन ।
तोमाकेह ना सहे याहार पराक्रम ॥३४४
ब्रह्म अस्त्र पाशुपत अस्त्र आदि यत ।
परम अव्यर्थ महा अस्त्र आर कत ॥३४५
सुदर्शन स्थाने कारो नाहि प्रतिकार ।
यार अस्त्र नारे चाहे करिते संहार ॥३४६
हेन त ना देखि आमि पृथिवी भितरे ।
तोमा बइ आमारे ये करे अनादरे ॥३४७
शुनिया प्रभुर किछु सक्रोध उत्तर ।
अन्तरे कम्पित बड़ हइला शङ्कर ॥३४८
तबे शेषे धरिया प्रभुर श्रीचरण ।
करिते लागिल शिव आत्मनिवेदन ॥३४९
तोमार अधीन प्रभु ! सकल संसार ।
स्वतन्त्र हइते शक्ति आछये काहार ॥३५०
पवने चालाय येन शुष्क तृणगण ।
एइमत अ-स्वतन्त्र सकल भुवन ॥३५१
ये कराह प्रभु तुमि सेइ जीवे करे ।
हेन के बा आछे ये तोमार माया तरे ॥३५२
विशेषे दियाछ प्रभु मोरे अहंकार ।
आपनारे बड़ बइ नाहि देखों आर ॥३५३
तोमार मायाय मोरे कराय दुर्गति ।
कि करिमु प्रभु मुजि अ-स्वतन्त्र मति ॥३५४
तोर पादपद्म मोर एकान्त जीवन ।
अरण्ये थाकिमु चिन्ति तोमार चरण ॥३५५
तथापिह मोरे से लओयाओ अहंकार ।
मुजि कि करिमु प्रभु ये इच्छा तोमार ॥३५६
तथापिह प्रभु मुजि कैलुँ अपराध ।
सकल क्षमिया मोरे करह प्रसाद ॥३५७
एमत कुबुद्धि मोर येन आर नहे ।
एइ बर देह प्रभु हइया सदये ॥३५८
येन अपराध कैलुँ करि अहंकार ।
हइल ताहार शास्ति शेष नहे आर ॥३५९
एबे आज्ञा कर प्रभु थाकिमु कोथाय ।
तोमा बइ आर बा बलिब कार् पाय ॥३६०

शुनिया शिवेर वाक्य ईषत हासिया ।
बलिते लागिला प्रभु कृपायुक्त हैया ॥३६१
शुन शिव तोमारे दिलाम दिव्य स्थान ।
सर्वगोष्ठीसह तथा करह प्रयाण ॥३६२
एकाम्रकवन नाम स्थान मनोहर ।
तथाइ हइबा तुमि कोटिलिङ्गेश्वर ॥३६३
सेहो वाराणसी प्राय सुरम्य नगरी ।
सेइ स्थाने आमार आछये गोप्यपुरी ॥३६४
सेइ स्थान शिव आजि कहि तोमा'स्थाने ।
से पुरीर मर्म मोर केहो नाहि जाने ॥३६५
सिन्धुतीरे बट मूले नीलाचल नाम ।
क्षेत्र श्रीपुरुषोत्तम अति रम्यस्थान ॥३६६
अनन्तब्रह्माण्ड काले यखन संहरे ।
तभु से स्थानेर किछु करिते ना पारे ॥३६७
सर्व काल सेइ स्थाने आमार वसति ।
प्रतिदिन आमार भोजन हय तथि ॥३६८
सेइस्थान प्रभावे योजन दश भूमि ।
ताहाते वसये यत जन्तु कीट कृमि ॥३६९
सभारे देखये चतुर्भुज देवगणे ।
मरणमङ्गल करि कहिये ये स्थाने ॥३७०
निद्रातेओ ये स्थाने समाधिफल हय ।
शयने प्रणाम फल यथा वेदे कय ॥३७१
प्रदक्षिण फल पाय करिले भ्रमण ।
कथामात्र यथा हय आमार स्तवन ॥३७२
हेन से क्षेत्रेर अति प्रभाब निर्मल ।
मत्स्य खाइलेओ पाय हबिष्येर फल ॥३७३
निज नामे स्थान मोर हेन प्रियतम ।
ताहाते यतेक वैसे, से-इ मोर सम ॥३७४
ये स्थाने नाहिक यमदण्ड अधिकार ।
आमि करि भालमन्द बिचार सभार ॥३७५
हेन ये आमार पुरी ताहार उत्तरे ।
तोमारे दिलाम स्थान रहिबार तरे ॥३७६
भक्ति मुक्ति प्रद सेइस्थान मनोहर ।
तथा तुमि ख्यात हैबा श्रीभुवनेश्वर ॥३७७
शुनिया अद्भुत पुरी महिमा शङ्कर ।
पुन श्रीचरण धरि करिला उत्तर ॥३७८
शुन प्राणनाथ ! मोर एक निवेदन ।
मुञि से परम अहंकृत सर्वक्षण ॥३७९
एतेके तोमाके छाड़ि मुञि अन्यस्थाने ।
थाकिले कुशल मोर नाहिक कखने ॥३८०
तोमार निकटे से थाकिते मोर मन ।
दुष्ट सङ्गे भिन्न मन नहिब कखन ॥३८१
एतेके मोहोरे यदि थाके भृत्य ज्ञान ।
तबे मोरे निजक्षेत्रे देह एक स्थान ॥३८२
क्षेत्रेर महिमा शुनि श्रीमुखे तोमार ।
बड़ इच्छा हैल तथा थाकिते आमार ॥३८३
निकृष्ट हैया प्रभु ! सेविमु तोमारे ।
तथाइ तिलेक स्थान देह प्रभु मोरे ॥३८४
क्षेत्रवास प्रति मोर बड़ लय मन ।
एत बलि महेश्वर करेन क्रन्दन ॥३८५
शिव वाक्ये तुष्ट हइ श्रीचन्द्रवदन ।
बलिते लागिला ताँरे प्रेम आलिङ्गन ॥३८६
शुन शिव ! तुमि मोर निज देह सम ।
ये तोमार प्रिय से आमार प्रियतम ॥३८७
यथा तुमि तथा आमि इथे नाहि आन ।
सर्वक्षेत्रे तोमारे दिलाम आमि स्थान ॥३८८
क्षेत्रेर पालक तुमि सर्वथा आमार ।
सर्वक्षेत्रे तोमारे दिलाम अधिकार ॥३८९
एकाम्रवन ये तोमारे दिल आमि ।
ताहातेइ परिपूर्णरूपे थाक तुमि ॥३९०

सेइ क्षेत्र आमार परमप्रियतम ।
मोर प्रीते तथाइ थाकिबे सर्वक्षरण ॥३९१
ये आमार भक्त हइ तोमा ना आदरे ।
से आमारे मात्र येन बिड़म्बना करे ॥३९२
हेनमते शिव पाइलेन सेइ स्थान ।
अद्यापिह विख्यात भुवनेश्वर नाम ॥३९३
शिवप्रिय बड़ कृष्ण ताहा बुझाइते ।
नृत्य करे गौरचन्द्र शिवेर अग्रेते ॥३९४
यत किछु कृष्ण कहियाछेन पुराणे ।
एबे ताहा देखायेन साक्षाते आपने ॥३९५
शिव राम गोविन्द बलिया गौर राय ।
हाथे तालि दिया नृत्य करेन सदाय ॥३९६
आपने भुवनेश्वरे गिया गौरचन्द्र ।
शिवपूजा करिलेन लइ भक्तवृन्द ॥३९७
शिक्षागुरु ईश्वरेर शिक्षा ये ना माने ।
निज दोषे दुःख पाय सेइ सब जने ॥३९८
सेइ शिवग्रामे प्रभु भक्तगण सङ्गे ।
शिवलिङ्ग देखिदेखि भ्रमिलेन रङ्गे ॥३९९
परम निभृत एक देखि शिवस्थान ।
सुखी हैला श्रीगौरसुन्दर भगवान् ॥४००
सेइ ग्रामे यतेक आछये देवालय ।
सकल देखिला श्रीगौराङ्ग महाशय ॥४०१
एइमते सर्व पथे सन्तोषे आसिते ।
उत्तरिला आसि प्रभु कमलपुरेते ॥४०२
श्रीदेउलध्वज मात्र देखिलेन दूरे ।
प्रवेशिला प्रभु निज आनन्द सागरे ॥४०३
अकथ्य अद्भुत प्रभु करेन हुङ्कार ।
विशाल गर्जन कम्प सर्व देह भार ॥४०४
प्रासादेर दिगे मात्र चाहिते चाहिते ।
बलिलेन प्रभु श्लोक पढ़िते पढ़िते ॥४०५
श्रीमुखेर अर्द्ध श्लोक शुन सावधाने ।
ये लीला करिल गौरचन्द्र भगवाने ॥४०६

तथाहि—

"प्रासादाग्रे निवसति पुरः स्मेरवक्त्रारविन्दो
मामालोक्य स्मितसुवदनो बालगोपालमूर्त्तिः ॥"
४०७

टीका ।

प्रासादाग्र इति । प्रासादस्य—इष्टक-निर्मित-देवालयस्य, अग्रे—उपरि, मम पुरः—सम्मुखे, माम् आलोक्य, स्मित-सुवदनः—ईषद्धास्य-समन्वित-शोभन-मुखः, स्मेरवक्त्रारविन्दः—विकसित-वदन-कमलः बालगोपालमूर्त्तिः (श्रीकृष्णः) निवसति ।

अनुवाद ।

विकसित वदनारविन्द बालगोपालमूर्त्ति श्रीकृष्ण मुझको देखकर मृदु मधुर हास्य से श्रीमुख शोभा विस्तार कर प्रासाद के उपरिभाग में मेरे सम्मुख में अवस्थित हैं ।

प्रभु बोले देख प्रासादेर अग्रमूले ।
हासेन आमारे देखि श्रीबालगोपाले ॥४०८
एइ श्लोक पुनःपुन पढ़िया पढ़िया ।
आछाड़ खायेन प्रभु विवश हइया ॥४०९
से दिनेर ये आछाड़ ये आर्त्ति क्रन्दन ।
अनन्तेर जिह्वाय बा से हय वर्णन ॥४१०
चक्र प्रति दृष्टिमात्र करेन सकले ।
सेइ श्लोक पढ़िया पड़ेन भूमितले ॥४११
एइमत दण्डवत हइते हइते ।
सर्व पथे आइलेन प्रेम प्रकाशिते ॥४१२
इहारे से बलि प्रेममय अवतार ।
ए शक्ति चैतन्य बइ दुइ नाइ आर ॥४१३
पथे यत देखये सुकृति नरगण ।
तारा बोले एइ त साक्षात नारायण ॥४१४

चतुर्द्दिगे वेढ़िया आइसे भक्तगण ।
आनन्दधाराय पूर्ण सभार नयन ॥४१५
सभे चारिदण्डेर पथ प्रेमेर आवेशे ।
प्रहर तिनेते आसि हइला प्रवेशे ॥४१६
आइलेन मात्र प्रभु आठारनालाय ।
सर्व भाव सम्वरण कैला गौरराय ॥४१७
स्थिर हइ वसिलेन प्रभु सभा लैया ।
सभारे बोलेन अति विनय करिया ॥४१८
तोमरा त आमार करिला बन्धुर काज ।
देखाइला आनि जगन्नाथ महाराज ॥४१९
एबे आगे तोमरा चलह देखिबारे ।
आमि बा याइब आगे ताहा बोल मोरे ॥४२०
मुकुन्द बोलेन तबे तुमि आगे याओ ।
भाल बलि चलिलेन श्रीगौराङ्गराओ ॥४२१
मत्तसिंह गति जिनि चलिला सत्वर ।
प्रविष्ट हइला आसि पुरीर भितर ॥४२२
प्रवेश हइला गौरचन्द्र नीलाचले ।
इहा ये शुनये से भासये प्रेमजले ॥४२३
ईश्वर इच्छाय सार्वभौम सेइकाले ।
जगन्नाथ देखिते आछेन कुतूहले ॥४२४
हेनकाले गौरचन्द्र जगत जीवन ।
देखिलेन जगन्नाथ सुभद्रा सङ्कर्षण ॥४२५
देखिमात्र प्रभु करे परम हुङ्कार ।
इच्छा हैल जगन्नाथ कोले करिबार ॥४२६
लाफ देन महाप्रभु आनन्दे विह्वल ।
चतुर्द्दिगे छुटे सब नयनेर जल ॥४२७
क्षणेके पड़िला हइ आनन्दे मूर्च्छित ।
के बुझये ईश्वरेर अगाध चरित ॥४२८
अज्ञ पड़िहारी सब उठिल मारिते ।
आथेव्यथे सार्वभौम पड़िला पृष्ठेते ॥४२९
हृदये चिन्तिला सार्वभौम महाशय ।
एइ शक्ति मनुष्येर कोन काले नय ॥४३०
ए हुङ्कार ए गर्जन ए प्रेमेर धार ।
यत किछु अलौकिक शक्तिर प्रचार ॥४३१
एइ जन हेन बुझि श्रीकृष्णचैतन्य ।
एइमत चिन्ते सार्वभौम महा धन्य ॥४३२
सार्वभौम निबारणे सब पड़िहारी ।
रहिलेन दूरे सभे महा भय करि ॥४३३
प्रभु से हइयाछेन अचेतन प्राय ।
देखि मात्र जगन्नाथ निज प्रिय काय ॥४३४
कि आनन्द मग्न हैला वैकुण्ठ ईश्वर ।
वेदेओ ए सब तत्त्व जानिते दुष्कर ॥४३५
सेइ प्रभु गौरचन्द्र चतुर्व्यूह रूपे ।
आपने वसिया आछेन सिंहासने सुखे ॥४३६
आपनेइ उपासक हइ करे भक्ति ।
अतएव के बुझिबे ईश्वरेर शक्ति ॥४३७
आपनार तत्त्व प्रभु आपने से जाने ।
वेदे भागवते एइ मत से बाखाने ॥४३८
तथापि ये लीला प्रभु करेन यखने ।
ताहि कहे वेदे जीव उद्धार कारणे ॥४३९
मग्न हइलेन प्रभु वैष्णव आवेशे ।
वाह्य गेल दूरे प्रेमसिन्धु माझे भासे ॥४४०
आवरिया सार्वभौम आछेन आपने ।
प्रभुर आनन्दमूर्च्छा ना हय खण्डने ॥४४१
शेषे सार्वभौम युक्ति करिलेन मने ।
प्रभु लइ याइबारे आपन भवने ॥४४२
सार्वभौम बोले भाइ ! पड़िहारीगण !
सभे तुलि लह एइ पुरुषरतन ॥४४३
पाण्डुविजयेर यत निज भृत्यगण ।
सभे प्रभु कोले करि करिला गमन ॥४४४

के बुझिबे ईश्वरेर चरित्र गहन ।
हेन रूपे सार्वभौममन्दिरे गमन ॥४४५
चतुर्दिगे हरिध्वनि करिया करिया ।
वहिया आनेन सभे हरिष हइया ॥४४६
हेनइ समये सर्व भक्त सिंह द्वारे ।
आसिया मिलिला सभे हरिष अन्तरे ॥४४७
परम अद्भुत सभे देखेन आसिया ।
पिपीलिकागणे येन अन्न याय लैया ॥४४८
एइमत प्रभुके अनेक लोक धरि ।
लइया यायेन सभे महानन्द करि ॥४४९
सिंहद्वार नमस्करि सर्वभक्तगण ।
हरिषे प्रभुर काछे करिला गमन ॥४५०
सर्व लोक धरि सार्वभौम मन्दिरे ।
आनिलेन; कपाट पड़िल तबे द्वारे ॥४५१
प्रभुरे आसिया ये मिलिला भक्तगण ।
देखि हैला सार्वभौम हरषित मन ॥४५२
यथायोग्य सम्भाषा करिला सभा'सने ।
वसिलेन, सन्देह भाङ्गिल ततक्षणे ॥४५३
वड़ सुखी हैला सार्वभौम महाशय ।
आर ताँर किवा भाग्यफलेर उदय ॥४५४
यार कीर्त्ति मात्र सर्व वेदे व्याख्या करे ।
अनायासे से ईश्वर आइला मन्दिरे ॥४५५
नित्यानन्द देखि सार्वभौम महाशय ।
लइला चरणधूलि करिया विनय ॥४५६
मनुष्य दिलेन सार्वभौम सभासने ।
चलिलेन सभे जगन्नाथ दरशने ॥४५७
ये मनुष्य याय देखाइते जगन्नाथ ।
निवेदन करे से करिया जोड़हाथ ॥४५८
स्थिर हइ जगन्नाथ सभेइ देखिबा ।
पूर्व गोसाञिर मत केहो ना करिबा ॥४५९
किरूप तोमरा किछु ना पारि बुझिते ।
स्थिर हइ देख, तबे याइ देखाइते ॥४६०
येरूप तोमार करिलेन एकजने ।
जगन्नाथ दैवे रहिलेन सिंहासने ॥४६१
विशेषे बा कि कहिब ये देखिल तान ।
से आछाड़े अन्येर कि देहे रहिबे प्राण ॥४६२
एतेके तोमरा सब अचिन्त्य कथन ।
सम्वरिया देखिबा करिलुँ निवेदन ॥४६३
शुनि सभे हासिते लागिला भक्तगण ।
चिन्ता नाहि बलि सभे करिला गमन ॥४६४
आसि देखिलेन चतुर्व्यूह जगन्नाथ ।
प्रकट परमानन्द भक्तगण साथ ॥४६५
देखि सभे लागिलेन करिते क्रन्दन ।
दण्डवत प्रदक्षिण करेन स्तवन ॥४६६
प्रभुर गलार माला ब्राह्मण आनिया ।
दिलेन सभार गले सन्तोषित हैया ॥४६७
आज्ञा माला पाइ सभे आनन्दित मने ।
आइला सत्वरे सार्वभौमेर भवने ॥४६८
प्रभुर आनन्द मूर्च्छा हइल येमते ।
वाह्य नाहि तिलेक आछेन सेइमते ॥४६९
वसिया आछेन सार्वभौम पदतले ।
चतुर्द्दिगे भक्तगण 'राम कृष्ण' बोले ॥४७०
अचिन्त्य अगम्य गौरचन्द्रेर चरित ।
तिन प्रहरेओ वाह्य नहे कदाचित ॥४७१
क्षणेके उठिला सर्व जगत जीवन ।
हरिध्वनि करिते लागिला भक्तगण ॥४७२
स्थिर हइ प्रभु जिज्ञासेन सभा'स्थाने ।
कह देखि आजि मोर कोन् बिवरणे ?४७३
शेषे नित्यानन्द प्रभु कहिते लागिला ।
जगन्नाथ देखि मात्र तुमि मूर्च्छा गेला ॥४७४

दैवे सार्वभौम आछिलेन सेइ स्थाने ।
धरि तोमा आनिलेन आपन भवने ॥४७५
आनन्द आवेशे तुमि हइ परबश ।
वाह्य ना जानिला तिन प्रहर दिवस ॥४७६
एइ सार्वभौम नमस्करेन तोमारे ।
आथेव्यथे प्रभु सार्वभौमे कोले करे ॥४७७
प्रभु बोले जगन्नाथ बड़ कृपामय ।
आनिलेन मोरे सार्वभौमेर आलय ॥४७८
परम सन्देह चित्ते आछिल आमार ।
किरूपे पाइब आमि संहति तोमार ॥४७९
कृष्ण ताहा पूर्ण करिलेन अनायासे ।
एत बलि सार्वभौमे चा'हि प्रभु हासे ॥४८०
प्रभु बोले शुन आजि आमार आख्यान ।
जगन्नाथ आमि देखिलाम विद्यमान ॥४८१
जगन्नाथ देखि चित्त हइल आमार ।
धरि आनि बक्ष माझे थुइ आपनार ॥४८२
धरिते गेलाम मात्र जगन्नाथ आमि ।
तबे कि हइल शेषे आर नाहि जानि ॥४८३
दैवे सार्वभौम आजि आछिला निकटे ।
अतएव रक्षा हइल ए महा सङ्कटे ॥४८४
आजि हैते आमि एइ बलि दढ़ाइया ।
जगन्नाथ देखिवाङ बाहिरे थाकिया ॥४८५
अभ्यन्तरे आर आमि प्रवेश नहिब ।
गरुड़ेर पाछे थाकि ईश्वर देखिब ॥४८६
भाग्ये आजि आमि नाधरिलुँ जगन्नाथ ।
तबे त सङ्कट हइत आमा'त ॥४८७
नित्यानन्द बोले बड़ एड़ाइले भाल ।
बेला नाहि एबे स्नान करह सकाल ॥४८८
प्रभु बोले नित्यानन्द सम्वरिबा मोरे ।
देह आमि एइ समर्पिलाम तोमारे ॥४८९
तबे कथोक्षणे स्नान करि प्रेमसुखे ।
वसिलेन सभार सहित हास्यमुखे ॥४९०
बहुविध महाप्रसाद आनिया सत्वरे ।
सार्वभौम थुइलेन प्रभुर गोचरे ॥४९१
महाप्रसाद देखि प्रभु करि नमस्कार ।
वसिला भुञ्जिते लइ सब परिबार ॥४९२
प्रभु बोले बिस्तर लाफरा मोरे देह ।
पिठा पाना छेनाबड़ा तोमरा सभे लह ॥४९३
एइमत बलि प्रभु महाप्रेमरसे ।
लाफरा खायेन प्रभु भक्तगण हासे ॥४९४
जन्मजन्म सार्वभौम प्रभुर पार्षद ।
अन्यथा अन्येर नाहि हय ए सम्पद ॥४९५
सुवर्णथालीते अन्न आनिया आपने ।
सार्वभौम देन प्रभु करेन भोजने ॥४९६
से भोजन यतेक हइल प्रेमरङ्ग ।
व्यास वर्णिबेन ताहा चैतन्येर सङ्ग ॥४९७
अशेष कौतुके करि भोजन विलास ।
वसिलेन प्रभु भक्तगण चारि पाश ॥४९८
नीलाचले प्रभुर भोजन महारङ्ग ।
इहार श्रवणे हय चैतन्येर सङ्ग ॥४९९
शेषखण्डे चैतन्य आइला नीलाचले ।
ए आख्यान शुनिले भासये प्रेमजले ॥५००
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥५०१

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे श्रीचैतन्य-सार्वभौम-सम्मेलनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ।

तृतीय अध्याय

जयजय श्रीकृष्णचैतन्य गुणधाम ।
जयजय नित्यानन्दस्वरूपेर प्राण ॥१
जयजय वैकुण्ठनायक कृपासिन्धु ।
जयजय न्यासिचूड़ाभरण दीनबन्धु ॥२
भक्तगोष्ठीसहिते गौराङ्ग जयजय ।
शुनिले चैतन्यकथा भक्ति लभ्य हय ॥३
शेषखण्ड कथा भाइ ! शुन एकचित्ते ।
श्रीगौरसुन्दर बिहरिला येनमते ॥४
अमृतेर अमृत चैतन्यचन्द्र कथा ।
ब्रह्मा शिव ये अमृत चैतन्यचन्द्र कथा ॥५
अतएव श्रीचैतन्य कथार श्रवणे ।
सभार सन्तोष हय दुष्टगण विने ॥६
शुन शेषखण्ड कथा चैतन्य रहस्य ।
याहार श्रवणे कृष्ण पाइये अवश्य ॥७
हेनमते श्रीगौरसुन्दर नीलाचले ।
आत्म सङ्गोपन करि आछे कुतूहले ॥८
यदि तिंहो व्यक्त ना करेन आपनारे ।
के कार् शक्ति आछे ताँरे जानिबारे ॥९
एकदिन सार्वभौमेर सहिते ।
मिलिलेन प्रभु ताँरे लइया निभृते ॥१०
प्रभु बोले शुन सार्वभौम महाशय ।
तोमारे कहिये आमि आपन हृदय ॥११
जगन्नाथ देखिते ये आइलाम आमि ।
रहस्य आमार मूल एथा आछ तुमि ॥१२
जगन्नाथ आमारे कि कहिबेन कथा ?
तुमि से आमार बन्ध छिण्डिबे सर्वथा ॥१३
तोमाते से वैसे श्रीकृष्णेर पूर्ण शक्ति ।
तुमि से दिबारे पार कृष्णप्रेमभक्ति १४
एके तोमार आमि लइलुं आश्रय ।
कहा कर येरूपे आमार भाल हय ॥१५
कि विधि करिमु मुञि थाकिमु किरूपे ।
केमते ना पड़ों मुञि ए संसार कूपे ॥१६
सर्व उपदेश मोरे कह अमायाय ।
तोमारि से आमि इहा जान सर्वथाय ॥१७
एइमन अनेक प्रकार माया करि ।
सार्वभौम प्रति कहिलेन गौरहरि ॥१८
ना जनिया सार्वभौम ईश्वरेर मर्म ।
कहिबारे लागिला जीवेर यत धर्म ॥१९
सार्वभौम बोलेन कहिला यत तुमि ।
सकल तोमार भाल वासिलाम आमि ॥२०
ये तोमार हइयाछे भक्तिर उदय ।
अत्यन्त अपूर्व से कहिल कभु नय ॥२१
बड़इ कृष्णेर कृपा हैयाछे तोमारे ।
सबे एकखानि करियाछ अव्यभारे ॥२२
परम सुबुद्धि तुमि हइया आपने ।
तबे तुमि सन्न्यास करिला कि कारणे ॥२३
बुझ देखि बिचारिया कि आछे सन्न्यासे ।
प्रथमेइ बद्ध हय अहङ्कार पाशे ॥२४
दण्ड धरि महाज्ञानी हय आपनारे ।
काहारेओ बोल हस्त जोड़ नाहि करे ॥२५
यार पदधूली लैते वेदेर विहित ।
हेन जन नमस्करे तभु नहे भीत ॥२६
सन्न्यासीर धर्म वा बलिब सेहो नहे ।
बुझ एइ भागवते येनमत कहे ॥२७
तथाहि (भा० ११।२९।१६; ३।२९।३४)—
"प्रणमेद्दण्डवद्भू मावाश्वचाण्डालगोखरम् ।
ईश्वरो जीवकलया प्रविष्टो भगवानिति ॥"२८

टीका ।

अतोऽन्तर्यामीश्वर-दृष्ट्या सर्वान् अश्वगोखरादीन् दण्डवत् भूमौ प्रणमेत्, व्रीड़ा लज्जा ताञ्च विसृज्य

श्वचाण्डालादीनभिव्याप्य प्रणमेत्। जीवानां कलया परिकलनेन अन्तर्यामितया प्रविष्ट इति दृष्टचेत्यर्थः।

अनुवाद।

भगवान् अन्तर्यामी रूप में सर्वत्र अवस्थित हैं, यह भावना कर, कुक्कुर, चाण्डाल, गो, एवं गर्द्दभ पर्य्यन्त सबको भूतल में पतित होकर दण्डवत् प्रणाम करें।

ब्राह्मणादि कुक्कुर चाण्डाल अन्त करि।
दण्डवत करिबेक बहुमान्य धरि ॥२९
एइ से वैष्णवधर्म सभारे प्रणति।
सेइ धर्मध्वजी यार इथे नाहि रति ॥३०
शिखा सूत्र घुचाइया सबे एइ लाभ।
नमस्कार करे आसि महामहाभाग ॥३१
प्रथमे शुनिला एइ एक अपचय।
एबे आर शुन सर्वनाश बुद्धिक्षय ॥३२
जीवेर स्वभाव धर्म ईश्वरभजन।
ताहा छाड़ि आपनाके माने नारायण ॥३३
गर्भवासे ये ईश्वर करिलेन रक्षा।
याहार प्रसादे हैल बुद्धि ज्ञान शिक्षा ॥३४
यार दास्य लागि शेष अज भव रमा।
पाइयाओ निरवधि करेन कामना ॥३५
सृष्टि स्थिति प्रलय याहार दासे करे।
लाज नाहि हेन प्रभु बोले आपनारे ॥३६
निद्रा हैले आपने के इहाओ ना जाने।
आपनारे 'नारायण' बोले हेन जने ॥३७
जगतेर पिता कृष्ण सर्ववेदे कहे।
पितारे ये भक्ति करे से सुपुत्र इथे ॥३८

तथाहि श्रीगीतायां (९।७१)—

"पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः ॥" ३९

गीता—में जगत् के पिता, माता, धाता, एवं पितामह हूँ।

तथाहि (गीता ६।१)—

अनाश्रितः कर्मफलं कार्य्यं कर्म करोति यः।
स सन्न्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥४०

टीका।

कर्मफलमनाश्रितोऽनपेक्षमाणः सन्नवश्यं कार्य्यतया विहितं कर्म यः करोति स एव सन्न्यासी योगी च। न तु निरग्निरग्निसाध्येष्टाख्यकर्मत्यागी। न चाऽक्रियोऽनग्निसाध्यपुर्त्ताख्यकर्मत्यागी। इति श्रीधरः।

अनुवाद।

कर्मफल की कामना विहीन होकर जो जन शास्त्र विहित अवश्य कर्त्तव्य कर्म करता है, वह ही वास्तविक सन्न्यासी एवं यथार्थ योगी है, अग्निहोत्रादि परित्यागकारी सन्न्यासी नहीं है, एवं शरीर कर्म परित्यागकारी भी योगी नहीं है।

श्लोकार्थ—

निष्काम हइया करे ये कृष्णभजन।
ताहारे से बलि योगी-सन्न्यासी लक्षण ॥४१
विष्णुक्रिया ना करिया परान्न खाइले।
किछु नहे ; साक्षातेइ एइ वेदे बोले ॥४२

तथाहि (भा० ४।२९।४९-५०)—

तत् कर्म हरितोषं यत् सा विद्या तन्मतिर्यया।
हरिर्देहभृतामात्मा स्वयं प्रकृतिरीश्वरः ॥४३

टीका।

तदिति। हरिं तोषयतीति हरितोषं यत्, तदेव कर्म, यया तस्मिन् हरौ मतिर्भवति, सैव विद्या, महाफलत्वात्। कुत इत्यपेक्षायां हरेः परमफलत्वं दर्शयन्नाह हरिः, देहभृताम् आत्मा ईश्वरश्च, तत्र हेतुः, स्वयं—स्वातन्त्र्येण, प्रकृतिः—कारणम्। अतस्तेषां तत् पादमूलमेव शरणम् आश्रयः। इति श्रीधरः।

अनुवाद।

जिस से श्रीहरि का सन्तोष होता है, वह ही कर्म है, जिस के द्वारा श्रीहरि में मति होती है' वह ही विद्या है, कारण, श्रीहरि देहधारी मात्र का ही आत्मा एवं ईश्वर हैं, आप स्वतन्त्र रूप में स्वयं सब का कारण स्वरूप हैं।

अस्यार्थः--

ताहारे से बलि धर्म कर्म सदाचार।
ईश्वरे से प्रीति जन्मे सम्मत सभार ॥४४
ताहारे से बलि विद्या मन्त्र अध्ययन।
कृष्णपादपद्मे ते कराय स्थिर मन ॥४५
सभार जीवन कृष्ण, जनक सभार।
हेन कृष्ण ये ना भजे व्यर्थ सर्व तार ॥४६
तथाचाह श्रीशङ्कराचार्य्यप्रभुः (षट्पदीस्तोत्रे)
"सत्यपि भेदापगमे नाथ!
तवाहं न मामकीनस्त्वम्।
समुद्रं हि तरङ्गः
क्वचन समुद्रो न तारङ्गः ॥"४७

टीका।

सत्यपीति। हे नाथ! भेदस्य अपगमे—नाशे सति—वर्त्तमाने, अपि, ईश्वर-जगतोर्भेदे असत्यपीत्यर्थः, अहं तव अधीनः—त्वत्तो जातः, न तु त्वं मामकीनः—मम अधीनः। हि—तथाहि, तरङ्गः, सामुद्रः—समुद्रस्य अधीनः, समुद्राज्जातः, क्वचन समुद्रः, तारङ्गः—तरङ्गस्य अधीनः, तरङ्गाज्जातो वा, न भवतीत्यर्थः।

अनुवाद।

जगत् में मेरे साथ आपका भेद न होने से भी हे नाथ! मैं जानता हूँ, मैं आपका अधीन हूँ, मैं आपसे उत्पन्न हूँ, किन्तु आप मेरा अधीन नहीं हैं, आप की उत्पत्ति मुझसे नहीं हुई है। तरङ्ग तरङ्गमय समुद्र में परस्पर के पार्थक्य न होने पर भी यह सुनिश्चित है कि, तरङ्ग समुद्र की है। किन्तु समुद्र, तरङ्ग का नहीं है।

श्लोकार्थ—

यद्यपिह जगते ईश्वरे भेद नाञि।
सर्वमय परिपूर्ण आछे सर्वठाञि ॥४८
तभो तोमा हइते से हइयाछि आमि।
आमा हैते नाहि कभु हइयाछ तुमि ॥४९
येन समुद्रेर से तरङ्ग लोके बोले।
तरङ्गेर समुद्र ना हय कोन काले ॥५०
अतएव जगत तोमार तुमि पिता।
इहलोके परलोके तुमि से रक्षिता ॥५१
याहा हैते हय जन्म, ये करे पालन।
तारे ये ना भजे वर्ज्जय हय सेइ जन ॥५२
एइ शङ्करेर श्लोक एइ अभिप्राय।
इहा ना जानिया माथा कि कार्य्ये मुड़ाय ?५३
सन्न्यासी हइया निरवधि नारायण।
बलिबेक प्रेमभक्तियोगे अनुक्षण ॥५४
ना बुझिया शङ्कराचार्य्येर अभिप्राय।
भक्ति छाड़ि माथा मुड़ाइया दुःख पाय ॥५५
अतएव तोमारे से कहिलाम आमि।
हेन पथे प्रविष्ट हइला केने तुमि ॥५६
यदि कृष्णभक्तियोगे करिब उद्धार।
तबे शिखा सूत्र त्यागे कोन लभ्य आर ॥५७
यदि बोल माधवेन्द्र आदि महाभाग।
ताँराओ करियाछेन शिखा सूत्र त्याग ॥५८
तथापिह तोमार सन्न्यास करिबार।
ए समये केमते हइल अधिकार ॥५९
से सब महान्तगण त्रिभाग वयसे।
ग्राम्य रस भुञ्जिया से करिला सन्न्यासे ॥६०
यौवन प्रवेश मात्र सकले तोमार।
केमते हइल सन्न्यासेर अधिकार ॥६१
परमार्थे सन्न्यासे कि करिब तोमारे।
येइ भक्ति हइयाछे तोमार शरीरे ॥६२

योगेन्द्रादि सभेर ये दुर्लभ प्रसाद।
तबे केने करियाछ एमत प्रमाद ॥६३
शुनि भक्तियोग सार्वभौमेर वचन।
बड़ सुखी हैला गौरचन्द्र नारायण ॥६४
प्रभु बोले शुन सार्वभौम महाशय।
सन्न्यासी आमारे नाहि जानिह निश्चय ॥६५
कृष्णेर बिरहे मुञि विक्षिप्त हइया।
बाहिर हइलुँ शिखा सूत्र घुचाइया ॥६६
सन्न्यासी करिया ज्ञान छाड़ मोर प्रति।
कृपा कर येन मोर कृष्णे हय मति ॥६७
प्रभु हइ निज दास मोहे हेन मते।
ए मायाय दासे प्रभु जानिब केमते ॥६८
यदि तिँहो नाहि जानायेन आपनारे।
तबे कार शक्ति आछे जानिते ताँहारे ॥६९
ना जानिया सेवके यतेक कथा कय।
ताहातेओ ईश्वरेर महाप्रीत हय ॥७०
सर्वकाल भृत्य सङ्गे प्रभु क्रीड़ा करे।
सेवकेर निमित्ते आपने अवतरे ॥७१
येमते सेवके भजे कृष्णेर चरणे।
कृष्ण सेइमत दास भजेन आपने ॥७२
एइ ताँर स्वभाव ये सेवक वत्सल।
इहा ताँरे निवारिते कार आछे बल ॥७३
हासे प्रभु सार्वभौमे चाहिया चाहिया।
ना बुझेन सार्वभौम माया मुग्ध हैया ॥७४
सार्वभौम बोलेन आश्रमे बड़ तुमि।
शास्त्रमते तुमि बन्द्य उपासक आमि ॥७५
तुमि ये आमारे स्तब कर युक्त नहे।
इहाते आमार पाछे अपराध हये ॥७६
प्रभु बोले छाड़ मोरे ए सकल माया।
सर्वभावे तोमार लइलुँ मुञि छाया ॥७७
हेनमते प्रभु भृत्य सङ्गे करे खेला।
के बुझिते पारे गौरसुन्दरेर लीला ॥७८
प्रभु बोले मोर एक आछे मनोरथ।
तोमार श्रीमुखे शुनिबाङ भागवत ॥७९
यतेक संशय चित्ते आछये आमार।
तोमा बइ घुचाइब हेन नाहि आर ॥८०
सार्वभौम बोले तुमि सकल विद्याय।
परम प्रवीण आमि जानि सर्वथाय ॥८१
कोन् भागवत अर्थ ना जान बा तुमि।
तोमारे बा कोन्‌रूपे प्रबोधिब आमि ॥८२
तथापिह अन्योऽन्ये भक्तिर बिचार।
करिबेक सुजनेर स्वभाव व्यभार ॥८३
बोल देखि सन्देह तोमार कोन स्थाने।
आछे ताहा यथा शक्ति करिब बाखाने ॥८४
तबे वैकुण्ठनाथ ईषत हासिया।
बलिलेन एक श्लोक अष्ट आखरिया ॥८५

तथाहि (भा० १।७।१०)—

आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे।
कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थम्भूतगुणो हरिः ॥८६

टीका।

निर्ग्रन्थाः ग्रन्थेभ्यो निर्गताः। तदुक्तं गीतासु—यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति। तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च। इति। यदा ग्रन्थिरेव ग्रन्थिः, निवृत्तक्रोधाहङ्काररूपी ग्रन्थिर्येषां ते निवृत्तग्रन्थय इत्यर्थः। ननु मुक्तानां किं भक्त्येति। सर्वाक्षेपपरिहारार्थमाह इत्थम्भूतगुणो हरिः। इति श्रीधरः।

अनुवाद।

सर्व शास्त्र निष्णात अथवा अहङ्कारग्रन्थि वर्जित जो सब जन हैं, उनसब आत्माराम मुनिगण भी अमित पराक्रम भगवान् की फल कामना विहीन शुद्धा भक्ति करते हैं। कारण, श्रीहरि उस प्रकार गुण सम्पन्न हैं।

...रस्वतीपति गौरचन्द्रेर अग्रेते ।
...ताय लागिला सार्वभौम बाखानिते ॥८७
...ार्वभौम बोलेन श्लोकार्थ एइ सत्य ।
...कृष्णपदभक्ति से सभार मूल तत्त्व ॥८८
...र्वकाल परिपूर्ण हय ये ये जन ।
...न्तरे बाहिरे यार नाहिक बन्धन ॥८९
...एवंविध मुक्त सब करे कृष्णभक्ति ।
...हेन कृष्णगुणेर स्वभाव महाशक्ति ॥९०
...हेन कृष्ण गुण नाम मुक्त सबे गाय ।
...हे अनादर यार से-इ नाश याय ॥९१
...हमत नाना मत पक्ष तोलाइया ।
...व्याख्या करे सार्वभौम आविष्ट हइया ॥९२
...त्रयोदश प्रकार श्लोकार्थ बाखानिया ।
...रहिलेन आर शक्ति नाहिक बलिया ॥९३
...षत् हासिया गौरचन्द्र प्रभु कहे ।
...त बाखानिला तुमि, सब सत्य हये ॥९४
...बे शुन आमि किछु करिये व्याख्यान ।
...बुझ देखि बिचारिया हय कि प्रमाण ॥९५
...शुनि विस्मित सार्वभौम महाशय ।
...आरो अर्थ मनुष्येर शक्तिते कि हय ॥"९६
...आपनार अर्थ प्रभु आपने बाखाने ।
...यहा केहो कोनो कल्पे उद्देश ना जाने ॥९७
...व्याख्या शुनि सार्वभौम परम विस्मित ।
...मने गणे एइ किबा ईश्वर विदित ॥९८
...श्लोक व्याख्या करे प्रभु करिया हुङ्कार ।
...आत्मभावे हइला षड्‌भुज अवतार ॥९९
...प्रभु बोले सार्वभौम कि तोमार बिचार ।
...सन्न्यासे कि आमार नाहिक अधिकार ?१००
...सन्न्यासी कि आमि हेन तोर चित्ते लय ।
...तोर लागि एथा मुञि हइलुँ उदय ॥१०१

बहु जन्म मोर प्रेमे तेजिलि जीवन ।
अतएव तोरे मुञि दिलुँ दरशन ॥१०२
सङ्कीर्त्तनारम्भे एइ मोर अवतार ।
अनन्त ब्रह्माडे मुञि बइ नाइ आर ॥१०३
जन्म जन्म तुमि मोर शुद्ध प्रेम दास ।
अतएव तोरे मुञि हइलुँ प्रकाश ॥१०४
साधु उद्धारिमु दुष्ट बिनाशिमु सब ।
चिन्ता किछु नाहि तोर पढ़ मोर स्तव ॥१०५
अपूर्व षड्‌भुज मुर्त्ति कोटिसूर्य्यमय ।
देखि मूर्च्छा गेला सार्वभौम महाशय ॥१०६
विशाल करेन प्रभु हुङ्कार गर्जन ।
आनन्दे षड्‌भुज गौरचन्द्र नारायण ॥१०७
बड़ सुखी प्रभु सार्वभौमेरे अन्तरे ।
उठ बलि श्रीहस्त दिलेन ताँर शिरे ॥१०८
श्रीहस्तपरशे विप्र पाइला चेतन ।
तथापि आनन्दे जड़ ना स्फुरे वचन ॥१०९
करुणासमुद्र प्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
पादपद्म दिला ताँर हृदय उपर ॥११०
पाइ श्रीचरण सार्वभौम महाशय ।
हइला केवल परानन्दप्रेममय ॥१११
दृढ़ करि पादपद्म धरे प्रेमफान्दे ।
आजि से पाइलुँ चित्तचोर बलि कान्दे ॥११२
आर्त्तनादे सार्वभौम करेन रोदन ।
धरिया अपूर्व पादपद्म रमा धन ॥११३
प्रभु रे ! श्रीकृष्णचैतन्य प्राणनाथ ।
मुञि अधमेरे प्रभु ! कर आत्मसात ॥११४
तोमारे से मुञि पापी शिखाइलुँ धर्म ।
ना जानिया तोमार अचिन्त्य शुद्ध कर्म ॥११५
हेन के बा आछे प्रभु तोमार मायाय ।
महायोगेश्वर आदि मोह नाहि पाय ॥११६

से तुमि ये आमारे मोहिबा कोन् शक्ति।
एबे देह तोमार चरणे प्रेमभक्ति ॥११७
जयजय श्रीकृष्णचैतन्य सर्वप्राण।
जयजय वेद विप्र साधु धर्म त्राण ॥११८
जयजय वैकुण्ठादिलोकेर ईश्वर।
जयजय शुद्धसत्त्व रूप न्यासिवर ॥११९
परम सुबुद्धि सार्वभौम महामति।
श्लोक पढ़ि पढ़ि पुनःपुन करे स्तुति ॥१२०
तथाहि (श्रीचैतन्यचन्द्रोदयनाटके षष्ठाङ्के)—

"कालान्नष्टं भक्तियोगं निजं यः
प्रादुष्कर्त्तुं कृष्णचैतन्यनामा।
आविर्भूतस्तस्य पादारविन्दे
गाढ़ं गाढ़ं लीयतां चित्तभृङ्गः॥"१२१

टीका।

कालादिति। यः, कालात् - सुचिरकालात्,। कालप्रभावादिति वा, नष्टं – विरलप्रचारं, निजम् —असाधारणं, भक्तियोगं, प्रादुष्कर्त्तुम्- आविर्भावयितुं, समर्पयितुमिति वा कृष्णचैतन्यनामा सन् आविर्भूतः, चित्तभृङ्गः तस्य पादारविन्दे, गाढ़ं गाढ़ं लीयतां अत्यनुरागेण लीनो भवतु।

अनुवाद।

कालप्रभाव से विलुप्तप्राय स्वकीय असाधारण भक्तियोग समर्पण करने के निमित्त श्रीकृष्णचैतन्य नाम धारण कर जो आभिर्भूत हुय हैं, उनके चरणारविन्दों में मेरा मनोमधुकर प्रगाढ़ रूप से विलीन हो।

कालबशे भक्ति लुकाइया दिनेदिने।
पुनर्वार निज भक्ति प्रकाश कारणे ॥१२२
श्रीकृष्णचैतन्य नाम प्रभु अवतार।
ताँर पादपद्मे चित्त रहुक आमार ॥१२३

तथाहि (श्रीचैतन्यचन्द्रोदयनाटके षष्ठाङ्के)—

वैराग्यविद्यानिजभक्तियोग-
शिक्षार्थमेकः पुरुषः पुराणः।
श्रीकृष्णचैतन्यशरीरधारी
कृपाम्बुधिर्यस्तमहं प्रपद्ये॥"१२४

टीका।

वैराग्येति। वैराग्यं —प्रपञ्चवस्त्वनासक्तिः विद्या ज्ञानं, निजभक्तियोगः - असाधारण-भक्तियोगः प्रेमभक्तिरित्यर्थः, तेषां, शिक्षार्थं—स्वयमनुतिष्ठन् अन्यान् शिक्षयितुम्, एकः अद्वितीयः, पुराणः— चिरन्तनः, कृपाम्बुधिः करुणासागरः, पुरुषः यः, श्रीकृष्णचैतन्यशरीरधारी श्रीकृष्णस्य चैतन्य प्रतीतिर्यस्मात् तत् शरीरं धर्त्तुम् आविर्भावयितुं शीलमस्येति, अहं तं प्रपद्ये—शरणं यामि।

अनुवाद।

जो एक करुणावारिधि पुराण पुरुष वैराग्य, विद्या एवं स्वीय भक्तियोग शिक्षा दानार्थ श्रीकृष्ण-चैतन्यरूप में आविर्भूत हुये हैं, मैं उनकी शरणागत हूँ।

वैराग्यसहिते निजभक्ति बुझाइते।
ये प्रभु कृपाय अवतीर्ण पृथिवीते ॥१२५
श्रीकृष्णचैतन्य तनु पुरुष पुराण।
त्रिभुवने नाहि याँर अधिक समान ॥१२६
हेन कृपासिन्धुर चरण गुण नाम।
स्फुरुक् आमार हृदयेते अविराम १२७
एइमत सार्वभौम शत श्लोक करि।
काकु करे चैतन्येर पादपद्म धरि ॥१२८
पतित तारिते से तोमार अवतार।
मुञि पतितेरे प्रभु! करह उद्धार ॥१२९
बन्दी करियाछ मोरे अशेष बन्धने।
विद्या धने कुले; तोमा जानिमु केमने ॥१३०
एबे एइ कृपा कर सर्व जीव नाथ!
अहर्निश चित्त येन रहये तोमा'त ॥१३१

अचिन्त्य अगम्य प्रभु ! तोमार बिहार ।
तुमि ना जानाइले जानिते शक्ति कार ॥१३२
आपनेइ दारुब्रह्मरूपे नीलाचले ।
बसिया आछह भोजनेर कुतूहले ॥१३३
आपन प्रसाद कर आपने भोजन ।
आपने आपना देखि करह क्रन्दन ॥१३४
आपने आपना देखि हओ महामत्त ।
एतेके के बुझे प्रभु ! तोमार महत्त्व ॥१३५
आपने से आपनारे जान तुमि मात्र ।
आर जाने ये जन तोमार कृपापात्र ॥१३६
मुञि छार तोमारे बा जानिमु केमने ।
याते मोह माने अज भव देवगणे ॥१३७
एइमत अनेक करिया काकुर्वाद ।
स्तुति करे सार्वभौम पाइया प्रसाद ॥ १३८
शुनिया षड़्भुज गौरचन्द्र नारायण ।
हासि सार्वभौम प्रति बलिला वचन ॥१३९
शुन सार्वभौम तुमि आमार पार्षद ।
एतेके देखिला तुमि एतेक सम्पद ॥१४०
तोमार निमित्ते मोर एथा आगमन ।
अनेक करियाछ मोर आराधन ॥१४१
भक्तिर महिमा तुमि यतेक कहिला ।
इहाते आमारे बड़ सन्तोष करिला ॥१४२
यतेक कहिला तुमि सब सत्य कथा ।
तोमार मुखेते केने आसिबे अन्यथा ॥१४३
शत श्लोक करि तुमि ये कैले स्तवन ।
ये जन करये इहा श्रवण पठन ॥१४४
आमाते ताहार भक्ति हइबे निश्चय ।
'सार्वभौमशतक' बलि लोके येन कय ॥१४५
ये किछु देखिला तुमि प्रकाश आमार ।
सङ्गोप करिबा पाछे जाने केहो आर ॥१४६

यतेक दिवस मुञि थाकों पृथिवीते ।
ताबत निषेध कैलुँ काहारे कहिते ॥१४७
आमार द्वितीय देह नित्यानन्दचन्द्र ।
भक्ति करि सेविह ताँहार पदद्वन्द्व ॥१४८
परम निगूढ़ तिँहो केहो नाहि जाने ।
आमि यारे जानाइ से-इ से जाने ताने ॥१४९
एइ सब तत्त्व सार्वभौमेरे कहिया ।
रहिलेन आपन ऐश्वर्य्य सम्वरिया ॥१५०
चिनि निज प्रभु सार्वभौम महाशय ।
वाह्य आर नाहि हैला परानन्दमय ॥१५१
ये शुनये ए सब चैतन्य गुण ग्राम ।
से याय संसार तरि श्रीचैतन्यधाम ॥१५२
परम निगूढ़ ए सकल कृष्णकथा ।
इहार श्रवणे कृष्ण पाइ सर्वथा ॥१५३
हेनमते करि सार्वभौमेरे उद्धार ।
नीलाचले करे प्रभु कीर्त्तन बिहार ॥१५४
निरवधि नृत्य गीत आनन्द आवेशे ।
रात्रि दिन ना जानेन प्रभु प्रेमरसे ॥१५५
नीलाचलवासी यत अपूर्व देखिया ।
सर्वलोक हरि बोले डाकिया डाकिया ॥१५६
एइ त सचल जगन्नाथ सबे बोले ।
हेन नाहि ये प्रभुरे देखिया ना भोले ॥१५७
ये पथे यायेन चलि श्रीगौरसुन्दर ।
सेइ दिगे हरिध्वनि शुनि निरन्तर ॥१५८
येखाने पड़ये प्रभुर चरणयुगल ।
से स्थानेर धूलि लुट करेन सकल ॥१५९
धूलि लुटि पाय मात्र ये सुकृति जन ।
ताहार आनन्द हय अकथ्य कथन ॥१६०
कि से श्रीविग्रहेर सौन्दर्य्य अनुपाम ।
देखिते सभार चित्त हरे अविराम ॥१६१

निरवधि श्रीआनन्दधारा श्रीनयने ।
'हरे कृष्ण' नाम मात्र शुनि श्रीवदने ॥१६२
चन्दनमालाय परिपूर्ण कलेवर ।
मत्तसिंह जिनि गति परम सुन्दर ॥१६३
पथे चलितेओ ईश्वरेर वाह्य नाञि ।
भक्ति रसे विहरेण चैतन्यगोसाञि ॥१६४
कथोदिन बिलम्बे श्रीपरमानन्दपुरी ।
आसिया मिलिला तीर्थ पर्य्यटन करि ॥१६५
दूरे प्रभु देखिया परमानन्दपुरी ।
सम्भ्रमे उठिला गौराङ्ग श्रीहरि ॥१६६
प्रिय भक्त देखि प्रभु परम सन्तोषे ।
नृत्य करे स्तुति करे महाप्रेमावेशे ॥१६७
बाहु तुलि बलिते लागिला हरिहरि ।
देखिलाम नयने परमानन्दपुरी ॥१६८
आजि धन्य लोचन सफल आजि जन्म ।
सफल आमार आजि हैल सर्व धर्म्म ॥१६९
प्रभु बोले आजि मोर सफल सन्न्यास ।
आजि माधवेन्द्र मोरे हइला प्रकाश ॥१७०
एत बलि प्रिय भक्त लइ प्रभु कोले ।
सिञ्चिलेन अङ्ग तान पद्मनेत्र जले ॥१७१
पुरी प्रथमेइ मात्र श्रीमुख देखिया ।
आनन्दे आछेन आत्मविस्मृत हइया ॥१७२
कथोक्षणे अन्योऽन्ये करेन प्रणाम ।
परमानन्दपुरी चैतन्येर प्रियधाम ॥१७३
परम सन्तोष प्रभु ताँहारे पाइया ।
राखिलेन निजसङ्गे पार्षद करिया ॥१७४
निज प्रभु चिनिया परमानन्दपुरी ।
रहिला आनन्दे पादपद्म सेवा करि ॥१७५
माधवपुरीर प्रिय शिष्य महाशय ।
श्रीपरमानन्दपुरी तनु प्रेममय ॥१७६
दामोदरस्वरूप मिलिला कथोदिने ।
रात्रिदिन याँहार बिहार प्रभु सने ॥१७७
दामोदरस्वरूप सङ्गीत रसमय ।
याँर ध्वनि शुनिले प्रभुर नृत्य हय ॥१७८
दामोदरस्वरूप परमानन्दपुरी ।
शेषखण्डे एइ दुइ सङ्गे अधिकारी ॥१७९
एइमते अल्पे अल्पे यत भक्तगण ।
नीलाचले आसि सभे हइला मिलन ॥१८०
ये ये पार्षदेर जन्म उत्कले हइला ।
ताँहाराओ अल्पे अल्पे आसिया मिलिला ॥१८१
मिलिला प्रद्युम्नमिश्र प्रेमेर शरीर ।
परमानन्द रामानन्द दुइ महाधीर ॥१८२
दामोदरपण्डित श्रीशङ्करपण्डित ।
कथोदिने आसिया हइला उपनीत ॥१८३
श्रीप्रद्युम्नब्रह्मचारी नृसिंहेर दास ।
याँहार शरीरे श्रीनृसिंह परकाश ॥१८४
कीर्त्तनबिहारी नरसिंह न्यासिरूपे ।
जानिया रहिला आसि प्रभुर समीपे ॥१८५
भगवान् आचार्य्य आइला महाशय ।
श्रवणेओ याँरे नाहि परशे विषय ॥१८६
एइमत यतेक सेवक यथा छिला ।
सभेइ प्रभुर पाशे आसिया मिलिला ॥१८७
प्रभु देखि सभार हइल दुःख नाश ।
सभे करे प्रभुसङ्गे कीर्त्तन विलास ॥१८८
सन्न्यासीर रूपे वैकुण्ठेर अधिपति ।
कीर्त्तन करेन सर्वभक्तेर संहति ॥१८९
श्रीचैतन्यरसे नित्यानन्द महाधीर ।
परम उद्दाम एकस्थाने नहे स्थिर ॥१९०
जगन्नाथ देखिया यायेन धरिबारे ।
पड़िहारीगण केहो राखिते ना पारे ॥१९१

एकदिन उठिया सुवर्णसिंहासने ।
बलराम धरिया करिला आलिङ्गने ॥१९२
उठितेइ पड़िहारी धरिलेक हाथ ।
धरिते पड़िल गिया हाथ पाँच सात ॥१९३
नित्यानन्द प्रभु बलरामेर गलार ।
माला लइ परिलेन गले आपनार ॥१९४
माला परि चलिलेन गजेन्द्रगमने ।
पड़िहारी उठिया चिन्तये मनेमने १९५
एइ अवधूतेर मनुष्य शक्ति नहे ।
बलराम स्पर्शे कि अन्येर देह रहे ॥१९६
मत्तहस्ती धरि मुञि पारोँ राखिबारे ।
मुञि धरिलेओ कि मनुष्य याइते पारे ॥१९७
हेन मुञि हस्त दृढ़ करिया धरिलुँ ।
तृणप्राय हइ गिया कोथाय पड़िलुँ ॥१९८
एइमत चिन्ति पड़िहारी महाशय ।
नित्यानन्द देखिलेइ करये विनय ॥१९९
नित्यानन्दस्वरूप स्वभावे बाल्यभावे ।
आलिङ्गन करेन परम अनुरागे ॥२००
नवे कथोदिने गौरचन्द्र लक्ष्मीपति ।
समुद्रकूलेते आसि करिला वसति ॥२०१
सिन्धुतीरे स्थान अति रम्य मनोहर ।
देखिया सन्तोष बड़ श्रीगौरसुन्दर ॥२०२
चन्द्रवती रात्रि, बहे दक्षिण पवन ।
बैसेन समुद्रकूले श्रीशचीनन्दन ॥२०३
सर्व अङ्ग श्रीमस्तक शोभित चन्दने ।
निरवधि 'हरे कृष्ण' बोले श्रीवदने ॥२०४
मालाय पूर्णित बक्ष अति मनोहर ।
चतुर्दिगे बेढ़िया आछये अनुचर ॥२०५
समुद्रेर तरङ्ग निशाय शोभे अति ।
हासि दृष्टि करे प्रभु तरङ्गेर प्रति ॥२०६

गङ्गा यमुनार यत भाग्येर उदय ।
एबे ताहा पाइलेन सिन्धु महाशय ॥२०७
हेनमते सिन्धुतीरे वैकुण्ठ ईश्वर ।
वसति करेन लइ सर्व अनुचर ॥२०८
सर्वरात्रि सिन्धुतीरे परम बिरले ।
कीर्त्तन करेन प्रभु महा कुतूहले ॥२०९
ताण्डवपण्डित प्रभु निज प्रेम रसे ।
ताण्डब करेन देखि सभे सुखे भासे ॥२१०
रोमहर्ष, अश्रु, कम्प, हुङ्कार, गर्जन ।
स्वेद, बहुविध वर्ण हय क्षणेक्षण ॥२११
यत भक्ति बिकार सकल एकेबारे ।
परिपूर्ण हय आसि प्रभुर शरीरे ॥२१२
यत भक्तिबिकार सभेइ मूर्त्तिमन्त ।
सभेइ ईश्वरकला महा ज्ञानवन्त ॥२१३
आपने ईश्वर नाचे वैष्णव आवेशे ।
जानि सभे निरवधि थाके प्रभु पाशे ॥२१४
अतएव तिलार्द्धो बिच्छेद प्रेम सने ।
नाहिक श्रीगौरसुन्दरेर कोनो क्षणे ॥२१५
यत शक्ति ईषत लीलाय करे प्रभु ।
सेइ आर अन्ये सम्भाबना नहे कभु ॥२१६
इहाते से तान शक्ति सम्भाबना हय ।
सर्ववेदे ईश्वरेर एइ तत्त्व कय ॥२१७
ये प्रेम प्रकाशे प्रभु चैतन्यगोसाञि ।
ताँहा बइ अनन्त ब्रह्माण्डे आर नाञि ॥२१८
एतेके श्रीगौरचन्द्र प्रभुर उपमा ।
ताँहा बइ आर केहोँ दिते नाहि सोमा ॥२१९
सबे यारे शुभदृष्टि करेन आपने ।
से-इ से ताहान शक्ति धरे तत्त्व जाने ॥२२०
अतएव सर्वभावे ईश्वर शरण ।
लइले से भक्ति हय, खण्डये बन्धन ॥२२१

ये प्रभुरे अज भव आदि ईशगणे ।
पूर्ण हइयाओ निरवधि भावे मने ॥२२२
हेन प्रभु आपने सकल भक्तगण सङ्गे ।
नृत्य करे आपनार प्रेमयोग रङ्गे ॥२२३
से सब भक्तेर पाय मोर नमस्कार ।
गौरचन्द्र सङ्गे याँर कीर्त्तन बिहार ॥२२४
हेनमते सिन्धुतीरे श्रीगौरसुन्दर ।
सर्वरात्रि नृत्यकरे अति मनोहर ॥२२५
निरवधि गदाधर थाकेन संहति ।
प्रभु गदाधरेर बिच्छेद नाहि कति ॥२२६
कि भोजने कि शयने किबा पर्य्यटने ।
गदाधर प्रभुरे सेवेन अनुक्षणे ॥२२७
गदाधर पढ़ेन सम्मुखे भागवत ।
शुनि हये प्रभु प्रेमरसे महामत्त ॥२२८
गदाधर वाक्ये मात्र प्रभु सुखी हय ।
भ्रमे गदाधर सङ्गे वैष्णव आलय ॥२२९
एकदिन प्रभु पुरीगोसाञिर मठे ।
वसिलेन गिया तान परम निकटे ॥२३०
परमानन्दपुरीरे प्रभुर बड़ प्रीत ।
पूर्वे येन श्रीकृष्ण अर्जुन दुइ मित ॥२३१
कृष्णकथा वाकोवाक्ये रहस्य प्रसङ्गे ।
निरवधि पुरी सङ्गे थाके प्रभु रङ्गे ॥२३२
पुरीगोसाञिर कूपे भाल नैल जल ।
अन्तर्यामी प्रभु ताहा जानिला सकल ॥२३३
पुरीगोसाञिरे प्रभु पुछिला आपनि ।
कूपे जल केमत हइल ताहा शुनि ॥२३४
पुरी बोले प्रभु ! बड़ अभागिया कूप ।
जल हैल येन घोल कर्द्दमेर रूप ॥२३५
शुनि प्रभु 'हायहाय' करिते लागिला ।
प्रभु बोले जगन्नाथ कृपण हइला ॥२३६
पुरीर कूपेर जल परशिवे ये ।
सर्वपाप थाकितेओ तरिबेक से ॥२३७
अतएव जगन्नाथदेवेर मायाय ।
नष्ट जल हैल येन केहो नाहि खाय ॥२३८
एत बलि महाप्रभु आपने उठिला ।
तुलिया श्रीभुज दुइ कहिते लागिला ॥२३९
महाप्रभु जगन्नाथ मोरे एइ बर ।
गङ्गा प्रवेशुक एइ कूपेर भितर ॥२४०
भोगवती गङ्गा येन बहे पातालेते ।
ताँरे आज्ञा कर एइ कूपे प्रवेशिते ॥२४१
सर्वभक्तगण श्रीमुखेर वाक्य शुनि ।
उच्च करि बलिते लागिला हरिध्वनि ॥२४२
तबे कथोक्षणे प्रभु वासाय चलिला ।
भक्तगण सभे गिया शयन करिला ॥२४३
सेइक्षणे गङ्गादेवी आज्ञा करि शिरे ।
पूर्ण हइ प्रवेशिला कूपेर भितरे ॥२४४
प्रभाते उठिया सभे देखेन अद्भुत ।
परम निर्मल जले परिपूर्ण कूप ॥२४५
आश्चर्य्य देखिया हरि बोले भक्तगण ।
पुरीगोसाञि हइला आनन्दे अचेतन ॥२४६
गङ्गार विजय सभे बुझिया कूपेते ।
कूप प्रदक्षिण सभे लागिला करिते ॥२४७
महाप्रभु शुनिया आइला सेइक्षणे ।
जल देखि हइला परमानन्द मने ॥२४८
प्रभु बोले शुनह सकल भक्तगण !
ए कूपेर जले कैले स्नान बा भक्षण ॥२४९
सत्यसत्य हैब तार गङ्गास्नान फल ।
कृष्णे भक्ति हैब तार परम निर्मल ॥२५०
सर्वभक्तगण श्रीमुखेर वाक्य शुनि ।
उच्च करि बलिते लागिला हरिध्वनि ॥२५१

पुरीगोसाञिर प्रीते, सेइ दिव्य जले ।
स्नान पान करे प्रभु महाकुतूहले ॥२५२
प्रभु बोले आमि ये आछिये पृथिवीते ।
जानिह केबल पुरीगोसाञिर प्रीते २५३
पुरीगोसाञिर आमि नाहिक अन्यथा ।
पुरी बेचिलेइ आमि बिकाइ सर्वथा ॥२५४
सकृत ये देखे पुरीगोसाञिरे मात्र ।
सेहो हइबेक श्रीकृष्णेर प्रेमपात्र ॥२५५
पुरीर महिमा प्रभु कहिया सभारे ।
कूप धन्य करि प्रभु चलिला वासारे ॥२५६
ईश्वरे से जाने भक्तमहिमा बाड़ाइते ।
हेन प्रभु ना भजे कृतघ्न केन मते ॥२५७
भक्तरक्षा लागि प्रभु करे अवतार ।
निरवधि भक्तसङ्गे करेन बिहार ॥२५८
अकर्त्तव्यो करे प्रभु सेवक राखिते ।
तार साक्षी बाली बध सुग्रीव निमित्ते ॥२५९
दास्य प्रभु सेवकेर करे निजानन्दे ।
अजय चैतन्यसिंह जिने भक्तवृन्दे ॥२६०
भक्तगणसङ्गे प्रभु समुद्रेर तीरे ।
सर्ववैकुण्ठादिनाथ कीर्त्तने बिहरे ॥२६१
वासा करिलेन प्रभु समुद्रेर तीरे ।
बिहरेण प्रभु भक्ति आनन्द सागरे ॥२६२
एइ अवतारे समुद्र कृतार्थ करिते ।
अतएव लक्ष्मी जन्मिलेन ताहा हैते ॥२६३
नीलाचलवासीर ये किछु पाप हय ।
अतएव सिन्धुस्नाने सब याय क्षय ॥२६४
अतएव गङ्गादेवी वेगवती हैया ।
सेइ भाग्ये सिन्धु माझे मिलिला आसिया ॥२६५
हेनमते सिन्धुतीरे श्रीकृष्णचैतन्य ।
वैसेन सकलमते सिन्धु करि धन्य ॥२६६
ये समये ईश्वर आइला नीलाचले ।
तखने प्रतापरुद्र नाहिक उत्कले ॥२६७
युद्धरसे गियाछेन विजयनगरे ।
अतएव प्रभु ना देखिलेन सेइबारे ॥२६८
ठाकुरो थाकिया कथोदिन नीलाचले ।
पुन गौड़देशे आइलेन कुतूहले ॥२६९
गङ्गाप्रति महा अनुराग बाढ़ाइया ।
अति शीघ्र गौड़देशे आइला चलिया ॥२७०
सार्वभौमभ्राता विद्यावाचस्पति नाम ।
शान्त दान्त धर्मशील महाभाग्यवान् ॥२७१
सर्व पारिषद सङ्गे श्रीगौरसुन्दर ।
आचम्बिते आसि उत्तरिला ताँर घर ॥२७२
वैकुण्ठनायक गृहे अतिथि पाइया ।
पड़िलेन वाचस्पति दण्डवत हैया ॥२७३
हेन से आनन्द हइल विप्रेर शरीरे ।
कि विधि करिब ताहा किछुइ ना स्फुरे ॥२७४
प्रभुओ ताँहारे करिलेन आलिङ्गन ।
प्रभु बोले शुन किछु आमार वचन ॥२७५
चित्त मोर हइयाछे मथुरा देखिते ।
कथोदिन गङ्गास्नान करिमु एथाते ॥२७६
निभृते आमारे एकखानि दिबा स्थान ।
येन कथोदिन मुञि करों गङ्गास्नान ॥२७७
तबे शेषे मोरे मथुराय चालाइबा ।
मोरे चाह तबे इहा अवश्य करिबा ॥२७८
शुनिया प्रभुर वाक्य विद्यावाचस्पति ।
लागिलेन कहिते हइया नम्रमति ॥२७९
विप्र बोले भाग्य सर्ववंशेर आमार ।
यथाय चरणधूलि आइल तोमार ॥२८०
मोर घर द्वार यत सकल तोमार ।
सुखे थाक तुमि केहो ना जानिब आर ॥२८१

शुनि ताँर वाक्य प्रभु सन्तोष हइला ।
तान भाग्ये कथोदिन तथाइ रहिला ॥२८२
सूर्य्येर उदय कि कखनो गोप्य हय ।
सर्वलोक शुनिलेक चैतन्य विजय ॥२८३
नवद्वीप आदि सर्वदिगे हैल ध्वनि ।
वाचस्पतिघरे आइला न्यासिचूड़ामणि ॥२८४
शुनिया लोकेर हैल चित्तेर उल्लास ।
सशरीरे येन हैल वैकुण्ठेते वास ॥२८५
आनन्दे सकल लोक बोले 'हरिहरि' ।
स्त्री पुत्र देह गेह सकल पासरि ॥२८६
अन्योऽन्ये सर्वलोके करे कोलाहल ।
"चल देखि गिया तान चरणयुगल ॥"२८७
एत बलि सर्वलोक परम उल्लासे ।
चलिलेन केहो कारो रहि ना सम्भाषे ॥२८८
अनन्त अर्वुद लोक बलि 'हरिहरि' ।
चलिलेन देखिबारे गौराङ्ग श्रीहरि ॥२८९
पथ नाहि पाय केहो लोकेर गहले ।
वन डाल भाङ्गि लोक दश दिगे चले ॥२९०
शुन शुन आरे भाइ ! चैतन्य आख्यान ।
ये रूपे करिला सर्व लोक परित्राण ॥२९१
वन डाल कण्टक भाङ्गिया लोक याय ।
तथापि आनन्दे केहो दुःख नाहि पाय ॥२९२
लोकेर गहले यत अरण्य आछिल ।
क्षणेके सकल दिव्य पथमय हैल ॥२९३
शेषे सर्वलोक सर्वदिगे पथे याय ।
हेन रङ्ग करे प्रभु श्रीगौराङ्ग राय ॥२९४
केहो बोले मुञि तान धरिया चरण ।
मागिमु येमते मोर खण्डये बन्धन ॥२९५
केहो बोले मुञि ताने देखिले नयने ।
तबेइ सकल पाङ, मागिमु वा केने ॥२९६
केहो बोले मुञि तान ना जानों महिमा ।
यत निन्दा करियाछों तार नाहि सीमा ॥२९७
एबे तान पादपद्म धरिया हृदये ।
मागिमु किरूपे मोर से पाप घुचये ॥२९८
केहो बोले पुत्र मोर परम जुयार ।
मोर एइ बर—येन ना खेलाय आर ॥२९९
केहो लोले मोर एइ बर काय मने ।
ताँर पादपद्म येन ना छाड़ों कखने ॥३००
केहो बोले धन्यधन्य मोर एइ बर ।
कभु येन ना पासरों श्रीगौरसुन्दर ॥३०१
एइमत बलिया आनन्दे सर्वजन ।
चलिया यायेन सभे परानन्दमन ॥३०२
क्षणेके आइल सब लोक खेयाघाटे ।
खेयारि करिते पार पड़िल सङ्कटे ॥३०३
सहस्रसहस्र लोक एको ना'ये चड़े ।
बड़बड़ नौका सेइक्षणे भाङ्गि पड़े ॥३०४
नानादिगे लोक खेयारिरे बस्त्र दिया ।
पार हइ याय सभे आनन्दित हैया ॥३०५
नौका ये ना पाय तारा नाना बुद्धि करे ।
घट बुके दिया केहो गङ्गाय साँतारे ॥३०६
केहो बा कलार गाछ बान्धि करे भेला ।
केहोकेहो साँतरिया याय करि खेला ॥३०७
चतुर्द्दिगे सर्वलोक करे हरिध्वनि ।
ब्रह्माण्ड भेदये येन हेनमत शुनि ॥३०८
सत्वरे आसिला वाचस्पति महाशय ।
करिलेन अनेक नौकार समुच्चय ॥३०९
नौकार अपेक्षा आर केहो नाहि करे ।
नानामते पार हय ये येमते पारे ॥३१०
हेन आकर्षिल मन श्रीचैतन्यदेवे ।
एहो कि ईश्वर विने अन्येते सम्भवे ॥३११

हेनमते गङ्गापार हइ सर्वजन।
सभेइ धरेन वाचस्पतिर चरण ॥३१२
परम सुकृति तुमि महाभाग्यवान्।
यार घरे आइला चैतन्य भगवान् ॥३१३
एतेके तोमार भाग्य के बलिते पारे।
एखने निस्तार कर आमा सभाकारे ॥३१४
भवकूपे पतित पापिष्ठ आमि सब।
एक ग्रामे ना जानिल तान अनुभव ॥३१५
एखने देखाओ तान चरणयुगल।
तबे आमि पापी सब पाइये सकल ॥३१६
देखिया लोकेर आर्त्ति विद्यावाचस्पति।
सन्तोषे रोदन करे विप्र महामति ॥३१७
सभा'लइ आइलेन आपन मन्दिरे।
लक्षकोटि लोक महा हरिध्वनि करे ॥३१८
हरिध्वनि मात्र शुनि सभार वदने।
आर वाक्य केहो नाहि बोले नाहि शुने ॥३१९
करुणासागर प्रभु श्रीगौरसुन्दर।
सभा उद्धारिते हइयाछेन गोचर ॥३२०
हरिध्वनि शुनि प्रभु परमसन्तोषे।
हइलेन बाहिर लोकेर भाग्यबशे ॥३२१
कि से श्रीविग्रहेर सौन्दर्य्य मनोहर।
से रूपेर उपमा से-इ से कलेवर ॥३२२
सर्वदाय प्रसन्न श्रीमुख विलक्षण।
आनन्दधाराय पूर्ण दुइ श्रीनयन ॥३२३
भक्तगणे लेपियाछे सर्वाङ्गे चन्दन।
मालाय पूर्णित बक्ष, गजेन्द्रगमन ॥३२४
आजानुलम्बित दुइ श्रीभुज तुलिया।
हरि बलि सिंहनाद करेन गर्जिया ॥३२५
देखिया प्रभुरे चतुर्द्दिके सर्वलोके।
हरि बलि नृत्य सभे करेन कौतुके ॥३२६
दण्डवत हइ सभे पड़े भूमितले।
आनन्दे हइया मग्न 'हरिहरि' बोले ॥३२७
दुइ बाहु तुलि सर्वलोक स्तुति करे।
उद्धारह प्रभु! आमि सब पापिष्ठेरे ॥३२८
ईषत हासिया प्रभु सर्वलोक प्रति।
आशीर्वाद करेन कृष्णेते हउ मति ॥३२९
बोल कृष्ण भज कृष्ण शुन कृष्णनाम।
कृष्ण हउ सबार जीवन धन प्राण ॥३३०
सर्वलोक हरि बोले शुनि आशीर्वाद।
पुनःपुन सभेइ करेन स्तुतिवाद ॥३३१
जगत उद्धार लागि तुमि गूढ़रूपे।
अवतीर्ण हैला शचीगृहे नवद्वीपे ॥३३२
आमि सब पापिष्ठ तोमारे ना चिनिया।
अन्धकूपे पड़िलाम आपना खाइया ॥३३३
करुणासागर तुमि परहितकारी।
कृपाकर आर येन तोमा ना पासरि ॥३३४
एइमत सर्वदिगे लोकस्तुति करे।
हेन रङ्ग करेन श्रीगौरसुन्दरे ॥३३५
मनुष्ये हइल परिपूर्ण सर्वग्राम।
नगर चत्वर प्रान्तरेओ नाहि स्थान ॥३३६
देखिते सभार पुनःपुन इच्छा बाढ़े।
सहस्रसहस्र लोक एक बृक्षे चढ़े ॥३३७
गृहेर उपरे बा कतेक लोक चढ़े।
ईश्वर इच्छाय घर भाङ्गिया ना पड़े ॥३३८
देखि मात्र सर्वलोक श्रीचन्द्रवदन।
हरि बलि सिंहनाद करे घनेघन ॥३३९
नानादिग थाकि लोक आइसे सदाय।
श्रीमुख देखिया केहो घरे नाहि याय ॥३४०
नाना रङ्ग जाने प्रभु श्रीगौरसुन्दर।
लुकाइया गेला प्रभु कुलियानगर ॥३४१

नित्यानन्द आदि जनकथो सङ्गे लैया ।
चलिलेन वाचस्पतिरे ना कहिया ॥३४२
कुलिया आइलेन वैकुण्ठ ईश्वर ।
एथा सर्वलोक हैल परम कातर ॥३४३
चतुर्द्दिगे वाचस्पति लागिला चाहिते ।
कोथा गेला प्रभु नाहि पायेन देखिते ॥३४४
बिचार करिया विप्र प्रभु ना पाइया ।
कान्दिते लागिला ऊर्द्ध्व वदन करिया ॥३४५
बिरले आछेन प्रभु बाड़ीर भितरे ।
एइ ज्ञान हइयाछे सभार अन्तरे ॥३४६
बाहिर हयेन प्रभु हरिनाम शुनि ।
अतएव सभे बोल महा हरिध्वनि ॥३४७
कोटिकोटि लोक हेन हरिध्वनि करे ।
स्वर्ग मर्त्त्य पातालादि सर्वलोक पूरे ॥३४८
कथोक्षणे वाचस्पति आसिया बाहिरे ।
प्रभुर वृत्तान्त सब कहिला सभारे ॥३४९
कत रात्र्ये कोन् दिगे केहो नाहि जानि ।
मुञि पापिष्ठेरे वञ्चि गेला न्यासिमणि ॥३५०
सत्य कहि भाइसब तोमा सभा स्थाने ।
ना जानि चैतन्य गियाछेन कोन्खाने ॥३५१
यत मते वाचस्पति कहेन लोकेरे ।
प्रतीत काहारो नाहि जन्मये अन्तरे ॥३५२
लोकेर गहल देखि आछेन बिरले ।
एइ ज्ञाने सभेइ आछेन कुतूहले ॥३५३
केहोकेहो साधे वाचस्पतिरे बिरले ।
आमारे देखाओ आमि केबल एकले ॥३५४
सर्वलोक साधे वाचस्पतिर चरणे ।
एकबार मात्र ताँरे देखिले नयने ॥३५५
तबे सभे घर याइ आनन्दित हैया ।
एइ वाक्य प्रभु स्थाने जानाइबा गिया ॥३५६
कभु ना लङ्घिब प्रभु तोमार वचन ।
येमते आमरा पापी पाइ दरशन ॥३५७
यत-मते वाचस्पति प्रबोधिया कय ।
काहारो चित्तेते आर प्रत्यय ना हय ॥३५८
कथोक्षणे सर्वलोक प्रभु ना देखिया ।
वाचस्पतिरेओ बोले मुखर हइया ॥३५९
घरे लुकाइया वाचस्पति न्यासिमणि ।
आमा,सभा भाण्डिला कहिया मिथ्यावाणी ३६०
आमरा तरिले बा उहान कोन् दुःख ।
आपनेहि तरिबेन एइ कोन् सुख ॥३६१
केहो बोले सुजनेर एइ से धर्म हय ।
सभार उद्धार करे हइया सदय ॥३६२
आपनार भाल हउ ये ते जन देखे ।
सुजने आपना छाड़ियाओ पर राखे ॥३६३
केहो बोले व्यबहारे मिष्ट द्रव्य आनि ।
एका उपभोग कैले अपराध गणि ॥३६४
ए त मिष्ट त्रिभुवने अति अनुपाम ।
एकेश्वर इहा कि करिते योग्य पान ॥३६५
केहो बोले विप्र किछु कपट हृदय ।
पर उपकारे तत नहेन सदय ॥३६६
एके वाचस्पति दुःखी प्रभुर बिरहे ।
आरे सभे एमत दुर्यश वाणी कहे ॥३६७
दुइमते दुःखी विप्र परम उदार ।
ना जानेन कोन् मते हय प्रतीकार ॥३६८
हेनइ समये एक आसिया ब्राह्मण ।
वाचस्पति कर्णमूले कहिल वचन ॥३६९
चैतन्यगोसाञि गेला कुलियानगरे ।
एबे ये जुयाय ताहा करह सत्वरे ॥३७०
शुनि मात्र वाचस्पति परम सन्तोषे ।
ब्राह्मणेरे आलिङ्गन दिलेन हरिषे ॥३७१

ततक्षणे आइलेन सर्वलोक यथा ।
सभारे आसि कहिलेन गोप्य कथा ॥३७२
तोमरा सकल लोक तत्त्व ना जानिया ।
दोष आमा आमि थुइयाछि लुकाइया ॥३७३
एबे एइ शुनिलाम कुलियानगरे ।
आछेन आसिया कहिलेन विप्रवरे ॥३७४
सभे चल यदि सत्य हय ए वचन ।
तबे से आमारे सभे बलिह ब्राह्मण ॥३७५
सर्वलोक हरि बलि वाचस्पति सङ्गे ।
सेइक्षणे सभे चलिलेन महारङ्गे ॥३७६
"कुलियानगरे आइलेन न्यासिमणि ।"
सेइक्षणे सर्वदिके हैल हरिध्वनि ॥३७७
सबे गङ्गा मध्ये नदीयाय कुलियाय ।
शुनिमात्र सर्वलोके महानन्दे धाय ॥३७८
वाचस्पति ग्रामे छिल यतेक गहल ।
तार कोटिकोटि गुणे पूरिल सकल ॥३७९
कुलियाय आकर्षण ना याय कथन ।
ताहा वर्णिबारे शक्त सहस्रवदन ॥३८०
लक्षलक्ष नौका बा आइल कोथा हैते ।
ना जानि कतेक पार हय कत मते ॥३८१
कतेक बा नौका डुबे गङ्गार भितरे ।
तथापि सभेइ तरे केहो नाहि मरे ॥३८२
नौका डुबिलेइ मात्र गङ्गा हय स्थल ।
हेन चैतन्येर अनुग्रह इच्छा बल ॥३८३
ये प्रभुर नाम गुण सकृत ये गाय ।
से संसार अब्धि तरे वत्सपद प्राय ॥३८४
हेन प्रभु देखिते साक्षाते ये आइसे ।
ताँहारा ये गङ्गा तरिबेन चित्र किसे ॥३८५
लक्षलक्ष लोक भासे जाह्नवीर जले ।
सभे पार हयेन परम कुतूहले ॥३८६
गङ्गाय हइया पार आपना आपनि ।
कोलाकोलि करि सभे करे हरिध्वनि ॥३८७
खेयारिर कत बा हइल उपार्जन ।
कतकत हाट बा वसिल सेइक्षण ॥३८८
चतुर्दिगे यार येइ इच्छा से-इ किने ।
हेन नाहि जानि इहा करे कोन् जने ॥३८९
क्षणेके कुलियाग्राम नगर प्रान्तर ।
परिपूर्ण हइल स्थल नाहि अवसर ॥३९०
अनन्त अर्वुद लोक करे हरिध्वनि ।
बाहिर ना हय गुप्ते आछे न्यासिमणि ॥३९१
क्षणेके आइला महाशय वाचस्पति ।
तिँहो नाहि पायेन प्रभुर कोथा स्थिति ॥३९२
कथोक्षणे बाचस्पति मात्रे एकेश्वर ।
डाकि आनाइला श्रीगौरसुन्दर ॥३९३
देखि मात्र प्रभु विशारदेर नन्दन ।
दण्डवत हइया पड़िला सेइक्षण ॥३९४
चैतन्येर अवतार वर्णिया वर्णिया ।
श्लोक करि पड़े विप्र प्रणति करिया ॥३९५
"संसार उद्धार लागि ये चैतन्यरूपे ।
तारिलेन यतेक पतित भव कूपे ॥३९६
से गौरसुन्दर कृपासमुद्रेर पा'य ।
जन्मजन्म मोर चित्त वसुक सदाय ॥३९७
संसार सागरे मग्न जगत देखिया ।
निरवधि वर्षे प्रेम कृपायुक्त हैया ॥३९८
हेन से अतुल कृपामय गौरधाम ।
स्फुरुक आमार हृदयेते अविराम ॥"३९९
एइमत श्लोक पढ़ि करे विप्र स्तुति ।
पुनःपुन दण्डवत हय वाचस्पति ॥४००
विशारद चरणे आमार नमस्कार ।
सार्वभौम विद्यावाचस्पति पुत्र याँर ॥४०१

वाचस्पति देखि प्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
कृपादृष्ट्ये वसिवारे बलिला उत्तर ॥४०२
दाण्डाइया कर जुड़ि बोले वाचस्पति ।
मोर एक निवेदन शुन महा मति !४०३
स्वच्छन्द परमानन्द तुमि दयामय ।
सर्व्व कर्म तोमार आपन इच्छामय ॥४०४
आपन इच्छाय थाक, चलह आपने ।
आपने जानह तेञि लोके तोमा जाने ॥४०५
एतेके तोमार कर्म तुमि से प्रमाण ।
विधि बा निषेध के तोमारे दिबे आन ॥४०६
सबे मोरे सर्वलोक तत्त्व ना जानिया ।
दोषेन अन्तरे 'क्रूर' आमारे बलिया ॥४०७
तोमारे आपन घरे मुञि लुकाइया ।
थुइयाछों लोके बोले तत्त्व ना जानिया ॥४०८
तुमि प्रभु तिलार्द्धेक बाहिर हइले ।
तबे मोरे ब्राह्मण करिया लोके बोले ॥४०९
हासिते लागिला प्रभु विप्रेर वचने ।
ताँर इच्छा पालिया चलिला सेइक्षणे ॥४१०
येइमात्र महाप्रभु बाहिर हइला ।
सेइ सभे आनन्दसागरे मग्न हैला ॥४११
चतुर्दिगे लोक दण्डवत हइ पड़े ।
यार येन मत स्फुरे सेइ स्तुति पढ़े ॥४१२
अनन्त अर्बुद लोक हरिध्वनि करे ।
भासिल सकल लोक आनन्दसागरे ॥४१३
सहस्रसहस्र कीर्त्तनीया सम्प्रदाय ।
स्थानेस्थाने सभेइ परमानन्दे गाय ॥४१४
अहर्निश परानन्द कृष्णनाम ध्वनि ।
सकल भुवन पूर्ण कैला न्यासिमणि ॥४१५
करताल मृदङ्ग मन्दिरा सङ्कीर्त्तने ।
परमानन्दे ब्रह्मनाम उठिल भुवने ॥४१६
वैकुण्ठ सम्पत्ति ये दुर्ल्लभ सङ्कीर्त्तन ।
ताहा पृथिवीते करे श्रीशचीनन्दन ॥४१७
श्वेतद्वीपेर सम्पत्ति सुदुर्ल्लभ गणि ।
ताहा पृथिवीते करे न्यासि चूड़ामणि ॥४१८
ब्रह्मलोक शिवलोक आदि यत लोक ।
ये सुखेर कला लेशे सभेइ अशोक ॥४१९
योगीन्द्र मुनीन्द्र मत्त ये सुखेर लेशे ।
ताहा करायेन पृथिवीते न्यासि बेशे ॥४२०
हेन सर्वशक्तिसमन्वित भगवान् ।
ये पापिष्ठ मायाबशे बोले अप्रमाण ॥४२१
तार जन्म कर्म विद्या ब्रह्मण्य आचार ।
सब मिथ्या सेइ पापी शोच्य सभाकार ॥४२२
भजभज आरे भाइ ! चैतन्य चरणे ।
अविद्याबन्धन खण्डे याहार श्रवणे ॥४२३
याहार स्मरणे सर्व ताप बिमोचन ।
भजभज हेन न्यासिमणिर चरण ॥४२४
एइमत चतुर्दिगे देखि सङ्कीर्त्तन ।
आनन्दे भासेन प्रभु लइ सर्व गण ॥४२५
आनन्दधाराय पूर्ण श्रीगौरसुन्दर ।
येन चतुर्दिगे बहे जाह्नवीर जल ॥४२६
वाह्य नाहि परानन्दसुखे आपनार ।
सङ्कीर्त्तन आनन्दविह्वल अवतार ॥४२७
येइ सम्प्रदाय प्रभु देखेन सम्मुखे ।
ताहातेइ नृत्य करे परानन्द सुखे ॥४२८
ताहारा कृतार्थ हेन माने आपनारे ।
हेनमते रङ्ग करे श्रीगौरसुन्दरे ॥४२९
विह्वलेर अग्रगण्य नित्यानन्द राय ।
कखनो धरिया तारे आपने नाचाय ॥४३०
आपने कखनो नृत्य करे ताँर सङ्ग ।
आपने विह्वल आपनार प्रेमरङ्ग ॥४३१

[..]त्य करे महाप्रभु करि सिंहनाद ।
[..]नाद श्रवणे खण्डे सकल बिषाद ॥४३२
[..]ार रसे मत्त बस्त्र ना जाने शङ्कर ।
[..]न प्रभु नाचे सर्वलोकेर भितर ॥४३३
[..]नन्त ब्रह्माण्ड हय यार शक्तिबशे ।
[..] प्रभु नाचये पृथिवीते प्रेमरसे ॥४३४
[..] प्रभु देखिते सर्ववेदे काम्य करे ।
[..] प्रभु नाचये सर्वजनेर गोचरे ॥४३५
एइमत सर्वलोक महानन्दे भासे ।
संसार तरिल चैतन्य परकाशे ॥४३६
यतेक आइसे लोक दशदिक हैते ।
सभेइ आसिया देखे प्रभुरे नाचिते ॥४३७
वाह्य नाहि प्रभुर—विह्वल प्रेमरसे ।
देखि सर्वलोक सुख-सिन्धु माझे भासे ॥४३८
कुलियार प्रकाशे यतेक पापी छिल ।
उत्तम मध्यम नीच सभे पार हैल ॥४३९
कुलियाग्रामेते चैतन्येर परकाश ।
[..]हार श्रवणे छिण्डे सर्व कर्म पाश ॥४४०
[..]कल जीवेरे प्रभु दरशन दिया ।
[..]ुखमय चित्तवृत्ति सभार करिया ॥४४१
[..]बे सब आपन पार्षदगण लैया ।
[..]सिलेन महाप्रभु वाह्य प्रकाशिया ॥४४२
[..]नइ समये एक आसिया ब्राह्मण ।
[..]ढ़ करि धरिलेन प्रभुर चरण ॥४४३
[..]विप्र बोले प्रभु ! मोर एक निवेदन ।
[..]ाछे ताहा कहों यदि खाणि देह मन ॥४४४
[..]क्तिर प्रभाब मुञि पापी ना जानिया ।
[..]हु निन्दा करियाछों आपना खाइया ॥४४५
कलियुगे किसेर वैष्णव, कि कीर्त्तन ।
एइमत अनेक बलिगलुँ अनुक्षण ॥४४६

एबे प्रभु से पापिष्ठ कर्म समङरिते ।
अनुक्षण चित्त मोर देह सर्वमते ॥४४७
संसार उद्धार सिंह तोमार प्रताप ।
कह मोर केमते खण्डये सेइ पाप ॥४४८
शुनि प्रभु अकैतव विप्रेर वचन ।
हासिया उपाय कहे श्रीशचीनन्दन ॥४४९
शुन विप्र ! बिष करि ये मुखे भक्षण ।
सेइ मुखे करि यदि अमृत ग्रहण ॥४५०
बिषो हय जीर्ण, देह हय त अमर ।
अमृत प्रभाबे; एबे शुनह उत्तर ॥४५१
ना जानिया यत तुमि करिले निन्दन ।
से केबल बिष तुमि करिले भोजन ॥४५२
परम अमृत एबे कृष्ण गुण नाम ।
निरवधि सेइ मुखे कर तुमि पान ॥४५३
ये मुखे करिले तुमि वैष्णव निन्दन ।
सेइ मुखे कर तुमि वैष्णव बन्दन ॥४५४
सभा हैते भक्तिर महिमा बाढ़ाइया ।
गीत कवित्व विप्र कर तुमि गिया ॥४५५
कृष्ण यश परानन्द अमृते तोमार ।
निन्दा बिष यत सब तरिब संहार ॥४५६
एइ कहि तोमारेइ ए नहे केबल ।
ना जानिया निन्दा करिलेक ये सकल ॥४५७
आर यदि निन्दा कर्म कभु ना आचरे ।
निरवधि विष्णु वैष्णवेर स्तुति करे ॥४५८
ए सकल पाप घुचे एइ से उपाये ।
कोटि प्रायश्चित्तेओ अन्यथा नाहि याये ॥४५९
चल विप्र कर गिया भक्तिर वर्णन ।
तबे से तोमार सर्व-पाप बिमोचन ॥४६०
सकल वैष्णव श्रीमुखेर वाक्य शुनि ।
आनन्दे करेन जयजय हरिध्वनि ॥४६१

निन्दापातकेर एइ प्रायश्चित सार ।
कहिलेन श्रीगौरसुन्दर अवतार ॥४६२
एइ आज्ञा ये ना माने निन्दे साधुजन ।
दुःखसिन्धु माझे भासे सेइ पापिगण ॥४६३
चैतन्येर आज्ञा ये मानये वेदसार ।
सुखे सेइ गण हय भब सिन्धु पार ॥४६४
विप्रेरे करिते प्रभु तत्त्व उपदेश ।
क्षणेके पण्डित देवानन्देर प्रवेश ॥४६५
गृहवासे यखने आछिला गौरचन्द्र ।
तखने यतेक करिलेन परानन्द ॥४६६
से समय देवानन्दपण्डितेर मने ।
नहिल विश्वास, ना देखिल ते कारणे ॥४६७
देखिबार योग्यता आछये पुनि तान ।
तबे केने ना देखिला कृष्ण से प्रमाण ॥४६८
सन्न्यास करिया यदि ठाकुर चलिला ।
तान भाग्ये वक्रेश्वर आसिया मिलिला ॥४६९
वक्रेश्वरपण्डित चैतन्य प्रियपात्र ।
ब्रह्माण्ड पवित्र याँर स्मरणेइ मात्र ॥४७०
निरवधि कृष्णप्रेम विग्रह विह्वल ।
याँर नृत्ये देवासुर मोहित सकल ॥४७१
अश्रु कम्प, स्वेद, हास्य, पुलक हुङ्कार ।
वैवर्ण्य आनन्दमूर्च्छा आदि ये विकार ॥४७२
चैतन्यकृपाय मात्र नृत्ये प्रवेशिले ।
सकल आसिया वक्रेश्वर देहे मिले ॥४७३
वक्रेश्वरपण्डितेर उद्दाम बिकार ।
सकल कहिते शक्ति आछये काहार ॥४७४
दैवे देवानन्दपण्डितेर भाग्यवशे ।
रहिलेन ताँहार आश्रमे प्रेमरसे ॥४७५
देखिया ताँहार तेजःपूर्ण कलेवर ।
त्रिभुवने अतुलित विष्णुभक्तिधर ॥४७६
देवानन्दपण्डित परम सुखी मने ।
अकैतव प्रेमभावे करेन सेवने ॥४७७
वक्रेश्वरपण्डित नाचेन यतक्षण ।
वेत्रहस्ते आपने बुलेन ततक्षण ॥४७८
आपने करेन सब लोक एक भिते ।
पड़िले आपने धरि राखेन कोलेते ॥४७९
ताँहार अङ्गेर धूला बड़ भक्ति मने ।
आपनार सर्व-अङ्गे करेन लेपने ॥४८०
ताँर सङ्गे थाकि ताँहार शुनिया प्रकाश ।
तखने जन्मिल प्रभु चैतन्य विश्वास ॥४८१
वैष्णवसेवार फल कहये पुराणे ।
तार साक्षी एइ सभे देख विद्यमाने ॥४८२
आजन्म धार्मिक उदासीन ज्ञानवान् ।
भागवत अध्यापना विने नाहि आन ॥४८३
शान्त दान्त जितेन्द्रिय निर्ल्लोभ विषये ।
प्राय आर कतेक बा गुण ताहे हये ॥४८४
तथापिह गौरचन्द्रे नहिल विश्वास ।
वक्रेश्वर प्रसादे से कुबुद्धि बिनाश ॥४८५
कृष्णसेवा हैतेओ वैष्णवसेवा बड़ ।
भागवत साक्षि सर्वशास्त्रे कैल दढ़ ॥४८६

तथाहि—

सिद्धिर्भवति वा नेति संशयोऽच्युतसेविनाम् ।
निःसंशयस्तु तद्भक्तपरिचर्य्यारतात्मनाम् ॥४८७

अनुवाद ।

जो लोक भगवान् अच्युत की परिचर्य्या करते रहते हैं, उनकी सिद्धि होगी अथवा नहीं, इस प्रकार संशय होना सम्भव है, किन्तु जिनका चित्त भक्त परिचर्य्या में रत है, उनमें उस प्रकार संशय नहीं होता है, कारण, भक्त सेवा से सिद्धि सुनिश्चित है।

एतेके वैष्णसेवा परम उपाय ।
भक्तसेवा हैते से सभेइ कृष्ण पाय ॥४८८

वक्रेश्वरपण्डितेर सङ्गेर प्रभावे।
गौरचन्द्र देखिते चलिला अनुरागे ॥४८९
वसिया आछेन गौरचन्द्र भगवान्।
देवानन्द पण्डित हइला विद्यमान ॥४९०
दण्डवत देवानन्दपण्डित करिया।
रहिलेन एक भिते सङ्कोचित हैया ॥४९१
प्रभुओ ताहाने देखि सन्तोष हइला।
बिरल हइया ताने लइया वसिला ॥४९२
पूर्व तान यत किछु छिल अपराध।
सकल क्षमिया प्रभु करिला प्रसाद ॥४९३
प्रभु बोले तुमि ये सेविला वक्रेश्वर।
अतएब हैला तुमि आमार गोचर ॥४९४
वक्रेश्वर पण्डित कृष्णेर पूर्ण शक्ति।
सेइ कृष्ण पाय ये ताँहारे करे भक्ति ॥४९५
वक्रेश्वर हृदये कृष्णेर निज घर।
कृष्ण नृत्य करेन नाचिते वक्रेश्वर ॥४९६
ये ते स्थाने यदि वक्रेश्वर सङ्ग हय।
सेइ स्थान सर्वतीर्थ श्रीवैकुण्ठमय ॥४९७
शुनि विप्र देवानन्द प्रभुर वचन।
जोड़हस्ते लागिलेन करिते स्तवन ॥४९८
जगत उद्धार लागि तुमि कृपामय!
नवद्वीप माझे आसि हइला उदय ॥४९९
मुञि पापी दैव दोषे तोमा ना जानिलुँ।
तोमार परमानन्दे बञ्चित हइलुँ ॥५००
सर्व भूत कृपालुता तोमार स्वभाव।
एइ मागोँ तोमाते हउक अनुराग ॥५०१
एक निवेदन मोर तोमार चरणे।
करिमु उपाय तार बलिबा आपने ॥५०२
मुञि अ-सर्वज्ञ सर्वज्ञेर ग्रन्थ लैया।
भागवत पढ़ाङ आपने अज्ञ हैया ॥५०३
किबा बाखानिमु, पढ़ाइमु केमने।
इहा प्रभु! आज्ञा मोरे करिबा आपने ॥५०४
शुनि तान वाक्य गौरचन्द्र भगवान्।
कहिते लागिला भागवतेर प्रमाण ॥५०५
शुन विप्र! भागवते एइ बाखानिबा।
भक्ति विनु आर किछु मुखे ना आनिबा ॥५०६
आद्य मध्य अन्त्ये भागवते एइ कय।
विष्णुभक्ति नित्य सिद्ध अक्षय अव्यय ॥५०७
अनन्त ब्रह्माण्डे सबे सत्य विष्णुभक्ति।
महाप्रलयेओ यार थाके पूर्ण शक्ति ॥५०८
मोक्ष दिया भक्ति गोप्य करे नारायणे।
हेन भक्ति ना जानि कृष्णेर कृपा विने ॥५०९
भागवत शास्त्रे से भक्तिर तत्त्व कहे।
तेञि भागवतसम कोन शास्त्र नहे ॥५१०
येनरूप मत्स्य कूर्म आदि अवतार।
आविर्भाब तिरोभाव येन ता'सभार ॥५११
एइमत भागवत कारो कृत नय।
आविर्भाब तिरोभाब आपनेइ हय ॥५१२
भक्तियोगे भागवत व्यासेर जिह्वाय।
स्फुर्त्ति से हइल मात्र कृष्णेर कृपाय ॥५१३
ईश्वरेर तत्त्व येन बुझने ना याय।
एइमत भागवत सर्वशास्त्रे गाय ॥५१४
भागवत बुझि हेन यार आछे ज्ञान।
से-इ नाहि बुझे भागवतेर प्रमाण ॥५१५
अज्ञ हइ भागवते ये लय शरण।
भागवत अर्थ तार हय दरशन ॥५१६
प्रेममय भागवत कृष्णेर श्रीअङ्ग।
याहाते कहेन यत गोप्य कृष्ण रङ्ग ॥५१७
वेद शास्त्र पुराण कहिया वेदव्यास।
तथापि चित्तेर नाहि पाइला प्रकाश ॥५१८

यखने श्रीभागवत जिह्वाय स्फुरिल ।
ततक्षणे चित्त वृत्ति प्रसन्न हइल ॥५१९
हेन ग्रन्थ पढ़ि केहो पड़ये सङ्कटे ।
शुन विप्र तोमारे कहिये अकपटे ॥५२०
आद्य मध्य अवसाने तुमि भागवते ।
भक्तियोग मात्र बाखानिह सर्वमते ॥५२१
तबे आर तोमार नहिब अपराध ।
सेइक्षणे चित्तवृत्त्ये पाइब प्रसाद ॥५२२
सकल शास्त्रेइ मात्र 'कृष्णभक्ति' कय ।
विशेषत भागवत भक्ति रसमय ॥५२३
चल तुमि याह अध्यापना कर गिया ।
कृष्णभक्ति अमृत सभारे बुझाइया ॥५२४
देवानन्दपण्डित प्रभुर वाक्य शुनि ।
दण्डवत प्रणाम करिला भाग्य मानि ॥५२५
प्रभुर चरण काय मने करि ध्यान ।
चलिलेन विप्र करि स्तवन प्रणाम ॥५२६
भक्तियोग मात्र भागवतेर व्याख्यान ।
आद्य मध्य अन्त्ये कभु ना बुझाये आन ॥५२७
ना बाखाने भक्ति भागवत ये पढ़ाय ।
व्यर्थ वाक्य व्यय करे अपराध पाय ॥५२८
मूर्त्तिमन्त भागवत भक्तिरस मात्र ।
इहा बुझे ये हय कृष्णेर कृपापात्र ॥५२९
भागवतपुस्तको थाकये यार घरे ।
कोन अमङ्गल नाहि याय तथाकारे ॥५३०
भागवत पूजिले कृष्णेर पूजा हय ।
भागवत पठन श्रवणे भक्ति पाय ॥५३१
दुइ स्थाने 'भागवत' नाम शुनि मात्र ।
ग्रन्थ भागवत आर कृष्णकृपापात्र ॥५३२
नित्य पूजे पढ़े शुने चाहे भागवत ।
सत्यसत्य सेहो हइबेक सेइमत ॥५३३
हेन भागवत कोन दुष्कृति पढ़िया ।
नित्यानन्दनिन्दा करे तत्त्व ना जनिया ॥५३४
भागवतरस नित्यानन्द मूर्त्तिमन्त ।
इहा जाने ये हय परम भाग्यवन्त ॥५३५
निरवधि नित्यानन्द सहस्रवदने ।
भागवतरस से गायेन अनुक्षणे ॥५३६
आपनेइ नित्यानन्द अनन्त यद्यपि ।
तथापिह पार नाहि पायेन अद्यापि ॥५३७
हेन भागवत हेन अनन्त अपार ।
इहाते कहिल सभे भक्तिरस सार ॥५३८
देवानन्दपण्डितेर लक्ष्ये सभाकारे ।
भागवत अर्थ बुझाइलेन ईश्वरे ॥५३९
एइमत ये ये जन आइसे बुझिते ।
सभारेइ प्रतिकार करिला सुरीते ॥५४०
कुलियाग्रामेते आसि श्रीकृष्णचैतन्य ।
हेन नाहि यारे प्रभु ना करिला धन्य ॥५४१
सर्वलोक सुखी हैला प्रभुरे देखिया ।
पुनःपुन देखे सभे नयन भरिया ॥५४२
मनोरथ पूर्ण हैल देखि सर्वलोक ।
आनन्दे भासये पासरिया दुःख शोख ॥५४३
ए सब विलास ये शुनये हर्ष मने ।
श्रीचैतन्य सङ्ग पाय सेइ सब जने ॥५४४
यथातथा जम्मुक सभार श्रेष्ठ हय ।
कृष्ण यश शुनिले कखनो मन्द नय ॥५४५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥५४६

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे नीलाचलविलासादि-वर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ।

চতুর্থ অধ্যায়

जयजय जय कृपासिन्धु गौरचन्द्र ।
जयजय सकल मङ्गल पदद्वन्द्व ॥१
जयजय श्रीकृष्णचैतन्य न्यासिराज ।
जयजय चैतन्येर भकत समाज ॥२
हेनमते प्रभु सर्वजीव उद्धारिया ।
मथुराय चलिलेन भक्तगोष्ठी लैया ॥३
गङ्गातीरेतीरे प्रभु लइलेन पथ ।
स्नान पाने गङ्गार पूरिल मनोरथ ॥४
गौड़ेर निकटे गङ्गातीरे एक ग्राम ।
ब्राह्मणसमाज तार 'रामकेलि' नाम ॥५
दिन चारि पाँच प्रभु सेइ पुण्यस्थाने ।
आसिया रहिला येन केहो नाहि जाने ॥६
सूर्य्येर उदय कि कखनो गोप्य हय ।
सर्वलोक शुनिलेन चैतन्य विजय ॥७
सर्वलोक देखिते आइसे हर्ष मने ।
स्त्री बालक वृद्ध आदि सज्जन दुर्जने ॥८
निरवधि प्रभुर आबेशमय अङ्ग ।
प्रेमभक्ति विनु आर नाहि कोनो रङ्ग ॥९
हुङ्कार, गर्जन, कम्प, पुलक, क्रन्दन ।
निरन्तर आछाड़ पड़ये घनेघन ॥१०
निरवधि भक्तगण करेन कीर्त्तन ।
तिलार्द्धेको अन्यो कार्य्य नाहि कोनो क्षण ॥११
हेन से क्रन्दन प्रभु करेन डाकिया ।
लोके शुने क्रोशेकेर पथेत थाकिया ॥१२
यद्यपिह भक्तिरसे अज्ञ सर्वलोक ।
तथापिह प्रभु देखि सभार सन्तोष ॥१३
दूरे थाकि सर्वलोक दण्डवत करि ।
सभे मेलि उच्च करि बोले हरि हरि ॥१४
शुनि मात्र प्रभु हरिनाम लोकमुखे ।
विशेषे उल्लास बाढ़े परानन्दसुखे ॥१५
बोल बोल बोल प्रभु बोले बाहु तुलि ।
विशेषे बोलेन सभे हइ कुतूहली ॥१६
हेन से आनन्द प्रकाशेन गौर राय ।
यबनेओ बोले हरि अन्येर कि दाय ॥१७
यबनेओ दूरे थाकि करे नमस्कार ।
हेन गौरचन्द्रेर कारुण्य अवतार ॥१८
तिलार्द्धेको प्रभुर नाहिक अन्य कर्म ।
निरन्तर लओयायेन सङ्कीर्त्तनधर्म ॥१९
चतुर्दिगे थाकि लोक आइसे देखिते ।
देखिया काहारो चित्त ना लय याइते ॥२०
सभे मेलि आनन्दे करेन हरिध्वनि ।
निरन्तर चतुर्दिगे आर नाहि शुनि ॥२१
निकटे यबनराजा परम दुर्बार ।
तथापिह चित्ते भय ना जन्मे काहार ॥२२
निर्भय हइया सर्वलोक बोले 'हरि' ।
दुःख शोक घर द्वार सकल पासरि ॥२३
कोटोयाल गिया कहिलेक राजा-स्थाने ।
एक न्यासी आसियाछे रामकेलिग्रामे ॥२४
निरवधि करये हिन्दुर सङ्कीर्त्तन ।
ना जानि ताँहार स्थाने मिले कतजन ॥२५
राजा बोले कह कह सन्न्यासी केमन ।
कि खाय, कि नाम, कैछे देहेर गठन ॥२६
कोटोयाल बोले शुन शुनह गोसाञि ।
एमत अद्भुत कभु देखि शुनि नाञि ॥२७
सन्न्यासीर शरीरेर सौन्दर्य्य देखिते ।
कामदेव सम हेन ना पारि बलिते ॥२८
जिनिया कनक कान्ति प्रकाण्ड शरीर ।
आजानुलम्बित भुज नाभि सुगभीर ॥२९
सिंह ग्रीव गज स्कन्ध कमल नयान ।
कोटि चन्द्रो से मुखेर ना करि समान ॥३०

सुरङ्ग अधर मुक्ता जिनिया दशन ।
काम शरासन येन भ्रूभङ्ग पत्तन ॥३१
सुन्दर सुपीन बक्ष लेपित चन्दन ।
महा कटितटे शोभे अरुण वसन ॥३२
अरुण कमल येन चरणयुगल ।
दश नख येन दश दर्पण निर्मल ॥३३
कोनो बा राज्येर कोन राजार नन्दन ।
ज्ञान पाइ न्यासी हइ करये भ्रमण ॥३४
नवनीत हैतेओ कोमल सर्व अङ्ग ।
ताहाते अद्भुत शुन आछाड़ेर रङ्ग ॥३५
एकदण्डे पड़ेन आछाड़ शतशत ।
पाषाण भाङ्गये तभु अङ्ग नहे क्षत ॥३६
निरन्तर सन्न्यासीर ऊर्द्ध्व रोमाबली ।
पनसेर प्राय अङ्गे पुलकमण्डली ॥३७
क्षणेक्षणे सन्न्यासीर हेन कम्प हय ।
सहस्रजनेओ धरिबारे शक्त नय ॥३८
दुइ लोचनेर जल अद्भुत देखिते ।
कत नदी बहे हेन ना पारि बलिते ॥३९
कखनो बा सन्न्यासीर हेन हास्य हय ।
अट्टअट्टहास्ये प्रहरेक क्षमा नय ॥४०
कखनो मूर्च्छित हय शुनिया कीर्त्तन ।
सभे भय पाय किछु ना थाके चेतन ॥४१
बाहु तुलि निरन्तर बोले हरिनाम ।
भोजन शयन आर नाहि किछु काम ॥४२
चतुर्दिग हैते लोक आइसे देखिते ।
काहारो ना लय चित्त घरेरे याइते ॥४३
कत देखियाछि आमि सब योगी ज्ञानी ।
एमत अद्भुत कभु नाहि देखि शुनि ॥४४
कहिलाम एइ महाराज ! तोमा स्थाने ।
देश धन्य हैल ए पुरुष आगमने ॥४५
ना खाय ना लय कारो ना करे सम्भाष ।
सबे निरवधि एक कीर्त्तन विलास ॥४६
यद्यपि यबन राजा परम दुर्बार ।
कथा शुनि चित्ते बड़ हैल चमत्कार ॥४७
केशव खानेरे राजा डाकि आनाइया ।
जिज्ञासये राजा बड़ बिस्मय हइया ॥४८
कह त केशवखान ! केमत तोमार ।
श्रीकृष्णचैतन्य बलि नाम बोल यार ॥४९
केमत ताँहार कथा केमत मनुष्य ।
केमत गोसाञि तिँहो कहिबा अवश्य ॥५०
चतुर्दिगे थाकि लोक ताँहारे देखिते ।
कि निमित्ते आइसे ? कहिबे भालमते ॥५१
शुनिया केशवखान परम सज्जन ।
भय पाइ लुकाइया कहेन कथन ॥५२
के बोले गोसाञि एत भिक्षुक सन्न्यासी ।
देशान्तरि गरिव बृक्षेर तलवासी ॥५३
राजा बोले गरिव ना बोल कभु ताने ।
महा दोष हय इहा शुनिलेओ काणे ॥५४
हिन्दु यारे बोले कृष्ण खोदाय यबने ।
से-इ तिँहो निश्चय जानिह सर्वजने ॥५५
आपनार राज्ये से आमार आज्ञा रहे ।
ताँर आज्ञा सर्वदेशे शिरे करि बहे ॥५६
एइ निजराज्येइ आमारे कत जने ।
मन्द करिबारे लागियाछे मनेमने ॥५७
ताँहारे सकल देशे काय वाक्य मने ।
ईश्वर नहिले विना अर्थे भजे केने ॥५८
छयमास आजि आमि जीविका ना दिले ।
नाना युक्ति करिबेक सेवक सकले ॥५९
आपनारे खाइ लोक ताहाने सेविते ।
चाहे ताहा केहो नाहि पाय भालमते ॥६०

অতএব তিঁহো সত্য জানিহ ঈশ্বর।
গরিব করিয়া তাঁরে না বোল উত্তর ॥৬১
রাজা বোলে এই মুঞি বলিলুঁ সভারে।
কেহো পাছে উপদ্রব করয়ে তাঁহারে ॥৬২
যেখানে তাহান ইচ্ছা, থাকুন সেখানে।
আপনার শাস্ত্রমত করুন বিধানে ॥৬৩
সর্বলোক লই সুখে করুন কীর্ত্তন।
কি বিরলে থাকুন, যে লয় তাঁর মন ॥৬৪
কাজী বা কোটাল বা তাঁহাকে কোনো জনে।
কিছু বলিলেই তার লইমু জীবনে ॥৬৫
এই আজ্ঞা দিয়া রাজা গেলা অভ্যন্তর।
হেন রঙ্গ করায়েন শ্রীগৌরসুন্দর ॥৬৬
যে হুসেন সাহা সর্ব উড়িয়ার দেশে।
দেবমূর্ত্তি ভাঙ্গিলেক দেউল বিশেষে ॥৬৭
হেন যবনেও মানিলেক গৌরচন্দ্র।
তথাপিহ এবে না মানায়ে যত অন্ধ ॥৬৮
মাথা মুড়াইয়া সন্ন্যাসীর বেশ ধরে।
চৈতন্যের যশ শুনি পোড়য়ে অন্তরে ॥৬৯
যার যশ অনন্ত ব্রহ্মাণ্ড পরিপূর্ণ।
যার যশে অবিদ্যাসমূহ করে চূর্ণ ॥৭০
যার যশে শেষ রমা অজ ভব মত্ত।
যার যশ গায় চারিবেদে করি তত্ত্ব ॥৭১
হেন শ্রীচৈতন্য যশে যার অসন্তোষ।
সর্বগুণ থাকিলেও তার সর্বদোষ ॥৭২
সর্ব গুণ হীন যদি চৈতন্য চরণে।
স্মরণ করিলে যায় বৈকুণ্ঠভুবনে ॥৭৩
শুনশুন ওরে ভাই! শেষখণ্ডলীলা।
যেরূপে খেলিলা কৃষ্ণ সঙ্কীর্ত্তন খেলা ॥৭৪
শুনিয়া রাজার মুখে সুসত্য বচন।
তুষ্ট হইলেন যত সজ্জনের গণ ॥৭৫
সভে মেলি একস্থানে বসিয়া নিভৃতে।
লাগিলেন যুক্তিবাদ মন্ত্রণা করিতে ॥৭৬
স্বভাবেই রাজা মহা কাল যবন।
মহাতমোগুণবুদ্ধি জন্মে ঘনেঘন ॥৭৭
ওড্রদেশে কোটিকোটি প্রতিমা প্রাসাদ।
ভাঙ্গিলেক কতকত করিলেক প্রমাদ ॥৭৮
দৈবে আসি সত্ত্বগুণ উপজিল মনে।
তেঞি ভাল কহিলেক আমা সভা'স্থানে ॥৭৯
আর কোন পাত্র আসি কুমন্ত্রণা দিলে।
আরবার কুবুদ্ধি আসিয়া পাছে মিলে ॥৮০
জানি কদাচিত কহে কেমন গোসাঞি।
আন গিয়া সভে চাহি দেখি এই ঠাঞি ॥৮১
অতএব গোসাঞিরে পাঠাই কহিয়া।
রাজার নিকট গ্রামে কি কার্য্য রহিয়া ॥৮২
এই যুক্তি করি সভে এক সু-ব্রাহ্মণ।
পাঠাইয়া সঙ্গোপে দিলেন ততক্ষণ ॥৮৩
নিজানন্দে মহাপ্রভু মত্ত সর্বক্ষণ।
প্রেমরসে নিরবধি হুঙ্কার গর্জন ॥৮৪
লক্ষকোটি লোক মেলি করে হরিধ্বনি।
আনন্দে নাচেন মাঝে প্রভু ন্যাসিমণি ॥৮৫
অন্য কথা অন্য কার্য্য নাহি কোন ক্ষণ।
অহর্নিশ বোলেন বোলান সঙ্কীর্ত্তন ॥৮৬
দেখিয়া বিস্মিত বড় হইলা ব্রাহ্মণ।
কথা কহিবারে অবসর নাহি ক্ষণ ॥৮৭
অন্য জন সহিত কথার কোন্ দায়।
নিজ পারিষদেই সম্ভাষা নাহি পায় ॥৮৮
কিবা দিবা কিবা নিশি কিবা নিজ পর।
কিবা জল কিবা স্থল কি গ্রাম প্রান্তর ॥৮৯
কিছুই না জানে প্রভু নিজ-প্রেমরসে।
অহর্নিশ নিজ প্রেম সিন্ধু মাঝে ভাসে ॥৯০

प्रभु सङ्गे कथा कहिबारे नाहि क्षण।
भक्तगण स्थाने कथा कहिल ब्राह्मण ॥९१
विप्र बोले तुमि सब गोसाञिर गण!
समय पाइले एइ कहिओ कथन ॥९२
राजार निकट-ग्रामे कि कार्य्य रहिया।
एइ कथा सभे पाठाइलेन कहिया ॥९३
एइ कथा कहि विप्र गेला निज स्थाने।
प्रभुरे करिया कोटि दण्ड परणामे ॥९४
कथा शुनि ईश्वरेर पारिषदगणे।
सभे किछु चिन्तायुक्त हइलेन मने ॥९५
ईश्वरेर स्थाने से कहिते नाहि क्षण।
वाह्य नाहि प्रकाशेन श्रीशचीनन्दन ॥९६
बोल बोल हरि बोल हरि बोल हरि।
एइमात्र बोले प्रभु दुइ बाहु तुलि ॥९७
चतुर्दिगे महानन्दे कोटिकोटि लोके।
तालि दिया 'हरि' बोले परम कौतुके ॥९८
यार सेवकेर नाम करिले स्मरण।
सर्व विघ्न दूर रह खण्डये बन्धन ॥९९
याहार शक्तिते जीव बोले करे चले।
'परं ब्रह्म नित्य शुद्ध' वेदे यारे बोले ॥१००
याहार मायाय जीव पासरि आपना।
बद्ध हइ पाइयाछे संसार वासना ॥१०१
से प्रभु आपने सर्वजीव उद्धारिते।
अवतरियाछे भक्तिरसे पृथिवीते ॥१०२
कोन् बा ताहाने राजा कारे ताँर भय।
'यम काल आदि याँर भृत्य' वेदे कय ॥१०३
स्वच्छन्दे करेन सभा लइ सङ्कीर्त्तन।
सर्व लोक चूड़ामणि श्रीशचीनन्दन ॥१०४
आछुक ताहान, ताहाने देखिते।
यतेक आइसे लोक चतुर्दिग हैते ॥१०५
ताहाराइ केहो भय ना करे राजारे।
हेन से आनन्द दियाछेन सभाकारे ॥१०६
यद्यपिह सर्वलोक परम अज्ञान।
तथापिह देखिया चैतन्य भगवान् ॥१०७
हेन से आनन्द जन्मे लोकेर शरीरे।
यम करि भय नाइ कि दाय राजारे ॥१०८
निरन्तर सर्वलोके बोले हरिध्वनि।
कारो मुखे आर कोनो शब्द नाहि शुनि ॥१०९
हेनमते महाप्रभु वैकुण्ठ ईश्वर।
सङ्कीर्त्तन करे सर्वलोकेर भितर ॥११०
मने किछु चिन्ता पाइलेन भक्तगण।
जानिलेन अन्तर्य्यामी श्रीशचीनन्दन ॥१११
ईषत हासिया किछु वाह्य प्रकाशिया।
लागिला कहिते प्रभु माया घुचाइया ॥११२
प्रभु बोले तुमि सब भय पाओ मने।
राजा आमा देखिबारे निबेक कारणे ॥११३
आमा' चाहे हेन जन आमि ताहा चाहो।
सबे आमा' चाहे हेन कोथाओ ना पाओ ॥११४
तोमरा इहाते केने भय पाओ मने।
राजा आमा चाहे मुञि याइमु आपने ॥११५
राजा बा आमारे केने बलिब चाहिते।
कि शक्ति राजार ए बा बोल उच्चारिते ॥११६
आमि यदि बोलाइ से राजार मुखेते।
तबे से बलिब राजा आमारे चाहिते ॥११७
आमा देखिबारे शक्ति कोन् बा ताहार।
वेदे अन्वेषिया देखा ना पाय आमार ॥११८
देव-ऋषि राज-ऋषि पुराणे भारते।
आमा' अन्वेषये केहो ना पाय देखिते ॥११९
सङ्कीर्त्तन आरम्भे मोहोर अवतार।
उद्धार करिमु सर्व पतित संसार ॥१२०

ये दैत्य यबने मोरे कभु नाहि माने ।
ए युगे ताराओ कान्दिबेक मोर नामे ॥१२१
यतेक अस्पृश्य दुष्ट यबन चण्डाल ।
स्त्री-शूद्र आदि यत अधम राखाल ॥१२२
हेन भक्तियोग दिमु ए युगे सभारे ।
सुर मुनि सिद्ध ये निमित्त काम्य करे ॥१२३
विद्या धन कुल आदि तपस्यार मदे ।
ये मोर भक्तेर स्थाने करे अपराधे ॥१२४
सेइ सब जना हइब ए युगे बञ्चित ।
सबे तारा ना मानिबे आमार चरित ॥१२५
पृथिवी पर्य्यन्त यत आछे देश ग्राम ।
सर्वत्र सञ्चार हइबेक मोर नाम ॥१२६
पृथिवीते आसिया आमिह इहा चाङ ।
खोजे हेन जन मोरे कोथाओ ना पाङ ॥१२७
राजा मोरे कोथा चाहिबेक देखिबारे ।
ए सकल मिथ्या कहिल सभारे ॥१२८
वाह्य प्रकाशिला प्रभु एतेक कहिया ।
भक्त सबो सन्तोषित हइला शुनिया ॥१२९
एइमत प्रभु कथोदिन सेइ ग्रामे ।
निर्भये आछेन निज कीर्त्तन विधाने ॥१३०
ईश्वरेर इच्छा बुझिबारे शक्ति कार ।
ना गेलेन मथुरा फिरिला आरबार ॥१३१
भक्त गण स्थाने एहि कहिलेन कथा ।
आमि चलिलाम नीलाचलचन्द्र यथा ॥१३२
एत बलि स्वतन्त्र परमानन्द राय ।
चलिला दक्षिणमुखे कीर्त्तन लीलाय ॥१३३
निजानन्दे रहिया रहिया गङ्गातीरे ।
कथोदिने आइलेन अद्वैत मन्दिरे ॥१३४
पुत्रेर महिमा देखि अद्वैत आचार्य्य ।
आविष्ट हइया आछेन छाड़ि सर्वकार्य्य ॥१३५
हेनइ समये गौरचन्द्र भगवान् ।
अद्वैतेर गृहे आसि हैला अधिष्ठान ॥१३६
ये निमित्त अद्वैत आविष्ट पुत्र सङ्गे ।
से बड़ अद्भुत कथा कहि शुन रङ्गे ॥१३७
योग्य पुत्र अद्वैतेर—सेइ से उचित ।
श्रीअच्युतानन्द नाम जगत विदित ॥१३८
दैवे एकदिन एक उत्तम सन्न्यासी ।
अद्वैत-आचार्य्य-स्थाने मिलिलेन आसि ॥१३९
अद्वैत देखिया न्यासी सङ्कोचे रहिला ।
अद्वैतो न्यासीरे नमस्करि वसाइला ॥१४०
अद्वैत बोलेन भिक्षा करह गोसाञि !
न्यासी बोले भिक्षा देह आमि याहा चाइ ॥१४१
किछु मोर जिज्ञासा आछये तोमास्थाने ।
सेइ भिक्षा मोर ताहा कहिबा आपने ॥१४२
आचार्य्य बोलेन आगे करह भोजन ।
शेषे ये जिज्ञास ताहा कहिब कथन ॥१४३
न्यासी बोले आगे आछे जिज्ञासा आमार ।
आचार्य्य बोलेन बोल ये इच्छा तोमार ॥१४४
सन्न्यासी बोलेन एइ केशवभारती ।
चैतन्येर कि हयेन ? कह मोर प्रति ॥१४५
मनेमने चिन्तेन अद्वैत महाशय ।
व्यबहार परमार्थ दुइ पक्ष हय ॥१४६
यद्यपिह ईश्वरेर माता पिता नाइ ।
तथापिह देवकीनन्दन करि गाइ ॥१४७
परमार्थे गुरुओ ताँहार केहो नाइ ।
तथापि ये करे प्रभु ताइ सभे गाइ ॥१४८
प्रथमेइ परमार्थ कि कार्य्य कहिया ।
व्यबहार कहियाइ याइ प्रबोधिया ॥१४९
एत भाबि बलिलेन अद्वैत महाशय ।
केशवभारती चैतन्येर गुरु हय ॥१५०

देखितेछ गुरु तान केशवभारती ।
आर केने तबे जिज्ञासह आमा प्रति ॥१५१
एइ मात्र अद्वैत बलिते सेइक्षणे ।
धाइया अच्युतानन्द आइला सेइस्थाने ॥१५२
पञ्च बर्ष वयस मधुर दिगम्बर ।
खेला खेलि सर्व अङ्ग धूलाय धूसर ॥१५३
अभिन्न कार्त्तिक येन सर्वाङ्गसुन्दर ।
सर्वज्ञ परमभक्त सर्वशक्तिधर ॥१५४
चैतन्येर गुरु आछे वचन शुनिया ।
क्रोधावेशे कहे किछु हासिया हासिया ॥१५५
कि बलिला बाप ! बोल देखि आरबार ।
चैतन्येर गुरु आछे बिचार तोमार ॥१५६
कोन् बा साहसे तुमि एमत वचन ।
जिह्वाय आनिला ए त अद्भुत कारण ॥१५७
तोमार जिह्वाय यदि एमत आइल ।
हेन बुझि एखने से कलिकाल हैल ॥१५८
अथवा चैतन्यमाया—परम दुस्तर ।
याहाते पायेन मोह ब्रह्मादि शङ्कर ॥१५९
बुझिलाम विष्णुमाया हइल तोमारे ।
के बा चैतन्यर माया तरिबारे पारे ॥१६०
चैतन्येर गुरु आछे बलिया यखने ।
मायाबश विने इहा कहिला केमने ॥१६१
अनन्त ब्रह्माण्ड यबे चैतन्य इच्छाय ।
सब चैतन्येर लोमकूपेते मिशाय ॥१६२
जलक्रीड़ापरायण चैतन्यगोसाञि ।
विहरेन आत्मक्रीड़ा आर दुइ नाञि ॥१६३
यतयत महामुनि—महा अभिमान ।
उद्देशो ना थाके कारो कोथा कार नाम ॥१६४
पुन सेइ चैतन्येर अचिन्त्य इच्छाय ।
नाभि-पद्म हैते ब्रह्मा हयेन लीलाय ॥१६५
हइयाओ ना थाके देखिते किछु शक्ति ।
तबे शेषे करेन एकान्तभावे भक्ति ॥१६६
तबे भक्तिबशे तुष्ट हइया ताहाने ।
तत्त्व उपदेश प्रभु कहेन आपने ॥१६७
तबे सेइ ब्रह्मा प्रभु आज्ञा करि शिरे ।
सृष्टि करि सेइ ज्ञान कहेन सभारे ॥१६८
सेइ ज्ञान सनकादि पाइ ब्रह्मा हैते ।
प्रचार करेन तबे कृपाय जगते ॥१६९
याहा हैते हय आदि ज्ञानेर प्रचार ।
तान गुरु केमते बोलह आछे आर ॥१७०
बाप ! तुमि तोमा हैते शिखिबाङ कोथा ।
शिक्षागुरु हइ केने बोलह अन्यथा ॥१७१
एत बलि श्रीअच्युतानन्द मौन हैला ।
शुनिया अद्वैत परानन्दे प्रवेशिला ॥१७२
बाप ! बाप ! बलि धरि करिलेन कोले ।
सिञ्चिलेन अच्युते अङ्ग प्रेमजले ॥१७३
तुमि से जनक बाप ! मुञि से तनय ।
शिखाइते पुत्ररूपे हइले उदय ॥१७४
अपराध कैलुँ बाप क्षमह आमारे ।
आर ना बलिमु एइ नहिलुँ तोमारे ॥१७५
आतमस्तुति शुनि श्रीअच्युत महाशय ।
लज्जाय रहिला प्रभु माथा ना तोलय ॥१७६
शुनिया सन्न्यासी श्रीअच्युत वचन ।
दण्डवत हइया पड़िला सेइक्षण ॥१७७
न्यासी बोले योग्य योग्य अद्वैत नन्दन ।
येन पिता तेन पुत्र अचिन्त्य कथन ॥१७८
ए त ईश्वरेर शक्ति विने अन्य नहे ।
बालकेर मुखे कि एमत कथा हये ॥१७९
शुभ लग्ने आइलाम अद्वैत देखिते ।
अद्भुत महिमा देखिलाम नयनेते ॥१८०

पुत्रेर सहिते अद्वैतेरे नमस्करि ।
पूर्ण हइ न्यासी चलिलेन बलि 'हरि' ॥१८१
इहाने से बलि योग्य अद्वैतनन्दन ।
ये चैतन्य पादपद्मे एकान्त शरण ॥१८२
अद्वैतेरे भजे गौरचन्द्रे करे हेला ।
पुत्र हउ अद्वैतेर तभु तिँह गेला ॥१८३
पुत्रेर महिमा देखि अद्वैत आचार्य्य ।
पुत्र कोले करि कान्दे छाड़ि सर्व कार्य्य ॥१८४
पुत्रेर अङ्गेर धूला आपनार अङ्गे ।
लेपेन अद्वैत अति परानन्दरङ्गे ॥१८५
"चैतन्येर पार्षद जन्मिला मोर घरे ।"
एत बलि नाचे प्रभु तालि दिया करे ॥१८६
पुत्र कोले करि नाचे अद्वैत गोसाञि ।
त्रिभुवने याहार भक्तिर सीमा नाञि ॥१८७
पुत्रेर महिमा देखि अद्वैत विह्वल ।
नकाले उपसन्न सर्व सुमङ्गल ॥१८८
पार्षदे श्रीगौरसुन्दर सेइ क्षणे ।
ासि आविर्भाव हैला अद्वैत भवने ॥१८९
ाणनाथ इष्टदेव देखिया अद्वैत ।
ण्डवत हइ पड़िलेन पृथिवीत ॥१९०
रि' बलि श्रीअद्वैत करेन हुङ्कार ।
ानन्दे देह पासरिला आपनार ॥१९१
जरकार ध्वनि करे नारीगणे ।
ठिल परमानन्द अद्वैत भवने ॥१९२
ुभो करिया अद्वैतेरे निज कोले ।
ञ्चिलेन अङ्ग ताँर प्रेमानन्दजले ॥१९३
दपद्म वक्षे धरि आचार्य्यगोसाञि ।
दन करेन अति, वाह्य किछु नाञि ॥१९४
ुर्दिगे भक्तगण करेन क्रन्दन ।
अद्भुत प्रेम हैल ना याय वर्णन ॥१९५

स्थिर हइ क्षणेके अद्वैत महाशय ।
वसिते आसन दिला करिया विनय ॥१९६
वसिलेन महाप्रभु उत्तम आसने ।
चतुर्दिगे शोभा करे पारिषदगणे ॥१९७
नित्यानन्द अद्वैत हइल कोलाकुलि ।
दुँहा देखि अन्तरे दोँहेइ कुतूहली ॥१९८
आचार्य्येरे नमस्करिलेन भक्तगण ।
आचार्य्य सभारे कैल प्रेम आलिङ्गन ॥१९९
ये आनन्द उपजिल अद्वैतेर घरे ।
वेदव्यास विने ताहा के वर्णिते पारे ॥२००
क्षणेके अच्युतानन्द अद्वैतकुमार ।
प्रभुर चरणे आसि हैला नमस्कार ॥२०१
अच्युतेरे कोले करि श्रीगौरसुन्दर ।
प्रेमजले धुइलेन ताँर कलेवर ॥२०२
अच्युतेरे प्रभु ना छाड़ेन वक्ष हैते ।
अच्युतो प्रविष्ट हैला चैतन्य देहेते ॥२०३
अच्युतेरे कृपा देखि सर्वभक्तगण ।
प्रेमे सभे लागिलेन करिते क्रन्दन ॥२०४
यत चैतन्येर प्रिय पारिषदगण ।
अच्युतेर प्रिय नहे, हेन नाहि जन ॥२०५
नित्यानन्दस्वरूपेर प्राणेर समान ।
गदाधरपण्डितेर शिष्येर प्रधान ॥२०६
इहारे से बलि योग्य अद्वैतनन्दन ।
येन पिता, तेन पुत्र, उचित मिलन ॥२०७
एइमत श्रीअद्वैत गोष्ठीर सहिते ।
आनन्दे डुबिला प्रभु पाइया साक्षाते ॥२०८
श्रीचैतन्य कथोदिन अद्वैत इच्छाय ।
रहिला अद्वैतघरे कीर्त्तन लीलाय ॥२०९
प्राणनाथ गृहे पाइ आचार्य्यगोसाञि ।
ना जानेन आनन्दे आछेन कोन् ठाञि ॥२१०

किछु स्थिर हइया अद्वैत महामति ।
आइ स्थाने लोक पाठाइला शीघ्रगति ॥२११
दोला लइ नवद्वीपे आइला सत्वरे ।
आइरे वृत्तान्त कहि चलिबार तरे ॥२१२
प्रेम-रस समुद्रे डुबिया आछे आइ ।
कि बोलेन कि शुनेन बाह्य किछु नाइ ॥२१३
सम्मुखे याहारे आइ देखेन, ताहारे ।
जिज्ञासेन मथुरार कथा कह मोरे ॥२१४
राम कृष्ण केमत आछेन मथुराय ।
पापी कंस केमत बा करे व्यवसाय ॥२१५
चोर अक्रूरेर कथा कह जान के ।
राम कृष्ण मोर चुरि करिलेक ये ॥२१६
शुनिलाम पापी कंस मरि गेल हेन ।
मथुरार राजा कि हइल उग्रसेन ॥२१७
राम कृष्ण ! बलिया कखनो डाके आइ ।
झाट गावी दोह दुग्ध बेचिबारे याइ ॥२१८
हाथे बाड़ि करिया कखनो आइ धाय ।
धर धर सभे एइ ननीचोरा याय ॥२१९
कोथा पलाइबा आजि एड़िमु बान्धिया ।
एत बलि धाय आइ आविष्ट हइया ॥२२०
कखनो बोलेन आइ सम्मुखे देखिया ।
"चल याइ यमुनाय स्नान करि गिया ॥"२२१
कखनो ये उच्च करि करेन क्रन्दन ।
संसार द्रवये ताहा करिते श्रवण ॥२२२
अबिच्छिन्न-धारा दुइ नयनेते झरे ।
से काकु शुनिते काष्ठ पाषाण विदरे ॥२२३
कखनो बा ध्याने कृष्णसाक्षत्कार करि ।
अट्टअट्ट हासे आइ आपना पासरि ॥२२४
हेन से आनन्द हास्य अद्भुत परम ।
दुइ प्रहरेओ कभु नहे उपशम ॥२२५
कखनो ये आइ हये आनन्दमुर्च्छित ।
प्रहरेक धातु नाहि थाके कदाचित ॥२२६
कखनो बा हेन कम्प उपजे आसिया ।
पृथिवीते येन केहो तोले आछाड़िया ॥२२७
आइर ये कृष्णावेश कि तार उपमा ।
आइ बइ अन्य आर नाहि तार सीमा ॥२२८
गौरचन्द्र श्रीबिग्रहे यत कृष्णभक्ति ।
आइरेओ प्रभु दियाछेन सेइ शक्ति ॥२२९
अतएव आइर ये भक्तिर बिकार ।
ताहा वर्णिबेक सब हेन शक्ति कार् ॥२३०
हेनमते परानन्द समुद्र तरङ्गे ।
भासेन दिवस निशि आइ महारङ्गे ॥२३१
कदाचित आइर ये किछु बाह्य हय ।
सेहो विष्णुपूजा लागि जानिह निश्चय ॥२३२
कृष्णेर प्रसङ्गे आइ आछेन वसिया ।
हेनइ समये शुभवार्त्ता हैल-सिया ॥२३३
शान्तिपुरे आइलेन श्रीगौरसुन्दर ।
चल आइ ! झाट आसि देखह सत्वर ॥२३४
वार्त्ता शुनि ये सन्तोष हइला आइ ।
ताहार अवधि आर कहिबारे नाइ ॥२३५
वार्त्ता शुनि प्रभुर यतेक भक्तगण ।
सभेइ हइला अति परानन्द मन ॥२३६
गङ्गादासपण्डित प्रभुर प्रिय पात्र ।
आइ लइ चलिलेन सेइक्षण मात्र ॥२३७
श्रीमुरारिगुप्त आदि यत भक्तगण ।
सभेइ आइर सङ्गे करिला गमन ॥२३८
सत्वरे आइला शची-आइ शान्तिपुरे ।
वार्त्ता शुनिलेन प्रभु श्रीगौरसुन्दरे ॥२३९
श्रीगौरसुन्दर प्रभु आइरे देखिया ।
सत्वरे पड़िला दूरे दण्डवत हैया ॥२४०

पुनःपुनः प्रदक्षिण करिया करिया ।
दण्डवत हय श्लोक पढ़िया पढ़िया ॥२४१
"तुमि विश्वजननी केबल भक्तिमयी ।
तोमारे से गुणातीत सत्त्वरूपा कहि ॥२४२
तुमि यदि शुभदृष्टि कर जीव प्रति ।
तबे से जीवेर हय कृष्णे रति मति ॥२४३
तुमि से केबल मूर्त्तिमती विष्णुभक्ति ।
याहा हैते सब हय तुमि सेइ शक्ति ॥२४४
तुमि गङ्गा देवकी यशोदा देवहूति ।
तुमि पृश्नि अनसूया कौशल्या अदिति ॥२४५
यत देखि सब तोमा हैते से उदय ।
पालह तुमि से तोमाते लीनो हय ॥२४६
तोमार प्रभाब बलिबार शक्ति कार ।
सभार हृदये पूर्ण वसति तोमार ॥"२४७
श्लोकबन्धे एइमत करिया स्तवन ।
दण्डवत हय प्रभु धर्म सनातन ॥२४८
कृष्ण बहि ओ पितृ मातृ गुरु भक्ति ।
करिबारे एमत धरये केहो शक्ति ॥२४९
आनन्दाश्रुधारा बहे सकल अङ्गेते ।
श्लोक पढ़ि नमस्कार हय बहुमते ॥२५०
आइ बोले, देखि मात्र श्रीगौरवदन ।
परानन्दे जड़ हइलेन सेइक्षण ॥२५१
रहियाछे आइ येन कृत्रिम पुतली ।
स्तुति करे वैकुण्ठ ईश्वर कुतूहली ॥२५२
प्रभु बोले कृष्ण भक्ति यतेक आमार ।
केबल एकान्त सब प्रसाद तोमार ॥२५३
कोटि दास दासेरो ये सम्बन्ध तोमार ।
सेह जन प्राण हैते वल्लभ आमार ॥२५४
बारेको ये जन तोमा' करिब स्मरण ।
तारे कभु नहिबेक संसारबन्धन ॥२५५
सकल पवित्र करे ये गङ्गा तुलसी ।
तानाओ हयेन धन्य तोमारे परशि ॥२५६
तुमि यत करियाछ आमार पालन ।
आमार शक्तिये ताहा ना हय शोधन ॥२५७
दण्डेदण्डे यत स्नेह करिला आमारे ।
तोमार साद्गुण्य से ताहार प्रतिकारे ॥२५८
एइमत स्तुति प्रभु करेन सन्तोषे ।
शुनिया वैष्णवगण महानन्दे भासे ॥२५९
आइ जाने अवतीर्ण प्रभु नारायण ।
यखन ये इच्छा तान करेन तेमन ॥२६०
कथोक्षणे आइ एइ बलिलेन मात्र ।
तोमार वचन बुझे के बा आछे पात्र ॥२६१
प्राणहीन येन सिन्धुमाझे भासे ।
स्रोते यहिँ लये तहिँ चलये अबशे ॥२६२
एइमत सर्वजीव संसारसागरे ।
तोमार मायाय ये कराय ताहि करे ॥२६३
सबे एइ बोलों बाप ! तोमारे उत्तर ।
भाल हय येमते से तोमार गोचर ॥२६४
स्तुति प्रदक्षिण किबा कर नमस्कार ।
मुञि त ना बुझों किछु ये इच्छा तोमार ॥२६५
शुनिया आइर वाक्य सर्व भागवते ।
महा जयजयध्वनि लागिला करिते ॥२६६
आइर भक्तिर सीमा के बुझिते पारे ।
गौरचन्द्र अवतीर्ण याँहार जठरे ॥२३७
प्राकृत शब्देओ ये बा बलिबेक आइ ।
आइ शब्द प्रभावे ताहार दुःख नाइ ॥२६८
प्रभु देखि सन्तोषे पूर्णित हैला आइ ।
भक्तगण आनन्दे काहारो वाह्य नाइ ॥२६९
एखने ये हइल आनन्द समुच्चय ।
मनुष्येर शक्तिते कि ताहा कहा हय ॥२७०

नित्यानन्द-महामल्ल आइर सन्तोषे ।
परानन्द-सिन्धु माझे भासेन हरिषे ॥२७१
देवकीर स्तुति पढ़ि आचार्य्यगोसाञि ।
आइरे करेन दण्डवत अन्त नाञि ॥२७२
हरिदास मुरारि श्रीगर्भ नारायण ।
जगदीश गोपीनाथ आदि भक्तगण ॥२७३
आइर सन्तोषे सभे हेन से हइला ।
परानन्दे सभेइ येहेन मिशाइला ॥२७४
ए सब आनन्द पढ़े शुने येइ जन ।
अवश्य मिलये तारे प्रेमभक्तिधन ॥२७५
प्रभुरे दिबेन भिक्षा आइ भाग्यवती ।
प्रभुस्थाने अद्वैते लइया अनुमति ॥२७६
सन्तोषे चलिला आइ करिते रन्धन ।
प्रेमयोगे चिन्ति गौरचन्द्र नारायण ॥२७७
कतेक प्रकारे आइ करिला रन्धन ।
नाम नाहि जानि हेन रान्धिला व्यञ्जन ॥२७८
आइ जाने प्रभुर सन्तोष बड़ शाके ।
विंशतिप्रकार शाक रान्धिला एतेके ॥२७९
एक एक व्यञ्जन प्रकार दशे विशे ।
रान्धिलेन आइ अति चित्तेर सन्तोषे ॥२८०
अशेष प्रकारे आइ रन्धन करिया ।
भोजनेर स्थाने सब थुइलेन लैया ॥२८१
श्रीअन्न व्यञ्जन सब उपस्कार करि ।
सभार उपरे दिला तुलसीमञ्जरी ॥२८२
चतुर्दिगे सारि करि श्रीअन्न व्यञ्जन ।
मध्ये पातिलेन अति उत्तम आसन ॥२८३
आइलेन महाप्रभु करिते भोजन ।
संहति लइया सब पारिषदगण ॥२८४
देखि प्रभु अन्न व्यञ्जनेर उपस्कार ।
दण्डवत हइया करिला नमस्कार ॥२८५
प्रभु बोले ए अन्नेर थाकुक भोजन ।
ए अन्न देखिले हय बन्धविमोचन ॥२८६
कि रन्धन इहा त कहिल किछु नय ।
ए अन्नेर गन्धेओ कृष्णेते भक्ति हय ॥२८७
बुझिलाम कृष्ण लइ सर्व परिवार ।
ए अन्न करियाछेन आपने स्वीकार ॥२८८
एत बलि प्रभु अन्न प्रदक्षिण करि ।
भोजने वसिला श्रीगौराङ्ग नरहरि ॥२८९
प्रभुर आज्ञाय सब पारिषदगण ।
वसिलेन चतुर्दिगे देखिते भोजन ॥२९०
भोजन करेन श्रीवैकुण्ठ अधिपति ।
नयन भरिया देखे आइ भाग्यवती ॥२९१
प्रत्येके प्रत्येके प्रभु सकल व्यञ्जन ।
महा आमोदिया नाथ करेन भोजन ॥२९२
सभा हैते भाग्यवन्त श्रीशाकव्यञ्जन ।
पुनःपुन याहा प्रभु करेन ग्रहण ॥२९३
शाकेते देखिया बड़ प्रभुर आदर ।
हासेन प्रभुर यत सब अनुचर ॥२९४
शाकेर महिमा प्रभु सभारे कहिया ।
भोजन करेन प्रभु ईषत हासिया ॥२९५
प्रभु बोले एइ ये अच्युता नामे शाक ।
इहार भोजने हय कृष्णे अनुराग ॥२९६
पटोल बास्तुक काल-शाकेर भोजने ।
जन्मजन्म विहरये वैष्णवेर सने ॥२९७
सालिञ्चा हिलञ्चा शाक भक्षण करिले ।
आरोग्य थाकये तारे कृष्णभक्ति मिले ॥२९८
एइमत शाकेर महिमा कहि कहि ।
भोजन करेन प्रभु आनन्दित हइ ॥२९९
यतेक आनन्द हैल ए दिन भोजने ।
सबे इहा जाने प्रभु सहस्रवदने ॥३००

एइ यश सहस्र जिह्वाय निरन्तर।
गायेन अनन्त आदिदेव महीधर ॥३०१
सेइ प्रभु कलियुगे अवधूत राय!
सूत्र मात्र लिखि आमि ताहान आज्ञाय ॥३०२
वेदव्यास आदि करि यत मुनिगण।
एइ सब यश सभे करेन वर्णन ॥३०३
ए यशेर यदि करे श्रवण पठन।
तबे से जीवेर खण्डे अविद्याबन्धन ॥३०४
हेन रङ्गे महाप्रभु करिया भोजन।
वसिलेन गिया प्रभु करि आचमन ॥३०५
आचमन करि मात्र ईश्वर वसिला।
भक्तगण अवशेष लुटिते लागिला ॥३०६
केहो बोले ब्राह्मणेर इहाते कि दाय।
शूद्र आमि आमारे से उच्छिष्ट जुयाय ॥३०७
आर केहो बोले आमि नहिये ब्राह्मण।
आड़े थाकि लइ केहो करे पलायन ॥३०८
केहो बोले शूद्रेर उच्छिष्ट योग्य नहे।
हय नय बिचारिया बुझ शास्त्र कहे ॥३०९
केहो बोले आमि अवशेष नाहि चाइ।
शुधु पातखानि मात्र आमि लइ याइ ॥३१०
केहो बोले आमि पात फेलि सर्वकाल।
तोमरा ये लह से केबल ठाकुराल ॥३११
एइमत कौतुक चपल भक्तगण।
ईश्वर अधरामृत करेन भोजन ॥३१२
आइर रन्धन ईश्वरेर अवशेष।
कार बा इहाते लोभ ना जन्मे विशेष ॥३१३
परानन्दे भोजन करिया भक्तगण।
प्रभुर सम्मुखे सभे करिला गमन ॥३१४
वसिया आछेन प्रभु श्रीगौरसुन्दर।
चतुर्दिगे वसिलेन सर्व अनुचर ॥३१५

मुरारिगुप्तेरे प्रभु सम्मुखे देखिया।
बलिलेन ताँरे किछु ईषत हासिया ॥३१६
पढ़ गुप्त! राघवेन्द्र वर्णियाछ तुमि।
अष्ट-श्लोक करियाछ शुनियाछि आमि ॥३१७
ईश्वरेर आज्ञा गुप्त-मुरारि शुनिया।
पढ़िते लागिला श्लोक भावाविष्ट हैया ॥३१८

तथाहि(श्रीचैतन्यचरिते, २य-प्रक्रमे, ७म सर्गे)

"अग्रे धनुर्द्धरवरः कनकोज्ज्वलाङ्गो
ज्येष्ठानुसेवनरतो वरभूषणाढ्यः।
शेषाख्यधाम-वरलक्ष्मणनाम यस्य
रामं जगत्रयगुरुं सततं भजामि॥" ३१९

टीका।

अग्र इति। अहं तं जगत्त्रयगुरुं श्रीरामं सततं भजामि। कथम्भूतं तम्? यस्य—रामस्य, अग्रे सम्मुखे' कनकवत् उज्ज्वलाङ्गः, ज्येष्ठस्य—श्रीरामस्य अनुसेवने—मनोऽनुकूलसेवने, रतः—आसक्तः, वरभूषणाढ्यः—श्रेष्ठालङ्कारसम्पन्नः, धनुर्द्धरवरः—धनुर्द्धारिश्रेष्ठः विराजत इत्यर्थः। स किं स्वरूपः किंनामक-श्चेत्यपेक्षायामाह, शेषाख्यधाम-वर-लक्ष्मण नामेति। शेष इति, आख्या—ख्यातिः, यस्य तदेव, धाम—स्वरूपं, यस्य सः, साक्षात् शेष-स्वरूप इत्यर्थः, तथाभूत वरः—श्रेष्ठः, लक्ष्मण इति नाम यस्य सः तथाभूतश्च। नाम-शब्दस्य अव्ययत्वात् विभक्ति लोपः सञ्जातः।

अनुवाद।

जिनके अग्रभाग में धनुर्द्धारि वर्ग के अग्रगण्य, सुवर्ण के समान समुज्ज्वलाङ्ग, अग्रज की अनुकूल सेवा में रत, उत्कृष्ट अलङ्कार द्वारा अलंकृत, साक्षात् शेष स्वरूप एवं सर्वश्रेष्ठ, लक्ष्मण नामक महापुरुष विराजित हैं, मैं त्रिजगद् गुरु उन श्रीरामचन्द्र का भजन करता हूँ।

''हत्वा खर-त्रिशिरसौ सगणौ कबन्धं
श्रीदण्डकाननमदूषणमेव कृत्वा ।
सुग्रीवमैत्रमकरोद्विनिहत्य शत्रुं
रामं जगत्त्रयगुरुं सततं भजामि ।।''३२०

टीका ।

हत्वेति । यः, स-गणौ – परिकर-सहितौ, खर-त्रि-शिरशौ, तथा, कबन्धं च हत्वा, श्रीदण्डक-काननम् अदूषणं—दूषण-नामक-राक्षस-शून्यम्, एव कृत्वा, शत्रुं—बालि-नामानं विनिहत्य, सुग्रीव-मैत्रम् अकरोत्; तं जगत्त्रयगुरुं रामं सततं भजामि ।

अनुवाद ।

जिन्होंने स्वजनसह खर, त्रिशिरा नामक राक्षसद्वय को एवं कबन्ध नामक निशाचर को निहत कर एवं दूषण नामक राक्षस को निहत कर दण्डकारण्य को अदूषण किये थे, तथा बालि नामक शत्रु को विनष्टकर सुग्रीव के सहित मित्रता किये थे, मैं उन त्रिजगद् गुरु श्रीरामचन्द्र का सतत भजन करता हूँ ।

एइमत अष्ट श्लोक मुरारि पढ़िला ।
प्रभुर आज्ञाय व्याख्या करिते लागिला ।।३२१
दूर्वादलश्यामल कोदण्डदीक्षागुरु ।
भक्तगण-प्रति वाञ्छातीत कल्पतरु ।।३२२
हास्यमुखे रत्नमय राजा सिंहासने ।
वसिया आछेन जानकीदेवी बामे ।।३२३
अग्रे महाधनुर्द्धर अनुज लक्ष्मण ।
कनकेर प्राय ज्योति कनकभूषण ।।३२४
आपने अनुज हइ श्रीअनन्तधाम ।
ज्येष्ठेर सेवाय रत श्रीलक्ष्मण नाम ।।३२५
सर्वमहागुरु हेन श्रीरघुनन्दन ।
जन्मजन्म भजों मुञि ताँहार चरण ।।३२६
भरत शत्रुघ्न दुइ चामर ढुलाय ।
सम्मुखे कपीन्द्र गण पुण्यकीर्त्ति गाय ।।३२७
ये प्रभु करिला गुह-चण्डालेरे मित ।
जन्मजन्म भजों मुञि ताँहार चरित ।।३२८
गुरु आज्ञा शिरे धरि छाड़ि निज राज्य ।
वन भ्रमिलेन ये करिते सुर कार्य्य ।।३२९
बालि मारि सुग्रीवेरे राज्यभार दिया ।
मित्र पद दिला ताने करुणा करिया ।।३३०
ये प्रभु करिला अहल्यार विमोचन ।
भजों हेन त्रिभुवनगुरुर चरण ।।३३१
दुस्तर तरङ्ग सिन्धु ईषत लीलाय ।
कपि-द्वारे ये बान्धिल लक्ष्मणसहाय ।।३३२
इन्द्रादिर अजय रावण वंश सने ।
ये प्रभु मारिल भजों ताँहार चरणे ।।३३३
याँहार कृपाय विभीषण धर्मपर ।
इच्छा नाहि तथापि हइला लङ्केश्वर ।।३३४
यबनेओ याँर कीर्त्ति श्रद्धा करि शुने ।
भजों हेन राघवेन्द्र प्रभुर चरणे ।।३३५
दुष्टक्षय लागि निरन्तर धनुर्द्धर ।
पुत्रेर समान प्रजा पालने तत्पर ।।३३६
याँहार कृपाय सब अयोध्यानिवासी ।
स-शरीरे हइलेन श्रीवैकुण्ठवासी ।।३३७
याँर नाम रसे महेश्वर दिगम्बर ।
रमा याँर पादपद्म सेवे निरन्तर ।।३३८
'परं ब्रह्म जगन्नाथ' वेदे याँरे गाय ।
भजों हेन जगद्गुरु रागवेन्द्र पा'य ।।३३९
एइमत अष्ट श्लोक आपनार कृत ।
पढ़िला मुरारि राम महिमा अमृत ।।३४०
शुनि तुष्ट हइ तबे श्रीगौरसुन्दर ।
पादपद्म दिला ताँर मस्तक उपर ।।३४१
शुन गुप्त ! एइ तुमि आमार प्रसादे ।
जन्मजन्म रामदास हओ निर्विरोधे ।।३४२

क्षणेको ये करिबेक तोमार आश्रय ।
सेहो रामपदाम्वुज पाइब निश्चय ॥३४३
मुरारिगुप्तेरे चैतन्येर वर शुनि ।
सभेइ करेन महा जयजय ध्वनि ॥३४४
एइमत कौतुके आछेन गौरसिंह ।
चतुर्दिगे शोभे सव चरणेर भृङ्ग ॥३४५
हेनइ समये कुष्ठरोगी एकजन ।
प्रभुर सम्मुखे आसि दिला दरशन ॥३४६
दण्डवत हइ पड़िला आर्त्तनादे ।
दुइ बाहु तुलि महा आर्त्ति करि कान्दे ॥३४७
संसार उद्धार लागि तुमि महाशय ।
पृथिवीर माझे आसि हैला उदय ॥३४८
पर दुःख देखि तुमि स्वभावे कातर ।
एतेके आइलुँ मुञि तोमार गोचर ॥३४९
कुष्ठरोगे पीड़ित ज्वालाय भुञि मरोँ ।
बोलह उपाय प्रभु ! कौन् मते तरोँ ॥३५०
शुनि महाप्रभु कुष्ठरोगीर वचन ।
बलिते लागिला क्रोधे तर्जन वचन ॥३५१
घुच घुच महापापि ! विद्यमान हैते ।
तोरे देखिलेओ पाप जन्मये लोकेते ॥३५२
परम धार्मिक यदि देखे तोर मुख ।
से दिवसे ताहार अवश्य हय दुःख ॥३५३
वैष्णवनिन्दक तुञि पापी दुराचार ।
इहा हैते दुःख तोर कत आछे आर ॥३५४
एइ ज्वाला सहिते ना पार दुष्टमति ।
केमते करिबा कुम्भीपाकेते वसति ॥३५५
ये वैष्णव नामे हय संसार पवित्र ।
ब्रह्मादि गायेन ये वैष्णव चरित्र ॥३५६
ये वैष्णव भजिले अचिन्त्य कृष्ण पाइ ।
ये वैष्णवपूजा हैते बड़ आर नाइ ॥३५७
शेष रमा अज भव निज देह हैते ।
वैष्णव कृष्णेर प्रिय कहे भागवते ॥३५८

तथाहि (भा० ११।१४।१५)—

"न तथा मे प्रियतम आत्मयोनिर्न शङ्करः ।
न च सङ्कर्षणो न श्रीर्नैवात्मा च यथा भवान्
॥"३५९

टीका ।

न तथेति—उद्धवं प्रति श्रीभगवदुक्तिः । आत्मयोनिः—ब्रह्मा, पुत्रोऽपि । शङ्करः—मत्-स्वरूपभूतोऽपि । सङ्कर्षणः—भ्रातापि । श्रीः—भार्य्यापि । आत्मा—श्रीमूर्त्तिरपि । यथा भक्त इति वक्तव्येऽतिहर्षेणाह भवानिति ।

अनुवाद ।

हे उद्धव ! आत्मयोनि ब्रह्मा मेरा उस प्रकार प्रिय नहीं हैं। शङ्कर भी उस प्रकार प्रिय नहीं हैं, सङ्कर्षण भी उस प्रकार प्रिय नहीं हैं, लक्ष्मी भी उस प्रकार प्रिय नहीं हैं, एवं मेरा श्रीविग्रह भी उस प्रकार नहीं हैं, जिस प्रकार आप मेरा प्रिय हैं।

हेन वैष्णवेर निन्दा करे ये ये जन ।
से-इ पाय दुःख जन्म जीवन मरण ॥३६०
विद्या कुल तप सब बिफल ताहार ।
वैष्णव निन्दये ये ये पापी दुराचार ॥३६१
पूजाओ ताहार कृष्ण ना करेन ग्रहण ।
वैष्णवेर निन्दा करे ये पापिष्ठ जन ॥३६२
ये वैष्णव नाचिते पृथिवी धन्य हय ।
यार दृष्टिमात्र दश-दिगे पाप क्षय ॥३६३
ये वैष्णवजन वाहु तुलिया नाचिते ।
स्वर्गेरो सकल विघ्न घुचे भालमते ॥३६४
हेन महाभागवत श्रीवासपण्डित ।
तुञि पापी निन्दा कैलि ताँहार चरित ॥३६५

एतेके तेहोर कुष्ठज्वाला कोन् काज ।
मूल शास्ता पश्चाते आछेन धर्मराज ॥३६६
एतेके आमार दृश्ययोग्य नह तुमि ।
तोमार निष्कृति करिबारे नारि आमि ॥३६७
सेइ कुष्ठरोगी शुनि प्रभुर उत्तर ।
दन्ते तृण करि बोले हइया कातर ॥३६८
किछु ना जानिलुँ मुञि आपना खाइया ।
वैष्णवेरे निन्दा कैलुँ प्रमत्त हइया ॥३६९
अतएव तार शास्ति पाइलुँ उचित ।
एखने ईश्वर तुमि चिन्त मोर हित ॥३७०
साधुर स्वभावधर्म दुःखित उद्धारे ।
कृत अपराधिरेओ साधु कृपा करे ॥३७१
एतेके शरण मुञि लइलुँ तोमार ।
तुमि उपेक्षिले मोर नाहिक निस्तार ॥३७२
याहार ये प्रायश्चित तुमि सर्व ज्ञाता ।
प्रायश्चित बोल मोरे तुमि सर्वपिता ॥३७३
वैष्णवजनेरे येन निन्दन करिलुँ ।
उचित ताहार बोल शास्तिओ पाइलुँ ॥३७४
प्रभु बोले वैष्णव निन्दये येइ जन ।
कुष्ठरोग कोन् तार शास्तिये लिखन ॥३७५
आपातत किछु दुःख पाइयाछ मात्र ।
आर के बा आछे यमयातनार पात्र ॥३७६
चौराशी सहस्र यमयातना परलोके ।
पुनःपुन करि भुञ्जे वैष्णवनिन्दके ॥३७७
चल कुष्ठरोगी तुमि श्रीवासेर स्थाने ।
सत्वरे पड़ह गिया ताहार चरणे ॥३७८
ताँर ठाँइ तुमि करियाछ अपराध ।
निष्कृति तोमार तिँहो करिले प्रसाद ॥३७९
काँटा फुटे ये मुखे से-इ से मुखे याय ।
पा'ये काँटा फुट्लि कि कान्धे बाहिराय ॥३८०
एइ कहिलाम आमि निस्तार उपाय ।
श्रीवासपण्डित क्षमिले से दुःख याय ॥३८१
महा-शुद्धबुद्धि तिँहो ताँर स्थाने गेले ।
क्षमिबेन सर्वदोष निस्तारिबे हेले ॥३८२
शुनिया प्रभुर अति सुसत्य वचन ।
महाजयजयध्वनि कैला भक्तगण ॥३८३
सेइ कुष्ठ रोगी शुनि प्रभुर वचन ।
दण्डवत हइया चलिला सेइक्षण ॥३८४
येइ कुष्ठरोगी पाइ श्रीवास प्रसाद ।
मुक्त हैल खण्डिल सकल अपराध ॥३८५
यतेक अनर्थ हय वैष्णव निन्दाय ।
आपने कहिला एइ श्रीवैकुण्ठराय ॥३८६
तथापिह वैष्णवेरे निन्दे येइ जन ।
तार शास्ता आछेन चैतन्य नारायण ॥३८७
वैष्णवे वैष्णवे ये देखह गालागाली ।
परमार्थे नहे ; इथे कृष्ण कुतूहली ॥३८८
सत्यभामा रुक्मिणीये गालागाली येन ।
परमार्थे एक ताना देखि भिन्न हेन ॥३८९
एइमत वैष्णवे वैष्णवे भिन्न नाञि ।
भिन्न करायेन रङ्ग चैतन्यगोसाञि ॥३९०
इथे येइ एक वैष्णवेर पक्ष लय ।
आर वैष्णवेरे निन्दे से-इ याय क्षय ॥३९१
एक हस्त ईश्वरेर सेवये केबल ।
आर हस्ते दुःख दिले तार कि कुशल ॥३९२
एइमत यत सर्वभक्त कृष्णेर शरीर ।
इहा बुझे ये हय परम महाधीर ॥३९३
अभेद दृष्टिये सर्व वैष्णव भजिया ।
ये कृष्ण चरण भजे से याय तरिया ॥३९४
ये गाय ये शुने ए सकल पुण्य कथा ।
वैष्णवापराध तार ना जन्मे सर्वथा ॥३९५

हेनमते श्रीगौरसुन्दर शान्तिपुरे ।
आछेन परमानन्दे अद्वैत मन्दिरे ॥३९६
माधवपुरीर आराधना पुण्यतिथि ।
दैवयोगे उपसन्न हेल आसि तथि ॥३९७
माधवेन्द्र अद्वैत यद्यपि भेद नाञि ।
तथापि ताहान शिष्य आचार्य्य गोसाञि ॥३९८
माधवपुरीर देहे श्रीगौरसुन्दर ।
सत्य सत्य सत्य बिहरये निरन्तर ॥३९९
माधवेन्द्रपुरीर अकथ्य विष्णुभक्ति ।
कृष्णेर प्रसादे सर्वकाल पूर्ण-शक्ति ॥४००
येमते अद्वैत शिष्य हइलेन तान ।
चित्त दिया शुन सेइ मङ्गल आख्यान ॥४०१
ये समये ना छिल चैतन्य अवतार ।
विष्णुभक्तिशून्य सब आछिल संसार ॥४०२
तखनेओ माधवेन्द्र चैतन्यकृपाय ।
प्रेम-सुखसिन्धु माझे भासेन सदाय ॥४०३
निरवधि देहे रोमहर्ष, अश्रु कम्प ।
हुङ्कार गर्जन महाहास्य घर्म स्तम्भ ॥४०४
निरवधि गोविन्देर ध्याने नाहि वाह्य ।
आपनेओ ना जानेन कि करेन कार्य्य ॥४०५
पथे चलि याइतेओ आपना आपनि ।
नाचेन परमानन्दे करि हरि ध्वनि ॥४०६
कखनो बा हेन से आनन्दमूर्च्छा हय ।
दुइ तिन प्रहरेओ देहे वाह्य नय ॥४०७
कखनो बा बिरहे ये करेन रोदन ।
गङ्गाधारा बहे येन—अद्भुत कथन ॥४०८
कखनो हासेन अति अट्टअट्ट हास ।
परानन्दरसे क्षणे हय दिग्वास ॥४०९
एइमत कृष्णसुखे माधवेन्द्र सुखी ।
सबे भक्तिशून्य लोक देखि बड़दुःखी ॥४१०

कृष्णयात्रा अहोरात्रि कृष्ण सङ्कीर्त्तन ।
इहार उद्देशो नाहि जाने कोन जन ॥४११
धर्म कर्म लोक सब एइ मात्र जाने ।
मङ्गलचण्डीर गीते करे जागरणे ॥४१२
देवता जानेन सबे 'षष्ठी बिषहरि' ।
ताहा ये पूजेन सेहो महा दम्भ करि ॥४१३
धन वंश बाढ़ुक करिया काम्य मने ।
मद्य मांसे दाना पूजे कोन कोन जने ॥४१४
योगीपाल भोगीपाल महीपालेर गीत ।
इहाइ शुनिते सर्वलोक आनन्दित ॥४१५
अति बड़ सुकृति से स्नानेर समय ।
गोविन्द पुण्डरीकाक्ष नाम उच्चारय ॥४१६
कारे बा वैष्णव बलि किबा सङ्कीर्त्तन ।
केने बा कृष्णेर नृत्य केने बा क्रन्दन ॥४१७
विष्णु मायावशे लोक किछुइ ना जाने ।
सकल जगत बद्ध महातमोगुणे ॥४१८
लोक देखि दुःख भावे श्रीमाधवपुरी ।
हेन नाहि तिलार्द्ध सम्भाषा यारे करि ॥४१९
सन्न्यासीर सने बा करेन सम्भाषण ।
सेहो आपनारे मात्र बोले नारायण ॥४२०
ए दुःखे सन्न्यासीसङ्गे ना कहेन कथा ।
हेन स्थान नाहि कृष्णभक्ति शुनि यथा ॥४२१
ज्ञानी योगी तपस्वी विरक्त ख्याति यार ।
कारो मुखे नाहि दास्य महिमा प्रचार ॥४२२
यत अध्यापक सब तर्क से बाखाने ।
तारा सब कृष्णेर विग्रह नाहि माने ॥४२३
देखिते शुनिते दुःखी श्रीमाधवपुरी ।
मनेमने चिन्ते वनवास गिया करि ॥४२४
लोक मध्ये भ्रमि केने वैष्णव देखिते ।
से वैष्णव नाम बोल ना शुनि जगते ॥४२५

अतएव ए सकल लोक मध्य हैते ।
वने याइ यथा लोक ना पाइ देखिते ॥४२६
एतेके से वन भाल ए सब हइते ।
वने कथा नहे अवैष्णवेर सहिते ॥४२७
एइमत मनोदुःख भाबिते चिन्तिते ।
ईश्वर इच्छाय देखा अद्वैत सहिते ॥४२८
विष्णुभक्ति देखि सकल संसार ।
अद्वैत-आचार्य्य दुःख भाबेन अपार ॥४२९
तथापि अद्वैतसिंह कृष्णेर कृपाय ।
प्रौढ़ करि विष्णुभक्ति बाखाने सदाय ॥४३०
निरन्तर पढ़ायेन गीता भागवत ।
भक्ति बाखानेन मात्र ग्रन्थेर ये मत ॥४३१
हेनइ समये माधवेन्द्र महाशय ।
अद्वैतेर गृहे आसि हइला उदय ॥४३२
देखिया अद्वैत तान वैष्णवलक्षण ।
प्रणाम हइया पड़िलेन सेइक्षण ॥४३३
माधवेन्द्रपुरीओ अद्वैत करि कोले ।
सिञ्चिलेन अङ्ग तान प्रेमानन्दजले ॥४३४
अन्योऽन्ये कृष्णकथारसे दुइजन ।
आपनार देह कारो नाहिक स्मरण ॥४३५
माधवेन्द्रपुरीर प्रेम—अकथ्यकथन ।
मेघ दरशने मात्र हये अचेतन ॥४३६
कृष्णनाम शुनिलेइ करेन हुङ्कार ।
दण्डेके सहस्र हय कृष्णेर बिकार ॥४३७
देखिया ताँहार विष्णुभक्तिर उदय ।
बड़ सुखी हइला अद्वैत महाशय ॥४३८
ताँर ठाञि उपदेश करिला ग्रहण ।
हेनमते माधवेन्द्र अद्वैत मिलन ॥४३९
माधवपुरीर आराधनार दिवसे ।
सर्वस्व निःक्षेप करे अद्वैत हरिषे ॥४४०
दैवे सेइ पुण्य तथि आसिया मिलिला ।
सन्तोषे अद्वैत सज्ज करिते लागिला ॥४४१
श्रीगौरसुन्दरो सब पारिषद सने ।
बड़ सुखो हइलेन सेइ पुण्यदिने ॥४४२
सेइ तिथि पूजिबारे आचार्य्यगोसाञि ।
यत सज्ज करिलेन तार अन्त नाञि ॥४४३
नाना दिग हैते सज्ज लागिल आसिते ।
हेन नाहि जानि के आनये कोन्‌भिते ॥४४४
माधवेन्द्रपुरी प्रति प्रीति सभाकार ।
सभे लइलेन यथायोग्य अधिकार ॥४४५
आइ लइलेन यत रन्धनेर भार ।
आइ बेढ़ि सर्व वैष्णवेर परिवार ॥४४६
नित्यानन्द महाप्रभु सन्तोष अपार ।
वैष्णव पूजिते लइलेन अधिकार ॥४४७
केहो बोले "आमि सब घषिब चन्दन ।"
केहो बोले "माला आमि करिब ग्रन्थन ॥"४४८
केहो बोले जल आनिबार मोर भार ।
केहो बोले मोर दाय स्थान उपस्कार ॥४४९
केहो बोले मुञि यत वैष्णवचरण ।
मोर भार सकल करिब प्रक्षालन ॥४५०
केहो बान्धे पताका चान्दोया केहो टानि ।
केहो बा भाण्डारी केहो द्रव्य देय आनि ॥४५१
कथोजने लागिला करिते सङ्कीर्त्तन ।
आनन्दे करेन नृत्य आरो कथोजन ॥४५२
कथोजन आरो 'हरि' बोलये कीर्त्तने ।
शङ्ख घण्टा बाजायेन आरो कथोजने ॥४५३
कथोजन करे तिथि पूजिबार कार्य्य ।
केहो बा हइला तिथिपूजार आचार्य्य ॥४५४
एइमत परानन्दरसे भक्तगण ।
सभेइ करेन कार्य्य याहार ये मन ॥४५५

खाओ पिओ आनो नेह देह हरिध्वनि ।
इहा वइ चतुर्दिगे आर नाहि शुनि ॥४५६
शङ्ख घण्टा मृदङ्ग मन्दिरा करताल ।
सङ्कीर्त्तनसङ्गे ध्वनि बाजये बिशाल ॥४५७
परानन्दे काहारो नाहि वाह्य ज्ञान ।
अद्वैतभवन हैल श्रीवैकुण्ठधाम ॥४५८
आपने श्रीगौरचन्द्र परम सन्तोषे ।
सम्भारेर सज्ज देखि बुलेन हरिषे ॥४५९
तण्डुल देखेन प्रभु घर दुइ चारि ।
पर्वतप्रमाण देखे काष्ठ सारिसारि ॥४६०
घर पाँच देखे घट रन्धनेर स्थाली ।
घर दुइ चारि देखे मुद्गेर वियलि ॥४६१
नानाविध बस्त्र देखे घर पाँच सात ।
घर दश बार प्रभु देखे खोला पात ॥४६२
घर दुइ चारि प्रभु देखे चिपीटक ।
सहस्रसहस्र कान्दी देखे कदलक ॥४६३
ना जानि कतेक नारिकेल गुया पान ।
कोथा हैते आसिया हइल विद्यमान ॥४६४
पटोल वास्तुक शाक थोड़ आलु मान ।
कत घर भरियाछे नाहिक प्रमाण ॥४६५
सहस्रसहस्र घड़ा देखे दधि दुग्ध ।
क्षीर इक्षुदण्ड अङ्कुरेर सने मुद्ग ॥४६६
तैल बा लवण गुड़ देखे प्रभु यत ।
सकल अनन्त लिखिबारे पारि कत ॥४६७
अति अमानुषि देखि सकल सम्भार ।
चित्ते येन प्रभु हइलेन चमत्कार ॥४६८
प्रभु बोले ए सम्पत्ति मनुष्येर नय ।
'आचार्य्य महेश' हेन मोर चित्ते लय ॥४६९
मनुष्येरो एमत कि सम्पत्ति सम्भबे ।
ए सम्पत्ति सकले सम्भबे महादेवे ॥४७०
बुझिलाम आचार्य्य महेश अवतार ।
एइमत हासि प्रभु बोले बारबार ॥४७१
छले अद्वैतेर तत्त्व महाप्रभु कय ।
ये हय सुकृति से परमानन्दे लय ॥४७२
तान वाक्ये अनादर अनास्था याहार ।
तारे श्रीअद्वैत हय अग्नि अवतार ॥४७३
यद्यपि अद्वैत कोटि चन्द्र सुशीतल ।
तथापि चैतन्यबिमुखेर कालानल ॥४७४
सकृत ये जन बोले 'शिव' हेन नाम ।
सेहो कोनो प्रसङ्गे ना जाने तत्त्व तान ॥४७५
सेइक्षणे सर्वपाप हैते शुद्ध हय ।
वेदे शास्त्रे भागवते एइ तत्त्व कय ॥४७६
हेन शिव नाम शुनि यार दुःख हय ।
सेइ जन अमङ्गलसमुद्रे भासय ॥४७७

तथाहि (भा० ४।४।१४)—
"यद्द्व्यक्षरं नाम गिरेरितं नृणां
सकृत् प्रसङ्गादघमाशु हन्ति तत् ।
पवित्रकीर्त्ति तमलङ्घ्यशासनं
भवानहो द्वेष्टि शिवं शिवेतरः ॥" ४७८

टीका ।

तदेवं महत्तमद्रोहमुक्त्वा तस्मिन्नेव कृतं द्रोहमाह यदिति द्वाभ्याम् । यद् यस्य द्व्यक्षरमात्रं शिव इति तत् प्रसिद्धं नाम नृणां सर्वेषां आशु अघं सर्वं हन्ति । केवलं गिरेवेरितमुच्चारितं न तु मनःपूर्वकम् । तच्चापि सकृदपि प्रसङ्गादपि तत् शिवं द्वेष्टि । न लङ्घ्यं शासनम् आज्ञा यस्य । अहो शिवेतर अमङ्गलरूपः । इति श्रीधरः ।

अनुवाद ।

श्रीभगवती, निज पिता दक्ष से श्रीशिव निन्दा को सुनकर क्षुब्ध होकर बोलीं—जिनका अक्षर द्वय समुद्भूत सुप्रसिद्ध शिव नाम है, वह नाम एकवार मात्र वाक्यद्वारा उच्चारित होकर मानव समूह के

निखिल पापों को विनष्ट करता है, जिनके कीर्त्तिकलाप परम पवित्र हैं, एवं जिनकी आज्ञा अलङ्घनीय है, उन श्रीशिव के प्रति आप विद्वेष कररहे हैं। अहो! आप साक्षात् अमङ्गल स्वरूप हैं।

श्रीवदने कृष्णचन्द्र बोलेन आपने।
शिवे ये ना पूजे से बा मोरे पूजे केने ?४७९
मोर प्रिय शिव प्रति अनादर यार।
केमते बा मोरे भक्ति हइबे ताहार ॥४८०

तथाहि—

कथं वा मयि भक्तिं स लभतां पापपुरुषः।
यो मदीयं परं भक्तं शिवं सम्पूजयेन्न हि ॥४८१

अनुवाद।

जो मेरा परम भक्त शिवकी सम्यक् पूजा नहीं करता है, साक्षात् पापस्वरूप वह व्यक्ति कैसे भक्ति लाभ करेगा।

अतएव सर्वाद्य श्रीकृष्ण पूजि तबे।
प्रीते शिव पूजि पूजिबेक सर्व-देवे ॥४८२

तथाहि स्कन्दपुराणे—

प्रथमं केशवं पूजां कृत्वा देवमहेश्वरम्।
पूजनोया महाभक्त्या ये चान्ये सन्ति देवताः ॥४८३

अनुवाद।

प्रथम केशव की पूजा करके पश्चात् महेश्वर देव की पूजा करे, एवं बाद में अन्यान्य देववृन्द की पूजा भक्ति के सहित करे।

हेन शिव अद्वैतेरे बोले साधुगणे।
सेहो श्रीचैतन्यचन्द्र इङ्गित कारणे ॥४८४
इहाते अबुधगण महा कलि करे।
अद्वैतेर माया ना बुझिया भाले मरे ॥४८५
सम्भार देखिया प्रभु महाहर्षमन।
आचार्य्येर प्रशंसा करेन अनुक्षण ॥४८६
एके एके देखि प्रभु सकल सम्भार।
कीर्त्तनस्थलीते आइलेन पुनर्वार ॥४८७
प्रभु मात्र आइलेन सङ्कीर्त्तनस्थाने।
परानन्द पाइलेन सर्वभक्तगणे ॥४८८
ना जानि के कोन्दिगे नाचे गाय वा'य।
ना जानि के कोन्दिगे महानन्दे धाय ॥४८९
नवनव बस्तु सब देखे प्रभु यत।
सकल अनन्त लेखिबारे पारि कत ॥४९०
सभे करे जयजय महाहरिध्वनि।
बोल बोल हरि बोल आर नाहि शुनि ॥४९१
सर्व वैष्णवेर अङ्ग चन्दने भूषित।
सभार सुन्दर बक्ष मालाय पूर्णित ॥४९२
सभेइ प्रभुर पारिषदेर प्रधान।
सभे नृत्य गीत करे प्रभुविद्यमान ॥४९३
महानन्दे उठिल श्रीहरिसङ्कीर्त्तन।
ये ध्वनि पवित्र करे अनन्त भुवन ॥४९४
नित्यानन्द महामल्ल प्रेमसुखमय।
बाल्यभावे नृत्य करिलेन अतिशय ॥४९५
विह्वल हइया अति आचार्य्य गोसाञि।
यत नृत्य करिलेन तार अन्त नाञि ॥४९६
नाचिलेन अनेक ठाकुर हरिदास।
सभेइ नाचेन अति पाइया उल्लास ॥४९७
महाप्रभु श्रीगौरसुन्दरो सर्वशेषे।
नृत्य करिलेन अति अशेषविशेषे ॥४९८
सर्वपारिषद प्रभु आगे नाचाइया।
शेषे नृत्य करेन आपना सभा लैया ॥४९९
मण्डली करिया नृत्य करे भक्तगण।
मध्ये नाचे महाप्रभु श्रीशचीनन्दन ॥५००
एइमत सर्वदिन नाचिया गाइया।
रहिलेन महाप्रभु सभारे लइया ॥५०१

तबे शेषे आज्ञा मागि अद्वैत-आचार्य्य ।
भोजनेर करिते लागिला सर्व कार्य्य ॥५०२
वसिलेन महाप्रभु करिते भोजन ।
मध्ये प्रभु चतुर्दिगे सर्वभक्तगण ॥५०३
चतुर्दिगे भक्तगण येन तारामय ।
मध्ये कोटि चन्द्र येन प्रभुर उदय ॥५०४
दिव्य अन्न बहुविध पिष्टक व्यञ्जन ।
माधवेन्द्र आराधना आइर रन्धन ॥५०५
माधवपुरीर कथा कहिया कहिया ।
भोजन करेन प्रभु सर्व-गण लैया ॥५०६
प्रभु बोले माधवेन्द्र आराधना तिथि ।
भक्ति हय गोविन्दे भोजन कैले इथि ॥५०७
एइमत रङ्गे प्रभु करिया भोजन ।
वसिलेन गिया प्रभु करि आचमन ॥५०८
तबे दिव्य सुगन्धि चन्दन दिव्य माला ।
प्रभुर सम्मुखे आनि अद्वैत थुइला ॥५०९
तबे प्रभु नित्यानन्दस्वरूपेरे आगे ।
दिलेन चन्दन माला महा अनुरागे ॥५१०
तबे प्रभु सर्व-वैष्णवेरे जनेजने ।
श्रीहस्ते चन्दन माला दिलेन आपने ॥५११
श्रीहस्तेर प्रसाद पाइया भक्तगण ।
सभार हइल परानन्दमय मन ॥५१२
उच्च करि सभेइ करेन हरिध्वनि ।
किबा से आनन्द हैल कहिते ना जानि ॥५१३
अद्वैतेर ये आनन्द अन्त नाहि तार ।
आपने वैकुण्ठपुरनाथ गृहे यार ॥५१४
ए सकल रङ्ग प्रभु करिलेन यत ।
मनुष्येर शक्ति इहा वर्णिवेक कत ॥५१५
एकोदिवसेर यत चैतन्यबिहार ।
कोटि वत्सरेओ ताहा नारि वर्णिबार ॥५१६
पक्षी येन आकाशेर अन्त नाहि पाय ।
यत दूर शक्ति तत दूर उड़ि याय ॥५१७
एइमत चैतन्य यशेर अन्त नाइ ।
तिँहोँ यत शक्ति देन सभे तत गाइ ॥५१८
काष्ठेर पुतली येन कुहके नाचाय ।
एइमत गौरचन्द्र मोरे ये बोलाय ॥५१९
ए सब कथार अनुक्रम नाहि जानि ।
ये-ते मते चैतन्येर यश से बाखानि ॥५२०
सर्व वैष्णवेर पा'ये मोर नमस्कार ।
इथे अपराध किछु नहुक आमार ॥५२१
ए सकल पुण्यकथा ये करे श्रवण ।
अवश्य मिलये तारे कृष्णप्रेमधर ॥५२२
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥५२३

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे अद्वैतगृहविलासवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ।



पंचम अध्याय

जयजय श्रीगौरसुन्दर सर्व-गुरु ।
जयजय भक्तजनबाञ्छाकल्पतरु ॥१
जयजय न्यासिमरिण श्रीवैकुण्ठनाथ ।
जीव प्रति कर प्रभु ! शुभ दृष्टिपात ॥२
भक्तगोष्ठीसहिते गौराङ्ग जयजय ।
जयजय श्रीकरुणासिन्धु महाशय ॥३
शेषखण्ड कथा भाइ ! शुन एकमने ।
श्रीगौरसुन्दर विहरिलेन येमने ॥४
कथोदिन थाकि प्रभु अद्वैतेर घरे ।
आइला कुमारहट्ट श्रीवासमन्दिरे ॥५
कृष्णध्यानानन्दे वसि आछेन श्रीवास ।
आचम्बिते ध्यानफल सम्मुखे प्रकाश ॥६
निज प्राणनाथ देखि श्रीवासपण्डित ।
दण्डवत हइया पड़िला पृथिवीत ॥७
श्रीचरण बक्षे करि पण्डित ठाकुर ।
उच्चस्वरे दीर्घश्वासे कान्देन प्रचुर ॥८
गौराङ्गसुन्दर श्रीवासेरे करि कोले ।
सिञ्चिलेन अङ्ग तान प्रेमानन्दजले ॥९
सुकृति श्रीवासगोष्टी प्रभुर प्रसादे ।
सभे प्रभु देखि ऊर्द्ध्वबाहु करि कान्दे ॥१०
वैकुण्ठनायक गृहे पाइया श्रीवास ।
हेन नाहि जानेन कि जन्मिल उल्लास ॥११
आपने माथाय करि उत्तम आसन ।
दिलेन वसिला तथि कमललोचन ॥१२
चतुर्दिगे वसिलेन पारिषदगण ।
सभेइ गायेन कृष्णनाम अनुक्षण ॥१३
गृहे जयकार करे पतिव्रतागण ।
आनन्दस्वरूप हैल श्रीवासभवन ॥१४
प्रभु आइलेन मात्र पण्डितेर धर ।
वार्त्ता पाइ आइलेन आचार्य्य पुरन्दर ॥१५
ताहाने देखिया प्रभु पिता करि बोले ।
महाप्रेमे प्रभु ताने करिलेन कोले ॥१६
परम सुकृति से आचार्य्य पुरन्दर ।
प्रभु देखि कान्दे अति हइ असम्बर ॥१७
वासुदेवदत्त आइलेन सेइक्षणे ।
शिवानन्दसेन आदि आप्तवर्गसने ॥१८
प्रभुर परम प्रिय वासुदेवदत्त ।
प्रभुर कृपाय से जानेन सर्व तत्त्व ॥१९
जगतेर हितकारी वासुदेवदत्त ।
सर्वभूते कृपालु चैतन्यरसे मत्त ॥२०
गुणग्राही आदोषदरशी सभा प्रति ।
ईश्वरे वैष्णवे यथायोग्य रति मति ॥२१
वासुदेवदत्त देखि श्रीगौरसुन्दर ।
कोले करि कान्दिते लागिला बहुतर ॥२२
वासुदेवदत्त धरि प्रभुर चरण ।
उच्चस्वरे लागिला करिते क्रन्दन ॥२३
वासुदेव कान्दिते के आछे हेन जन ।
शुष्क काष्ठ पाषाण ये ना करे क्रन्दन ॥२४
वासुदेवदत्तेर यतेक गुणसीमा ।
वासदेवदत्त विनु नाहिक उपमा ॥२५
हेन से प्रभुर प्रीति दत्तेर विषय ।
प्रभु वोले आमि वासुदेवेर निश्चय ॥२६
आपने श्रीगौरचन्द्र बोले बारबार ।
ए शरीर वासुदेवदत्तेर आमार ॥२७
दत्त आमा' यथा बेचे तथाइ बिकाइ ।
सत्यसत्य इहाते अन्यथा किछु नाइ ॥२८
वासुदेवदत्तेर वातास यार गा'य ।
लागियाछे तारे कृष्ण रक्षिब सदाय ॥२९
सत्य आमि कहि शुन वैष्णवमण्डल ।
ए देह आमार वासुदेवेर केबल ॥३०

वासुदेवदत्तेरे प्रभुर कृपा शुनि ।
आनन्दे वैष्णवगण करे जयध्वनि ॥३१
भक्त बाढ़ाइते श्रीगौरसुन्दर से जाने ।
येन करे भक्त तेन करेन आपने ॥३२
एइमत रङ्गे प्रभु श्रीगौरसुन्दरे ।
कथोदिन रहिलेन श्रीवासेर घरे ॥३३
श्रीवास रामाइ दुइ भाइ गुण गाय ।
विह्वल हइया नाचे श्रीवैकुण्ठराय ॥३४
चैतन्येर अतिप्रिय श्रीवास रामाञि ।
दुइ चैतन्येर देह द्विधा किछु नाञि ॥३५
सङ्कीर्त्तन भागवत पाठ व्यबहारे ।
विदूषक लीलाय कि अशेष प्रकारे ॥३६
जन्मायेन प्रभुर सन्तोष श्रीनिवास ।
यार घरे प्रभुर सर्व्वाद्य परकाश ॥३७
एकदिन प्रभु श्रीनिवासेर सहिते ।
व्यबहार कथा किछु कहेन निभृते ॥३८
प्रभु बोले तुमि देखि कोथाओ ना याओ ।
केमते बा कुलाइबा केमते कुलाओ ॥३९
श्रीवास बोलेन प्रभु ! कोथाओ याइते ।
नाहि लय मोर चित्त बलिलुँ तोमाते ॥४०
प्रभु बोले परिबार अनेक तोमार ।
निर्व्वाह केमते तबे इहब सभार ॥४१
श्रीवास बोलेन यार अदृष्टे ये थाके ।
से-इ हइबेक मिलिबेक ये-ते पाके ॥४२
प्रभु बोले तुमि सबे करह सन्न्यास ।
इहा ना पारिमु मुञि बोलेन श्रीवास ॥४३
प्रभु बोले सन्न्यासग्रहण ना करिबा ।
भिक्षा करितेओ कारो द्वारे ना याइबा ॥४४
केमने करिबा परिबारेर पोषण ।
किछु त ना बुझोँ मुञि तोमार वचन ४५
ए काले त कोथाओ ना गेले ना आइले ।
बटमात्र द्वारे आसि काहुके ना मिले ॥४६
ना मिलिल यदि आसि तोमार दुयारे ।
तबे तुमि कि करिबा ? बोल देखि मोरे ॥४७
श्रीवास बोलेन हाथे तिन तालि दिया ।
एक दुइ तिन एइ कहिलुँ भाङ्गिया ॥४८
प्रभु बोले एक दुइ तिन ये करिला ।
कि अर्थ इहार कह केने तालि दिला ॥४९
श्रीवास बोलेन एइ दढ़ान आमार ।
तिन उपावासे यदि ना मिले आहार ॥५०
तबे सत्य कहोँ घट बान्धिया गलाय ।
प्रवेश करिमु मुञि सर्व्वथा गङ्गाय ॥५१
एइमात्र श्रीवासेर शुनिया वचन ।
उठिल हुङ्कार करिया श्रीशचीनन्दन ॥५२
प्रभु बोले कि बलिलि पण्डित-श्रीवास !
तोर कि अन्नेर दुःखे हइब उपास ॥५३
यदि कदाचित बा लक्ष्मीओ भिक्षा करे ।
तथापिह दारिद्र नहिब तोर घरे ॥५४
आपने ये गीताशास्त्रे बलियाछोँ मुञि ।
ताहो कि श्रीवास ! एबे पासरिलि तुञि ॥५५

तथाहि (श्रीगीतायाम् ९।२२)—

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्य्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योग-क्षेमं वहाम्यहम् ॥५६

टीका ।

मद्भक्तास्तु मत्प्रसादेन कृतार्था भवन्तीत्याह— अनन्या इति । अनन्याः—नास्ति मद्व्यतिरेकेनाऽन्यत् काम्यं येषां ते । तथाभूता ये जना मां चिन्तयन्तः सेवन्ते । तेषां नित्याऽभियुक्तानां सर्वथा मदेकनिष्ठानाम् । योगं धनादिलाभम् क्षेमं च तत्पालनम् । मोक्षं वा । तैरप्रार्थितमप्यहमेव वहामि प्रापयामि । इति श्रीधरः ।

अनुवाद।

जो सब व्यक्ति एकमात्र मेरी कामना से मेरा ध्यान एवं मेरी चिन्ता करते हैं, एवं मुझ में आसक्त हैं, उनसब के योग क्षेम का वहन मैं स्वयं करता हूँ। अप्राप्त वस्तु का प्रापन योग प्राप्त वस्तु का रक्षक क्षेग है।

ये ये जने चिन्ते मोरे अनन्य हइया।
तारे भक्ष्य देङ मुञि माथाय बहिया ॥५७
येइ मोरे चिन्ते नाहि याय कारो द्वारे।
आपने आसिया सर्वसिद्धि मिले तारे ॥५८
धर्म अर्थ काम मोक्ष आपने आइसे।
तथापिह ना चाहे ना लये मोर दासे ॥५९
मोर सुदर्शनचक्रे राखे मोर दास।
महाप्रलयेओ यार नाहिक बिनाश ॥६०
ये मोहोर दासेरेओ करये स्मरण।
ताहारेओ करों मुञि पोषण पालन ॥६१
सेवकेर दास से मोहोर प्रिय बड़।
अनायासे से-इ से मोहोरे प्रिय दढ़ ॥६२
कोन् चिन्ता मोर सेवकेर भक्ष्य करि।
मुञि यार पोष्टा आछों सकल उपरि ॥६३
सुखे श्रीनिवास! तुमि वसि थाक घरे।
आपनि आसिव सव तोमार दुयारे ॥६४
अद्वैतेरे तोमारे आमार एइ बर।
जराग्रस्त नहिब दोँहार कलेवर ॥६५
रामपण्डितेरे डाकि श्रीगौरसुन्दर।
प्रभु बोले शुन राम! आमार उत्तर ॥६६
ज्येष्ठभाइ श्रीवासेर तुमि सर्वथाय।
सेविवे ईश्वरबुद्धये आमार आज्ञाय ॥६७
प्राणसम तुमि मोर श्रीराम पण्डित!
श्रीवासेर सेवा ना छाड़िबा कदाचित ॥६८
शुनिया प्रभुर वाक्य श्रीवास श्रीराम।
अन्त नाहि आनन्दे हइला पूर्णकाम ॥६९
अद्यापिह श्रीवासेरे चैतन्यकृपाय।
द्वारे सब उपसन्न हैतेछे लीलाय ॥७०
कि कहिब श्रीवासेर उदार चरित्र।
त्रिभुवन हय यार स्मरणे पवित्र ॥७१
सत्य सेविलेन चैतन्तेरे श्रीनिवास।
यार घरे चैतन्येर सकल विलास ॥७२
हेन रङ्गे श्रीवासमन्दिरे गौरराय।
रहिलेन कथोदिन श्रीवास इच्छाय ॥७३
ठाकुर पण्डित सर्वगोष्ठीर सहिते।
आनन्दे भासेन प्रभु देखिते देखिते ॥७४
कथोदिन थाकि प्रभु श्रीवासेर घरे।
तबे गेला पानीहाटी राघवमन्दिरे ॥७५
कृष्णकार्य्य आछेन श्रीराघवप्रण्डित।
सम्मुखे श्रीगौरचन्द्र हइला विदित ॥७६
प्राणनाथ देखिया श्रीराघवपण्डित।
दण्डवत हइया पड़िला पृथिवीत ॥७७
दृढ़ करि धरि रमावल्लभ चरण।
आनन्दे राघवानन्द करेन क्रन्दन ॥७८
प्रभुओ राघवपण्डितेरे करि कोले।
सिञ्चिलेन अङ्ग तान नयनेर जले ॥७९
हेन से आनन्द हैल राघवशरीरे।
कोन् विधि करिबेन ताहा नाहि स्फुरे ॥८०
राघवेर भक्ति देखि श्रीवैकुण्ठनाथ।
राघवेरे करिलेन शुभदृष्टिपात ॥८१
प्रभु बोले राघवेर आलये आसिया।
पासरिलुँ सब दुःख राघव देखिया ॥८२
गङ्गाय मज्जन कैले ये सन्तोष हये।
सेइ सुख पाइलाम राघव आलये ॥८३

हासि बोले प्रभु शुन राघवपण्डित ।
कृष्णेर रन्धन गिया करह त्वरित ॥८४
आज्ञा पाइ श्रीराघव परम सन्तोषे ।
चलिलेन रन्धन करिते प्रेमरसे ॥८५
चित्तवृत्ति यतेक मानस आपनार ।
सेइरूपे पाक विप्र करिला अपार ॥८६
आइलेन महाप्रभु करिते भोजन ।
नित्यानन्द सङ्गे आर यत आप्तगण ॥८७
भोजन करेन गौरचन्द्र लक्ष्मीकान्त ।
सकल व्यञ्जन प्रभु प्रशंसे एकान्त ॥८८
प्रभु बोले राघवेर कि सुन्दर पाक ।
एमत कोथाओ आमि नाहि खाइ शाक ॥८९
राघवो प्रभुर प्रीत शाकेते जानिया ।
रान्धिया आछेन शाक विविध आनिया ॥९०
एइमत रङ्गे प्रभु करिया भोजन ।
[व]सिलेन आसि प्रभु करि आचमन ॥९१
[र]ाघवमन्दिरे शुनि श्रीगौरसुन्दर ।
[ग]दाधरदास धाइ आइला सत्वर ॥९२
[प्र]भुर परम प्रिय गदाधरदास ।
[भ]क्तिसुखे पूर्ण यार विग्रह प्रकाश ॥९३
[प्र]भुओ देखिया गदाधर सुकृतिरे ।
[श्र]ीचरण तुलिया दिलेन तान शिरे ९४
[पु]रन्दरपण्डित परमेश्वरदास ।
[या]हार विग्रहे गौरचन्द्रेर प्रकाश ॥९५
[स]त्वरे धाइया आइलेन सेइक्षणे ।
[प्र]भु देखि प्रेमयोगे कान्दे दुइजने ॥९६
[र]घुनाथवैद्य आइलेन ततक्षणे ।
[प]रम वैष्णव, अन्य नाहि यार गुणे ॥९७
[ए]इमत यथा यत वैष्णव आछिला ।
[स]इ प्रभुर स्थाने आसिया मिलिला ॥९८
पानीहाटीग्रामे हैल परम आनन्द ।
आपने साक्षाते यथा प्रभु गौरचन्द्र ॥९९
राघवपण्डित प्रति श्रीगौरसुन्दर ।
निभृते करिला किछु रहस्य उत्तर ॥१००
राघव तोमारे आमि निज गोप्य कइ ।
आमार द्वितीय नाहि नित्यानन्द बइ ॥१०१
एइ नित्यानन्द येइ करायेन आमारे ।
ये-इ करि एइ आमि बलिल तोमारे ॥१०२
आमार सकल कर्म नित्यानन्द द्वारे ।
एइ आमि अकपटे कहिल तोमारे ॥१०३
येइ आमि से-इ नित्यानन्द भेद नाइ ।
तोमार घरेइ सब जानिवा एथाइ ॥१०४
महायोगेन्द्रेरो याहा पाइते दुर्ल्लभ ।
नित्यानन्द हैते ताहा हइब सुलभ ॥१०५
एतेके हइया तुमि महा सावधान ।
नित्यानन्द सेविह येहेन भगवान् ॥१०६
मकरध्वजकर प्रति श्रीगौरचन्द्र ।
बलिलेन सेविह राघवपदद्वन्द्व ॥१०७
राघवपण्डित प्रति ये प्रीति तोमार ।
से केवल सुनिश्चय जानिह आमार ॥१०८
हेनमते पानीहाटी ग्राम धन्य करि ।
आछिलेन कथोदिन गौराङ्ग श्रीहरि ॥१०९
तबे प्रभु आइलेन बराहनगरे ।
महाभाग्यवन्त एक ब्राह्मणेर घरे ॥११०
सेइ विप्र बड़ सुशिक्षित भागवते ।
प्रभु देखि भागवत लागिला पढ़िते ॥१११
शुनिया ताहान भक्तियोगेर पठन ।
आविष्ट हइला गौरचन्द्र नारायण ॥११२
बोल बोल बोले प्रभु वैकुण्ठेर राय ।
हुङ्कार गर्जन प्रभु करेन सदाय ॥११३

सेहो विप्र पड़े परानन्दे मग्न हैया ।
प्रभुओ करेन नृत्य वाह्य पासरिया ॥११४
भक्तिर महिमा श्लोक शुनिते शुनिते ।
पुनःपुन आछाड़ पड़ेन पृथिवीते ॥११५
हेन से करेन प्रभु प्रेमार प्रकाश ।
आछाड़ देखिते सर्वलोके पाय त्रास ॥११६
एइमत रात्रि तिनप्रहर अवधि ।
भागवत शुनिया नाचिला गुण निधि ॥११७
वाह्य पाइ वसिलेन श्रीशचीनन्दन ।
सन्तोषे विप्रेरे करिलेन आलिङ्गन ॥११८
प्रभु बोले भागवत एमत पढ़िते ।
कभु नाहि शुनि आर काहारो मुखेते ॥११९
एतेके तोमार नाम भागवताचार्य्य ।
इहा बइ आर कोन ना करिह कार्य्य ॥१२०
विप्र प्रति प्रभुर पदवी योग्य शुनि ।
सभे करिलेन महा जय जय हरि ध्वनि ॥१२१
एइमत प्रति ग्रामे ग्रामे गङ्गातीरे ।
रहिया रहिया प्रभु भक्तेर मन्दिरे ॥१२२
सभारि करिया मनोरथ पूर्ण काम ।
पुन आइलेन प्रभु नीलाचल धाम ॥१२३
गौड़देशे पुनर्वार प्रभुर बिहार ।
इहा ये शुनये तार दुःख नहे आर ॥१२४
सर्व नीलाचल देशे उपजिल ध्वनि ।
पुन आइलेन न्यासि चूड़ामणि ॥१२५
महानन्दे सर्वलोक 'जयजय' बोले ।
"आइला सचल जगन्नाथ नीलाचले ॥"१२६
शुनि सब उत्कलेर पारिषदगण ।
सार्वभौम आदि आइलेन सेइक्षण ॥१२७
चिरदिन प्रभुर बिरहे भक्तगण ।
आनन्दे प्रभुरे देखि करेन क्रन्दन ॥१२८
प्रभुओ सभारे महाप्रेमे करि कोले ।
सिञ्चिला सभार अङ्ग नयनेर जले ॥१२९
हेनमते श्रीगौरसुन्दर नीलाचले ।
रहिलेन काशीमिश्र-गृहे कुतूहले ॥१३०
निरन्तर नृत्य गीत आनन्द आबेश ।
प्रकाशेन गौरचन्द्र देखे सर्वदेश ॥१३१
कखनो नाचेन जगन्नाथेर सम्मुखे ।
तिलार्द्धेको वाह्य नाहि निजानन्दसुखे ॥१३२
कखनो नाचेन काशीमिश्रेर मन्दिरे ।
कखनो नाचेन महाप्रभु सिन्धुतीरे ॥१३३
एइमत निरन्तर प्रेमेर विलास ।
तिलार्द्धेक अन्यो कर्म नाहिक प्रकाश ॥१३४
पाणिशङ्ख बाजिले उठेन सेइक्षणे ।
कपाट फेटिले जगन्नाथ दरशने ॥१३५
जगन्नाथ देखिते ये प्रकाशेन प्रेम ।
अकथ्य अद्भुत ! गङ्गाधारा बहे येन ॥१३६
देखिया अद्भुत सब उत्कलेर लोक ।
कारो देहे आर नाहि रहे दुःख शोक ॥१३७
ये दिगे चैतन्य महाप्रभु चलि याय ।
सेइ दिगे सर्वलोक 'हरिहरि' गाय ॥१३८
प्रतापरुद्रेर स्थाने हइल गोचर ।
"नीलाचले आइलेन श्रीगौरसुन्दर ॥"१३९
सेइक्षणे शुनि मात्र नृपति प्रताप ।
कटक छाड़िया आइलेन जगन्नाथ ॥१४०
प्रभुरे देखिते बड़ राजार बड़ प्रीत ।
प्रभु से ना देन दरशन कदाचित ॥१४१
सार्वभौम आदि सभा'स्थाने राजा कहे ।
तथापि प्रभुरे केहो ना जानाय भये ॥१४२
राजा बोले तुमिसब ! यदि कर भय ।
अगोचरे आमारे देखाओ महाशय ॥१४३

देखिया राजार आर्त्ति सर्वभक्तगणे ।
सभे मेलि एइ युक्ति भाविलेन मने ॥१४४
ये समये प्रभु नृत्य करेन आपने ।
वाह्यज्ञान दैवे नाहि थाकये तखने ॥१४५
राजाओ परम भक्त सेइ अवसरे ।
देखिबेन प्रभुरे थाकिया अगोचरे ॥१४६
एइ युक्ति सभे कहिलेन राजास्थाने ।
राजा बोले ये-ते-मते देखों मात्र ताने ॥१४७
दैवे एकदिन नृत्य करेन ईश्वर ।
शुनि राज एकेश्वर आइला सत्वर ॥१४८
आड़े थाकि देखे राजा नृत्य करे प्रभु ।
परम अद्भुत ! याहा नाहि देखे कभु ॥१४६
अबिच्छिन्न कत धारा बहे श्रीनयने ।
कम्प स्वेद वैवर्ण्य पुलक क्षणेक्षणे ॥१५०
हेन से आछाड़ प्रभु पड़ेन भूमिते ।
हेन नाहि ये बा त्रास ना पाय देखिते ॥१५१
हेन से करेन प्रभु हुङ्कार गर्जन ।
शुनिया प्रतापरुद्र धरेन श्रवण ॥१५२
कखनो करेन हेन रोदन बिरहे ।
राजा देखे पृथिवीते येन नदी बहे ॥१५३
एइमत कत हय अनन्त बिकार ।
कत याय कत हय लेखा नाहि तार ॥१५४
निरवधि दुइ महाबाहुदण्ड तुलि ।
'हरिबोल' बलिया नाचेन कुतूहली ॥१५५
एइमत नृत्य प्रभु करि कथोक्षणे ।
वाह्य प्रकाशिया वसिलेन सर्व-गणे ॥१५६
राजाओ चलिला अलक्षिते सेइक्षणे ।
देखिया प्रभुर नृत्य महानन्दमने ॥१५७
देखिया अद्भुत नृत्य अद्भुत बिकार ।
राजार मनेते हैल सन्तोष अपार ॥१५८
सबे एकखानि मात्र धरिलेक मने ।
सेह ताने अनुग्रह हइबार कारणे ॥१५९
प्रभुर नासाय यत दिव्य-धारा बहे ।
निरवधि नाचिते श्रीमुखे लाला हये ॥१६०
धूलाय लालाय नासिकार प्रेमधारे ।
सकल श्रीअङ्ग व्याप्त कीर्त्तनबिकारे ॥१६१
ए सकल कृष्णभाव ना बुझि नृपति ।
ईषत सन्देह तान धरिलेक मति ॥१६२
कारो स्थाने इहा राजा ना करि प्रकाश ।
परम सन्तोषे राजागेला निज-वास ॥१६३
प्रभुरे देखिया राजा महासुखी हैया ।
थाकिलेन गृहे गिया शयन करिया ॥१६४
आपने श्रीजगन्नाथ न्यासिरूप धरि ।
निजे सङ्कीर्त्तनक्रीड़ा करे अवतरि ॥१६५
ईश्वर मायाय राजा मर्म नाहि जाने ।
सेइ प्रभु जानाइते लागिला आपने ॥१६६
सुकृति प्रतापरुद्र रात्रे स्वप्न देखे ।
स्वप्ने गियाछेन जगन्नाथेर सम्मुखे ॥१६७
राजा देखे—जगन्नाथ अङ्ग धूलामय ।
दुइ श्रीनयने येन गङ्गाधारा बय ॥१६८
दुइ नासिकाय जल पड़े निरन्तर ।
श्रीमुखेर लाला पड़े, तिते कलेवर ॥१६९
स्वप्ने राजा मने चिन्ते ए किरूप लीला ।
बुझिते ना पारि जगन्नाथेर कि खेला ॥१७०
जगन्नाथ चरण स्पर्शिते राजा चाय ।
जगन्नाथ बोले राजा ! ए त ना जुयाय ॥१७१
कर्पूर कस्तुरी गन्ध चन्दन कुङ्कुमे ।
लेपित तोमार अङ्ग सकल उत्तमे ॥१७२
आमार शरीर देख धूला-लाला-मय ।
आमा' परशिते कि तोमार योग्य हय ॥१७३

आमि ये नाचिते आजि तुमि गियाछिला ।
घृणा कैले मोर अङ्ग देखि धूला लाला ॥१७४
सेइ धूला लाला देख सर्वाङ्गे आमार ।
तुमि महाराजा—महाराजार कुमार ॥१७५
आमारे स्पर्शिते कि तोमार योग्य हय ?
एत बलि भृत्य चा'हि हासे दयामय ॥१७६
सेइक्षणे देखे राजा सेइ सिंहासने ।
चैतन्यगोसाञि वसि आछेन आपने ॥१७७
सेइमत श्रीअङ्ग सकल धूलामय ।
राजारे बोलेन हासि ए त योग्य नय ॥१७८
तुमि ये आमारे घृणा करि गेला मने ।
आर तुमि आमा' परशिवा कि कारणे ॥१७९
एइमत प्रतापरुद्रेरे कृपा करि ।
हासेन श्रीगौराङ्गसुन्दर नरहरि ॥१८०
राजार हइल कथोक्षणे जागरण ।
जागिया लागिला राजा करिते क्रन्दन ॥१८१
"महा-अपराधी मुञि पापी दुराचार ।
ना जानिलुँ चैतन्य ईश्वर अवतार ॥१८२
जीवेर वा कोन् शक्ति ताहाने जानिते ।
ब्रह्मादिर मोह हय याँहार मायाते ॥१८३
एतेके क्षमह प्रभु ! मोर अपराध ।
निज दास करि मोरे करह प्रसाद ॥"१८४
आपने श्रीजगन्नाथ चैतन्यगोसाञि ।
राजा जानिलेन इथे किछु भेद नाञि ॥१८५
विशेष उत्कण्ठा हैल प्रभुरे देखिते ।
तथापि ना पारे केहो देखा कराइते ॥१८६
दैवे एकदिन प्रभु पुष्पेर उद्याने ।
वसिया आछेन- कथो पारिषद-सने ॥१८७
एकाकी प्रतापरुद्र गिया सेइ स्थाने ।
दीर्घ हइ पड़िलेन प्रभुर चरणे ॥१८८
अश्रु कम्प पुलके राजार अन्त नाञि ।
आनन्दे मूर्च्छित हइलेन सेइ ठाञि ॥१८९
विष्णुभक्तिचिह्न प्रभु देखिया राजार ।
उठ बलि श्रीहस्त दिलेन अङ्गे ताँर ॥१९०
श्रीहस्त परशे राजा पाइया चेतन ।
प्रभुर चरण धरि करेन क्रन्दन ॥१९१
"त्राहि त्राहि कृपासिन्धु सर्वजीवनाथ ।
मुञि पातकीरे कर शुभ दृष्टिपात ॥१९२
त्राहि त्राहि स्वतन्त्रबिहारी कृपासिन्धु ।
त्राहि त्राहि श्रीकृष्णचैतन्य दीनबन्धु ॥१९३
त्राहि त्राहि सर्ववेदगोप्य रमाकान्त !
त्राहि त्राहि भक्तजनवल्लभ एकान्त !१९४
त्राहि त्राहि महाशुद्धसत्त्वरूपधारि ।
त्राहि त्राहि सङ्कीर्त्तनलम्पट मुरारि !१९५
त्राहि त्राहि अविज्ञाततत्त्व-गुण-नाम !
त्राहि त्राहि परमकोमल गुणधाम !१९६
त्राहि त्राहि अज भव बन्द्य श्रीचरण !
त्राहि त्राहि सन्न्यासधर्मेर विभूषण !१९७
त्राहि त्राहि श्रीगौरसुन्दर महाप्रभु ।
एइ कृपा कर नाथ ना छाड़िबा कभु ॥"१९८
शुनि प्रभु प्रतापरुद्रेर काकुर्वाद ।
तुष्ट हइ प्रभु ताने करिला प्रसाद ॥१९९
प्रभु बोले कृष्णभक्ति हउक तोमार ।
कृष्णकार्य्य विने तुमि ना करिह आर ॥२००
निरन्तर गिया कर कृष्णसङ्कीर्त्तन ।
तोमार रक्षिता विष्णुचक्र-सुदर्शन ॥२०१
तुमि सार्वभौम आर रामानन्दराय ।
तिनेर निमित्त मुञि आइलुँ एथाय ॥२०२
सबे एकखानि वाक्य करिबा आमार ।
मोरे ना करिबा तुमि कोथाओ प्रचार ॥२०३

ए से नहे आमार प्रचार कर तुमि ।
तबे एथा छाड़ि सत्य चलिवाङ आमि ॥२०४
एत बलि आपने गलार माला दिया ।
बिदाय दिलेन ताने सन्तोष हइया ॥२०५
चलिला प्रतापरुद्र आज्ञा करि शिरे ।
दण्डवत पुनःपुन करिया प्रभुरे ॥२०६
प्रभु देखि नृपति हइला पूर्णकाम ।
निरवधि करेन चैतन्यपद ध्यान ॥२०७
प्रतापरुद्रेर प्रभु-सह दरशन ।
इहा ये शुनये तारे मिले प्रेमधन ॥२०८
हेनमते श्रीगौरसुन्दर नीलाचले ।
रहिलेन कीर्त्तनबिहार कुतूहले ॥२०९
उत्कले जन्मियाछिला यत अनुचर ।
सभे चिनिलेन निज प्राणेर ईश्वर ॥२१०
श्रीप्रद्युम्नमिश्र कृष्णसुखेर सागर ।
आतमपद यारे दिला श्रीगौरसुन्दर ॥२११
श्रीपरमानन्द महापात्र महाशय ।
यार तनु श्रीचैतन्यभक्तिरसमय ॥२१२
काशीमिश्र परम विह्वल कृष्ण रसे ।
आपने रहिला प्रभु याहार आवासे ॥२१३
एइमत प्रभु सर्व भृत्य करि सङ्गे ।
निरवधि गोङायेन सङ्कीर्त्तन रङ्गे ॥२१४
यतयत उदासीन श्रीचैतन्यदास ।
सभे करिलेन आसि नीलाचले वास ॥२१५
नित्यानन्द महाप्रभु परम उद्दाम ।
सर्वनीलाचले भ्रमे महाज्योतिर्धाम ॥२१६
निरवधि परानन्दरसे उनमत्त ।
लखिते ना पारे केहो अविज्ञाततत्त्व ॥२१७
सदाइ जपेन नाम श्रीकृष्णचैतन्य ।
स्वप्नेओ नाहिक नित्यानन्दमुखे अन्य ॥२१८
येन रामचन्द्रे लक्ष्मणेर रति मति ।
सेइमत नित्यानन्दो श्रीचैतन्य प्रति ॥२१९
नित्यानन्द प्रसादे से सकल संसार ।
अद्यापिह गाय श्रीचैतन्य अवतार ॥२२०
हेनमते महाप्रभु चैतन्य निताइ ।
नीलाचले वसति करेन दुइभाइ ॥२२१
एकदिन श्रीगौरसुन्दर नरहरि ।
निभृते वसिला नित्यानन्द सङ्गे करि ॥२२२
प्रभु बोले शुन नित्यानन्द महामति !
सत्वरे चलह तुमि नवद्वीप प्रति ॥२२३
प्रतिज्ञा करिया आछि आमि निजमुखे ।
मूर्ख नीच दरिद्र भासाव प्रेमसुखे ॥२२४
तुमिओ थाकिला यदि मुनिधर्म करि ।
आपन उद्दाम भाव सब परिहरि ॥२२५
तबे मूर्ख नीच यत पतित संसार ।
बोल देखि आर के बा करिब उद्धार ॥२२६
भक्तिरसदाता तुमि, तुमि सम्वरिले ।
तबे अवतार बा कि निमित्ते करिले ॥२२७
एतेके आमार वाक्य यदि सत्य चाओ ।
तबे अविलम्बे तुमि गौड़देशे याओ ॥२२८
मूर्ख नीच पतित दुखित यत जन ।
भक्ति दिया कर गिया सभार मोचन ॥२२९
आज्ञा पाइ नित्यानन्दचन्द्र सेइक्षणे ।
चलिलेन गौड़देशे लइ निज गणे ॥२३०
रामदास गदाधरदास महाशय ।
रघुनाथ वेज-ओझा भक्तिरसमय ॥२३१
कृष्णदासपण्डित परमेश्वरदास ।
पुरन्दरपण्डित परम उल्लास ॥२३२
नित्यानन्दस्वरूपेर यत आप्तगण ।
नित्यानन्दसङ्गे सभे करिला गमन ॥२३३

चलिलेन नित्यानन्द गौड़देश प्रति ।
सर्वपारिषदगण करिया संहति ॥२३४
पथे चलितेइ नित्यानन्द महाशय ।
सर्व-पारिषद करिलेन प्रेममय ॥२३५
सभार हइल आत्मविस्मृति अत्यन्त ।
कार देहे कत भाब नाहि हय अन्त ॥२३६
प्रथमेइ वैष्णवाग्रगण्य रामदास ।
तान देहे हइलेन गोपाल प्रकाश ॥२३७
मध्यपथे रामदास त्रिभङ्ग हइया ।
आछिला प्रहर तिन वाह्य पासरिया ॥२३८
हइला राधिकाभाब गदाधरदासे ।
दधि के किनिब ? बलि महा अट्टहासे ॥२३९
रघुनाथ वैद्य उपाध्याय महामति ।
हइलेन मूर्त्तिमती येहेन रेवती ॥२४०
कृष्णदास परमेश्वरदास दुइजन ।
गोपाल भावे है है करे सर्वक्षण ॥२४१
पुरन्दरपण्डित गाछेते गिया चढ़े ।
मुञि रे अङ्गद बलि लाफ दिया पड़े ॥२४२
एइमत नित्यानन्द श्रीअनन्त धाम ।
सभारे दिलेन भाब परम उद्दाम ॥२४३
दण्ड पथ छाड़ि सभे क्रोश दुइचारि ।
यायेन दक्षिण बामे आपना पासरि ॥२४४
कथोक्षणे पथ जिज्ञासेन लोकस्थाने ।
बोल भाइ ! गङ्गातीर याइब केमने ॥२४५
लोक बोले हाय हाय पथ पासरिला ।
दुइ प्रहरेर पथ फिरिया आइला ॥२४६
लोकवाक्ये फिरिया यायेन यथा पथ ।
पुन पथ छाड़िया यायेन सेइमत ॥२४७
पुन पथ जिज्ञासा करेन लोक स्थाने ।
लोके बोले पथ रैल दशक्रोश बामे ॥२४८
पुन हासि सभेइ चलेन पथ यथा ।
निज देह ना जानेन पथेर का कथा ॥२४९
यत देहधर्म क्षुधा तृष्णा भय दुःख ।
काहारो नाहिक पाइ परानन्दसुख ॥२५०
पथे यत लीला करिलेन नित्यानन्द ।
के वर्णिव के वा जाने सकलि अनन्त ॥२५१
हेनमते नित्यानन्द श्रीअनन्तधाम ।
आइलेन गङ्गातीरे पानीहाटी ग्राम ॥२५२
राघवपण्डितगृहे सर्वाद्ये आसिया ।
रहिलेन सकल पार्षदगण लैया ॥२५३
परम आनन्द हैला राघवपण्डित ।
श्रीमकरध्वज-कर गोष्ठीर सहित ॥२५४
हेनमते नित्यानन्द पानीहाटी ग्रामे ।
रहिलेन सकल पार्षदगण सने ॥२५५
निरन्तर परानन्दे करेन हुङ्कार ।
विह्वलता वइ देहे वाह्य नाहि आर ॥२५६
नृत्य करिबार इच्छा हइल अन्तरे ।
गायक सकल आसि मिलिल सत्वरे ॥२५७
सुकृति माधवघोष कीर्त्तने तत्पर ।
तेन कीर्त्तनिया नाहि पृथिवी भितर ॥२५८
याहारे कहेन वृन्दावनेर गायन ।
नित्यानन्नस्वरूपेर महाप्रियतम ॥२५९
माधव गोविन्द वासुदेव तिन भाइ ।
गाइते लागिला नाचे, ईश्वर निताइ ॥२६०
हेन से नाचेन अवधूत महाबल ।
पदभरे पृथिवी करये टलमल ॥२६१
निरवधि हरि वलि करेन हुङ्कार ।
आछाड़ देखिते लोके लागे चमत्कार ॥२६२
याहारे करेन दृष्टि नाचिते नाचिते ।
सेइ प्रेमे ढलिया पड़ये पृथिवीते ॥२६३

परिपूर्ण प्रेमरसमय नित्यानन्द ।
संसार तारिते करिलेन शुभारम्भ ॥२६४
यतेक आछये प्रेमभक्तिर विकार ।
सब प्रकाशिया नृत्य करेन अपार ॥२६५
कथोक्षणे वसिलेन खट्टार उपरे ।
आज्ञा हैल अभिषेक करिबार तरे ॥२६६
राघवपण्डित आदि पारिषदगणे ।
अभिषेक करिते लागिला सेइक्षणे ॥२६७
सहस्रसहस्र घट आनि गङ्गाजल ।
नानागन्धे सुवासित करिया सकल ॥२६८
सन्तोषे सभेइ देन श्रीमस्तकोपरि ।
चतुर्दिगे सभेइ बोलेन 'हरिहरि' ॥२६९
सभेइ पड़ेन अभिषेकमन्त्र गीत ।
परानन्दे सभेइ हइला आनन्दित ॥२७०
अभिषेक कराइया नूतन वसन ।
पराइया लेपिलेन श्रीअङ्गे चन्दन ॥२७१
दिव्य दिव्य वनमाला तुलसी सहिते ।
पीन बक्ष पूर्ण करिलेन नानामते ॥२७२
तबे दिव्य खट्टा स्वर्णे करिया भूषित ।
सम्मुखे आनिया करिलेन उपनीत ॥२७३
खट्टाय वसिला महाप्रभु नित्यानन्द ।
छत्र धरिलेन शिरे श्रीराघवानन्द ॥२७४
जयध्वनि करिते लागिला भक्तगण ।
चतुर्दिगे हैल महा-आनन्द क्रन्दन ॥२७५
त्राहि त्राहि सभेइ बोलेन बाहुतुलि ।
कारो वाह्य नाहि सभे महाकुतूहली ॥२७६
स्वानुभावानन्दे प्रभु नित्यानन्दराय ।
प्रेमदृष्टि वृष्टि करि सर्वदिगे चा'य ॥२७७
आज्ञा करिलेन शुन राघवपण्डित !
कदम्बेर माला गाँथि आनह त्वरित ॥२७८
वड़ प्रीत आमार कदम्बपुष्प प्रति ।
कदम्बेर वने नित्य आमार वसति ॥२७९
कड़जोड़ करिया राघवानन्द कहे ।
कदम्बपुष्पेर योग ए समये नहे ॥२८०
प्रभु बोले बाड़ी गिया चाह भाल मने ।
कदाचित फुटिया वा थाके कोनस्थाने ॥२८१
बाड़ीर भितरे गिया चाहेन राघव ।
विस्मित हइला देखि महा अनुभव ॥२८२
जम्वीरेर वृक्षे सब कदम्बेर फुल ।
फुटिया आछये अति परम अतुल ॥२८३
कि अपूर्व वर्ण से बा कि अपूर्व गन्ध ।
से पुष्प देखिले क्षय याय सर्व बन्ध ॥२८४
देखिया कदम्बपुष्प राघवपण्डित ।
वाह्य गेल दूर, हैला महा आनन्दित ॥२८५
आपना सम्वरि माला गाँथिया सत्वरे ।
आनिलेन नित्यानन्द प्रभुर गोचरे ॥२८६
कदम्बेर माला देखि नित्यानन्दराय ।
परम सन्तोषे माला दिलेन गलाय ॥२८७
कदम्बमालार गन्धे सकल वैष्णव ।
विह्वल हइला देखि महा अनुभव ॥२८८
आर महा आश्चर्य्य हइल कथोक्षणे ।
अपूर्व दनार गन्ध पाय सर्वजने ॥२८९
दमनक पुष्पेर सुगन्धे मनो हरे ।
दशदिग व्याप्त हैल सकल मन्दिरे ॥२९०
हासि नित्यानन्द बोले आरे भाइसब !
बोल देखि कि गन्धेर पाओ अनुभव ॥२९१
करजोड़ करि सभे लागिला कहिते ।
अपूर्व दनार गन्ध पाइ चारिभिते ॥२९२
सभार वचन शुनि नित्यानन्दराय ।
कहिते लागिला गोप्य परमकृपाय ॥२९३

प्रभु बोले शुन सभे परम रहस्य।
तोमरा सकले इहा जानिबा अवश्य ॥२९४
चैतन्यगोसाञि आजि शुनिते कीर्त्तन।
नीलाचल हैते करिलेन आगमन ॥२९५
सर्वाङ्गे परिया दिव्य दमनक माला।
एकवृक्षे अवलम्ब करिया रहिला ॥२९६
सेइ श्रीअङ्गेर दिव्य दमनक गन्धे।
चतुर्दिगे पूर्ण हइ आछये आनन्दे ॥२९७
तोमा सभाकार नृत्य कीर्त्तन देखिते।
आपने आइसे प्रभु नीलाचल हैते ॥२९८
एतेके तोमरा सर्व कार्य्य परिहरि।
निरवधि कृष्ण गाओ आपना पासरि ॥२९९
निरवधि श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र यशे।
सभार शरीर पूर्ण हउक प्रेम रसे ॥३००
एत बलि हरि बलि करये हुङ्कार।
सर्वदिगे कृष्णप्रेम करिला विस्तार ॥३०१
नित्यानन्दस्वरूपेर प्रेमदृष्टिपाते।
सभार हइल आत्मविस्मृति देहेते ॥३०२
शुनशुन आरे भाइ! नित्यानन्द शक्ति।
येरूपे दिलेन सर्वजगतेरे भक्ति ॥३०३
ये भक्ति गोपिकागणेर कहे भागवते।
नित्यानन्द हैते ताहा पाइल जगते ॥३०४
नित्यानन्द वसिया आछेन सिंहासने।
सम्मुखे करये नृत्य पारिषदगणे ॥३०५
केहो गिया वृक्षेर उपर डाले चड़े।
पातेपाते बेड़ाय तथापि ना पड़े ॥३०६
केहोकेहो प्रेम सुखे हुङ्कार करिया।
वृक्षेर उपरे थाकि पड़े लाफ दिया ॥३०७
केहो बा हुङ्कार करि वृक्षमूल धरि।
उपड़िया फेले वृक्ष बलि 'हरिहरि' ॥३०८
केह बा गुवाक वने याय रड़ दिया।
गाछ पाँच सात गुया एकत्र करिया ॥३०९
हेन से देहेते जन्मियाछे प्रेम बल।
तृणप्राय उपाड़िया फेलाय सकल ॥३१०
अश्रु कम्प स्तम्भ घर्म पुलक हुङ्कार।
स्वरभङ्ग वैवर्ण्य गर्जन सिंहसार ॥३११
श्रीआनन्द मूर्च्छा आदि यत प्रेम भाव।
भागवते कहे यत कृष्ण अनुराग ॥३१२
सभार शरीरे पूर्ण हइल सकल।
हेन नित्यानन्दस्वरूपेर प्रेम बल ॥३१३
येदिगे देखेन नित्यानन्द महाशय।
सेइ दिगे महाप्रेमभक्तिवृष्टि हय ॥३१४
याराre चाहेन से-इ प्रेमे मूर्च्छा पाय।
बस्त्र ना सम्वरे भूमि पड़ि गड़ि याय ॥३१५
हासे नित्यानन्दप्रभु वसिया खट्टाय।
आनन्दे भकत सब नाचिया बेड़ाय ॥३१६
यत पारिषद नित्यानन्देर प्रधान।
सभारे हइल सर्व शक्ति अधिष्ठान ॥३१७
सर्वज्ञता वाक्यसिद्ध हइल सभार।
सभे हइलेन येन कन्दर्प आकार ॥३१८
सभे यारे परश करेन हस्त दिया।
से-इ विह्वल हय सकल पासरिया ॥३१९
एइमत पानीहाटी ग्रामे तिन मास।
करे नित्यानन्दप्रभु भक्तिर विलास ॥३२०
तिन मास कारो वाह्य नाहिक शरीरे।
देह धर्म तिलार्द्धेको काहारो ना स्फुरे ॥३२१
तिन-मास केहो नाहि करिल आहार।
सभे प्रेम सुखे नृत्य बइ नाहि आर ॥३२२
पानीहाटीग्रामे यत हैल प्रेमसुख।
चारिवेदे वर्णिवेन से सब कौतुक ॥३२३

एकोदण्डे नित्यानन्द करिलेन यत ।
ताहा वर्णिवार शक्ति आछे कार कत ॥३२४
क्षणेक्षणे आपने करेन नृत्यरङ्ग ।
चतुर्दिगे लइ सब पारिषदसङ्ग ॥३२५
कखनो बा आपने वसिया बीरासने ।
नाचायेन सकल सेवक जनेजने ॥३२६
एको सेवकेर नृत्ये हेन रङ्ग हय ।
चतुर्दिगे देखि येन प्रेमवन्यामय ॥३२७
महाझड़े पड़े येन कदलक वन ।
एइमत प्रेमसुखे पड़े सर्वजन ॥३२८
आपने येहेन महाप्रभु नित्यानन्द ।
सेइमत करिलेन सर्वभक्तगण ॥३२९
निरवधि श्रीकृष्णचैतन्य संकीर्त्तन ।
करायेन करेन लइया सर्व-गण ॥३३०
हेन से लागिला प्रेम प्रकाश करिते ।
से-इ हय विह्वल ये आइसे देखिते ॥३३१
ये सेवक यखन ये इच्छा करे मने ।
सेइ आसि उपसन्न हय सेइ क्षणे ॥३३२
एइमत परानन्द प्रेमसुखरसे ।
क्षण हेन केहो ना जानिल तिन मासे ॥३३३
तबे नित्यानन्द महाप्रभु कथोदिने ।
अलंकार परिते हइल इच्छा मने ॥३३४
इच्छामात्र सर्व-अलंकार सेइक्षणे ।
उपसन्न आसिया हइल विद्यमाने ॥३३५
सुवर्ण रजत मरकत मनोहर ।
नानाविध बहुमूल्य कतेक प्रस्तर ॥३३६
मणि सुप्रवाल पट्टवास मुक्ताहार ।
सुकृतिसकले दिया करे नमस्कार ॥३३७
कथो बा निर्मित कथो करिया निर्माण ।
परिलेन अलंकार येन इच्छा तान ॥३३८
दुइ हस्ते सुवर्णेर अङ्गद वलय ।
पुष्ट करि परिलेन आतम-इच्छामय ॥३३९
सुवर्णमुद्रिका रत्ने करिया खिचन ।
दश श्रीअङ्गुले शोभा करे विभूषण ॥३४०
कण्ठे शोभा करे बहुविध दिव्य हार ।
मणि मुक्ता प्रवालादि यत सर्वसार ॥३४१
रुद्राक्ष बिराल अक्ष सुवर्ण रजते ।
बान्धिया धरिला कण्ठे महेशेर प्रीते ॥३४२
मुक्ता कसा सुवर्ण करिया सुरचन ।
दुइ श्रुतिमूले शोभे परम शोभन ॥३४३
पादपद्मे रजत नूपुर बिलक्षण ।
तदुपरि बङ्क शोभे जगतमोहन ॥३४४
शुक्ल पट्ट नील पीत बहुविध वास ।
अपूर्व शोभये परिधानेर विलास ॥३४५
मालती मल्लिका जूथी चम्पकेर माला ।
श्रीबक्षे करये दोल आन्दोलन खेला ॥३४६
गोरोचना सहित चन्दन दिव्यगन्धे ।
विचित्र करिया लेपियाछेन श्रीअङ्गे ॥३४७
श्रीमस्तके शोभित विविध पट्टवास ।
तदुपरि नानावर्ण माल्येर विलास ॥३४८
प्रसन्न श्रीमुख कोटि शशधर जिनि ।
हासिया करेन निरवधि हरिध्वनि ॥३४९
ये दिगे चा'हेन दुइ कमल नयाने ।
सेइ दिगे प्रेमरसे भासे सर्वजने ॥३५०
रजतेर प्राय लौहदण्ड सुशोभन ।
दुइ दिगे करि तथि सुवर्ण बन्धन ॥३५१
निरवधि सेइ लौहदण्ड शोभे करे ।
मूषल धरिला येन प्रभु हलधरे ॥३५२
पारिषदो सब धरिलेन अलङ्कार ।
अङ्गद, वलय, मल्ल, नूपुर, सु-हार ॥३५३

शिङ्गा वेत्र वंशी छाँदडोड़ि गुञ्जामाला ।
सभे धरिलेन गोपालेर अंश कला ॥३५४
एइमत नित्यानन्द स्वानुभावरङ्गे ।
बिहरेन सकल पार्षद करि सङ्गे ॥३५५
तबे प्रभु सकल पार्षदगण मेलि ।
भक्त गृहेगृहे करे पर्य्यटनकेलि ॥३५६
जाह्नवीर दुइ कूले यत आछे ग्राम ।
सर्वत्र फिरेन नित्यानन्द ज्योतिर्धाम ॥३५७
दरशन मात्र सर्वजीव मुक्त हय ।
नाम तनु दुइ नित्यानन्दरसमय ॥३५८
पाषण्डीओ देखिलेइ मात्र करे स्तुति ।
सर्वस्व दिवारे सेइक्षणे लय मति ॥३५९
नित्यानन्दस्वरूपेर शरीर मधुर ।
सभारेइ कृपादृष्टि करेन प्रचुर ॥३६०
कि भोजने कि शयने किबा पर्य्यटने ।
क्षणेको ना याय व्यर्थ सङ्कीर्त्तन विने ॥३६१
येखाने करेन नृत्य कृष्णसङ्कीर्त्तन ।
तथाय विह्वल हय शतशत जन ॥३६२
गृहस्थेर शिशु सब किछुइ ना जाने ।
ताहाराओ महा-महा बृक्ष धरि टाने ॥६६३
हुङ्कार करिया बृक्ष फेले उपाड़िया ।
मुञि रे गोपाल बलि बेड़ाय धाइया ॥३६४
हेन से सामर्थ्य एको शिशुर शरीरे ।
शतजने मिलियाओ धरिते ना पारे ॥३६५
श्रीकृष्णचैतन्य जय नित्यानन्द बलि ।
सिंहनाद हइ शिशु हइ कुतूहली ॥३६६
एइमत नित्यानन्द बालकजीवन ।
विह्वल करिते लागिलेन शिशुगण ॥३६७
मासेकेओ एको शिशु ना करे आहार ।
देखिते लोकेर चित्ते लागे चमत्कार ॥३६८

हइलेन विह्वल सकल भक्तवृन्द ।
सभार रक्षक हइलेन नित्यानन्द ॥३६९
पुत्रप्राय करि प्रभु सभारे धरिया ।
करायेन भोजन आपने हस्त दिया ॥३७०
कारेओ बा बान्धिया राखेन निजपाशे ।
मारेन बान्धेन तभु अट्टअट्ट हासे ॥३७१
एकदिन गदाधरदासेर मन्दिरे ।
आइलेन तान प्रीति करिबार तरे ॥३७२
गोपीभावे गदाधर दास महाशय ।
हइया आछेन अति परानन्दमय ॥३७३
मस्तके करिया गङ्गाजलेर कलस ।
निरवधि डाकेन के किनिबे गो-रस ॥३७४
श्रीबालगोपालमूर्त्ति तान देवालय ।
आछेन परमलावण्येर समुच्चय ॥३७५
देखि बालगोपालेर मूर्त्ति मनोहर ।
प्रीते नित्यानन्द लैला बक्षेर उपर ॥३७६
अनन्ते हृदये देखि श्रीबालगोपाल ।
सर्वगणे हरिध्वनि करेन विशाल ॥३७७
हुङ्कार करिया नित्यानन्द मल्ल राय ।
करिते लागिला नृत्य गोपाल लीलाय ॥३७८
दानखण्ड गायेन माधवानन्दघोष ।
शुनि अवधूतसिंह परम सन्तोष ॥३७९
भाग्यवन्त माधवेर हेन दिव्य-ध्वनि ।
शुनिते आविष्ट हन अवधूतमणि ॥३८०
सुकृति श्रीगदाधरदास करि सङ्गे ।
दानखण्ड नृत्य प्रभु करे निज रङ्गे ॥३८१
गोपीभावे वाह्य नाहि गदाधरदासे ।
निरवधि आपनारे गोपी हेन वासे ॥३८२
दानखण्डलीला शुनि नित्यानन्दराय ।
ये नृत्य करेन ताहा वर्णन ना याय ॥३८३

प्रेमभक्तिबिकारेर यत आछे नाम ।
सब प्रकाशिया नृत्य करेन अनुपाम ॥३८४
विद्युतेर प्राय नृत्यगतिर भङ्गिमा ।
किबा से अद्भुत भुज चालन महिमा ॥३८५
किबा से नयनभङ्गी कि सुन्दर हास ।
किबा से अद्भुत शिर कम्पन विलास ॥३८६
एकत्र करिया दुइ चरण सुन्दर ।
किबा जोड़ेजोड़े लाफ देन मनोहर ॥३८७
ये दिगे चाहेन नित्यानन्द प्रेमरसे ।
सेइ दिगे स्त्री पुरुषे कृष्णसुखे भासे ॥३८८
हेन से करेन कृपा दृष्टि अतिशय ।
परानन्दे देह स्मृति कारो ना थाकय ॥३८९
ये भक्ति बाञ्छेन योगीन्द्रादि मुनिगणे ।
नित्यानन्दप्रसादे ता भुञ्जे ये ते जने ॥३९०
हस्तीसम जन ना खाइले तिन दिन ।
चलिते ना पारे देह हय अति क्षीण ॥३९१
एकमास एको शिशु ना करे आहार ।
तथापिह सिंहप्राय सर्व व्यबहार ॥३९२
हेन शक्ति प्रकाशेन नित्यानन्दराय ।
तथापि ना बुझे केहो चैतन्यमायाय ॥३९३
एइमत कथोदिन प्रेमानन्द रसे ।
गदाधरदासेर मन्दिरे प्रभु वसे ॥३९४
वाह्य नाहि गदाधरदासेर शरीरे ।
निरवधि 'हरिबोल' बोलाय सभारे ॥३९५
सेइ ग्रामे काजी आछे परम दुर्वार ।
कीर्त्तनेर प्रति द्वेष करये अपार ॥३९६
परानन्दे मत्त गदाधर महाशय ।
निशाभागे गेला सेइ काजीर आलय ॥३९७
ये काजीर भये लोक पलाय अन्तरे ।
निर्भये चलिला निशाभागे तार घरे ॥३९८
निरवधि हरि-ध्वनि करिते करिते ।
प्रविष्ट हइला गिया काजीर वाड़ीते ॥३९९
देखे मात्र रहिया काजीर सर्व-गणे ।
काहारो बलिते किछु ना आइसे वदने ॥४००
गदाधर बोले अरे ! काजी बेटा कोथा ।
झाट कृष्ण बोल नहे छिण्डोँ एइ माथा ॥४०१
अग्नि हेन क्रोधे काजी हइल बाहिर ।
गदाधरदास देखि हैल स्थिर ॥४०२
काजी बोले गदाधर ! तुमि केने एथा ?
गदाधर बोलेन आछये किछु कथा ॥४०३
श्रीचैतन्य नित्यानन्द प्रभु अवतरि ।
जगतेर मुखे बोलाइला 'हरिहरि' ॥४०४
सबे तुमि मात्र नाहि बोल हरिनाम ।
ताहा बोलाइते आइलाम तोमा स्थान ॥४०५
परम मङ्गल हरि नाम बोल तुमि ।
तोमार सकल पाप उद्धारिब आमि ॥४०६
यद्यपिह काजी महा हिंसक चरित ।
तथापि ना बोले किछु हइल स्तम्भित ॥४०७
हासि बोले काजी शुन दास-गदाधर !
कालि बलिवाङ हरि आजि याह घर ॥४०८
हरिनाम मात्र शुनिलेन तार मुखे ।
गराधरदास पूर्ण हइला प्रेमसुखे ॥४०९
गदाधददास बोले आर कालि केने ।
एइ त बलिला 'हरि' आपन वदने ॥४१०
आर तोर अमङ्गल नाहि कोन क्षणे।
यखने करिला हरिनामेर ग्रहणे ॥४११
एत बलि परम उन्मादि गदाधर ।
हाथे तालि दिया नृत्य करे बहुतर ॥४१२
कथोक्षणे आइलेन आपन मन्दिरे ।
नित्यानन्द अधिष्ठान याहार शरीरे ॥४१३

एइमत गदाधरदासेर महिमा ।
चैतन्य पार्षद मध्ये याँहार गणना ॥४१४
ये काजीर वातास ना लय साधुजने ।
पाइलेइ मात्र जाति लय सेइक्षणे ॥४१५
हेन जन पासरिल सर्व हिंसाधर्म ।
इहारे से बलि कृष्ण आबेशेर कर्म ॥४१६
सत्य कृष्णभाब हय याहार शरीरे ।
अग्नि सर्प व्याघ्रेओ लङ्घिते नारे तारे ॥४१७
ब्रह्मादिरो अभीष्ट से सब कृष्णभाब ।
गोपीगणे व्यक्त ये सकल अनुराग ॥४१८
इङ्गिते से सब भाब नित्यानन्दराय ।
दिलेन सकल प्रियगणेरे कृपाय ॥४१९
भज भाइ ! हेन नित्यानन्देर चरण ।
याहार प्रसादे हय चैतन्य शरण ॥४२०
तबे नित्यानन्द महाप्रभु कथोदिने ।
शची आइ देखिबारे इच्छा हइल मने ॥४२१
शुभयात्रा करिलेन नवद्वीप प्रति ।
पारिषदगण सब चलिला संहति ॥४२२
तबे आइलेन प्रभु खड़दह ग्रामे ।
पुरन्दरपण्डितेर देवालयस्थाने ॥४२३
खड़दहग्रामे प्रभु नित्यानन्द राय ।
यत नृत्य करिलेन कथन ना याय ॥४२४
पुरन्दरपण्डितेर परम उन्माद ।
बृक्षेर उपरि चढ़ि करे सिंहनाद ॥४२५
वाह्य नाहि श्रीचैतन्यदासेर शरीरे ।
व्याघ्र ताड़ाइया याय वनेर भितरे ॥४२६
कखनो चढ़ेन सेइ व्याघ्रेर उपरे ।
कृष्णेर प्रसादे व्याघ्र लङ्घिते ना पारे ॥४२७
महा अजगर सर्प लइ निज कोले ।
निर्भये चैतन्यदास थाके कुतूहले ॥४२८
व्याघ्रेर सहित खेला खेलेन निर्भय ।
हेन कृपा करे अवधूत महाशय ॥४२९
सेवकवत्सल प्रभु नित्यानन्द राय ।
ब्रह्मार दुर्लभ रस इङ्गिते भुञ्जाय ॥४३०
चैतन्यदासेर आत्मविस्मृति सर्वथा ।
निरन्तर कहेन आनन्द मनःकथा ॥४३१
दुइ तिन दिन मज्जि जलेर भितरे ।
थाकेन कोथाओ दुःख ना हय शरीरे ॥४३२
जड़प्राय अलक्षित बेश व्यबहार ।
परम उद्दाम सिंहविक्रम अपार ॥४३३
चैतन्यदासेर यत भक्तिर बिकार ।
कत बा कहिते पारि सकल अपार ॥४३४
योग्य श्रीचैतन्यदास मुरारिपण्डित ।
यार वातासेओ कृष्ण पाइये निश्चित ॥४३५
एबे केहो बोलाय चैतन्यदास नाम ।
स्वप्नेहो ना बोले श्रीचैतन्यगुणग्राम ॥४३६
अद्वैतेर प्राणनाथ श्रीकृष्णचैतन्य ।
याँर भक्तिप्रसादे अद्वैत सत्य धन्य ॥४३७
जय खड़्ग अद्वैतेर ये चैतन्य भक्ति ।
याहार प्रसादे अद्वैतेर सर्वशक्ति ॥४३८
साधुलोके अद्वैतेर ए महिमा घोषे ।
केहो इहा अद्वैतेर निन्दा हेन वासे ॥४३९
सेहो छार बोलाय चैतन्यदास नाम ।
से पापी केमने याय अद्वैतेर स्थान ॥४४०
ए पापीरे अद्वैतेर लोक बोले ये ।
अद्वैतेर हृदय ना जाने कभु से ॥४४१
राक्षसेर नाम येन कहे पुण्यजन ।
एइमत ए सब चैतन्यदासगण ॥४४२
कथोदिन थाकि नित्यानन्द खड़दहे ।
सप्तग्राम आइलेन सर्व गण सहे ॥४४३

सेइ सप्तग्रामे आछे सप्त-ऋषि स्थान ।
जगते विदित से 'त्रिवेणीघाट' नाम ॥४४४
सेइ गङ्गाघाटे पूर्व्वे सप्त-ऋषिगण ।
तप करि पाइलेन गोविन्दचरण ॥४४५
तिन देवी सेइ स्थाने एकए मिलन ।
जाह्नवी यमुना सरस्वती सङ्गम ॥४४६
प्रसिद्ध त्रिवेणीघाट सकल भुवने ।
सर्व्वपाप क्षय हय यार दरशने ॥४४७
नित्यानन्दमहाप्रभु परम आनन्दे ।
सेइ घाटे स्नान करिलेन सर्व्व वृन्दे ॥४४८
उद्धारणदत्त भाग्यवन्तेर मन्दिरे ।
रहिलेन महाप्रभु त्रिवेणीर तीरे ॥४४९
काय-मनो वाक्ये नित्यानन्देर चरण ।
भजिलेन अकैतवे दत्त उद्धारण ॥४५०
नित्यानन्दस्वरूपेर सेवा अधिकार ।
पाइलेन उद्धारण किबा भाग्य आर ॥४५१
जन्मजन्म नित्यानन्दस्वरूप ईश्वर ।
जन्मजन्म उद्धारणो ताँहार किङ्कर ॥४५२
यतेक वणिक् कुल उद्धारण हैते ।
पवित्र हइल द्विधा नाहिक इहाते ॥४५३
वणिक् तारिते नित्यानन्द अवतार ।
वणिकेरे दिला प्रेमभक्ति अधिकार ॥४५४
सप्तग्रामे प्रति वणिकेर घरेघरे ।
आपने श्रीनित्यानन्द कीर्त्तन बिहरे ॥४५५
वणिक् सकल नित्यानन्देर चरण ।
सर्व्वभावे भजिलेन लइया शरण ॥४५६
वणिक् सभेर कृष्णभजन देखिते ।
मने चमत्कार पाय सकल जगते ॥४५७
नित्यानन्दमहाप्रभुर महिमा अपार ।
वणिक् अधम मूर्ख ये कैल उद्धार ॥४५८
सप्तग्रामे महाप्रभु नित्यानन्दराय ।
गण-सह सङ्कीर्त्तन करेन लीलाय ॥४५९
सप्तग्रामे यत हैल कीर्त्तनबिहार ।
शत वत्सरेओ ताहा नारि वर्णिवार ॥४६०
पूर्व्वे येन सुख हैल नदीया नगरे ।
सेइमत सुख हैल सप्तग्राम पुरे ॥४६१
रात्रिदिने क्षुधा तृष्णा नाहि निद्रा भय ।
सर्व्वदिग हैल हरिसङ्कीर्त्तनमय ॥४६२
प्रति घरेघरे प्रति नगरे चत्वरे ।
नित्यानन्दमहाप्रभु कीर्त्तन बिहरे ॥४६३
नित्यानन्दस्वरूपेर आबेश देखिते ।
हेन नाहि ये विह्वल ना हय जगते ॥४६४
अन्येर कि दाय विष्णुद्रोही ये यबन ।
ताहाराओ पादपद्मे लइल शरण ॥४६५
यबनेर नयने देखिते प्रेमधार ।
ब्राह्मणेर आपनारे जन्मये धिक्कार ॥४६६
जयजय अवधूतचन्द्र महाशय ।
याँहार कृपाय हेन सब रङ्ग हय ॥४६७
एइमत सप्तग्रामे आम्बुया मुलुके ।
बिहरेन नित्यानन्दस्वरूप कौतुके ॥४६८
तबे कथोदिने आइलेन शान्तिपुरे ।
आचार्य्यगोसाञि प्रियविग्रहेर घरे ॥४६९
देखिया अद्वैत नित्यानन्देर श्रीमुख ।
हेन नाहि जानेन जन्मिल कोन् सुख ॥४७०
हरि बलि लागिलेन करिते हुङ्कार ।
प्रदक्षिण दण्डवत करेन अपार ॥४७१
नित्यानन्दस्वरूपो अद्वैत करि कोले ।
सिञ्चिलेन अङ्ग तान प्रेमानन्दजले ॥४७२
दोँहे दोँहा देखि बड़ हइला बिवश ।
जन्मिल अत्यन्त अनिर्वचनीय रस ॥४७३

दोँहे दोँहे धरि गड़ि यायेन अङ्गने ।
दोँहे चाहे धरिबारे दोँहार चरणे ॥४७४
कोटि सिंह जिनि दोँहे करि सिंहनाद ।
सम्वरण नहे दुइ प्रभुर उन्माद ॥४७५
तबे कथोक्षणे दुइ प्रभु हैला स्थिर ।
वसिलेन एकस्थाने हइ महाधीर ॥४७६
करजोड़ करिया अद्वैत महामति ।
सन्तोषे करेन नित्यानन्द प्रति स्तुति ॥४७७
तुमि नित्यानन्द मूर्त्ति नित्यानन्द नाम ।
मूर्त्तिमन्त तुमि चैतन्येर गुणग्राम ॥४७८
सर्व-जीव परित्राण तुमि महाहेतु ।
महाप्रलयेते तुमि सत्य धर्मसेतु ॥४७९
तुमि से बुझाओ चैतन्येर प्रेमभक्ति ।
तुमि से चैतन्य बक्षे धर पूर्ण शक्ति ॥४८०
ब्रह्मा शिव नारदादि 'भक्त' नाम यार ।
तुमि से परम उपदेष्टा सभाकार ॥४८१
विष्णुभक्ति सभेइ लयेन तोमा हैते ।
तथापिह अभिमान ना स्पर्शे तोमाते ॥४८२
पतितपावन तुमि दोषदृष्टिशून्य ।
तोमारे ये जाने यार आछे बहु पुण्य ॥४८३
सर्वयज्ञमय एइ विग्रह तोमार ।
अविद्यावन्धन खण्डे स्मरणे याहार ॥४८४
यदि तुमि प्रकाश ना कर आपनारे ।
तबे कार शक्ति आछे जानिते तोमारे ॥४८५
अक्रोध परमानन्द तुमि महेश्वर ।
सहस्रवदन आदिदेव महीधर ॥४८६
रक्ष कुल हन्ता तुमि श्रीलक्ष्मणचन्द्र ।
तुमि गोपपुत्र हलधर मूर्त्तिमन्त ॥४८७
मूर्ख नीच अधम पतित उद्धारिते ।
तुमि अवतीर्ण हइयाछ पृथिवीते ॥४८८
ये भक्ति वाञ्छये योगेश्वर सब मने ।
तोमा हैते पाइबेक ताहा ये ते जने ॥४८९
कहिते अद्वैत नित्यानन्देर महिमा ।
आनन्द आवेशे पासरिलेन आपना ॥४९०
अद्वैत से ज्ञाता नित्यानन्देर प्रभाब ।
ए मर्म जानये कोनकोन महाभाग ॥४९१
तबे ये कलह हेर अन्योऽन्ये बाजे ।
से केवल परानन्द यदि जने बुझे ॥४९२
अद्वैतेर वाक्य बुझिबार शक्ति यार ।
जानिह ईश्वर सने भेद नाहि तार ॥४९३
हेनमते दुइ महाप्रभु निजरङ्गे ।
बिहरेन कृष्णकथा मङ्गल प्रसङ्गे ॥४९४
अनेक रहस्य करि अद्वैत सहित ।
अशेष प्रकारे तान जन्माइया प्रीत ॥४९५
तबे अद्वैतेर स्थाने लइ अनुमति ।
नित्यानन्द आइलेन नवद्वीप प्रति ॥४९६
सेइमत सर्वाद्ये आइला आइ स्थाने ।
आसि नमस्करिलेन आइर चरणे ॥४९७
नित्यानन्दस्वरूपेरे देखि शची आइ ।
कि आनन्द पाइलेन तार अन्त नाइ ॥४९८
आइ बोले बाप ! तुमि सत्य अन्तर्य्यामी ।
तोमारे देखिते इच्छा करिलाम आमि ॥४९९
मोर चित्त जानि तुमि आइला सत्वर ।
के तोमा चिनिते पारे संसार भितर ॥५००
कथोदिन थाक बाप ! एइ नवद्वीपे ।
येन तोमा देखोँ मुञि दशे पक्षे मासे ॥५०१
मुञि दुःखितेर इच्छा तोमारे देखिते ।
दैवे तुमि आसियाछ दुःखित तारिते ॥५०२
शुनिया आइर वाक्य हासे नित्यानन्द ।
ये जाने आइर प्रभावेर आदि अन्त ॥५०३

नित्यानन्द बोले शुन आइ सर्वमाता ।
ोमारे देखिते मुञि आसियाछोँ एथा ॥५०४
ोर इच्छा तोमा देखि थाकिब एथाय ।
हिलाम नवद्वीपे तोमार आज्ञाय ॥५०५
नमते नित्यानन्द आइ सम्भाषिया ।
वद्वीपे भ्रमेण आनन्दयुक्त हैया ॥५०६
वद्वीपे नित्यानन्द प्रति घरेघरे ।
ब पारिषद सङ्गे कीर्त्तन बिहरे ॥५०७
वद्वीपे आसि महाप्रभु नित्यानन्द ।
इलेन कीर्त्तने आनन्द मूर्त्तिमन्त ॥५०८
ति घरेघरे सब पारिषद सङ्गे ।
रवधि बिहरेन सङ्कीर्त्तनरङ्गे ॥५०९
रम मोहन सङ्कीर्त्तनमल्ल बेश ।
खिते सुकृति पाय आनन्द विशेष ॥५१०
मस्तके शोभे बहुविध पट्टवास ।
पुपरि बहुविध माल्येर विलास ॥५११
ठे बहुविध मणि मुक्ता स्वर्णहार ।
तिमूले शोभे मुक्ता काञ्चन अपार ॥५१२
र्णेर अङ्गद वलय शोभे करे ।
जानि कतेक माला शोभे कलेवरे ॥५१३
रोचना चन्दने लेपित सर्व अङ्ग ।
वधि बालगोपालेर प्राय रङ्ग ॥५१४
अपूर्व लौहदण्ड धरेन लीलाय ।
दश अङ्गुलि सुवर्णमुद्रिकाय ॥५१५
ल नील पीत बहुविध पट्टवास ।
म विचित्र परिधानेर विलास ॥५१६
वंशी छड़िका जठरपटे शोभे ।
दरशने ध्याने जग-मन लोभे ॥५१७
त नूपुर मल्ल शोभे श्रीचरणे ।
म मधुर ध्वनि गजेन्द्रगमने ॥५१८

ये दिके चाहेन महाप्रभु नित्यानन्द ।
सेइ दिगे हय कृष्ण रस मूर्त्तिमन्त ॥५१९
हेनमते नित्यानन्द परम कौतुके ।
आछेन चैतन्य जन्मभूमि नवद्वीपे ॥५२०
नवद्वीप येहेन मथुरा राजधानी ।
कत मत लोक आछे अन्त नाहि जानि ॥५२१
हेन सब सुजन आछेन याहा देखि ।
सर्व महापाप हैते मुक्त हय पापी ॥५२२
तार मध्ये दुर्जनो ये कथोकथो वसे ।
सर्व धर्म घुचे तार छायार परशे ॥५२३
ताहाराओ नित्यानन्द प्रभुर कृपाय ।
कृष्ण पथे रत हैल अति अमायाय ॥५२४
आपने चैतन्य कथो करिला मोचन ।
नित्यानन्द द्वारे उद्धारिला त्रिभुवन ॥५२५
चोर दस्यु पतित अधम नाम यार ।
नानामते नित्यानन्द करिला उद्धार ॥५२६
शुनशुन नित्यानन्द प्रभुर आख्यान ।
चोर दस्यु येमते करिला परित्राण ॥५२७
नवद्वीपे वैसे एक ब्राह्मणकुमार ।
ताहार समान चोर दस्यु नाहि आर ॥५२८
यत चोर दस्यु तार महासेनापति ।
नाम से ब्राह्मण, अति परम कुमति ॥५२९
पर बधे दयामात्र नाहिक शरीरे ।
निरन्तर दस्युगण संहति बिहरे ॥५३०
नित्यानन्दस्वरूपेर अङ्गे अलङ्कार ।
सुवर्ण प्रवाल मणि मुक्ता दिव्य हार ॥५३१
प्रभुर श्रीअङ्गे देखि बहुविध धन ।
हरिते हइल दस्युब्राह्मणेर मन ॥५३२
माया करि निरवधि नित्यानन्द सङ्गे ।
भ्रमये ताहार धन हरिबारे रङ्गे ॥५३३

अन्तरे परम दुष्ट विप्र भाल नय ।
जानिलेन नित्यानन्द अन्तर हृदय ॥५३४
हिरण्यपण्डित नामे एक सुब्राह्मण ।
सेइ नवद्वीपे वैसे महा अकिञ्चन ॥५३५
सेइ भाग्यवन्तेर मन्दिरे नित्यानन्द ।
थाकिला बिरले प्रभु हइया असङ्ग ॥५३६
सेइ दुष्ट ब्राह्मण परम दुष्टमति ।
लइया सकल दस्यु करये युगति ॥५३७
आरे भाइ ! सभे आर केने दुःख पाइ ।
चण्डी मा'ये निधि मिलाइल एकठाँइ ॥५३८
एइ अवधूतेर देहेते अलङ्कार ।
सोना मुक्ता हीरा कसा बइ नाइ आर ॥५३९
कत लक्ष टाकार पदार्थ नाहि जानि ।
चण्डी माये एकठाजि मिलाइला आनि ॥५४०
शून्य बाड़ो खाने थाके हिरण्येर घरे ।
काढ़िया आनिब एक दण्डेर भितरे ॥५४१
ढाल खाँड़ा लइ सभे हओ समवाय ।
आज गिया हाना दिब कथोक निशाय ॥५४२
एइमत युक्ति करि सब दस्युगण ।
सभे निशाभाग करि करिल गमन ॥५४३
खाँड़ा छुरि त्रिशूल लइया जनेजने ।
आसिया बेढ़िल नित्यानन्द येइ स्थाने ॥५४४
एकस्थाने रहिया सकल दस्युगण ।
आगे चर पाठाइया दिला एकजन ॥५४५
नित्यानन्दमहाप्रभु करेन भोजन ।
चतुर्दिगे हरिनाम लय भक्तगण ॥५४६
कृष्णानन्दे मत्त नित्यानन्दभृत्यगण ।
केहो करे सिंहनाद केहो बा गर्जन ॥५४७
क्रन्दन करये केहो परानन्दरसे ।
केहो करतालि दिया अट्टअट्ट हासे ॥५४८
है है हाय हाय करे कोनजन ।
कृष्णानन्दे निद्रा नाहि सभेइ चेतन ॥५४९
चर आसि कहिलेक दस्युगणस्थाने ।
भात खाय अवधूत जागे सर्वजने ॥५५०
दस्युगण बोले सभे शुउक खाइया ।
आमराओ वसि सभे हाना दिब गिया ॥५५१
वसिल सकल दस्यु एक वृक्षतले ।
परधन पाइबेक एइ कुतूहले ॥५५२
केहो बोले मोहोर सोणार ताड़ वाला ।
केहो बोले मुञि निमु मुकुतार माला ॥५५३
केहो बोले मुञि निमु कर्ण आभरण ।
छवि सब निमु मुञि बोले कोन जन ॥५५४
केहो बोले मुञि निमु रूपार नूपुर ।
सभे एइ मनकला खाये त प्रचुर ॥५५५
हेनइ समये नित्यानन्देर इच्छाय ।
निद्रा भगवती आसि चापिला सभार ॥५५६
सेइ क्षणे महा घुमाइया दस्युगण ।
सभेइ हइल अति महा अचेतन ॥५५७
निद्राय सकल दस्यु हइल मोहित ।
रात्रि पोहाइल तभु नाहिक सम्वित ॥५५८
काकरबे जागिलेक सब दस्युगण ।
रात्रि नाहि देखि सभे हैल दुःखिमन ॥५५९
आथेव्यथे ढाल खाँड़ा फेलाइया वने ।
सत्वरे चलिल सब दस्यु गङ्गा स्नाने । ५६०
शेषे सब दस्युगण निजस्थाने गेल ।
सभेइ सभारे गालि पाड़िते लागिल ॥५६१
केहो बोले तुइ आगे पड़िलि शुइया ।
केहो वोले तुइ बड़ आछिलि जागिया ॥५६२
दस्युसेनापति ये ब्राह्मण दुराचार ।
से बोलये कलह करह केने आर ॥५६३

ये हइल से हइल चण्डीर इच्छाय।
एकदिन गेले कि सकल दिन याय ॥५६४
बुझिलाम चण्डी आसि मोहिला आपने।
विनि चण्डी पूजाय गेलाम ये कारणे ॥५६५
भाल करि आजि सभे मद्य मांस दिया।
बल सभे एकठाजि चण्डी पूजि गिया ॥५६६
एतेक करिया युक्ति सब दस्युगण।
मद्य मांस दिया सभे करिल पूजन ॥५६७
आरदिन दस्युगण काचि नाना अस्त्र।
पाइलेक वीर छाँदे परि नील बस्त्र ॥५६८
महानिशा सर्वलोक आछये शयने।
इइ समये बेढ़िलेक दस्युगणे ॥५६९
बाड़ीर निकटे थाकि दस्युगण देखे।
चतुर्दिगे अनेक पाइके बाड़ी राखे ॥५७०
चतुर्दिगे अस्त्रधारी पदातिकगण।
निरवधि हरिनाम करेन ग्रहण ॥५७१
परम प्रकाण्ड मुर्त्ति सभेइ उद्दण्ड।
नाना अस्त्रधारी सभे परम प्रचण्ड ॥५७२
र्वदस्युगण देखे तार एकोजने।
शतजनो मारिते पारये सेइक्षणे ॥५७३
भार गलाय माला, सर्वाङ्गे चन्दन।
भारि वदने निरवधि सङ्कीर्त्तन ॥५७४
नित्यानन्दमहाप्रभु आछेन शयने।
चतुर्दिगे कृष्ण गाय सेइ सब जने ॥५७५
दस्युगण देखि बड़ हइल विस्मित।
बाड़ी छाड़ि लड़ि वसिलेन एक-भित ॥५७६
र्वदस्युगणे युक्ति लागिल करिते।
कोथाकार पदातिक आइल एथाते ॥५७७
केहो बोले अवधूत केमते जानिया।
एहार पाइक आनियाछे मागिया॥ ५७८
केहो बोले भाइ! अवधूत बड़ ज्ञानी।
माझेमाझे अनेक लोकेर मुखे शुनि ॥५७९
ज्ञानवान् बड़ अवधूत महाशय।
आपनार रक्षा किबा आपने करय ॥५८०
अन्यथा ये सब देखि पदातिकगण।
मनुष्येर प्राय त ना देखि एक जन ॥५८१
हेन बुझि एइ सब शक्तिर कारणे।
गोसाञि करिया सभे बोलये उहाने ॥५८२
आर केहो बोले तुमि अबुध ये भाइ!
ये खाय ये परे से बा केमते गोसाञि ॥५८३
सकल दस्युर सेनापति ये ब्राह्मण।
से बोलये जानिलाम सकल कारण ॥५८४
यत बड़बड़ लोक चारिदिग हैते।
सभेइ आइसे अवधूतेरे देखिते ॥५८५
कोन दिग् हैते कोन विश्वास नस्कर।
आसियाछे तार पदातिक बहुतर ॥५८६
अतएव पदातिक सकल भावक।
एइ से कारणे हरिहरि करये जप ॥५८७
एबा नहे तोला पदादिक आनि थाके।
तबे कत दिन एड़ाइब एइ पाके ॥५८८
अतएव चल सभे आजि घरे याइ।
चापेचुपे दिन दश थाकि गिया भाइ !५८९
एत बलि सब दस्युगण गेल घरे।
अवधूतचन्द्र प्रभु स्वच्छन्दे बिहरे ॥५९०
नित्यानन्दचरण भजये ये ये जने।
सर्व दुःख खण्डे ताहासभार स्मरणे ॥५९१
हेन नित्यानन्दप्रभु विहरे आपने।
ताहाने करिते विघ्न पारे कोन् जन ॥५९२
अविद्या खण्डये याँर दासेर स्मरणे।
से प्रभुर विघ्न करिबेक कोन् जने ॥५९३

सर्व-गण सह विघ्ननाथ याँर दास ।
याँर अंश रुद्र करे जगत बिनाश ॥५९४
याँर अंश चलिते भुवनकम्प हय ।
हेन प्रभु नित्यानन्द; कारे तान भय ॥५९५
सर्व नवद्वीपे करे स्वच्छन्दे कीर्त्तन ।
स्वच्छन्दे करेन क्रीड़ा भोजन शयन ॥५९६
सर्व अङ्गे सकल अमूल्य अलङ्कार ।
येन देखि बलदेव—नन्देर कुमार ॥५९७
कर्पूर ताम्बूल प्रभु करेन भोजन ।
ईषत हासिया मोहे त्रिजगत मन ॥५९८
अभय परमानन्द बुले सर्वस्थाने ।
अभय परमानन्द भक्तगोष्ठीसने ॥५९९
आरबार युक्ति करि पापी दस्युगणे ।
आइलेक नित्यानन्दप्रभुर भवने ॥६००
दैवे सेइदिने महा मेघे अन्धकार ।
महा घोर निशा नाहि लोकेर सञ्चार ॥६०१
महाभयङ्कर निशाचर दस्युगण ।
दश पाँच अस्त्र एकोजनेर काचन ॥६०२
प्रविष्ट हइल मात्र बाड़ीर भितरे ।
सभे हैल अन्ध केहो देखिते ना पारे ॥६०३
किछु नाहि देखे अन्ध हैल दस्युगण ।
सभेइ हइल हत प्राण बुद्धि मन ॥६०४
केहो गिया पड़े गड़खाइर भितरे ।
जोँके पोके डाँसे तारे कामड़ाइ मारे ॥६०५
उच्छिष्टगर्त्तेते केहोकेहो गिया पड़े ।
तथाओ मरये बिछा पोकेर कामड़े ॥६०६
केहोकेहो पड़े गिया काँटार भितरे ।
गा'ये पा'ये काँटा फुटे नड़िते ना पारे ॥६०७
खालेर भितरे गिया पड़े कोन जन ।
हाथ पा'ओ भाङ्गि करये क्रन्दन ॥६०८
सेइखाने कारोकारो गाये हैल ज्वर ।
सब दस्युगण चिन्ता पाइल अन्तर ॥६०९
हेनइ समये इन्द्र परम कौतुकी ।
करिते लागिला महा झड़ बृष्टि तथि ॥६१०
एके मरे दस्यु जोँक पोकेर कामड़े ।
विशेषे मरये आरो महाबृष्टि झड़े ॥६११
शिलाबृष्टि पड़े सब अङ्गेर उपरे ।
प्राणे नाहि याय भासे दुःखेर सागरे ॥६१२
हेन से पड़ये एको महाझन्‌झना ।
त्रासे मूर्च्छा याय सबे पासरि आपना ॥६१३
महाबृष्ट्ये दस्युगण तिते निरन्तर ।
महाशीते सभार कम्पित कलेवर ॥६१४
अन्ध हइयाछे किछु ना पाय देखिते ।
मरे दस्युगण महा झड़-बृष्टि शीते ॥६१५
नित्यानन्दद्रोहे आसियाछे ए लागिया ।
क्रोधे इन्द्र विशेषे मारेन दुःख दिया ॥६१६
कथोक्षणे दस्युसेनापति ये ब्राह्मण ।
अकस्मात् भाग्ये तार हइल स्मरण ॥६१७
मने भाबे विप्र नित्यानन्द नर नहे ।
सत्य एहो ईश्वर मनुष्ये सत्य कहे ॥६१८
एकदिन मोहिलेन सभारे निद्राय ।
तथापिह ना बुझिलुँ ईश्वर मायाय ॥६१९
आरदिन महाद्भुत पदातिकगण ।
देखाइल तभो मोर नहिल चेतन ॥६२०
योग्य मुञि पापिष्ठेर ए सब दुर्गति ।
हरिते प्रभुर धन येन कैलुँ मति ॥६२१
ए महासङ्कटे मोरे के करिब पार ।
नित्यानन्द बइ मोर गति नाइ आर ॥६२२
एत भाबि विप्र नित्यानन्देर चरण ।
चिन्तिया एकान्तभाबे लइल शरण ॥६२३

से चरण चिन्तिले आपद नाहि आर ।
सेइक्षणे कोटि अपराधीरो निस्तार ॥६२४
कारुण्यशारदा रागेण गीयते ।
रक्ष रक्ष नित्यानन्द श्रीबालगोपाल ।
रक्षा कर प्रभु ! तुमि सर्वजीवपाल ॥६२५
ये जन आछाड़ प्रभु ! पृथिवीते खाय ।
पुनश्च पृथिवी तारे हयेन सहाय ॥६२६
एइमत ये तोमाते अपराध करे ।
शेषे सेहो तोमार स्मरणे दुःख तरे ॥६२७
तुमि से जीवेर क्षम सर्व अपराध ।
पतितजनेरो तुमि करह प्रसाद ॥६२८
तथापि यद्यपि मुञि ब्रह्मघ्न गोबधी ।
मोर बड़ आर प्रभु ! नाहि अपराधी ॥६२९
सर्वमहापातकीओ तोमार शरण ।
लइले खण्डये तार सकल बन्धन ॥६३०
जन्मावधि तुमि से जीवेर राख प्राण ।
अन्तेओ तुमि से प्रभु ! कर परित्राण ॥६३१
ए सङ्कट हैते प्रभु ! कर आजि रक्षा ।
यदि जीङ प्रभु ! तबे हैल एइ शिक्षा ॥६३२
जन्मजन्म प्रभु तुमि मुञि तोर दास ।
किबा जीङ मरोँ एइ हउ मोर आश ॥६३३
कृपामय नित्यानन्दचन्द्र अवतार ।
शुनि करिलेन दस्युगणेर उद्धार ॥६३४
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥६३५

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे श्रीनित्यानन्द-विलास-वर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः।



षष्ठ अध्याय

एइमत चिन्तिते सकल दस्युगण ।
सभार हइल दुइचक्षु विमोचन ॥१
नित्यानन्दस्वरूपेर स्मरण प्रभावे ।
झड़ बृष्टि आर कारो देहे नाहि लागे ॥२
कथोक्षणे पथ देखि सब दस्युगण ।
मृतप्राय हइ सभे करिल गमन ॥३
सभे घर गिया सेइमते दस्युगण ।
गङ्गास्नान करिलेक गिया सेइक्षण ॥४
दस्युसेनापति विप्र कान्दिते कान्दिते ।
नित्यानन्दचरणे आइल सेइमते ॥५
वसिया आछेन नित्यानन्द विश्वनाथ ।
पतितजनेरे करि शुभदृष्टिपात ॥६
चतुर्दिगे भक्तगण करे हरिध्वनि ।
आनन्दे हुङ्कार करे अवधूतमणि ॥७
सेइ महादस्यु विप्र हेनइ समये ।
त्राहि बलि बाहु तुलि दण्डवत हये ॥८
आपादमस्तक पुलकित सर्व अङ्ग ।
निरवधि अश्रुधारा बहे महाकम्प ॥९
हुङ्कार गर्जन निरवधि विप्र करे ।
वाह्य नाहि जाने डुबि आनन्दसागरे ॥१०

नित्यानन्दस्वरूपेर प्रभाव देखिया ।
आपना आपनि नाचे हरषित हैया ।।११
त्राहि बाप नित्यानन्द पतित पावन !
बाहु तुलि एइमत डाके घनेघन ।।१२
देखि हइलेन सभे परम विस्मत ।
"एमत दस्युर केने एमत चरित ।।"१३
केहो बोले माया बा करिया आसियाछे ।
कोनो पाक करिया बा हाना देइ पाछे ।।१४
केहो बोले नित्यानन्द पतितपावन ।
कृपाय बा इहार करिला भाल मन ।।१५
विप्रेर अत्यन्त प्रेमबिकार देखिया ।
जिज्ञासिला नित्यानन्द इषत हासिया ।।१६
प्रभु बोले कह विप्र कि तोमार रीत ।
बड़ त तोमार देखि अद्भुत चरित ।।१७
कि शुनिला कि देखिला कृष्ण अनुभव ।
किछु चिन्ता नाहि अकपटे कह सब ।।१८
शुनिया प्रभुर वाक्य सुकृति ब्राह्मण ।
कहिते ना पारे किछु करये क्रन्दन ।।१९
गड़ागड़ि याय पड़ि सकल अङ्गने ।
हासे कान्दे नाचे गाय आपना आपने ।।२०
सुस्थिर हइया विप्र तबे कथोक्षणे ।
कहिते लागिल सब प्रभुविद्यमाने ।।२१
एइ नवद्वीपे प्रभु वसति आमार ।
नाम से ब्राह्मण व्याध चण्डाल आचार ।।२२
निरन्तर दुष्टसङ्गे करि डाका चुरि ।
परहिंसा बइ जन्मे आर नाहि करि ।।२३
मोरे देखि सर्व नवद्वीप काँपे डरे ।
किबा पाप नाहि हय आमार शरीरे ।।२४
देखिया तोमार अङ्गे दिव्य अलङ्कार ।
ताहा हरिबारे चित्त हइल आमार ।।२५
एकदिन साजि बहु पदातिकगण ।
हरिते आइलुँ मुञि श्रीअङ्गेर धन ।।२६
सेदिन निद्राय प्रभु ! मोहिला सभारे ।
तोमार माथाय नाहि जानिलुँ तोमारे ।।२७
आरदिन नानामते चण्डीका पूजिया ।
आइलाम खाण्डा छुरि त्रिशूल काचिया ।।२८
अद्भुत महिमा देखिलाम सेइदिने ।
सब बाड़ी बेढ़ियाछे पदातिकगणे ।।२९
एको पदातिक येन मत्तहस्तीप्राय ।
आजानुलम्बित माला सभारि गलाय ।।३०
निरवधि हरिध्वनि सभार वदने ।
तुमि आछ एइ गृहे आनन्द शयने ।।३१
हेन से पापिष्ठ चित्त आमा'सभाकार ।
तभु नाहि बुझिलाम महिमा तोमार ।।३२
कार पदातिक आसियाछे कोथा हैते ।
एत भाबि से दिन गेलाम सेइमते ।।३३
तबे आर कथोदिने कालि आइलाम ।
आसियाइ मात्र दुइ चक्षु खाइलाम ।।३४
बाड़ीते प्रविष्ट हइ सब दस्युगणे ।
अन्ध हइ सभे पड़िलाम नानास्थाने ।।३५
काँटा जोँक पोक झड़बृष्टि शिलापाते ।
सभे मरि कारो शक्ति नाहिक याइते ।।३६
महा-यमयातना हइल यदि भोग ।
तबे शेषे सभार हइल भक्तियोग ।।३७
तोमार कृपाय सभे तोमार चरण ।
करिल एकान्तभावे सभेइ स्मरण ।।३८
तबे हैल सभार लोचन बिमोचन ।
हेन महाप्रभु तुमि पतित पावन ।।३९
आमि सब एड़ाइलुँ ए सब यातना ।
ए तोमार स्मरणेर कोन् बा महिमा ।।४०

याँहार स्मरणे खण्डे अविद्याबन्धन ।
अनायासे चलि याय वैकुण्ठभुवन ॥४१
कहिते कहिते विप्र कान्दे उभ-रा'य ।
हेन कृपा करे प्रभु अवधूतराय ॥४२
शुनिया सभार हैल महाश्चर्य ज्ञान ।
ब्राह्मणेर प्रति सभे करेन प्रणाम ॥४३
विप्र बोले प्रभु ! मुञि हइलुँ बिदाय ।
ए देह राखिते मोरे आर ना जुयाय ॥४४
येन मोर चित्त हैल तोमार हिंसाय ।
एइ मोर प्रायश्चित्त मरिमु गङ्गाय ॥४५
शुनि अति अकैतव विप्रेर वचन ।
तुष्ट हइलेन प्रभु, सर्वभक्तगण ॥४६
प्रभु बोले विप्र तुमि ! भाग्यवन्त बड़ ।
जन्मजन्म कृष्णेर सेवक तुमि दढ़ ॥४७
नहिले एमत कृपा करिबेन केने ।
ए प्रकाश अन्ये कि देखये भृत्य विने ॥४८
पतित पावन हेतु चैतन्यगोसाञि ।
अवतरि आछेन इहाते अन्य नाञि ॥४९
शुन विप्र यतेक पातक कैला तुमि ।
आर यदि ना कर सब निलुँ आमि ॥५०
परहिंसा डाका चुरि सब अनाचार ।
छाड़ गिया सब तुमि ना करिह आर ॥५१
धर्मपथे गिया तुमि लह हरिनाम ।
तबे तुमि अन्येरे करिबा परित्राण ॥५२
यत चोर दस्यु सब डाकिया आनिया ।
धर्मपथ सभारे लओयाओ तुमि गिया ॥५३
एत बलि आपन गलार माला आनि ।
तुष्ट हइ ब्राह्मणेरे दिलेन आपनि ॥५४
महा जयजय ध्वनि हइल तखन ।
विप्रेर हइल सर्वबन्धबिमोचन ॥५५

काकु करे विप्र प्रभुचरणे धरिया ।
क्रन्दन करये अति डाकिया डाकिया ॥५६
अरे प्रभु नित्यानन्द पातकीतारण !
मुञि पातकीरे देओ चरणे शरण ॥५७
तोमार हिंसाय से हइल मोर मति ।
मुञि पापिष्ठेर कोन् लोके हैव गति ॥५८
नित्यानन्दमहाप्रभु करुणासागर ।
पादपद्म दिला तार मस्तक उपर ॥५९
चरणारविन्द पाइ मस्तके प्रसाद ।
ब्राह्मणेर खण्डिल सकल अपराध ॥६०
सेइ विप्र द्वारे यत चोर दस्युगण ।
धर्मपथ लइलेन चैतन्यशरण ॥६१
डाका चुरि परहिंसा छाड़ि अनाचार ।
सभेइ हइल अति साधु व्यवहार ॥६२
सभेइ लयेन हरिनाम लक्षलक्ष ।
सभे हइलेन विष्णुभक्तियोग्यदक्ष ॥६३
अन्य अवतारे केहो भाट नाहि पाय ।
निरवधि नित्यानन्द चैतन्य लओयाय ॥६४
ये ब्राह्मण नित्यानन्दस्वरूप ना माने ।
ताहारे लओयाय सेइ चोर दस्युगणे ॥६५
योगेश्वर सभे बाञ्छेन ये प्रेमबिकार ।
ये अश्रु ये कम्प ये बा पुलक हुङ्कार ॥६६
घोर डाकाइतेर हैल सेइ भक्ति ।
हेन प्रभु नित्यानन्दस्वरूपेर शक्ति ॥६७
भजभज भाइ ! हेन प्रभु नित्यानन्द ।
याँहार प्रसादे पाइ प्रभु गौरचन्द्र ॥६८
ये शुनये नित्यानन्दप्रभुर आख्यान ।
ताहारे मिलिब गौरचन्द्र भगवान् ॥६९
दस्युगणमोचन ये चित्त दिया शुने ।
नित्यानन्द चैतन्य देखिब सेइ जने ॥७०

हेनमते नित्यानन्द परम कौतुके ।
बिहरेन अभय परानन्द सुखे ॥७१
तबे नित्यानन्द सब पारिषद सङ्गे ।
प्रति ग्रामेग्रामे भ्रमे सङ्कीर्त्तनरङ्गे ॥७२
खानायोड़ा आर बड़गाछि दोगाछिया ।
गङ्गार ओपार कभु यायेन कुलिया ७३
विशेषे सुकृति अति बड़गाछिग्राम ।
नित्यानन्दस्वरूपेर बिहारेर स्थान ॥७४
बड़गाछिग्रामेर यतेक भाग्योदय ।
ताहा कभु कहिते ना पारि समुच्चय ॥७५
नित्यानन्दस्वरूपेर पारिषदगण ।
निरवधि सभेइ परानन्द मन ॥७६
कारो कोनो कर्म नाहि सङ्कीर्त्तन विने ।
सभार गोपालभाब बाढ़े क्षणेक्षणे ॥७७
येइ वंशी शिङ्गा छाँददड़ि गुञ्जाहार ।
ताड़ खाड़ु हाथे पाये नूपुर सभार ॥७८
निरवधि सभार शरीरे कृष्णभाब ।
अश्रु कम्प पुलक यतेक अनुराग ॥७९
सभार सौन्दर्य्य येन अभिन्न मदन ।
निरवधि सभेइ करेन सङ्कीर्त्तन ॥८०
पाइया अभय स्वामी प्रभु नित्यानन्द ।
निरवधि कौतुके थाकेन भक्तवृन्द ॥८१
नित्यानन्दस्वरूपेर दासेर महिमा ।
शत बर्ष यदि कहि तभु नहे सीमा ॥८२
तथापि नाम कहि जानि याँरयाँर ।
नाम मात्र स्मरणेओ तरिये संसार ॥८३
याँरयाँर सङ्गे नित्यानन्देर बिहार ।
सभे नन्दगोष्ठी गोप गोपी अवतार ॥८४
नित्यानन्दस्वरूपेर निषेद लागिया ।
पूर्व नाम ना लिखिल विदित करिया ॥८५

परम पार्षद रामदास महाशय ।
निरवधि ईश्वरभावे से कथा कय ॥८६
याँर वाक्य केहो झाट ना पारे बुझिते ।
निरवधि नित्यानन्द याँर हृदयेते ॥८७
सभार अधिक भावग्रस्त रामदास ।
तान देहे कृष्ण आछिलेन तिनमास ॥८८
प्रसिद्ध चैतन्यदास मुरारिपण्डित ।
याँर खेला महासर्प व्याघ्रेर सहित ॥८९
रघुनाथ वैद्य-उपाध्याय महामति ।
याँर दृष्टिपाते कृष्णे हय रति मति ॥९०
प्रेमभक्ति रसमय गदाधरदास ।
याँर दरशन मात्र सर्व पाप नाश ॥९१
प्रेमरस समुद्र सुन्दरानन्द नाम ।
नित्यानन्दस्वरूपेर पार्षद प्रधान ॥९२
पण्डित कमलाकान्त परम उद्दाम ।
याँहारे दिलेन नित्यानन्द सप्तग्राम ॥९३
गौरीदासपण्डित परमभाग्यवान् ।
कायमनोवाक्ये नित्यानन्द याँर प्राण ॥९४
बड़गाछिनिवासी सुकृति कृष्णदास ।
याँहार मन्दिरे नित्यानन्देर विलास ॥९५
पुरन्दरपण्डित परम शान्त दान्त ।
नित्यानन्दस्यरूपेर वल्लभ एकान्त ॥९६
नित्यानन्दजीवन परमेश्वरदास ।
याँहार विग्रहे नित्यानन्देर विलास ॥९७
धनञ्जय पण्डित महान्त विलक्षण ।
याहार हृदये नित्यानन्द अनुक्षण ॥९८
प्रेमरसे महामत्त बलरामदास ।
याहार वातासे सब पाप याय नाश ॥९९
यदुनाथ कविचन्द्र प्रेमरसमय ।
निरवधि नित्यानन्द याँहार हृदय ॥१००

जगदीशपण्डित परमज्योतिर्धाम।
सपार्षदे नित्यानन्द याँर धन प्राण ॥१०१
पण्डित पुरुषोत्तम नवद्वीपे जन्म।
नित्यानन्दस्वरूपेर महा भृत्य मर्म ॥१०२
पूर्वे याँर घरे नित्यानन्देर वसति।
याँहार प्रसादे हय नित्यानन्देर मति ॥१०३
राढ़े जन्म महाशय विप्रकृष्णदास।
नित्यानन्दपारिषदे याँहार विलास ॥१०४
प्रसिद्ध कालिया कृष्णदास त्रिभुवने।
गौरचन्द्र लभ्य हय याँहार स्मरणे ॥१०५
सदाशिवकविराज महाभाग्यवान्।
याँर पुत्र श्रीपुरुषोत्तमदास नाम ॥१०६
वाह्य नाहि पुरुषोत्तमदासेर शरीरे।
नित्यानन्दचन्द्र याँर हृदये बिहरे ॥१०७
उद्धारणदत्त महावैष्णव उदार।
नित्यानन्दसेवाय याँहार अधिकार ॥१०८
महेशपण्डित अति परम महान्त।
परमानन्द उपाध्याय वैष्णव एकान्त ॥१०९
चतुर्भुजपण्डित नन्दन गङ्गादास।
पूर्वे यार घरे नित्यानन्देर विलास ॥११०
आचार्य्य वैष्णवानन्द परम उदार।
पूर्व रघुनाथपुरी नाम ख्याति यार ॥१११
प्रसिद्ध परमानन्दगुप्त महाशय।
पूर्वे याँर घरे नित्यानन्देर आलय ॥११२
कृष्णदास देवानन्द दुइ शुद्धमति।
महान्त आचार्य्य-चन्द्र नित्यानन्दगति ॥११३
गायन माधवानन्दघोष महाशय।
वासुदेवघोष अति प्रेमरसमय ॥११४
महाभाग्यवन्त जीवपण्डित उदार।
याँर घरे नित्यानन्दचन्द्रेर बिहार ॥११५
नित्यानन्दप्रिय मनोहर नारायण।
कृष्णदास देवानन्द एइ चारिजन ॥११६
यत भृत्य नित्यानन्दचन्द्रेर सहिते।
शत वत्सरेओ ताहा ना पारि लिखिते ॥११७
सहस्रसहस्र एको सेवकेर गण।
नित्यानन्दप्रसादे ताँराओ गुरु-सम ॥११८
श्रीचैतन्यरसे सभे परम उद्दाम।
सभार चैतन्य नित्यानन्द धनप्राण ॥११९
किछुमात्र आमि लिखिलाम जानि याँरे।
सकल विदित हैब वेदव्यास द्वारे ॥१२०
सर्वशेष भृत्य तान वृन्दावनदास।
अवशेषपात्र नारायणी गर्भजात ॥१२१
अद्यापिह वैष्णवमण्डले याँर ध्वनि।
चैतन्येर अवशेषपात्र नारायणी ॥१२२
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१२३

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे श्रीमन्नित्यानन्दचरित्रवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः।



सप्तम अध्याय

जयजय श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द !
जय हउ यत तोमार चरणेर भृङ्ग ॥१
हेनमते महाप्रभु नित्यानन्दचन्द्र ।
सर्व-दास सङ्गे करे कीर्त्तन आनन्द ॥२
वृन्दावनमध्ये येन करिलेन लीला ।
सेइमत नित्यानन्दस्वरूपेर खेला ॥३
अकैतवरूपे सर्वजगतेर प्रति ।
लओयायेन श्रीकृष्णचैतन्ये रति मति ॥४
सङ्गे पारिषदगण परम उद्दाम ।
सर्वनवद्वीपे भ्रमे महाज्योतिर्धाम ॥५
अलङ्कार मालाय पूर्णित कलेवर ।
कर्पूर ताम्बूल शोभे सुरङ्ग अधर ॥६
देखि नित्यानन्दमहाप्रभुर विलास ।
केहो सुख पाय कारो ना जन्मे विश्वास ॥७

जयजय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयजय प्रभुर यतेक भक्तवृन्द ॥
पतितपावन वारण नित्यानन्द प्रभु ।
ताँहार चरण बिनु ना सेविह कभु ॥
अतिशय मूर्ख जन ना जाने महिमा ।
बोले अन्य बोल सेइ पापिष्ठेर सीमा ॥
जय नित्यानन्द चैतन्येर प्रियतम ।
त्रिजगते आर केहो नाहि तोमा सम ॥
आनन्दकन्द महाप्रभु प्रेमभक्तिदाता ।
ये सेवये से-इ भक्ति पाये त सर्वथा ॥
सकल जीवेर प्रभु ! करिला प्रसाद ।
क्षेमिला सकल महा महा अपराध ॥
श्रीकृष्णचैतन्यदेव नित्यानन्द नाम ।
पृथिवीर भाग्य अवतारि अनुपाम ॥
आर कि कहिब कथा भाग्येर अवधि ।
श्रीचैतन्य नित्यानन्द महागुणनिधि ॥

अभिमान दुरन्त तथि ना पाइ कृष्णे रति ।
इहा जानि नित्यानन्दे करह भकति ॥
याहार प्रसादे पामर पाइल निस्तार ।
हेन प्रभु नाम हार हउक गलार ॥
जयजय नित्यानन्द प्रेममय रूप धाम ।
स्वभावे परम शुद्ध नित्यादन्द नाम ॥
जगत तारण हेतु याँर अवतार ।
ये जन ना भजे से-इ पापेर आकर ॥
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द एक देह ।
इहाते निश्चय करि कर एक नेह ॥
परानन्दमय दुँहु मुरति रसाल ।
निताइ चैतन्यप्रभु श्रीराम गोपाल ॥
इहाते करए भिन्न अति बुद्धिहीन ।
आर ना देखिये तार विष्णुभक्ति चिह्न ॥
जयजय शचीसुत आनन्द बिहार ।
पतितपावन नाम विदित याहार ॥
निज नाम दिया जीव निस्तार करिल ।
हेन दयामय प्रभु भजिते नारिल ॥
काय वाक्य मने मोर प्रभुर शरण ।
मोर बड़ पतित नाहिक त्रिभुवन ॥
जयजय गौरचन्द्र भुवनसुन्दर ।
प्रकाशह पद मोर हृदय भितर ॥
यतयत बिहार करिला गौड़देशे ।
सकल प्रकाश मोर हउक विशेषे ॥
जयजय लक्ष्मीकान्त त्रिभुवननाथ ।
चरणे शरण मोर हउक एकान्त ॥
आर अवतार कहि नानाविध धर्म ।
केबल कहिब एबे प्रेमभक्तिमर्म ॥
इहाते याहार मति नहिल आनन्द ।
ताहारेइ जानिह पापिष्ठ महा अन्ध ॥

सेइ नवद्वीपे एक आछेन ब्राह्मण ।
चैतन्येर सङ्गे तान पूर्व अध्ययन ॥८
नित्यानन्दस्वरूपे देखिया विलास ।
चित्ते तान किछु जन्मियाछे अविश्वास ॥९
चैतन्यचन्द्रेते तान बड़ दृढ़ भक्ति ।
नित्यानन्दस्वरूपेर ना जानेन शक्ति ॥१०
दैवे सेइ ब्राह्मण गेलेन नीलाचले ।
तथाइ आछेन कथोदिन कुतूहले ॥११
प्रतिदिन याय विप्र चैतन्येर स्थाने ।
परम विश्वास तान प्रभुर चरणे ॥१२
दैवे एकदिन सेइ ब्राह्मण निभृते ।
चित्ते इच्छा करिलेन किछु जिज्ञासिते ॥१३
विप्र बोले प्रभु ! मोर एक निवेदन ।
करिमु तोमार स्थाने, यदि देह मन ॥१४
नवद्वीपे गिया नित्यानन्द अवधूत ।
किछु त ना बुझों मुञि करेन कि रूप ॥१५
सन्न्यास आश्रम तान बोले सर्वजन ।
कर्पूर ताम्बूल से भक्षण अनुक्षण ॥१६
धातुद्रव्य परशिते नाहि सन्न्यासीरे ।
सोना रूपा मुक्ता से सकल कलेवरे ॥१७
काषाय कौपीन छाड़ि दिव्य पट्टवास ।
धरेन चन्दन माला सदाइ विलास ॥१८
दण्ड छाड़ि लौहदण्ड धरेन वा केने ।
शूद्रेर आश्रमे से थाकेन सर्वक्षणे ॥१९
शास्त्र मत मुञि तान ना देखों आचार ।
एतेके मोहोर चित्ते सन्देह अपार ॥२०
'बड़ लोक' बलि ताँरे बोले सर्वजने ।
तथापि आश्रमाचार ना करेन केने ॥२१
यदि मोरे भृत्य हेन ज्ञान थाके मने ।
कि मर्म इहार प्रभु ! कह श्रीवदने ॥२२
सुकृति ब्राह्मण प्रश्न कैल शुभक्षणे ।
अमायाय प्रभु तत्त्व कहिलेन ताने ॥२३
शुनिया विप्रेर वाक्य गौराङ्गसुन्दर ।
हासिया विप्रेर प्रति करिला उत्तर ॥२४
शुन विप्र यदि महा अधिकारी हय ।
तवे तान गुण दोष किछु ना जन्मय ॥२५

तथाहि (भा० ११।२०।३६)—

न मय्येकान्तभक्तानां गुणदोषोद्भवा गुणाः ।
साधूनां समचित्तानां बुद्धेः परमुपेयुषाम् ॥२६

टीका ।

अनेन प्रकारेण सिद्धानां न गुणदोष इति विरोधपरिहारमुपसंहरति न मयीति । गुणदोषैर्विहितप्रतिषिद्धैरुद्भवो येषां ते गुणाः पुण्यपापादयः । साधूनां निरस्तरागादीनामतः समचित्तानामत एव बुद्धेः परमीश्वरं प्राप्तानाम् । इति श्रीधरः ।

अनुवाद ।

मुझ में एकान्तभक्ति करने पर जिनकी सिद्धि हुइ है, वे सब समचित्त साधुवृन्द बुद्धि का अगोचर ईश्वर को प्राप्त करते हैं, उनसब के सहित पाप पुण्योद्भव गुणदोष का सम्पर्क भी नहीं है ।

पद्मपत्रे कभु येन ना लागये जल ।
एइमत नित्यानन्दस्वरूप निर्मल ॥२७
परमार्थे कृष्णचन्द्र ताहान शरीरे ।
निश्चय जानिह विप्र ! सर्वदा बिहरे ॥२८
अधिकारी बइ करे ताहार आचार ।
दुःख पाय सेइ जन पाप जन्मे तार ॥२९
रुद्र विने अन्ये यदि करे बिष पान ।
सर्वथाय मरे सर्वपुराण प्रमाण ॥३०

तथाहि (भा० १०।३३।३०;२९)—

"नैतत् समाचरेज्जातु मनसापि ह्यनीश्वरः।
विनश्यत्याचरन्मौढ्याद् यथाऽरुद्रोऽब्धिजं विषम् ॥"३१

टीका।

तर्हि यद् यदाचरति श्रेष्ठ इति न्यायेनान्योऽपि कुर्यादित्याशङ्क्याह नैतदिति। अनीश्वरः देहादि-परतन्त्रः। यद्वा रुद्रव्यतिरिक्तो विषमाचरन् भक्षयन्। इति श्रीधरः।

अनुवाद।

अनीश्वर व्यक्ति कभी भी मन के द्वारा भी अनुष्टान न करे, मूढ़तावशतः अनुष्ठान करने पर समुद्रोत्थित बिष पान से शिव भिन्न अपर की जिस प्रकार सद्य मृत्यु होती है, उस प्रकार नाश सुनिश्चित अवश्यम्भावी है।

धर्मव्यतिक्रमो दृष्ट ईश्वराणाञ्च साहसम्।
तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा ॥३२

टीका।

परमेश्वरं कैमुतिकन्यायेन परिहर्त्तुं सामान्यतो महतां वृत्तमाह धर्मव्यतिक्रम इति। साहसञ्च दृष्टं प्रजापतीन्द्रसोमविश्वामित्रादीनां तच्च तेषां तेजस्विनां दोषाय न भवतीति। इति श्रीधरः।

अनुवाद।

ईश्वरों में जो धर्मव्यतिक्रम एवं साहस परिलक्षित होते हैं, वे सब सर्वभुक् अग्नि के समान हैं, अर्थात् तेजस्विव्यक्ति के पक्ष में उक्त आचरण दोषावह नहीं है।

एतेके ये ना जानिया निन्दे तान कर्म।
निज दोषे से-इ दुःख पाय जन्मजन्म ॥३३
गर्हितो करये यदि महा अधिकारी।
निन्दार कि दाय ताँरे हासिलेइ मरि ॥३४
भागवत हइते ए सब तत्त्व जानि।
ताहो यदि वैष्णव गुरुर मुखे शुनि ॥३५
महान्तेर आचरणे हासिले ये हय।
चित्त दिया शुन भागवते येइ कय ॥३६
एककाले राम-कृष्ण गेलेन पढ़िते।
विद्या पूर्ण करि चित्त करिला आसिते ॥३७
कि दक्षिणा दिब ? बलिलेन गुरुप्रति।
तबे पत्नीसङ्गे गुरु करिला युगति ॥३८
मृत पुत्र मागिलेन राम-कृष्ण स्थाने।
तबे राम-कृष्ण गेला यमेर सदने ॥३९
आज्ञाय शिशुर सर्वकर्म घुचाइया।
यमालय हैते पुत्र दिलेन आनिया ॥४०
परम अद्भुत शुनि ए सब आख्यान।
देवकीओ मागिलेन मृत पुत्र दान ॥४१
दैवे एकदिन राम-कृष्ण सम्बोधिया।
कहेन देवकी अति कातर हइया ॥४२
शुनशुन राम कृष्ण योगेश्वरेश्वर!
तुमि दुइ आदि नित्य शुद्ध कलेवर ॥४३
सर्वजगतेर पिता तुमि दुइ जन।
मुञि जानों तुमि दुइ परम कारण ॥४४
जगतेर उत्पत्ति स्थिति बा प्रलय।
याहार अंशेर अंश हैते सर्व हय ॥४५
तथापिह पृथिवीर खण्डाइते भार।
हइयाछ मोर पुत्ररूपे अवतार ॥४६
यम घर हैते येन गुरुर नन्दन।
आनिया दक्षिणा दिला तुमि दुइजन ॥४७
मोर छय पुत्र ये मरिल कंस हैते।
बड़ चित्त मोर ताहा सभारे देखिते ॥४८
कत काल गुरुपुत्र आछिल मरिया।
ताहा येन आनि दिला शक्ति प्रकाशिया ॥४९

एइमत आमारेओ कर पूर्णकाम ।
आनि देह मोरे मृत छय पुत्र दान ॥५०
शुनि जननीर वाक्य कृष्ण सङ्कर्षण ।
सेइ क्षणे चलि गेला बलिर भवन ॥५१
निज इष्टदेव देखि बलि महाराज ।
मग्न हइलेन प्रेमानन्दसिन्धुमाझ ॥५२
देह गेह पुत्र वित्त सकल बान्धब ।
सेइ क्षणे पादपद्मे आनि दिला सब ॥५३
लोमहर्ष अश्रुपात पुलक आनन्दे ।
स्तुति करे पादपद्म धरि बलि कान्दे ॥५४
जयजय प्रकट अनन्त सङ्कर्षण ।
जयजय कृष्णचन्द्र गोकुलभूषण ॥५५
जय सख्य गोपाचार्य्य हलधर राम ।
जयजय कृष्णचन्द्र भक्तमनस्काम ॥५६
यद्यपिह शुद्धसत्त्व देवऋषिगण ।
ताँ'सभारो दुर्ल्लभ तोमार दरशन ॥५७
तथापि हेन से प्रभु ! करुणा तोमार ।
तमोगुण असुररे हओ साक्षात्कार ॥५८
अतएव शत्रु मित्र नाहिक तोमाते ।
वेदेओ कहेन इहा देखिओ साक्षाते ॥५९
मारिते ये आइला लइया बिषस्तन ।
ताहारेओ पाठाइला वैकुण्ठभुवन ॥६०
अतएव तोमार हृदय बुझिबारे ।
वेदे शास्त्रे योगेश्वर सभेओ ना पारे ॥६१
योगेश्वर सब यार माया नाहि जाने ।
मुञि पापी असुर बा जानिब केमने ॥६२
एइ कृपा कर मोरे सर्वलोकनाथ !
गृह अन्धकूपे मोर नहु आत्म पात ॥६३
तोमार दुइ पादपद्म हृदये भाबिया ।
शान्त हइ बृक्षमूले पड़ि थाकों गिया ॥६४
तोमार दासेर मेले मोर कर दास ।
आर येन चित्ते मोर किछु नहे आश ॥६५
राम कृष्ण पादपद्म धरिया हृदय ।
एइमत स्तुति करे बलि महाशय ॥६६
ब्रह्मलोक शिवलोक ये चरणोदके ।
पवित्र करितेछेन भागीरथीरूपे ॥६७
हेन पुण्य जल बलि गोष्ठीर सहिते ।
पान करे शिरे धरे भाग्योदय हैते ॥६८
गन्ध पुष्प धूप दीप बस्त्र अलङ्कार ।
पादपद्मे दिया बलि करे नमस्कार ॥६९
आज्ञा कर प्रभु मोरे शिखाओ आपने ।
यदि मोरे भृत्य हेन ज्ञान थाके मने ॥७०
ये करये प्रभु ! आज्ञा पालन तोमार ।
सेइ जन हय विधि निषेधेर पार ॥७१
शुनिया बलिर वाक्य प्रभु तुष्ट हैला ।
ये निमित्त आगमन कहिते लागिला ॥७२
प्रभु बोले शुनशुन बलि महाशय !
ये निमित्त आइलाम तोमार आलय ॥७३
आमार मा'येर छय पुत्र पापी कंसे ।
मारिलेक सेइ पापे सेहो मैल शेषे ॥७४
निरवधि सेइ पुत्रशोक स्मङरिया ।
कान्देन देवकी देवी दुःखिता हइया ॥७५
तोमार निकटे आछे सेइ छयजन ।
ताहा निब जननीर सन्तोषकारण ॥७६
से सब ब्रह्मार पौत्र सिद्ध देवगण ।
ता'सभार एत दुःख शुन ये कारण ॥७७
प्रजापति मरीचि ये ब्रह्मार नन्दन ।
पूर्वे तान पुत्र छिल एइ छयजन ॥७८
दैवे ब्रह्मा कामशरे हइया मोहित ।
लज्जा छाड़ि कन्या प्रति करिलेन चित ॥७९

ताहा देखि हासिलेन एइ छयजन।
सेइ दोषे अधःपात हैल सेइक्षण ॥८०
महान्तेर कर्म्मेते करिला उपहास।
असुरयोनिते पाइलेन गर्भवास ॥८१
हिरण्यकशिपु जगतेर द्रोह करे।
देव देह छाड़िया जन्मिला तार घरे ॥८२
तथाय इन्द्रेर वज्राघाते छयजन।
नाना दुःख यातनाय पाइल मरण ॥८३
तबे योगमाया धरि आनि आरबार।
देवकीर गर्भे निया करिला सञ्चार ॥८४
ब्रह्मारे ये हासिलेन सेइ पाप हैते।
सेही देहे दुःख पाइलेन नानामते ॥८५
जन्म हैते अशेष प्रकार यातनाय।
भागिना तथापि मारिलेन कंस-राय ॥८६
देवकी ए सब गुप्त रहस्य ना जानि।
ता'सभारे कान्देन आपन पुत्र मानि ॥८७
सेइ छयपुत्र जननीरे दिब दान।
एइ कार्य्य लागि आइलाम तोमा'स्थान ॥८८
देवकीर स्तनपाने सेइ छयजन।
शाप हैते मुक्त हइबेन सेइक्षण ॥८९
प्रभु बोले शुनशुन बलि महाशय!
वैष्णवेर कर्म्मेते हासिले हेन हय ॥९०
सिद्ध सबो पाइलेन एतेक यातना।
असिद्ध जनेर दुःख कि कहिब सीमा ॥९१
ये दुष्कृति जन वैष्णवेर निन्दा करे।
जन्मजन्म निरवधि से-इ दुःखे मरे ॥९२
शुन बलि! एइ शिक्षा कराइ तोमारे।
कभु जानि निन्दा हास्य कर वैष्णवेरे ॥९३
मोर पूजा मोर नामग्रहण ये करे।
मोर भक्त निन्दे यदि तारो विघ्न धरे ॥९४
मोर भक्तप्रति प्रेमभक्ति करे ये।
निःसंशय निःसंशय मोरे पाय से ॥९५

तथाहि (वराहपुराणे)—

सिद्धिर्भवति वा नेति संशयोऽच्युतसेविनाम्।
निःसंशयस्तु तद्भक्तपरिचर्य्यारतात्मनाम् ॥९६

अनुवाद।

अच्युत सेवी व्यक्तिगण की इष्ट सिद्धि होगी अथवा नहीं इस में संशय विद्यमान है। किन्तु भगवद्भक्त परिचर्य्या से सिद्धिलाभ निःसन्दिग्ध है।

मोर भक्त ना पूजे मोहोरे पूजे मात्र।
से दाम्भिक नहे मोर प्रसादेर पात्र ॥९७

तथाहि (श्रीहरिभक्तिसुधोदये १३।७६)—

अभ्यर्च्चयित्वा गोविन्दं तदीयान्नार्च्चयन्ति ये।
न ते विष्णुप्रसादस्य भाजनं दाम्भिका जनाः ॥ ९८

टीका।

अभीति। ये गोविन्दम्, अभि—सर्वतोभावेन, अर्च्चयित्वा—पूजयित्वा, तदीयान्—गोविन्दभक्तान्, न अर्च्चयन्ति, ते जनाः विष्णोः, प्रसादस्य—अनुग्रहस्य, भाजनं न, परन्तु, दाम्भिकाः—छलिनः विष्णुवञ्चका इत्यर्थः।

अनुवाद।

श्रीगोविन्द देव की अर्च्चना करने के पश्चात् श्रीगोविन्द चरणाश्रित भक्तवृन्द की अर्चना न करने पर श्रीविष्णु का अनुग्रहभाजन होने की सम्भावना नहीं है। कारण वे सब दाम्भिक होते हैं।

तुमि बलि! मोर प्रियसेवक सर्वथा।
अतएव तोमारे कहिलु गोप्य कथा ॥९९
शुनिया प्रभुर शिक्षा बलि महाशय।
अत्यन्त आनन्दयुक्त हइला हृदय ॥१००
सेइ क्षणे छय शिशु आज्ञा शिरे धरि।
सम्मुखे दिलेन आनि पुरस्कार करि ॥१०१

तबे राम-कृष्ण प्रभु लइ छयजन ।
जननीरे आनिया दिलेन सेइ क्षण ॥१०२
मृत पुत्र देखिया देवकी सेइ क्षणे ।
स्नेहे स्तन सभारे दिलेन हर्षमने ॥१०३
ईश्वरेर अवशेष स्तन करि पान ।
सेइ क्षणे सभार हइल दिव्य ज्ञान ॥१०४
दण्डवत हइ सभे ईश्वर चरणे ।
पड़िलेन साक्षाते देखिल सर्वजने ॥१०५
तबे प्रभु कृपादृष्ट्ये सभारे चाहिया ।
शिखाइते लागिलेन सदय हइया ॥१०६
चल चल देवगण ! याह निज वास ।
महान्तेरे आर पाछे कर उपहास ॥१०७
ईश्वरेर शक्ति ब्रह्मा ईश्वर समान ।
मन्द कर्म करिलेओ मन्द नहे तान ॥१०८
ताहाने हासिया एत पाइले यातना ।
हेन बुद्धि नहु आर करिह कामना ॥१०९
ब्रह्मास्थाने याइ मागि लह अपराध ।
तबे सभे चित्ते पुत्र पाइबे प्रसाद ॥११०
ईश्वरेर आज्ञा शुनि सर्व देवगण ।
परम आदरे आज्ञा करिला ग्रहण ॥१११
पिता माता राम-कृष्ण पा'ये नमस्करि ।
चलिलेन सर्वदेवगण निजपुरि ॥११२
कहिलाम एइ विप्र ! भागवत कथा ।
नित्यानन्द प्रति द्विधा छाड़ह सर्वथा ॥११३
नित्यानन्दस्वरूप—परम अधिकारी ।
अल्पभाग्ये ताहाने जानिते नाहि पारि ॥११४
अलौकिकचेष्टा ये बा किछु देख तान ।
ताहातेओ आदर करिले पाइ त्राण ॥११५
पतितेर त्राण लागि ताँर अवतार ।
ताँहा हैते सर्वजीव पाइब उद्धार ॥११६
ताँहार आचार विधि निषेधेर पार ।
ताँहारे बुझिते शक्ति आछये काहार ॥११७
ना बुझिया निन्दे ताँर चरित अगाध ।
पाइयाओ विष्णुभक्ति तार हय बाध ॥११८
चल विप्र ! तुमि शीघ्र नवद्वीपे याओ ।
एइ कथा गिया तुमि सभारे बुझाओ ॥११९
पाछे ताँरे केहो कोनो रूप निन्दा करे ।
तबे आर रक्षा तार नाहि यम घरे ॥१२०
ये ताँहारे प्रीत करे से करे आमारे ।
सत्यसत्य विप्र ! एइ कहिल तोमारे ॥१२१
मदिरा यवनी यदि नित्यानन्द धरे ।
तथापि ब्रह्मार बन्द्य कहिल तोमारे ॥१२२

तथाहि श्रीमुखकृत-शिक्षाश्लोकः—

गृह्णीयाद् यवनीपाणीं विशेद्वा शौण्डिकालयम् ।
तथापि ब्रह्मणो बन्द्यं नित्यानन्दपदाम्बुजम् ॥१२३

अनुवाद ।

यवनी का पाणि ग्रहण करें, अथवा शौण्डिकालय गमन करें तथापि श्रीनित्यानन्द पदाम्बुज बन्द्यनीय हैं ।

शुनिया प्रभुर बाक्य सेइ सु ब्राह्मण ।
परम आनन्द-युक्त हइलेन मन ॥१२४
नित्यानन्द प्रति बड़ जन्मिल विश्वास ।
तबे आइलेन नवद्वीप निज वास ॥१२५
सेइ भाग्यवन्त विप्र आसि नवद्वीपे ।
सर्वाद्ये आइला नित्यानन्देर समीपे ॥१२६
अकैतवे कहिलेन निज अपराध ।
प्रभुओ शुनिया ताँरे करिला प्रसाद ॥१२७
हेन नित्यानन्दस्वरूपेर व्यवहार ।
वेदगुह्य लोकवाह्य याँहार आचार ॥१२८

परमार्थे नित्यानन्द परम योगेन्द्र ।
याँरे कहि आदिदेव धरणीधरेन्द्र ॥१२९
सहस्रवदन नित्य शुद्ध कलेवर ।
चैतन्येर कृपा विनु जानिते दुष्कर ॥१३०
केहो बोले नित्यानन्द येन बलराम ।
केहो बोले चैतन्येर बड़ प्रियधाम ॥१३१
केहो बोले महातेजी अंश अधिकारी ।
केहो बोले कोनरूप बुझिते ना पारि ॥१३२
किबा जीव नित्यानन्द किबा भक्त ज्ञानी ।
याँर येन मत इच्छा ना बोलये केनि ॥१३३
ये से केने चैतन्येर नित्यानन्द नहे ।
तान पादपद्म मोर रहुक हृदये ॥१३४
से आमार प्रभु आमि जन्म जन्म दास ।
सभार चरणे मोर एइ अभिलाष ॥१३५
एत परिहारेओ ये पापी निन्दा करे ।
तबे लाथि मारों तार शिरेर उपरे ॥१३६
आमार प्रभुर प्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
ए बड़ भरसा आमि धरिये अन्तर ॥१३७
हेन दिन हैब कि चैतन्य नित्यानन्द ।
देखिब बेष्टित चतुर्दिगे भक्तवृन्द ॥१३८
जय जय जय महाप्रभु गौरचन्द्र ।
दिलाओ निला-ओ तुमि प्रभु नित्यानन्द ॥१३९
तथापिओ एइ कृपा कर गौरहरि ।
नित्यानन्द सङ्गे येन तोमा ना पासरि ॥१४०
यथा यथा तुमि दुइ कर अवतार ।
तथा तथा दास्ये मोर हउ अधिकार ॥१४१
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१४२

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे श्रीनित्यानन्दमाहात्म्यवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ।



अष्टम अध्याय

जयजय श्रीवैकुण्ठनाथ गौरचन्द्र ।
जयजय श्रीसेवाविग्रह नित्यानन्द ॥१
जयजय अद्वैत श्रीवास प्रियधाम ।
जय गदाधर श्रीजगदानन्द प्राण ॥२
जय श्रीपरमानन्द पुरीर जीवन ।
जय दामोदरस्वरूपेर प्राण धन ॥३
जय वक्रेश्वरपण्डितेर प्रियकारी ।
जय पुण्डरीकविद्यानिधि मनोहारी ॥४
जयजय द्वारपाल गोविन्देर नाथ ।
जीव प्रति कर प्रभु शुभदृष्टिपात ॥५
हेनमते नित्यानन्द नवद्वीपपुरे ।
विहरेन प्रेमभक्ति आनन्दसागरे ॥६
निरवधि भक्तसङ्गे करेन कीर्त्तन ।
कृष्ण नृत्य गीत हैल सभार भजन ॥७
गोपशिशुगण सङ्गे प्रति घरेघरे ।
येन क्रीड़ा करिलेन गोकुलनगरे ॥८

सेइमत गोकुलेर आनन्द प्रकाशि।
कीर्त्तन करेन नित्यानन्द सुविलासी ॥९
इच्छामय नित्यानन्दचन्द्र भगवान्।
गौरचन्द्र देखिते हइल इच्छा तान ॥१०
आइ स्थाने करिलेन सन्तोषे विदाय।
नीलाचले चलिलेन चैतन्य इच्छाय ॥११
परम विह्वल पारिषदगण सङ्गे।
आइलेन श्रीचैतन्य नाम गुण रङ्गे ॥१२
हुङ्कार, गर्जन, नृत्य, आनन्द क्रन्दन।
निरवधि करे सब पारिषदगण ॥१३
एइमत सर्वपथ प्रेमानन्दरसे।
आइलेन नीलाचले कथोक दिवसे ॥१४
कमलपुरेते आसि प्रासाद देखिया।
पड़िलेन नित्यानन्द मूर्च्छित हइया ॥१५
निरवधि नयने बहे प्रेम-धार।
श्रीकृष्णचैतन्य बलि करेन हुङ्कार ॥१६
आसिया रहिला एक पुष्पेर उद्याने।
के बुझे ताँहार इच्छा चैतन्य विने ॥१७
नित्यानन्द विजय जानिया गौरचन्द्र।
एकेश्वर आइलेन छाड़ि भक्तवृन्द ॥१८
ध्यानानन्दे येखाने आछेन नित्यानन्द।
सेइ स्थाने विजय हइला गौरचन्द्र ॥१९
प्रभु आसि देखे नित्यानन्द ध्यानपर।
प्रदक्षिण करिते लागिला बहुतर ॥२०
श्लोकबन्धे नित्यानन्दमहिमा वर्णिया।
प्रदक्षिण करे प्रभु प्रेमपूर्ण हैया ॥२१
श्रीमुखेर श्लोक शुन नित्यानन्दस्तुति।
ये श्लोक पढ़िले हय नित्यानन्दे रति ॥२२

तथाहि श्लोकः—

गृह्णीयाद् यवनीपाणिं विशेद्वा शौण्डिकालयम्।
तथापि ब्रह्मणो वन्द्यं नित्यानन्दपदाम्बुजम्॥२३

अनुवाद।

यवनी पाणि ग्रहण करें, अथवा मद्यपालय में गमन करें, तथापि श्रीनित्यानन्द पदारविन्द वन्दनीय है।

मदिरा यबनी यदि धरे नित्यानन्द।
तथापि ब्रह्मार बन्द्य बोले गौरचन्द्र ॥२४
एइ श्लोक पढ़ि प्रभु प्रेमबृष्टि करि।
नित्यानन्द प्रदक्षिण करे गौरहरि ॥२५
नित्यानन्दस्वरूपो जानिया सेइ क्षणे।
उठिलेन 'हरि' बलि परमसम्भ्रमे ॥२६
देखि नित्यानन्द गौरचन्द्रेर वदन।
कि आनन्द हैल ताहा ना याय वर्णन ॥२७
'हरि' बलि सिंहनाद लागिला करिते।
प्रेमानन्दे आछाड़ पड़ेन पृथिवीते ॥२८
दुइजन प्रदक्षिण करेन दुँहारे।
दुँहे दण्डवत हइ पड़ेन दुँहारे ॥२९
क्षणे दुइ प्रभु करे प्रेम-आलिङ्गन।
क्षणे गला धरि करे आनन्द-क्रन्दन ॥३०
परानन्दे गड़ागड़ि याय दुइजन।
महामत्त सिंह जिनि दुँहार गर्जन ॥३१
कि अद्भुत प्रीति से करेन दुइजने।
पुर्वे येन शुनियाछि श्रीरामलक्ष्मणे ॥३२
दुइजने श्लोक पढ़ि वर्णेन दुँहारे।
दुँहारे दुँहे जोड़हस्ते नमस्करे ॥३३
अश्रु कम्प हास्य मूर्च्छा पुलक वैवर्ण्य।
कृष्ण भक्तिविकारेर यत आछे मर्म ॥३४
इहा बइ दुइ श्रीविग्रहे आर नाञि।
सब करे करायेन चैतन्यगोसाञि ॥३५
कि अद्भुत प्रेमभक्ति हइल प्रकाश।
नयन भरिया देखे ये एकान्तदास ॥३६

तबे कथोक्षणे प्रभु जोड़हस्त करि ।
नित्यानन्दप्रति स्तुति करे गौरहरि ॥३७
नाम रूपे तुमि नित्यानन्द मूर्त्तिमन्त ।
श्रीवैष्णवधाम तुमि—ईश्वर अनन्त ॥३८
यत किछु तोमार श्रीअङ्गे अलङ्कार ।
सत्य सत्य सत्य भक्तियोग अवतार ॥३९
स्वर्ण मुक्ता रूपा कसा रुद्राक्षादि रूपे ।
नवविधा भक्ति धरि आछ निज सुखे ॥४०
नीचजाति पतित अधम यत जन ।
तोमा हैते सभार हइल बिमोचन ॥४१
ये भक्ति दियाछ तुमि वणिक्-सभारे ।
ताहा बाञ्छे सुर सिद्ध मुनि योगेश्वरे ॥४२
'स्वतन्त्र' करिया वेदे ये कृष्णेरे कय ।
हेन कृष्ण पार तुमि करिते विक्रय ॥४३
तोमार महिमा जानिबार शक्ति कार ।
मुर्त्तिमन्त तुमि कृष्णरस अवतार ॥४४
वाह्य नाहि जान तुमि सङ्कीर्त्तनसुखे ।
अहर्निश कृष्णगुण तोमार श्रीमुखे ॥४५
कृष्णचन्द्र तोमार हृदये निरन्तर ।
तोमार विग्रह कृष्णविलासेर घर ॥४६
अतएव तोमारे ये जने प्रीति करे ।
सत्यसत्य कभु कृष्ण ना छाड़ेन ताँरे ॥४७
तबे कथोक्षणे नित्यानन्द महाशय ।
बलिते लागिला अति करिया विनय ॥४८
प्रभु हइ तुमि ये आमारे कर स्तुति ।
ए तोमार वात्सल्य भक्तेर प्रति अति ॥४९
प्रदक्षिण कर किबा कर नमस्कार ।
किबा मार किबा राख ये इच्छा तोमार ॥५०
कोन् बा वक्तव्य प्रभु आछे तोमा स्थाने ।
किबा नाहि देख तुमि दिव्य दरशने ॥५१
मन प्राण सभार ईश्वर प्रभु! तुमि ।
तुमि ये कराओ सेइरूप करि आमि ॥५२
आपनेइ मोरे तुमि दण्ड धराइला ।
आपनेइ घुचाइया एरूप करिला ॥५३
ताड़, खाड़ु वेत्र वंशी शिङ्गा छान्दडोड़ि ।
इहा से धरिये आमि मुनिधर्म छाड़ि ॥५४
आचार्य्यादि तोमार यतेक प्रियगण ।
सभारेइ दिला तप भक्ति आचरण ॥५५
मुनिधर्म छाड़ाइया कि कैले आमारे ।
व्यवहारि जन देखि सभे हास्य करे ॥५६
तोमार नर्त्तक आमि नाचाओ येरूपे ।
सेइरूपे नाचि आमि तोमार कौतुके ॥५७
कि निग्रह अनुग्रह तुमि से प्रमाण ।
वृक्षद्वारे कर तभु तोमारइ से नाम ॥५८
प्रभु बोले तोमार ये देहे अलङ्कार ।
नवविधा भक्ति विनु किछु नहे आर ॥५९
श्रवण कीर्त्तन स्मरणादि नमस्कार ।
एइ से तोमार सर्वकाल अलङ्कार ॥६०
नाग विभूषण येन धरेन शङ्करे ।
ताहा नाहि सर्वजने बुझिबारे पारे ॥६१
परमार्थे महादेव अनन्त जीवन ।
नाग छले अनन्त धरेन सर्वक्षण ॥६२
ना बुझिया निन्दे तान चरित्र अगाध ।
यतेक निन्दये तार हय कार्य बाध ॥६३
मुञि त तोमार अङ्गे भक्तिरस विने ।
अन्य नाहि देखों कहों काय वाक्य मने ॥६४
नन्दगोष्ठे वसि तुमि वृन्दावनसुखे ।
धरियाछ अलङ्कार आपन कौतुके ॥६५
इहा देखि ये सुकृति चित्ते पाय सुख ।
से अवश्य देखिबेक कृष्णेर श्रीमुख ॥६६

वेत्र वंशी शिङ्गा गुञ्जाहार माल्य गन्ध ।
सर्वकाल एइरूप तोमार श्रीअङ्ग ॥६७
यतेक बालक देखि तोमार संहति ।
श्रीदाम सुदाम प्राय लय मोर मति ॥६८
वृन्दावनक्रीड़ार यतेक शिशुगण ।
सकल तोमार सङ्गे लय मोर मन ॥६९
सेइ भाव सेइ कान्ति सेइ सर्वशक्ति ।
सर्वदेहे देखि सेइ नन्दगोष्ठ भक्ति ॥७०
एतेके ये तोमारे तोमार सेवकेरे ।
प्रीति करे सत्यसत्य से करे आमारे ॥७१
स्वानुभावानन्दे दुइ—मुकुन्द अनन्त ।
किरूपे कहेन कथा के जानये अन्त ॥७२
कथोक्षणे दुइ प्रभु वाह्य प्रकाशिया ।
वसिलेन निभृते पुष्पेर वने गिया ॥७३
ईश्वरे परमेश्वरे हइल कि कथा ।
वेदे से इहार तत्त्व जानेन सर्वथा ॥७४
नित्यानन्दे चैतन्ये यखन देखा हय ।
प्राय आर केहो नाहि थाके से समय ॥७५
कि करेन आनन्दविग्रह दुइजने ।
चैतन्य-इच्छाय केहो ना थाके तखने ॥७६
नित्यानन्दस्वरोपो प्रभुर इच्छा जानि ।
एकान्ते से आसिया देखेन न्यासिमणि ॥७७
आपनारे येन प्रभु ना करे व्यक्त ।
एइमन लुकायेन नित्यानन्दतत्त्व ॥७८
सुकोमल दुर्विज्ञेय ईश्वर हृदय ।
वेदे शास्त्रे ब्रह्मा शिव सब एइ कय ॥७९
ना जानि ना बुझि मात्र सबे गाय गाथा ।
लक्ष्मीरो एइ से वाक्य अन्येर कि कथा ॥८०
एइमत भावरङ्गे चैतन्यगोसाञि ।
एक कथा ना कहेन एकजन ठाञि ॥८१
हेन से ताँहार रङ्ग सभेइ मानेन ।
आमार अधिक प्रीत कारो ना वासेन ॥८२
आमारे से कहेन सकल गोप्य कथा ।
मुनिधर्म करि कृष्ण भजिव सर्वथा ॥८३
वेत्र वंशी वर्हा गुञ्जमाला छाँदडोड़ि ।
इहा धरिलेन केने मुनिधर्म छाड़ि ॥८४
केहो बोले मुनिधर्म यतेक प्रकार ।
वृन्दावने गोपक्रीड़ा अधिक सभार ॥८५
गोप-गोपी भक्ति सर्व तपस्यार फल ।
याहा वाञ्छे ब्रह्मा आदि ईश्वर-सकल ॥८६
अति कृपापात्र से गोकुलभक्ति पाय ।
ये भक्ति बन्देन प्रभु श्रीउद्धवराय ॥८७

तथाहि (भा० १०।४७।६३)—

बन्दे नन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः ।
यासां हरिकथोदगीतं पुनाति भुवनत्रयम् ॥८८

टीका ।

बन्दे इति । अभीक्ष्णशः—वारंवारम् । यासां याभिः कर्त्रीभिः यत्सम्बन्धीति वा, हरिकथायाः, उद्गीतम् उच्चैर्गानं, भुवनत्रयम्—ऊर्द्ध्वाधोमध्यलोकं सर्वमपि, पुनाति—पवित्रीकरोति ।

अनुवाद ।

जिनके मुखारविन्द से उच्चारित श्रीहरिलीला का उच्चगान त्रिभुवन को पवित्र करता है, उन सब व्रजवासिनी रमणी वृन्द की चरणरेणु की वन्दना में पुनःपुनः करता हूँ ।

एइमत ये वैष्णव करेन विचार ।
सर्वत्रेइ गौरचन्द्र करेन स्वीकार ॥८९
अन्योऽन्ये बाजायेन आनन्द इच्छाय ।
हेन रङ्गी महाप्रभु श्रीगौराङ्गराय ॥९०
कृष्णेर कृपाय सभे आनन्दे विह्वल ।
कखनो कखनो बाजे आनन्द कन्दल ॥९१

इहाते ये एक ईश्वरेर पक्ष हैया ।
आर ईश्वरेरे निन्दे से-इ अभागिया ॥९२
ईश्वरेर अभिन्न–सकल भक्तगण ।
देहेर येहेन बाहु अङ्गुलि चरण ॥९३

तथाहि (भा० ४।७।५०)—

यथा पुमान् न स्वाङ्गेषु शिर:पाण्यादिषु क्वचित्
पारक्यबुद्धिं कुरुते एवं भूतेषु मत्पर: ॥९४

टीका ।

सर्वस्य मदात्मकत्वात् मत्परस्तु भूतेष्वपि स्वाङ्गेष्विव ममतामेव करोतीत्याह, यथेति ।

अनुवाद ।

पुरुष जिस प्रकार निजाङ्गस्थित हस्त मस्तकादि में यह मेरा नहीं है, उस प्रकार भेद बुद्धि नहीं करता हैं, उस प्रकार जो व्यक्ति मुझको परात्पर रूप जानता है, वह किसी प्राणी के प्रति यह प्राणी भिन्न है, अथवा इसके सुखदुःख मुझ से भिन्न हैं, इस प्रकार परकीय बुद्धि आरोप नहीं करते हैं ।

तथापिह सर्व-वैष्णवेर एइ कथा ।
सभार ईश्वर कृष्णचैतन्य सर्वथा ॥९५
नियन्ता पालक स्रष्टा अविज्ञता तत्त्व ।
सभे मेलि एइ मात्र गायेन महत्त्व ॥९६
आविर्भाव हइतेछेन ये सब शरीरे ।
ताँ सभार अनुग्रहे भक्ति-फल धरे ॥९७
सर्वज्ञता सर्वशक्ति दियाओ आपने ।
अपराधे शास्तिओ करेन भाल-मने ॥९८
इतिमध्ये सकले विशेष दुइ प्रति ।
नित्यानन्द अद्वैतेरे ना छाड़ेन स्तुति ॥९९
कोटि अलौकिको यदि ए दुइ करेन ।
तथापिह गौरचन्द्र किछु ना बोलेन ॥१००
एइमत कथोक्षण परानन्द करि ।
अवधूतचन्द्र सङ्गे गौराङ्ग श्रीहरि ॥१०१
तबे नित्यानन्दस्थाने करिया बिदाय ।
वासाय आइला प्रभु श्रीगौराङ्गराय ॥१०२
नित्यानन्दस्वरूपो परम हर्ष मने ।
आनन्दे चलिला जगन्नाथदरशने ॥१०३
नित्यानन्द-चैतन्ये ये हइल दरशन ।
इहार श्रवणे सर्व बन्ध बिमोचन ॥१०४
जगन्नाथ देखि मात्र नित्यानन्दराय ।
आनन्दे विह्वल हइ गड़ागड़ि याय ॥१०५
आछाड़ पड़ेन प्रभु प्रस्तर उपरे ।
शतजन धरिलेओ धरिते ना पारे ॥१०६
जगन्नाथ बलराम सुभद्रा सुदर्शन ।
सभा देखि नित्यानन्द करेन क्रन्दन ॥१०७
सभार गलार माला ब्राह्मणे आनिया ।
पुन:पुन देन सभे प्रभाव जानिया ॥१०८
नित्यानन्द देखि यत जगन्नाथदास ।
सभार जन्मिल अति परम उल्लास ॥१०९
ये जन ना चिने से जिज्ञासे कारो ठाँइ ।
सभे कहे एइ कृष्णचैतन्येर भाइ ॥११०
नित्यानन्दस्वरूपो सभारे करि कोले ।
सिञ्चिला सभार अङ्ग प्रेमानन्दजले ॥१११
तबे जगन्नाथ हेरि हर्ष सर्वगणे ।
आनन्दे चलिला गदाधर दरशने ॥११२
नित्यानन्द गदाधरे ये प्रीत अन्तरे ।
इहा कहिबारे शक्ति ईश्वरे से धरे ॥११३
गदाधरभवने मोहन गोपीनाथ ।
आछेन येहेन नन्दकुमार साक्षात ॥११४
आपने चैतन्य ताने करियाछेन कोले ।
अति पाषण्डीओ से विग्रह देखि भुले ॥११५
देखि श्रीमुरलीमुख अङ्गेर भङ्गिमा ।
नित्यानन्दे आनन्द अश्रुर नाहि सीमा ॥११६

नित्यानन्द विजय जानिया गदाधर ।
भागवत पाठ छाड़ि आइला सत्वर ॥११७
दुँहे मात्र देखिया दुँहार श्रीवदन ।
गला धरि लागिलेन करिते क्रन्दन ॥११८
अन्योऽन्ये दुइ प्रभु करे नमस्कार ।
अन्योऽन्ये दुँहे कहे महिमा दुँहार ॥११९
केहो बोले आजि हैल लोचन निर्मल ।
केहो बोले आजि हैल जनम सफल ॥१२०
वाह्यज्ञान नाहि दुइप्रभुर शरीरे ।
दुइप्रभु भासे भक्ति आनन्द सागरे ॥१२१
हेन से हइल प्रेमभक्तिर प्रकाश ।
देख चतुर्दिगे पड़ि कान्दे सर्वदास ॥१२२
कि अद्भुत प्रीति नित्यानन्द गदाधरे ।
एकेर अप्रिय आरे सम्भाषा ना करे ॥१२३
गदाधरदेवेर सङ्कल्प एइरूप ।
नित्यानन्दनिन्दकेर ना देखेन मुख ॥१२४
नित्यानन्दस्वरूपेरे प्रीति यार नाञि ।
देखाओ ना देन तारे पण्डितगोसाञि ॥१२५
तबे दुइ प्रभु स्थिर हइ एकस्थाने ।
वसिलेन चैतन्यमङ्गल सङ्कीर्त्तने ॥१२६
तबे गदाधरदेव नित्यानन्दप्रति ।
निमन्त्रण करिलेन आजि भिक्षा इथि ॥१२७
नित्यानन्द गदाधरभिक्षार कारणे ।
एक-मन चाउल आनियाछेन यतने ॥१२८
अति सूक्ष्म शुक्ल देवयोग्य सर्वमते ।
गदाधर लागि आनियाछेन गौड़ हैते ॥१२९
आर एकखानि बस्त्र-रङ्गिम सुन्दर ।
दुइ आनि दिला गदाधरेर गोचर ॥१३०
गदाधर! ए तण्डुल करिया रन्धन ।
श्रीगोपीनाथेरे दिया करिबा भोजन ॥१३१
तण्डुल देखिया हासे पण्डितगोसाञि ।
नयने त एमत तण्डुल देखि नाञि ॥१३२
ए तण्डुल गोसाञि कि वैकुण्ठे थाकिया ।
आनिया आछेन गोपीनाथेर लागिया ॥१३३
लक्ष्मीमात्र ए तण्डुल करेन रन्धन ।
कृष्ण से इहार भोक्ता तबे भक्तगण ॥१३४
आनन्दे तण्डुल प्रशंसेन गदाधर ।
बस्त्र लइ गेल गोपीनाथेर गोचर ॥१३५
दिव्य रङ्ग बस्त्र गोपीनाथेर श्रीअङ्गे ।
दिलेन देखिया शोभा भासेन आनन्दे ॥१३६
तबे रन्धनेर कार्य करिते लागिला ।
आपने टोटाय शाक तुलिते लागिला ॥१३७
केहो बोने नाहि दैवे हइयाछे शाक ।
ताहा तुलि आनिया करिला एक पाक ॥१३८
तेँतलिबृक्षेर यत पत्र सुकोमल ।
ताहा आनि बाटि तथि दिला लोण जल ॥१३९
तार एक व्यञ्जन करिला अम्ल-नाम ।
रन्धन करिया गदाधर भाग्यवान् ॥१४०
गोपीनाथ अग्रे निया भोग लागाइला ।
हेनकाले गौरचन्द्र आसिया मिलिला ॥१४१
प्रसन्न श्रीमुखे हरे कृष्ण कृष्ण बलि ।
विजय हइला गौरचन्द्र कुतूहली ॥१४२
गदाधर! गदाधर! डाके गौरचन्द्र ।
सम्भ्रमे बन्देन गदाधर पदद्वन्द्व ॥१४३
हासिया बोलेन प्रभु केन गदाधर!
आमि कि ना हइ निमन्त्रणेर भितर ?१४४
आमि त तोमरा दुइ हैते भिन्न नाहि ।
ना दिलेओ तोमार बलेते आमि खाइ ॥१४५
नित्यानन्दद्रव्य—गोपीनाथेर प्रसाद ।
तोमार रन्धन—मोर इथे आछे भाग ॥१४६

कृपावाक्य शुनि नित्यानन्द गदाधर ।
मग्न हइलेन सुख-सागर भितर ॥१४७
सन्तोषे प्रसाद आनि देव गदाधर ।
थुइलेन गौरचन्द्रप्रभुर गोचर ॥१४८
सर्व टोटा व्यापिलेक अन्नेर सुगन्धे ।
भक्ति करि प्रभु पुनःपुन अन्न वन्दे ॥१४९
प्रभु बोले तिन भाग समान करिया ।
अन्न लइ तिने भुञ्जि एकत्र वसिया ॥१५०
नित्यानन्दस्वरूपेर तण्डुलेर प्रीते ।
वसिलेन महाप्रभु भोजन करिते ॥१५१
दुइप्रभु भोजन करेन दुइपाशे ।
सन्तोषे ईश्वर अन्न-व्यञ्जन प्रशंसे ॥१५२
प्रभु बोले ए अन्नेर गन्धेओ सर्वथा ।
कृष्णभक्ति हय इथे नाहिक अन्यथा ॥१५३
गदाधर ! कि तोमार मनोहर पाक ।
आमि त एमत कभु नाहि खाइ शाक ॥१५४
गदाधर ! कि तोमार विचित्र रन्धन ।
तेँतलिपातेर कर एमत व्यञ्जन ॥१५५
बुझिलाम वैकुण्ठे रन्धन कर तुमि ।
तबे आर आपनारे लुकाओ बा केनि ॥१५६
एइमत महानन्दे हास्य परिहासे ।
भोजन करेन तिन प्रभु प्रेमरसे ॥१५७
ए तिन जनार प्रीति ए तिन से जाने ।
गौरचन्द्र झाट ना कहेन कारो स्थाने ॥१५८
कथोक्षणे प्रभु सब करिया भोजन ।
चलिलेन पत्र लुट कैल भक्तगण ॥१५९
ए आनन्द भोजन ये पढ़े येबा शुने ।
कृष्णभक्ति कृष्ण पाय सेइ सब जने ॥१६०
गदाधर शुभदृष्टि करेन याहारे ।
से-इ से जानये नित्यानन्दस्वरूपेरे ॥१६१
नित्यानन्दस्वरूपो याहारे प्रीतमने ।
लओयायेन गदाधर, जाने से-इ जने ॥१६२
हेनमते नित्यानन्दप्रभु नीलाचले ।
रहिलेन गौरचन्द्रसङ्गे कुतूहले ॥१६३
तिनजन एकत्र थाकेन निरन्तर ।
श्रीकृष्णचैतन्य, नित्यानन्द, गदाधर ॥१६४
जगन्नाथो एकत्र देखेन तिनजने ।
आनन्दे विह्वल सभे मात्र सङ्कीर्त्तने ॥१६५
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१६६

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे गदाधर-गृह-विलास-वर्णनं नाम अष्टमोऽध्यायः ।



नवम अध्याय

एबे शुन वैष्णवसभाय आगमन ।
आचार्य्यगोसाञि आदि यत प्रिय गण ॥१
श्रीरथयात्रार आसि हइल समय ।
नीलाचले भक्तगोष्ठी हइला विजय ॥२
ईश्वरेर आज्ञा प्रति वत्सरे वत्सरे ।
सभेइ आसिबा रथयात्रा देखिबारे ॥३
आचार्य्यगोसाञि अग्रे करि भक्तगण ।
सभे नीलाचल प्रति करिला गमन ॥४
चलिलेन ठाकुरपण्डित श्रीनिवास ।
याँहार मन्दिरे हैल चैतन्यविलास ॥५
चलिला आचार्य्यरत्न श्रीचन्द्रशेखर ।
देवीभावे याँर गृहे नाचिला ईश्वर ॥६

चलिलेन हरिषे पण्डित-गङ्गादास।
याँहार स्मरणे हय कर्मबन्ध नाश ॥७
पुण्डरीकविद्यानिधि चलिला आनन्दे।
उच्चस्वरे याँरे स्मरि गौरचन्द्र कान्दे ॥८
चलिला आनन्दे पण्डित-वक्रेश्वर।
ये नाचिते कीर्त्तनीया श्रीगौरसुन्दर ॥९
चलिला प्रद्युम्नब्रह्मचारी महाशय।
साक्षाते नृसिंह याँर सने कथा कय ॥१०
चलिलेन आनन्दे ठाकुर हरिदास।
आर हरिदास—याँर सिन्धुकूले वास ॥११
चलिलेन वासुदेवदत्त महाशय।
याँर स्थाने कृष्ण हय आपने विक्रय १२
चलिला मुकुन्ददत्त कृष्णेर गायन।
शिवानन्दसेन आदि लइ आप्त गण ॥१३
चलिला गोविन्दानन्द आनन्दे विह्वल।
दश दिग हय याँर स्मरणे निर्मल ॥१४
चलिला गोविन्ददत्त महाहर्षमने।
मूल हैया ये कीर्त्तन करे प्रभु सने ॥१५
चलिलेन आखरिया श्रीविजयदास।
रत्नबाहु याँरे प्रभु करिला प्रकाश ॥१६
सदाशिवपण्डित चलिला शुद्धमति।
याँर घरे पूर्व्वे नित्यानन्देर वसति ॥१७
पुरुषोत्तमसञ्जय चलिला हर्षमने।
ये प्रभुर मुख्य शिष्य पूर्व्व अध्ययने ॥१८
हरि बलि चलिलेन पण्डित-श्रीमान्।
प्रभु नृत्ये ये देउटि धरे सावधान ॥१९
नन्दन आचार्य्य चलिलेन प्रीतमने।
नित्यानन्द याँर गृहे आइला प्रथमे ॥२०
हरिषे चलिला शुक्लाम्वरब्रह्मचारी।
याँर अन्न मागि खाइलेन गौरहरि ॥२१

अकिञ्चन कृष्णदास चलिला श्रीधर।
याँर जल पान कैला प्रभु विश्वम्भर ॥२२
चलिलेन लेखक पण्डित भगवान्।
याँर देहे कृष्ण हैयाछिला अधिष्ठान ॥२३
गोपीनाथपण्डित आर श्रीगर्भपण्डित।
चलिलेन दुइ कृष्णविग्रह निश्चित ॥२४
चलिलेन वनमालीपण्डित मङ्गल।
ये देखिल सुवर्णेर श्रीहल मुषल ॥२५
जगदीशपण्डित हिरण्यभागवत।
आनन्दे चलिला दुइ कृष्णरसे मत्त ॥२६
पूर्व्वे शिशुरूपे प्रभु ये दुइर घरे।
नैवेद्य खाइला आनि श्रीहरिवासरे ॥२७
चलिलेन बुद्धिमन्तखान महाशय।
आजन्म चैतन्य आज्ञा याँहार विषय ॥२८
हरिषे चलिला श्रीआचार्य्य पुरन्दर।
बाप! बलि याँरे डाके श्रीगौरसुन्दर ॥२९
चलिलेन श्रीराघवपण्डित उदार।
गुप्ते याँर घरे हैल चैतन्यविहार ॥३०
भवरोग वैद्यसिंह चलिल मुरारि।
गुप्ते याँर देहे वैसे गौराङ्ग श्रीहरि ॥३१
चलिलेन श्रीगरुड़पण्डित हरिषे।
नाम बले याँर ना लङ्घिल सर्पविषे ॥३२
चलिलेन गोपीनाथसिंह महाशय।
अक्रूर करिया याँरे गौरचन्द्र कय ॥३३
प्रभुर परमप्रिय श्रीरामपण्डित।
चलिलेन नारायणपण्डित सहित ॥३४
आइ दरशने श्रीपण्डित दामोदर।
आसिछिला आइ देखि चलिला सत्वर ॥३५
अनन्त चैतन्य-भक्त कत जानि नाम।
सभे चलिलेन हइ आनन्देर धाम ॥३६

आइ-स्थाने भक्ति करि विदाय करिया ।
चलिला अद्वैतसिंह भक्तगोष्ठी लैया ॥३७
ये ये द्रव्ये जानेन प्रभुर अपूर्व प्रीत ।
सब लैला सभे प्रभुर भिक्षार निमित्त ॥३८
सर्वपथे सङ्कीर्त्तन आनन्द करिते ।
आइलेन पवित्र करिया सर्वपथे ॥३९
उल्लासे ये हरिध्वनि करे भक्तगण ।
शुनिया पवित्र हये त्रिभुवन जन ॥४०
पत्नी पुत्र दास दासीगणेर सहिते ।
आइलेन परानन्दे चैतन्य देखिते ॥४१
ये स्थाने रहेन आसि सभे वासा करि ।
सेइ स्थान हय येन श्रीवैकुण्ठपुरी ॥४२
शुनशुन आरे भाइ ! मङ्गल आख्यान ।
याहा गाय महाप्रभु शेष भगवान् ॥४३
एइमत रङ्गे महापुरुषसकल ।
सकल मङ्गले आइसेन नीलाचल ॥४४
कमलपुरेते ध्वज प्रासाद देखिया ।
पड़िलेन कान्दि सभे दण्डवत हैया ॥४५
प्रभुओ जानिया भक्तगोष्ठीर विजय ।
आगु बाढ़िवारे चित्त कैला इच्छामय ॥४६
अद्वैतेर प्रति अति प्रीतियुक्त हैया ।
अग्रे महा प्रसाद दिलेन पाठाइया ॥४७
कि अद्भुत प्रीति से ताहार नाहि अन्त ।
प्रसाद पाठाय ताँरे कटक पर्यन्त ॥४८
शयने आछिलुँ क्षीरसागर भितरे ।
निद्राभङ्ग हैल मोर नाढ़ार हुङ्कारे ॥४९
अद्वैत निमित्त मोर एइ अवतार ।
एइमत महाप्रभु बोले बारबार ॥५०
एतेके ईश्वरतुल्य यतेक महान्त ।
अद्वैतसिंहेरे भक्ति करेन एकान्त ॥५१
आइला अद्वैत शुनि श्रीवैकुण्ठपति ।
आगु बाढ़िलेन प्रियगोष्ठीर संहति ॥५२
नित्यानन्द गदाधर श्रीपुरीगोसाञि ।
चलिलेन आनन्दे काहारो वाह्य नाहि ॥५३
सार्वभौम जगदानन्द काशीमिश्रवर ।
दामोदरस्वरूप श्रीपण्डित-शङ्कर ॥५४
काशीश्वरपण्डित आचार्य्य भगवान् ।
श्रीप्रद्युम्नमिश्र प्रेमभक्तिर निधान ॥५५
पात्र श्रीपरमानन्द राय-रामानन्द ।
चैतन्येर द्वारपाल सुकृति गोविन्द ॥५६
ब्रह्मानन्दभारती श्रीरूप सनातन ।
रघुनाथ वैद्य शिवानन्द नारायण ॥५७
अद्वैतेर ज्येष्ठपुत्र श्रीअच्युतानन्द ।
वाणीनाथ श्रीशिखिमाहाति यत वृन्द ॥५८
अनन्त चैतन्यभृत्य कत जानि नाम ।
कि छोट कि बड़ सभे करिला पयान ॥५९
परानन्द सभे चलिलेन प्रभु सङ्गे ।
वाह्यदृष्टि वाह्यज्ञान नाहि कारो अङ्गे ॥६०
श्रीअद्वैतसिंहो सर्व वैष्णव सहिते ।
आसिया मिलिला प्रभु आठारो नालाते ॥६१
प्रभुओ आइला नरेन्द्रेरे आगुयान ।
दुइ गोष्ठी देखादेखि हैल विद्यमान ॥६२
दूरे देखि दुइ गोष्ठी अन्योऽन्ये सब ।
दण्डवत हइ सब पड़िला वैष्णव ॥६३
दूरे अद्वैतेरे देखि श्रीवैकुण्ठनाथ ।
अश्रुमुखे करिते लागिला दण्डपात ॥६४
श्रीअद्वैतो दूरे देखि निज प्राणनाथ ।
पुनःपुन करिते लागिला दण्डपात ॥६५
अश्रु कम्प स्वेद मूर्च्छा पुलक हुङ्कार ।
दण्डवत बइ किछु नाहि देखि आर ॥६६

दुइ गोष्ठी दण्डपात के वा कारे करे ।
सभेइ चैतन्यरसे विह्वल अन्तरे ॥६७
किबा छोट किबा बड़ ज्ञानी वा अज्ञानी ।
दण्डवत करि सभे करे हरिध्वनि ॥६८
ईश्वरो करेन भक्तसङ्गे दण्डवत ।
अद्वैतादि प्रभुओ करेन सेइमत ॥६९
एइमत दण्डवत करिते करिते ।
दुइ गोष्ठी एकत्र मिलिला भालमते ॥७०
एखाने ये हइल आनन्द दरशन ।
उच्च हरिध्वनि उच्च आनन्द क्रन्दन ॥७१
मनुष्ये कि पारे इहा करिते वर्णन ।
सबे वेदव्यास, आर सहस्रवदन ॥७२
अद्वैत देखिया प्रभु करिलेन कोले ।
सिञ्चिलेन अङ्ग तान प्रेमानन्द जले ॥७३
श्लोक पढ़ि अद्वैत करेन नमस्कार ।
हइलेन अद्वैत आनन्द अवतार ॥७४
यत सज्जा करियाछिल प्रभु पूजिबारे ।
सब पासरिलेन किछुइ नाहि स्फुरे ॥७५
आनन्दे अद्वैतसिंह करेन हुङ्कार ।
आनिलुँ आनिलुँ बलि डाके बारबार ॥७६
हेन से हैल अति उच्च हरिध्वनि ।
कोन् लोक पूर्ण नहे हेन त ना जानि ॥७७
वैष्णवेर कि दाय, अज्ञान यत जन ।
ताराओ बोलये 'हरि' करये क्रन्दन ॥७८
सर्वभक्तगोष्ठी अन्योऽन्ये गलाधरि ।
आनन्दे क्रन्दन करे बोले 'हरिहरि' ॥७९
अद्वैतेरे सभे करिलेन नमस्कार ।
याँहार निमित्त श्रीचैतन्य अवतार ॥८०
महा उच्चध्वनि करि हरिसङ्कीर्त्तन ।
दुइ गोष्ठी करिते लागिला ततक्षण ॥८१
कोथा केबा नाचे कोन् दिगे केबा गाय ।
के वा कोन् दिगे पड़ि गड़ागड़ि याय ॥८२
प्रभु देखि सभे हैला आनन्दे विह्वल ।
प्रभुओ नाचेन माझे सकल मङ्गल ॥८३
नित्यानन्द अद्वैते करिला कोलाकोलि ।
नाचे दुइ मत्त सिंह हइ कुतूहली ॥८४
सर्व वैष्णवेरे प्रभु धरि जनेजने ।
आलिङ्गन करेन परम प्रीत मने ॥८५
भक्त नाथ भक्त वश भक्तेर जीवन ।
भक्त गला धरि प्रभु करेन क्रन्दन ॥८६
जगन्नाथदेवेर आज्ञाय सेइक्षण ।
सहस्रसहस्र माला आइल चन्दन ॥८७
आज्ञामाला देखि हर्षे श्रीगौराङ्गराय ।
अग्रे दिला श्रीअद्वैतसिंहेर गलाय ॥८८
सर्व वैष्णवेरे प्रभु श्रीहस्ते आपने ।
परिपूर्ण करिलेन मालाय चन्दने ॥८९
देखिया प्रभुर कृपा सर्वभक्तगण ।
बाहु तुलि उच्चस्वरे करेन क्रन्दन ॥९०
सभेइ मागेन बर श्रीचरण धरि ।
जन्मेजन्मे येन प्रभु तोमा ना पासरि ॥९१
कि मनुष्य पशु पक्षी घरे जन्मि यथा ।
तोमार चरण येन देखिये सर्वथा ॥९२
एइ बर देह प्रभु करुणासागर !
पादपद्म धरि कान्दे सर्व अनुचर ॥९३
वैष्णवगृहिणी यत पतिव्रतागण ।
दूरे थाकि प्रभु देखि करेन क्रन्दन ॥९४
ताँसभार प्रेमधारे अन्त नाहि पाइ ।
सभेइ वैष्णवीशक्ति भेद किछु नाहि ॥९५
ज्ञानभक्तियोगे सभे पतिर समान ।
कहिया आछेन श्रीचैतन्य भगवान् ॥९६

एइमत नृत्यगीत बाद्य सङ्कीर्त्तने ।
आइसेन चलिया सभेइ प्रभु सने ॥९७
हेन से हइल प्रेम भक्तिर प्रकाश ।
हेन नाहि यार देखि ना हय उल्लास ॥९८
आठारोनालाय हैते दशदण्ड हैले ।
महाप्रभु आइलेन नरेन्द्रेर कूले ॥९९
हेनकाले रामकृष्ण श्रीयात्रा गोविन्द ।
जलकेलि करिबारे आइला नरेन्द्र ॥१००
हरिध्वनि नृत्य गीत मृदङ्ग काहाल ।
शङ्ख भेरी जयढाक बाजये बिशाल ॥१०१
सहस्रसहस्र छत्र पताका चामर ।
चतुर्दिके शोभा करे परमसुन्दर ॥१०२
महाजयजयशब्द महा हरिध्वनि ।
इहा बइ आर कोन शब्द नाहि शुनि ॥१०३
राम कृष्ण श्रीगोविन्द महाकुतूहले ।
उत्तरिला आसि सभे नरेन्द्रेर जले ॥१०४
जगन्नाथगोष्ठी श्रीचैतन्यगोष्ठीसने ।
मिशाइला तानाओ तुलिला सङ्कीर्त्तने ॥१०५
दुइ गोष्ठी एक हइ कि हैल आनन्द ।
कि वैकुण्ठसुख आसि हइल मूर्त्तिमन्त ॥१०६
चतुर्दिगे लोकेर आनन्दे अन्त नाञि ।
सब करेन करायेन चैतन्यगोसाञि ॥१०७
राम कृष्ण श्रीगोविन्द उठिला नौकाय ।
चतुर्दिगे भक्तगण चामर ढुलाय ॥१०८
राम कृष्ण श्रीगोविन्द नौकाय विजय ।
देखिया सन्तोष श्रीगौराङ्ग महाशय ॥१०९
प्रभुओ सकल भक्त लइ कुतूहले ।
झाँप दिया पड़िलेन नरेन्द्रेर जले ॥११०
शुन भाइ! श्रीकृष्णचैतन्य अवतार ।
येरूपे नरेन्द्रेर जले करिला बिहार ॥१११

पूर्व्व यमुनाय येन शिशुगण मेलि ।
मण्डली हइया करिलेन जलकेलि ॥११२
सेइ रूपे सकल वैष्णवगण मेलि ।
परस्पर करे धरि हइला मण्डली ॥११३
गौड़देशे जलकेलि आछे 'कया' नामे ।
सेइ जलक्रीड़ा आरम्भिलेन प्रथमे ॥११४
'कया कया' बलि करतालि देन जले ।
जले बाद्य बाजायेन वैष्णवमण्डले ॥११५
गोकुलेर शिशुभाव हइल सभार ।
प्रभुओ हइला गोकुलेन्द्र अवतार ॥११६
वाह्य नाहि कारो, सभे आनन्दे विह्वल ।
निर्भये ईश्वरदेहे सभे देन जल ॥११७
अद्वैत चैतन्य दुँहे जल फेलाफेलि ।
प्रथमे लागिला हइ महा कुतूहली ॥११८
अद्वैत हारेन क्षणे, क्षणे बा ईश्वर ।
निर्घात नयने जल देन परस्पर ॥११९
नित्यानन्द गदाधर श्रीपुरीगोसाञि ।
तिन प्रभु जलयुद्ध कारो हारि नाइ ॥१२०
दत्ते गुप्ते जलयुद्ध लागे बारबार ।
परम आनन्दे दुँहे करेन हुङ्कार ॥१२१
दुइ सखा विद्यानिधि स्वरूपदामोदर ।
हासिया आनन्दे जल देन परस्पर ॥१२२
श्रीवास श्रीराम हरिदास वक्रेश्वर ।
गङ्गादास गोपीनाथ श्रीचन्द्रशेखर ॥१२३
एइमत अन्योऽन्ये सभे देन जल ।
चैतन्य-आनन्दे सभे हइला विह्वल ॥१२४
श्रीगोविन्द राम कृष्ण विजय नौकाय ।
लक्षलक्ष लोक जले आनन्दे बेड़ाय ॥१२५
सेइ जले विषयी सन्न्यासी ब्रह्मचारी ।
सभेइ आनन्दे भासे जलक्रीड़ा करि ॥१२६

हेन से चैतन्यमाया से स्थाने आसिते ।
कारो शक्ति नाहि केहो ना पाय देखिते ॥१२७
अल्पभाग्ये श्रीचैतन्यगोष्ठी नाहि पाय ।
केवल भक्तिर बश चैतन्यगोसाञि ॥१२८
भक्ति विना केवल विद्यार तपस्याय ।
किछुइ ना हय सबे दुःखमात्र पाय ॥१२९
साक्षाते देखह एइ सेइ नीलाचले ।
एतेक चैतन्यसङ्कीर्त्तन कुतूहले ॥१३०
यत महा महा नाम सन्न्यासी सकल ।
देखितेओ भाग्य कारो नहिल केबल ॥१३१
आरो बोले चैतन्य वेदान्त पाठ छाड़ि ।
कि कार्य्ये बा करेन कीर्त्तन हुड़ाहुड़ि ॥१३२
सर्वदाइ प्राणायाम एइ ये यतिधर्म ।
नाचिब काँदिब एकि सन्न्यासीर कर्म ॥१३३
तार मध्ये ये सब उत्तम न्यासिगण ।
तारा बोले श्रीकृष्णचैतन्य महाजन ॥१३४
केहो बोले ज्ञानी केहो बोले बड़ भक्त ।
प्रशंसेन सभे, केहो ना जानेन तत्त्व ॥१३५
हेनमत जलक्रीड़ारङ्ग कुतूहले ।
करेन ईश्वरसङ्गे वैष्णव सकले ॥१३६
पूर्वं येन जलकेलि हैल द्वारकाय ।
सेइ सब भक्त लइ श्रीचैतन्यराय ॥१३७
ये प्रसाद पाइलेन जाह्नवी यमुना ।
नरेन्द्रजलेरो हैल सेइ भाग्यसीमा ॥१३८
ए सब लीलार कभु नाहि परिच्छेद ।
'आविर्भाब' तिरोभाब मात्र कहे वेद ॥१३९
ए सकल लीला जीव उद्धार कारणे ।
कर्मबन्ध छिण्डे यार स्मरण पठने ॥१४०
तबे प्रभु जलक्रीड़ा सम्पूर्ण करिया ।
जगन्नाथ देखिते चलिला सभा लैया ॥१४१
जगन्नाथ देखि प्रभु सर्वभक्तगण ।
लागिला करिते सभे आनन्द कीर्त्तन ॥१४२
जगन्नाथ देखि प्रभु हयेन विह्वल ।
आनन्दधाराय अङ्ग तितिल सकल ॥१४३
अद्वैतादि भक्तगोष्ठी देखेन सन्तोषे ।
केवल आनन्दसिन्धुमध्ये सभे भासे ॥१४४
दुइदिगे सचल निश्चल जगन्नाथ ।
देखादेखि भक्तगोष्ठी हय दण्डपात ॥१४५
काशीमिश्र आसि जगन्नाथेर गलार ।
माला आनि अङ्गभूषा करिला सभार ॥१४६
माला लय प्रभु महा भय भक्ति करि ।
शिक्षागुरु नारायण न्यासिबेशधारी ॥१४७
वैष्णव तुसली गङ्गा, प्रसादेर भक्ति ।
तिँहो से जानेन, अन्ये ना धरे से शक्ति ॥१४८
वैष्णवेर भक्ति एइ देखिला साक्षात ।
गृहाश्रमि वैष्णवेरे करे दण्डपात ॥१४९
सन्न्यास ग्रहण कैले हेन कर्म तार ।
पिता आसि पुत्रेरे करये नमस्कार ॥१५०
अतएव न्यासाश्रम सभार बन्दित ।
सन्न्यासी सन्न्यासी नमस्कार विहित ॥१५१
तथापि आश्रमधर्म छाड़ि वैष्णवेरे ।
शिक्षागुरु श्रीकृष्ण आपने नमस्करे ।१५२
तुलसीर भक्ति एबे शुन मन दिया ।
येरूपे कैलैन लीला तुलसी लइया ॥१५३
एक क्षुद्र भाण्डे दिव्य मृत्तिका पूरिया ।
तुलसी देखेन सेइ घटे आरोपिया ॥१५४
प्रभु बोले मुञि तुलसीरे ना देखिले ।
भाल नाहि वासों येन मत्स्यविने जले ॥१५५
यबे चले सङ्ख्या नाम करिया ग्रहण ।
तुलसी लइया चले अग्रे एकजन ॥१५६

पथेओ चलेन प्रभु तुलसी देखिया ।
बहये आनन्दधारा सर्वाङ्ग बहिया ॥१५७
सङ्ख्या-नाम लैते ये स्थाने प्रभु वैसे ।
तथाइ थोयेन तुलसीरे प्रभु पाशे ॥१५८
तुलसीरे देखेन लयेन सङ्ख्या-नाम ।
ए भक्तियोगेर तत्त्व के बुझिबे आन ॥१५९
पुन सेइ सङ्ख्या-नाम सम्पूर्ण करिया ।
चलेन ईश्वर अग्रे तुलसी देखिया ॥१६०
शिक्षागुरु नारायण ये करायेन शिक्षा ।
इहा ये मानये, से-इ जन पान रक्षा ॥१६१
जगन्नाथ देखि, जगन्नाथ नमस्करि ।
वासाय चलिला गोष्ठीसङ्गे गौरहरि ॥१६२
ये भक्तेर येन रूप चित्तेर वासना ।
सेइरूपे सिद्ध करे सभार कामना ॥१६३
पुत्रप्राय करि सभा' राखिलेन काछे ।
निरवधि भक्तो-सबो थाके प्रभु पाछे ॥१६४
यतेक वैष्णव गौड़देशे नीलाचले ।
एकत्र थाकेन सभे कृष्ण कुतूहले ॥१६५
श्वेतद्वीपनिवासीओ ए सब वैष्णव ।
चैतन्यप्रसादे देखिलेक लोक सब ॥१६६
श्रीमुखे अद्वैतचन्द्र बारबार कहे ।
ए सब वैष्णव देवताओ दृश्य नहे ॥१६७
क्रन्दन करिया कहे चैतन्य चरणे ।
वैष्णव देखिल प्रभु ! तोमार कारणे ॥१६८
ये सब वैष्णव अवतारे अवतरि ।
प्रभुओ अवतरे इहा सभा अग्रे करि ॥१६९
येरूपे प्रद्युम्न अनिरुद्ध सङ्कर्षण ।
येरूपे लक्ष्मण भरत शत्रुघन ॥१७०
ताहाना येरूपे प्रभुसङ्गे अवतरे ।
वैष्णवेरे सेइरूपे प्रभु आज्ञा करे ॥१७१
अतएव वैष्णवेर जन्म मृत्यु नाइ ।
सङ्गे आइसेन सङ्गे यायेन तथाइ ॥१७२
कर्मबन्ध जन्म वैष्णवेर कभु नहे ।
पद्मपुराणेते इहा व्यक्त करि कहे ॥१७३

तथाहि पाद्मोत्तरखण्डे (२५।७।५७; ५८)

यथा सौमित्रि-भरतौ यथा सङ्कर्षणादयः ।
तथा तेनैव जायन्ते मर्त्यलोकं यदृच्छया ॥१७४
पुनस्तेनैव यास्यन्ति तद्विष्णोः शाश्वतं पदम् ।
न कर्मबन्धनं जन्म वैष्णवानाञ्च विद्यते ॥१७५

टीका ।

यतेति । तेन—भगवता सह । जायन्ते प्रादुर्भवन्ति । शाश्वतं—शश्वत्कालव्यापक, नित्यमित्यर्थः । पदं—स्थानम् । कर्मणा बध्यते सम्बध्यते इति कर्मबन्धनम् ।

अनुवाद ।

जिस प्रकार सुमित्रानन्दन लक्ष्मण एवं भरत एवं जिस प्रकार सङ्कर्षण प्रभृति हैं, वैष्णवगण भी उस प्रकार श्रीभगवान् के सहित यदृच्छाक्रम से मर्त्यलोक में जन्म ग्रहण करते हैं, पुनर्वार उनका सहित ही गमन करते हैं, वैष्णववृन्द का कर्म जनित जन्म नहीं हैं ।

हेनमते ईश्वरेर सङ्गे भक्तगण ।
प्रेमे पूर्ण हइया थाकेन सर्वक्षण ॥१७६
भक्ति करि ये शुनये ए सब आख्यान ।
भक्तसङ्गे तारे मिले कृष्ण भगवान् ॥१७७
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१७८

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे जलक्रीड़ादि-वर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ।



दशम अध्याय

जयजय श्रीकृष्णचैतन्य रमाकान्त ।
जय सर्व वैष्णवेर वल्लभ एकान्त ॥१
जयजय कृपामय श्रीवैकुण्ठनाथ ।
जीव प्रति कर प्रभु! शुभदृष्टिपात ॥२
हेनमते भक्तगोष्ठी ईश्वरेर सङ्गे ।
थाकिला परमानन्दे सङ्कीर्त्तनरङ्गे ॥३
ये द्रव्ये प्रभुर प्रीत पूर्व शिशुकाले ।
सकल जानेन ताहा वैष्णवमण्डले ॥४
सेइ सब द्रव्य सभे प्रेमयुक्त हैया ।
आनिया आछेन प्रभुर भिक्षार लागिया ॥५
सेइ सब द्रव्य प्रीते करिया रन्धन ।
ईश्वरेरे आसिया करेन निमन्त्रण ॥६
ये दिने ये भक्तगृहे हय निमन्त्रण ।
तथाइ परम प्रीते करेन भोजन ॥७
श्रीलक्ष्मीर अंश यत वैष्णवगृहिणी ।
कि विचित्र रन्धन करेन नाहि जानि ॥८
निरवधि सभार नयने प्रेमधार ।
कृष्णनामे परिपूर्ण श्रीमुख सभार ॥९
पूर्व ईश्वरेर प्रीत ये सब व्यञ्जने ।
नवद्वीपे श्रीवैष्णवी सभे ताहा जाने ॥१०
प्रेमयोगे सेइमत करेन रन्धन ।
प्रभुओ परम प्रेमे करेन भोजन ॥११
एकदिन श्रीअद्वैतसिंह महामति ।
प्रभुरे बलिला आजि भिक्षा मोर इथि ॥१२
मुष्ट्येक तण्डुल प्रभु! रान्धिब आपने ।
हस्त मोर सत्य हउ तोमार भक्षणे ॥१३
प्रभु बोले ये जन तोमार अन्न खाय ।
कृष्णभक्ति कृष्ण से-इ पाय सर्वथाय ॥१४
आचार्य्य! तोमार अन्न आमार जीवन ।
तुमि खाओयाइले हय कृष्णेर भोजन ॥१५
तुमि ये नैवेद्य कर करिया रन्धन ।
मागियाओ खाइते आमार तथि मन ॥१६
शुनिया प्रभुर भक्तवत्सलता वाणी ।
कि आनन्दे अद्वैत भासेन नाहि जानि ॥१७
परमसन्तोषे तबे वासाय आइला ।
प्रभुर भिक्षार सज्ज करिते लागिला ॥१८
लक्ष्मी अंशे जन्म अद्वैतेर पतिव्रता ।
लागिला करिते कार्य हइ हरषिता ॥१९
प्रभुर प्रीतेर द्रव्य गौड़देश हैते ।
यत आनियाछेन सब लागिलेन दिते ॥२०
रन्धने वसिला श्रीअद्वैत महाशय ।
चैतन्यचन्द्रेरे करि हृदये विजय ॥२१
पतिव्रता व्यञ्जनेर परिपाटि करे ।
यतेक प्रकार करे, येन चित्ते स्फुरे ॥२२
शाके ईश्वरेर बड़ प्रीति इहा जानि ।
नाना शाक दिलेन प्रकार दश आनि ॥२३
आचार्य्य रान्धेन, पतिव्रता कर्म करे ।
दुइजन भासे येन आनन्दसागरे ॥२४
अद्वैत बोलेन शुन कृष्णदासेर माता !
तोमारे कहिये आमि एक मनःकथा ॥२५
यत किछु करियाछि ए सब सम्भार ।
कोन्‌रूपे इहा प्रभु करेन स्वीकार ॥२६
यदि आसिबेन सन्न्यासीर गोष्टी लैया ।
किछु ना खाइब तबे जानि आमि इहा ॥२७
अपेक्षित यत यत महान्त सन्न्यासी ।
सभेइ प्रभुर सङ्गे भिक्षा करेन आसि ॥२८
सभेइ प्रभुरे करेन परम अपेक्षा ।
प्रभुसङ्गे सभे आसि प्रीते करे भिक्षा ॥२९
अद्वैत चिन्तेन मने हेन पाक हय ।
एकेश्वर प्रभु आसि करेन विजय ॥३०

तबे इहा सब मुञि पारों खाओयाइते ।
ए कामना मोर सिद्ध हय कोन् मते ॥३१
एइमत मने चिन्ते अद्वैत आचार्य्य ।
रन्धन करेन मने भाबि सेइ कार्य ॥३२
ईश्वरो करिया सङ्गेर नामेर ग्रहण ।
मध्याह्नादिक्रिया करिबारे हैल मन ॥३३
येसब सन्न्यासी प्रभुसङ्गे भिक्षा करे ।
ताँरा सबो चलिला मध्याह्न करिबारे ॥३४
हेनकाले महा झड़ बृष्टि आचम्बिते ।
आरम्भिला देवराज अद्वैतेर हिते ॥३५
शिलाबृष्टि चतुर्दिगे बाजे झन्झना ।
असम्भव वातास, बृष्टिर नाहि सीमा ॥३६
सर्वदिग अन्धकार हइल धूलाय ।
वातासे याइते केहो पथ नाहि पाय ॥३७
हेन झड़ बहे, केहो स्थित हैते नारे ।
केहो नाहि जाने कोथा लैया वाय कारे ॥३८
सबे यथा श्रीअद्वैत करेन रन्धन ।
तथा मात्र हय अल्प झड़ बरिषण ॥३९
यत न्यासी भिक्षा करे प्रभुर संहति ।
उद्देशो नाहिक कारो केबा गेला कति ॥४०
एथा श्रीअद्वैतसिंह करिया रन्धन ।
उपस्करि थुइलेन श्रीअन्न व्यञ्जन ॥४१
घृत, दधि, दुग्ध, सर, नवनी, पिष्टक ।
नानामत शर्करा, सन्देश, कदलक ॥४२
सभार उपरे दिया तुलसीमञ्जरी ।
ध्याने वसिलेन आनिबारे गौरहरि ॥४३
एकेश्वर प्रभु आइसेन येन मते ।
एइमत मने ध्यान करेन अद्वैते ॥४४
सत्य गौरचन्द्र अद्वैतेर इच्छामय ।
एकेश्वर महाप्रभु हइया विजय ॥४५
'हरे कृष्ण हरे कृष्ण' बलि प्रेमसुखे ।
प्रत्यक्ष हइला आसि अद्वैत सम्मुखे ॥४६
सम्भ्रमे अद्वैत पादपद्मे नमस्करि ।
आसन दिलेन, वसिलेन गौरहरि ॥४७
भिन्न सङ्ग केहो नाहि ईश्वर केवल ।
देखिया अद्वैत हैला आनन्दे विह्वल ॥४८
हरिषे करेन पत्नी सहिते सेवन ।
पादप्रक्षालन देहे चन्दन व्यजन ॥४९
वसिलेन महाप्रभु आनन्दे भोजने ।
अद्वैत करेन परिवेषण आपने ॥५०
यतेक व्यञ्जन देन अद्वैत सन्तोषे ।
प्रभुओ करेन परिग्रह प्रेमरसे ॥५१
यतेक व्यञ्जन प्रभु भोजन करेन ।
सभाकार किछुकिछु अवश्य एड़ेन ॥५२
अद्वैतेर प्रति प्रभु बोलेन हासिया ।
"केन एड़ि व्यञ्जन जानह तुमि इहा ?५३
कतेक व्यञ्जन खाइ चाहि जानिबार ।
अतएव किछुकिछु एड़िये सभार ।।"५४
हासिया बोलेन प्रभु शुनह आचार्य्य !
कोथाय शिखिला तुमि ए रन्धन कार्य ?५५
आमि त एमत कभु नाहि खाइ शाक ।
सकलि विचित्र यत करियाछ पाक ॥५६
यत देन श्रीअद्वैत प्रभु सब खाय ।
भक्तबाञ्छाकल्पतरु श्रीगौराङ्गराय ॥५७
दधि, दुग्ध, घृत, सर, सन्देश, अपार ।
यत देन, प्रभु सब करेन स्वीकार ॥५८
भोजन करेन श्रीचैतन्य भगवान् ।
अद्वैतसिंहेर करि पूर्ण मनस्काम ॥५९
परिपूर्ण हइल यदि प्रभुर भोजन ।
तखने अद्वैत करेन इन्द्रेर स्तवन ॥६०

आजि इन्द्र ! जानिलुँ तोमार अनुभव ।
आजि जानिलाम तुमि निश्चय वैष्णव ॥६१
आजि हैते तोमारे दिवाङ पुष्प जल ।
आजि इन्द्र ! तुमि मोरे किनिला केवल ॥६२
प्रभु बोले आजि त इन्द्रेरे बद्ध स्तुति ।
कि हेतु इहार ? कह देखि मोर प्रति ॥६३
अद्वैत बोलेन तुमि करह भोजन ।
कि कार्य तोमार इहा करिया श्रवण ॥६४
प्रभु बोले आर केने लुकाओ आचार्य्य !
यत झड़ बृष्टि सब तोमारि से कार्य ॥६५
झड़ेर समय नहे, तबे अकस्मात ।
महाझड़ महाबृष्टि महाशिलापात ॥६६
तुमि इच्छा करिया से ए सब उत्पात ।
कराइया आछ ताहा बुझिल साक्षात ॥६७
ये लागि इन्द्रेर द्वारे कराइला इहा ।
ताहो कहि एइ आमि विदित करिया ॥६८
सन्न्यासीर सङ्गे आमि करिले भोजन ।
किछु ना खाइब आमि ए तोमार मन ॥६९
एकेश्वर आइले से आमारे सकल ।
खाओयाइया निज इच्छा करिबा सफल ॥७०
अतएव ए सकल उत्पात सृजिया ।
निषेधिला न्यासिगणे मने आज्ञा दिया ॥७१
इन्द्र आज्ञाकारी ए तोमार कोन् शक्ति ।
भाग्ये से इन्द्रेर ये तोमारे करे भक्ति ॥७२
कृष्ण ना करेन यार सङ्कल्प अन्यथा ।
ये करिते पारे कृष्ण साक्षात सर्वथा ॥७३
कृष्णचन्द्र यार वाक्य करेन पालन ।
कि अद्भुत तारे एइ झड़ बरिषण ॥७४
यम काल मृत्यु यार आज्ञा शिरे धरे ।
नारदादि वाञ्छे योगेश्वर मुनीश्वरे ॥७५
ये तोमा' स्मरणे सर्व बन्धविमोचन ।
कि विचित्र तारे एइ झड़ बरिषण ॥७६
तोमा जाने हेनजन के आछे संसारे ।
तुमि कृपा करिले से भक्तिफल धरे ॥७७
अद्वैत बोलेन तुमि सेवकवत्सल ।
कायमनोवाक्ये आमि धरि एइ बल ॥७८
सर्वकाल सिंह आमि तोर भक्तिबले ।
एइ बर मोरे ना छाड़िबा कोन काले ॥७९
एइमत दुइ प्रभु वाकोवाक्य रसे ।
भोजन सम्पूर्ण हैल आनन्दविशेषे ॥८०
अद्वैतेर श्रीमुखेर ए सकल कथा ।
सत्य सत्य सत्य इथे नाहिक अन्यथा ॥८१
शुनिते ए सब कथा यार प्रीत नय ।
से अधम अद्वैतेर अदृश्य निश्चय ॥८२
हरि शङ्करेर येन प्रीत सत्य कथा ।
अबुध प्राकृत गणे ना बुझे सर्वथा ॥८३
एकेर अप्रीते हय दोहाँर अप्रीत ।
हरि-हरे येन तेन चैतन्य अद्वैत ॥८४
निरवधि अद्वैत ए सब कथा कय ।
जगतेर त्राण लागि कृपालु हृदय ॥८५
अद्वैतेर वाक्य बुझिबार शक्ति यार ।
जानिह ईश्वरसङ्गे भेद नाहि ताँर ॥८६
भक्ति करि ये शुनये ए सब आख्यान ।
कृष्णे भक्ति हय तार सर्वत्र कल्याण ॥८७
अद्वैतसिंहेर करि पूर्ण मनस्काम ।
वासाय चलिला श्रीचैतन्य भगवान् ॥८८
एइमत श्रीवासादि भक्तगण घरे ।
भिक्षा करि सभारेइ पूर्णकाम करे ॥८९
सर्वगोष्ठी लइ निरवधि सङ्कीर्त्तन ।
नाचायेन नाचेन आपने अनुक्षण ॥९०

दामोदर पण्डित आइरे देखिबारे।
गियाछिला, आइ देखि आइला सत्वरे ॥९१
दामोदर देखि प्रभु आनिया निभृते।
आइर वृत्तान्त लागिलेन जिज्ञासिते ॥९२
प्रभु बोले तुमि ये आछिला आइर काछे।
सत्य कह आइर कि विष्णुभक्ति आछे ?९३
परम तपस्वी निरपेक्ष दामोदर।
शुनि क्रोधे लागिलेन करिते उत्तर ॥९४
कि बलिला गोसाञि ! आइर भक्ति आछे ?
इहाओ जिज्ञास प्रभु! तुमि कोन् काजे ॥९५
आइर प्रसादे से तोमार विष्णुभक्ति।
यत किछु तोमार सकल ताँर शक्ति ॥९६
यतेक तोमार विष्णुभक्तिर उदय।
आइर प्रसादे सब जानिह निश्चय ॥९७
अश्रु कम्प स्वेद मूर्च्छा पुलक हुङ्कार।
यतेक आछये विष्णुभक्तिर बिकार ॥९८
क्षणेको आइर देहे नाहिक विराम।
निरवधि श्रीवदने सबे कृष्णनाम ॥९९
आइरो भक्तिर कथा जिज्ञास गोसाञि।
विष्णुभक्ति यारे बोले से-इ देख आइ ॥१००
मूर्त्तिमती भक्ति आइ कहिल तोमारे।
जानियाओ माया करि जिज्ञास आमारे ॥१०१
प्राकृतशब्देओ ये बा बलिबेक 'आइ'।
आइ शब्दप्रभावे ताहार दुःख नाइ ॥१०२
दामोदर मुखे शुनि आइर महिमा।
गौरचन्द्रप्रभुर आनन्दे नाहि सीमा ॥१०३
दामोदरपण्डितेरे धरि प्रेमरसे।
पुनःपुन आलिङ्गन करेन सन्तोषे ॥१०४
आज दामोदर तुमि आमारे किनिला।
मनेर वृत्तान्त सब आमार कहिला ॥१०५
यत किछु विष्णुभक्तिसम्पत्ति आमार।
आइर प्रसादे सब द्विधा नाहि आर ॥१०६
ताहान इच्छाय मुञि आछों पृथिवीते।
तान ऋण आमि कभु ना पारि शुधिते ॥१०७
आइ स्थाने बद्ध आमि शुन दामोदर !
आइरे देखिते आमि आछि निरन्तर ॥१०८
दामोदरपण्डितेरे प्रभु कृपा करि।
भक्तगोष्ठीसङ्गे वसिलेन गौरहरि ॥१०९
आइरो ये भक्ति आछे जिज्ञासे ईश्वरे।
से केबल शिक्षा करायेन जगतेरे ॥११०
बान्धबेर वार्त्ता येन जिज्ञासे बान्धबे।
कह बन्धु-सब कि ! कुशले आछ सभे ?१११
कुशल शब्देर अर्थ व्यक्त करिबारे।
भक्ति आछे करि वार्त्ता लयेन सभारे ॥११२
भक्तियोग थाके, तबे सकल कुशल।
भक्ति विने राजा हइलेओ अमङ्गल ॥११३
धन जन भोग यार आछये सकल।
भक्ति यार नाहि तार सर्व अमङ्गल ॥११४
अद्य खाद्य नाहि यार दरिद्रेर अन्त।
विष्णुभक्ति थाकिले से-इ से धनवन्त ॥११५
भिक्षा निमन्त्रण छले प्रभु सभा स्थाने।
व्यक्त करि इहा कहियाछेन आपने ॥११६
भिक्षा निमन्त्रणे प्रभु बोलेन हासिया।
चल तुमि आगे लक्षेश्वर हओ गिया ॥११७
तथा भिक्षा आमार ये हय लक्षेश्वर।
शुनिया ब्राह्मण सब चिन्तित अन्तर ॥११८
विप्रगण स्तुति करे बोलेन गोसाञि !
लक्षेर कि दाय सहस्रेको कारो नाञि ॥११९
तुमि भिक्षा ना करिले गार्हस्थ्य आमार।
एखनेइ पुड़िया हउक् छारखार ॥१२०

प्रभु बोले जान लक्षेश्वर बलि कारे ?
प्रतिदिन लक्ष नाम ये ग्रहण करे ॥१२१
से जनेर नाम आमि बलि 'लक्षेश्वर' ।
तथा भिक्षा आमार ना याइ अन्य घर ॥१२२
शुनिया प्रभुर कृपावाक्य विप्रगणे ।
चिन्ता छाड़ि महानन्द हैला मने मने ॥१२३
लक्ष नाम लैब प्रभु तुमि कर भिक्षा ।
महाभाग्य ! एमत कराओ तुमि शिक्षा ॥१२४
प्रतिदिन लक्ष नाम सर्वविप्रगणे ।
लयेन चैतन्यचन्द्र भिक्षार कारणे ॥१२५
हेनमते भक्तियोग लओयाय ईश्वरे ।
वैकुण्ठनायक भक्तिसागरे बिहरे ॥१२६
भक्ति लओयाइते श्रीचैतन्य अवतार ।
भक्ति विना जिज्ञासा ना करे प्रभु आर ॥१२७
प्रभु बोले ये जनेर कृष्णभक्ति आछे ।
कुशल मङ्गल तार नित्य थाके काछे ॥१२८
यार मुखे भक्तिर महत्व नाहि कथा ।
तार मुख गौरचन्द्र ना देखे सर्वथा ॥१२९
निज गुरु श्रीकेशवभारतीर स्थाने ।
भक्ति ज्ञान दुइ जिज्ञासिला एकदिने ॥१३०
प्रभु बोले ज्ञान भक्ति दुइते के बड़ ।
बिचारिया गोसाञि ! कह त करि दढ़ ॥१३१
कथोक्षणे भारती बिचार करि मने ।
कहिते लागिला गौरसुन्दरेर स्थाने ॥१३२
भारती बोलेन मने बिचारिल तत्त्व ।
सभा हैते बड़ देखि भक्तिर महत्त्व ॥१३३
प्रभु बोले ज्ञान हैते भक्ति बड़ केने ?
ज्ञान बड़ करिया से कहे न्यासिगणे ॥१३४
भारती बोलेन ताँरा ना बुझे बिचार ।
महाजनपथे से गमन सभाकार १३५
वेदे शास्त्रे महाजनपथ से लओयाय ।
ताहा छाड़ि अबुध ये अन्य पथे याय ॥१३६
ब्रह्मा शिव नारद प्रह्लाद व्यास शुक ।
सनकादि नन्द युधिष्ठिर पञ्च रूप ॥१३७
प्रियव्रत पृथु ध्रुव अक्रूर उद्धव ।
महाजन हेन नाम यत आछे सब ॥१३८
भक्ति से मागेन सभे ईश्वरचरणे ।
ज्ञान बड़ हैले भक्ति मागे कि कारणे ?१३९
विनि बिचारिया कि से सब महाजन ।
मुक्ति छाड़ि भक्ति केने मागे अनुक्षण ॥१४०
सभार वचन एइ पुराणे प्रमाण ।
कि बर मागिला ब्रह्मा ईश्वरेर स्थान ॥१४१

तथाहि (भा० १०।१४।३०)—

"तदस्तु मे नाथ ! स भूरिभागो
भवेऽत्र वान्यत्र तु वा तिरश्चाम् ।
येनाहमेकोऽपि भवज्जनानां
भूत्वा निषेवे तव पादपल्लवम् ॥" १४२

टीका ।

तदिति । तत्—तस्मात्, भूरिभागः महद्भाग्यं, अहम्, अत्र भवे—ब्रह्मजन्मनि तिरश्चामपि मध्ये जन्म तस्मिन् वा येन भाग्येन भवदीयानां जनानाम्, एकोऽपि—यः कश्चिदपि, भूत्वा, निषेवे अत्यर्थं सेवेयेति । श्रीधरः ।

अनुवाद ।

हे नाथ! मेरा उस प्रकार महान् सौभाग्य का उद्भव हो, जिस प्रकार सौभाग्यका फलस्वरूप मैं इस ब्रह्मजन्म में ही हो, अथवा पशु पक्षी प्रभृति जिस किसी जन्म में ही हो, आपके अनुगत जनों के मध्य में एक व्यक्ति होकर आपके पादपद्म की सेवा कर सकँ ।

(श्लोकार्थ—)

किबा ब्रह्मजन्म किबा हउ यथातथा ।
दास हइ येन तोमा सेविये सर्वथा ॥१४३
एइमत यत महाजन सम्प्रदाय ।
सभेइ सकल छाड़ि भक्तिमात्र चाय ॥१४४

तथाहि (श्रीविष्णुपुराणे १।२०।१८)

नाथ ! योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम् ।
तेषु तेष्वच्युता भक्तिरच्युतास्तु सदा त्वयि ॥
१४५

अनुवाद ।

प्रह्लाद भक्तवत्सल श्रीनृसिंहदेव को कहे थे, नाथ ! मैं सहस्र सहस्र जन्म के मध्य में जिस किसी में जन्म ग्रहण क्यों न करूँ, हे अच्युत ! उस उस जन्म में ही आप में सर्वदा अविच्युता व्यक्ति हो ।

स्वकर्मफलनिर्दिष्टां यां यां योनिं व्रजाम्यहम् ।
तस्यां तस्यां हृषीकेश ! त्वयि भक्तिर्दृढ़ास्तु मे
॥१४६

अनुवाद ।

मैं स्वकीय कर्म फल से जो भी जन्म प्राप्त करूँ हे हृषीकेश ! उस उस जन्म में ही जैसे आपके श्रीचरणों में मेरी दृढ़ा भक्ति हो ।

(भा० १०।४७।७६)—

कर्मभिर्भ्राम्यमाणानां यत्र क्वापीश्वरेच्छया ।
मङ्गलाचरितैर्दानै रतिर्नः कृष्ण ईश्वरे ॥१४७

अनुवाद ।

जगदीश्वर की इच्छा से स्वकृत कर्मानुसार जहाँपर हम जन्मग्रहण क्यों करें, मङ्गल आचरण एवं दानादि सत् कर्मफलस्वरूप, हम सब का अनुराग उन ईश्वर श्रीकृष्ण में ही हो ।

"अतएव सर्वमते भक्ति से प्रधान ।
महाजनपथ सर्वशास्त्रेर प्रमाण ॥" १४८

तथाहि (महाभारते वनपर्वणि ३१३।११७)

"तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्ना
नासावृषिर्यस्य मतं न भिन्नम् ।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां
महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥" १४९

टीका ।

तर्क इति । अप्रतिष्ठः—प्रतिष्ठारहितः, अस्थिर इत्यर्थः । प्राचीनैरप्युक्तं—"यत्नेनापादितोऽप्यर्थः कुशलैरनुमातृभिः । अभियुक्ततरैरन्यैरथैवोपपाद्यते । इति । गुहायामिति—गिरिगुहावद्दुर्गमप्रदेश, पञ्चकोषपरम्परारूपगुहाभ्यन्तर इति वा । महाजनः भगवद्भक्तः, भक्तिसम्पत्तिशालित्वादेव जनस्य महत्त्वम् । येन—पथा, गतः, स एव पन्थाः, तेनैव पथा गन्तव्यमिति भावः ।

अनुवाद ।

मनुष्य मति प्रभव तर्क की स्थिरता नहीं है, श्रुतिसमूह भी विभिन्न वार्त्ता वहन करती रहती हैं, ऐसा कोई भी ऋषि नहीं हैं, जिन में पारस्परिक मतानैक्य नहीं है, कर्त्तव्याकर्त्तव्य रूप अनुशासनात्मक धर्म का यथार्थ स्वरूप गिरिगुहा के समान दुर्गमस्थान में अवस्थित है, सुतरां महाजनगण जिस पथ को अवलम्बन कर चलते रहते हैं, वह पथ ही उपयुक्त पथ है ।

'भक्ति बड़' शुनि प्रभु भारतीर मुखे ।
हरि बलि गर्जिते लागिला प्रेम सुखे ॥१५०
प्रभु बोले आमि कथोदिन पृथिवीते ।
थाकिलाम एइ सत्य कहिलाम तोमाते ॥१५१
यदि 'ज्ञान बड़' बलिते आमारे ।
प्रवेशितों आजि तबे समुद्र भितरे ॥१५२
सन्तोषे धरेन प्रभु गुरुर चरणे ।
गुरुओ प्रभुरे नमस्करे प्रीतमने ॥१५३
प्रभुओ बोले यार मुखे नाहि भक्तिकथा ।
तप शिखा-सूत्र त्याग सब तार वृथा ॥१५४

भक्ति विना प्रभुर जिज्ञासा नाहि आर ।
भक्तिरसमय श्रीचैतन्य अवतार ॥१५५
रात्रि दिन एको ना जानेन भक्तगण ।
सर्वदा करेन नृत्य कीर्त्तन गर्जन ॥१५६
एकदिन अद्वैत सकल भक्त प्रति ।
बलिलेन परानन्दे मत्त हइ अति ॥१५७
शुन भाइ सब ! एक कर समवाय ।
मुख भरि गाइ, आजि श्रीचैतन्यराय ॥१५८
आजि आर कोन अवतार गाअया नाजि ।
सर्व अवतारमय चैतन्यगोसाञि ॥१५९
ये प्रभु करिल सर्वजगत उद्धार ।
आमा'सभा लागि ये प्रभुर अवतार ॥१६०
सर्वत्र आमरा याँर प्रसादे पूजित ।
सङ्कीर्त्तन हेन धन ये कैल विदित ॥१६१
नाचि आमि, तोमरा चैतन्ययश गाओ ।
सिंह हइ बोल पाछे मने भय पाओ ॥१६२
प्रभु से आपना लुकायेन निरन्तर ।
क्रुद्ध पाछे हयेन सभार एइ डर ॥१६३
तथापि अद्वैतवाक्य अलङ्घ्य सभार ।
गाइते लागिला श्रीचैतन्य अवतार ॥१६४
नाचेन अद्वैतसिंह आनन्दे विह्वल ।
चतुर्दिके गाय सभे चैतन्यमङ्गल ॥१६५
नव अवतारेर शुनिया नाम यश ।
सकल वैष्णव हैल आनन्दे विबश ॥१६६
आपने अद्वैत चैतन्येर गीत करि ।
बोलाइया नाचे प्रभु जगत विस्तारि ॥१६७
श्रीचैतन्य नारायण करुणा सागर ।
दीन दुःखितेर बन्धु ! मोरे दया कर ॥१६८
अद्वैतसिंहेर श्रीमुखेर एइ पद ।
इहार कीर्त्तने बाढ़े सकल सम्पद ॥१६९
केहो बोले जयजय श्रीशचीनन्दन ।
केहो बोले जय गौरचन्द्र नारायण ॥१७०
जय सङ्कीर्त्तनप्रिय श्रीगौरगोपाल ।
जय भक्तजनप्रिय पाषण्डीर काल ॥१७१
नाचेन अद्वैतसिंह परम उद्दाम ।
सबे एक श्रीचैतन्य गुण कर्म नाम ॥१७२

श्रीराग

पुलकित चित गा'य, सुखे गड़ागड़ि याय,
देख रे चैतन्य अवतार ।
वैकुण्ठनायक हरि, द्विजरूपे अवतरि,
सङ्कीर्त्तने करेन बिहार ॥१७३
कनक जिनिया कान्ति, श्रीविग्रहशोभे रे,
आजानुलम्बित माला साजे रे ।
सन्न्यासीर रूपे, आपनरसे विह्वल,
ना जानि केमन सुखे नाचे रे ॥१७४
जयजय श्रीगौर, सुन्दर करुणासिन्धु,
जयजय वृन्दावनराया रे ।
जयजय सम्प्रति, नवद्वीप पुरन्दर,
चरणकमल देह छाया रे ॥१७५

एइसब कीर्त्तन करे भक्तगण ।
नाचेन अद्वैत भावि चैतन्यचरण ॥१७६
नव अवतारेर नूतन यश शुनि ।
उल्लाले वैष्णव करे जय जय ध्वनि ॥१७७
कि अद्भुत हइल से कीर्त्तन आनन्द ।
सबे ताहा वर्णिते जानेन नित्यानन्द ॥१७८
परम उद्दाम शुनि कीर्त्तनेर ध्वनि ।
श्रीविजय आसिया हइला न्यासिमणि ॥१७९
प्रभु देखि भक्त सब अधिक उल्लासे ।
गायेन, अद्वैत नृत्य करेन हरिषे ॥१८०

आनन्दे प्रभुरे केहो नाहि करे भय ।
साक्षाते गायेन सभे चैतन्यविजय ॥१८१
निरवधि दास्यभावे प्रभुर बिहार ।
मुञि कृष्णदास बइ ना बोलये आर ॥१८२
हेन कारो शक्ति नाहि सम्मुखे ताहाने ।
ईश्वर करिया बलिबेक दास विने ॥१८३
तथापिह सभे अद्वैतेर बल धरि ।
गायेन निर्भर हैया चैतन्य श्रीहरि ॥१८४
क्षणेक थाकिया प्रभु आत्मस्तुति शुनि ।
लज्जा येन पाइते लागिला न्यासिमणि ॥१८५
सभा' शिक्षाइते शिक्षागुरु नारायण ।
वासाय चलिला शुनि आपन कीर्त्तन ॥१८६
तथापि काहारो चित्ते ना जन्मिल भय ।
विशेषे गायेन आरो चैतन्यविजय ॥१८७
आनन्दे काहारो वाह्य नाहिक शरीरे ।
सभे देखे प्रभु आछे कीर्त्तन भितरे ॥१८८
मत्तप्राय सभे श्रीचैतन्य यश गाय ।
सुखे शुने सुकृति, दुष्कृति दुःख पाय ॥१८९
श्रीचैतन्य यशे प्रीत ना हय याहार ।
ब्रह्मचर्य्य सन्न्यासे बा कि कार्य ताहार ॥१९०
एइमत परानन्दसुखे भक्तगण ।
सर्वकाल करेन श्रीहरिसङ्कीर्त्तन ॥१९१
ए सब आनन्द क्रीड़ा पढ़िले शुनिले ।
एइ सब गोष्ठीते आसिया सेहो मिले ॥१९२
नृत्य गीत करि सभे महाभक्तगण ।
आइलेन प्रभुरे करिते दरशन ॥१९३
श्रीचैतन्यप्रभु निज कीर्त्तन शुनिया ।
सभारे देखान भय आछेन शुतिया ॥१९४
सुकृति गोविन्द जानाइलेन प्रभुरे ।
वैष्णव सकल आसियाछेन दुयारे ॥१९५
गोविन्देरे आज्ञा हैल सभारे आनिते ।
शयने आछेन ना चाहेन कारो भिते ॥१९६
भययुक्त हइया सकल भक्तगण ।
चिन्तिते लागिला गौरचन्द्रेर चरण ॥१९७
क्षणेके उठिला प्रभु श्रीभक्तवत्सल ।
बलिते लागिला अये वैष्णव सकल ! ॥१९८
अये अये श्रीनिवासपण्डित उदार !
आजि तुमि सब कि करिला अवतार ॥१९९
छाड़िया कृष्णेर नाम कृष्णेर कीर्त्तन ।
कि गाइला आमारे त बुझाह एखन ॥२००
महावक्ता श्रीनिवास बोलेन गोसाञि !
जीवेर त स्वतन्त्रता शक्ति किछु नाञि ॥२०१
के करायेन येन बोलायेन ईश्वरे ।
से-इ आजि बलिलाम कहिल तोमारे ॥२०२
प्रभु बोले तुमिसब हइया पण्डित ।
लुकाय ये तारे केने करह विदित ॥२०३
शुनिया प्रभुर वाक्य पण्डित श्रीवासे ।
हस्ते सूर्य आच्छादिया मनेमने हासे ॥२०४
प्रभु बोले कि संकेत कैला हस्त दिया ।
तोमार संकेत तुमि कह त भाङ्गिया ॥२०५
श्रीवास बोलेन हस्ते सूर्य ढाकिलाम ।
तोमारे विदित करि एइ कहिलाम ॥२०६
हस्ते कि कखनो पारि सूर्य आच्छादिते ।
सेइ मत असम्भव तोमा लुकाइते ॥२०७
सूर्य यदि हस्ते बा हयेन आच्छादित ।
तभु तुमि लुकाइते नार कदाचित ॥२०८
तुमिओ कि लुकाइबा पृथिवी भितरे ।
ये नारिल लुकाइते क्षीरोदसागरे ॥२०९
हेम गिरि सेतुबन्ध पृथिवी पर्य्यन्त ।
तोमार निर्मल यशे पूरिल दिगन्त ॥२१०

आब्रह्माण्ड पूर्ण हैल तोमार कीर्त्तने ।
कत जन दण्ड तुमि करिबा केमने ॥२११
सर्वकाल भक्तजय बाढ़ाय ईश्वरे ।
हेनकाले अद्भुत हइल आसि द्वारे ॥२१२
सहस्रसहस्र जन ना जानि कोथार ।
जगन्नाथ देखि आइल प्रभु देखिबार ॥२१३
केहो बा त्रिपुरा केहो बा चाटिग्रामवासी ।
श्रीहट्टिया लोक केहो केहो बङ्गदेशी ॥२१४
सहस्रसहस्र लोक करेन कीर्त्तन ।
श्रीचैतन्य अवतार करिया वर्णन ॥२१५
जयजय श्रीकृष्णचैतन्य वनमाली ।
जयजय निजभक्तिरसकुतूहली ॥२१६
जयजय परमसन्न्यासीरूपधारी ।
जयजय सङ्कीर्त्तनरसिक मुरारि ॥२१७
जयजय द्विजराज वैकुण्ठबिहारी ।
जयजय जय जगतेर उपकारी ॥२१८
जय कृष्णचैतन्य श्रीशचीरनन्दन ।
एइमत गाय नाचे शत सङ्ख्य जन ॥२१९
श्रीवास बोलेन प्रभु ! एबे कि करिबा ।
सकल संसार गाय कोथा लुकाइबा ॥२२०
मुञि कि शिखाइयाछों ए सब लोकेरे ।
एइमत गाय प्रभु ! सकल संसारे ॥२२१
अदृश्य अव्यक्त तुमि हइयाओ नाथ !
करुणाये हइयाछ जीवेर साक्षात ॥२२२
लुकाओ आपने तुमि प्रकाश आपने ।
यारे अनुग्रह कर जाने से-इ जने ॥२२३
प्रभु बोले तुमि निजशक्ति प्रकाशिया ।
बोलाह लोकेर मुखे जानिलाम इहा ॥२२४
तोमारे हारिल मुञि शुनह पण्डित !
जानिलाम तुमि सर्वशक्तिसमन्वित ॥२२५
सर्वकाल प्रभु बाढ़ायेन भक्तजय ।
ए तान स्वभाव वेदे भागवते कय ॥२२६
हास्यमुखे सर्व वैष्णवेरे गौरराय ।
बिदाय दिलेन सभे चलिला वासाय ॥२२७
हेन से चैतन्यदेव श्रीभक्तवत्सल ।
इहाने 'कृष्ण' करि गायेन सकल ॥२२८
नित्यानन्द अद्वैतादि यतेक प्रधान ।
सभे बोले श्रीकृष्णचैतन्य भगवान् ॥२२९
ए सकल ईश्वरेर वचन लङ्घिया ।
अन्येरे ये बोले कृष्ण से-इ अभागिया ॥२३०
शेषशायी लक्ष्मीकान्त श्रीवत्सलाञ्छन ।
कौस्तुभभूषण आर गरुड़वाहन ॥२३१
एसब कृष्णेर चिह्न जानिह निश्चये ।
गङ्गा आर कारो पादपद्मे जन्म लये ॥२३२
श्रीचैतन्य विने इहा अन्ये ना सम्भवे ।
एइ कहे वेदे शास्त्रे सकल वैष्णवे ॥२३३
सर्व वैष्णवेर वाक्य ये आदरे लय ।
सेइ सब जने पाय सर्वत्र विजय ॥२३४
हेनमते महाप्रभु श्रीगौरसुन्दर ।
भक्तगोष्ठी सङ्गे बिहरेन निरन्तर ॥२३५
प्रभु बेढ़ि भक्तगण वैसेन सकल ।
चौदिके शोभये येन चन्द्रेर मण्डल ॥२३६
मध्ये श्रीवैकुण्ठनाथ न्यासिचूड़ामणि ।
निरवधि कृष्णकथा करि हरिध्वनि ॥२३७
हेनइ समये दुइ महाभाग्यवान् ।
हइलेन आसिया प्रभुर विद्यमान ॥२३८
शाकर मल्लिक आर रूप दुइ भाइ ।
दुइ प्रति कृपादृष्ट्ये चाहिला गोसाञि ॥२३९
दूरे थाकि दुइ भाइ दण्डवत करि ।
काकुर्वाद करेन दशने तृण धरि ॥२४०

जयजय महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्य ।
याँहार कृपाय हैल सर्वलोक धन्य ॥२४१
जय दीनवत्सल जगत्‌हितकारी ।
जयजय परम सन्न्यासिरूपधारी ॥२४२
जयजय सङ्कीर्त्तनविनोद अनन्त ।
जयजयजय सर्व आदि मध्य अन्त ॥२४३
आपने हइया श्रीवैष्णव अवतार ।
भक्ति दिया उद्धारिला सकल संसार ॥२४४
तबे प्रभु ! मोरे ना उद्धार कोन् काजे ।
मुञि कि ना हङ प्रभु संसारेर माझे ॥२४५
आजन्म विषयभोगे हइया मोहित ।
ना भजिलुँ तोमार चरण निज-हित ॥२४६
तोमार भक्तेर सङ्गे गोष्ठी ना करिलुँ ।
तोमार कीर्त्तन ना करिलुँ ना शुनिलुँ ॥२४७
राजपात्र करि मोरे बञ्चना करिला ।
तबे मोरे मनुष्यजनम केने दिला ॥२४८
ये मनुष्यजन्म लागि देवे काम्य करे ।
हेन जन्म दियाओ बञ्चिला प्रभु मोरे ॥२४९
एबे एइ कृपा कर अमाया हइया ।
बृक्षमूले पड़ि थाकों तोर नाम लैया ॥२५०
ये तोमार प्रियभक्त लओयाय तोमारे ।
अवशेषपात्र येन हङ तार घरे ॥२५१
एइमत रूप सनातन दुइ भाइ ।
स्तुति करे शुने प्रभु चैतन्यगोसाञि ॥२५२
कृपादृष्ट्ये प्रभु दुइ भाइरे चाहिया ।
बलिते लागिल अति सदय हइया ॥२५३
प्रभु बोले भाग्यवन्त तुमि दुइजन ।
बाहिर हइला छिण्डि संसार बन्धन ॥२५४
विषयबन्धने बद्ध सकल संरार ।
से बन्धन हैते तुमि दुइ हैला पार ॥२५५

प्रेमभक्ति बाञ्छा यदि करह एखने ।
तबे धरि पड़ एइ अद्वैतचरणे ॥२५६
भक्तिर भाण्डारि श्रीअद्वैतमहाशय ।
अद्वैतेर कृपाये से कृष्णभक्ति हय ॥२५७
शुनिया प्रभुर आज्ञा दुइ महाजने ।
दण्डवत पड़िलेन अद्वैतचरणे ॥२५८
जयजय श्रीअद्वैत पतितपावन !
मुइ दुइ पतितेरे करह मोचन ॥२५९
प्रभु बोले शुनशुन आचार्य्यगोसाञि !
कलियुगे एमत विरक्त झाट नाञि ॥२६०
राज्यसुख छाड़ि, काँथा करङ्ग लइया ।
मथुराय थाकेन कृष्णेर नाम लैया ॥२६१
आमायाय कृष्णभक्ति देह ए दोँहारे ।
जन्मजन्म आर येन कृष्ण ना पासरे ॥२६२
भक्तिर भाण्डारी तुमि विने तुमि दिले ।
कृष्णभक्ति कृष्णभक्त कृष्ण कारे मिले ?२६३
अद्वैत बोलेन प्रभु ! सर्वदाता तुमि ।
तुमि आज्ञा दिले से दिबारे पारि आमि ॥२६४
प्रभु आज्ञा दिले से भाण्डारी दिते पारे ।
एइमत यारे कृपा कर यार द्वारे ॥२६५
काय-मन-वचने मोहोर एइ कथा ।
ए दुइर प्रेम भक्ति हउक सर्वथा ॥२६६
शुनि प्रभु अद्वैतेर कृपायुक्त बाणी ।
उच्च करि बलिते लागिला हरिध्वनि ॥२६७
दवीरखासेरे प्रभु बलिते लागिला ।
एखने तोमार कृष्णप्रेमभक्ति हैला ॥२६८
अद्वैतेर प्रसादे से हय प्रेम भक्ति ।
जानिह अद्वैत श्रीकृष्णेर पूर्ण शक्ति ॥२६९
कथोदिन जगन्नाथ-श्रीमुख देखिया ।
तबे दुइ भाइ मथुराय थाक गिया ॥२७०

तोमा सभा हैते यत राजस तामस ।
पश्चिमा सभारे गिया देह भक्तिरस ॥२७१
आमिह देखिब गिया मथुरामण्डल ।
आमि थाकिबारे स्थल करिह बिरल ॥२७२
शाकरमल्लिक नाम घुचाइया तान ।
सनातन अवधूत थुइलेन नाम ॥२७३
अद्यापिह दुइ भाइ—रूप सनातन ।
चैतन्यकृपाय हैला विख्यात भुवन ॥२७४
यार यत कीर्त्ति भक्तिमहिमा उदार ।
चैतन्यचन्द्र से सब करेन प्रचार ॥२७५
नित्यानन्द तत्त्व किबा अद्वैतेर तत्त्व ।
यत महाप्रिय भक्तगोष्ठीर महत्त्व ॥२७६
चैतन्यप्रभु से सब करिला प्रकाशे ।
सेइ प्रभु सब इहा कहेन सन्तोषे ॥२७७
ये भक्त ये वस्तु यार येन अवतार ।
वैष्णव वैष्णवी यार अंशे जन्म यार ॥२७८
यार येनमत पूजा, यार ये महत्त्व ।
चैतन्यप्रभु से सब करिलेन व्यक्त ॥२७९
एकदिन प्रभु वसि आछे सुप्रकाशे ।
अद्वैत श्रीवास आदि भक्त चारि पाशे ॥२८०
श्रीनिवासपण्डितेरे ईश्वर आपने ।
आचार्य्येर वार्त्ता जिज्ञासेन तान स्थाने ॥२८१
प्रभु कहे श्रीनिवास ! कह त आमारे ।
किरूप वैष्णव तुमि वास' अद्वैतेरे ॥२८२
मने भाबि बलिला श्रीवास महाशय ।
शुक बा प्रह्लाद येन मोर चित्ते लय ॥२८३
अद्वैतेर उपमा प्रह्लाद शुक येन ।
शुनि प्रभु क्रोधे श्रीवासेरे मारिलेन ॥२८४
पिता येन पुत्रे शिखाइते येन मारे ।
एइमत एक चड़ हैल श्रीवासेरे ॥२८५
कि बलिलि कि बलिलि पण्डित-श्रीवास !
मोहोर नाढ़ारे कह शुक बा प्रह्लाद ॥२८६
ये शुकेरे 'मुक्त' तुमि बोल सर्वमते ।
कालिर बालक शुक नाढ़ार अग्रेते ॥२८७
एत बड़ वाक्य मोर नाढ़ारे बलिलि ।
आजि बड़ श्रीवासिया मोरे दुःख दिलि ॥२८८
एत बलि क्रोधे हस्ते दीपयष्टी लैया ।
श्रीवासेरे मारिबारे यान खेदाड़िया ॥२८९
सम्भ्रमे उठिया श्रीअद्वैत महाशय ।
धरिला प्रभुर हस्ते करिया विनय ॥२९०
बालकेरे बाप ! शिखाइबा कृपा-मने ।
के आछे तोमार क्रोधपात्र त्रिभुवने ॥२९१
आर्य्येर वाक्ये प्रभु क्रोध करि दूर ।
आवेशे कहेन तान महिमा प्रचुर ॥२९२
प्रभु बोले तोहोर बालक शिशु तोर ।
एतेके सकल क्रोध दूरे गेल मोर ॥२९३
मोर नाढ़ा जानिबारे आछे हेन जन ।
ये मोहोरे आनिलेक भाङ्गिया शयन ॥२९४
प्रभु बोले अये श्रीनिवास महाशय !
मोहोर नाढ़ारे एइ तोमार विनय ॥२९५
शुक आदि करि सब बालक उहार ।
नाढ़ार पाछे त जन्म जानिह सभार ॥२९६
अद्वैतेर लागि मोर एइ अवतार ।
मोर कर्णे बाजे आसि नाढ़ार हुङ्कार ॥२९७
शयने आछिलुँ मुञि क्षीरोदसागरे ।
जागाइ आनिल मोरे नाढ़ार हुङ्कारे ॥२९८
श्रीवासेर अद्वैतेर प्रति बड़ प्रीत ।
प्रभुवाक्य शुनि हैला अति हरषित ॥२९९
महाभये कम्प हइ बोलेन श्रीवास ।
अपराध करिलुँ, क्षमह मोरे नाथ !३००

तोमार अद्वैततत्त्व जानह तुमि से ।
तुमि जानाइले से जानये अन्यदासे ॥३०१
आजि मोर महाभाग्य सकल मङ्गल ।
शिखाइया आमारे आपने कैला फल ॥३०२
एखने से ठाकुराली बलिये तोमार ।
आजि बड़ मने बल बाढ़िल आमार ॥३०३
एइ मोर मनेर सङ्कल्प आजि हैते ।
मदिरा यबनी यदि धरये अद्वैते ॥३०४
तथापि करिब भक्ति अद्वैतेर प्रति ।
कहिलुँ तोमारे प्रभु ! सत्य करि अति ॥३०५
तुष्ट हइलेन प्रभु श्रीवास वचने ।
पूर्वप्राय आनन्दे वसिला तिनजने ॥३०६
परम रहस्य ए सकल पुण्यकथा ।
इहार श्रवणे कृष्ण पाइये सर्वथा ॥३०७
यार येन प्रभाब याहार येन भक्ति ।
ये बा आगे ये बा पाछे यार येन शक्ति ॥६०८
सभार सर्वज्ञ एक प्रभु गौरराय !
आर जाने ये ताहाने भजे अमायाय ॥३०९
विष्णुतत्त्व येन अविज्ञात वेदवाणी ।
एइमत वैष्णवेरो तत्त्व नाहि जानि ॥३१०
सिद्धवैष्णवेर अति विषम व्यभार ।
ना बुझि निन्दिया मरे सकल संसार ॥३११
सिद्धवैष्णवेर येन विषम व्यभार ।
साक्षाते देखह भागवत कथा-सार ॥३१२
वैष्णवप्रधान भृगु ब्रह्मार नन्दन ।
अहर्निश मने भाबे याँर श्रीचरण ॥३१३
से प्रभुर बक्षे करिलेन पदाघात ।
तथापि वैष्णवश्रेष्ठ देखह साक्षात ॥३१४
प्रसङ्गे शुनह भागवतेर आख्यान ।
ये निमित्त भृगु करिलेन हेन काम ॥३१५
पूर्वे सरस्वतीतीरे महा-ऋषिगण ।
आरम्भिला महायज्ञ पुराणश्रवण ॥३१६
सभे शास्त्रकर्त्ता सभे महातपोधन ।
अन्योऽन्ये लागिल ब्रह्मबिचार कथन ॥३१७
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तिनजन माझे ।
के प्रधान ? बिचारेन मुनि समाजे ॥३१८
केहो बोले ब्रह्मा बड़ केहो महेश्वर ।
केहो बोले विष्णु बड़ सभार उपर ॥३१९
पुराणेइ नानामत करेन कथन ।
शिव बड़ कोथाओ कोथाओ नारायण ॥३२०
तबे सब ऋषिगण मिलिया भृगुरे ।
आदरिला ए प्रमाण तत्त्व जानिबारे ॥३२१
ब्रह्मार मानसपुत्र तुमि महाशय !
सर्वमते तुमि ज्येष्ठ श्रेष्ठ तत्त्व मय ॥३२२
तुमि इहा जान गिया करिया बिचार ।
सन्देह खण्डाह आसि आमरा सभार ॥३२३
तुमि ये कहिबा से-इ सभार प्रमाण ।
शुनि भृगु चलिलेन आगे ब्रह्मा-स्थान ॥३२४
ब्रह्मार सभाय गिया भृगु मुनिवर ।
दम्भ करि रहिलेन ब्रह्मार गोचर ॥३२५
पुत्र देखि ब्रह्मा बड़ सन्तोष हइला ।
सकल कुशल जिज्ञासिबारे लागिला ॥३२६
सत्त्व परीक्षिते भृगु ब्रह्मार नन्दन ।
श्रद्धा करि ना शुनेन बापेर वचन ॥३२७
स्तुति बा गौरव कि बिनय नमस्कार ।
किछु ना करेन पिता पुत्र व्यबहार ॥३२८
देखिया पुत्रेर अनादर अव्यभार ।
क्रोधे ब्रह्मा हइलेन अग्नि अवतार ॥३२९
भस्म करिबेन हेन क्रोधे मग्न हैला ।
देखिया पितार मूर्त्ति भृगु पलाइला ॥३३०

सभे बुझालेन ब्रह्मार पाये धरि।
पुत्रेरे कि गोसाञि! एमत क्रोध करि? ३३१
तबे पुत्रस्नेहे ब्रह्मा क्रोध पासरिला।
जल पाइ येन अग्नि सुसाम्य हइला ॥३३२
तबे भृगु ब्रह्मारे बुझिया भालमते।
कैलासे आइला महेश्वर परीक्षिते ॥३३३
भृगु देखि महेश्वर आनन्दित हैया।
उठिला पार्वती सङ्गे आदर करिया ॥३३४
ज्येष्ठ भाइ गौरवे आपने त्रिलोचन।
प्रेमयोगे उठिला करिते आलिङ्गन ॥३३५
भृगु बोले महेश! परश नाहि कर।
यतेक पाषण्डवेश सब तुमि धर ॥३३६
भूत प्रेत पिशाच अस्पृश्य यत आछे।
हेन सब पाषण्ड राखह तुमि काछे ॥३३७
यतेक उत्पथ से तोमार व्यवहार।
भस्मास्थिधारण कोन् शास्त्रेर आचार ॥३३८
तोमार परशे स्नान करिते जुयाय।
दूरे थाक दूरे थाक अये भूतराय! ३३९
परीक्षा निमित्ते भृगु बोलेन कौतुके।
कभु शिवनिन्दा नाहि भृगुर श्रीमुखे ॥३४०
भृगुवाक्ये महाक्रोध हैला त्रिलोचन।
त्रिशूल तुलिया लइलेन सेइक्षण ॥३४१
ज्येष्ठभाइ धर्म पासरिलेन शङ्कर।
हइलेन येहेन संहारमूर्त्तिधर ॥३४२
शूल तुलिलेन शिव भृगुरे मारिते।
आथेव्यथे देवी आसि धरिलेन हाथे ॥३४३
चरणे धरिया बुझायेन महेश्वरी।
ज्येष्ठ भाइरे कि प्रभु! एत क्रोध करि? ३४४
देवीवाक्ये लज्जा पाइ रहिला शङ्कर।
भृगुओ चलिला श्रीवैकुण्ठ कृष्णघर ॥३४५

श्रीरत्नखट्टाय प्रभु आछेन शयने।
लक्ष्मी सेवा करिते आछेन श्रीचरणे ॥३४६
हेनइ समये भृगु आसि अलक्षिते।
पदाघात करिलेन प्रभुर बक्षेते ॥३४७
भृगु देखि महाप्रभु सम्भ्रमे उठिया।
नमस्करिलेन प्रभु महाप्रीत हैया ॥३४८
लक्ष्मीर सहिते प्रभु भृगुर चरण।
सन्तोषे करिते लागिलेन प्रक्षालण ॥३४९
वसिते दिलेन आनि उत्तम आसन।
श्रीहस्ते ताहान अङ्गे लेपेन चन्दन ॥३५०
अपराधिप्राय येन हइया आपने।
अपराध मागिया लयेन तान स्थाने ॥३५१
तोमार शुभ विजय आमि ना जानिया।
अपराध करियाछि क्षम' तुमि इहा ॥३५२
एइ ये तोमार पादोदक पुण्यजल।
तीर्थेरे करये तीर्थ हेन सुनिर्मल ॥३५३
यतेक ब्रह्माण्ड वैसे आमार देहेते।
यत लोकपाल सब आमार सहिते ॥३५४
पादोदक दिया आजि करिला पवित्र।
अक्षय हइया रहु तोमार चरित्र ॥३५५
एइ ये तोमार श्रीचरणचिह्न धूलि।
बक्षे राखिलाम आमि हइ कुतूहली ॥३५६
लक्ष्मीसङ्गे निजवक्षे दिल आमि स्थान।
वेदे येन 'श्रीवत्सलाञ्छन' बोले नाम ॥३५७
शुनिया प्रभुर वाक्य, विनय व्यभार।
काम क्रोध लोभ मोह सकलेर पार ॥३५८
देखि महा-ऋषि पाइलेन चमत्कार।
लज्जित हइया माथा ना तोलेन आर ॥३५९
याहा करिलेन से ताहान कर्म नय।
आबेशेर कर्म इहा जानिह निश्चय ॥३६०

वाह्य पाइ प्रीति श्रद्धा देखिते देखिते ।
भक्तिरसे पूर्ण हइ लागिला नाचिते ॥३६१
हास्य कम्प घर्म मूर्च्छा पुलक हुङ्कार ।
भक्तिरसे मग्न हैला ब्रह्मार कुमार ॥३६२
सभार ईश्वर कृष्ण, सभार जीवन ।
एइ सत्य बलि नाचे ब्रह्मार नन्दन ॥३६३
देखिया कृष्णेर शान्त विनय-व्यभार ।
विप्रभक्ति ये कोथाओ ना सम्भबे आर ॥३६४
भक्तिजड़ हैला वाक्य ना आइसे वदने ।
आनन्दाश्रुधारा मात्र वहे श्रीनयने ॥३६५
सर्वभावे ईश्वरेरे देहे सर्मपिया ।
पुन सभामध्ये भृगु मिलिला आसिया ॥३६६
भृगु देखि सभे हैला आनन्द अपार ।
कह भृगु! कार् केन देखिले व्यभार ॥३६७
तुमि ये-इ कह, से-इ सभार प्रमाण ।
तबे सब कहिलेन भृगु भगवान् ॥३६८
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तिनेर व्यभार ।
सकल कहिया एइ कहिलेन सार ॥३६९
सर्वश्रेष्ठ श्रीवैकुण्ठनाथ नारायण ।
सत्य सत्य सत्य एइ बलिल वचन ॥३७०
सभार ईश्वर कृष्ण जनक सभार ।
ब्रह्मा शिवो करेन याहाँर अधिकार ॥३७१
कर्त्ता हर्त्ता रक्षिता सभार नारायण ।
निःसन्देह भज गिया ताँहार चरण ॥३७२
धर्म ज्ञान पुण्य कीर्त्ति ऐश्वर्य विरक्ति ।
आत्म श्रेष्ठ मध्यम याहार यत शक्ति ॥३७३
सकल कृष्णेर, इहा जानिह निश्चय ।
अतएव गाओ भज' कृष्णेर विजय ॥३७४
सेइ प्रभु श्रीकृष्ण चैतन्य भगवान् ।
कीर्त्तनविहारे हइयाछेन विद्यमान ॥३७५

भृगुर वचन शुनि सब ऋषिगण ।
निःसन्देह हैला—सर्वश्रेष्ठ नारायण ॥३७६
भृगुरे पूजिया बोले सब ऋषिगण ।
संशय छिण्डिया तुमि भाल कैला मन ॥३७७
कृष्णभक्ति सभे लइलेन दृढ़ मने ।
भक्तरूपे ब्रह्मा शिवो पूजेन यतने ॥३७८
सिद्धवैष्णवेर येन विषम व्यभार ।
कहिलाम इहा बुझिबार शक्ति कार् ॥३७९
परीक्षिते कर्म कि ना छिल किछु आर ।
तार लागि करिलेन चरणप्रहार ॥३८०
सृष्टिकर्त्ता भृगुदेव याँर अनुग्रहे ।
कि साहसे चरण दिलेन से हृदये ॥३८१
अबोध अगम्य अधिकारीर व्यभार ।
इहा बइ सिद्धान्त ना देखि किछु आर ॥३८२
मूले कृष्ण प्रवेशिया भृगुहृदयेते ।
कराइला भक्तिर महिमा प्रकाशिते ॥३८३
ज्ञानपूर्व भृगुर ए कर्म कभु नय ।
कृष्ण बाढ़ायेन अधिकारि भक्त-जय ॥३८४
विरिञ्चि शङ्कर बाढ़ाइते कृष्णजय ।
भृगुरे हइला क्रूद्ध देखाइया भय ॥३८५
भक्त सब येन गाय नित्य कृष्णजय ।
कृष्ण बाढ़ायेन भक्तजय अतिशय ॥३८६
अधिकारि वैष्णवेर ना बुझि व्यभार ।
ये जन निन्दये तार नाहिक निस्तार ॥३८७
अधमजनेर ये आचार येन धर्म ।
अधिकारिवैष्णवेओ करे सेइ कर्म ॥३८८
कृष्ण कृपाये से इहा जानिबारे पारे ।
ए सब सङ्कटे केहो मरे केहो तरे ॥३८९
सभे इथे देखि एक महा प्रतिकार ।
सभारे करिब स्तुति विनय व्यभार ॥३९०

अज्ञ हइ लइबेक कृष्णेर शरण।
सावधाने शुनिबेक महान्त वचन ॥३९१
तबे कृष्ण तारे देन हेन दिव्य-मति।
सर्वत्र निस्तार पाय, ना ठेकये कति ॥३९२
भक्ति करि ये शुने चैतन्य अवतार।
सेइ सब जन सुखे पाइब निस्तार ॥३९३
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥३९४

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे श्रीअद्वैतमहिमादिवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः।



एकादश अध्याय

जयजय गौरचन्द्र श्रीवत्सलाञ्छन।
जय शचीगर्भरत्न धर्मसनातन ॥१
जय सङ्कीर्त्तनप्रिय श्रीगौरगोपाल।
जय शिष्टजनप्रिय जय दुष्टकाल ॥२
भक्तगोष्ठीसहित गौराङ्ग जयजय।
शुनिले चैतन्यकथा भक्ति लभ्य हय ॥३
हेनमते वैकुण्ठनायक न्यासिरूपे।
बिहरेन भक्तगोष्ठी लइया कौतुके ॥४
एकदिन वसिया आछेन प्रभु सुखे।
हेनकाले श्रीअद्वैत आइला सम्मुखे ॥५
वसिलेन श्रीअद्वैत प्रभुरे नमस्करि।
हासि अद्वैतेरे जिज्ञासेन गौरहरि ॥६
सन्तोषे बोलेन प्रभु कह त आचार्य्य !
कोथा हइते आइला करिला कोन् कार्य ? ७
अद्वैत बोलेन देखिलाम जगन्नाथ।
तबे आइलाम एइ तोमार साक्षात ॥८
प्रभु बोले जगन्नाथश्रीमुख देखिया।
तबे आर कि करिला ? कह देखि ताहा ॥९
अद्वैत बोलेन आगे देखि जगन्नाथ।
तबे करिलाम प्रदक्षिण पाँच सात ॥१०
प्रदक्षिण शुनि प्रभु हासिते लागिला।
हासि बोले प्रभु तुमि हारिल हारिला ॥११
आचार्य्य बोलेन कि सामग्री हारिबारे।
लक्षण देखाह तबे जिनिह आमारे ॥१२
प्रभु बोले सामग्री शुनह हारिबार।
तुमि ये करिला प्रदक्षिणव्यबहार ॥१३
यत-क्षण तुमि पृष्ठदिगेरे चलिला।
तत-क्षण तोमार ये दर्शन नहिला ॥१४
आमि यत-क्षण धरि देखि जगन्नाथ।
आमार लोचन आर ना याय कोथात ॥१५
कि दक्षिणे किबा बामे किबा प्रदक्षिणे।
आर नाहि देखों जगन्नाथ-मुख विने ॥१६
करजोड़ करि बोले आचार्य्यगोसाञि।
ए-रूपे सकल हारि तोमार से ठाञि ॥१७
ए कथार अधिकारी आर त्रिभुवने।
सत्य कहिलाम एइ नाहि तोमा विने ॥१८

तुमि से इहार प्रभु ! एक अधिकारी ।
ए कथाय तोमारे से मात्र आमि हारि ॥१९
शुनिया हासेन सर्व वैष्णवमण्डल ।
'हरि' बलि उठिल मङ्गल कोलाहल ॥२०
एइमत प्रभुर विचित्र सर्वकथा ।
अद्वैतेरे अति प्रीत करेन सर्वथा ॥२१
एकदिन गदाधरदेव प्रभुस्थाने ।
कहिलेन पूर्व मन्त्रदीक्षार कारणे ॥२२
इष्टमन्त्र आमि ये कहिलुँ कारो प्रति ।
सेइ हैते आमार ना स्फुरे भाल मति ॥२३
सेइ मन्त्र तुमि मोरे कह पुनर्वार ।
तबे मन प्रसन्नता हइब आमार ॥२४
प्रभु बोले तोमार ये उपदेष्टा आछे ।
सावधान तथा अपराध हय पाछे ॥२५
मन्त्रेर कि दाय प्राणो आमार तोमार ।
उपदेष्टा थाकिते ना हय व्यबहार ॥२६
गदाधर बोले तिँहो ना आछेन एथा ।
तान परिवर्त्ते तुमि कराह सर्वथा ॥२७
प्रभु बोले तोमार ये गुरु विद्यानिधि ।
अनायासे ताहाने आनितेछेन विधि ॥२८
सर्वज्ञेर चूड़ामणि जानेन सकल ।
गदाधर ! विद्यानिधि आइला उत्कल ॥२९
एथाइ देखिबा दिन दशेर भितरे ।
आइसेन केबल आमारे देखिबारे ॥३०
निरवधि विद्यानिधि हय मोर मने ।
बुझिलाम तुमि आकर्षिया आन ताने ॥३१
एइमत प्रभु प्रिय गदाधर सङ्गे ।
तान मुखे भागवत शुनि थाके रङ्गे ॥३२
गदाधर पढ़ेन सम्मुखे भागवत ।
शुनिया प्रकाशे प्रभु कृष्ण भाब यत ॥३३
प्रह्लादचरित्र आर ध्रुवेर चरित्र ।
शतावृत्ति करिया शुनेन सावहित ॥३४
आर कार्ये प्रभुर नाहिक अवसर ।
नाम गुण बोलेन शुनेन निरन्तर ॥३५
भागवत पाठे गदाधर महाशय ।
दामोदरस्वरूपेर कीर्त्तन विषय ॥३६
एकेश्वर दामोदरस्वरूप गुण गाय ।
विह्वल हइया नाचे श्रीगौराङ्ग राय ॥३७
अश्रु कम्प हास्य मूर्च्छा पुलक हुङ्कार ।
यत किछु आछे प्रेमभक्तिर बिकार ॥३८
मूर्त्तिमन्त सभे थाके ईश्वरेर स्थाने ।
नाचेन चैतन्यचन्द्र इँहा सभा सने ॥३९
दामोदरस्वरूपेर उच्चसङ्कीर्त्तन ।
शुनिले ना थाके वाह्य नाचे सेइक्षण ॥४०
सन्न्यासि पार्षद यत ईश्वरेर हय ।
दामोदरस्वरूप समान केहो नय ॥४१
यत प्रीत ईश्वरेर पूरीगोसाञिरे ।
दामोदरस्वरूपेरे तत प्रीत करे ॥४२
दामोदरस्वरूप सङ्गीतरसमय ।
याँर ध्वनि श्रवणे प्रभुर नृत्य हय ॥४३
अलक्षितरूप केहो चिनिते ना पारे ।
कापटिर रूप येन बुलेन नगरे ॥४४
कीर्त्तन करिते येन तम्बुरु नारद ।
एका प्रभु नाचायेन कि आर सम्पद ॥४५
सन्न्यासीर मध्ये ईश्वरेर प्रियपात्र ।
आर नाहि एक पुरीगोसाञि से मात्र ॥४६
दामोदरस्वरूप परमानन्दपुरी ।
सन्न्यासि पार्षदे एइ दुइ अधिकारी ॥४७
निरवधि निकटे थाकेन दुइजन ।
प्रभुर सन्न्यासे करे दण्डेर ग्रहण ॥४८

पुरी ध्यानपर, दामोदरेर कीर्त्तन ।
न्यासि-रूपे न्यासि-देहे बाहु दुइजन ॥४९
अहर्निश गौरचन्द्र सङ्कीर्त्तनरङ्गे ।
बिहरेन दामोदरस्वरूपेर सङ्गे ॥५०
कि शयने कि भोजने किबा पर्यटने ।
दामोदर प्रभु ना छाड़ेन कोनक्षणे ॥५१
पूर्वाश्रमे पुरुषोत्तमाचार्य्य नाम तान ।
प्रियसखा पुण्डरीकविद्यानिधि नाम ॥५२
पथे चलितेओ प्रभु दामोदर गाने ।
नाचेन विह्वल हैया, पथ नाहि जाने ॥५३
एकेश्वर दामोदरस्वरूप संहति ।
प्रभु से आनन्दे पड़े, ना जानेन कति ॥५४
किबा जल किबा स्थल किबा वन डाल ।
किछु ना जानेन प्रभु, गर्जेन विशाल ॥५५
एकेश्वर दामोदर कीर्त्तन करेन ।
प्रभुरेओ वने डाले पड़िते धरेन ॥५६
दामोदरस्वरूपेर भाग्येर ये सीमा ।
दामोदरस्वरूप से ताहार उपमा ॥५७
एकदिन महाप्रभु आविष्ट हइया ।
पड़िला कूपेर माझे आछाड़ खाइया ॥५८
देखिया अद्वैत आदि सम्मोह पाइया ।
क्रन्दन करेन सभे शिरे हाथ दिया ॥५९
किछु ना जानेन प्रभु प्रेमभक्तिरसे ।
बालकेर प्राय येन कूपे पड़ि हासे ॥६०
सेइ क्षणे कूप हैल नवनीतमय ।
प्रभुर श्रीअङ्गे किछु क्षत नाहि हय ॥६१
ए कोन् अद्भुत ! याँर भक्तिर प्रभावे ।
वैष्णव नाचिते अङ्गे कण्टक ना लागे ॥६२
तबे अद्वैतादि मेलि सर्वभक्तगणे ।
तुलिलेन प्रभुरे धरिया कथोक्षणे ॥६३
पड़िला ये कूपे प्रभु ताहो ना जाने ।
कि बोल कि कथा प्रभु जिज्ञासे आपने ॥६४
वाह्य ना जानेन प्रभु प्रेमभक्तिरसे ।
असर्वज्ञप्राय प्रभु सभारे जिज्ञासे ॥६५
श्रीमुखेर शुनि अति अमृत वचन ।
आनन्दे भासेन अद्वैतादिभक्तगण ॥६६
एइमते भक्तिरसे ईश्वर बिहरे ।
विद्यानिधि आइलेन जानिया अन्तरे ॥६७
चित्ते मात्र करिते ईश्वर सेइ क्षणे ।
विद्यानिधि आसिया दिलेन दरशने ॥६८
विद्यानिधि देखि प्रभु हासिते लागिला ।
बाप आइला बाप आइला बलिते लागिला ॥६९
प्रेमनिधि प्रेमे हैया आनन्दे विह्वल ।
पूर्ण हैल हृदयेर सकल मङ्गल ॥७०
श्रीभक्तवत्सल गौरचन्द्र नारायण ।
प्रेमनिधि बक्षे करि करेन क्रन्दन ॥७१
सकल वैष्णववृन्द कान्दे चारिभिते ।
वैकुण्ठस्वरूप सुख मिलिला साक्षाते ॥७२
ईश्वरसहित यत आछे भक्तगण ।
प्रेमनिधि प्रति प्रेम बाढ़े अनुक्षण ॥७३
दामोदरस्वरूप ताहान पूर्वसखा ।
चैतन्येर अग्रे दुइजने हैल देखा ॥७४
दुइजने चाहेन दुँहार पदधूलि ।
दुँहे धराधरि ठेलाठेलि फेलाफेलि ॥७५
केहो कारे ना हारेन दुँहे महाबली ।
करायेन हासेन गोराङ्ग कुतूहली ॥७६
तबे वाह्य पाइ प्रभु विद्यानिधि प्रति ।
"कथोदिन नोलाचले तुमि कर स्थिति ॥७७"
शुनि प्रेमनिधि महा सन्तोष हइला ।
भाग्य हेन मानि प्रभु निकटे रहिला ॥७८

गदाधरदेवो इष्टमन्त्र पुनर्वार ।
प्रेमनिधिस्थाने प्रेम कैलेन स्वीकार ॥७९
आर कि कहिब प्रेमनिधिर महिमा ।
याँर शिष्य गदाधर एइ प्रेमसीमा ॥८०
याँर कीर्ति बाखाने अद्वैत श्रीनिवास ।
याँर कीर्त्ति बोलेन मुरारी हरिदास ॥८१
हेन नाहि वैष्णव ये ताने ना बाखाने ।
पुण्डरीको सर्वभक्त काय-वाक्य मने ॥८२
अहङ्कार तान देहे नाहि तिलमात्र ।
ना बुझि कि अद्भुत चैतन्यकृपापात्र ॥८३
येरूप कृष्णेर प्रियपात्र विद्यानिधि ।
गदाधर श्रीमुखेर कथा किछु लिखि ॥८४
विद्यानिधि राखि प्रभु आपन निकटे ।
वासा दिला यमेश्वरे समुद्रेर तटे ॥८५
नीलाचले रहिया देखेन जगन्नाथ ।
दामोदरस्वरूपेर बड़ प्रेमपात्र ॥८६
दुइजने जगन्नाथ देखे एकसङ्गे ।
अन्योऽन्ये थाकेन कृष्णरसकथारङ्गे ॥८७
यात्रा आसि बाजिल ओढ़न-षष्ठी नाम ।
नया बस्त्र परे जगन्नाथ भगवान् ॥८८
से दिन माण्डुया बस्त्र परेन ईश्वरे ।
तान इच्छा सेइमत दासे करे ॥८९
श्रीगौरसुन्दरो लइ सर्वभक्तगण ।
आइला देखिते यात्रा श्रीबस्त्र ओढ़न ॥९०
मृदङ्ग, मुहरी, शङ्ख, दुन्दुभि, काहाल ।
ढाक, दगड़, काड़ा बाजये विशाल ॥९१
सेइ दिने नाना बस्त्र परेन अनन्त ।
षष्ठी हैते लागि रहे मकर पर्यन्त ॥९२
वस्त्र लागि हइते लागिल रात्रिशेषे ।
भक्तगोष्ठीसह प्रभु देखि प्रेमे भासे ॥९३
आपनेइ उपासक, उपास्य आपने ।
के बुझे ताहान मन, तान कृपा बिने ॥९४
रसमय दारुरूपे वसि योगासने ।
न्यासिरूपे भक्तियोग करे अनुक्षणे ॥९५
पट्ट नेत शुक्ल पीत नील नाना वर्णे ।
दिव्य बस्त्र देन, मुक्ता रचित सुवर्णे ॥९६
बस्त्र लागि हैले देन पुष्प अलङ्कार ।
पुष्पेर कङ्कण श्रीकिरीट पुष्पहार ॥९७
गन्ध पुष्प धूप दीप षोड़शोपचारे ।
पूजा करि भोग दिला विविध प्रकारे ॥९८
तबे प्रभु यात्रा देखि सर्वगोष्ठीसङ्गे ।
आइला वासाय प्रेमानन्दसुखरङ्गे ॥९९
वासाय बिदाय दिला वैष्णव सभेरे ।
विरले रहिला निजानन्दे एकेश्वरे ॥१००
यार ये वासाय सभे करिला गमन ।
विद्यानिधि दामोदर सङ्गे अनुक्षण ॥१०१
अन्योऽन्ये दुँहार यतेक मनःकथा ।
निष्कपटे दुँहे कहे दुँहारे सर्वथा ॥१०२
माण्डुया वसन ये धरिला जगन्नाथ ।
सन्देह जन्मिल विद्यानिधिर इहात ॥१०३
जिज्ञासिला दामोदरस्वरूपेर स्थाने ।
मण्डेर कापड़ ईश्वररे देन केने ॥१०४
ए देशे त श्रुतिस्मृति सकल प्रचुरे ।
तबे केने विना धौते मण्डबस्त्र परे ?१०५
दामोदरस्वरूप कहेन शुन कथा ।
देशाचारे इथे दोष ना लयेन एथा ॥१०६
श्रुतिस्मृति ये जाने से ना करे सर्वथा ।
ए यात्राय एइमत सर्वकाल प्रथा ॥१०७
ईश्वरेर इच्छा यदि ना थाके अन्तरे ।
तबे देख राजा केने निषेध ना करे ॥१०८

विद्यानिधि बोले भाल करुक ईश्वरे।
ईश्वरेर ये कर्म सेवके केने करे ॥১০৯
पूजा पाण्डा पशुपाल पड़िछा बेहारा।
अपवित्र बस्त्र केने धरे बा इहारा ॥১১০
जगन्नाथ—ईश्वर; सम्भवे सब ताने।
तान आचरण करिब सर्वजने ॥১১১
मण्डबस्त्र-स्पर्शे हस्त धुइले से शुद्धि।
इहा बा ना करे केने हइया सुबुद्धि ॥১১২
राजपात्र अबुध ये इहा ना बिचारे।
राजाओ माण्डुया बस्त्र देन निजशिरे ॥১১৩
दामोदरस्वरूप बोलेन शुन भाइ!
हेन बुझि, ओढ़न-यात्राय दोष नाइ ॥১১৪
परं ब्रह्म—जगन्नाथरूप अवतार।
विधि बा निषेध एथा ना करे बिचार ॥১১৫
विद्यानिधि बोले भाइ शुन एक कथा।
परं ब्रह्म—जगन्नाथविग्रह सर्वथा ॥১১৬
ताने दोष नाहि विधि निषेध लङ्घिले।
ए गुलाओ ब्रह्म हैल थाकि नीलाचले ॥১১৭
इहाराओ छाड़िलेक लोक व्यबहार।
सभेइ हइल ब्रह्मरूप अवतार ॥১১৮
एत बलि सर्वपथे हासिया हासिया।
यायेन येहेन हास्याबेश युक्त हैया ॥১১৯
दुइ सखा हाथहाथि करिया हासेन।
जगन्नाथदासेरेओ आचार दोषेन ॥১২০
सभे ना जानेन सर्वदासेर स्वभाव।
कृष्ण से जानेन यार यत अनुराग ॥১২১
भ्रम करायेन कृष्ण आपन दासेरे।
भ्रमच्छेदो केरे पाछे सदय अन्तरे ॥১১২
भ्रम कराइला विद्यानिधिरे आपने।
भ्रमच्छेद कृपाओ शुनिला एइ क्षणे ॥১২৩

एइमत रङ्गे ढङ्गे दुइ प्रियसखा।
चलिलेन कृष्णकार्ये यार यथा वासा ॥১২৪
भिक्षा करि आइलेन गौराङ्गेर स्थाने।
प्रभु स्थाने आसि सभे थाकिला शयने ॥১২৫
सकल जानेन प्रभु चैतन्यगोसाञि।
जगन्नाथ रूपे स्वप्ने गेला तान ठाञि ॥১২৬
स्वपने देखेन विद्यानिधिमहाशय।
जगन्नाथ आसि हैला सम्मुखे विजय ॥১২৭
क्रोधरूपजगन्नाथ विद्यानिधि देखे।
आपने धरिया तान चड़ायेन मुखे ॥১২৮
दुइ भाइ मेलि चड़ मारे दुइ गाले।
हेन दृढ़ चड़ ये अङ्गुलि गाले फुले ॥১২৯
दुःख पाइ विद्यानिधि कृष्ण रक्ष बोले।
'अपराध क्षम' बलि पड़े पदतले ॥১৩০
कोन् अपराधे मोरे मारह गोसाञि।
प्रभु बोले तोर अपराधेर अन्त नाञि ॥১৩১
मोर जाति मोर सेवकेर जाति नाञि।
सकल जानिया तुमि रहि एइ ठाञि ॥১৩২
तबे केने रहियाछ जातिनाशा स्थाने।
जाति राखि चल तुमि आपन भवने ॥১৩৩
आमि ये करियाछि यात्रार निर्बन्ध।
ताहातेओ भाब अनाचारेर सम्बन्ध ॥১৩৪
आमारे करिया ब्रह्म सेवक निन्दिया।
माण्डुयाकापड़ स्थाने दोषदृष्टि दिया ॥১৩৫
स्वप्ने बिद्यानिधि महाभय पाइ मने।
क्रन्दन करेन शिर धरि श्रीचरणे ॥১৩৬
सर्व अपराध प्रभु! क्षम पापिष्ठेरे।
घाटिलुँ घाटिलुँ बलिलुँ तोमारे ॥১৩৭
ये मुखे हासिलुँ प्रभु! तोर सेवकेरे।
से मुखेर शास्ति प्रभु भाल कैला मोरे ॥১৩৮

भालदिन हैल मोर आजि सुप्रभात ।
मुख कपोलेर भाग्ये बाजिल श्रीहाथ ॥१३९
प्रभु बोले तोरे अनुग्रहेर लागिया ।
तोमारे करिलुँ शास्ति सेवक देखिया ॥१४०
स्वप्ने प्रेमनिधिप्रति प्रेम दृष्टि करि ।
देउले आइला दुइ भाइ—राम हरि ॥१४१
स्वप्न देखि विद्यानिधि जागिया उठिला ।
गाले चड़ सब देखि हासिते लागिला ॥१४२
श्रीहस्तेर चड़े सब फुलियाछे गाल ।
देखि प्रेमनिधि बोले बड़ भाल भाल ॥१४३
येन कैलुँ अपराध तार शास्ति पाइलुँ ।
भालइ करिला प्रभु ! अल्पे एड़ालुँ ॥१४४
देखदेख एइ विद्यानिधिर महिमा ।
सेवकेरे दया यत, तार एइ सीमा ॥१४५
पुत्र ये प्रद्युम्न ताहानेओ हेन मते ।
चड़ नाहि मारेन ना फेलान श्रीहाथे ॥१४६
जानको रुक्मिणी सत्यभामा आदि यत ।
ईश्वर ईश्वरी आर आछे कतकत ॥१४७
साक्षातेइ मारे यार अपराध हय ।
स्वप्नेर प्रसाद शास्ति दृश्य कभु नय ॥१४८
स्वप्ने दण्ड पाय, किबा अर्थ लाभ हय ।
जागिले पुरुष सेइ दुइ किछु नय ॥१४९
शास्ति बा प्रसाद प्रभु स्वप्ने यारे करे ।
से यदि साक्षाते लोके देखे फल धरे ॥१५०
तार बड़ भाग्यवान् नाहिक संसारे ।
स्वप्नेहो ना कहे किछु अभक्तजनेरे ॥१५१
साक्षाते से एइ सब बुझह बिचारे ।
एइ ये यबनगणे निन्दा हिंसा करे ॥१५२
ताहाराओ स्वप्ने अनुभब मात्र चाहे ।
निन्दा हिंसा करे देखि स्वप्न नाहि पाये ॥१५३
यबनेर कि दाय, ये ब्राह्मण सज्जन ।
तारा यत अपराध करे अनुक्षण ॥१५४
अपराध हैले दुइ लोके दुःख पाय ।
स्वप्नेहो अभक्त पापिष्ठेरे ना शिखाय ॥१५५
स्वप्नेओ प्रत्यादेश प्रभु करेन याहारे ।
से-इ महाभाग्य हेन माने आपनारे ॥१५६
साक्षाते आपने स्वप्ने मारिल ताहारे ।
ए प्रसाद सभे देखे श्रीप्रेमनिधिरे ॥१५७
तबे पुण्डरीकदेव उठिला प्रभाते ।
चड़े गाल फुलियाछे देखे दुइ हाथे ॥१५८
प्रतिदिन दामोदरस्वरूप आसिया ।
जगन्नाथ देखे दोँहे एकसङ्ग हैया ॥१५९
सकाले आइस जगन्नाथदरशने ।
आजि शय्या हैते नाहि उठ कि कारणे ॥१६०
विद्यानिधि बोले भाइ ! एथाय आइस ।
कहिब सकल कथा खानिक बइस ॥१६१
दामोदर आसि देखे तान दुइ गाल ।
फुलियाछे चड़चिह्न देखेन विशाल ॥१६२
दामोदरस्वरूप जिज्ञासे एकि कथा ।
केने गाल फुलियाछे किबा पाइल व्यथा ॥१६३
हासिया बोलेन विद्यानिधि महाशय ।
शुन भाइ ! कालि गेल यतेक संशय ॥१६४
माड़ुयाबस्त्रेरे ये करिलुँ अवज्ञान ।
तार शास्ति गाले एइ देख विद्यमान ॥१६५
आजि स्वप्ने आसि जगन्नाथ बलराम ।
दुइ दण्ड चड़ायेन नाहिक विश्राम ॥१६६
मोर परिधानबस्त्र करिलि निन्दन ।
एत बलि गाले चड़ायेन दुइजन ॥१६७
गाले बाजियाछे यत अङ्गुलेर अङ्गुरि ।
भालमते उत्तरो करिते नाहि पारि ॥१६८

लज्जाय काहारेओ सम्भाषा नाहि करि ।
गाल भाल हइले से बाहिर हैते पारि ॥१६९
ए त कथा अन्यत्र कहिते योग्य नहे ।
बड़ भाग्य हेन भाइ ! मानिल हृदये ॥१७०
भाल शास्ति पाइलुँ अपराध अनुरूपे ।
ए नहिले पड़िताम महा-अन्ध कूपे ॥१७१
विद्यानिधिप्रति देखि स्नेहेर उदय ।
आनन्दे भासेन दामोदर महाशय ॥१७२
सखार सम्पदे हय सखार उल्लास ।
दुइजने हासेन परमानन्दहास ॥१७३
दामोदरस्वरूप बोलेन शुन भाइ !
एमत अद्भुत दण्ड देखि शुनि नाइ ॥१७४
स्वप्ने आसि शास्ति करे आपने साक्षाते ।
आर शुनि नाहि सबे देखिलुँ तोमाते ॥१७५
हेनमते दुइ सखा भासेन सन्तोषे ।
रात्रि दिन ना जानेन कृष्णकथारसे ॥१७६
हेन पुण्डरीकविद्यानिधिर प्रभाब ।
इहाने से गौरचन्द्रप्रभु बोले 'बाप' ॥१७७
पादस्पर्शभये ना करेन गङ्गास्नान ।
सबे गङ्गा देखेन करेन जलपान ॥१७८
ए भक्तेर नाम लइ श्रीगौरसुन्दर ।
'पुण्डरीक' नाम धरि कान्देन विस्तर ॥१७९
पुण्डरीकविद्यानिधि चरित्र शुनिले ।
अवश्य ताहारे कृष्णपादपद्म मिले ॥१८०
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचान्द जान ।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान ॥१८१

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे श्रीपुण्डरीकविद्यानिधिचरित्रवर्णनं नाम एकादशोऽध्यायः ।

❋ समाप्तश्चायम् अन्त्यखण्डः ❋

❋ इति श्रीमद्वृन्दावनदासविरचितं श्रीचैतन्यभागवतं सम्पूर्णम् ❋

ॐ श्रीहरिः ॐ

श्रीचैतन्यचन्द्रार्पणमस्तु ।



परिशिष्ट

* * * * * * * *

त्रयोदश अध्याय

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य गुणधाम ।
जय जय नित्यानन्द प्रभु बलराम ॥१
जय अद्वैतादि भक्त जय हरिदास ।
जय जय गदाधर जय श्रीनिवास ॥२
एबे शुन प्रभु चले मथुरा देखिते ।
मथुरा निवासी लोक उद्धार करिते ॥३
एकदिन महाप्रभु सार्वभौमस्थाने ।
कौतुक अनुभविते जिज्ञासे आपने ॥४
तिन कर्म करियाछि आमि हढ़मते ।
तथापि चित्तेते सुख ना हय आमाते ॥५
तिन कर्म कहि शुन तोमार गोचर ।
शुनिया आमारे तुमि दिबे प्रत्युत्तर ॥६
एक कर्म गया गेलुँ गोत्र उद्धारिते ।
महाभाग एकजन देखिलुँ तथाते ॥७
तान स्थाने निबेदिलुँ महाभाग तुमि ।
भबकूपे पड़ियाछि शुन प्रभु आमि ॥८
तबे तिहोँ मन्त्रदीक्षा दिलेन आमारे ।
आमि देह समर्पिल ताहान गोचरे ॥९
पूर्णकृष्ण आनिया दिलेन मोर कोले ।
कोले कृष्ण दिया प्रभु प्रियवाणी बोले ॥१०
शुनशुन विश्वम्भर आनन्दित हञा ।
नाच गिया तुमि कृष्ण कोलेते करिञा ॥११
ताहान प्रसादे कृष्ण कोलेते करिञा ।
नाचिलुँ गाइलुँ अति आनन्दित हञा ॥१२
तथापि आमार चित्त प्रसन्न ना हय ।
कहिलाम एक कर्म शुन महाशय ॥१३
आर एक कर्म शुन गङ्गार कूलेते ।
काटोया नामेते ग्राम इन्द्राणी-घाटेते ॥१४
ताहा छिल महाभाग केशव भारती ।
ताहान् कृष्णेते आत्ति बड़इ पिरीति ॥१५
शुनिया ताहान नाम महिमा अपार ।
चलिया गेलाम आमि शरण ताँहार ॥१६
तान स्थाने करिलाम सन्न्यास ग्रहण ।
शिखासूत्र त्ताग करि कौपीनधारण ॥१७
तथापि चित्तेते मोर स्वस्ति नाहि हय ।
एतेक चिन्तिया कहि शुन महाशय ॥१८
तबे मने भाबिया आइलुँ नीलाचले ।
देखिमात्र महाप्रभु करिलेन कोले ॥१९
तोमाहेन सङ्ग मोरे दिलेन गोसाञि ।
तथापि आमार चित्ते प्रसन्नता नाहि ॥२०
आमार मनेर कथा कैलुँ निवेदन ।
कहिबे आमारे तुमि इहार कारण ॥२१
चित्त प्रसन्नता हय काँहार दर्शने ।
इहार से ज्ञाता तुमि कहिबा आपने ॥२२
प्रभु यथा कहिलेन तिन कथा मर्म ।
सार्वभौम बुझिया इहार सब कर्म ॥२३
सार्वभौम बोलेन शुनह प्रभु कहि ।
प्रियतम जन विनु आर केह नाहि ॥२४
तिन कर्म बाहिरे सेवक प्रिय बड़ ।
एइ कथा महाप्रभु कहिलुँ दढ़ ॥२५
सेइ जन प्रति प्रभुर बड़इ आरति ।
ताहारे देखिले तुमि पाइबे पिरीति ॥२६
शुनिया ए सब कथा सार्वभौममुखे ।
आलिङ्गन करिलेन प्रेमानन्दसुखे ॥२७
प्रभु बोले शुन सार्वभौम महाशय ।
यतेक कहिला तुमि सब सत्य हय ॥२८

चतुर्दिगे यत भक्त आछे पृथिवीते ।
सकले आनिल कृष्ण आमार साक्षाते ॥२९
आर केहो आछे ताहा आमि त ना जानि ।
तुमि जान केबा आछे ? कह देखि शुनि ॥३०
सार्वभौम बोले एथा आछिलेन भक्त ।
महाराजार पात्र तिँहो विषयी विरक्त ॥३१
सभार अन्तर जाने सेइ महाजन ।
राय रामानन्द नाम जगत-भूषण ॥३२
एइ ये प्रतापरुद्र राजामहाशय ।
इहान प्रधान पात्र रामानन्द राय ॥३३
सर्वज्ञ गणिआ कहे प्रतापरुद्रेरे ।
तत्काले मिलिब राज्य अप्राप्त हइरे ॥३४
इहा यदि शुनिल प्रतापरुद्र राज ।
शुनिया दुषिल मन हइल अकाज ॥३५
जानिलेन रामानन्द राजार अन्तर ।
चलिलेन स्थान छाड़ि हइया सत्वर ॥३६
याइते तैलङ्गदेशे रामानन्द राय ।
तैलङ्गेर राजा सेइकाले मरि याय ॥३७
हेन काले रामानन्देर तथाइ प्रवेश ।
शुनिया लोकेर हइल अधिक उल्लास ॥३८
पात्रमित्र मन्त्रणा करिया सुख मने ।
राजा करि थुइलेन परम यतने ॥३९
चतुर्दश वत्सर तथा याइ राजा हइ ।
रामानन्द आछेन हइया दिग्विजयी ॥४०
शुनिया रायेर कथा प्रभु हरषिते ।
शुभ यात्रा करिलेन तथाय याइते ॥४१
लोक निस्तारिते प्रभुर दक्षिण गमन ।
एथा राय रामानन्द देखिल स्वपन ॥४२
पनर दिवसेर पथ नीलाचल स्थान ।
हेन प्रभु स्वप्नेते देखिल विद्यमान ॥४३
स्वप्ने देखे जगन्नाथ रत्नसिंहासने ।
वसिया आछेन प्रभु आपन सदने ॥४४
तान वक्षोदेश हैते गौराङ्गसुन्दर ।
बाहिर हइला प्रभु अति मनोहर ॥४५
स्वप्ने देखि रामानन्द आनन्दित मने ।
पात्र मित्र बन्धु जने डाक दिया आने ॥४६
पनर दिवसे याइ नीलाचल स्थाने ।
हेन प्रभु स्वप्नेते देखिल विद्यमाने ॥४७
राजकार्य करे सभे बाहिर उद्याने ।
विरले रहिब आमि शुन सावधाने ॥४८
पनर दिवस मोरे केहो ना डाकिबा ।
एइ मोर आज्ञा सभे केहो ना लङ्घिबा ॥४९
ईश्वर पूजार सज्जा आन भालमते ।
मनने रहिब आमि परम निभृते ॥५०
नियम करिया राजा पात्रमित्र सने ।
आसने वसिया आछे परम निर्जने ॥५१
पनर दिवस मात्र हइल पूर्णित ।
से दिवसे राजा सेवा करेन निश्चत ॥५२
दिव्य सरोवर मने निर्माण करिया ।
तार मध्ये कमल कानन आरोपिया ॥५३
कमलेर वने दिव्य नौकार साजन ।
ठाकुराणी सब वाद्य करिछे बाजन ॥५४
नौकार आसने प्रभु वसाइया मने ।
नौका चालाइया देह कमलेर वने ॥५५
गहन कमल वने नौका नाहि चले ।
नारीगणे जय दिया हरि हरि बोले ॥५६
हेनकाले महाप्रभु ताहार दुयारे ।
पात्रमित्र आसि सभे नमस्कार करे ॥५७
पात्रमित्र स्थाने प्रभु जिज्ञासे आपने ।
ए बाड़ी काहार ताहा बोल सर्वजने ॥५८

तारा बोले प्रभु रामानन्देर ग्रालय ।
कहिते तोमार स्थाने बड़ वासि भय ॥५६
निर्जने ग्राछेन तिँहो ईश्वर चिन्तिया ।
बलिते लागिला प्रभु शुन मन दिया ॥६०
प्रभु बोलेन तिँहो ग्राछेन कोथाय ?
ताँहार निमित्त ग्रामि ग्राइलुँ एथाय ॥६१
पात्रमित्र बोले तिँहो ग्राछेन निर्जने ।
सेखाने याइते नारि तान ग्राज्ञा विने ॥६२
तुमि यदि विजय करह ग्रभ्यन्तरे ।
कपाट घुचाञा दिब बाहिर दुयारे ॥६३
मोरा देखाइया दिब तिँहो सेइ घरे ।
ग्रामरा से स्थाने केह ना याइब डरे ॥६४
प्रभु बोले भाल भाल एइ युक्ति हय ।
बाहिरे ग्राछेन सभे ग्रन्तरेर भय ॥६५
महापात्रलोक गेल बाड़ीर भितरे ।
कपाट घुचाइञा दिल प्रभु ग्रभ्यन्तरे ॥६६
ये घरे वसिया ग्राछे राय रामानन्द ।
से घरेर पिड़ाँय वसिला गौरचन्द्र ॥६७
परम ग्रानन्दे प्रभु कपाट धरिया ।
रामानन्द रायेरे कहेन सम्बोधिया ॥६८
प्रभु बोले नौकाखानि चलिब केमने ।
नारीलोके नौका बाहे कमलेर वने ॥६६
गहन कानन माझे नौका नाहि चले ।
दुइ हाथे दाँड़ धरि देह त सकले ॥७०
शुनिया प्रभुर वाक्य राय रामानन्द ।
ताहान ग्रन्तर हैल परम ग्रानन्द ॥७१
कपाट घुचाइया देखे प्रभु गौरचन्द्र ।
गौरचन्द्र देखि बड़ पाइल ग्रानन्द ॥७२
रामानन्द राय तबे भूमेते पड़िया ।
दण्डवत् करिलेन ग्रानन्दित हञा ॥७३
प्रभुग्रो तारारे धरि करिलेन कोले ।
देखिया गौराङ्ग राय हरि हरि बोले ॥७४
प्रभु वसिलेन ग्रासि दिव्य सिंहासने ।
राय रामानन्द वैसे प्रभुर चरणे ॥७५
पादपद्म पाखालिल रामानन्द राय ।
चरण प्रभावे लोभे पायेन इच्छाय ॥७६
प्रभु बोले कहि शुन रामानन्द राय ।
तोमारे देखिते ग्रामि ग्राइलुँ एथाय ॥७७
तुमि चल नीलाचल चन्द्र देखिबारे ।
तोमा ना देखिया मोर हृदय बिदरे ॥७८
चल चल रामानन्द नीलाचल प्रति ।
नीलाचले तुमि ग्रामि थाकिब संहति ॥७६
रामानन्द राय बोले शुनह ग्रापने ।
ग्रामि बड़ ग्रपराधी जगन्नाथ स्थाने ॥८०
ते कारणे जगन्नाथ पाठाइल वने ।
एखन प्रसन्न प्रभु हइला ग्रापने ॥८१
देखा दिल जगन्नाथ संहति ग्रापने ।
तुमि जगन्नाथ देव जानिलाम मने ॥८२
तोमारे देखिया प्रभु सकल पाइलुँ ।
भवकूपे पड़ि ग्राछ उद्धार हइलुँ ॥८३
नीलाचलवासीर चरणे नमस्कार ।
प्रभुरे देखिते भाग्य नहिल ग्रामार ॥८४
तथाय प्रतापरुद्र राजा महाशय ।
ताँहार निकट ग्रामि ग्राछिनु सदाय ॥८५
सर्वज्ञ गणिया कहे महाराज-स्थाने ।
राय रामानन्द हबे उत्कल राजने ॥८६
शुनिया ताहान चित्त दूषिल ग्रपार ।
मारिबेन हेन भय हइल ग्रामार ॥८७
तबे ग्रासि ग्रात्म भये छाड़िल से देश ।
सर्वज्ञ सकल तुमि जानह विशेष ॥८८

प्रभु बोले जानि आमि सर्व विवरण ।
तोमार ताहाते भय नाहिक एखन ॥८९
प्रताप रुद्रेर स्थाने लइब मागिया ।
सकल जानिबे तुमि नीलाचले गिया ॥९०
पञ्चदिन थाकि तथा प्रभु चलिलेन ।
नीलाचले रामानन्द यात्रा करिलेन ॥९१
तबे प्रभु चलिलेन सेतुबन्ध स्थाने ।
रघुनाथरूपे सेतु बान्धिला येखाने ॥९२
सेकालेर कीर्त्ति प्रभु देखिया आपने ।
नृत्य करे महाप्रभु निर्जने आपने ॥९३
धनुतीर्थ स्नान करि तर्पण विधान ।
आइलेन महाप्रभु रामेश्वर स्थान ॥९४
पञ्चदिन रामेश्वर देखिया रहिला ।
शिवेरे आदर करि तथाइ आछिला ॥९५
तबे प्रभु 'झारिखण्ड' प्रवेश करिला ।
बौद्धेर आलये आसि दरशन दिला ॥९६
बौद्धगण प्रभुरे देखिल दृष्टि भरि ।
सिद्धपुरुषेर प्राय देखे गौरहरि ॥९७
देखिया धाइला तारा प्रभुरे धरिते ।
धरिया चाहेन तारा मारिया फेलिते ॥९८
धर धर बलिया धाइल बौद्धगण ।
बौद्धगण देखि प्रभु धाइला तखन ॥९९
धाइया याइते देखे राजार मन्दिर ।
प्रवेश करिया प्रभु हइला स्थिर ॥१००
राजा देखिलेन अति भयातुर हञा ।
बाड़ीर भितरे प्रवेशिलेन आसिञा ॥१०१
राणीसङ्गे येखाने वसिया आछे राजा ।
देखिया प्रभुरे ताँरा करिलेन पूजा ॥१०२
हेनकाले बौद्धगण राजार दुयारे ।
आसिया बुलिला तारा विविध प्रकारे ॥१०३
तारा बोले शुन शुन राजा महाशय ।
आसियाछे एक बौद्ध तोमार आलय ॥१०४
आनिया देह त तारे आमासभाकारे ।
ताहाने पाटाइला तुमि आपन मन्दिरे ॥१०५
राजा बोले बौद्ध कभु ना आइसे हेथा ।
तोमरा किसेर तरे कह हेन कथा॥१०६
एत शुनि बौद्धगण फिरिया चलिला ।
सेइ रात्रि महाप्रभु ताहाइ रहिला ॥१०७
उषःकाले लोक दिञा राजा खाण्डाइत ।
पाठाइया दिला ताने हैञा हरषित ॥१०८
तबे प्रभु कथोदिने मथुरा आसिञा ।
रहिलेन विरलेते मधुपुरी पाञा ॥१०९
मधुपुरी देखि प्रभुर परम आनन्द ।
पूर्वजन्मस्थान देखि कान्दे गौरचन्द्र ॥११०
सातदिन तथाय रहिला गुणधाम ।
सप्तदिन वसिया लयेन हरिनाम ॥१११
भिक्षा ना करिल किछु मात्र दुग्धपान ।
वृन्दावन प्रति प्रभु करिला पयान ॥११२
वृन्दावने पशुपक्षी देखेन तथाइ ।
पञ्चदिन रहिलेन वृन्दावन पाइ ॥११३
लोकालय देवालय नाहिक तथाय ।
देखिया भ्रमेण वने श्रीगौराङ्ग राय ॥११४
देखिते देखिते प्रभु श्रीवृन्दावन ।
तथाये वैरागी छिल रूपसनातन ॥११५
रूपसनातन देखि श्रीगौरसुन्दर ।
हासिया बोलेन प्रभु शुनह उत्तर ॥११६
तोमारे देखिते आमि आइलाम एथा ।
तुमि किछु मनःकथा ना कह सर्वथा ॥११७
येरूपे तोमार सिद्ध हइबे भजन ।
ताहार मरम कथा शुनह एखन ॥११८

भक्ति दान दिलुँ आमि अद्वैतेर स्थाने ।
रूपसनातन नाम थुइल तखने ॥११९
तोमारे कहिलुँ आमि पश्चिमार घरे ।
भक्तिदान देह गिया पश्चिमार घरे ॥१२०
सेइ आमि श्रीकृष्णचैतन्य नाम धरि ।
भक्ति बुझाइल आमि सङ्कीर्त्तन करि ॥१२१
एथा सेवा कर आनि मदनमोहन ।
कंस कारागार घरे ताँहार स्थापन ॥१२२
तथा गिया लञा आइस मदन गोपाल ।
एइ वृन्दावने सेवा करह ततकाल ॥१२३
तबे से भजन सिद्ध हइब तोमार ।
सेवाधर्म विने देख किछु नाहि आर ॥१२४
कहिल उपाय तारे प्रभु गौरचन्द्र ।
शुनिया हइल तान परम आनन्द ॥१२५
तथा हइते आइलेन प्रयागेर घाट ।
से रात्रि बञ्चिया प्रभु करिलेन नाट ॥१२६
सप्तदिन रहि देखे त्रिवेणीमाधव ।
आविष्ट हइया बोले पाइल ये सब ॥१२७
तबे त' आइला प्रभु वाराणसी पुरी ।
काशीश्वर देखि प्रभु बोलेन हरि हरि ॥१२८
शिवेरे करिया प्रभु महामान्यज्ञान ।
सन्न्यासीगणेर तथा बहु उपस्थान ॥१२९
वेदान्ती सन्न्यासी सब भक्ति नाहि माने ।
प्रभुरे देखिल तारा कटुतार मने ॥१३०
भक्ति ना जानिले किछु शक्ति नाहि करे ।
सन्न्यासी नमस्करि प्रभु चलिलेन सत्वरे ॥१३१
केह किछु ना बलिल प्रभुरे देखिया ।
भक्तिशून्य हइलेइ मरये पुड़िया ॥१३२
तबे प्रभु दुइमास बाराणसी पाञा ।
रामचन्द्र पुरीर मठे रहिलेन गिया ॥१३३
तबे त आइला प्रभु गया महास्थान ।
विष्णुपद देखि प्रभु करिल प्रणाम ॥१३४
पुनर्वार आइला उत्कल महास्थान ।
जगन्नाथ देखिया पाइला येन प्राण ॥१३५
अष्टादश वत्सर रहिला नीलाचले ।
बञ्चिलेन महाप्रभु महकुतूहले ॥१३६
चब्बिश वत्सर प्रभु छिला गृहवासे ।
सन्न्यास करिला प्रभु महायुवारसे ॥१३७
सप्तदिन सपञ्चाश वत्सर अवतार ।
नामसङ्कीर्त्तने सब करिल उद्धार ॥१३८
नित्यानन्द स्थाने सबदेश समर्पिला ।
कार्यशेष करि तबे अन्तर्द्धान हैला १३९
शुन शुन ओरे भाइ चैतन्य मङ्गल ।
श्रवणे हरये पाप यत अकुशल ॥१४०
नित्यानन्द प्रभु अवतार शिरोमणि ।
बञ्चित पाषण्ड सब तारे नाहि जानि ॥१४१
युगे युगे निन्दा पूर्वे आछये आभास ।
देवासुरे नरे कृष्ण करेन बिनाश ॥१४२
राक्षसे वानरे निन्दे कंसेरे बाखाने ।
नित्यानन्दे निन्दे तैछे यत दुष्टगणे ॥१४३
नित्यानन्द चैतन्य हइल अवतीर्ण ।
एतदूरे शेषखण्ड हइल सम्पूर्ण ॥१४४
श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्दचाँद जान ।
वृन्दावन दास तछु पदयुगे गान ॥१४५

इति श्रीचैतन्यभागवते अन्त्यखण्डे श्रीरामानन्द राय-मिलनं दक्षिणगमनं मथुरागमनं वृन्दावनगमनं पुनः नीलाचलवासो नाम त्रयोदश अध्यायः सम्पूर्णः ।

समाप्तश्चायं शेषखण्डः ।

श्रीहरिदास शास्त्री सम्पादिता ग्रन्थावली

क्रम सद्ग्रन्थ	मूल्य
१-वेदान्तदर्शनम् भागवतभाष्योपेतम्	१५०.००
२-श्रीनृसिंह चतुर्दशी	१०.००
३-श्रीसाधनामृतचन्द्रिका	२०.००
४-श्रीगौरगोविन्दार्चनपद्धति	२०.००
५-श्रीराधाकृष्णार्चनदीपिका	२०.००
६-७-८-श्रीगोविन्दलीलामृतम्	४५०.००
९-ऐश्वर्यकादम्बिनी	३०.००
१०-श्रीसंकल्पकल्पद्रुम	३०.००
११-१२-चतु:श्लोकीभाष्यम्, श्रीकृष्णभजनामृत	३०.००
१३-प्रेम सम्पुट	४०.००
१४-श्रीभगवद्भक्तिसार समुच्चय	३०.००
१५-ब्रजरीतिचिन्तामणि	४०.००
१६-श्रीगोविन्दवृन्दावनम्	३०.००
१७-श्रीकृष्णभक्तिरत्नप्रकाश	५०.००
१८-श्रीहरेकृष्णमहामन्त्र	५.००
१९-श्रीहरिभक्तिसारसंग्रह	५०.००
२०-धर्मसंग्रह	५०.००
२१-श्रीचैतन्यसूक्तिसुधाकर	१०.००
२२-श्रीनामामृतसमुद्र	१०.००
२३-सनत्कुमारसंहिता	२०.००
२४-श्रुतिस्तुति व्याख्या	१००.००
२५-रासप्रबन्ध	३०.००
२६-दिनचन्द्रिका	२०.००
२७-श्रीसाधनदीपिका	६०.००
२८-स्वकीयात्वनिरास, परकीयात्वनिरूपणम्	१००.००
२९-श्रीराधारससुधानिधि (मूल)	२०.००
३०-श्रीराधारससुधानिधि (सानुवाद)	१००.००
३१-श्रीचैतन्यचन्द्रामृतम्	३०.००
३२-श्रीगौरांग चन्द्रोदय	३०.००
३३-श्रीब्रह्मसंहिता	५०.००
३४-भक्तिचन्द्रिका	३०.००
३५-प्रमेयरत्नावली एवं नवरत्न	५०.००
३६-वेदान्तस्यमन्तक	४०.००
३७-तत्वसन्दर्भ:	१००.००
३८-भगवत्सन्दर्भ:	१५०.००
३९-परमात्मसन्दर्भ:	२००.००
४०-कृष्णसन्दर्भ:	२५०.००
४१-भक्तिसन्दर्भ:	३००.००
४२-प्रीतिसन्दर्भ:	३००.००
४३-दश:श्लोकी भाष्यम्	६०.००
४४-भक्तिरसामृतशेष	१००.००
४५-श्रीचैतन्यभागवत	२००.००
४६-श्रीचैतन्यचरितामृतमहाकाव्यम्	१५०.००
४७-श्रीचैतन्यमंगल	१५०.००

क्रम सद्ग्रन्थ	मूल्य
४८-श्रीगौरांगविरुदावली	४०.००
४९-श्रीकृष्णचैतन्यचरितामृत	१५०.००
५०-सत्संगम्	५०.००
५१-नित्यकृत्यप्रकरणम्	५०.००
५२-श्रीमद्भागवत प्रथम श्लोक	३०.००
५३-श्रीगायत्री व्याख्याविवृति:	१०.००
५४-श्रीहरिनामामृत व्याकरणम्	२५०.००
५५-श्रीकृष्णजन्मतिथिविधि:	३०.००
५६-५७-५८-श्रीहरिभक्तिविलास:	६००.००
५९-काव्यकौस्तुभ:	१००.००
६०-श्रीचैतन्यचरितामृत	२५०.००
६१-अलंकारकौस्तुभ	२५०.००
६२-श्रीगौरांगलीलामृतम्	३०.००
६३-शिक्षाष्टकम्	१०.००
६४-संक्षेप श्रीहरिनामामृत व्याकरणम्	८०.००
६५-प्रयुक्ताख्यात मंजरी	२०.००
६६-छन्दो कौस्तुभ	५०.००
६७-हिन्दुधर्मरहस्यम् वा सर्वधर्मसमन्वय:	५०.००
६८-साहित्य कौमुदी	१००.००
६९-गोसेवा	४०.००
७०-गोसेवा (गोमांसादि भक्षण विधि-निषेध विवेचन)	५०.००
७१-पवित्र गो	५०.००
७२-रस विवेचनम्	५०.००
७३-मन्त्र भागवत	
७४-अहिंसा परमोधर्म:	१००.००
७५-भक्ति सर्वस्व	३०.००

बंगाक्षर में मुद्रित ग्रन्थ

क्रम सद्ग्रन्थ	मूल्य
१-श्रीबलभद्रसहस्रनाम स्तोत्रम्	१०.००
२-दुर्लभसार	१०.००
३-साधकोल्लास	५०.००
४-भक्तिचन्द्रिका	४०.००
५-श्रीराधारससुधानिधि (मूल)	२०.००
६-श्रीराधारससुधानिधि (सानुवाद)	३०.००
७-श्रीभगवद्भक्तिसार समुच्चय	३०.००
८-भक्तिसर्वस्व	३०.००
९-मन:शिक्षा	३०.००
१०-पदावली	३०.००
११-साधनामृतचन्द्रिका	४०.००
१२-भक्तिसंगीतलहरी	२०.००

अंग्रेजी भाषा में मुद्रित ग्रन्थ

क्रम सद्ग्रन्थ	मूल्य
१-पद्यावली (Padyavali)	२००.००
२-गोसेवा (Goseva)	५०.००
३-The Pavitra Go	८०.००
४-A Review of 'Beef in Ancient India'	२००.००
५-Scriptural Prohibitions on meat-eating	१००.००